CHOUHAN KUL-KALPADRUMA.

PART I.

History and Genealogical Trees of the Branches of Chouhan Rajputs.

Published By

Nyayaratna Desai Lallubhai Bhimbhai

(Sandalpur, Navsari District)

Retired Land Revenue Officer, Sirohi State

ABUROAD (Rajputana).

Printed at

The Lubana Mitra Steam Printing Press, Baroda by Ambalal Vithalbhai Thakkar on 1 st July 1927.

SECOND EDITION.

Samvat 1983. A. D. 1927

मौजूदा महाराजा साहब सिरोही.
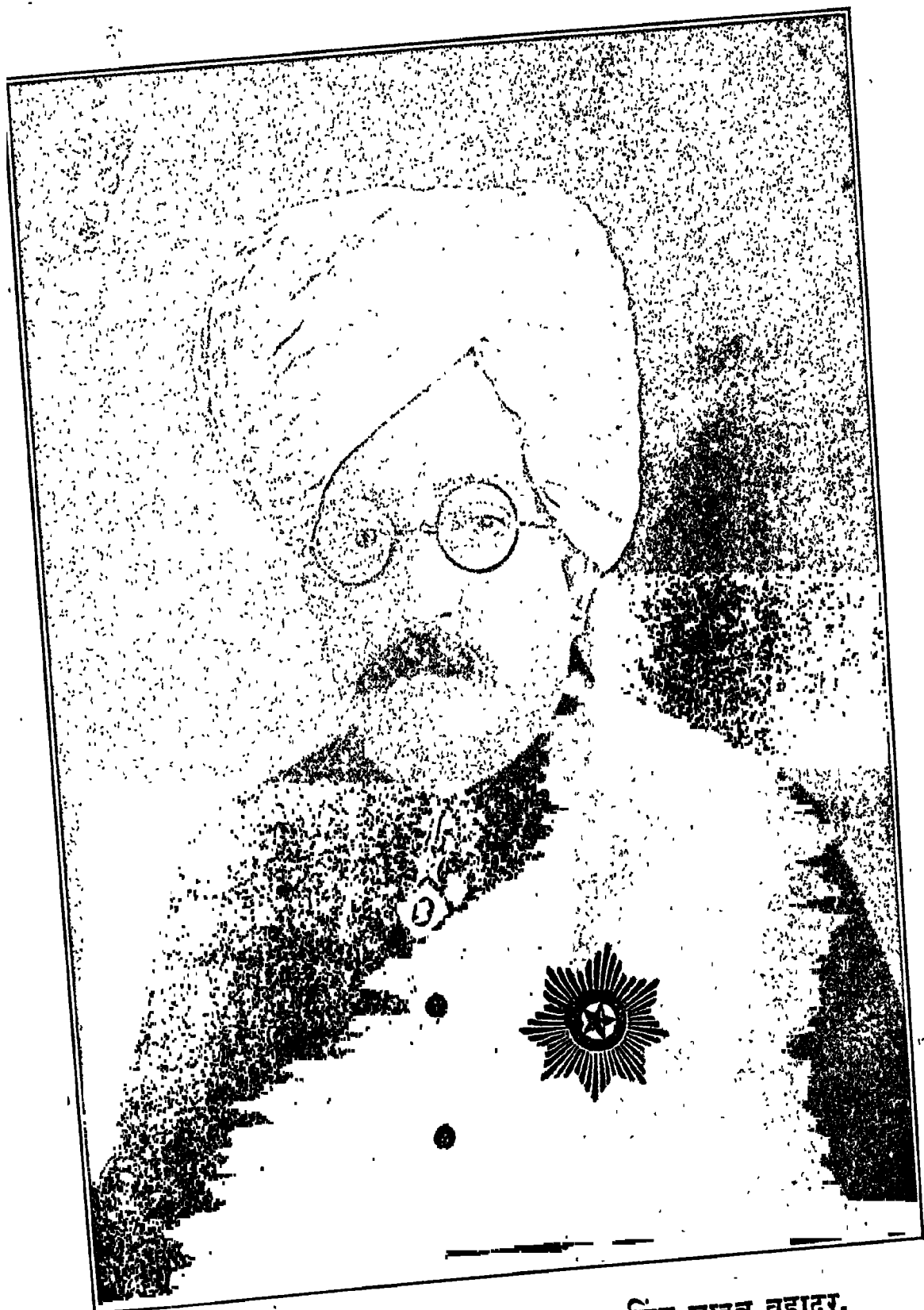
महाराजाधिराज महाराव सर स्वरूपरामसिंह साहब बहादुर.
के. सी. एस. आई.

श्री सारणेश्वरजी सहाय है.

समर्पण.

'नंदगिरी नरेश, कटार कंध चौहान; दताणी खेतरा, जेत जुहार.'

गौ ब्राह्मण प्रतिपाल, धर्मधुरंधर, अखंड प्रौढ प्रताप, चौहान कुल भूषण अर्बुदाधिपती राज राजेश्वर महाराजाधिराज महारावजी श्री श्री श्री १०८ श्री श्री सर स्वरूपरामसिंहजी साहेब बहादुर

K. C. S. I.

रियासत सिरोही (राजपूताना).

मान्यवर महारावजी साहब,

यह सामान्य स्वीकार हुआ है कि श्रीजी हुजूर अपने सेवकों में से जो साहित्य की उन्नत्ति के वास्ते मिहनत करतें है उसके पोषक व आश्रयदाता है, जिससे इस ग्रंथ का लेखक जो सिरोही रियासत का पुराना सेवक और पेन्सनर्र है वह परमकृपालु परमात्मा की कृपा से यह 'चौहान कुल कल्पद्रूम' नामक ग्रंथ हुजूर के चरणार्विंद में समर्पण करनेको शक्तिवान होने पाया है. इस ग्रंथ के लेखक की खास मान्यता है कि चौहान कुल के राजपूत इतने मशहूर है कि जिनकी तारिफ से भारतभूमि एक समय गर्जित थी. ऐसे चौहानों की अमरकीर्ति का खयाल इस ग्रंथ से होगा. जीस कुल की कीर्ति के आप श्रीजी भी एक नमूने है.

इस ग्रंथ के लेखक को जहां तक मालूम है, आप श्रीमान् लोककल्याण के हरएक कार्यों में फैयाज दिल वाले और अपने सरदारों व प्रजाजनों में संप और सुलह शान्ति हमेशा बनी रहे तथा उनकी बहतरी होया करे उनके वास्ते सदा तत्पर रहते हैं, जिससे आप हुजूर ने परोपकारी राजाओं की पंक्ति में चिरस्थायी पद प्राप्त किया है. ये सर्व सद्गुणों के स्मणार्थें यह ग्रंथ एक यादगार भेट स्वीकार होगी ऐसी नम्र याचना के साथ समर्पण किया जाता है.

ली.

श्रीजी हुजूर का निमकहलाल व
फरमाबरदार तावेदार सेवक

लल्लुभाई बी. देसाई.

आबुरोड,
अक्षय तृतिया.
ता. ४ मेई सन १९२७ ई.

" Nand Giri Naresh, Katâr Bundh Chouhân Datani Khetra, Jeyt Juhar. "

To,

His Highness Maharaja Dhiraj Maharao Shree Sir Sarup Ram Sinhji Saheb Bahadur,

K. C. S. I.

SIROHI STATE.

Rajputana.

Your Highness,

It is generally acknowledged that Your Highness is a reputed supporter of learning in general and in particular of learning on the part of those who are labouring under your care. By the grace of the Almighty, I, an old and humble servant and pensioner of Your Highness have been enabled to submit to-day for your perusal, a work, which, I believe, appropriately signalises the name of the illustrious Chouhans with the ring of whose fame India once rang. In my own estimation Your Highness is a worthy upholder of the glory of the same Chouhans. Further, Your Highness holds himself in perpetual readiness with your generosity in the cause of everything good, with your solicitude for the welfare of the Sardars and Ryots of the State and with your enthusiasum for the uplift of the sons of Rajputs. These virtues have earned for Your Highness a permanent rank in the galaxy of benevolent kings. May these volumes prove a worthy tribute to the memory of all these.

Sirohi.

I beg to remain,
Your Highness,
Your most obedient and faithful servant,
Lallubhai B. Desai.

'चौहान कुल कल्पद्रुम' के रचिता.

न्यायरत्न देसाई लल्लुभाई भीमभाई.

॥ श्री सारणेश्वरजी ॥

श्री गणेशायनमः

चौहान कुल कल्पद्रुम.

भूमिका.

राजपुत्रों के छत्तीस राज कुलों में चौहान वंश के राजपूतों ने वीरता, स्वाभिमान और नेक टेक का सम्पूर्ण रक्षण करके भारतभूमि के इतिहास में अग्रस्थान प्राप्त करने में वड़ी नामवरी पाई है.ऐसा सर्वानुमते स्वीकार हुआ है, और यह प्राचीन व गौरवशाली वंश के नामांकित राजपुत्रों की प्रशंसा के वास्ते हरएक भाषा में पूर्व काल से ही अनेक काव्य ग्रंथ रचे हुऐ हैं; वैसे विद्वान कवियों ने भी अनेक गीत कवित्त रचकर इस कुल के इतिहास का रक्षण करने में अपना हिस्सा दिया है. ऐसे निष्कलंक व प्रभावशाली राजकुल की सच्ची और सप्रमाण ख्यात हरएक शाखा के सिलसिलेवार वंशवृक्ष के साथ प्रसिद्ध करने की गरज से इस ग्रंथ के लेखक ने प्राचीन शिलालेख, ताम्रपत्र, अप्रसिद्ध हस्तलिखित काव्य और ख्यातें, विद्वान कवियों ने रचे हुए ऐतिहासिक गीत कवित, तथा प्रसिद्धि में आये हुए हस्तलिखित व छपी हुई ऐतिहासिक पुस्तकों में से चौहान राजपूतों से ताल्लुक रखने वाली ख्यात को एकत्र करके इस कुल के राजपूतों के वडुए, कुलगुरू, राणीमगा व पुरोहित आदि की पुरानी वहीओं से जरूरी सहायता लेकर यह " चौहान कुल कल्पद्रुम " नामक ग्रंथ रचा है, जिसमें मूल पुरुष ' चाहमान ' से शुरूआत करके वर्तमान समय तक का इतिहास अंकित है.

वस्तुतः ' चाहमान ' नामक वडा प्रतापी पुरूष के नाम से ' चौहान वंश ' कहलाया है, परन्तु पीछे से इस वंश की २४ चौवीस शाखा होना कहावत से व प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों से भी प्रसिद्ध है. जो शाखाएं चौहानों का सांभर में राजस्थान होने वाद विभक्त हुई हैं, जिनमें कितनीक शाखाएं सांभर से व कितनीक शाखा विक्रम संवत् की ग्यारहवीं सदी में नाडोल से नीकली है, लेकिन उनमें कौन २ शाखा सांभर से व नाडोल से विभक्त हुई वह विवाद ग्रस्त होने से चौहानों की प्राचीन शाखा के विषय में एक स्वतंत्र प्रकरण (तीसरा प्रकरण) लिखा गया है, उससे मालूम होगा कि अलग २ शाखा की ख्यातो में अंकित हुई प्राचीन चौवीस शाखाओं को एकत्र करके जांच करने से उनमें वहुतसी उपशाखाएं शामिल हो चूकी है, जिससे चौहानों की चौवीस कहलाती शाखा की संख्या सैंकडों के अंक पर जा पहूंची है. जो कि चौहान कुल के

राजपूतों के वास्ते अपने कुल की कौन २ प्राचीन शाखा कहलाती है, यह मालुम होना बहुत आवश्यक होने से इस ग्रंथ में कुल प्रसिद्ध शाखाएं अंकित करके उनमें से जिन २ शाखा का सप्रमाण इतिहास प्राप्त हुआ, उनके वास्ते मूल पुरुष 'चाहमान' से लगा कर संबद्ध वंशवृक्ष बनाकर उसका हरएक प्रमाणों का उल्लेख के साथ संक्षिप्त इतिहास लिखा है, और जिन २ शाखा का संवद्ध वंशवृक्ष होने जैसा इतिहास नहीं प्राप्त हुआ उन शाखा के चौहान वर्तमान समय में कहां २ विद्यमान है वह उल्लेख किया है, वल्कि उम्मेद की जाती है कि भविष्य में नई ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होने पर या किसी शाखा का विस्तीर्ण इतिहास लिखने की संभावना के समय में इस ग्रंथ में अंकित हुए अलग २ प्रमाणों वाले वंशवृक्ष और इतिहास से उसमें सहायता मिल सकेगी.

हिन्दुस्तान में पूर्व काल में इतिहास लिख रखने की प्रथा नहीं होने से, राजपूतों के इतिहास के वास्ते वर्तमान समय के इतिहास वेत्ताएं सिर्फ शिलालेख, ताम्रपत्र व प्राचीन समय के लिखे गये हस्तलिखित पुस्तकों पर ज्यादह भरोसा रख कर कंठस्थ साहित्य (प्राचीन दंतकथा व विद्वान कवियों ने रचे हुए ऐतिहासिक गीत कवित्त) व राज्याश्रित (वडुआ, कुलगुरू आदि) जनों की वहींओं पर अपनी नजर नहीं डालते, मुसलमान व औरों के तरफ से लिखी हुई तवारिखों पर खास आधार रखकर इतिहास लिखना पसंद करते हैं, लेकिन प्राचीन कंठस्थ साहित्य और राज्याश्रित जनों की वहींओं से जो जो विस्तीर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है, उतनी सामग्री उपरोक्त साहित्यों से प्राप्त होना असंभव है, क्योंकि शिलालेख व ताम्रपत्र में अल्प व त्रूटक इतिहास अंकित होता है. प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में भी प्रशंसा के दोष विद्यमान है, बल्कि ऐसी पुस्तकों में जो २ पुस्तकें उसमें अंकित हुई घटना के समय बाद सैंकडो वर्ष पीछे रचने में आई है, उनका पाया (मुख्य आधार) प्राचीन दंतकथा पर ही रहा हुआ है, और मुसलमान तवारिख लिखने वालों ने राजपूतों के इतिहास के विषय में पक्षपात करके जगह २ अपने मजहबी भाइयों की बडाई दिखलाने का प्रयत्न किया है, तब राज्याश्रित जनों की वही में अंकित हुई ख्यात उसी समयमें लिखी गई है और कंठस्थ साहित्यों में कवियों ने रचे हुए गीत कवित्त बहुधा उसी समय में रचे हैं, जिससे उनमें उपलब्ध होता इतिहास की कीमत ऐसे प्राचीन पुस्तकें व तवारिखों से कम नहीं होगी, बेशक राज्याश्रित जनों की वहीओं की जांच करने से पाया गया है कि उस राज्य की स्थापना होने के पहिले समय की जो ख्यात उसमें अंकित है, वह उसी समय की लिखी हुई नहीं है, बल्कि दंतकथा व प्राचीन गीत कवित्त के आधार पर से पीछे से लिखने में आई है, जिससे वह इतिहास शंकास्पद और सिलसिलेवार भी नहीं है, लेकिन उस वंश का राज्य कायम होने बाद की जो २ ख्यात उक्त वहिओं में मिलती है वह स्वतंत्र, सच्ची और सिलसिलेवार होना स्पष्ट मालूम होता है, इस लिये इस ग्रंथ में

इतिहास वेत्ताओं ने मान्य रखे हुए, ऐतिहासिक साहित्यों के उपरांत प्राचीन कंठस्थ ऐतिहासिक साहित्य और वहुओं आदि की वहीओं से प्राप्त हुई ऐतिहासिक सामग्री के प्रमाण भी जगह २ अंकित किये हैं.

चौहान राजपूतों की ख्यात का सारांश यह है कि इस कुल के छोटे २ सरदारों से लगाकर वडे २ राजा महाराजाओं तक के पुरुषों ने स्वतंत्रता व स्वाभिमान का संरक्षण करने में ही अपनी जिन्दगी का सार्थक होना समझ कर इसी उद्योगमें अपने प्राण और सर्वस्व समर्पण करने में यत्किंचित परवाह न की. यानी किसी कविने कहा है कि.

"धन गया फिर आ मिले, त्रिया गई मिल जाय, भोम गई फिर से मिले, गइ पत कवहु न आय."

इसी सूत्र का चौहानों ने दृढता से पालन करके अपने कुल के गौरव को कायम रखने में सफलता प्राप्त की है.

इस ग्रंथ में अंकित हुए प्राचीन इतिहास से मालूम होगा कि पूर्व काल में भारत भूमि के हरएक विभाग (काश्मिर, उत्तराखंड, पंजाब, राजपूताना, मालवा, मध्यप्रान्त, गुजरात, दक्षिण महाराष्ट्र, पूर्व और बंगाल आदि देशों) में चौहानों के राज्य विद्यमान थे और विक्रम संवत् की तेरहवी सदी की शुरुआत में चौहान राजवंश हिन्दुस्तान के सम्राट पद पर नियुक्त था, परन्तु परदेशी व परधर्मी के हिन्दुस्थान पर वार २ आक्रमण होने से जगह २ चौहान राजपूतों ने स्वदेश रक्षार्थे और स्वतंत्रता व स्वमान का रक्षण करने के वास्ते अपनी जान कुर्बान करने से, उनके वंशजों के तरफ वर्तमान समय में सिर्फ गिन्ती की रियासतें (राजपूताना में १ बून्दी, २ कोटा, व ३ सिरोही. मालवा में ४ खिलचीपुर, गुजरात में ५ छोटाउदयपुर व ६ देवगढ बारिया.) तोपों की सलामी वाली रहने पाई है, और दूसरी रियासतें छिन्न भिन्न होकर उनके वंशज हरएक प्रांतो में छोटे-वडे चोर्फ (ताल्लुकदार) जमींनदार, जागीरदार या भोमियों की पंक्ति पर जा पहूंचे है. यदि मुगल बादशाहों के जमाने में जब कि वहुत से राजपूत राजाओं ने देशकाल के अनुसार स्वतंत्रता और स्वाभिमान को तिलांजली देकर वादशाहों की इच्छा के अनुकूल बनकर अपना स्वार्थ साधने का प्रयत्न किया था, वैसा चौहान राजपूतों ने भी किया होता तो वर्तमान समय में हिन्दुस्तान के हरएक प्रांतों में चौहानों की कईएक बडी २ रियासतें विद्यमान रह जाती, परन्तु स्वतंत्रता, स्वाभिमान और नेकटेक की धुन में ही मचेपचे हठीले चौहानों ने वैभव-सत्ता व राज्य का लोभ नहीं रखते कीर्ति का लोभ रखने के कारण वह लाभ गुमा दिये, ऐसा इस ग्रंथ के पढने वाले को उस समय की अंकित हुई ख्यात से मालूम होगा.

चौहान राजपूतों वीरता व गौरव में श्रेष्ठ होने से इस कुल की प्रशंसा में

प्राचीन समय में भी कितनेक काव्य ग्रंथ हरएक भाषा (संस्कृत, मागधी, राज्यस्थानी, व गुजराती आदि) में लिखे गये है, वैसे गद्य में लिखे हुए हस्तलिखित पुस्तकें भी मिलती है, जिनमें ' पृथ्वीराज विजय ' की पुस्तक महान् पृथ्वीराज के समय में ही पृथ्वीराज की प्रशंसा के वास्ते लिखी है. ' हमीर महाकाव्य ' की पुस्तक रणथंभोर के चौहान ' हमीर हठीला ' की शरणांगत वात्सल्यता व वीरता की प्रशंसा में विक्रम संवत् की पंदरहवी सदी में रची गई है. ' कान्हडदेव प्रबंध ' की पुस्तक वि. सं. १५४५ में जालोर के सोनगरे चौहान कान्हडदेव व वीरमदेव की नेक-टेक के विषय में रची हुई है. ' पृथ्वीराज रासा ' का सब से बडा काव्य ग्रंथ वि. सं. की सोलहवी सदी में लिखा जाना कहा जाता है. ' सूर्जनचरित्र ' की पुस्तक बून्दी के हाडा राव सूर्जन की प्रशंसा में वि. सं. की सत्तरहवीं सदी में लिखी है. इनके सिवाय ' हमीर रासा ' व ' वीरमदेव सोनगरा ' नामकी राज्यस्थानी भाषा की गद्य में लिखी हुई पुस्तकें भी प्राप्त है. इसी मुआफिक प्रख्यात कवि ' आढा दुरशा ' जो वि. सं. की सत्तरहवीं सदी में विद्यमान था और जिसने महाराणा प्रतापसिंह की प्रशंसा में ' प्रतापवत्तिसी ' आदि उत्तम कवित्ता लिखी है, उसने अपनी नजर से देखी हुई चौहानों की ऐतिहासिक घटना के विषय में सिरोही के महाराव सूरताणसिंह के लिये ' राव सूरताण के झूलणे ' आदि और दूसरे चौहानों के विषय में भी बहुत गीत कवित्त रचे हैं, जिससे व दूसरे नजर से देखने वाले कवियों ने जो जो कवित्त रचे हे उससे वि. सं. की सत्तरहवीं सदी से लगाकर उन्नीसवीं सदी तक के इतिहास पर कई प्रकार का नया प्रकाश होना मालूम होगा. तात्पर्य यह है कि इतिहास वेत्ताओं ने स्विकार किया हुआ ऐतिहासिक साहित्य के सिवाय चौहान कुल के राजपुत्रों के विषय में कंठस्थ साहित्य और बडुआ आदि की वहीओं से उनके इतिहास पर कितना उजाला होता है उसका प्रत्यक्ष प्रमाण इस ग्रंथ में ' देवडा चौहान की शाखा ' के वास्ते प्रथम विभाग के प्रकरण २३ से प्रकरण ३६ तक में जो इतिहास अंकित हुआ है, उससे व ' दूसरे विभाग ' की पुस्तक देखने से खयाल होगा, उसमें महाराव सूरताणसिंह का इतिहास पढने से मालुम होगा कि उनके विषय में रचे हुए गीत कवित के रचने वाले कवि लोग (संडायच पुना व आढा दुरशा आदि) उसी समय में विद्यमान थे, बल्कि आढा दुरशा विरूद्ध पक्ष (राठौरों का) का कवि था और दत्ताणी के युद्ध में शाही फौज में शरिक था, उसने रचे हुए गीत कवित्तों में महाराव सूरताणसिंह की तरफ से कई दफे शाही फौज को शिकस्त मिलने की और मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह को शरण रखने की वगैरह ऐतिहासिक घटनाएं नजरसे देखी हुई अंकित है, जो आजतक अंधेरे में ही रहने पाई थी.

वस्तुतः महाराव सूरताणसिह का इतिहास विक्रम संवत् की सतरहवीं सदी में चौहान राजपूतों की ख्यात के वास्ते चौहानों की कीर्ति का अचल व अमर कीर्तिस्थंभ

है, क्यों कि उसके इतिहास से चौहानों की तवारिख के वास्ते एक नया सफा खुलता है, इसके विषय में मेवाड के कवि दधवाडिया खेमराज ने कहा है कि—

" एकावन वरस जिव्यो अनाड; जीतो निज बावन महाराड. "

यानी अकवर बादशाह के सम्पूर्ण तपते हुए राज्य अमल में यह महाराव विद्यमान था और इसने अपनी स्वतंत्रता व स्वमान का रक्षण करते हुए, बादशाह के विरुद्ध पक्ष वाले राजाओं को आश्रय देकर एकावन वर्ष की ज़िन्दगी में बावन दफे युद्ध में विजय प्राप्त किया था, बल्कि इस महाराव के इतिहास की मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह के इतिहास कें साथ निष्पक्षपात से समालोचना करने से यह दोनों राजाओं की हरएक वातों में समानता नजर आवेगी, तदुपरांत महाराव सूरताणसिंह के विषय में, ये विशेषता दृष्टिगोचर होगी कि मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह को जब अपनी जन्म भूमि त्याज करना आवश्यक हुआ, तव महाराव सूरताणसिंह ने अपने राज्य की सीमा में रह कर अकवर बादशाह के दुश्मनों (राठौरों व सिसोदियों) को अपने आश्रय में रख कर शाही फौज को सफलता प्राप्त होने न दी. कवियों ने इन दोनों स्वाभिमानी राजाओं की स्वतंत्रता कायम रहने के विषय में समानता दर्शाने के वास्ते कहा है कि—

" अवर नृप पतशाह अगे, होई भ्रत जोडे हाथ; नाथ उदेपुर न नम्यो, नम्यो न अरबुद नाथ. "

यह कथन अकबर बादशाह के समय में कवि ने कहा है. इस विषय में खुलासे वार अहवाल इस ग्रंथ के प्रथम विभाग के पृष्ट २५४ से २५६ तक में अंकित है.

चौहान राजपूतों की पूर्ववत् नेकटेक मुगल बादशाहों के समय में कहां तक कायम रही है, उनके वास्ते 'बूंदी के हाडा चौहान व सिरोही के देवडा चौहान' की अंकित हुई ख्यात से इतिहास रसिक पाठको कों चौहान कुल के राजपूतों के वास्ते जरूर बहुमान उत्पन्न होगा, क्यों कि मुगलों के समय में कलंकित कही जाती '[१]डौला व [२]नोरोज' की प्रथा से चौहान राजपूत बेदाग रहने से उनकी उज्वल कीर्ति के यशोगान कवि लोगों ने अनेक प्रकार से किये हैं, यानी कवि ने कहा है कि—

" बूंदी हाडा भोजमल, सिरोही सूरताण; अकवर सुं उभा अणी, छावा दोऊ चहुआण. "

यदि बूंदी के हाडा राव सूर्जन व उसके कुमार हाडा भोजमल ने अकवर बादशाह की सेवा स्वीकार ली थी, परन्तु अपना स्वमान और कुल मर्याद निभाने के वास्ते प्रथम खास शर्तें बादशाह से मंजूर कराने बाद शाही सेवा में वे उपस्थित हुए थे; (देखो इस ग्रंथ के पहिला विभाग के पृष्ट ७२ की टिप्पनी.) जिससे हाडा चौहान की मानप्रतिष्ठा जैसी की वैसी कायम रहने पाई है, और जब २ मुगलों ने वे शर्तें तोडने के वास्ते प्रयत्न किया तव २ उनको निष्फलता मिली है, इसी कारण से कवि ने कहा है कि—

---

१ अपनी राजकुमारी का शाही खानदान वालों के साथ विवाह करना. २ नोरोज की गुजरी के बजार में अपनी स्त्रीओं को शामिल रहने को भेजना.

" काजल हंदी कुपली दली सुलताणा, सबको कलंक लग गयो बना चहुआणां."

कवि के कथन का आशय यह है कि देहली की सलतनत जो राजपूतों को कलंक लगाने के वास्ते कज्जल की दव्वी समान है, वैसी सलतनत में रहने वाले अर्थात बादशाह के समागम में आये हुए राजपूतों में सिवाय चौहान राजपूतों के दूसरे सब राजपूतों को कलंक रूप काजल का धव्वा लग गया है, यानी शाही सेना में उपस्थित हुए चौहान सिवाय के राजपूत राजाओं का स्वमान खंडन करने में मुगलों ने सफलता पाई है.

चौहान राजपूतों ने मुसलमान बादशाहों को अपनी राजकुमारी नहीं बिहाई और चौहानों की राणीयां 'नोरोज' की गुजरी में नजाने पाई उसके वास्ते कविने चौहानों को धन्यवाद देने के विषय में कहा है कि—

" धन चहुआणी धियडी, धन चहुआणी नार; असपत रे आगले सज न गई शणगार."

तात्पर्य यह है कि चौहान राजपूतों ने विस्तीर्ण भूमिका राज्य सम्पादन करने के वास्ते या अपना राज्य का रक्षण के कारण मुसलमानों की इच्छा के अनुकूल नहीं होते अपना स्वाभिमान का रक्षण करके कीर्ति सम्पादन की है.

चौहानों ने अपनी स्वतंत्रता कायम रखने में कितने दरजे सफलता प्राप्त की? उस विषय में सिरोही के देवडा चौहानों का व बारिया के खीची चौहानों का इतिहास पढने से मालूम होगा कि इन दोनों रियासत के चौहानों ने मुगल या मरहटों की मातहती नहीं स्वीकारते अपनी स्वतंत्रता कायम रखी है, बल्कि अंग्रेज सरकार के निष्पक्षपाती अफसरोंने प्राचीन इतिहास व शाही दफतरों की जांच करने बाद जो राय जाहिर की है, उनमें मैलिसन साहेब कृत 'नेटीव स्टेट्स ऑफ इन्डिया' नामक पुस्तक में सिरोही का चौहान राज्य स्वतंत्र होने के विषय में उल्लेख किया है कि—" राजपूताने में केवल सिरोही का राज्य एकही ऐसा है कि जिसने मुगल, मरहटा और राठौरों की आधिनता न स्वीकारते अपनी स्वतंत्रता कायम रखी है." उसी मुआफिक गुजरात में बारिया राज्य के चौहानों ने अपनी स्वतंत्रता का रक्षण करने के विषय में भी अनेक अंग्रेज अफसरों ने अपनी राय बताई है, जिसमें मी. हेमिलटन साहेब कृत 'डिस्क्रिपशन ऑफ हिन्दुस्थान' नामक पुस्तक में लिखा है कि—'हिन्दुस्थान में इस समय में जो गिन्ती के स्वतंत्र राज्य हैं उनमें बारिया रियासत भी एक गिनी जा सकती है.' तात्पर्य यह कि मुगल व मरहटों के समय में जबकि मेवाड के महाराणा जैसे प्रबल सिसोदिये राजकुल ने भी अपनी स्वतंत्रता गुमा दी थी, तब गुजरात व राजपूताना में चौहान राजकुल के राजाओं ने अपनी स्वतंत्रता कायम रखने में सफलता प्राप्त की है, जिनका इतिहास इस ग्रंथ में योग्य स्थान पर अंकित हुआ है, उसमें देवडा चौहान शाखा का इतिहास के वास्ते ज्यादह सामग्री प्राप्त होने से उसका इतिहास कुछ विस्तार से अंकित हुआ है, और उम्मेद की जाती है कि इसी मुआफिक दूसरी शाखा के वास्ते साहित्य सामग्री प्राप्त

होने पर भविष्य में दूसरी आवृत्ति छपेगी उसमें उनका इतिहास इसी मुआफिक विस्तार से अंकित होगा, वैसे इस ग्रंथ में अंकित हुई ख्यात में अपूर्णता या गल्ति रह जाने के विषय में सूचना होने पर उनके वास्ते भी उसमें दूरस्ती की जायगी.

इस ग्रंथ का लेखक विद्वान किंवा इतिहास का अभ्यासी नहीं है, वैसे इतिहास की पुस्तक लिखने की उसकी योग्यता भी नहीं है, परन्तु राजपूताना की गौरवशाली भूमि में उसका अन्नोदक निर्माण होने से, सिरोही रियासत में जिन्दगी व्यतित होने के कारण यह ऐतिहासिक घटना से भरी हुई भूमि के प्राचीन जाहोजलाली के स्मारक स्थल, दंतकथा और वीर पुरुषों की वीरता के गीत कवित्तों का परिचय होनेका मौका हाथ लगने से हृदय में उद्भव हुई प्रेम उर्मि का पोषण करने के वास्ते, ऐतिहासिक साहित्यों की खोज में लगकर, प्राचीन साहित्यों को एकत्र करने का प्रयत्न किया गया, और संग्रह हुई सामग्री से अपने दिल में सन्तोष मनाने के वास्ते गुजराती भाषा में १ 'राजयोगी परमार धारावर्षदेव, २ देवी खड्ग अने चितोडनी पुनः प्राप्ति' व '३वलहठ बंका देवडा', नामक तीन ऐतिहासिक उपन्यास रचकर प्रसिद्ध किये, लेकिन उससे चाहिये वैसा समाधान नहीं होने के कारण जिस चौहान वंश (देवडा चौहान) के अन्नजल से लेखक व उसके बाल बच्चों का पालन पोषण हो रहा है और भविष्य में होने की उम्मेद की जाती है, उस चौहान कुल की कुछ यादगार लेवा लेखक के हाथ से हो सके वैसी तीव्र अभिलाषा होनेसे, प्रथम 'देवडे चौहानों' के वास्ते एक पुश्तनामा अंकित करके इस्वी सन् १९१२ में मरहूम सिरोही महाराव साहेब सर कैसरीसिंह बहादुर जी. सी. आई. ई., के सी. एस. आई. की हजुर में वास्ते मुलाहिजा के पेश किया गया, जिसपर उन नामदार ने पसंदगी बताकर समस्त चौहान राजपूतों के वास्ते यह 'चौहान कुल कल्पद्रुम' की रचना करने में सहायता मिले वैसी सामग्री अपने पुस्तक भंडार से देने की कृपा की, और बहुआ आदि राजकुल के इतिहास को नुंद रखने वालों की वहीओं से मिलान करने का इन्तजाम कर दिया, जिससे ही ऐसा महद् ग्रंथ रचने की लेखक की महत्कांक्षा फलिभूत हुई है.

इस ग्रंथ के रचना की सब सामग्री कई बरसों से इकट्ठी हो चुकी थी, परन्तु ऐसा बडा ग्रंथ बगैर आश्रय के छप सके वैसा न होने से वे सामग्री बस्ते में ही पडी रही थी, दरमियान सिरोही रियासत के देवडे सरदारों की जागीर के हक हकुक के सेटलमेंट करते वक्त इस सामग्री की सहायता लेने में आई, तब से देवडे सरदारों का लक्ष इसकी तरफ हुआ, और उन्होंने इस ग्रंथ को प्रसिद्ध कराने की गरज से ता. २७-१-२५ ई. के दिन मौजूदा महाराव साहेब सर स्वरूपरामसिंह साहेब के आगे कुछ सहायता देने का प्रस्ताव किया, जिस पर से 'सिरोही स्टेट प्रेस' में यह ग्रंथ छाप देने का स्वीकार हुआ परन्तु उसमें भी बाधा आगई, यानी सरदारों ने सहायता के विषय में अपनी तरफ से जो योजना करना चाही थी वह पूर्ण न होने पाई, और स्टेट प्रेसमें चाहिये वैसा छपाई का

काम होने की सूरत नहीं पाई गई, जिससे पुस्तक की रचना के वास्ते जो श्रम उठाया था वह वृथा हो गया, लेकिन सिरोही रियासत के मौजूदा चीफ मिनिस्टर साहेब राज्यरत्न महेता सदाशीवराम ने लेखक की नाउम्मेदी देख कर नामदार महाराव साहब के हुजूर में इस ग्रंथ के विषय और जरूरत पर खयाल फ़ुरमाने की अर्ज करने से महाराव साहेब ने लेखक का मंद उत्साह को सजिवन करने के वास्ते आश्वासन देकर अपनी सहानुभूति प्रकट की, तथा दूसरे किसी प्रेस में छपवाने की व्यवस्था करने के वास्ते कामचलाऊ सहायता देकर इस ग्रंथ की ८० प्रति रियासत में लेना मंजूर फरमाया, जिससे यह ग्रंथ प्रसिद्ध करने का सुयोग प्राप्त हुआ है.

इस ग्रंथ को दो विभाग में प्रसिद्ध करने का खास कारण यह है कि दोनों विभाग के विषय में फर्क है, यानी प्रथम विभाग में समस्त चौहान कुल के इतिहास से ताल्लुक है, तब द्वितीय विभाग में सिर्फ 'देवडा चौहान' सरदारों का वंशवृक्ष और इतिहास अंकित हुआ है, जिसका खास ताल्लुक देवडा, बोडा, बालोतर, चीबा व अबसी शाखा के चौहानों से ही है, वसे उन सरदारों का इतिहास इतना बारिक संशोधन करके अंकित हुआ है कि सिरोही रियासत के कुल चौहान सरदारों के वंशवृक्ष में उनके खानदान में जन्म लिये हुए एक भी पुरुष इस वंशवृक्ष में बाकी नहीं रहा होगा, क्यों कि यह दूसरे विभाग की पुस्तक सिरोही रियासत के सरदारों के वास्ते जितनी इतिहास के लिये जरूरी है, उससे ज्यादह जरूरत हरएक जागीर के वारिसान के हक हकुक के निसबत होने के कारण हरएक वंशवृक्ष के वास्ते सरदारों से जाच कराकर वह सही होने के विषय में बडुआ आदि से तहरीरी प्रमाण पत्र लेने बाद उनके वंशवृक्ष अंकित हुए है.

वस्तुतः इस ग्रंथ की रचना के वास्ते साहित्य इकट्ठा करने का काम वि. सं. १९६० से शुरु हुआ था और वि. सं. १९७२ तक में जरूरी मसाला जमा हुआ, परन्तु ऐसा काम सम्पूर्ण होना न होना यह बात कुदरत के उपर होने से अनेक प्रकार के विघ्न आते ही रहे, बलिक जब कि पुस्तक छपने का काम शुरु हुआ और प्रेस में छपने के वास्ते फर्मे लिख कर भेजे जाते थे, तब दरमियान में पुस्तक की रचना में अपरिमित श्रम उठाने से लेखक सख्त बिमार हो गया, और ऐसी बिमारी हुई कि यह काम पूर्ण होने की संभावना कम हो गई, परन्तु ऐसे निराशा के समय में चीफ मिनिस्टर साहब सिरोही ने बार २ आश्वासन देकर उत्तेजित करने से और फर्मे की नकल करने के वास्ते व प्रेस में रह कर प्रुफ पढने के लिये एक अहलकार (पुरोहित चीमनीराम खाखरवाडा वाला) की सहायता देने से ही लेखक यह काम सम्पूर्ण करने के वास्ते भाग्यशाली हुआ है, जिनके लिये राज्यरत्न महेता सदाशिवराम का लेखक बहुत शुकर गुजार है.

इस स्थान पर यह बात स्पष्ट लफजों में स्वीकारना जरूरी है कि इस ग्रंथ का लेखक

मौजूदा चीफ मिनिस्टर साहब सिरोही स्टेट.

राजरत्न महेता सदाशिवराम चीफ मिनिस्टर साहब.

[विभाग पहिला पृष्ट १४४]

विद्वान् किंवा हिन्दी भाषा का ज्ञाता नहीं है, उसकी मातृभाषा गुजराती है, जिससे इस हिन्दी भाषा के ग्रंथ में भाषा, व्याकरण व वाक्य रचना के अनेक दोष रहने पाये है, वैसे तवियत नादुरूस्त होने से ऐसी वातों पर कम ध्यान रहा है. जो कि प्रथम के कितनेक प्रकरणों में लेखक के मित्र मा. गणेश सदाशिव आपटे M. A. L. L. B. (प्रा. से. महाराव साहेव सिरोही) की सहायता ली गई थी, लेकिन पीछेसे पुस्तक जल्दी छपवाने के वास्ते प्रेस में आदमी रखने की आवश्यक्तां होने से प्रुफ देखने का मौका नहीं मिला, जिससे ज्यादह गलती रहने पाई है सो उसके वास्ते सुज्ञ पाठक क्षमा करेंगें, और पुस्तक के विषय व उनकी जरुरियात पर ध्यान फ़ुरमावेंगे. यदि इस ग्रंथ से लेखक की अभिलाषानुसार चौहान कुल के राजपूतों को लेखक के हाथसे कुछ भी सेवा हुई है वैसा मान्य किया जायगा तो लेखक उठाये हुए श्रम का सार्थक होना मानकर संतुष्ट होगा.

इस ग्रंथ की साहित्य सामग्री में जो २ प्रसिद्ध व अप्रसिद्ध पुस्तकें, ख्यात आदि की सहायता ली गई है, उनका उल्लेख योग्य स्थल पर उस पुस्तक के कर्ता व साहित्य देने वाले सद्गृहस्थों के नाम के साथ किया गया है, वैसे प्राचीन गीत कवितों के विषय में जिन २ ×कवि के नाम प्राप्त हुए वह अंकित किये है, जिनके वास्ते इस स्थान पर वे विद्वान लेखकों व कवियों का इस ग्रंथ का लेखक शुक्रीआ अदा करता है, क्यों कि उनकी सहायता से ही यह ग्रंथ रचने पाया है, उनमें खास करके मरहूम मूता नेणशी, और मौजूदा इतिहासकार रा. वा. पंडित गौरीशंकर ओझा व देवडा चौहान का वहुआ लक्ष्मणसिह, जिनके पुस्तकों से इस ग्रंथ में जगह २ सहायता ली गई है, उनका जितना अहसान माना जाय वह कम है. इसी मुआफिक वडोदे के लुहाणामित्र स्टीम प्रिन्टींग प्रेस के मालिक ने इस पुस्तक को कम समय में छाप देने के वास्ते जो तकलिफ उठाई है वह तारिफ के काबील है.

अखिर यह भूमिका समाप्त करने के पहिले लेखक को दूवारा जाहिर करना जरुरी है कि, इस ग्रंथ की रचना के वास्ते साहित्य सामग्री एकत्र करने का मौका प्राप्त करा देने का वहुमान मरहूम महाराव साहेव सर कैसरीसिंह वहादुर को, व पुस्तक छपवाने

× इस ग्रंथ में जाहिर में आये हुए कवियों के नाम १ कवि चंद बारहट, २ कवि अड्डु, ३ कवि पद्मनाभ, ४ कवि आसा, ५ कवि हरसूर बारहट, ६ कवि आसिया माला, ७ कवि आढा दुरशा, ८ कवि आढा किशना, ९ कवि आढा दयालदास, १० कवि आढा महेशदास, ११ कवि संढायच पूना, १२ कवि आसिया दूदा, १३ कवि आसिया दशा, १४ बारहटाणी माद्रेसजी (कवि आसिया दशा की स्त्री.) १५ कवि विहारीदान मेहडु, १६ कवि आढा मुकुन्दास, १७ कवि दधवाडिया खेमराज, १८ कवि आढा प्रयागदास, १९ कवि आढा ओपा, २० कवि आढा खोडीदान, २१ कवि आढा अनजी, २२ कवि आढा राघवदान, २३ कवि आसिया नवलदान, २४ कवि जीवा लांघा, आदि के नाम प्राप्त हुए है वह जगह २ अंकित किये है, वैसे जिनके नाम नहीं मीले वहां पर कवि के नाम दर्ज नहीं हुए है.

की प्रेरणा कराने का मान, निंबज ठिकाने के मौजूदा राजसाहबां महोबतसिंह और पाडिव ठिकाने के ठाकुर साहेब 'सभा भूषण' अभयसिंह व दूसरे देवडे सरदारों को है. वैसे यह ग्रंथ प्रसिद्धि में लानेके वास्ते सिरोही के मौजूदा महाराजाधिराज महाराव सर स्वरूपरामसिंह साहेब बहादुर K. C. S. I. ने कृपा करके जो सुयोग प्राप्त कराया है उसके वास्ते लेखक उन नामदार का सदा ऋणी रहेगा. यदि करोंडों कोस दूर रहे सूर्य को धूप, दिपादि सामग्री से वंदन करके संतोष मनाया जाता है, उस मुआफिक लेखक मरहूम महाराव सर केसरीसिंह के वास्ते परम कृपालु प्रभु से प्रार्थना करता है कि उनके पूण्यशाली आत्मा को परमात्मा अचल शान्ति देवे, और मौजूदा सिरोही महाराव साहेब को तनदुरूस्ती के साथ उत्तम प्रकार की संपत्ति, सन्तति और यश प्राप्ति के साथ दिर्घायुः बक्षे, वैसे इस चौहान कुल में अंकित हुए समस्त चौहानों का सुयश हमेशा बना रहे. अस्तुः विक्रम संवत १९८३ अक्षय त्रतिया. ता. ४ मई सन १९२७ इस्वी. मु. आबुरोड.

ली. सेवक.

लल्लुभाई भीमभाई देशाई.

श्री.

सूचीपत्र.

'चौहान कुल कल्पद्रूम' विभाग पहिला की पृष्टवार विषयानुक्रमणिका.

चौहान कुल कल्प द्रुम.

विभाग १ ला.

प्रकरण १ ला.

' चौहानों की उत्पत्ति व गोत्र. '

चौहान राजपूतों की उत्पत्ति आबू राजमें श्री अचलेश्वरजी महादेव के मन्दिर पास ' अनल कुंड ' से होना दंतकथा, व प्राचीन काव्यों से जाहिर है, वैसे चौहान कुल के वडुए, कुलगुरु, राणीमगा-आदि आश्रितों की पुस्तकों में भी चौहान राजपूतों को अनल वंशी होने का उल्लेख पर्याप्त है, परन्तु चौहानों के बारे में प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकें, शिलालेख, ताम्रपत्रादि साहित्य अब और जाहिर होने के बाद चौहानों की उत्पत्ति के विषय में कितनीक शंकाएँ उपस्थित होने लगी हैं.

राजपूतों का प्राचीन इतिहास सिल सिले वार नहीं होने से ऐसी वातों का स्पष्ट निर्णय नहीं होते तर्क से अनुमान किया जाता है, और वैसा अनुमान दूसरी नई हकीकत प्रसिद्ध होने पर तबदील होता है; इसी कारण से कौन २ राजपूत कुल किस २ वंश के हैं और उनके गोत्रादि क्या २ हैं, ऐसी महत्व की वातों का अभी तक निर्णय नहीं हो सका है, उसी तरह ' सिरोही राज्य का इतिहास ' नाम की पुस्तक में चौहानों को अग्नि (अनल) वंश का होना मानने में कितनीक* शंकाएँ बताई गई हैं.

राजपूत लोग अपने कुल, वंश और गोत्रोचार आदि के वास्ते अपने कुलके वडुओं की पुस्तकों में लिखी हुई वातों पर ज्यादह एतबार रखते हैं. देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक में चौहान राजपूतों का यजुर्वेद, माध्यंदिनी शाखा, पंच प्रवर, अग्निवर्ण, ब्रह्म गायत्री, अनल वंश, वत्सगोत्र, आशापुरी अम्बिका देवी, वगैरह होना लिखा है. इसी मुआफिक राज पुरोहित व कुल गुरु की पुस्तकों में भी नूंद हैं. ' पृथ्वीराज रासा ' नाम की पुस्तक में चौहानों की उत्पत्ति अनल कुंड में से होने का लिखा गया है, परन्तु ' पृथ्वीराज रासा ' नामक पुस्तक चंद कवि के नाम से वि. सं. १६०० के बाद किसी कविने रची हैं, ऐसा इतिहास वेत्ताओं का अनुमान है, और साथ यह भी अनुमान किया

* इस शंका के कारण के वास्ते ' सिरोही राज्य का इतिहास ' नामक हिन्दी पुस्तक जो रा. ब. पंडित गौरीशंकर ओझा ने रची है उसका पृष्ठ १५८ से १६१ तक देखो.

जाता है कि पृथ्वीराज रासा में चौहानों को अग्नि वंश होना लिखने से ही वडुए आदि राज्य आश्रितों ने यह हकीकत पीछेसे अपनी पुस्तक में दर्ज की है.

वडुओं की पुस्तके कितने दर्जे सही है इस बाबत सिरोही के देवडा चौहानों का वडुआ लछमनसिंह की पुस्तक पूरे तौर से जांच करने से मालूम हुआ है कि जालोर के सोनगरा राव समरसिंह के पुत्र माणीजी उर्फ मानसिंह था, जो विक्रम संवत की तेरहवीं सदी में विद्यमान था, उनसे लगाकर आज दिन तक उनकी औलाद वालों के नाम श्रृंखला बद्ध सिल सिले वार पुस्तक में दर्ज हुए हैं और उसमें से उनके मुताल्लिक जो नामावली उपलब्ध हुई है वैसी नामावली प्राप्त करनेकी सामग्री या साहित्य किसी इतिहास वेत्ताओं के पास हरगिज नहीं मिलेगा. तात्पर्य यह है कि अगर 'पृथ्वीराज रासा' नामकी पुस्तक वि. सं. १६०० के आसपास में लिखी गई है तब भी उसके पेश्तर दोसौ तीनसौ वर्षों पहिले का हाल वडुओं की पुस्तक में सिल सिले वार अंकित मिला है, इसी से पाया जाता है कि वि. संवत् की तेरहवीं सदी पेश्तर भी चौहानों को 'अनल वंश' के होने का वडुओं की पुस्तक में उल्लेख है, ऐसी हालतमें 'पृथ्वीराज रासा' पर से ही अनल वंश के होने की बात मशहूर हुई है ऐसा मानना उचित नहीं हो सकता.

देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक में चौहानों की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि आद्य पुरुष 'चाहराजा' त्रेता युग में अर्बुद पहाड के अनल कुंड से उत्पन्न हुआ था. जिसके वास्ते निम्न लिखित गीत लिखा हुआ है.

"अनल कुंड से ऊपन्या, अर शर फेरी आण, आबू से एवाडगढ चाह वसे चौहाण."

इसी प्रकार सिरोही के राज पुरोहित की पुस्तक में चौहानों की उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि—"श्रीभगवान् ने चार डाभके (दर्भके) पुतले ब्रह्माजी को दिये जो लेकर ब्रह्माजी आबू पर गये और होम करने लगे. अनल कुंड के जल में पहिला पुतला डाला, जिससे चार भुजा वाला, चार नेत्र वाला, चाहमान पैदा हुआ. बाकी तीन पुतलों से चालुक्य, पडिहार तथा परमार पैदा हुए." इस विषय के समर्थन में जो गीत उनकी पुस्तकसे उपलब्ध हुआ है वह यह है कि—

"अनल कुंड से उत्पन्न ऋषि ब्रह्मा उपाई, जिण पछे जे लंब खत्री चहुआण कहाई."

चौहानों की उत्पत्ति के विषय में गत सौ वर्षों में जो जो साहित्य प्रसिद्ध हुए हैं उनमें एक दूसरे के विरुद्ध हकीकत पाई गई है यानी—

१. टॉड राज स्थान में चौहानों का सामवेद, सोमवंश, माध्यंदिनी शाखा, पंच प्रवर आदि अंकित हैं.

२. आबू पर वि. सं. १३७७ का शिला लेख जो सिरोही राज्य स्थापन करने वाले महाराव लूंभा के समय का है उसमें लिखा है कि–" पृथ्वी पर सूर्य और चंद्र वंश अस्त हो गये तो वत्स ऋषि ने दोप के भय से ध्यान किया. वत्स के ध्यान से चंद्रमा के योग से एक पुरुष उत्पन्न हुआ, जिसने चौतरफा दैत्यों को देखा और उनको अपने शस्त्र से मार कर वत्स को संतुष्ठ किया." यह पुरुष चंद्र के योग से उत्पन्न होने के कारण 'चंद्रवंशी' कहलाया.

३. चौहानों के वास्ते प्राचीन साहित्य में सब से प्राचीन ग्रंथ 'पृथ्वीराज विजय' नामक है. जो 'पृथ्वीराज चौहान' के राज्य काल में लिखा जाना स्वीकार किया जाता है. उस ग्रंथ में चौहान राजपूतों को 'सूर्यवंशी' होनेका स्पष्ट उल्लेख है.

४. उपर्युक्त ग्रंथ होने के पेश्तर विजोलिया का शिलालेख वि. संवत १२२६ में लिखा गया है, उसमें चोहानों के वंश के वास्ते उल्लेख नहीं है, परन्तु 'वत्सगोत्र' होना लिखा है.

५. बाद में वि. संवत् १३२६ में सुंधा पहाड का शिलालेख लिखा गया जिसमें भी वंश के लिये जिकर् नहीं है मगर 'वत्स गोत्र' होना लिखा है.

६. उपर्युक्त शिलालेख के बाद 'हमीर महा काव्य' नामक ग्रंथ लिखा गया. जो वि. सं. १४६० के आसपास में लिखा जाने का अनुमान किया जाता है. उसमें चौहानोंकी उत्पत्ति के विषय में लिखा है कि ब्रह्माजी यज्ञ करने के वास्ते पवित्र भूमि की शोध कर रहे थे, उस समय उनके हाथ से कमल गिर गया. वह पवित्र भूमि 'पुष्कर' तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध हुई. उसी स्थान पर यज्ञ करना प्रारंभ किया परन्तु दैत्यों के भय से यज्ञ रक्षा के वास्ते उन्होंने सूर्य का ध्यान किया, जिस पर सूर्यमंडल से दिव्य पुरुष उतर आया उसने यज्ञ की रक्षा की वह पुरुष चाहमान कहलाया. और ब्रह्माजी की कृपा से महाराजा बन कर राजाओं पर राज करने लगा."

७. 'कान्हडदे प्रबंध' नामकी पुस्तक जो वि सं. १५४५ में लिखी गई है उसमें चौहानों को सूर्यवंशी होना लिखा गया है.

८. 'वंशभास्कर' नामक पुस्तक जो विक्रम संवत् की १९ वीं सदी में हाडा चौहानों के यश गान के वास्ते बनाई है, उसमें चौहान राजपूतोंका सूर्यवंशी होना साफ जाहिर है.

उपरोक्त साधनोंसे पाया जाता है कि आबूराज का शिलालेख जो वि. सं १३७७ में लिखा गया है, उसमें चौहानों को चंद्रवंशी होना बगैर आधार के लिखा गया है और उसी पर से टॉड राजस्थान में चौहानों को सोमवंशी होनेका उल्लेख किया गया है.

वस्तुतः पृथ्वीराज विजय, हमीर महाकाव्य, कान्हदे प्रबंध, व वंशभास्कर की पुस्तकें जो खास चौहान वंशके राजाओं की यशोगान के वास्ते रची है, उस पर आधार नहीं रखते आबूका शिलालेख जो पीछे से लिखा गया है, उस पर ज्यादह वजन रखना उचित नहि है, क्यों कि सूर्य के बदले ' चंद्र ' लिख देनेकी भूल भी हुई हो. चौहानो को अनल वंशी होने का जो कहा जाता है, उसका कारण यह भी होना संभवित है कि बहुतसे राजपुत जो रघुवंशी है वह ' सूर्यवंशी ' कहलाते हैं. और सूर्य का वर्ण अनल जैसा होने से चौहानों की उत्पत्ति रघुवंशी (भानुकुल) में से नहीं होते, सूर्य मंडल से चाहमान उतरा था जिससे से सूर्य को ' अनल ' का अलंकार देकर ' अनल वंशी ' होना भाटों ने लिखा हो ऐसा पाया जाता है.

चौहानों का गोत्र ' वत्सगोत्र ' होना जगह जगह लिखा गया है जिससे उसके लिए कोइ शंका नहीं है.

प्रकरण २ रा.

' चौहानों के प्राचीन राजस्थान. '

चौहान राजपूतों का मूल पुरुष ' चाहमान ' होना इतिहास वेत्ताओं ने भी स्वीकार किया है, परन्तु उनका राज्य कहां था और जब से सांभर में राज्य कायम हुआ उसके पहिले कहां २ राज्य किया उसका किसी इतिहास में वर्णन नहीं है. जो जो शिलालेख व ताम्रपत्र प्रसिद्ध हैं, उन्हों में सांभर राजस्थान होने बाद का हाल लिखा हुआ है. 'हर्ष' का लेख जो सब से प्राचीन (वि. सं. १०२६ का) है, उसमें शुरुमें सांभर के ' गूवक ' नामके पुरुष का नाम अंकित हुआ है. बाद में बिजोलिया के वि. सं. १२२६ के शिलालेख में ' सामन्त ' नामक पुरुष से हाल शुरू होता है, उससे सातवीं पुश्त पर ' गूवक ' का नाम आता है. नाडोल के वि. सं. १२१८ के ताम्रपत्र व सुंधा पहाड के वि. सं. १३१६ के शिलालेख में नाडोल के ' लाखणसी ' से इतिहास शुरू होता है.

उपर्युक्त शिलालेखादि साहित्यों के सिवाय जो प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकें प्रसिद्ध हैं, उन्हों में—

१. 'पृथ्वीराज विजय' जो वि. सं. १२२४ से १२५६ के दरमियान में लिखा जाना अनुमान सिद्ध है, उस पुस्तक में 'चाहमान' को मूल पुरुष बता कर उससे तीसरी पुश्त पर 'सामन्तराज' का नाम बताया है, जो बिजोलिया के लेख में पहिला नाम है, इसी सामन्तराज ने सांभर में राज्य कायम किया वैसा उल्लेख करने में आया है.

२. 'प्रबंधकोष' नामक ग्रंथ वि. सं. की पंदरहवीं सदी में लिखा जाना अनुमान प्राप्त है, उसमें 'वासुदेव' के नाम से शुरूआत होती है, जिसको 'पृथ्वीराज विजय' में 'चाहमान' के बाद में होना लिखा है।

३. 'हमीर महा काव्य' यह पुस्तक भी पंदरहवीं सदी का होना स्वीकार किया गया है, जिसमें मूल पुरुष 'चाहमान' से इतिहास लिखा है, पन्रतु उनका राज्य कहां था उसका जिकर् नहीं है.

४. 'कान्हडदेव प्रबंध' वि. सं. १५४५ में लिखा गया है, उसमें पहिले के राजाओं का इतिहास नहीं लिखा है.

५. 'सुर्जन चरित्र' यह पुस्तक वि० सं० की सतरहवीं सदी में हाडा चोहानों के यश-गान में लिखी गई है, उसमें 'वासुदेव' के नाम से शुरूआत होती है. इस

वासुदेव का राज्य ' वृंदावती ' में होना लिखा है. वादमें उससे तीसरी पुश्त पर अजयपाल हुआ जिसने अजमेर बसाया ऐसा उल्लेख किया है.

६. 'मूतानेणसी की ख्यात' इस नामकी पुस्तक वि० सं० १७२१ पहिले लिखी गई मालूम होती है, उसमें नाडोल के राव 'लाखणसी' से इतिहास शुरू होता है.

७. ' वंश भास्कर ' यह ग्रंथ वि. सं. की उन्नीसवीं सदी में लिखा गया है. इसमें मूल पुरुष ' चाहमान ' से इतिहास शुरू होता है और उससे ३८ वीं पुश्त पर ' सहदेव ' हुआ, जिसका राज ' इंद्रप्रस्थ ' में था, उसके वाद ५० वीं पुश्त पर ' अजयपाल ' हुआ जिसने ' अजमेर वसाया. ९५ वीं पुश्त पर ' महानंद ' हुआ जिसका राज ' कर्णाटक ' में था. बाद ११० वीं पुश्त पर ' माणकराज ' हुआ, उसके बड़े पुत्र ' हनुमान ' का राज्य ' पाटली पुत्र ' में और छोटे ' सुग्रीव ' का राज्य ' सांभर ' में हुआ.

८. ' टॉड राज स्थान ' में वि. सं. ८१३ में भडौंच (गुजरात) में चौहान 'भर्तृवृद्ध'(दूसरे) नामक राजा होने का उस समय के ताम्र पत्रसे पाया गया है, वल्कि ' सिरोही राज्य का इतिहास ' नामक पुस्तक में साँभर में चौहान राजा 'गूवक' होनेका उल्लेख करने में आया है.

चौहानों का प्राचीन राज्य का कुछभी इतिहास मिल सके ऐसे साहित्यों पर अब तक इतिहास वेत्ताओंकी संपूर्ण दृष्टि न होते उन साहित्योंको शंका की दृष्टि से देखा जारहा है. वे साहित्य, जैसा कि वहुओं के व कुलगुरू आदिकों के चौपडे, प्राचीन कवियो के गीत कवित्त, काव्य, और प्रशंसा युक्त हस्त लिखित गद्य के पुस्तकों वगैरह है. उससे क्या २ उलभ्य है वह देखना अनुचित न होगा, क्यों कि प्राचीन शिलालेख व हस्त लिखित पुस्तकों में भूतकाल के जो जो हाल अंकित हुए है उनकी बुनियाद भी दंत कथा, गीत-कवित्त, और ऐसेही प्रशंसा के वास्ते समयानुसार रचे हुए काव्य आदि हैं. और जब कि पूर्व काल में श्रृंखला वद्ध इतिहास लिखने की प्रणाली ही नहीं थी तब यही साहित्य इतिहास के वास्ते काम में लिये जाते थे, इस कारण ऐसे साहित्यों को भी विचार में लेना आवश्यक है.

देवडा चौहानों के वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि चाहमान या चाह राजा नामक पुरुष अनल कुंड से पैदा हुआ, इसने ऋषियों का यज्ञ संपूर्ण कराकर पूर्व में 'एवाड गढ ' में अपना राज्य स्थापित किया. इस विषय में ×निशाणी है कि:-

" अनल कुंड में उपन्या अरशर फेरो आण, आबू तें 'एवाड गढ' चाह बसे चौहाण.

× कवि लोक वार्तालाप में जो प्राचीन गीत, कवित्त मुख पाठ रखकर बोलते है उसको ' निशाणी ' कहते है.

चाहमान से ३१ वीं पुश्त पर 'सोनपाल' नामक राजा हुआ, उसने 'एडाणां गढ' जो पूर्व में है, वहां अपना राज्य स्थापन किया. सोनपाल राजा महान् वीर पुरूष था. उसका प्रताप अचल था. कहा जाता है कि उसके समय में मृगों के कानों में सुवर्ण कुंडल पहिनाए गये थे, उनके हाथ लगाने की भी किसी की शक्ति न थी. जिसके वास्ते कवि ने निशाणी कही है किः—

"सोनपाल गतिया पूरक कनक वाडला कुरग, एडाणे चहुआणिये करी अडगल वात अडग."

चाहमान से ६१ वीं पुश्त पर 'यज्ञ पाल' राजा एडाणा गढ में हुआ, जिसने सात यज्ञ किए. उसके वाद वीस पुश्त गुजरने पर ८१ वां राजा अजयपाल हुआ, जिसने अजमेर वसाया. यह चक्रवर्ती होना गिना गया है. इसके समय में लंका में रावण राजा था. रावण के साथ कई वार युद्ध करके उस पर विजय प्राप्त करने से यह चक्रवर्ती राजाओं की पंक्ति में दाखिल हुआ, लेकिन इसकी वृद्धावस्था में रावण ने इस पर विजय प्राप्त की थी. इनको चक्रवर्ती राजाओं की पंक्ति में रखने के विषय में निशाणी है किः—

"वडो वेन पडिहार जण कर काहुपर नहीं लियो, वलवेहरी चकवे वसो वामन को दियो"
"धंधुमार चकवे हुओ रघुवंश नरंदा, 'अजेपाल' चकवे तास मुंगो समुंदा."
"परु पवार चकवे तण सूरज संकवे, एते उगे आथमें कियो राज मान्धाता चकवे."

अजमेर वसाने वाद चाहमान से १२० वीं पुश्त पर 'वनेपाल' राजा अजमेर में हुआ, उस समय 'त्रेतायुग' का अंतिम् काल था. उनका पुत्र 'योगराज' गद्दी नशीन होते ही 'द्वापरयुग' शुरू हुआ था. योगराज से वारहवीं पुश्त पर 'चतुराजा' हुआ, जिसकी गिनती वारहों वाणावलो की पंक्ति में हुई थी. जिसके विषय में निशाणी है किः—

"वाणासूर, दशरथ भडां सुख राम भणिजे; टपरा तुर दासने करण भरत गणिजे."
"लछमन लव ने कुश वडा धनु पति वखाणा; 'चतु' अर्जुन ने घटु जग में एत्ता जाणा."
"वचन ज्ञान कथीओ वलेअभंगज्योत अवला वली; नारायणने वंदिया वारे राजा वाणावली."

चाहमान से २०७ वीं पुश्तपर + 'वसुदेव' हुआ. उसका राज्य कहां था यह नूंद नहीं है. यह राजा द्वापर युग के अन्त समय में हुआ. वंशभास्कर के ग्रंथ में यह श्रीकृष्ण भगवान् से मोक्ष गति हुआ ऐसा लिखा गया है. इनके वाद 'नरदेव' हुआ और उससे* सोलहवीं पुश्त वाद (चाहमान से २२४ वीं पुश्तपर) पंड राजा हुआ. पंड राजा की

+ देवडा चौहानों के वहुआ की पुस्तक में चाहमान से ८६ वीं पुश्तपर 'सहदेव' नामक राजा होना लिखा है, जो, वंशभास्कर के ग्रंथ में ३८ वीं पुश्तपर बताया है. इस 'सहदेव' का राज्य 'इन्द्रप्रस्थ' में था. जब कि 'भिष्मपितामह' के पिता शान्तनु राजा ने दिग्विजय किया तब सहदेव से इन्द्रप्रस्थ ले लिया, जिससे सहदेव के वंशजोंने 'पोण्ड' व कर्णाटक में अपना राज्य स्थापन किया.

* सोलह पुश्त होना ठीक पाया नहीं जाता, क्यों कि द्वापर युग समाप्त होने बाद विक्रमादित्य के समय तक में करीब तीन हजार वरस का अन्तर है.

राणी सूरजकुंवर गढ वैराट के गेहलोत राजा रूपसिंह की पुत्री थी जिससे पुत्र जामनीभाण व पुत्री 'जेलणदे' हुई. जेलणदे का लग्न उज्जैन के परमार वीर वीक्रमादित्य से हुआ था. पंड राजा का राज्य पूर्व में 'पंढरपुर' में था, लेकिन उनके पुत्र जामनीभाण ने अजमेर हस्तगत कर वहां अपना राज्य स्थापन किया. उससे चार पुश्त होने पर 'वागराजा' हुआ, जिसके हाथ से अजमेर चला गया, जिससे उसने पूर्व में 'विलोरगढ' में वि. सं. ३०५ में राज्य कायम किया.

चाहमान से २३३ वीं पुश्त पर 'समरसी' हुआ, जिसने रावराजा का पद प्राप्त किया और वि. सं. ५६५ में सांभर–गढ में अपना राज्य स्थापन किया. (इसी का नाम सामन्तसिंह होना दूसरे ग्रन्थों से पाया जाता है).

' पूर्विया चौहानों का इतिहास ' के विषयमें इलाहिदा प्रकरणमें अहवाल अंकित हुआ है उससे मालूम होगा कि–चौहानों में प्राचीन समयमें 'रिषिराज' कहलाते राजाओंने ' जगत नगर ' में राज किया, वाद में ' सदापाल ' हुआ उसने अपना शिर काट कर कमल पूजा की थी. इसी कुल में ' ध्वजपाल ' हुआ जिसने ' सहमाला ' नगर में सवा क्रोड दाम खर्च करके केदारनाथ को ध्वजा चढाई. इससे कितनीक पुश्त पर 'गंगपाल' हुआ उसने काश्मीर में तीन क्रोड दाम खर्च कर तलाव बंधाया. इसी कुल में 'मलपाल' हुआ जिसने गढ टंकारी में 'भान' मन्दिर वनाया. उससे कितनीक पुश्त वाद अजेपाल हुआ जिसने राजा रावण के पास खिराज ली थी.

इसी कुल में 'दुर्गपाल' हुआ इसने 'सैंभाल' नगर में राज किया. वाद टंकपाल नाम का राजा ने टंकारी में राज किया. इससें कितनीक पुश्त पर वज्रदित हुआ जिसका राज्य गोदावरी पर था. और इन के वाद के राजाओं ने मद्रनगर, मांडलपुर, गढ गागरुन, अमरपुरी, हरिगढ आदि स्थानों में राज किये. वाद कलीयुग का प्रारंभ हुआ. कलीयुग में ११४ पुश्ते गुजरने पर वि. सं. ७०३ में सांभर में 'माणकराव' नाम का राजा था.

देवड़ा चौहान का बडुआ लक्ष्मणसिंह व उसके दो पुत्र.

बडुआ लक्ष्मणसिंह व उसके दो पुत्र.

[विभाग पहिला पृष्ट ९]

The Luhana Mitra P. Press, Baroda.

प्रकरण ३ रा.

चौहानों की प्राचीन शाखाएँ.

चौहान राजपूतों की दश शाखाएँ साँभर से और चौवीस शाखाएँ नाडोल से इलाहिदी होना दंतकथा व भाटों के पुस्तक से पाया जाता है. राजपूतों में मुख्यतः गाम के नाम से अथवा अपने खानदान के नामी पुरुष के नाम से शाखाएँ प्रसिद्ध होने का प्रचार है. आज कल चोहानादि राजपूतों में इतनी शाखाएँ विद्यमान हो गई हैं कि उनकी प्राचीन शाखाएँ कौनसी थीं यह मालूम हाना मुश्किल है. ऐसी शाखाएँ प्रायः अपने खानदान में बुजर्ग पुरुष के नाम से कही जाती हैं, जिसके नाम के पीछे 'ओत' या 'वत' (यानी अमुक पुरुष की ओलाद.) लगाया जाता है.

चौहान व दूसरे सब राजपूतों में एक कुल के वंशज हों, वे सब 'भाई वन्धु' गिने जाते हैं. जिससे एक ही कुल में परस्पर लग्न होने का निषेध है. कौन २ अपने भाई बन्धु हैं यह अपने २ भाटों के चोपडे से मालूम हो सकता है. शाखाओं के वास्ते सिवाय वहुओं की पुस्तक के अन्य साधन कहीं भी प्राप्त होना मुश्किल है. अगर वहुओं से अपना कुल का व शाखाओं का हाल अंकित कराने का प्रचार न होता तो गोत्रादिक की तसदीक होने में जरूर झगडा रहता. ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करने वालों को वहुओं के चौपडे की कदर नहीं है, लेकिन समाज अपने २ वहुओं की तरफ वहुमान की दृष्टि से देख रही है. वह अपने खानदान का सम्पूर्ण और सच्चा इतिहास उनके चौपडे में होना स्वीकृत करती है, वलिक न्याय व हकदारी के कार्य में उन पर विश्वास रखने का प्रचार है.

चौहानों की दश शाखाएँ सांभर से अलग होने का कहा जाता है, वे दश शाखाएँ दर असल कौन २ हैं ? यह विवाद ग्रस्त वात है. इनके विषय में जो इतिहास प्राप्त हुआ है उसमें सांभर से निकली हुई शाखाओं में १ सांभरिया चोहान, २ माहील चौहान, ३ पूर्विया चोहान, ४ भदोरिया चौहान, ५ पंजावी चौहान, ६ मामा चौहान, ७ चांदाणा चौहान, ८ वगडावत व ९ नाडोल के चौहान होना पाया जाता है.

सांभर से अलग हुई दश शाखाओं की वंशभास्कर, वहुआ की पुस्तक व सिरोही के राज पुरोहित की पुस्तक में नुंद है, परन्तु इन पुस्तकों से उपलब्ध होती शाखाओं के नामों में तफावत है. उनमें +मुळ पुरुष का नाम ' माणकराज ' होना अंकित हुआ है. लेकिन जो इतिहास प्रसिद्ध है उसमें सांभर में 'माणेकराज' नाम का राजा होने का दाखला ही नहीं है. माणकराज का समय वि. सं. की आठवीं सदी का होना देवडा चौहानों के

+ पूर्विया चौहानों के इतिहास में ' लाखणसी ' से चौवीस शाखाएं होने का लिखा गया है.

वडुआ की पुस्तक से मालूम होता है. वाद में इनके पुत्रों सें जो जो शाखाएं हुई, वे नीचे मुआफिक है.

१ वंश भास्कर मुआफिक.

नाम पुत्र	नाम शाखा
१ मूबकर्मा	१ पूर्बिया
२ लालसिंह	२ मान्द्रेचा
३ हरिसिंह	३ धुंधेडिया
४ शार्दूलसिंह	४ पंजाबी
	५ टंकरा
५ पूर्णराज	६ भेदोदीडा
६ माक्किक राज......	७ सोनगरा
७ निर्वाण	८ नीरबाण
	९ देवडा
८ कृष्णराज	१० पंडिया
९ लखमणराज	११ गुजराती
१० प्रघाल	१२ बगसरोआ

नोट-नं. १-२-४-६-७-१०-११-१२ यह शाखाएं राजस्थान के नाम से मशहूर हुई हैं.

२ देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक से.

नाम पुत्र	नाम शाखा
१ जोतराय	१ मामा
२ जेवराय	२ सांभरिया
	३ पूर्बिया
३ चांदराय	४ बगडावत
४ भदोराव	५ मदारिया
५ नरोराय	६ नरवाण
६ पवोराय	७ पावेचा
७ चाहलराय	८ चाहलिया
८ हमीर राय	९ खीची
९ चांदराय	१० चांदाणा
१० मोहीलराय	११ ओलाद नहीं

नोट-नं. २-३-५-७ यह शाखाएं राजस्थान के नामसे मशहूर है.

३ राज पुरोहित के वहां की राजावली से.

नाम पुत्र	नाम शाखा
१ राव जोत	१ मामा
२ जेराव	शाखा नहीं लिखी-(सांभर)
३ चांदराव	२ बगडावत
४ भदोराव	३ भदोरिया
५ राव नरो	४ नरवाण
६ राव वाग	५ खीची
७ राव अष्टपाल......	६ हाडा
८ राव पवो	७ पूर्बिया
९ राव माल	ओलाद दर्ज नहीं की
१० राव मोहील......	ओलाद दर्ज नहीं की

नोट-नं. ३-७ की शाखाएं राजस्थान के नाम से मशहूर हुई हैं.

उपर्युक्त शाखाओं के चौहान वर्तमान समय में कहां २ विद्यमान है, उस बावत वडुआ की पुस्तक में ज्यादह खुलासा है. इन शाखाओं में सोनगरा, नरवाण, देवडा, खीची, पावेचा व हाडा शाखा के चौहान सांभर के शाखा सें इलाहिदा न होतें नाडोल की शाखा म से अलग होनेका ऐतिहासिक साहित्यों से सिद्ध हुआ है, जिसका वृतांत नाडोल की शाखाओं में लिखा गया है. बाकी रही शाखाओं के वास्ते यह मालूम हुआ है कि-

१ मामा चौहान-इनका युद्ध में नाश हुआ, जो वर्तमान समय में भी जगह २ मामादेव के नाम से पूजे जाते हैं.

२ सांभरिया चौहान-की ओलाद में 'महान् पृथ्वीराज' हुआ, जिसकी ओलाद में

नोट—नरवाण चौहानों के वास्ते कहा जाता है कि वह देवडे चौहानों में से निकले हुए हैं. वर्तमान समय में देवडे चौहानों का स्थान सिरोही राज्य है, परन्तु जिस शाखामें से नरवाण चौहाण निकलने का कहा जाता है वह देवडा शाखा सिरोही के देवडों की शाखा से भिन्न थी. नर वाण देवडों की शाखा नाडोल से अलग हुई या सांभरे से इस विषय में देवडा चौहानों का प्रकरण में उल्लेख किया गया है.

पंजाबी चौहान की शाखा का प्रमाण प्राप्त नहीं हुआ, पाया जाता है कि पूर्बिया चौहानों की शाखा वालोंने पंजाब में निवास करने से 'पंजाबी' कहलाये हैं.

रणथंभोर का 'हमीर हठीला' हुआ, और उनकी ओलाद वाले वर्तमान समय में मेवाड के प्रदेश में 'वेदला, कोठारिया व पारसोली' के सांभरिये चौहान हे. वडुआ की पुस्तक में लिखा हे कि पृथ्वीराज का एक भाई 'काकस कुमार' युद्ध में कैद हो गया था, जिसके साथ महमुदगोरीने अपनी बेटी विहा कर उनको मुसलमान किया. उनकी ओलाद वाले 'कायमखानी' कहलाये. उन लोगों की जागीरें वर्तमान समय में फतहपुर, फतियावाद व जुञाणा म हे.

३ पूर्विये चौहान–पृथ्वीराज का काका कान्ह की ओलाद वाले हैं, जिसके वंशज इटावा, मकराणा, नीमराणा आदि स्थान म हे, वैसे मालवे में भी कडोदिया, नामली व पंचड आदि जगह पूर्विये चौहान विद्यमान है.

४ वगडावत चौहान–चांदराव से पांचवीं पुश्त पर 'वागराव' हुआ, उसके नामसे मशहूर हुए. देवडा चौहान के वडुआ की पुस्तक में लिखा हे कि वागराव से चौवीस 'वगडावत' हुए थे. उनका स्थान राणभणाई (अजमेर के पास) था. वे सब 'गोथा' नामक गांव में आपस में लडकर मारे गये. वर्तमान समय में मालवे में 'सैंधिये' नामक लडायक जात मशहूर हे, वे वगडावत चौहानोंकी ओलाद वाले हैं.

५ भदोरिया चौहानों के वास्ते एक मत ऐसा हे कि वह पूर्विया चौहानों में से निकले हुए हैं, लेकिन वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि माणकराव का पुत्र 'भदोराय' ने अपने नाम से 'भदोर' वसाया, जिससे 'भदोरिया चौहान' कहलाये. वर्तमान समय में 'मेनपुरी' (महदपुरी) के चौहान उनमें मुख्य हे. मेनपुरी के चौहानों का वंशज पूर्व में व मालवे में जगह २ बिखरे हुए हैं, जो खुद को 'पूर्विये चौहान' होना वताते हैं. मालवे में लालगढ, रामगढ व घरडा आदि स्थान में मेनपुरी की शाखा के चौहान हे. पूर्विया चौहानों की ख्यात से 'भदोरिया' शाखा भिन्न होना पागा गया हे. पाया जाता हे कि वे पूर्व से आने के कारण पूर्विये चौहान कहलाते हैं.

६ चाहलिया, धुंधेडिया व घगसरिया चौहान कहां हे उसका पत्ता नहि चला हे.

७ चांदाणा चौहानों के विषय में इतना ही मालूम हुआ हे कि मेवाड मे गुडा (भूतेला) नामक गाँव में भीमजी चांदाणा नामक चौहान था. जिसकी पुत्री का विवाह महाराणा लक्ष्मणसिंह का पाटवी कुमार अरिसिंह के साथ हुआ जिससे महाराणा हमीर का जन्म हुआ था.

८ मोहील चौहानों के विषय में उनकी ओलाद न होना उपर्युक्त प्रमाणो में लिखा हे, परन्तु 'मूतानेणसी की ख्यात' व 'कान्हडदे प्रबंध' के पुस्तक से व दूसरे ऐतिहासिक प्रमाणों से पाया जाता हे कि मोहील चौहानों का १४०० गाँवों का राज्य 'छापर–द्रोणपुर' व वाहडमेर में था. जिनका प्रदेश राठौड जोधा (जोधपुर वाला) ने छीन लिया. वर्तमान समय म मोहील चौहानों की जागीरें कहां हे वह मालूम नहि हुआ हे.

उपर्युक्त चौवीस शाखाओं के सिवाय टॉड राजस्थान, मूता नेणसी की ख्यात व वडुआ की पुस्तक में दूसरी कितनीक शाखाओं के नाम उपलब्ध होते हैं, वे यह हैं कि—

१ टॉड राजस्थान में १ कायमखानी, २ सूरवानी, ३ लोहानी, ४ कुरुवानी व ५ वेदवान ये शाखाएं मुसलमान हुए चौहानों की है.

२ मूता नेणसी की ख्यात में १ वागडिया, २ साँचौरा, ३ कापलिया, ४ वाव के चौहान व मुसलमान हुए चौहानों में ५ कायमखानी होने का उल्लेख किया गया है.

३ सिरोही के वडुआ की पुस्तक में १ मुडेचा, २ हुरडा, ३ वागरेचा, ४ मुलेवा, ५ डुग, ६ सेवटा, ७ गलेचा, ८ गल व एक भाई भंडारी महाजन हुआ जिसकी आधी शाख वताई है.

उपर लिखी हुई शाखाओं के विषय में वंश भास्कर व पूर्विया चौहानों की ख्यात की पुस्तक सें कितनीक शाखाओं के नाम उपलब्ध होते हैं. जो कि वे शाखाएं सांभर सें हो विभक्त होने का उन पुस्तकों में उल्लेख कियाहै, और वेसा होना दूसरे इतिहास से विरूद्ध है, तव भी शाखाओं की नामावली के वासते चौहानों की हरऐक शाखाओं के नाम अंकित करना आवश्यक होने से उक्त पुस्तकों सें उपलब्ध होती शाखाओं के नाम लिखे जाते हैं.

१ वंश भास्कर की पुस्तक मुताविक मूहकर्मा के पहिले निकली हुई वारह शाखाओं के नाम सांभर से निकली हुई शाखाओं मे अंकित हो चूके हैं. उसके वाद दूसरी ४३ शाखाएं होना उक्त पुस्तक सें पाया जाता है, जो नीचे मुआफिक है.

रुद्रदत्त (चलू वंश भास्कर)

ईश्वर २६ भैरव (भैरव) २७ खेरव (खेरव) २८ अंभवाज (अभाणा) २९ वाघ (वाघोरा) ३० अधनदेव (अधनेचा)

३१ सरखेल (सरखेला) ३२ बहलुक (बहोला) ३३ गजलदेव (गवला) ३४ तीलवाड (तीलवाडिया)

३५ चीवक (चीवा) ३६ सर्पट (सरपटा) ३७ चित्रराज (चित्राना) ३८ चंडालिक (चंडालिया)

३९ चाहड (चाहडिया) ४० वट (वडेरा) ४१ मोरीक (मोरी) ४२ रेवत (रेवड) ४३ वंकट (वंकट)

४४ चंदन (चांदन उर्फ चांदाणा) ४५ मयुरध्वज (मोरेचा)

४६ परवत (पविया) ४७ तुष्टपाल (साँचौरा)

उमादत्त

चतुर ४८ वच्छल (वाछल) ४९ प्रवालक (पावेचा) ५० झुम्मर (झुम्मरिया)

सोमेश्वर ५१ तुलसी (तुलसीरखणा) ५२ सल (सलाउत उर्फ सेलोत)

भरत ५३ उरथ (हाडा)

युधेष्टर के बाद उनके पुत्र 'महिसिंह' व इनका पुत्र 'सिंह' व इनके बाद चंद्रगुप्त

प्रताप आरत्न

इनसे सत्तरहवीं पुश्त पर 'त्रिलदन' ५४ चतुरंग (चौरंग)

५५ पृथ्वीराज उर्फ डीडुर (डीडुरा) अरणुराज

उपरोक्त ५५ +शाखाएं वंश भास्कर के पुस्तक सें होती है और जिसके नाम सें शाखा हुई है. उसके नाम पर संख्या का अंक लगाया है.

२. पूर्वीये चौहानों की ख्यात मुआफिक जहां से शाखाएं विभक्त हुई है (यानी–उक्त पुस्तक में सांभर का 'लाखणसी' के चौबीस पुत्रों से चौहानों की चौबीस शाखाएं होनेका उल्लेख किया है) वह लाखणसी मूल पुरुष चाहमान सें ११२२ वीं पुश्त पर होना बताया हैं. जिसका संक्षिप्त वंश वृक्ष प्रकरण ४ में दिया गया है. इस प्रकरण के वास्ते उक्त पुस्तक सें चौहानों की कौन २ शाखाएं है वह देखने का होने सें वे शाखाएं नीचे बताई जाती है.

+ वंश भास्कर की पुस्तक से चौहानों की शाखाओं के वास्ते जो वंश वृक्ष दिया गया है, उन शाखाओं के मूल पुरुष के नाम विश्वास पात्र नहीं है. सिर्फ ये पुस्तक रचा गया तब चौहानों में उपरोक्त ५५ शाखाएं प्रसिद्धि में थी इतना ही बताने के उद्देश से यह वंश वृक्ष अंकित किया गया है.

नीमराणा की ख्यात पर से 'लाखणसी' के चौवीस पुत्रों की शाखाएं.

नाम	नाम शाखा	स्थान
१ विजयराज	सांभरिया	सांभर
२ वाहड	(यह देवता कहलाया गया)	
३ रूलवंब	हाडा	बूंदी
४ खीं राज	खीची	गागरून (मालवा)
५ राजा भद	भदोरिया	गढ भदावर (पूर्व में)
६ रवी दत्त	आनप्रेचा	श्यामचक्र
७ खुमाणराव	खीचर	खीचाणा (पूर्व में)
८ भोजराज	भवर	भीचोतरा (उत्तरा खंड में)
९ महाराणा	माप्रेचा	गढ सूर (पूर्व में)
१० अंचैद	चीवा	गढ चोवारा (पूर्व में)
११ खिवराव	डेहरिया	गढ डेहरा
१२ कलवतसिंह	कापलिया	गढ कापल (पूर्व में)
१३ नरसिंह	नार	गढ नरवर (पूर्व में)
१४ वलराव	वालीसा	गढ चोढाला
१५ वेगराज	वाघोडा	गढ तालपछाह
१६ गंगदेव	गोलवाल	गढ पछाह
१७ गिरराज	गिल	गिलां कोहर (पूर्व में)
१८ शिवराज	वोडा	मक्षपुर (पूर्व में)
१९ जीवराज	जलापा	गढ जलांणा
२० पदमसेन	पविया	पावागढं (गुजरात)
२१ अलदेव	वील	जगपुर (माळवा)
२२ छिजराज	धधेग	गढ धधेड (७६० गांव)
२३ देवराज	देवडा	सिरोही
२४ सोनंग	सोनगरा	गढ सोनंग जालोर

वस्तुतः चौहान राजपूतों की चौवीस शाखाएं होनेका आम तोर पर कहा जाता है, उस मुताविक टॉड राजस्थान में, मूता नेणसी की ख्यात में, व पूर्विया चौहानों की ख्यात की पुस्तकमें भी चौवीस शाखाएं अंकित करने का प्रयत्न हुआ है, वल्कि जो जो शाखाओं के नाम अपने आसपास के प्रदेश में जाहिर में आये उसको लिख कर चौवीस शाखाओं का मेल वैठाया गया है वंश भास्कर के लेखक ने वंश भास्कर रचने के समय में अपना विशाल ज्ञान, अनुभव व हाडा चौहानों के वडुआ के पुस्तक की सहायता से करीव ५५ शाखाओं के नाम ढुंढ कर अपने पुस्तक में अंकित किये हैं. देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक में दश शाखा सांभरकी और साडा चौवीस नाडोल की वताकर ४४ शाखाओं के नाम अपनी पुस्तक सें प्रसिद्ध किये हैं. इसी मुआफिक टॉड राजस्थान मे सें २९ व नेणसी की ख्यात से २८ नाम प्राप्त हुए हैं.

शाखाओं की उत्पत्ति के विषय में जव तक प्रमाण पात्र इतिहास नहीं प्राप्त हो, तव तक वे शाखाएं कहांसे विभक्त हुई इस प्रश्न पर जोर देना योग्य नहीं है. लेकिन जो जो शाखाओं के नाम जाहिर हुए हैं वे शाखाएं विद्यमान हैं, और उन शाखाओं के चोहान वर्तमान समयमें उसी शाखा के नामसे मशहूर है, जिससे चौहान राजपूतों के वास्ते उनकी सव प्राचीन शाखाएं (वि. सं. की चौदहवीं सदी तक की) एक जगह अंकित हो जानेसे यह प्रकरण लिखनेका हेतु फलीभूत होगा, जिससे वे अंकित की गई है.

१ सांभरिया	२० वालीसा	३९ मलयचा	५९ गीवा	७८ तस्सेरा	९७ मोकरला
२ पूर्विया	२१ सिघणोत	४० हरीण	६० गील	७९ चांचेरा	९८ रतपाल
३ पंजाबी	२२ बागडिया	४१ चाहड	६१ तीलवाडीआ	८० रोसिया	९९ नार
४ वगडावत	२३ कापलिया	४२ माल्हण	६२ नरपदा	८१ नकुत्र	१०० मूलेवा
५ मामा	२४ सोनगरा	४३ मुकला	६३ चिम्राना	८२ भांवरेचा	१०१ हुग
६ भदोरिया	२५ देवडा	४४ चक्रठाना	६४ चंडालिक	८३ रासलिया	१०२ पाणेचा
७ नरवाण	२६ बोडा	४५ सेघटा	६५ वडेरा	८४ डेहरिया	१०३ टाग
८ पंढीया	२७ वालोत	४६ चित्ता	६६ बोडा	८५ विहल	१०४ आन्द्रेचा
९ गुजराती	२८ चीवा	४७ मेरव	६७ मोरी	८६ गेलासण (गलेचा)	१०५ वीवा
१० पावेचा	२९ अवसी	४८ भवर	६८ रेवड	८७ वेस	१०६ जलापा
११ पविया	३० मोहणोत	४९ खैरव	६९ वंकट	८८ ढीमडिया	१०७ भंडारी (महाजन)
१२ चाहलिया	३१ माद्रेचा	५० खीवर	७० बाछल	८९ हुरडा	१०८ सीतामेर
१३ चांदाणा	३२ बुंधेडिया	५१ समावा	७१ झुमरिया	९० गरुडवा	मुसलमान चौहान
१४ मोहील	३३ धधेग	५२ वाघोरा	७२ तुलसीरखणा	९१ वील	१०९ कायमखानी
१५ नाडोला	३४ टंकरा	५४ वघ्नेचा	७३ सेलोत	९२ येगा	११० सूरवानी
१६ हाडा	३५ वगसरिया	५५ वाद्रेचा	७४ चौरांग	९३ गरावा	१११ लोहानी
१७ खीची	३६ वगडिया	५६ सरस्वेल	७५ डांहुरा	९४ अवरा	११२ कुरवानी
१८ बावक्का चौहान	३७ गोलवाल	५७ मोरेचा	७६ सूरेचा	९५ सेजपाल	११३ जुजारखानी
१९ सांचोरा	३८ पुडुवाल	५८ वहोला	७७ संकेचा	९६ ऊलेचा	११४ वेदवान ११५ मडोवरा चौहान

उपर लिखी गई शाखाओं मे भदोरिया, आन्द्रेचा, खीवर, माद्रेचा, वीवा, कापलिया, नार, गिल, बोडा, जलापा, धधेग, भवर, वाघोरा व गोलवाल इन शाखाओं के चौहान पूर्व में व उत्तरा खंड में ज्यादह होना पाया गया है. दूसरी शाखाओं के चौहान राजपूताना, मालवा, मध्य हिंदुस्थान, व गुजरात में ज्यादह है. दक्षिण व हिंदुस्थान के दूसरे प्रान्तों मे चौहानों की छोटी वडी जमीनदारी विद्यमान है, परन्तु वे कौन शाखा के हैं उसका पत्ता नहीं मिला.

नोट:—मोरी शाखा 'परमारों' में है व 'नकुत्र' शाखा तंवर रजपूतों में भी है. चौहानों में 'मोरी' होना वंश भास्कर से व 'नकुत्र' होना टॉड राजस्थान से अंकित किया है दूसरा आधार नहीं हैं. आन्द्रेचा, वीवा व जलापा शाखा नीमराणा की ख्यात से अंकित हुई है. वर्तमान समय में इन शाखाओंकी सैंकडो नई शाखाएं 'नामी' पुरुष के नामसे कहलाइ गई है. जो पुरुष के नाम के साथ 'ओत' लगाकर कही जाती है.

प्रकरण ४ चौथा.

सांभर के चौहानों का ऐतिहासिक साहित्य.

सांभरिया चौहानों के लिये प्रकरण २ में बताने मुताबिक १ हर्ष का शिलालेख, २ बिजोलिया का लेख, ३ पृथ्वीराज विजय नामक पुस्तक, ४ प्रबंध कोश, ५ हमीर महाकाव्य, ६ सूर्जन चरित्र, ७ वंश भास्कर, ८ सिरोही राज्य का इतिहास, आदि प्रसिद्ध ग्रंथ व उनके सिवाय समयानुसार ऐतिहासिक शोध करने वालों की जो जो राय जाहिर है वे मुख्य प्रमाण हैं. इन प्रमाणों के सिवाय वडुओं के व कुल गुरु आदि की पुस्तकों में कितनाक हाल अंकित हुआ है, वैसे ही पुराने जमाने में इतिहास की नुंद रखने वाले राज्य कर्मचारियों के वहां से भी हस्त लिखित पुस्तकें प्राप्त हुई है. उन सब साहित्यों से जो जो इतिहास उपलब्ध हुआ है, तदनुसार हरएक प्रमाण द्वारा अलग अलग वंशवृक्ष इस प्रकरण में दिये जाते है.

वस्तुतः इतिहास वेत्ताओं की तरफ से कोने में पडी हुई और जिनको दीमक खा रही हैं वैसी प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकें जो कितनेक गृहस्थों के वहां से मिल सकती हैं, उनको प्राप्त करने का भी प्रयास होना जरूरी है, तदुपरांत वडुओं आदि राज आश्रितों की पुस्तकें व गीत–कवित्त इत्यादि साहित्यों का भी संग्रह किया जाय तो उसमें से कुछ न कुछ ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होने की उम्मेद रहती है. वडुओं की पुस्तक के विषयमें वर्तमान समय में जो जो राजस्थान है वे राजस्थान जब से स्थापन हुए हैं तब से उनका शृंखलाबद्ध इतिहास मिल सकता है, लेकिन उससे पहिले जमाने की नामावली उस समय में (राज स्थापन होने के समय पर) याद–दाश्ती पर से किंवा प्राचीन दंतकथा, गीत-कवित्त आदि जो कुछ मालूम हुआ है उस पर से उन्होंने लिख ली है. इस कारण से वर्तमान राजाओं के वंश की नामावली राज स्थापन होने बाद की उनकी पुस्तक से ठीक २ मिलती है और पूर्वकाल की नामावली अपूर्ण, संदिग्ध, और संशय युक्त है. यही धोरण प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों के लिये भी लागु होता है.

जैन पुस्तक भंडार से कितनेक ऐतिहासिक ग्रंथ मिलते है. उनमें बहुत से ग्रंथ इतिहास के रूप में नहीं हैं, लेकिन प्रशंसा युक्त काव्यों मे व गद्यों मे रचे हुए हैं. वैसी हरएक पुस्तक को प्रसिद्ध करने की तजवीज होने से प्राचीन इतिहास के साहित्य में बहुत ही सहायता मिलने की सम्भावना है.

जो जो ऐतिहासिक साहित्य से सांभर के चौहानों की नामावली मालूम हुई हैं, उस परसे उपलब्ध होतें वंशवृक्ष नीचे अंकित किये गये है.

१ हर्ष के शिलालेख से.

१ गूवक (सांभर)
२ चन्द्रराज
३ गूवक (दूसरा)
४ चन्दन
५ वाक्पतिराज
६ सिंहराज
- ७ विग्रह राज
- ७ दुर्लभराज (१)
- ७ गोविन्दराज. (२)

---
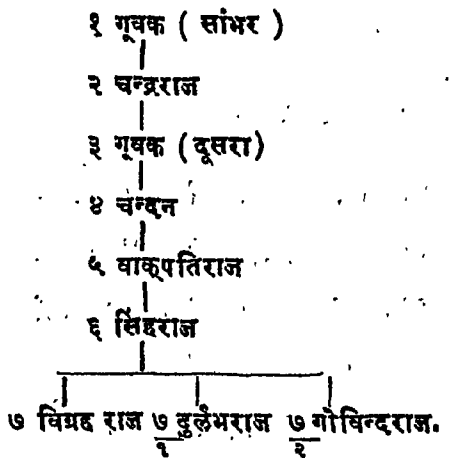
२ बिजोलिया के शिलालेख से

(गूवक पहिला तक के नाम क्रमशः) १ सामन्त, २ जयराज, ३ विग्रहराज, ४ चन्द्र, ५ गोपेन्द्र, ६ दुर्लभ व ७ गूवाक (उसके बाद)

८ शशिनृप
९ गूवाक (दूसरा)
१० चन्दन
११ वप्ययराज
१२ सिंहराज
- १३ विग्रह
- १३ दुर्लभ (१)
- १३ गन्दु (२)
  - १४ वाक्पति
  - १५ वीर्यराम
  - १६ चामुण्डराज
  - १७ सिन्हट
    - १८ दुशल
    - १८ विशल (१)
      - १९ पृथ्वीराज
      - २० अजयदेव
      - २१ अर्णोराज
        - २२ (०)
          - २३ पृथ्वीराज (दूसरा)
        - २२ विग्रहराज (१)
        - २२ सोमेश्वर (२)

---

३ पृथ्वीराज विजय के ग्रंथ से.

१ चाहमान
२ वासुदेव
३ सामन्तराज
४ जयराज
५ विग्रहराज
- ६ चन्द्रराज
- ६ गोपेन्द्रराज (१)
  - ७ दुर्लभराज
  - ८ गोविन्दराज
  - ९ चन्द्रराज (दूसरा)
  - १० गूवक
  - ११ चन्दनराज
  - १२ वाक्पति
  - १३ सिंहराज
    - १४ विग्रहराज (दूसरा)
    - १४ दुर्लभराज (दूसरा) (१)
      - १५ गोविन्दराज (दूसरा)
      - १६ वाक्पतिराज (दूसरा)
        - १७ वीर्यराम
        - १७ चामुण्ड (१)
          - १८ दुर्लभ (तीसरा)
          - १८ विग्रहराज (तीसरा) (१)
            - १९ पृथ्वीराज
            - २० अजयराज
            - २१ अर्णोराज
              - २२ (०)
                - २३ पृथ्वीभट
              - २२ विग्रहराज (१)
                - २३ अमरगंगेय (१)
              - २२ सोमेश्वर (२)
                - २३ पृथ्वीराज (२)
                - २३ हरिराज (३)

४ प्रबंध कोश से.

१ वासुदेव
२ सामन्त
३ नरदेव
४ अजयराज
५ विग्रहराज
६ चन्द्रराज
७ गोविन्दराज
८ दुर्लभराज
९ वत्सराज
१० सिंघराज
११ दूर्योधन
१२ विजयराज
१३ वप्पयराज
१४ दुर्लभराज (दूसरा)
१५ गन्दुराज
१६ वालपदेव
१७ विजयराज (दूसरा)
१८ चामुण्डराज
१९ दुशलदेव
२० विशलदेव
२१ पृथ्वीराज
२२ आल्हणदेव
२३ जगद्देव
२४ विशलदेव (दूसरा)
२५ अमरगंगेय
२६ पेथलदेव
२७ सोमेश्वर
२८ पृथ्वीराज (दूसरा)
२९ हरिराज

५ हमीर महाकाव्य से

१ चाहमान
२ वासुदेव
३ नरदेव
४ चन्द्रराज
५ जयपाल
६ जयराज
७ सामन्तसिंह
८ गूयक
९ चन्दन
१० वप्रराज
११ हरिराज
१२ सिंहराज
१३ भीम
१४ विग्रहराज
१५ गंगदेव
१६ वल्लभराज
१७ राम
१८ चामुण्डराज
१९ दुर्लभराज
२० विशल
२१ पृथ्वीराज
२२ आलणदेव
२३ अनलदेव
२४ जगदेव
२५ विशलदेव (दूसरा)
२६ जयपाल
२७ गंगपाल
२८ सोमेश्वर
२९ पृथ्वीराज (दूसरा) २९ हरिराज

६ सुर्जन चरित्र से.

१ वासुदेव (चन्द्रावती)
२ नरदेव
३ अजयपाल
४ अजयराज
५ सामन्तसिंह
६ गुज्जर
७ चंद्र
८ वप्र
९ विश्वपति
१० हरिराज
११ भीम
१२ विग्रहदेव
१३ गुंददेव
१४ वल्लभ
१५ रामनाथ
१६ चामुण्ड
१७ दुर्लभराज
१८ दुशलदेव
१९ विशलदेव
२० वल्लभ (दूसरा)
२१ अमलदेव
२२ जगदेव
२३ विशलदेव (दूसरा)
२४ अजयपाल (दूसरा)
२५ गांगदेव
२६ सोमेश्वर
२७ पृथ्वीराज (देहली). २७ माणेकराय

७ वंश भास्कर से.

१ चाहमान
२ वासुदेव
३८ सहदेव
५० अजयपाल
६५ महानंद
१११ हनुमान (पाटलीपुत्र) १११ सुग्रीव (सांभर)
१३२ रघुराम
१३४ माणकराय उर्फ नाहरराय
१३५ सोमेश्वर
१४६ भरत (सांभर) १४६ उरथ (हाडा)
१५७ संभातीराज
१५८ मागहस्त
१५९ स्थुलानंद
१६० लोहधार
१६१ धर्मसार
१६२ वैरीसिंह
१६३ विविधसूर
१६४ योगसूर
१६५ चंद्रराज (अजमेर)
१६६ कृष्णराज
१६७ हरिहरराज
१६८ विलहनराज
१६९ पृथ्वीराज (हीडुर) १६९ अरणोराज
१७० धर्माधीराज
१७१ विशल
१७२ सारंगदेव
१७३ अनलदेव उर्फ विग्रहराज
१७४ जयसिंह
१७५ आनंदमेव
१७६ सोमेश्वर १७६ कृष्ण उर्फ कन्ह
१७७ पृथ्वीराज (देहली)

८ राजपूताना गॅझेटियर से.

मूल पुरुष १ चाहमान, से क्रमशः २ वासुदेव, ३ सामन्तराज (सांभर), ४ जयराज, ५ विग्रहराज, ६ चंद्रराज, ७ गोपेन्द्रराज, ८ दुर्लभराज, ९ चंद्रराज, (दूसरा), १० गूवक, ११ चंदनराज व १२ वाकूपतिराज (उसके बाद)

१३ सिंघराज (सांभर) ई. सं. ९५० | १३/१ लक्ष्मणराज (नाडोल)

१४ विग्रहराज (दूसरा)

१५ दुर्लभराज

१६ गोविन्द

१७ वाकूपति (दूसरा)

१८ वीर्यराम

१९ दुर्लभ (तीसरा) | १९/१ विग्रहराज (तीसरा)

२० पृथ्वीराज

२१ अजयपाल (अजमेर ई. सं. ११३०)

२२ जोगादेव | २२/१ विशलदेव उर्फ विग्रहराज ४ (देहली ई. सं. ११६३) | २२/२ सोमेश्वर

२३ पृथ्वीदेव | २३/१ अमरगंगेव | २३/२ पृथ्वीराज देहली. ई. स. ११७९-९३

९ पूना ऐतिहासिक सोसाइटीका 'मासिक' परसे.

१ गूवक

२ चन्द्रराज

३ गूवक (दूसरा)

४ वाकूपतिराज

५ सिंहराज

६ विग्रहराज सं. १०२९-३० | ६/१ दुर्लभराज | ६/२ गोविन्दराज

७ वाकूपति (दूसरा)

८ विर्यराम | ८/१ चामुण्ड | ८/२ सिंग्हट उर्फ वागुराजा

९ दुशल | ९/१ विशल

१० पृथ्वीराज

११ अजयराज

१२ अरणोराज (वि. सं. १२०७)

१३ जगदेव | १३/१ विग्रहराज उर्फ विशल वि.सं. १२१०-२० | १३/२ सोमेश्वर वि.सं. १२२६-३५

१४ पृथ्वीराज (दूसरा) | १४/१ अमरगंगेव | १४/२ पृथ्वीराज (तिसरा) देहली. वि. सं. १२३६-४९ | १४/३ हरिराज

१० मेओ कॉलेज मासिक फेब्रुआरी सन १९१२ ईस्वी के लेख पर से.

१ अजयदेव

२ अरणुराज (ई. सं. ११२३ से ५०)

३ जोगादेव ई. स. (११५१.) | ३/१ विशलदेव उर्फ विग्रहराज चौथा. ई. स. ११५१ से ११६३ | ३/२ सोमेश्वर (ई. स. ११६९ से ११७८)

४ पृथ्वीराज (ई. स. ११६८-६९) (दूसरा) | ४/१ अमरगंगेव | ४/२ पृथ्वीराज ई. स. ११७९ से ११९२ | ४/३ हरिराज

गोविन्दराज

+ हस्त लिखित राजावली में 'गंगेव चौहान' ने देहली में वर्ष ५ मास २ दिन ९ राज करने का लिखा है वह समय ई. स. ११६३ से ११६९ तक (यानी विशलदेव व सोमेश्वर के दरमियान) अमरगंगेव का है.

११ सिरोही राज्य के इतिहास पर से.

१ चाहमान
|
२ वासुदेव (सांभर)
|
३ सामन्तराज
|
४ जयराज
|
५ विग्रहराज
|
६ चंद्रराज — ६/१ गोपेन्द्रराज
|
७ दुर्लभराज
|
८ गुवक
|
९ चंद्रराज (दूसरा)
|
१० गूवक (दूसरा)
|
११ चंदनराज
|
१२ वाकूपति राज
|
१३ सिंहराज — १३/१ लक्ष्मण (नाडोल) — १३/२ वत्सराज
|
१४ विग्रहराज (दूसरा)

---

१२ देवडा चौहानों के वहुआ की पुस्तक से.

१ चाहमान
|
३१ सोनपाल
|
६१ जगनपाल
|
८१ अजयपाल
|
८६ सहदेव
|
८७ वसुदेव
|
१२० धनेपाल
|
१२१ जोगराजा
|
१ २ चतुराजा
|
२०७ वासुदव
|
२०८ नरदेव
|
२२४ पंहराजा
|
२२५ जानतीभाण (देखो पीछे पृष्ट २२ पर).

१३ पूर्विया चौहानों की ख्यात पर से.

१ चाहमान (आबु)
|
६१ काशिदिपी (अगनगर)
|
१२४ जगधरपाल (सद्धलानगरी)
|
१७० हिगापाल (अजमेर)
|
१९२ टंकपाल (टंकारी)
|
३६१ पत्तदीत (गोदावरी)
|
५५० मणीकदीत (मंडनगर)
|
७९६ हरीचंद (गढगागरण)
|
८८३ राममणी (मंडलपुर)
|
९६४ अवैपति (अमरावती)
|
१०६५ पंचाणध्वज (हरीगढ)
|
११२० माणेकराय (सांभर वि. सं. ७०३)

..............चालू पूर्विया चौहाण सांभरसे..............

१ माणेकराय सांभर वि. सं. ७०३
|
२ संघराय „ „ ७३०
|
३ लाखणसी „ „ ७६७
|
४ विजयराज „ „ (संवत नहीं लीखा)
|
५ हरराज „ „ ७९८
|
६ पतोमसिंह „ „ ८१२
|
७ सालभान (अजमेर) „ ८३५
|
८ अजयपाल „ „ ८८३
|
९ वीसलदेव (अजमेर) वि.सं.९२६ — ९/१ आना (अजमेर. वि. सं. ९६२)
|
१० धंध (धांधुयसाई) — १०/१ पीथोरा (मुरादाबाद हांनी) वि. सं. ९८४
|
११ आल्हणसिंह (संभल मुरादाबाद) वि. सं. ९९५
|
१२ गदराज „ „ १००४
|
१३ कट्टुपाल „ „ १०१३
|
१४ अमरगंगेव „ „ १०४३
|
१५ सोमेश्वर (सांभर) वि सं.१०८६ — १५/१ कान्हदेव (संभल मुरादाबाद)
|
१६ पृथ्वीराज (देहली)

२२५ जायनीभाण (चलु देवडा चौहानों के वहुआकी पुस्तक से देखो पृष्ट २१ पर).
|
२२९ वागराजा
|
२३२ समरसी (वि. सं. ५६५ सांभर)
|
२४२ माणकदेव (सांभर वि. सं. ७४६)+
|
२४३ जेतराव — २४३/१ जेवराव — २४३/२ चांदराव — २४३/३ भदोराव — २४३/४ नरीराव — २४३/५ पवोराव — २४३/६ चाहलखा — २४३/७ वागराव — २४३/८ हमीरराव — २४३/९ चंदाजा

(२४३/१ जेवराव का पुत्र) *२४४ गोगाराव (सांभर वि.सं. ७५२-७८२)
|
२४५ नानूराजा (अजमेर) — २४५/१ देवसेन (सांभर) दुसरे ४३ पुत्र थे जो युद्ध में मारे गये.

२४५ नानूराजा (अजमेर)
|
२४६ दुशलदे
|
२४७ धर्माद
|
२४८ विशलदे — २४८/१ आनादे

२४८ विशलदे
|
२४९ सारंगदे
|
२५० आणंदमेव
|
२५१ सोमेश्वर — २५१/१ सूरदेव — २५१/२ कान्हडदेव

२५१ सोमेश्वर
|
२५२ पृथ्वीराज देहली — २५२/१ कोकसकुमार

२४५/१ देवसेन (सांभर)
|
२४६/१ दलराव
|
२४७/१ बलराव
|
२४८/१ सिंघराव
|
२४९/१ लाखणसिंह (नाडोल)
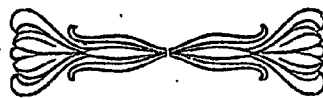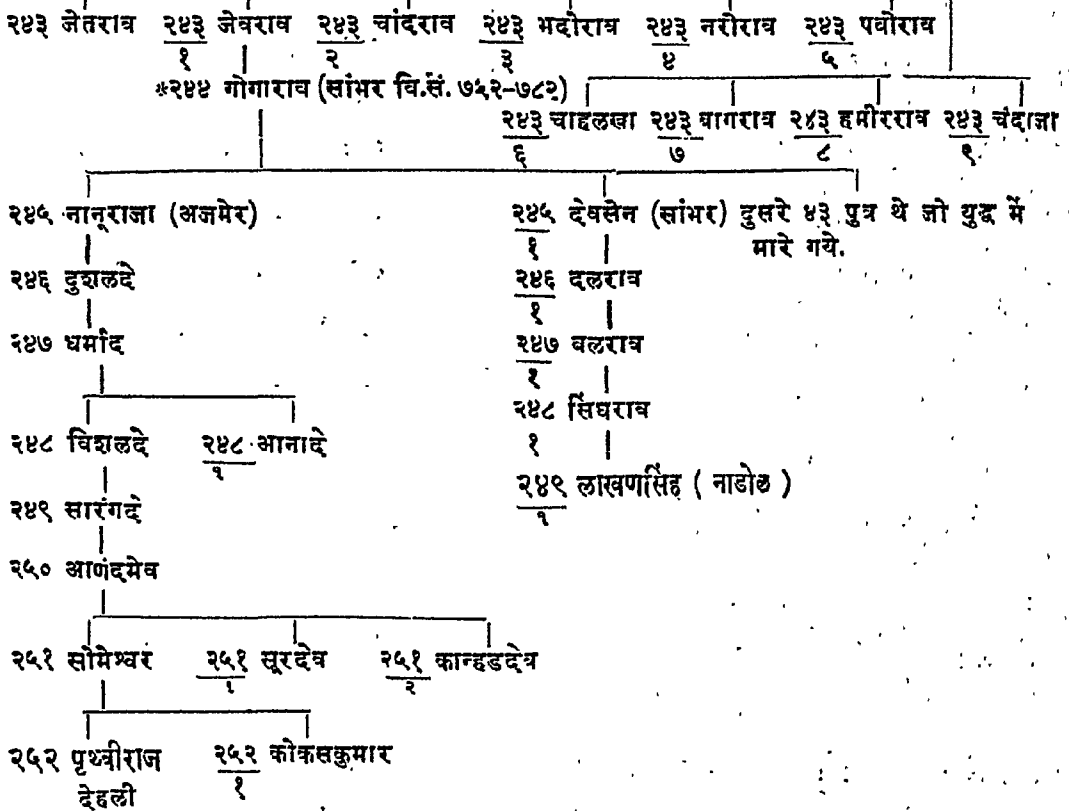
+ वहुआ की पुस्तक में ' समरसी ' से दश पुश्त बाद ' माणकदेव ' वि. सं. ७४६ में होना लिखा है. दन्तकथा और गीत–कवितों मे माणकदेव उर्फ माणकराव मशहूर है. इनके समय से सांभर में नमक तयार होने लगा ऐसा कहा जाता है कि शाकंभरी देवी इन पर तुष्टमान हुई और वर दिया, जिससे सांभर में लूण पैदा होने लगा. इस विषय में ' निशाणी ' है कि:—

" साते ने छेतालिस में माता वाली वेश, सांभर राय तुटी सरस माणकराय नरेश. "

* गोगाराव वि. सं. ७५२ में गद्दी पर बैठा. उसके ४९ पुत्र थे. इसने मुसलमानों को ११ दफे युद्ध में हराये. बारहवीं वक्त यह गौओं कि रक्षणार्थे युद्ध में मारा गया. वि. सं. ७८२ में गढ सांभर में गोगारावने समर किया जिसमें उनके ४३ पुत्र मारे गये. इनकी राणी मेलणदे राठोड कन्या महा सती थी. ३९ रानियां गोगाराव के पीछे सती हुईं. वर्तमान समय में इसकी 'गोगादेव' के नाम से पूजा होती है. उनके पुत्र ४३ मारे गये जिस विषय में निशाणी है कि:—

" अचलो, उदो, असपत, लालचंद, केशव, लाडो । प्रेमो, पिथल, दास, सदो, आपल, मल्ल, छांडो. "
" खेतसी, भीम, खगार, जोध, अमरो, मान, जेतो । जसो, डुंगो, जसराज, नग धीर, माधव नेतो. "
" हदो, कान, हरी, अन्त, पूरो, गोर्धन, पचारण । विदो, वाग, वणीदास, नरू, आध बीजो नारायण. "
" सुजो, मातन, मसमूर, गोगराज, मूल एप लडे । शाह समुद्र सु कर सामलो तरियाली तण दीन पडे. "

प्रकरण ५ वाँ.

सांभरिया चौहान.

चाहमान से कितनीक पुश्त पर समरसी उर्फ सामन्तसिंह हुआ, उसने वि. सं. ५६५ में सांभर में राज्य स्थापन करने का अहवाल प्रकरण तीसरा में आ चूका है. वैसे सांभर के चौहानों के वास्ते जो जो ऐतिहासिक साहित्यों से वंशावली उपलब्ध हुई है वे प्रकरण चौथे में अंकित की गई है. उन पर से तुलना करते व इतिहास वेत्ताओं ने स्वीकार की है वैसी ख्यातों पर नजर दे सांभरिया चौहानों का वंशवृक्ष नीचे दिया जाता है.

१ वंशवृक्ष सांभर के चौहानों का—चौहानों का मूल पुरुष १ चाहमान से क्रमशः २ सोनपाल, ३ यज्ञपाल, ४ अजयपाल, ५ सहदेव, ६ चत्राजा, ७ वसुदेव, ८ नरदेव, ९ पंडराजा, १० जामनी भाण, ११ वाग राजा व उनके बाद सांभर में राज स्थापन करने वाला नं. १२ सामन्तसिंह उर्फ समरसी हुआ उनके वंशज.
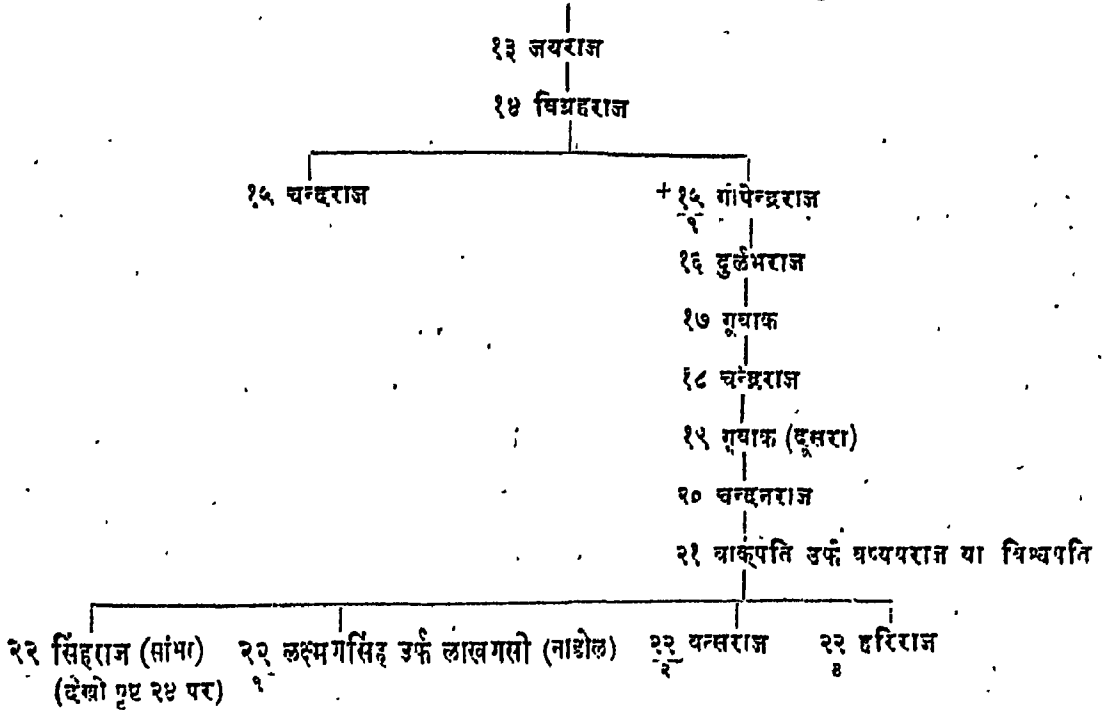
+ नं. १५ गोपेन्द्रराज का समय वि. सं. ७६८ का होना स्वीकार किया है. उससे एकाद पुश्त पहिले 'माणकराज' होना चाहिये. माणकराज से सांभर की दश शाखाएं होने का जगह जगह प्रमाण उपलब्ध होते है. इनका समय वि. सं. ७४१ का होना गीत कवित्त से पाया जाता है. गोपेन्द्रराज का नाम ही 'गोगादेव' हो ऐसा अनुमान होता है, क्यों कि वहुआ की पुस्तक में 'गोगादेव' को माणकराज का पौत्र होना लिखा है. उनको गद्दी नशिनी वि. सं. ७५२ व देहान्त का समय वि. सं ७८२ होना बताया है. अगर यह अनुमान ठीक हो तो नं. १२ सामन्तसिंह का नाम माणकराज होना चाहिये. नं. १७ गूवाक वि. सं. ८०० में होना स्वीकार हुआ है.
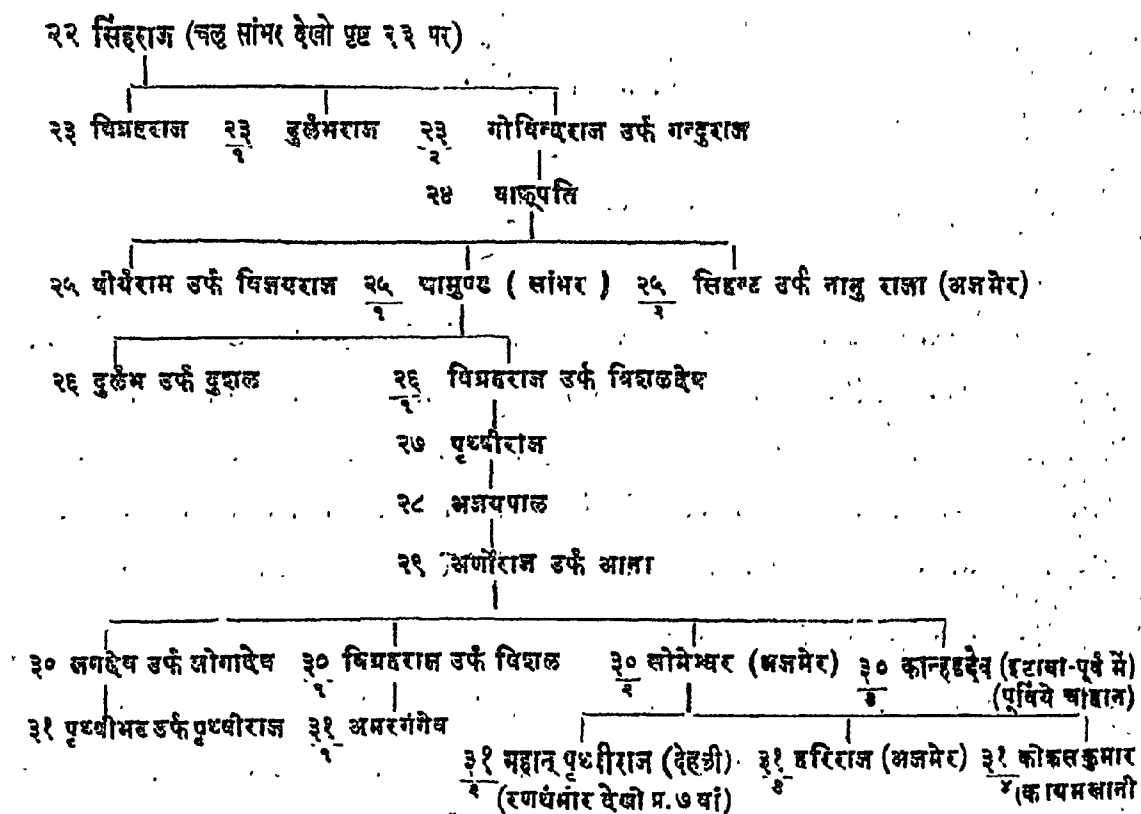
उपर्युक्त वंश वृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ से नं. १२ सामन्तसिंह तक का जो कुछ अहवाल प्राप्त हुआ था वह प्र. ३ रा में आचूका है. नं. १३, १४ व १५ के वास्ते कोइ इतिहास प्राप्त नहीं हुआ है. नं. १५/१ गोपेन्द्र का दूसरा नाम गोगादेव होना पाया जाता है. यह राजा का मुसलमानों के साथ वहुत विग्रह चला. हिजरी सन ९२ वि. सं. ७६८ में महमूद बिन् कासिमने सिंध पर चढाई कर कितनाक प्रदेश कब्जे किया, उस समय यह विद्यमान था. वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि महमूद के साथ गोगादेव का युद्ध हुआ जिसमें इसके ४३ पुत्र काम आये. इस विषय के कवितका आखिरी पद में लिखा है कि:—" शाहा मेंमुद सु कर मामलो, तरियाली तण दीन पडे. " पाया जाता है कि विजय प्राप्त न होनेका मालूम होनेसे शाखा करके वे सब काम आये है.

नं. १६ दुर्लभराम गोड राजपूतों का साथ लढा था वैसा पृथ्वीराज विजयकी पुस्तक में लिखा हुआ है.

नं. १७ गूवाक के विषय में हर्ष का शिलालेख (हर्षनाथ का मन्दिर शेखावटी में ' उंचा ' नामक पहाड पर है.) जो नं. २३ विग्रहराज के समय में लिखा गया है उसमें लिखने में आया है कि इसने नागावलोक (जिसका दूसरा नाम गुर्जर प्रतिहार नागभट था, जो वि. सं. ८३३ में देवलोक हुआ था.) नामकवडे राजा की सभा में 'वीर पद' पाया.

नं. १८ चन्द्रराज दूसरे का इतिहास नहीं मिला है. उनके पीछे नं. १९ दूसरे गूवाक सांभर की गद्दी पर आया. यह बडा पराक्रमी राजा था. इसने अपनी बहिन कलावती के लग्न के वास्ते स्वयंवर रचा था जिसमें बारह राजा आये थे, उनमें से कलावतीने कन्नोजेश्वर को वरमाला अर्पण की. जिस पर दूसरे राजाओंने युद्ध किया, लेकिन गूवाकने सबको हराकर उनकी लक्ष्मी छीन कर अपनी बहिन को दी.

नं. २० चन्दनराज ने तंवर वंशी राजा ' रुद्रेण ' को युद्ध में मारने का हर्ष के लेख में उल्लेख हुआ है. +तंवर वंश के इतिहास की हस्त लिखित प्रति में ' रुद्रेण ' नाम नहीं है, परन्तु ' द्वारदेव ' नाम उपलभ्य होता है. पाया जाता है कि उसी नाम का उर्फ या अपभ्रंश हो. इसकी राणी ' रूद्राणी ' ने पुष्कर सरोवर के किनारे सहस्त्रलिंगों की प्रतिष्ठा कराई थी. रुद्राणी को ' आत्मप्रभाव ' व ' योगिनी ' भी कही गई है, ऐसा पृथ्वीराज विजय की पुस्तक में लिखा गया है.

नं. २१ वाक्पतिराज के विषय में हर्ष के लेख में लिखा है कि इसपर तंत्रपाल तंवर ने चढाई की थी, परन्तु उसको हारकर भागना पडा. तंवर राजपूतों की ख्यात में द्वारदेव का पौत्र 'तुगपाल' का नाम उपलब्ध होता है. सूर्जन चरित्र की पुस्तक में वाक्पतिराज ने कटक का किला तोडा, पारिन्द सें युद्ध किया व शाकंभरी तक अपने राज्य का विस्तार वढाया वगैरह लिखा है. पृथ्वीराज विजय की पुस्तक में लिखा है कि इसने १८८ लडाइयों मे विजय प्राप्त किया और पुष्कर में बडा शिवालय बनया.

नं. २२ सिंहराज अपने पिता के पीछे सांभर में गद्दी पर बैठे. इसका नाम हरएक प्रमाणो में उपलब्ध होता है. पृथ्वीराज विजय की पुस्तक में लिखा है कि, उसने पुष्कर तीर्थ में शिवालय बंधाया और इनके पास अश्वों की बडी फौजथी. हर्ष के शिलालेख में उल्लेख किया है कि इस राजा पर राजा लवण की सहायतासें तंवर वंशी राजाने चढाई की थी, परन्तु सफलता नहीं मिली. यह बडा वीर पुरुष हुआ. इसने हरएक दिशा के राजाओं पर विजय प्राप्त किया, और हाजि-उद-दिन का पराजय कियाथा, ऐसा प्रबंध कोश की पुस्तक से पाया जाता है. हमीर महाकाव्य में लिखा है कि इसने 'हातिम' नामका मुसलमान सरदार को मारा था.

नं. २२/१ * लक्ष्मणसिंह उर्फ लाखणसी, वाक्पतिराज के दूसरा पुत्रथा, जिसने 'नाडोल' में

+ तंवर वंश का इतिहास में लिखा हैं कि ' गंगेव तंवर ' के हाथ से वि. सं. १२०९ चैत्र सुदी २ के दिन विशलदेव चौहान ने देहली ले ली. उक्त ख्यातसे पाया जाता है कि ' द्वारदेव ' तंवर वि सं ९१२ में गद्दी पर आया था और वि. सं. ९८२ में उसका देहान्त हुआ. तंवर वंशी राजाओं की नामावली इस प्रकरण में आगे दी गई है.

* पूर्बिया चौहानों का इतिहास जो नीमराणा के विषय में है, उसमें 'राव लाखणसी' को सिंहराज का पुत्र होना अंकित किया है, बल्कि लाखणसी को सांभर के राजा होने का जिक्र कर उसकी ओलाद में सोमेश्वर, पृथ्वीराज, आदि सांभरिये चौहान होने का उल्लेख हुआ है.

(जोधपुर राजके गोडवार परगने में है.) अपना राज्य कायम किया. इसी लाखणसी से नाडोल के चौहान कहलाये गये, और वहां से चौहानों की चौवीस शाखाएं हुई, जिसका अहवाल प्रकरण ९ वां में लिखागया है.

नं. २२/२ वत्सराज को पूर्व में 'जयपुर' नामक परगने की जागोर दी गईथी. वर्तमान समय में इनकी ओलाद वाले कहां है वह मालूम नहीं है.

नं. २२/३ × हरिराज के वास्ते 'सूर्जन चरित्र' की पुस्तक में लिखा है कि इसने हुणस को भगाया. मद्रास, चीन, आदिके म्लेच्छों को हराया. मंडपपुर के पास जोधपुर नामक शहर आवाद किया. इसकी राणी 'मनोरमा' अवन्ती की राज कन्या थी. इसको पुत्र न होनेसे पुत्र प्राप्ति की आशा में इसने बौद्ध धर्म स्वीकार किया था, परन्तु पुत्र न होनेसे इनका भतीजा 'भीम' गद्दीपर बैठा. भीम बडा वीर पुरूष हुआ, उसने मगध, वंग, गंद, कलिंग व कर्णाटक को विजय कर लिया, और पम्पा, गोदा, तापती, ताम्रपर्णी, द्वारिका, कांबोज, शक, व कामरुप देश तक पहुंचा था.

नं. २३ विग्रह राज के विषय में हर्ष के शिलालेख में लिखा है कि इसने गुर्जरों को हराकर वहां के राजा भीमदेव को भगाया, जो कंथ कोट के किलेमें घुस गया था. इसी राजा के समय में हर्ष का लेख लिखा गया है. पृथ्वराज विजय की पुस्तक में लिखा है कि इसने गुजरात के राजा मूलराज को हराकर नर्मदा नदी तक विजय प्राप्त किया था, और भडौंचमें आशापुरी देवी का मन्दिर बंधाया. (जो वर्तमान समय में भडौंच में विद्यमान है.) हमीर महाकाव्य में इसके विषय में लिखा गया है कि–इसने गुजरात के राजा मूलराज को मारा था.

नं. २३/१ दुर्लभराज अपने भाई विग्रहराज के पीछे गद्दी पर बैठा. जिसका प्रधान 'माधव' नामक था.

नं. २३/२ गोविन्दराज अपने भाई दुर्लभराज के पीछे गद्दी पर बैठा. सूर्जन चरित्र में लिखा है कि इसने चेडी राजा भोज के साथ युद्ध कर के उसको पराजय किया था, लेकिन उसका राज्य कब्जे नहीं करते उनको वापिस दिया. प्रबंध कोश की पुस्तक में इसने सुलतान महमूद पर विजय प्राप्त की ऐसा उल्लेख किया है.

× नं. २२/३ हरिराज के बदले वंशभास्कर में चंद्रराज का पौत्र नं. १६७ हरीहरराज का नाम उपलब्ध होता है. हमीर महा काव्य की पुस्तक में वप्राज का पुत्र हरिराज व हरिराज का पौत्र 'भीम' होने का अंकित हुआ है. कभी यह शंका की जाय कि शिलालेखों में हरिराज का नाम क्यों उपलब्ध नहीं होता है, उसका खुलासा यही है कि जहां तक देखा गया शिलालेखों में भाईयों का नाम नहीं लिखते उत्तरोत्तर अपनी ओलाद के ही नाम लिखे जाते थे, इसी कारण से नं. २१/२ लाखणसी का नाम भी शिलालेख में नहीं आया है, वैसे सुंधा पहाड का शिलालेख में समरसी का पुत्र मानसिंह उर्फ माणीनी का नाम भी नहीं लिखा गया है.

नं. २४ वाक्पति दूसरे ने मेवाड के राजा अंबाप्रसाद को कटार से मारा था, और यह वीर पुरुष गिना गया.

नं. २५ वीर्य राम उर्फ विजय राज ने मालवे के राजा भोज के साथ युद्ध किया जिसमें मारा गया.

नं. २५/१ चामुण्ड अपने भाई के पीछे सांभर की गद्दी पर बेठा. इसने नरवर में विष्णु भगवान का मन्दिर बनवाया.

नं. २५/१ सिहन्ट उर्फ नानु राजा के विषयमें देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक से पाया जाता है कि उसने अजमेर में राज्य स्थापन किया.

नं. २६ दुर्लभ उर्फ दुशल के विषय में विजोलिया के शिलालेख में इसको सिहन्ट का उत्तराधिकारी होना वताया है. देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक में भी नानुराजा के वाद 'दुशलदेव' का नाम अंकित है. राजपूताना गझेटियर में वीर्यराम का तीसरा पुत्र 'दुर्लभ' होनेका उल्लेख है, परन्तु दूसरे भरोसा पात्र प्रमाणों से यह स्वीकार किया गया है कि यह चामुण्ड का पुत्र था, इसने गुजरात के राजा कर्ण को पराजित करने के कार्य में मालवा के राजा उदियादित्य की सहायता की थी. इनका देहान्त मुसलमानों के साथ युद्ध करने में हुआ.

नं. २६/१ विग्रहराज उर्फ विशल ने मालवा के राजा उदयादित्य को 'सारंग' नामक अश्व दिया था, जिससे वह गुजरात के राजा कर्ण का पराजय कर सका था, ऐसा पृथ्वीराज विजय की पुस्तक में लिखा है. वंश भास्कर व वडुआ की पुस्तक में इसको धर्माधिराज उर्फ धर्मादि का पुत्र होना वताया है. इसका राज्य अजमेर में था, जहा पर अकाल मोतसे मरने पर राक्षस योनि प्राप्त हुई. राक्षस होने से इसने अजमेर नगर को वरवाद किया, और अपना पुत्र सारंगदेव को भी मार खाया.

नं. २७ पृथ्वीराज ने अजमेर वरवाद होने से सांभर में राज्य स्थान किया. इनकी राणी 'रसलदेवी' ने रणथंभोर के जैन मन्दिर में (वि. सं. ११६१ में) सुवर्ण कलश चढाया. इसके समय में पुष्कर के ब्राह्मणों को लूटने के वास्ते ७०० चालुक्य आये थे, उन सव को इसने मारा था. यह वडा दातार था. सोमनाथ के रास्ते में इसने सदव्रत जारी किया था.

नं. २८ अजयपाल ने पुनः अजमेर को आवाद कर वहां अपनी राजधानी की, और किला वंधाया. वि. सं. ११८६ में यह विद्यमान था. इनकी राणी 'सोमलदेवी' नामक थी. पृथ्वीराज विजय के पुस्तक में लिखाहै कि इसने मालवा के राजा 'सलहण' पर चढाई कर विजय प्राप्त किया. चाचिग, सिंधुल व यशोराज नामके तीन राजाओं का इसने वध किया.

विजोलिया के शिलालेखानुसार मालवा के सेनापति सुलहण को कैद कर ऊँटकी पीठ पर बांधकर यह अजमेर लाया था. अजमेर में 'ढाई दिन के झोंपडे' नामक स्थल से जो शिलालेख जाहिर में आया है उसमें इसके विषय में बहुत वृतांत उपलब्ध होते है. उसमें लिखा है कि अजयराज ने उज्जेन तक का प्रदेश जीत लिया था. यह कवियों की अच्छी कदर करता था. इसकी राणी का नाम ' सोमलखा उर्फ सोमल्ल देवी ' थी. इसके समय के शिक्के में राणी का नाम भी अंकित होता था. इसने मुसलमानों को पराजय करके यश प्राप्त किया था.

नं. २९ अर्णोराज उर्फ आना अजयपाल के पीछे गद्दी पर बैठे. इसका समय वि. सं. ११७९ से १२०७ तक का होना पाया गया है. ' ढाई दिनके झोंपडे ' के शिला लेख से यह बात प्रसिद्धि में आइ है कि इसकी राणी ' संग्रामदे ' थी, जिससे जोगादेव व विशलदेव के जन्म हुए थे. दूसरी राणी गुजरात की ' किसनदेवी ' से सोमेश्वर का जन्म हुआ था. इसने अजमेर में +' अनासागर ' नामक सरोवर बनाकर अपना नाम अमर किया है.

सिरोही के वडुआ की पुस्तक में इसका नाम ' आणंदमेव ' होना लिखा है, जिसने पुष्कर में कुण्ड की सीढियां और वराहजी का मन्दिर बनाया था. इनका चौथा पुत्र ×कान्हडदेव होना वंशभास्कर व वडुआ की पुस्तक में अंकित है.

नं. ३० जगदेव को जोगोन्द्र व जोगादेव भी कहते थे. इसने वि. सं. १२०७ में अपना पिता अर्णोराज को मार कर गद्दी प्राप्त की, परन्तु इसका छोटाभाई विशलदेव जो वडा पराक्रमी राजपुत्र था उसने गद्दी छीन ली.

नं. ३०/१ विग्रहराज उर्फ विशलदेव का नाम राजपूताना में प्रख्यात है. यह बडा वीर पुरुष था. इसने अपने बडेभाई जोगादेव जो *पितृ घातक था उससे राज्य छीन लिया और गद्दी पर बैठा. राजपूताना का प्रदेशमें जगह २ स्वारी करके इसने अपना राज्य विस्तर्ण किया, इतना ही नहीं परन्तु नाडोल के चौहानों का राजा आलहण के प्रदेश पर फौज भेजकर नाडोल, पाली आदि नगर को लूटकर उनका प्रदेश को बरबाद कर दिया. गुजरात

+ वंशभास्कर व वडुआ की पुस्तक में अर्णोराज का नाम ' आणंदमेव ' होना बताया है, और 'आनासागर' बंधाने वाला 'आनादे' नं. ३०/१ विशलदेव का दूसरा भाई होना लिखा है प्रबंधकोश व हमीर महाकाव्य की पुस्तकमें ' आलहणदेव ' नाम अंकित हुआ है, बल्कि हमीर महाकाव्य में 'आलहण' के बाद ' अनलदेव' का नाम उपलब्ध होता है.

× कान्हडदेव का नाम चौहानों के इतिहास में बहुत ही प्रसिद्धि मे है जो महान् पृथ्वीराज का काका होने से 'काका कान्ह' नाम से मशहूर हुआ है. इसने शरण आये हुए वाघेले को मार देने से अपनी आंख पर पट्टी बांधकर दरबार में आने की शिक्षा पाई थी. प्राचीन तसवीर में भी इनकी आंखे पर पट्टी लगाना मालूम हुआ है.

* जोगादेव ने अपने पिता का खून करने के कारण से उस समय में लिखा हुआ बिजोलिया के शिलालेख व पृथ्वीराज विजय नामक पुस्तक में यह पितृ घातक का नाम लिखना उचित समजा गया है.

के राजा के साथ भी इसने विग्रह मचाया. तंवरों के साथ सांभर के चौहानों का कई पुश्तों से विग्रह जारी था: विशलदेवने इस कारण से देहली के तंवर वंशी राजा गंगेव तंवर पर अपनी नजर डाली. +तंवर राजपूतों के इतिहास से मालूम होता है कि वि. सं. १२०९ चैत्र सुदी २ के दिन विशलदेवने गंगेव तंवर नामक राजा का पराजय करके देहली का कब्जा कर लिया, और वहां पर गद्दी पर बैठा. वि. सं. १२२० तक यह जिन्दा था: इनका अंतकाल होने के समय में इसका पुत्र अमरगंगेव बालक होने से नं. ३१ पृथ्वीराज (जो इसका भतीजा था) गद्दी पर आया ऐसा प्रसिद्धि में है, लेकिन देहली की गद्दी पर सात चौहान राजा होने का एक प्राचीन हस्त लिखित प्रति में उपलब्ध हुआ है, उसमें विशलदेव के पीछे ' गंगेव चौहान ' व उसके बाद ' पहाडमल चौहान ' होना लिखा है, यह पहाडमल नं. ३१ पृथ्वीभट होना अनुमान होता है. ढाई दिनकी झोंपडी के शिलालेख में विशलदेव के बाद अमरगंगेव गद्दी पर आनेका उल्लेख हुआ है. (इस पुस्तक की पृष्ट २० पर नं. १० के वंशवृक्ष में उन राजाओं के समय के इस्वी सन अंकित हुए है उसमें भी विशलदेव का सन ११६३ और सोमेश्वर का ११६८ है.)

नं. ३१/१ अमरगंगेव वि. सं. १२२० में गद्दी पर आया. हस्त लिखित प्रति मुआफिक इसने देहली की गद्दी पर ५ वर्ष २ माहा ५ दिन राज्य किया. इसका देहान्त होनेपर पृथ्वीभट नं. ३१ वाला देहली की गद्दीपर बैठा, परन्तु नं. ३०/२ सोमेश्वर ने उसको हठाकर देहली का राज्य अपने स्वाधिन कर लिया.

नं. ३०/२ सोमेश्वर ने वि. सं. १२२६ से १२३६ तक राज करना पाया जाता है. इसके ओर दो भाई सूरसेन व कान्हडदेव होना उपलब्ध होता है, परन्तु वंश भास्कर में सूरसेन

+ तंवर राजपूतोंने देहली में १९ पुस्त राज्य किया जिस बाबत हस्त लिखित पुस्तक में नीचे मुआफिक लिखा हुआ है.

नाम.	वर्ष.	मास	दिन.	नाम.	वर्ष.	मास.	दिन.	
१ वसुदेव तंवर.	१९	५	१८	१२ जसपाल.	१६	४	१३	
२ पृथ्वीमल तंवर	२१	३	३	१३ कुंवरपाल.	२१	३	११	
३ राजा जयदेव.	२०	७	२२	१४ अनंगपाल.	१४	१	६	+कुच्छ गलती है.
४ राजा नरपाल.	५	३	८	१५ तेजपाल.	१४	१	६	
५ उदयचंद तंवर.	१४	४	४	१६ मोहणपाल.	१५	३	१७	
६ वछराज.	३०	७	११	१७ तुगपाल दूसरा.	२१	२	१५	
७ द्वारदेव.	३०	२	१३	१८ पृथ्वीराज.	२२	३	६	
८ वरसेद्धापाल.	२२	१	८	१९ गंगेव तंवर.	२१	३	२८	
९ तुगपाल.	१२	६	५					
१० गोपाल.	२०	४	४					
११ सुलखण.	२५	१०	१०					

एवं वर्ष ४२० मास ४ राज कीधो पेढी-१९ लों.
पछे सं. १२०९ चैत्र सुद २ चहुआण पाट थया.

का नाम नहीं है. सोमेश्वर की राणी 'किरपादेवी' होनेका शिलालेख में उल्लेख है, जिसको सूर्जनचरित्र की पुस्तक में 'कर्पूरादेवी' अंकित की है, और उससे पृथ्वीराज व माणकराज ये दो पुत्र हुए थे ऐसा लिखा है. वडुआ की पुस्तक में सोमेश्वर की राणी 'प्राणकुंवर' तंवर अनंगपाल की पुत्री से महान् पृथ्वीराज का जन्म हुआ था ऐसा उल्लेख है, वल्कि पृथ्वीराज रासा की पुस्तक व दंतकथा में तंवर अनंगपालने अपना दोहित्र पृथ्वीराज को दत्तक पुत्र लेनेका प्रसिद्धि में है, परन्तु तंवर राजपूतों की ख्यात से भी यह बात विरूद्ध पाई जाती है, क्यों कि उसी ख्यात में तंवर अनंगपाल वि॰ सं. ११०२ से १११६ तक होना पाया गया है. सोमेश्वरने गुजरातका राजा भीमदेव सोलंकी के साथ युद्ध किया, जिसमें वह काम आया.

नं. ३१/२ महान् पृथ्वीराज का अहवाल प्रकरण ६ में लिखा गया है.

नोट—सांभर के चौहानोंने मुसलमानोंके हमले में हरएक समय, अपना बलीदान दिया है. बगदाद के खलीफ वलीद का सेनापति महमद बिन कासम के साथ नं. १५ गोपेन्द्रराज उर्फ गोगारावने शाखा कर ४२ पुत्रोंके साथ वह काम आया था. नं. २२ सिंहराज के समयमें महमूद गिजनीने बरबादी की. नं. २३ गोविन्दराजने सुल्तान महमूद पर विजय प्राप्त किया. नं २६ दुर्लभ, मुसल्मानोंके साथ युद्ध हुआ उसमें मारा गया. नं. २८ अजयपालके समयमें रोशनअली नामक मुसल्मानने महियारी का मही अपवित्र करने से उसकी अंगुली काटने की सजा दी गई जिस पर मुसल्मानों की बडी फौजने अजमेर पर आक्रमण किया जिसमें वे सब मारे जानेसे मुसलमान सैन्य नौकासे कच्छ के 'अंजार' बंदर पर उतरने लगा. अजयपालको खबर मिलने से वह अंजार पहुंचा और युद्ध किया. टॉडराजस्थानमें लिखा है कि वह उसी युद्ध में काम आया और उसका स्मारक अंजारमें है, (यानी हाथमें भाला देकर घोडे पर अजयपाल की मूर्ति बनाई हुई विद्यमान है.) और वहां पर अजयपाल का मेला भरा जाता है. इसी मुआफिक नं. ३१/२ महान् पृथ्वीराजने भी अपना व अपने सामन्तों का बलीदान युद्धमें देकर भारतिय देवी की शोणित पान की तृषा शान्त की. इसी कारण से कर्नल टॉडने अपनी राजस्थान की पुस्तकमें यह राय बताई है कि "यदि पक्षपात रहित निर्णय किया जाय तो छत्तीस राजकुलोंमें युद्ध विषयक जीवनमें चौहान राजपूत पहली पंक्तिमें आवेंगे."

देहली का महान् पृथ्वीराज चौहान.

अखिर काका कान्ह, चंद बरदाई और दूसरे दो सामन्तों ने मंत्रणा कर बडी मुश्किल से पृथ्वीराज की मुलाकात ली।

[देखो विभाग पहिला पृष्ट ३६]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

प्रकरण ६ वाँ.

'देहली का महान् पृथ्वीराज.'

सांभर के चौहानों का अंतिम राजा महान् पृथ्वीराज (सांभर के वंशवृक्ष में नं. ३१/१ वाला.) देहली की गद्दी पर हुआ, जिसकी प्रशंसा की कइएक पुस्तकें प्रसिद्ध हुई है. ऐतिहासिक प्रमाणों से इसका अमल वि. सं. १२३६ से वि. सं. १२४९ तक का होना पाया गया है. इसके विषयमें दो प्रधान काव्य पुस्तकें–जिसमें 'पृथ्वीराज विजय'(जो काश्मीर के पंडितने संस्कृत में रची है.) इसकी हयाती में ही रचना स्वीकार हुआ है, और दूसरी 'पृथ्वीराज रासा' (जो चंदकविने चारणी भाषा में पद बंध की है.) नामकी पुस्तक भी इसीकी हयाती में लिखी जाना कहा जाता है, परन्तु इतिहास वेत्ताओं को वह मान्य नहीं है, और अनुमान किया जाता है कि 'चंदकवि' के नाम से दूसरे कविने विक्रम संवत् की सोलहवीं सदी में यह पुस्तक रची है, जिससे चौहानों के इतिहास के वास्ते यह ग्रंथ प्रमाणभूत नहीं है, क्योंकि पृथ्वीराज रासा की पुस्तक से जो जो नाम उपलब्ध होते हैं वह दूसरे ऐतिहासिक साहित्यों के साथ मुकाबला करते सही मालूम नहीं होते हैं. बल्कि उसमें जो संवत् बताये हैं वह भी विश्वास पात्र नहीं हैं.

पृथ्वीराज रासा के ग्रंथ को ऐतिहासिक साहित्यों में स्थान दिया जाय या नहीं दिया जाय? इस प्रश्नको बाजू पर रख कर अवलोकन करने वाले को मालूम हो सकता है कि यह ग्रंथ ऐतिहासिक साहित्यों के उपासकों के वास्ते नहि रचा गया है, किन्तु एक समर्थ विद्वान कवि की काव्य रचना का हस्त लिखित काव्यों का अमूल्य भंडार है, जिस भंडार से हिन्दुस्थान के प्राचीन काव्यों की गौरवता हस्ती में रहने पाई है. इसमें वर्णन हुए प्रसंगों में राजपूतों की वीरता, उदारता, वैभव, सौजन्यता आदि अनेक प्रकार के विषयों में समय २ के प्रसंगो का कविने ऐसी कुशलता से वर्णन किया है कि वह सुनते ही वीर राजपूतों के हृदय में वीर रस प्रगट हो जाय, उसी मुआफिक हरएक रस युक्त भाषा व काव्य के छंदों की ऐसी खूबी लाई गई है कि उनकी सचोट असर तुर्त ही हो सके.

वस्तुतः पृथ्वीराज रासा के ग्रंथ से जो जो ऐतिहासिक प्रसंग उपलब्ध होता है, उसमें प्राचीन इतिहास प्राप्त नहीं होते पृथ्वीराज के समय के ही (लग्न, युद्ध, आदि प्रसंग) ऐतिहासिक घटनाएं मालूम होती हैं. जिसमें अलग २ प्रसंगों के वास्ते महाभारत के ग्रंथ की रचना मुआफिक अलग २ पर्वों के नामसे काव्य रचना करके वर्णन किया

गया है, बल्कि इस ग्रंथ में भी पीछे से 'क्षेपक' बढाकर दूसरे कवियों ने अपनी कृति जगह २ घुसेडने की तजवीज की है, जिससे इस ग्रंथ के वास्ते अनेक प्रकार की शंकाएं उपस्थित होने लगी हैं.

पृथ्वीराज रासा की पुस्तक से इतिहास उपलब्ध नहीं होता है अथवा उसमें वर्णन किये हुए प्रसंग केवल कल्पित कथाएं हैं, वैसा मान लेना यह भी उक्त ग्रंथ के कर्ता के वास्ते गैरइनसाफ है, क्यों कि इसमें से कविलोग अपना यजमान या आश्रय दाता की प्रशंसा में जो नमक मिरच लगाकर गीत कवित्तोंमें अतिशयोक्ति के दोष लगाकर आडंबर दिखलाते हैं, वैसे दोषों को वाद करके देखा जाय तो दूसरे गीत कवित्तों से जितना इतिहास उपलब्ध होता है इतना इस ग्रंथ में से भी प्राप्त हो सकता है. (यानी–पृथ्वीराज का जन्मकाल, किस किस के साथ युद्ध हुए उसके कारण, विवाहशादी के प्रसंग, सामन्त आदि के नाम ठाम वगेरह इतिहास इसमें अंकित है.)

पृथ्वीराज का जन्मकाल व अंतकाल के विषय में पृथ्वीराज रासा में लिखे हुए संवत् के वास्ते भी शंकाएं होती हैं, यानी रासा में इस प्रसंग के वास्ते कवि कहता है कि–

" एकादशसे पंच दह विक्रम साख आनंद, तिह रिपु पुर जै हरन को भय मथीराज नरिंद "
" एका दस सम ऐ सुकृत विक्रमं जिम धृत सुत, त्रीय तिसाक मथीराज को लिख्यो विप्र गुन गुप्त. "

जब कि पृथ्वीराज के जन्माक्षर 'जगज्योति' नामक जोतिषी ने बनाकर सोमेश्वर देव को दरबार में सुनाया, उस विषय में कवि कहता है कि—

" संवत एक दशं पंच अग, वैशाख मास पख कृष्ण लग. "
" गुरू सिद्ध जोग चित्रा नखित्र. गुरु नाम करन सिसु परम हित. "
" उषा मकाश एक घरीय राति, पल ती.स अंस त्रय बाल जाति. "
" पंच दुअ थान परि सोम भोम, ग्यारमे राह खल करन होम. "
" मथीराज नांमं बल हरे सत्र, दिलीय तखत मंडेय सु छत्र. "

इसके अंतकाल के विषयमें जगज्योति कहता है कि—

" च्यालीस तीन तीन वर्ष साज, कलि पुहमि इंद्र उद्धार काज. "

इसी मुआफिक पृथ्वीराज ने 'बानवेध' करके शाहबुद्दीन को कब मारा उस विषय में कवि कहता कि—

" संवत पंचदह माघ मास, अनसित पख दसमी सुभास. "
" दिन घटीय पंच पल आदि जात, तारक मूळ शिव तिप पात. "
" घरीयार घात वंधे सम्मुख, खद्दी कमान साहेब पुख. "

इस कवित्तों में जो जो संवत् उपलब्ध होते है उसकी संख्या क्या क्या है, उनके वास्ते

अनेक प्रकार के अनुमान कल्पना से किये जाते हैं, परन्तु ठीक संख्या क्या है, वह इन कवित्तों के रचने वाले को या ऐसे काव्यों के अभ्यासियों में मायना करने में निपूण और सम्पूर्ण अनुभवी होंगे वही इनका सच्चा मायना कर सकते हैं, क्योंकि प्राचीन भाषा के अभ्यासियों को प्राचीन भाषा का ज्ञान प्राप्त करने के वास्ते पुस्तकें रची गई हैं, परन्तु प्राचीन समय में गद्य पद्य में संख्या का क्रम अंकित करने का एक ही धोरण न होनेसे विद्वानों को भी भ्रम होने की सूरतें पैदा होने का संभव रहता है. प्राचीन समय में संख्या के क्रम में भ्रम हो जाय, ऐसा एक शिलालेख आबु पहाड की तलेटी में 'श्री ऋषिकेश भगवान' के मन्दिर का मठ वि. सं. १५९९ में बनाया गया, उस पर क्या खर्च पडा उस रकम के वास्ते उक्त शिलालेख में लिखा है कि "पीरोजी × × × अंके पंचवीसी सदी मठ करावता लागा." यह संख्या कितनी हैं उस विषय में विद्वान स्वयं अनुमान कर सकते हैं. इस विषय में यह पुस्तक के लेखक अपनी अल्प बुद्धि अनुसार यही तर्क करते हैं कि इसकी संख्या 'पंच वीसी' बराबर 'पच्चीस' या तो 'एक सौ होगी, और 'सदी' की संख्या शतक (सौ) यानी २५०० या १०००० होना चाहिये, परन्तु यह तर्क भ्रम से हुआ है, ऐसा उस शिलालेख में अंक में लिखी हुई संख्या से ही पाया जाता है, क्योंकि उसमें २०५०० (बीस हजार पांचसौ) की संख्या अंकित हुई है. (यानी २०+५=२०५×१००=२०५००).

यह उदाहरण देने का कारण इतना ही है कि जब कि गद्य में लिखे हुए प्राचीन लेख की संख्या शोधन में इतना भ्रम होता है, तब पद्य में लिखी गई संख्या के वास्ते वैसा भ्रम न हो, ऐसा मान लेना उचित नहीं है. पृथ्वीराज रासा की पुस्तक में उपर्युक्त संवतो की संख्या में कविने सदी की संख्या छोडकर, दशक के आंक से ही संख्या अंकित की हैं. जैसेकि वि. स. १९५६ को 'छपनां' के नाम से ही कहते है. इस रीत से पाया जाता है कि पृथ्वीराज का जन्मकाल का संवत् पंदरा (वि. सं. १२१५) व अंतकाल का समय ३×३=९+४०=४९ (वि. सं. १२४९) होना कविने कहा है. बानवेध का प्रसंग के वास्ते वि. सं. ५० (१२५०) होना बताया है, परंन्तु बानवेध की घटना वाके हो हुई है या नहीं यह एक शंका है क्यों कि पृथ्वीराज 'गग्गर नदी' के किनारे पर युद्धमें ही काम आनेका उल्लेख प्राचीन हस्त लिखित राजावलीओंमें, व 'कान्हडदेव प्रबंध' नामकी पुस्तक से भी उपलब्ध होता है, पाया जाता है कि यह प्रसंग किसी कविने 'क्षेपक' घुसेड दिया है, बल्कि ऐसा भी प्रसिद्धिमें है कि पृथ्वीराज रासा की पुस्तकमें कवि चंदने बानवेध के समय पर शहाबुद्दीन गोरी कितने अन्तर पर बैठा था वह अन्तर पृथ्वीराज के लक्ष में लाने के वास्ते कहा था कि-"चार बांस चोवीस गज अंगूल अष्ट प्रमाण, इत्ते पर सूलतान है मत चूके चोहान." और हिन्दुस्थान में भविष्य में होने-वाले राजवंश के वास्ते भी रासा के पुस्तक में उल्लेख किया है, लेकिन रासा में इन बातों

का कुच्छ भी जिकर नहीं है, तव भी ऐसी वातों के कवित रचकर ' पृथ्वीराज रासा ' में वे कवित्त होने का प्रसिद्ध किया गया है. रासा में कितनेक प्रसंग की काव्य रचना व भाषा ऐसी है कि वह दूसरे कवि की कृति हो वैसी शंका उपस्थित होती है, जो सव ' क्षेपक ' है. तात्पर्य यही है कि ' पृथ्वीराज रासा ' की पुस्तक से कवियों व इतिहास वेत्ताओं को भी अनेक प्रकार की सहायता मिल सक्ती है.

पृथ्वीराज रासा में उनकी हरएक राणीयां के विवाह के वास्ते उल्लेख नहीं होते खास २ विवाह के प्रसंगों का कविने वर्णन किया है, परन्तु सिरोही के राजपुरोहित की पुस्तक की नुंद में उनके नाम ठाम मालूम हो सके वैसा एक कवित्त मिला है, उसमें लिखा है किः—

" प्रथम परण पडियार राव नाहर की जाई, ता पिछे इच्छनी सलख की सुता विहाई."
" जिया पिछे दाहेमी राव डाहर की कन्या, गयन कुमार अतिरथ सत हमीर स कन्या."
" रामसाह की नन्दनी वड गुज्जर वानी वरण, जा पिछे पद्मावती जादवन की जोड परण."
" राव धनक की कुवर दुती जमगरी सु कहीए, कछवाई पंजून भरत वलभद्र चलऐ."
" जा पिछे पडिहार चंद नन्दनी सु गाईव, शशीवृता सुंदरी और हंसावती पाइव."
" देवांसी सोलंकणी सारंग की पुत्री मगट, पटराणी संजोगता एते राज महलां सगत."

इस कवित्त से पृथ्वीराज के राजलोक में १ पडियार नाहर की पुत्री, २ सलख की पुत्री इच्छनी, ३ दाहेमा डाहर राव की पुत्री ग्यान कुमारी, ४ रामशाह वडगुज्जर की पुत्री नन्दनी, ५ व ६ जादव की पुत्री पद्मावती उसकी वहिन, ७ राव धनक की पुत्री कुवरदे, ८ पंजून कछवाह की पुत्री जिस से कुमार भरत व वलभद्र, ९ पडिहारचंद्र की पुत्री, १० हंसावती के राजा की पुत्री शशिवृता, ११ देवास का सोलंकी सारंग की पुत्री व १२ पटराणी संजोगता, इस मुआफिक राजमहल में राणीयां थीं.

इस विषय में देवडा चौहानों के वडुआ की पुस्तक में कुछ ज्यादह खुलासा से पृथ्वीराज की राणीयां के नामों का उल्लेख हुआ है, जिसमें सोलह राणी होना पाया जाता है. उसमें लिखा है कि—

× × × ×

१ पृथ्वीराज की पटराणी पडिहारी पडिहार मंडोवर के राव नाहरसिंग की वेटी जतन कुंवर.
२ दूसरी राणी राव आलहण की वेटी इच्छनी पवार गढ आवु की.
३ तीजी राणी सोलंकणी गढ देलवाडा का सोलंकी रामसिंह की वेटी प्रताप कुंवर.
४ चौथी राणी दाहमी राव दाहड नागोर की वेटी सूरज कुंवर.
५ पांचवी गोड हमीर सूरसोपुर (पूरव में जयपुर पास) की वेटी ज्ञान कुंवर.

६ छट्ठी राणी वड गुज्जर राजोल के राव रामसिंग की वेटी नन्दनकुंवर.

७ सातवीं राणी जादव गढ समतशिखर के पदमसिंग की वेटी पद्मावती.

८ आठवीं राणी सिसोदणी राणा धनक की वेटी कुंवरदे जिसके कुंवर 'रेणसीजी' व सामन्तसिंह.

९ नवमी राणी कच्छवाह पुजनराव गढ नरवर की वेटी जसकुंवर जिसके वेटे वलभद्र व भरत.

१० दशवी पडिहार मंडोवर के चंद्रसेन को वेटी चंद्रकुंवर.

११ ग्यारहवी राठोर जेतसिंह गढहंसहंसावल (पुरव में) की शशीवृता.

१२ वारहवी सोलंकी सारंगदेव गढ देवास की चंदाकुंवर.

१३ तेरहवी राणी वेस डुडिया खेडा (पुरव में) के राजा उदियासिंग की वेटी रतनकुंवर.

१४ चउदवी सोलंकी मानसिंग अनहिलपुर पाटण की वेटी सूरजकुंवर.

१५ पंदरहवी मकवाणी करोटीगढ के राव कान्हडदेव की वेटी प्रतापकुंवर.

१६ सोलहवी राठोर राजा जयचंद कन्नोज की वेटी संयोगता.

उपर्युक्त नाम ठाम देखते पाया जाता है कि यह नामावली सम्पूर्ण और विश्वास पात्र है क्यों कि उसके साथ पृथ्वीराज रासा में जो जो राणीयों के नाम उपलब्ध होतें हैं वे नाम और उपरोक्त कवित्त में आये हुए नाम भी मिलतें हैं.

पृथ्वीराज की वहिन पृथादेवी का विवाह चितौड का राव समरसिंह के साथ होने का जगह २ उल्लेख हुआ है, और उस प्रसंग को रासा में कविने विस्तार से लिखा है. परन्तु इतिहास वेत्ताओं का यह मत है कि उस समयमें (वि. सं. १२२६ से १२४९ तक में) चितौड में समरसिंह नाम का राजा नहीं था, इसका प्रत्युत्तर दूसरे विद्वानों ने दिया है. जिससे इस पुस्तक में ज्यादह दलील करने की आवश्यकता नहीं है.

इस प्रकरण में लिखा हुआ कवित्त से पाया जाता है कि पृथ्वीराज के वलभद्र व भरत नाम के दो पुत्र थे, और वडुआ की पुस्तक मुआफिक १ रयणसिंह २ सामन्तसिंह ३ वलभद्र व ४ भरत, यह च्यार पुत्र होना पाया जाता है. वंशभास्कर की पुस्तक में १ चंडासी उर्फ रत्नसिंह (रयणसिंह) व २ सामतसिंह नाम के दो पुत्र होना लिखा है. सूर्जनचरित्र की पुस्तक में पृथ्वीराज के वाद 'प्रल्हाद' होना अंकित हुआ है. पृथ्वीराज रासा की पुस्तक में कुमार रत्नसिंह (रयणसी) ने पृथ्वीराज का देहान्त होने पर वडी वीरता से शाखा करके क.म आने का उल्लेख हुआ है. उपर्युक्त नामों में प्रहलाद का नाम सूर्जनचरित्र की पुस्तक के सिवाय दूसरी किसी प्रति में उपलब्ध नहीं होता है. सूर्जनचरित्रसे माणकराव के पहिले का जो वंशवृक्ष उपलब्ध होता है वह विश्वास पात्र होना पाया

नहीं गया है जिससे पृथ्वीराज के पुत्र १ रत्नसिंह, २ सामन्तसिंह, ३ बलभद्र व ४ भरत होंगे वैसा अनुमान होता है.

पृथ्वीराज के भाई हरिराज होना ऐतिहासिक प्रमाणों से मान्य हुआ है, और पृथ्वीराज के पुत्र गोविंदराज होने का भी कहा जाता है. वडुआ की पुस्तक में इनका भाई कोकसकुमार होनेका उल्लेख है जो मुसलमान हो गया था. पृथ्वीराज की औलाद के विषय में 'रणथंभोर' के चौहानों की ख्यात प्रकरण ७ वां में लिखी गइ है.

इस महान् व प्रभावशाली राजा के वास्ते जितना लिखा जाय वह कम है. इसकी वीरता के वास्ते 'पृथ्वीराज रासा' की पुस्तक में कविने जो श्रम उठाया है वैसा श्रम किसी कविने औरों के वास्ते नहीं उठाया है. पृथ्वीराज के इतिहास में मुख्य वात यह है के उसने अपना पिता सोमेश्वर के घातक राजा भीमदेव को मार कर आबु के राजा की रक्षा की. उसके सामन्त ऐसे वीर पुरुष थे कि उन्होंने कई वार मुसलमानों का पराजय करके शहाबुद्दीन गोरी को पकड लिया था. राज्य खटपट के कारण से उनके सामन्तों में आपस में द्रोह पैदा हुआ जिससे विग्रह वढते रहे. अनेक राणीयां होने से पृथ्वीराज ने जनाने का सहवास वढा दिया. कन्नोज के राठौड राजा जयचंद के साथ प्रतिस्पर्धा वढ जाने से उसने यह महान् राजा का अपमान करने के वास्ते अपनी पुत्री संयोगिता के स्वयंवर में इनको द्वारपाल के स्थान पर नियत किया. पृथ्वीराज ने उसका वदला लेनेको संयोगिता का हरण किया, और इस कारण से जो युद्ध हुआ उसमें पृथ्वीराज के वडे वडे सामन्त काम आ जाने से चौहानों के सैनिक वल में क्षिणता हुई. सफलता प्राप्त न होने से कन्नोज के राजा ने गोरी सुलतान के साथ मेलझोल किया. राठौड कन्या संयोगिता के प्रेमपाश में वीरपुत्र ऐसा वंदीवान वनकर जनानें में वैठा कि उसने राजकाज का त्याग किया इतना ही नहीं, परन्तु दुश्मन की फौजने राज्य की सिमा में प्रवेश किया वहां तक उसकी फिकर न की. संयोगिता ने राजा के कान पर कोई भी समाचार जाने न पावे वैसा वंदोवस्त करने से उनके सामन्त निराश हो गये. आखिर काका कान्ह, चंद वरदाई, और दूसरे दो सामन्तोने मंत्रणा कर वडी मुश्किल से पृथ्वीराज की मुलाकात ली. (इस समय का प्राचीन चीत्र जिसमें वे पांचों की तसवीरें खींची हुई हैं वह इस पुस्तक में दीया गया है.) वीर राजपुत्र की आंखे इस मुलाकात से खुल गई. उसने संयोगिता को कुच्छ ठपका भी दिया और कुच्छ पश्चाताप भी किया. हथियार धारण कर के वह दुश्मन के सामने गया, परन्तु यह घटना होने के पहिले ही इनके सव सामन्त काम आ चूके थे. होणहार मिथ्या नहीं हो सकता है. गग्गर नदी के तट पर अंतिम युद्ध हुआ, उसमें वह पकडा गया और ×शहाबुद्दीन

× शहाबुद्दीन गोरी के विषय में यह दंत कथा प्रसिद्धि में है कि—देहली का तंवर अनंगपाल की राणी गर्भवती थी, जब कि सन्तान प्रसुति का समय हुआ तब पृथ्वीराज की माता (जो अनंगपाल की पुत्री थी) वहां विद्यमान थी उसने चालाकी से प्रसव हुआ पुत्र की जगह पुत्री रख दी और पुत्र को गोर में दफन करने के वास्ते कबरस्थान में भेजवा दिया. दासी उस वालक

ने उसको वहां ही मार डाला. अन्य मत से शहाबुद्दीन व पृथ्वीराज दोनों उसी युद्ध में काम आनेका कहा जाता है.

संयोगिता के विषय में कहा जाता है कि उसने पति विरह होने से मर्दानी कपड़े पहिन कर शस्त्र हाथ में धारण करके घोर युद्ध किया और रणक्षेत्र में ही काम आ गई. 'कान्हडदे प्रबंध' नाम की पुस्तक में जालोर के वीरमदेव सोनगरा की पूर्व जन्म की कथा का वर्णन किया है उसमें लिखा है कि—वह अगले जन्म में पृथ्वीराज था, और अलाउद्दीन खिलजी की शाहजादी 'सिताई' अगले जन्म में पृथ्वीराज की राणी 'पद्मावती' नामक थी. पद्मावती ने पृथ्वीराज को मंत्र प्रयोग से कामण करके अपने प्रेमपाश में लुब्ध कर रक्खा, जिससे पृथ्वीराज के बहुत सामन्त मारे गये. इस विषय में कवि पद्मनाभ कहता है कि.

" सोमेश्वर घर छट्ठी वार, लीधो पृथ्वीराज अवतार. पाल्हण ने घेर हुं पछी फरी, पद्मावती नामे अवतरी. "
" ते जन्मे दुष्कृत आचर्युं, गाय विणासी कामण कर्युं. साध्यो मंत्र गर्भे गायने, चित्त विकार थयो रायने. "
" राय कर्या वश लोपी लाज, हण्या प्रधान भोगविवुं राज. शाहबुद्दीन सुलताने सूण्यो, पति घाघरने तीरे हण्यो."

उपर्युक्त कविता से पाया जाता है कि राणी पद्मावती के प्रेम पाश में पहिले से ही पृथ्वीराज मुग्ध होकर उसके वश हो चूका था और उस समय में पद्मावती की खटपट से इनके बहुत सामन्त मारे गये. पीछे से संयोगिता का हरण होने बाद नये भोगविलास में राजा जकड गया. पाया जाता है कि हद से ज्यादह भोगविलास में पड जाने से ही दुश्मन को मौका प्राप्त हुआ और देहली के तख्त पर चौहान वंश का अस्त हुआ.

(नोट)—पृथ्वीराज का देहान्त वि. सं. १२४९ में होने का उल्लेख हुआ है, उस मुताबिक उन के राज्य अमल का समय १३ वर्ष का होना मालूम होता है, परन्तु एक +हस्त लिखित प्रति, जिसमें देहली की गद्दी पर जो जो चौहान वंशी राजा हुए है उन के नाम व राज्य करने के वर्षों की संख्या दी है, उसमें पृथ्वीराज ने देहली की गद्दी पर १८ वर्ष २ मास १ दिन १३ घडी राज्य करने का उल्लेख किया है. पाया जाता है कि वह गलत है या सोमेश्वर के समय में पृथ्वीराज देहली रहते थे उस समय को शामिल गिन कर यह वर्ष बतलाये है.

को जिन्दा कबरस्थान में छोड आई जो एक मुसलमान फकीर के हाथ पडा, उसने उस बालक की परवरस की और गोर में से प्राप्त होने के कारण उसका नाम शहाबुद्दीन गोरी रक्खा. फकीर ने इस बालक के माता पिता का पत्ता लगाते वह राजकुमार होना पाया गया, जिससे देहली छोड कर वह लाहोर गया. जब कि शहाबुद्दीन बडा हुआ तब फकीर ने उस को पूर्व घटना से वाकिफ किया. शहाबुद्दीन ने अपने पराक्रम से गिजनी व पंजाब आदि जीत लिये और देहली की गद्दी अपनी होने से वह लेने के वास्ते आक्रमण चलु रक्खे. पृथ्वीराज को यह घटना मालूम थी जिससे उसका घात नहीं करते सात दफे पकड २ कर छोड दिया था.

+ इस प्रति में देहली की गद्दी पर चौहान वंशी राजाओं के नाम में १ विशलदेव चौहान, २ गंगेव, ३ पहाडमल, ४ सोमसी, ५ साहड, ६ नागदेव ७ पृथ्वीराज चौहान. इस मुआफिक नाम अंकित हुए है.

देहली की गद्दी पर अंतिम हिन्दु राजा पृथ्वीराज चौहान होने का इतिहास में प्रसिद्ध है. परन्तु प्राचीन समय की उपलब्ध होती *राजावली की हस्त लिखित प्रतियों में व मूता नेणसी की ख्यात में दी हुई राजावली से उपलब्ध होता है कि पृथ्वीराज के बाद देहली की गद्दी पर च्यार या पांच हिन्दु राजा और भी हुए है.

बलीराम मुंशी की राजावली से उपलब्ध होता है कि " देहली में जीवनसिंघ नाम का राजा था वह बहार मुसाफरी जाने से मेवात का राजा राई पीथोरा ने फौज लाकर युद्ध करके देहली पर कब्जा किया." तब मूंता नेणसी की ख्यात से उपलब्ध होती राजावली में लिखा है " कि देहली की गद्दी पर ' सक्रमाधो ' नामक राजा था उसको मार कर हरिसिंहने राज ले लिया. हरिसिंह के वंश में सातवीं पुश्त पर ' पीथोरा ' हुआ. " दोनों राजावली से देहली की गद्दी पर पीथोराव व उनके पीछे कौन २ राजा हुए वह नीचे अंकित किया जाता है.

१ मुंशी बलीराम की राजावली मुआफिक.

नाम.	वर्ष.	मास.	दिन.
१ राजा पीथोरा.	१० —	२ —	९
२ राजा अभयमल.	१४ —	५ —	१७
३ राजा दुरजनमल.	११ —	४ —	१४
४ राजा उदेमल.	१३ —	७ —	१३
५ राजा जयमल	३६ —	४ —	१९

अंतिम राजा जयमल को शहाबुद्दीन गोरी ने किले हांसी में से पकड लिया और गाम घाघर में मार डाला और आप कसबा जीन में तख्त पे बैठा.

२ मूता नेणसी की ख्यात में दी हुई राजावली मुताबिक.

नाम.	वर्ष.	मास.
१२३ पीथोराव.	१० —	२
१२४ अभेमल.	१४ —	५
१२५ दूर्जनमल.	२५ —	४
१२७ विजयमल.	३६ —	७
१२८ राजा सुलतान सांगो.	३२ —	३

इनके बाद नं. ११९ सुलतान कुतुबुद्दीन देहली की गद्दी पर बैठा.

उपरकी दोनों राजावली में लिखी हुई ख्यात आज पहिलें प्रसिद्ध में आई हुई ख्यातों से विरुद्ध पाई जाती है, परन्तु उसमें कुच्छ भी ऐतिहासिक रहस्य होनेका संभव होने से भविष्य में नई बात जाहिर में आ जाय तो उससे मुकाबला करने का मौका रहे इस ख्यालसे उनकी नुंद की गई है.

* यह राजावलीओं में युधिष्टर से लगा कर मुसलमान बादशाहों तक का नाम और राज्य करने का वर्षो की संख्या दी गइ है. जिसमें मुंशी बलीराम की राजावली मुताबिक युधिष्टर से समुद्रपाल तक के राजाओं का राज्य ७० पुश्तों में वर्ष ३०४० व मूता नेणसी की ख्यात की राजावली मुआफिक समुद्रपाल तक में पुश्त ६८ और वर्ष २९३१ मास १० दिन १९ होता है.

प्रकरण ७ वाँ.

'रणथंभोर के चौहान.'

महान् पृथ्वीराज के वंशजो ने वाद में 'रणथंभोर' में अपना राज स्थापन किया. उस विषय के अनेक ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध है, लेकिन रणथंभोर के चौहान शाखा की ओलाद वर्तमान समय में कहां है. इसका निर्णय अवतक नहीं किया गया. सूर्जन-चरित्र के ग्रंथानुसार महान् पृथ्वीराज का भाई 'माणकराज' था, जिसकी ओलाद में रणथंभोर का 'हमीरहठीला' हुआ व उसके वंशजों में ही बूँदी का राज्य स्थापन करनेवाला 'वाघसिंह' हाडा हुआ ऐसा उल्लेख किया है तथा छोटाउदयपुर व वारीया (जो रेवाकांठा में है.) के चौहान राजाओं के इतिहास में भी उनको रणथंभोर के 'हमीर हठीला' की ओलाद वालें होना वताये हैं.

वंशभास्कर ग्रंथ में रणथंभोर के चौहानों को महान् पृथ्वीराज के वंशज होने का स्वीकार किया गया है और हमीरहठीला का पुत्र रत्नसिंह था उसको चितौड भेज दिया ऐसा उल्लेख है. हमीर महाकाव्य में 'हमीरहठीला' पृथ्वीराज के उत्तरोत्तर वंशज होना अंकित हुआ है. सिरोही के वडुआ की पुस्तक में रणथंभोर के चौहानों को पृथ्वीराज के काका 'सूरसेन' की ओलाद वाले होना वतायें है. मेओ कॉलेज के (फेब्रुआरी सन् १९१३ इस्वी) के मासिक में शिलालेख के आधार सें जो इतिहास प्रकट हुआ है उसमें लिखा है कि 'पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज ने महमूदगोरी की तावेदारी स्वीकार किया जिससे इसके काका हरिराज जो अजमेर में था उसने गोविन्दराज पर चढाई की जिससे वह रणथंभोर भाग गया. गोविन्दराज की ओलाद में 'हमीर हठीला' हुआ जिसने ई. संन १३०१ में अलाउद्दीन खिलजी के साथ युद्ध किया.' इससे पाया जाता है कि रणथंभोर के चौहान पृथ्वीराज के वंशज थे.

रणथंभोर के चौहानों का वाद में राज्य कहां २ रहा और वर्तमान समय में उनकी ओलाद कहां २ है, उसका निर्णय पीछेसे होगा. क्यों कि 'हिन्द राजस्थान' व रेवाकांठा डायरेक्टरी वगैरह छपी हुई पुस्तकों में पावागढ के चौहानों को रणथंभोर के 'हमीर-हठीला' को ओलाद वाले होने का जगह २ लिखा है, साथ यह भी उल्लेख किया गया है कि वह 'खीची चौहान' थे, वल्कि पृथ्वीराज को भी 'खीची चौहान' होने का उक्त पुस्तकों में वताया गया है. पृथ्वीराज खीची शाखा के होना दूसरे किसी ग्रंथो में या भाट चारणों की पुस्तकों से पाया नहीं जाता है.

मूता नेणसी की ख्यात म खीची चौहानों की शाखा जहां से विभक्त हुई है उस विषयमें विस्तार से विवेचन हुआ है. (जो अहवाल खीचीचौहानों के प्रकरणो में लिखा गया है.) उस प्रमाण से खीचीशाखा नाडोल के चौहानों से अलग हुई है, वल्कि पृथ्वीराज के समय म 'गूँदलराय' नामक खीची पृथ्वीराज का सामन्त था, उस पर पृथ्वीराज का कोप होने से वह अपनी 'भदोर' की जागीर छोड कर मालवे में भाग गया. खीचीचौहानों का गढगागरून से ताल्लुक इसी गूँदलराय से शुरु हुआ है, इन सूरतों में रणथंभोर के हमीरहठीला को 'खीची' होना बताया है यह बात शंका स्पद है.

उपर्युक्त ऐतिहासिक प्रमाणों से पाया जाता है कि पृथ्वीराज के पीछे उनकी ओलाद वालोंका राज रणथंभोर में था और उसके वंश वृक्ष के वास्ते प्राचीन साहित्यों से कोन २ नाम उपलब्ध होते है वह नीचे लिखा गया है.

५ सिरोहीके बहुआ की पुस्तकमें महान् पृथ्वीराज का काका सूरसेन होना व सूरसेन के बाद जेतराव व उसका पुत्र हमीरहठीला होना अंकित हुआ है.

उपर्युक्त अलग २ प्रमाणोंके ऐतिहासिक साहित्योंका मिश्रण करते रणथंभोरके चौहानों का वंश वृक्ष नीचे मुआफिक होना ठीक रहेगा. (जो कि यह लिखा हुआ वंश वृक्ष शंकास्पद और अपूर्ण है.)
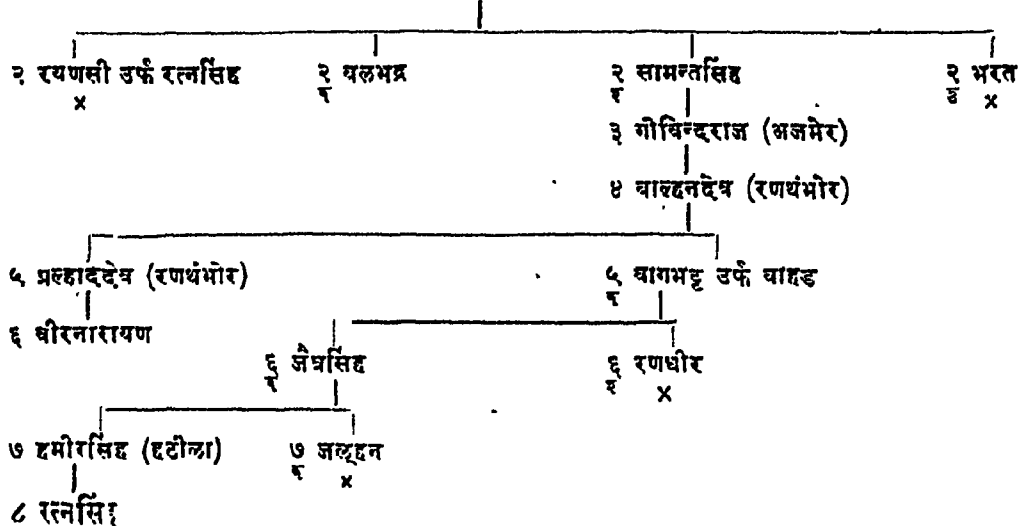
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. ३ गोविन्दराज के विषयमें (फ़ेब्रुआरी सन १९१३ के मेयोकॉलेज के मासिक के पृष्ट १४ से १७ तक में चौहानोंके विषयमें लेख छपा है उसमें.) लिखा है कि इसने महमूदगोरीकी आधिनताका स्वीकार करने से इसका काका हरिराज जो अजमेर था वह नाखुश हुआ और इस पर चढाई की, जिससे यह रणथंभोर भाग गया. पाया जाता है कि सामन्तसिंह का दूसरा नाम गोविन्दराज हो या गोविन्दराज सामन्तसिंह का पुत्र हो. क्यों कि वंशभास्कर में सामन्तसिंह की ओलाद रणथंभोर में होनेका उल्लेख हुआ है-

नं. ४ वालहनदेवका नाम रणथंभोरमें वि. स. १२७२ के शिलालेखमें होना प्रसिद्धिमें आया है.

नं. ५ प्रल्हाददेव के वास्ते सूर्जनचरित्र की पुस्तक में लिखा है कि यह गोविन्दराज का पिता था, लेकिन पावागढ के चौहानों के इतिहास के वास्ते एशिआटिक सोसायटी के लेखानुसार (वडोदे में छपे हुए 'साहित्य' नामक मासिक में लेख प्रसिद्ध हुआ है उसमें) यह गोविन्दराज का पुत्र होना माना गया है.

नं. ६ वीरनारायण का नाम 'नारायण' होना भी उपलब्ध होता है. इसके हाथ से

रणथंभोर चला गया था लेकिन इसका काका नं. ५/१ वागभटने रणथंभोर पुनः प्राप्त किया.

नं. ६/१ जैत्रसिंह का नाम हरएक पुस्तक में उपलब्ध हुआ हैं. इसके समय में देहली के सुलतान जलालुद्दीनने दो दफे रणथंभोर पर हमले किये लेकिन विजय प्राप्त नहीं हुआ था.

नं. ७ हमीरहठीला–की प्रशंसा के वास्ते हमीर महाकाव्य, हमीररासा आदि स्वतंत्र पुस्तकें और वहुतसे गीत कवित उपलब्ध होतें हैं. पृथ्वीराज चौहान के वाद चौहानों के पराक्रमको प्रकाशित करने वाला यही वीरपुरुष हुआ था. इसने 'मीर गाभरु' नामक मुसलमान सरदार जो वादशाह अलाउद्दीन खिलजी से नाखुश होकर वगावत कर रहा था, उसको आश्रय देकर शरणमें रखा. अलाउद्दीन को वह मालूम होने पर उसको देहली भेज देनेका हमीरसिंह को कहलाया गया. हमीरसिंहने 'शरणागत का विरद' पालन करने के वास्ते उसको नहीं सौंपा. वादशाहने अपने वजीर को भेजकर हमीरसिंह को कई प्रकार की लालचें दी. वजीरने साम, दाम व भेद से इसको समजाया परन्तु सफलता न होने से वह चला गया, जिस पर शाही फौजने रणथंभोर पर चढाई की. हमीरहठीलाने युद्ध करके कई वार वादशाही फौज को हराकर वापस निकाल दी, लेकिन वादशाह ने इसका पीछा नहीं छोडा. हमीरहठीला एक समय रणथंभोर से गैरहाजिर होने की खवर मिलने से वादशाहने अचानक रणथंभोर पर हमला किया, उस समय रणवीरसिंह नामके सेनापतिने (हमीरहठीला का काका होता था उसने) हमीरसिंह का पुत्र 'रत्नसिंह' जो वालक था उसको चितौड भेज कर शाही फौज के साथ युद्ध करना शुरु किया. शाही फौज रणथंभोर आने की खवर मिलने पर हमीरहठीला भी युद्ध में शामिल हुआ.

'हमीर रासा' नामक हस्तलिखित पुस्तकमें लिखा है कि रणवीरसिंह ने केशरिया करने की तैयारी करके जनाने वालों को सूचना की थी कि जवतक चौहानों की ध्वजा फरकती हुई मालूम होवे वहां तक खडके हुए झमर में प्रवेश नहीं करना. लेकिन युद्ध में राजपुतों को विजय पास होने पर भी राणीयोंने जुहार करके अग्नि प्रवेश कर दिया, जिसका कारण यह वताया है कि राजपूतों ने ऐसी वीरता से युद्ध किया कि शाही फौज अपना डंका निशान छोडकर भाग गई, जिसे कब्जे में लेकर राजपूतों ने विजय चिन्ह स्मारक (शाही झंडा) आगे रख कर किले के तरफ प्रयाण किया. किले पर उपस्थित रहे नजरबाजों ने शाही झंडा आगे देख कर मुसलमानों की फत्तह होना व राजपूतों का पराजय होना मान लिया, व जनानें में खवर दी, जो सून कर सव राणीयों ने अग्नि प्रवेश किया. जव कि हमीर किले पर पहुंचा तव यह भयंकर घटना देखकर उसको वैराग्य पैदा हुआ. उसने शंकर के लिंग पर अपना शिर काट कर कमल पूजा की. अन्य मत से ऐसा कहा जाता
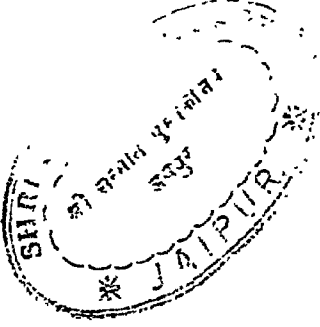
मौजूदा रावजी साहब बेदल (मेवाड)

राय बहादुर रावजी नहारसिंह साहब

ठिकाना बेदला, (मेवाड).

है कि 'मीरगाभरु' व हमीर हठीलाने शाही फौज से बडी वीरता के साथ युद्ध किया जिसमें वे काम आये.

मूतानेणसी की ख्यात में रणथंभोर के चौहानों का इतिहास नहीं लिखा है, परन्तु सोनगरा चौहानों के इतिहास में लिखा है कि अलाउद्दीन खिलजी के दो मुसलमान सरदार ममुशाह व मीरगाभरु नामक थे, उन पर बादशाहने ईतराजी बता कर अपमान करने से वे नाखुश रहते थे. जब कि जालोर के राव कान्हडदेव सोनिगराने सोमैया महादेव छोडाने के वास्ते 'सकराना' गांव के पास शाही फौज से मुकावला किया तब यह दोनों मुसलमान सरदार राव कान्हडदेव के पक्ष में रहे, परन्तु उनके पास 'धारु पातरियां' थी जो सोनगरे ने मांगी, जिससे वे दोनों हमीरहठीला को शरण आये. हमीर ने शाही वागी होना मालूम हो जाने पर भी उनको अपने पास रखे जिससे अलाउद्दीन ने रणथंभोरपर घेरा डाला. कई दिन तक घेरा रहा, पीछे वि. सं. १३५२ श्रावण वदि ५ के दिन हमीर युद्ध में काम आया. लेकिन उक्त पुस्तकमें अलाउद्दीन ने कौन २ किले कब लिये उसकी नुंद में लिखा है कि "रणथंभोर का किला वि. सं. १३५८ में हमीरदेव चौहान के हाथ से लिया गया." यह १३५८ का संवत् विश्वासपात्र है, क्यों कि इस्वी सन १३०१ (वि. सं. १३५७-५८) में हमीरहठीलाने अलाउद्दीन खिलजीके साथ युद्ध करने का उल्लेख शिलालेख में भी हुआ है.

हमीरहठीलाकी प्रशंसामें हिन्दी व गुजराती भाषामें भी उपन्यास लिखे गये हैं. भाट चारणोंने उसकी नेक टेक व हटीलापन के अनेक गीत कवित्त रचकर उसका नाम अमर रखा है. इसकी हठ के विषय में कविने कहा है कि.

"कागन वाचन केल, फलंतो एक वार; त्रिया तेल हमीर हठ चढे न दुजी वार."

इसकी वीरता और दृढ प्रतिज्ञा के विषय में कवि कहता है कि.

"सात समुद्र नवनों नदी, तिसमें मेरा शिर; हठ चाडू बादशाह की, निरभय रहो हमीर"

इस छोटेसे दोहे में कविने इसका आत्मज्ञान और दुनियादारी में आवश्यक क्षत्रीवट के विषयमें सम्पूर्ण विवेचन किया है. हमीरहठीलाने मुसलमान सरदार को शरणांगत रख कर अपना वचन पूर्ण करने के वास्ते बादशाह से शत्रुवट करके रणथंभोर के किले के साथ अपनी जान गुमा दी लेकिन हठ न छोडी. इसी घटना का अनुकरण कर के दश वर्ष के बाद जालोर के सोनगरे चौहान राव कान्हडदेव व वीरमदेवने चौहानों की कीर्ति में और प्रकाश डाला, जिसका अहवाल 'सोनगरा चौहान' के प्रकरणों में लिखा गया है.

नं. ८ रत्नसिंह मेवाड भेजा गया था. उसने मेवाड के राणा की सेवा स्वीकार ली. जिसकी ओलाद में वर्तमान समय में वेदला, कोठारिया व पारसोली ठिकाणे के 'राव' है, जो मेवाड के प्रथम श्रेणी (सोले सामन्त) के सामन्त गिने जाते है.

प्रकरण ८ वा.

पूर्विये चौहानों का इतिहास.

सांभर के वंशवृक्ष में नं. $\frac{३०}{१}$ कान्हड़देव (जो काका कान्ह के नाम से मशहूर था.) उस से पूर्विया चौहानों की शाखा अलग हुई है. वर्तमान समय में इस शाखा का खास बडा राज्यस्थान नहीं है, परन्तु नीमराणा (अलवर रियासत में पूर्विया चौहानों की एक बडी जागीर है जो 'राजा' कहलाते है.) के राजा की ख्यात से इनका इतिहास उपलब्ध होता है. उक्त ख्यातसे पूर्विये चौहानों का वंशवृक्ष नीचे मुआफिक है.

वंश वृक्ष पूर्विये चौहान. (पूर्व के)

१ कान्हडदेव (संभल व इटोला)
|
२ भोमविजय (इटाला)
|
- १ लखनसिंह (माठीन गढ)
  |
  ४ राणासिंघ (माठीन गढ)
  |
  - ५. लाहदेव (माठीन व महावर, दूसरे बावीस पुत्र के नाम टीप्पणी में लिखे गये है.
    |
    - ६ अंजनदेव (मदावर)
      |
      - ७ मदनसिंह (मडावर)
        |
        ८ पदमसिंह मडावर)
        |
        - ९. मोकल (मडावर)
        - वेरीनाल
          x
      - $\frac{७}{५}$ वजदेव (काशी खेडी' ८५ गांवोंसे मिला बाद वडोद' बसाया)
      - $\frac{७}{२}$ कीरतसिंह
      - $\frac{७}{३}$ विजयसिंह
        (इन दोनों को 'हुथोड' मिला)
    - $\frac{६}{२}$ राहदेव (पुरलूणी)
- $\frac{३}{५}$ गोपालदेव (तोडोना व मकराणा)
- $\frac{३}{२}$ पदमसिंह (सांचोर)
- $\frac{३}{३}$ धीरसेन (रणथंभोर)

नं. ४ राणासिंघ के बावीस पुत्रो में १ वीर समीर को इटावा, २ भूलदेव को रजोरदा, ३ त्रिलोक ४ भूलमंद्र व ५ कल्याण यह तीनों को 'जनहुस.' ६ अजेगान को चेढडुस, ७ अजेमल को 'श्रीमाल चंडडम', ८ तारा को तडदीशा, ९ विजयराज को किलेहांसी, १० त्रिलोकचंद को जरतोशा, ११ बुद्धसिंह १२ सूरजसिंह व १३ मावो यह तीनों को 'कालापहार', १४ जलदेव व १५ चंद्रदेव दोनों को लाहसोद, (जयपुर के पास.) १६ वीरमचंद को कमाऊं, (तेहरीगढवाड पास.) १७ वीरमदेव १८ हासदेव व १९ रामदेव ये तीनों को 'सौखरी' (पूर्व में.) २० सहसमल को 'बाचल' (वीवाजा में) २१ लोरसिंह को 'इसराणा कपूरी' इस मुआफिक जागीरें मिली थी.

नं. ६ अंजनदेव की राणी सीसोदणी शिवकुंवर राणाकुंभा की पुत्री थी. व इसकी पुत्री कान्हकुंवरी का विवाह चितौड के राणा 'सांगा' के साथ हुआ था.
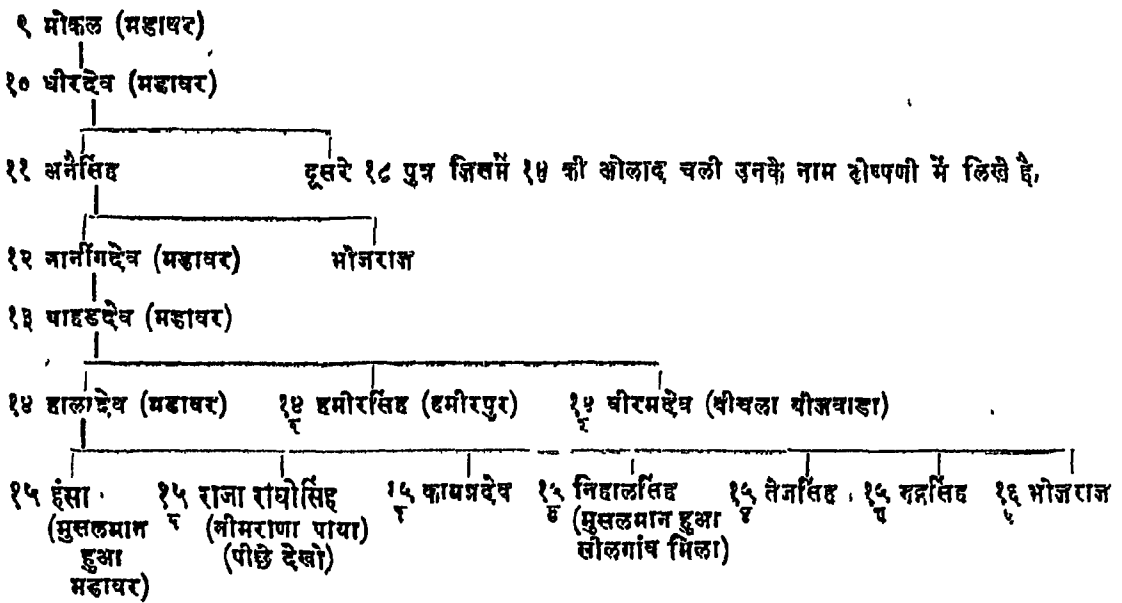
पूर्विये चौहानों के संक्षिप्त इतिहासमें नं. १ *कान्हडदेव बडा वीर पुरुष हुआ. उसने गग्गर के युद्ध में शहाबुद्दीन गोरी को पकड कर पृथ्वीराज के आगे खडा किया था, और दूसरी बहुतसी लडाईयों में पराक्रम दिखाने की प्रशंसायुक्त तवारिख पृथ्वीराज रासा नामक पुस्तकमें व दूसरे इतिहासों से भी पाई जाती है. महान् पृथ्वीराज का यह दाहिना हाथ गिना जाता था. इसकी तरफ 'संभल मुरादाबाद' भी था, वहां पर इसने कई क्रोड रुपये लगाकर सारणेश्वर महादेव की स्थापना करने के वास्ते सुवर्ण मन्दिर बनाया, परन्तु उसमें प्रतिष्ठा होने न पाई, जो मन्दिर वर्तमान समय में भी वहां विद्यमान है. इसकी पुत्री 'बेलोन कुंवर' महासती हुई. जो 'बेला भवानी' के नामसे

नं. १० धीरदेव के दूसरे अठारह पुत्रो में १ खेतसिंह को ४९ गांवों के साथ 'रताई', २ जेतसिंह को 'कांखरी', ३ अजेराम को 'भोरखेडा', ४ जगशाह को 'पूनरौढ', ५ दलसिंह को 'भरीन', ६ मोहनसिंह को 'कूज', ७ हाथीराम को 'आंवेला झाझेरा', ८ पांचा को 'पहाडी', ९ महरसी को 'धमारी', १० चावसिंह को 'वसई', ११ चंद्रसिंह व १२ भोजराज दोनों को 'महापुर', १३ देवपाल को 'बाणापुर', १४ गिरराज को 'गिरराजपुर' की जागीर दी. (जो 'अलीगढ' व 'बुलंदशहर' के जिले में है.) १५ विजयसिंह १६ भरराज, १७ कातन व १८ कल्याण यह चारों नाऔलाद गुजर गये थे.

नं १४ हालादेव के समय में 'मडावर' पर तैमूर्लंग बादशाहने हमला कर के मडावर छीन लिया, जो बाद में इसका पुत्र नं. १५ हांसा मुसलमान हुआ उसके तरफ मडावर रहा. हंसा को 'राव' की पदवी मिली. जीनसे मडावर के मुसलमान चौहान कहलाये. नं १५/३ निहालसिंह भी मुसलमान हो गया, जिसको 'सिलगांव' की जागीर मिली.

नं. १५/२ राघोसिंह ने 'नीमराणा' का राज्य संपादन किया. नं. १५/२ कामप्रदेव को 'बडोद' की जागीर व 'राणा' का पद प्राप्त हुआ. नं. १५/४ तेजसिंह व नं. १५/५ रुद्रसिंह को 'बहाली' की जागीर व नं. १६/५ भा[illegible] [illegible]सर' की जागीर मिली.

* यह 'बडमूछा' था जिससे इसके सामने दूसरा कोई अपनी मूछों पर हाथ डालने से यह बहुत गुस्से होता था. इसी कारण इसने गुजरात के सोलंकी राजा भीमदेव के भतीजे जो चौहानों के शरणे आये थे उनको मार डाले थे, जिससे महान पृथ्वीराजने नाखुश होकर इनको अपनी आंखो पर पट्टी बांधने का हुक्म दिया था.

मशहूर है, और उस स्थान पर हरसाल हजारों यात्रालु उसके दर्शन पूंजन के वास्ते आते हैं. पृथ्वीराज के हाथसे देहली जाने बाद भी पूर्व में विस्तर्ण प्रदेश कान्हड़देव की ओलाद वालों के पास रहना पाया है.

नं. २ से नं. १५ तक के राणाओं का संक्षित इतिहास वंशवृक्ष में अंकित किया गया है, जिससे मालूम होगा कि इनकी ओलाद को कहां कहां जागीरें मिली थी. वर्तमान समय में पूर्विया चौहानों में मकराणा, व नीमराणा नाम की जागीरें मुख्य है.

नं. $\frac{१५}{१}$ राजा राघोसिंह ने देहली जाकर बादशाह तैमूलींग की सेवा स्वीकार ली. जब कि तैमूलींग की साथ 'हरई' के बाहशाह की लडाई हुई, तब इसने बडी वीरता के साथ 'हरई' के बादशाह की सवारी के हाथी को तलवार से मार कर उसको पकड लिया जिससे तैमूलींग ने खुश होकर राघोसिंह को 'नीमराणा' का राज्य दिया, और 'राजा' का खिताब इनायत किया. यह राज्य पीछे से अलवर रियासत की मातहती में चला गया. 'नीमराणा' राज्य के राजाओं की वंशावली नीचे मुआफिक है.

२ वंश वृक्ष नीमराणा के पूर्विया चौहान.

१ राजा राघोसिंह (देखो पूर्विये चौहानों का वंश वृक्ष में नं. $\frac{१५}{१}$ बाज्ञा नीमराणा. वि. सं. १९२१ में पाट बैठा).

२ राजा पूरणसिंह वि.सं.१५२७ | २ रावत मोकल (बीलोट) | गुंदराज x | $\frac{२}{१}$ गोविन्दराज (चोबारा साक्यांपुर) | $\frac{२}{१}$ कालसिंह (कांकर)

३ विक्रमसिंह वि.सं.१५७५ | $\frac{३}{१}$ रायपनाल (डांकडी) | $\frac{३}{१}$ पीपसिंह (राजगढ) | $\frac{३}{१}$ सालसिंह | $\frac{३}{१}$ मेरसिंह दोनों को (कुतीना) | $\frac{३}{१}$ माणकचंद (गीगलाना) | $\frac{३}{१}$ गोपीनाथ (पुनरोड)

४ नरूदेव (वि.सं.१५८४) | गोविन्दराज x | भूदरसिंह x

५ जैतसिंह (वि. सं. १५९३) | $\frac{५}{१}$ कुंभा ('रावत' कहलाया और 'बेलनी' की जागीर पाई.)

६ प्रतापसिंह (वि. सं. १६०४) | $\frac{६}{१}$ लालसिंह ('गीगलाना' गया.)

७ डुंगरसिंह वि.सं.१६१४) | $\frac{७}{१}$ सेतराज (जहांगीराबाद) | $\frac{७}{१}$ भाणसिंह (तेजपुरा)

नं. १ राजा राघोसिंह वि. सं. १३२१ में गद्दी पर बैठा. इसकी एक राणी राठौर जांडा की पुत्री दाडमदे, दूसरी चितौड का राणा चुंडा की पुत्री शिवकुंवर, तीसरी राठौर बीका बीकानेर वाला की पुत्री मा कुंवर, चौथी राना नारायणदास की पुत्री मानकुंवर, व पांचवी नरु का अखेसिंह की पोती धनकुंवर थी.

नं ४ नरुदेव की एक राणी जोधपुर के राव गांगा की पुत्री शिवकुंवर थी.

नं. ७ डुंगरसिंह की राणीयां में एक करोली के यादव अर्जुनपाल की पुत्री सूरजकुंवर, व एक जोधपुर के राठौर राना गोविन्ददास की पुत्री हरसनदेवी थी.

नं. ८ खड्गसिंह की एक राणी पुंगल के भाटी रावल खेतसिंह की पुत्री रूपकुंवरी व दूसरी राणी बिकानेर के प्रतापसिंह की पुत्री बनेकुंवरी और तीसरी खुजणावर के राजा देवकरण की पुत्री थी.

नं. १४ चतरसिंहने चतुर्भुजजी का मन्दिर बंधाया. नं. १५ टोडरमलने अपनी राणी 'नरू' की कृष्णकुंवर की यादगार में 'कृष्णकुंड' बनाया.

नं. १६ महासिंहने कालीया पर्वत पर कालेश्वर महादेव की प्रतिष्ठा कराई, और 'सिद्धनाथ' महादेव का मन्दिर बनाया. नीमराणा में बावडी बंधाई और 'बेलनी' की घाटी बंधा कर 'भेरू' की स्थापना की, जिन कार्यों में १३०००० एक लाख तीस हजार रुपये खर्च किये. इसकी बहिन अखेकुंवर का विवाह जोधपुर के राजा अजीतसिंह के साथ किया गया. इस राजा को 'नवनंदसिंह' व 'चतरसाल' नाम के दो कुंवर थे, वे कवरपदपर ही गुजर जाने से 'बसई' के ठाकोर लालसिंह के पुत्र 'चंद्रभाण' को गोद लिया.

नोट—नीमराणा की वंशावली का हस्त लिखित पुस्तक, सिरोही राज्य के पुस्तक भंडार से प्राप्त हुआ, उस परसे पूर्बिया चौहानों का वंशवृक्ष अंकित किया है. उक्त पुस्तक में चौहानों की प्राचीन वंशावली दी गइ है, परन्तु ऐतिहासिक साहित्यों से मिलाते वह नाम विश्वास पात्र न होना मालूम होता है. उसमें सांभर के माणकराज तक में ११२० पुश्ते होना बताया है. और माणेकराज से पंदरहवीं पुश्त पर कान्हडदेव होना लिखा है, जिसका संवत् वि. सं. १०८१ का होना अंकित किया है जो दुरुस्त नहीं है. इस पुस्तक में नीमराणा का वंशवृक्ष जो दिया गया है वह बहुत ही दुरुस्त होना पाया जाता है. बाद में जो जो राजा निमराणा में हुए उनका इतिहास नहीं मिलने से उनके नाम दर्ज नहीं होने पाये.

प्रकरण ९ वा.

नाडोल के चौहान.

सांभरिया चौहानों के वास्ते जैसे अनेक प्राचीन साहित्यों का आधार अंकित हुआ है उसी मुआफिक नाडोल के चौहानोंकी ख्यातके वास्ते भी प्राचीन साहित्यों का प्रमाण विद्यमान है. जिसमें वि. सं. १२१८ का ताम्रपत्र (जो नाडोल के महावीर स्वामी के जैनमन्दिर में धुप दिपादिक प्रबंध के निमित्त नाडोल के चौहान राजा आलहण ने लिख दिया था.) मुख्य है, जो महाशय कर्नल टॉड साहेब को प्राप्त हुआ था. दूसरा प्रमाण 'सुंधा पहाड' का वि. सं. १३१९ के शिलालेख (जालोर के सोनगरा राव 'चाचींगदेव' के समय में लिखा गया था.) का है. 'टॉड राजस्थान' की पुस्तक में लिखा है कि राव लाखणसी के समय के वि. सं. १०२४ व वि. सं. १०३९ के दो शिलालेख टॉड महाशय को नाडोलसे मिले थे. उस से व दूसरे साहित्यों से नाडोल राज्य की स्थापना करनेवाला मूल पुरुष 'राव लाखणसिंह' होना सर्वमान्य है.

'सिरोही राज्य का इतिहास' के कर्ता राय बहादुर पंडित गौरीशंकर ओझाने बडे भारी श्रमसे उपर्युक्त शिलालेख व ताम्रपत्रके साथ और भी शिलालेखादि से संशोधन करके उक्त पुस्तक में नाडोल के चौहानों का अहवाल विस्तार से लिखा है, उसमें एक जगह अनुमान किया है कि–'सांभर के वाक्पति के पुत्र लक्ष्मणराज का दूसरा नाम 'माणकराव' होगा.' (सि. रा. इ. पृष्ठ १६७) ऐसा अनुमान करने का कारण यह बताया है कि आबु पर अचलेश्वरजीके मन्दिरमें वि. सं. १३७० के शिलालेखमें 'माणकराव' का नाम उपलब्ध होता है, और सिरोही के +वडुओं की पुस्तक में माणकराव व सिंहराव, ये दोनों भाई होना लिखा है. इस पुस्तकके लेखकका अनुमान इससे भिन्न है, क्यों कि सिरोहीके वडुआकी पुस्तकमें सांभरके प्रख्यात 'माणकराव' से छः पुश्त वाद (देखो प्रकरण ४ था में नं. १२ का वंशवृक्ष जिसमें नं. २४२ वाला माणकदेव है व नं. $\frac{२८९}{१}$ लाखणसिंह है.) लाखणसी हुआ है. आबु के वि. सं. १३७० के शिलालेखमें 'माणकराव' नाम अंकित होने का कारण यह है कि सांभर का 'माणकराव' वहुत प्रसिद्ध राजा हुआ था, और इतिहास वेत्ताओंने उसके वास्ते रचे हुए गीत कवित्तोंको व प्रसिद्धिमें आई हुई उनकी कीर्ति व दंतकथा की कहाणी पर अविश्वास

+ उपरोक्त घटना सिरोही राज्य के इतिहास में वडुआ की पुस्तक में लिखी हुई ख्यात से विरुद्ध मालूम होने पर इस पुस्तक के लेखकने वडुआ लक्ष्मनसिंह से दरियाफत करने पर उसने जुबाब दिया कि सिरोही राज्य का इतिहास के कर्ताने मेरी पुस्तकें कभी देखी नहीं है, न मैंने अपनी पुस्तक से कुछ भी ख्यात उतार कर दी है. पाया जाता है कि राणी मगा भाट की वही से यह अहवाल प्राप्त हुआ होगा जो वडुआ की पुस्तक के नाम से जगह २ ग्रन्थमें लिखा गया है.

करके उसका नाम सांभर के चौहानों की नामावली में अंकित नहीं किया है, परन्तु वि. सं. १३७० का शिलालेख लिखने के समय में भी 'माणकराव' नाम का प्रसिद्ध राजा सांभर में होने की ख्यात मान्य थी, जिससे वह नाम शिलालेख में अंकित हुआ है.

नाडोल के चौहानों का वंशवृक्ष के वास्ते उपर्युक्त साहित्यों के सिवाय मूता नेणसी की ख्यात, टोड राजस्थान, वहुआ की पुस्तक व ' सिरोही राज्य का इतिहास ' नामक पुस्तक से अलग २ प्रमाणों उपलब्ध होतें है, जिससे उनके आधार से अलग अलग वंशवृक्ष नीचे अंकित किये गये है.

+ ' मशरिक '-यह नाम चौहानों की खास ' उपमा ' का नाम है. प्राचीन गीत कवित्तों में जगह २ चौहानों की

५ मूता नेणसी की ख्यात में सोनगरा, वाव के चौहान, हाडा चौहान, वागडिया चौहान, सांचौरा चौहान, व खीची चौहान की शाखाएं नाडोल के 'राव लाखणसी' की ओलाद वालों की बताइ है, उससे नाडोल के चौहानों के नाम उपलब्ध होते हैं, जो कि अलग २ स्थानों से यह शाखाओं की नामावली प्राप्त होने से नामो में कुच्छ २ तफावत है, परन्तु उनको अंकित करना आवश्यक होने से वे शाखाओं का प्रमाण दिया गया है.

'मशरिका' के संबोधन से प्रशंसा हुई है. नाडोल के राजवंश में 'मशरिक' नाम सिर्फ सिरोही के बडुआ की पुस्तक में व आभीआ माला के कवित्त से उपलब्ध होता है. पाया जाता है कि–'अहील' का दूसरा नाम 'मशरीक' होगा, क्यों कि नाडोल से निकली हुई हरएक शाखाएं के गीत कवित्तों में 'मशरिका' उपनाम बहुत जगह मिलता है.

नोट—१ बालीसा चौहान 'राव लाखणसी' का पुत्र अजितसिंह की ओलाद में है.

२ राणी मगा के चोपडे से मूंशी न्यामतअलीखांने ख्यात लिखी है, उसमें १ राव लाखणसी बाद क्रमशः २ बलराम ३ सोही, ४ वदेराव ५ आसराव, ६ आल्हण व उनके दो पुत्र ७ कीतू तथा देदा के नाम दर्ज है. देदा की ओलाद वाव (थराद) में होने का उसमें भी लिखा है.

(ए) मूता नेणसी की ख्यात में सिरोही के राजकुल की वंशावली का एक कवित्त लिखा गया है, जिसमें सांभर से अलग हुई नाडोल की शाखा वाला कीतू ने जालोर का राज्य कायम किया, उस विषय में कवि आसीआ माला ने (जो सिरोही रियासत के 'खाण' नामक गांव का चारण वि. सं. की सोलहवीं सदी में हुआ था.) कहा है कि.

× × × × ×

" राय सिंध तिण पाट रहे सेवे तुरकाणो, लखगसी घर छांड हुओ नाडोलो राणो."
" सेवा कीधी सकत वधे वरदान बडाई, थ्यातो घड बदनोर हुओ × × × सवाई."
" चौह भाई चोहवाण वंश रूपक वडो रावा गंजने वेरडो, वरदान आसन लीधो वडे खुरसाण उपर खडो. (७)
" तेर सहस तुरंग सकत वरदान संमपे, नाडुलो नाडुल थान आशा वर थप्पे."
" पाटण ऊलां पोल दाण चौहान उग्राहे, पंच लख पाकरण वरसे × × नीर वाहे."
" मेवाड मंड लख दंडे, परसरे पुरय हीं परे, प्रिय रायसींह लाखण जपे ज्यों आरंभे त्युं करे. (८)
" सग लाखण संपनो, पाट सोही परगटे, सोही रे महेन्द्र राव जेण खत्री हुणो खटे '
" महेन्द्र वंश मशरिख सु वन आलण संपन्नो, आलण रे आसराव, आस जिन्द राव उपन्नो."
" जिन्द राव तणे कीतु जसा, जें लीधो झालोर जुडी, कर त्युं सपो पूंजे न कौ तेस कुण पूजत कडो." (९)

इस कवित से १ लाखणसी के बाद क्रमशः २ सोहि, ३ महेन्द्र, ४ मशरिख, ५ आलण, ६ आसराव, ७ जिन्द्रराव व 'कीतु' के नाम उपलब्ध होते हैं.

६ "सिरोही राज्य का इतिहास" नामक पुस्तक में (पृष्ट १८५ व १८६ पर) नाडोल का वंशवृक्ष दिया गया है उस मुआफिक.
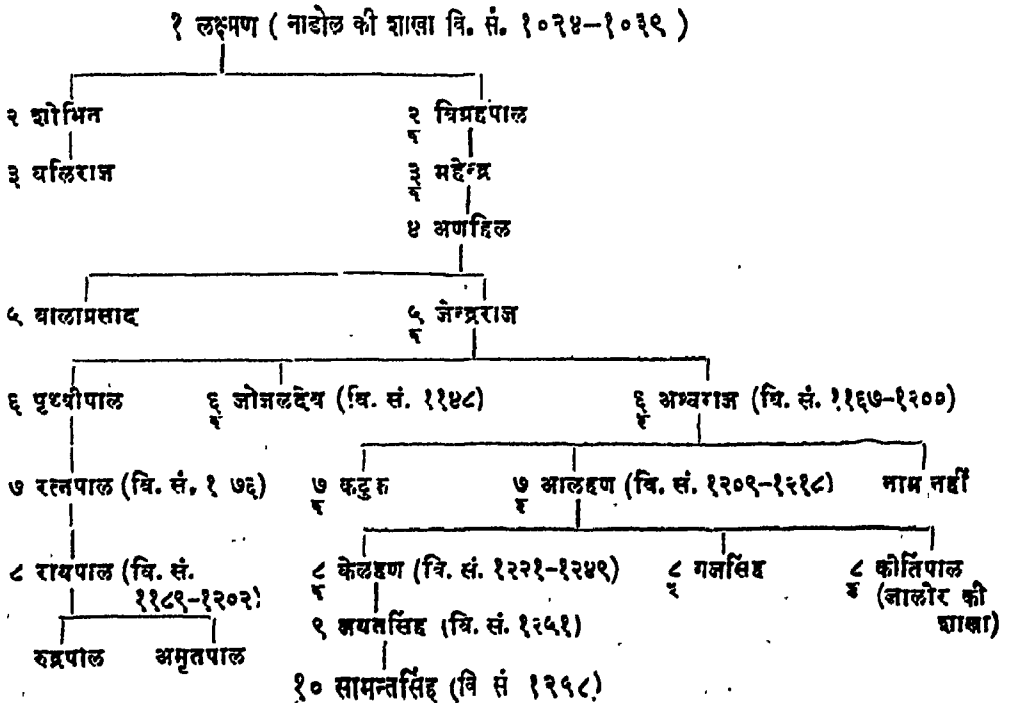
उपर्युक्त अलग २ प्रमाणों को ध्यान में लेकर नाडोल के राव लाखणसी की औलाद

के नाडोल के चौहानों का वंशवृक्ष (जिसमें से निकली हुई शाखाओं पैकी जीन २ शाखाओं का इतिहास प्राप्त हुआ है उनका सम्बन्ध मालूम हो सके वैसा) नीचे मुआफिक बनता है.

वंश वृक्ष नाडोल के चौहानों का.
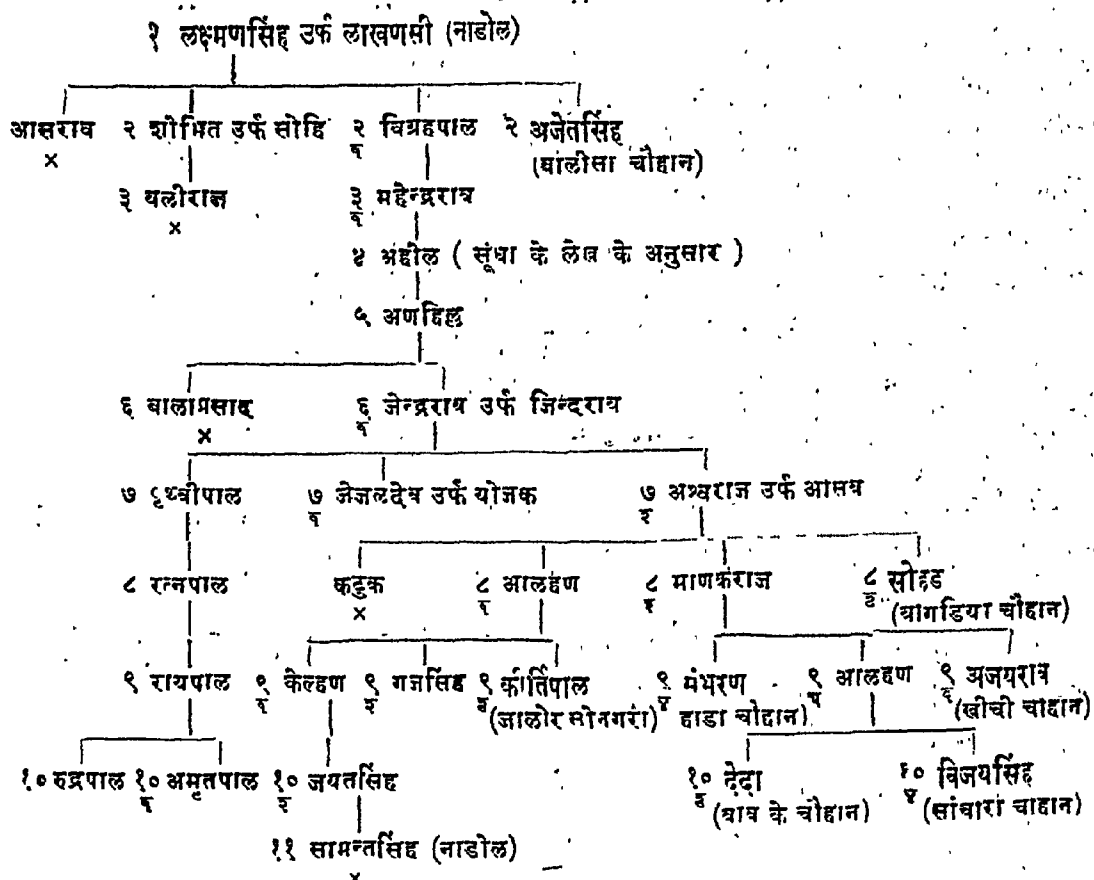
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

१ राव लाखणसी का नाम चौहानों में जग प्रसिद्ध है. और इसके चौवीस पुत्रों से चौवीस शाखाएं होने का जगह २ उल्लेख हुआ है, परन्तु प्रसिद्धि में आये हुए इतिहास से इसके पुत्रों के नाम से नही लेकिन इसकी ओलाद वाले चौहानों से चौवीस शाखाएं हुई होगी वैसा पाया जाता है. 'सिरोही राज्य का इतिहास' नामक पुस्तक के पृष्ठ १६७ से १६९ तक में +टोड राजस्थान से उपलब्ध होते इतिहास पर इस विषय में अन्य ऐतिहासिक ग्रंथो से मुकाबला करके तुलना की गई है, जिसमें राव लाखणसी ने गुजरात से दाण

+ टोड राजस्थान में लाखणसी के वास्ते लिखा है कि राव लाखणने वि. सं. १०३९ में अणहिलवाडे के राव से नाडोल का परगना छीन लिया. गजनी के बादशाह सुबुक्तगीन व उसके पुत्र सुल्तान महमूदने इन पर चढाई करके नाडोल को लूटा व मन्दिर तोड डाले, लेकिन चौहानों ने पुनः उस पर अपना कब्जा कर लिया. राव ला ण अणहिलवाडे तक का दाण लेता था और मेवाड का राजा भी उसको खिराज देता था.

उगाने की व मेवाड के राणा पास खंडणी लेने की वात जो टोड राजस्थान में लिखी है वह विश्वासपात्र न होने का अनुमान किया है. कारण यह बताया है कि राव लाखणसी के समय में गुजरात में मूलराज सोलंकी और मेवाड में शक्तिकुमार व उन का पुत्र अंबाप्रसाद थे जो स्वतंत्र थे.

वस्तुतः टोड राजस्थान में जो लिखा गया है उसकी सावित्ती के प्राचीन कवित्तों के प्रमाण इन दोनों वातों के वास्ते मिलते हैं. जिसमें मूता नेणसी की ख्यात में लिखा हुआ कवित्त (जो इस प्रकरण में अंकित हो चूका है.) से भी मालूम होता है कि (" पाटण ऊली पोल दाण चौहान उग्राहे. ") पाटण की उरली पोल से (पाटण की सीमा पर से) चौहान ने दाण उगाया. वैसे (मेवाड मंड लख दंडे) मेवाड में आक्रमण कर के लाखण ने दंड लिया. इस पुस्तक के लेखक का अनुमान है कि मेवाड व गुजरात के राजा स्वतंत्र भी हो तव भी उस कारण से लाखणसी ने दाण न उगाया और दंड नहीं लिया ऐसी मान्यता कर लेना उचित नहीं है. क्यों कि यह कवित्त वि. सं. की सोलहवीं सदी में रचा हुआ है और इस कवित्त की तसदिक में सिरोही के वहुआ की पुस्तक में निम्न चरण लिखा है.

" दश गुण ताले वरस वार एकुटज वाही, पाटण पहेली पोल दाण चौहान उगाई. "

यानी–दश=१० गुण=३ ताल=२ वि. सं. १०३२ में तलवार के वल से अव्वल पाटण की पोल से (गुजरात को सीमा में प्रवेश करते जो देश आता है उससे) दाण वसुल किया.

सिरोही के वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि राव लाखणसी ने वि. सं. १०२२ महा सुदि २ के रोज नाडोल में अपना राज्य की स्थापना को. इसके उपर आशापुरी देवी की कृपा होने से देवीने ×तेरह हजार अश्व दिये. कवि आसीआ माला के कवित्त में लिखा है कि (" तेर सहस तुरंग सकत वरदान समंपे. ") शक्ति के वरदान से तेरह सहस्र घोडे मिले.

वि. सं. १०३८ में इसने नाडोल में आशापुरी देवीका मन्दिर वनवाया. इसके समय के वि. सं. १०२४ व १०३९ के शिलालेख प्राप्त होनेका टोड राजस्थान के ग्रंथ में लिखा है.

राव लाखणसी की जो प्रशंसा कवियों ने को है उससे पाया जाता है कि वह वीर पुरुष था. कवित से यह भो पाया जाता है कि सांभर के राजा "सिंह" ने मुसलमान के साथ युद्ध किया जिसमें पराजय होने से तुर्कों की सेवा करना स्वीकार किया जिससे लाखणसी नाखुश होकर सांभर से चल निकला. क्यों कि कविने कहा है कि–

× घोडे के संबंध में वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि जैसे जैसे कंकु के छिटे डालते थे वैसे २ नये घोडे देवी की कृपा से होते थे, जिससे तेरह हजार घोडे पैदा हुए. इस विषय में नेणसी की ख्यात में उल्लेख किया है कि लाखणसी की प्रार्थना से देवीने वर दिया कि अमुक दिन ' सावःरा ' घोडे भाग कर आवेंगे. उस मुआफिक तेरह हजार घोडे आये सो लाखणसीने बांध लिये. पीछे उनके मालिक आये लेकिन देवीने घोडे के रंग बदल दिये जिससे वे वापस गये.

" राय सिंघ तिण पाट रहे सेवे तुरकाणो, लाखणसी घर छांब हुओ नाडोलो राणो. "

इसी मुआफिक कविने कहा है कि–' रावा गंजने घेरडो. को गिजनी के साथ वैर था.) फिर यह भी कहा है कि–" वरदान आसन लाधा पढे, खुरसाण वपर खडो. " इससे मालूम होता है कि इसने मुसलमानों के सामने खडा रहकर देवी की कृपासे नाडोल में (अपना आसन की जगह से) युद्ध किया था. गिजनी में उस समय 'सबक्त गीन' था, वह दो दफे हिन्दुस्तान पर चढाई लाया था.

नं. २ शोभित उर्फ सोहि–के विषय में सिर्फ वडुआ कि पुस्तक से मालूम हुआ है कि यह वडा पराक्रमी राजा हुआ. इसने भीनमाल के राजा 'मानपरमार' को मार कर वि. सं. १०४९ में भीनमाल में अपना अमल जमाया, और ३२ वर्ष तक राज किया. इस विषय में नीशाणी है कि—

" सोई राव भीनमाल सज, मारा पवार मान, नृप उठे नाडोल रे चक्रवती चहुआन. "

इसका भाई +आसराव नामक था, उसने वि. सं. १०४८ में नाडोल में 'आयेडा तलाव' बंधाया. सोहिराव ने वि. सं. १०७५ में बडुआ भवानीचंद को 'लाख पसाव' की बक्षीश दी थी.

नं ३ बलीराम अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. सूंधा के शिलालेख से पाया गया है कि इसने मालवे के परमार राजा मुंज के सैन्य को हराया था. इस को पुत्र न होने से नं. २/१ विग्रहपाल नाडोल की गद्दी पर बैठा था ऐसा सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है, परन्तु वि. सं. १२१८ का ताम्रपत्र के सिवाय दूसरे किसी प्रमाण में विग्रहपाल का नाम नहीं है, बल्कि सूंधा पहाड के शिलालेख में बलीराज के बाद उसके काका का पुत्र महेन्द्र गद्दी पर आने का उल्लेख हुआ है. सि. रा. इ. की पुस्तक में लिखा है कि सूंधा के लेख के समय पूर्वे लिखे गये दो ताम्रपत्रो, व 'बाली' गांव से मिला हुआ नं. ८ रत्नपाल के समय का (वि. सं. ११७६) ताम्रपत्र में भी विग्रहपाल का राजा होना लिखा गया है.

नं. २/१ विग्रहपाल अपना भत्तिजा बलीराम के बाद गद्दी पर आया. वह राजा था इतना ही पाया गया है.

नं. २/२ अजेतसिंह का नाम सिवाय बडुआ की पुस्तक के दूसरी जगह होना मालूम नहीं होता है. इसके वंशज गोडवार में रहे और उनमें 'बाला' नामक चौहान से 'बालीसा चौहान' की शाखा कहलाई गई. जिसका वंश वृक्ष बालीसा चौहानों के प्रकरण में दिया गया है.

\+ लाखणसी का बडा पुत्र आसराव राव होना पाया जाता है क्यों कि वि. सं. १०४८ में उसने नाडोल में 'आयेडा तलाव' बनाया था वैसा बडुआ की पुस्तक में लिखा है. सोहि राव की गद्दी नशिनी वि. सं. १०४९ व देहान्त वि. सं. १०८१ में होना उक्त पुस्तक से पाया जाता है, इससे अनुमान हो सकता है कि लाखणसी विद्यमान होने पर आसराव का देहान्त हुआ हो. 'आयेडा तलाव' नाडोल में विद्यमान है. अगर यह तलाव आसरावने नहीं बनाया हो तो उसका स्मणार्थ लाखणसीने उसके नाम से बनाया होगा.

नं. ३ महेन्द्रराव का नाम वागडिया चौहानों की ख्यात के सिवाय दूसरी सब ख्यातों में मिलता है. +' द्वयाश्रय काव्य ' नामक पुस्तक में इसके विषय में लिखा है कि इसने अपनी बहिन ' दुर्लभदेवी ' का विवाह ×स्वयंवर रच कर किया था. जिसमें अनेक देश के नृपति आये थे, उनमें से गुजरात के सोलंकी राजा दुर्लभराज को वरमाला पहनाई गई. महेन्द्रने अपनी दूसरी बहिन ' लक्ष्मीदेवी ' का विवाह भी उसी मौके पर दुर्लभराज के भाई नागराज के साथ कर दिया. स्वयंवर रचने के कारण से भी पाया जाता है कि महेन्द्रराव पराक्रमी व प्रतिष्ठित राजा हुआ था, क्यों कि यह कार्य मामूली न था. बहुआ की पुस्तक में इसके गद्दी नशिनीका समय वि. सं. *१०८२ व देहान्त का समय वि. सं. ११०५ अंकित हुआ है, और यह भी लिखा गया है कि उसके पीछे सिसोदणी राणी सती हुई थी. (राणी का नाम नहीं है.)

नं. ४ अहील का नाम सिर्फ सूंधा पहाड के शिलालेख में है, दूसरी ख्यातों में नहीं है, लेकिन नाडोल के राजा रत्नपाल (नं. ८ वाला) के समय का वि. सं. ११७६ में लिखा हुआ ताम्रपत्र जो वाली गांव से प्राप्त होनेका जाहिर हुआ है उसमें महेन्द्र के बाद ' अश्वपाल ' का नाम होना सि. रा. ई. में लिखा है. सिरोही के बहुआ की पुस्तक में महेन्द्रराव के पीछे ' मशरिक ' होने का उल्लेख किया गया है, उसके बाद आलहण का नाम अंकित है, और उसका गद्दी नशिनी को समय ÷वि. सं. ११३० का लिखा गया है. मशरिक के वास्ते उक्त पुस्तक में लिखा है कि वह वि. सं. ११०५ में गद्दी पर बैठा और वि. सं. ११३० में उसका देहान्त हुआ. अगर दर्ज हुए संवत् पर ध्यान न दिया जाय तो अनुमान हो सकता है कि सूंधा के लेख में अंकित हुआ अहील व वि. सं. ११७६ के ताम्रपत्र में लिखा हुआ 'अश्वराज' का उपनाम सायद 'मशरिक' होगा. क्यों कि उपर्युक्त तीन प्रमाणों से पाया जाता है कि महेन्द्रराव व अणहिल्ल के बिच में एक और पुरुष हुआ था.

नं. ५ अणहिल्ल के विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि यह महेन्द्रराव के

+ द्वयाश्रय काव्य—जग विख्यात जैन आचार्य हेमचंद्र सूरीश्वरने रची है.

× स्वयंवर रचने का कार्य बहुत बडा गिना जाता है, क्यों कि उस में अनेक विघ्न आने की सम्भावना रहती है. जिस राजा में इतना सामर्थ्य हो कि वह इस समारंभ के निमित्त एकट्ठे हुए राजाओं के साथ युद्ध का प्रसंग उपस्थित होने पर मुकाबला कर सके, वही राजा स्वयंवर रच सकता है. राजपूतों में स्वयंवर रचना यह कार्य बडी नामवरी का गिना जाता है.

* बहुआ की पुस्तक में महेन्द्रराव की गद्दी नशिनी व देहान्त का समय अंकित हुआ है वह विश्वासपात्र है या नहीं, उसकी तशदिक करने का कोई साधन प्राप्त नहीं हुआ है. बल्कि नं. २ सोहि के पीछे जो जो राजा हुए वे सब राजा भीनमाल में होने का उक्त पुस्तक में लिखा गया है.

÷ सि. रा. ई. की पुस्तक में अणहिल्ल के बाद उसका पुत्र नं. ६ बालाप्रसाद व उसके पीछे नं. ७ जेन्द्रराज गद्दी पर आने का पृष्ट १७२ में लिखा है; जिन के समय का ' आऊआ ' गांव में वि. सं. ११३२ का शिलालेख प्राप्त होना पाया गया है, जिससे बहुआ की पुस्तक में लिखा हुआ संवत् गलत होना मालूम होता है.

पीछे गद्दी पर बैठा. इसने गुजरात के राजा भीमदेव (प्रथम) की सैना को परास्त किया. मालवा के राजा भोज के सैनापति साढा को पकड कर उसका सिर काटा, और अपार सैन्य वाले तुर्कों को परास्त किया. उक्त पुस्तक के लेखक की इस विषय में यह राय है कि, तूर्कों का ताल्लुक महमूद गजनवी से है, और मालवा के सेनापति को मारने का ताल्लुक गुजरात के भीमदेव ने धारा नगरी के भोज राजा पर चढाई की उसमें यह भीमदेव की सहायता में गया होगा और वहां साढा को मारा होगा.

नं. ६ बालाप्रसाद के विषय में सि. रा. ई. में लिखा है कि यह अणहिल्ल के पीछे गद्दी पर आया. ईसने भीमदेव की सेवा में रहकर राजा कृष्णदास को उसकी कैद से छुडाया. कृष्णदेव के विषय में उक्त पुस्तक के लेखक ने यह राय जाहिर की है कि यह आबुके परमार राजा धंधुक का छोटा पुत्र होना चाहिये.

नं. ६/१ जेन्द्रराव का नाम ताम्रपत्र में जेतराय होना लिखा है. सि. रा. ई. में लिखा है कि इसने सांडेराव के पास दुश्मनों को हराया था. (नाम नहीं है.) इसके समय का वि. सं. ×११३२ का शिलालेख 'आउआ' गांव में होना पाया गया है.

नं ७ पृथ्वीपाल अपने पिता जेन्द्रराव के पीछे गद्दी पर आया. सूंधा के लेख से पाया जाता है कि इसने गुजरात के राजा कर्ण की सैना को हराया, और कास्तकारों (खेडुतों) का कर मुआफ करके बहुत यश प्राप्त किया.

नं. ७/१ जोजलदेव उर्फ योजक अपने भाई के पीछे राजा हुआ. इसके समय के वि. सं. ११४७ का शिलालेख नाडोल के सोमेश्वर के मन्दिर में होना जाहिर हुआ है, और उसी संवत् मिती का दूसरा शिलालेख 'सादडी' गांव से मिला है. (सि. रा. ई. पृष्ट १७२)

नं ७/२ अश्वराज उर्फ आसराव के विषय में सूंधा के लेख में लिखा है कि इसकी तलवार ने मालवे में सिद्धाधिराज (गुजरात के प्रख्यात राजा सिद्धराज जयसिंह) की जो सहायता की उससे प्रसन्न होकर सिद्धराजने इसको सुवर्ण कलश दिया, और यह बडाही धर्मनिष्ट राजा था. इसने अनेक सदाव्रत, तालाव, बाग, शिवालय, बावडियां, प्याऊ, कुएं आदि सैंकडों धर्मस्थान बनवाये थे. इसके समय के वि. सं ११६७ व वि. सं. ११७२ के ❋शिलालेख प्राप्त हुए है जिनमें इसका पुत्र 'कटुक' युवराज होने का उल्लेख है, (सि. रा. ई. पृष्ट १७५) परन्तु कटुक युवराज पद पर ही देवलोक हुआ था.

सिरोही के वडुआ की पुस्तक में इसकी गद्दी नशिनी का समय वि. सं. ११६० व देहान्त का समय वि. सं. ११८० होना लिखा है, जो उपरोक्त शिलालेखों के समय से करीब २

× सिरोही के वडुआ की पुस्तक में 'जिन्द्राव' को आसराव का पुत्र होना व उसकी गद्दी नशिनी का समय वि. सं. ११८० में होना लिखा है जो वि. सं. ११३२ के शिलालेख से बिल्कुल गलत होना पाया जाता है.

❋ इन शिलालेखो में वि. सं. ११६७ का सेवाडी गांव से मिला है. सि. रा. ई. के पृष्ट १७१ पर इसके समय का वि. सं. १२२० का शिलालेख 'वाली' गांव से प्राप्त होने का लिखा है, परन्तु वह वि. सं. ११७२ का होना अनुमान होता है शायद नजर चूक या प्रेस की गलती से वि. सं. १२२० लिखा गया हो.

मिल रहा है. इसकी राणी 'फुलांदेवी' साणंद के वाघेला राव कांधल की पुत्री होना उक्त पुस्तक से पाया जाता है. इस राजा का नाम हरएक ख्यातों में अंकित हुआ है, और इसके पुत्रों की ओलाद में से सोनगरा, हाडा, वागडिया, खीची, साँचोरा, वाव के चौहान, कापलिया आदि चौहानों की अलग २ शाखाएं हुई है.

नं. ८ रत्नपाल का नाम नाडोल के राजाओं के वास्ते जो जो प्रमाण दिये गये है उसमें नहीं है, सिर्फ सि. रा. इ. में इसका नाम अंकित हुआ है, परन्तु उक्त पुस्तक में पृष्ट १७४ के उपर जो टीप्पणी दी गई है उसमें ऐसा मजबुत आधार दिया हुआ है कि जिससे यह पृथ्वीपाल का पुत्र होना सावित है. इसके समय का वि. सं. ११७६ का ताम्रपत्र 'सेवारी' गांव से प्राप्त होने का उक्त पुस्तक में लिखा गया है, और इसके वास्ते यह राय कायम की है कि अश्वराज से कुछ समय तक इसने राज छीन लिया होगा, क्यों कि 'सेवारी' के ताम्रपत्र में इसको नाडोल के राजा होना लिखा है. इसी टीप्पणी में यह भी लिखा है कि रायपाल (इसका पुत्र) नामक दूसरे राजा के वि. सं. ११८९ से १२०२ तक के कई शिलालेख नारलाई व नाडोल से मिले है. इस विषय में उक्त पुस्तक के लेखक ने यह +राय जाहिर की है कि रत्नपाल व रायपाल राजा हुए होंगे लेकिन नाडोल राज्य के

+ नं. ८ रत्नपाल नाडोल के राज्य का स्वामी नहीं था किन्तु नाडोल का एक हिस्सा उसके तरफ था ऐसी 'सिरोही राज्य का इतिहास' के विद्वान लेखक की राय उक्त पुस्तक के पृष्ट १७४ की टीप्पणी में हुई है वह बहुत ही दुरुस्त है. बल्कि नाडोल के चौहान राजवंश की ख्यात के विषय में सिरोही के बडुआ की पुस्तक से राजधानी के स्थान निसबत जो बडा अन्तर पडता है उसका भी इस राय से कुछ समाधान होने जैसा है. बडुआ की पुस्तक में नं. २ शोभित उर्फ सोहिराव ने भीनमाल में अपना राजस्थान किया, और उसके बाद नाडोल के राज्य के जो जो मालिक हुए वे सब ने भीनमाल में ही अपना राजस्थान रखा यथा लिखा है, बल्कि बडुआ को सीख (दक्षिणा) किस स्थान से मिली थी, उस बाबत उसकी पुस्तक की जांच की गई तो निम्न हकीकत उससे पाई गई है.

१ सोहिराव ने बडुआ भवानीचंद को वि. सं. १०४९ व वि. सं. १०७९ में भीनमाल मुकाम से सीख दी.

२ महेन्द्रराव ने बडुआ धनेचंद को वि. सं. १०८२ में भीनमाल से सीख दी.

३ आरहण ने बडुआ सोढा को वि. सं ११३० में भीनमाल से सीख दी.

४ आसराव ने बडुआ धनराज को वि. सं. ११६० में भीनमाल से सीख दी.

इस पुस्तक के लेखक का ऐसा अभिप्राय नहीं है कि वि. सं. १२१७ के पहिले का जो वृतांत बडुआ की पुस्तक से उपलब्ध होता है वह सब बगैर त्रुटी के मानने योग्य गिणना ही चाहिये. क्यों कि उसमें बहुत ही त्रुटी और शंका होने जैसा अहवाल अंकित होना पाया गया है, परन्तु राजस्थान का नगर कौन था इस विषय में जो फर्क आता है, उसके वास्ते जरूर लिहाज होता है, और नाडोल के राज्यवंश के जो जो शिलालेख, ताम्रपत्र आदि साहित्य प्रसिद्धि में आया है, उनमें नाडोल के राजाओं के नाम एक ही समय के वास्ते भिन्न २ होना मालूम होने से यह शंका जरूर रह जाती है कि शायद नाडोल के चौहान राजाओंने अपना पाटनगर भीनमाल में रख कर राज्य किया है, परन्तु उनके नाम नाडोल के राजा के नाम से प्रसिद्धि में रहे है, और इसी कारण से नं. ८ रत्नपाल व उसका पुत्र नं. ९ रायपाल के तरफ नाडोल रहा था व उन्होंने नाडोल के राजा के नाम से शिलालेख व ताम्रपत्रों में अपना नाम अंकित कराये है. तात्पर्य यह है कि उपर्युक्त राजाओंने अपना पाटनगर कहां रखा था इस उलझन का निवेडा करने का कार्य इतिहास वेत्ताओं के वास्ते बाकी रहता है. इस प्रकरण का वंशवृक्ष में नं. ११ जयतसिंह जब युवराज था तब उसका राज भी भीनमाल में होने का उसके समय के शिलालेख में उल्लेख हुआ है, उससे उपस्थित हुई शंका और बढती है.

एक हिस्से के ही स्वामी होंगे. मंडोवर से मिले हुए लेख में रायमल के पीछे 'शाहजुपाल' होने का जाहिर में आया है.

नं. $\frac{६}{१}$ आलहण के विषय में सूंधा के लेख में लिखा है कि गुजरात के राजा ने पग पग इसकी सहायता ली, और सौराष्ट्र में इसने विजय प्राप्त की, तथा नाडोल में शिव मन्दिर बनवाया. सौराष्ट्र के 'मेहर' राजा समर (सौसर) पर कुमारपाल ने विजय प्राप्त की जो इसी की वीरता से ही हुई थी. सांभर के चौहान राजा विशलदेव ने इसके राज्य पर चढाई कर नाडोल, पाली आदि शहरों को बरबाद किये वैसा बिजोलिया के शिलालेख से मालूम होता है. इसकी राणी अन्नलदेवी राठौर सहुल की पुत्री थी जिससे तीन पुत्र १ केलहण, २ गजसिंह और ३ कीर्तिपाल हुए. आलहण के समय के केराडु गांव से वि. सं. १२०९ का लेख प्राप्त हुआ, उसमें यह गुजरात के सोलंकी राजा कुमारपाल का सामन्त था, और अपने पिता की नांई वीर पुरुष था ऐसा लिखा गया है. इस शिलालेख के सिवाय इसके समय के तीन ताम्रपत्र प्राप्त होना जाहिर में आया है जिनमें पहिला वि. सं. १२०९ का केराडु में से व तीसरा वि. सं. १२२० का बामणेरा गांव से मिला है. इसने वि. सं. १२०५ से वि. सं. १२२० तक राज्य किया है ऐसा माना गया है. (सि. रा. ई. के पृष्ट १७५–१७६ पर से.)

नं. $\frac{८}{२}$ माणकराज के विषय में मूतानेणसी की ख्यात से मालूम होता है कि इसीके नाम से चौहानों में 'खीची' शाखा कहलाई गई. इसको नागोर पट्टी में ८४ गांवों से 'भदाण का किला' जागीर में मिला था. इसकी ओलाद में पीछे से हाडा, वाव के चौहान, सांचौरा, खीची, आदि शाखाएं हुई, जिनका वृतांत हरेक शाखाओं का अलग अलग प्रकरणों में लिखा गया है.

नं. $\frac{८}{३}$ सोहड के विषय में मूता नेणसी की ख्यात से मालूम होता है कि इसकी ओलाद वालों के तरफ छापर–द्रोणपुर (सिंध की सरहद पर) था. जो प्रदेश मोहील चौहानों ने छीन लेने से इसकी ओलाद का डुंगरसिंह चौहान (मेवाड व गुजरात दरमियान) वागड नाम के प्रदेश में चला गया. वागड में निवास करने से वे 'वागडिया चौहान' कहलाये गये, जिनका वृतांत अलग प्रकरण में लिखा गया है.

नं. ९ रायपाल के विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इसके नाम के कई शिलालेख नाडोल व नारलाई गांव से मिले हैं, और उसमें यह नाडोल के राजा होना लिखा है. इसके समय के लेखो का संवत् वि. सं. ११८९ से १२०२ तक का है. (इस विषय में देखो टीप्पणी नं. ८ रत्नपाल के विषय की पृष्ट ५७ पर.)

नं. ९/१ केलहण नं. ८/१ आलहण के पीछे गद्दी पर आया. इसके विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में पृष्ठ १७७ व १७८ पर लिखा है कि–इसने ' भिलिम ' नामक राजा के तथा तुर्कों के (उक्त पुस्तक के लेखक की यह राय है कि इस तुर्कों का ताल्लुक शहाबुद्दीन गोरी से होना चाहिये.) सैन्य को हराया और सोमेश्वर के मन्दिर में (नाडोल में) सुवर्ण का तोरण वनवाया. इसके समय के दो ताम्रपत्र और छः शिलालेख मिले है जिनमें पहिला शिलालेख वि. सं. १२२१ का 'सांडेराव' (गोडवार में है.) गांव से व सव से पिछला 'पालडी' (सिरोही इलाके में है) गांव से वि. सं. १२४९ का मिला है.

नं. ९/२ गजसिंह के विषय में कुच्छ भी वृतांत उपलब्ध नहीं हुआ है.

नं. ९/३ कीर्तिपाल उर्फ कीतु को उसका पिता नं. ८/१ आलहण के तरफ से नारलाई की जागीर बारह गांव से मिली थी, लेकिन बाद में इसने जालोर गढ में अपना अलग राज स्थापन किया और जालोर का दूसरा नाम 'सोनंग' उर्फ सोनगिरी होने से इसकी ओलाद वाले ' सोनगरे चौहान ' कहलाये, जिनमें से (पीछे से) सिरोही के देवडा चौहान की शाखा विभक्त हुई. सोनगरे चौहानों का वृतांत इस पुस्तक के दूसरे प्रकरणों में लिखा है जिससे कीर्तिपाल का ज्यादह वृतांत उससे मालूम होगा.

नं. ९/४ संभरण की ओलाद वाले ' हाडा चौहान ' कहलाये गये, जिनकी ओलाद में बूंदी व कोटा के हाडे चौहान है, उनका वृतांत अलग २ प्रकरणों में लिखा गया है.

नं. ९/५ आलहण के वडे पुत्र नं. १०/३ देदा की ओलाद से वर्तमान समय के वाव (गुजरात में पालणपुर एजन्सी में तालुकदार हैं.) के चौहान है, और दूसरे पुत्र विजयसिंह की ओलाद से सांचोरा चौहान हुए, जिनका वृतांत अलग २ प्रकरणों में लिखा गया है.

नं. ९/६ अजयराव की ओलाद वालों ने 'खीची चौहान' का नाम (जो नं. ८/२ माणकराव खीची कहलाया था.) कायम रख कर वे ' खीची चौहानों ' के नाम से ही प्रसिद्ध हुए. जिनकी ओलाद वर्तमान समय में मालवा के खीचीवाडे में खीलचीपुर व राघवगढ आदि के चौहान, और गुजरात में छोटाउदयपुर, व देवगढ वारीया आदि (रेवाकांठा में है) के चौहान है. जिनका वृतांत अलग २ प्रकरणों में इस पुस्तक में लिखा गया है.

नं. १० रुद्रपाल व उसका भाई नं. १०/१ अमृतपाल के विषय में कुछ भी वृतांत नहीं मिलता है, वल्कि इसकी ओलाद थी या नहीं वह भी शंका है, क्यों कि नं. ९ रायपाल के तरफ 'नारलाई' की जागीर थी वह भी नं. ९/२ कीर्तिपाल को जागीर में दे देने का वृतांत पहिले आ चूका है.

नं. १०/१ जयतसिंह के विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि, इसकी युवराजगी के समय में भीनमाल के जगस्वामी के मन्दिर में लगा हुआ शिलालेख वि. सं. १२३९ का प्राप्त हुआ है उसमें 'महाराज पुत्र जयतसिंह देव का वहां पर (भीनमाल में) राज्य होना लिखा है.' दूसरा शिलालेख इसके समय का वि. सं. १२५१ का 'सादडी' (गोडवाड में है) गांव में है, उसमें इसको महाराजाधिराज तथा नाडोल का राजा होना लिखा है. जयतसिंह का पिता केलहण वि. स. १२४९ तक विद्यमान होना 'पालडी' गांव के शिलालेख से पाया गया है. उस लेख में केलहण को नाडोल का राजा और जयतसिंह देव को उसका पुत्र होना अंकित हुआ है. (सि. रा. ई. पृष्ट १७८ की टीप्पणी पर से.)

नं. ११ सामन्तसिंह के समय के वि. सं. १२५६ व वि. सं. १२५८ के दो शिलालेख मिले है, इतना ही वृतांत सि. रा. ई. की पुस्तक से मिलता है, बाद में यह राज्य जालोर के राज्य में मिल गया. सामन्तसिंह की ओलाद थी या नहीं उसका पत्ता नहीं चल सकता है.
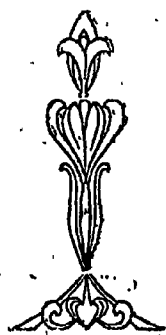
नोट—सिरोही के बडुआ की पुस्तक से नं. ४ का वंश वृक्ष इस प्रकरण में दिया गया है, उसमें जो नाम अंकित है, उसके सिवाय नाडोल के दूसरे चौहानों का नाम नहीं है, वैसे दूसरा कोई साहित्य नाडोल के वास्ते प्राप्त नहीं हुआ है, जिससे यह प्रकरण का इतिहास सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक से ही लिखा गया है.

प्रकरण १० वाँ.

हाडा चौहानों का प्राचीन इतिहास.

हाडा चौहानों की शाखा नाडोल से विभक्त होने का नाडोल के चौहानों की ख्यात में सिद्ध हो चूका है, उस मुताबिक़ माणकराज (देखो प्रकरण ९ में नाडोल के चौहानों का वंश वृक्ष में नं. $\frac{६}{२}$ वाला पृष्ट ५२ पर.) के पुत्र संभरण की ओलाद में हाडा चौहान हुए है. वंश भास्कर के ग्रंथानुसार 'उरथ' (देखो चौहानों की प्राचीन शाखा के प्रकरण ३ में वंश भास्कर से दिया हुआ वंशवृक्ष के नं. ५३ पृष्ट १४ पर.) से हाडा चौहान की शाखा होनेका उल्लेख होता है. मूता नेणसी की ख्यात में माणकराज से सातवीं पुश्त पर 'हाडा' नाम के पुरुप से 'हाडा' शाखा होने का अनुमान हुआ है. देवडा चौहान के वडुआ की पुस्तक में वागराव के पुत्र अष्टपाल से हाडा शाखा प्रसिद्ध होने का लिखा है, और उसके समर्थन में निम्न कवित्त उक्त पुस्तक में दर्ज है.

> " अष्टपाल संभर नरेश हाड हड हमे पाई, जण गेराराम गंजोयो भांज नव लाख भजाई. "
> " एक लाख गजराज खत्री सूं कीया खंडेरा, × × × × "
> " प्रथम अंबीका पूंज अव आशापूर आई, वेस कुल चहुआण वरद 'हाडा' वोलाई. "
> " असूरान मेट हिंदू अवर तंवरज दीये तवे, अष्टपाल संभर नरेश तण होड हड पाई हमे. "

उक्त पुस्तक में यह भी लिखा गया है कि अष्टपाल ने गेराराम वादशाह को मार कर 'हेडालगढ' का राज्य लिया जिससे उसकी ओलाद वाले 'हाडा चौहान' कहलाये. तात्पर्य यह है कि 'हेडाल' गढ के नाम से 'हाडा' हुए है, वैसा उस पुस्तक से पाया जाता है.

वंश भास्कर की पुस्तक में लिखा है कि उरथ के वंशमे ग्यारहवीं पुश्त पर भानुराज उर्फ अस्थिपाल नाम का राजा हुआ था, उसका मांस राक्षसोंने खा लिया था और अस्थि पडे रहे थे, उस पर देवीने अमृत डाल कर जीवनदान दिया, जिससे उसका नाम अस्थिपाल मशहूर हुआ. भाट चारणादि में अस्थिपाल से ही 'हाडा' कहलाये ऐसी दंत-कथा कही जाती है.

बूंदी के राज्य की स्थापना करने वाला देवीसिंह भैंसरोड में था, और उसके पूर्वजों के पास 'हेडालगढ' होने के प्रमाण दूसरे इतिहास से भी मिलता है. वंशभास्कर की पुस्तक में वंगदेव उर्फ वाघाने २४ किले जीत लेने का उल्लेख किया है, उसमें हेडाल

१ सिरोही के वडुआ की पुस्तक में वागराव का पुत्र अस्थिपाल होना लिखा गया है वह गलत है. अस्थिपाल का पुत्र वाघा है.

का नाम नहि है, जिससे पाया जाता है कि बंगदेव के पहिले अस्थिपाल हुआ था उसने हेडालगढ जीत लिया था. यही अस्थिपाल का नाम मूता नेणसी की ख्यात में 'हाडा', और 'वंशभास्कर' में 'आसुपाल' दर्ज हुआ है, जिससे यह अनुमान होता है कि हेडालगढ के नाम से, या 'अस्थि' का माएना 'हड्डी' होता है जिससे, परन्तु अस्थिपाल उर्फ हाडा के पीछे 'हाडा चौहान' की शाखा कहलाई है.

हाडा चौहानों के इतिहास के वास्ते वंशभास्कर के पुस्तक में बूंदी का राज कायम करने वाला हाडा देवीसिंह के पहिले के राजाओं की जो नामावली दी गइ है वह विश्वास पात्र नहीं है, क्यों कि उसमें हाडा शाखा 'उरथ' नाम के राजा से अलग हुई है और 'उरथ' से आसुपाल ३४ वीं पुश्त पर (अंदाजन सातसें वर्ष बाद) होना अंकित है. देवडा चौहान के बडुआ की पुस्तक में 'अष्टपाल' से हाडा शाखा अलग हो जाने से उनके पीछे के राजाओं की ख्यात नहीं लिखी गइ है, जिससे नाडोल के माणकराज से बूंदी का राज्य कायम करने वाला हाडा देवीसिंह तक का इतिहास के वास्ते अनुमान पर ही आधार रहता है.

'मूता नेणसी की ख्यात' में नाडोल के चौहान का नं. $\frac{८}{२}$ माणकराज के बाद क्रमशः २ संभरण, ३ जेतराव, ४ अनंगराव, ५ कूंतसिंह, ६ विजयपाल, ७ हाडा, ८ बाघा, व ९ देवा उर्फ देवीसिंह के नाम अंकित हुए है.

'सूर्जन चरित्र' की पुस्तक से माणकराज (जों कि उसमें इसको महान् पृथ्वीराज के भाई होने का लिखा है.) के बाद क्रमशः २ चामुण्डराज, ३ भीमराज, ४ विजयराज, ५ कलहन, ६ बंग उर्फ बाघा, व ७ देव, इस मुआफिक नाम प्राप्त होते हैं.

उपर्युक्त नामों को वंशभास्कर के पुस्तक से उपलब्ध होते नामों के साथ मिलाते नं. २ संभरण की जगह जोधराज, ४ अनंगराव की जगह केलहण, ६ विजयपाल की जगह आसुपाल, ७ हाडा की जगह विजयपाल, ८ बाघा की जगह बाघा व ९ देवा की जगह देवीसिंह नाम आतें हैं.

यह तीनों प्रमाणों पर ध्यान देते एक से ज्यादह जगह जो नाम बराबर मिल रहे है, उसको ग्राह्य करके अनुमान किया जाय तो देवीसिंह तक की हाडा चौहानों की

---

२ मूता नेणसी की ख्यात में हाडा का पुत्र बाघा होना लिखा है.

३. वंशभास्कर की पुस्तक में आसुपाल का पुत्र विजयपाल और विजयपाल का पुत्र बंगदेव उर्फ बाघा होना अंकित हुआ है, तब नेणसी की ख्यात में विजयपाल का पुत्र 'हाडा' होने का उल्लेख है, और आसुपाल के पिता का नाम 'केलहण उर्फ हुण' बताया है.

नोट—सूर्जन चरित्र की पुस्तक में विजयराज का पुत्र कल्हन और उसका पुत्र बंग उर्फ बाघा होनेका लिखा है.

पुश्त का क्रम नाडोल के माणकराज से क्रमशः १ माणकराज, २ संभरण, ३ जेतराय उर्फ जयराज या जोधसिंह, ४ अनंगराव उर्फ रत्नसिंह, ५ कूंतसिंह उर्फ केलहण, ६ विजयपाल, ७ हाडा उर्फ अस्थिपाल या आसुपाल, ८ वंगदेव उर्फ वाघा व ९ देवीसिंह उर्फ देवा, होना ठीक है. इन नौ पुश्तों का संक्षिप्त इतिहास उपरोक्त साहित्यों में से यह मिलता है कि—

नं. १ माणकराज नाडोल के राजा अश्वराज उर्फ आसराव का पुत्र था. इसका आसराव ने 'भदाण' के साथ ८४ गांव नागोर पट्टी में दिये थे. कच्ची खीचडी खाने के कारण यह 'खीची' कहलाया. (इन के विषय में देखो खीची चौहान के प्रकरण में.) इसका वडा भाइ आलहणँ (नाडोल वंशवृक्ष नं. ९ वाला) वि. सं. १२२० में विद्यमान था, जिससे पाया जाता है कि इसने पृथ्वीराज की सेवामें उपस्थित होकर अच्छा काम दिया है, जिससे जगह २ इसको पृथ्वीराज के भाई होनेका लिखा गया है.

नं. २–३–४ के वास्ते खास वात अंकित नहीं हुई है, लेकिन नं. ५ कुंतसिंह वंबावदा में होने का वंशभास्कर में लिखा है और वह विश्वासपात्र है, क्यों कि माणकराज के वंशजों के तरफ वंबावदा होने का दूसरी ख्यातों से भी पाया गया है.

नं. ६ विजयपाल की राणी 'रंभावती' सांखला परमार मंडन की पुत्री थी, ऐसा वंशभास्कर में लिखा हैं.

नं. ७ हाडा उर्फ अस्थिपाल से हाडा चौहान कहलाये गये, इसने गेराराम वादशाह को मार कर हेडालगढ लिया ऐसा देवडा चौहान के वडुआ की पुस्तक से पाया जाता है.

नं. ८ वंगदेव ने चितोड, ओरण, दसोर, भाणपुर वगेरह क राजाओं को हरा कर मांडल, पानगढ, सोंडागढ, हींगलाजगढ, खेरोली, कैथोली, भैंसरोड आदि २४ किले जीते थे, ऐसा वंशभास्कर में लिखा है. इसके तेरह पुत्र थे, जिसका नाम क्रमशः १ देवीसिंह, २ कर्मन, ३ सिंहन, ४ नयनसिंह, ५ अडक, ६ वडक, ७ नत्थु, ८ पत्थु, ९ हिंगल, १० खड्गहस्त, ११ माहन, १२ सामोदास व १३ कृष्णदास थे. नं. ३ सिंहन से 'सिंहणोत' व ११ माहन से 'माहणोत' नाम की शाखाएं हाडा चौहानों में प्रसिद्धि में आई है.

नं. ९ देवीसिंह के विषय में मालूम होता है कि वह भैंसरोड म रहता था, और इसने बूंदी का राज्य मेणों से छीन लिया. बूंदी कब्जे करने के विषय में मूता नेणसी की ख्यात में अनेक वातें लिखी गई है. यानी—

१ एक वात ऐसी वताई है कि कुछ तकरार के कारण देवीसिंह भैंसरोड छोड कर

बूंदी में रहने लगा था, वहां एक ब्राह्मण जो देवीसिंह का आश्रित था उसकी कन्या के साथ बूंदी के मेणाने शादी करना चाहा. ब्राह्मणने अपनी आपत्ति देवीसिंह को जाहिर करने से उसने युक्ति से वेटी देना स्वीकार करने की सलाह दी. ब्राह्मणने उस मुताबिक मंजुर करके मंडप तैयार किया. उस मंडप में नीचे बारूद भर कर उपर घास बिछाया गया. मेणें शादी करने को मंडप में आये, और उन्हों ने मंडप में शराब पीना शुरू किया. जब ज्यादह शराब पी कर वे नशे में चकनाचूर हुए तब बारुद में आग रख कर हाडा राजपूतोंने मेणों पर हमला किया और सबको कत्ल करके बूंदी पर कब्जा कर लिया.

२ दूसरी बात यह बताई है कि हाडा देवीसिंहने अपनी पुत्री का विवाह चितौड के राणा लक्ष्मणसिंह के कुमार अरिसिंह के साथ किया. जब कि अरिसिंह शादी करने के लिये भैंसरोड आया तब उसके साथ फौज भी थी. शादी हो जाने बाद अरिसिंहने देवीसिंह को मेवाड में आकर बसने का कहा, जिस पर उसने जुवाब दिया कि बूंदी अच्छा देश है, अगर मुझे आपकी फौज की सहायता मिल जाय तो मेणों से बूंदी छीन लूं, जिस पर अरिसिंहने फौज देने से उसने रातोंरात बूंदी पर चढाई की और मेणें लोग भागने न पावे उस लिये सब रास्ते प्रथम बंध करके उनको मार डाले और अपना कब्जा जमा लिया, पीछे उसने अरिसिंह से ५०० घोडे लेकर अपने भाईओं को बुला कर अपनी फौज खडी की.

३ तीसरी बात यह दिखलाई गई है कि हरराज डोड (सोलंकी) नामका राजपूत बूंदी के मेणों से खिराज लेता था और उनकी सीमा दबाये जाता था. देवीसिंह उसी समय में भागकर बूंदी आया था. (भाग कर आनेका कारण यह बताया है कि देवीसिंह के पास एक 'नामी' घोडा था उसको मांडव गढ के बादशाह ने लेना चाहा था.) मेणा ने उसको 'डूंडीनाचण' के घर पर रखा. 'डूंडी' को भविष्य की बातें मालूम होती थी जिससे देवीसिंह को कहा कि इस देश के मालिक होनेका तुम्हारे प्रारब्ध में है. कुछ समय व्यतित होने बाद मेणों ने देवीसिह से कहा कि 'हरराज डोड' हमको दुःख देता है सो मिटा दो, जिस पर देवीसिंहने बूंदी का आधा राज्य लेने की शर्त करके बीडा उठाया. दिवाली के दीन हरराज डोड बूंदी में आया तब मेणें लोग भाग कर अपने घरों में छिप गये, और देवीसिंह घोडे पर सवार होकर हरराज डोड के सामने पोल पर आया; जिससे हरराज भाग गया, लेकिन देवीसिह ने उसका पीछा किया. एक नाले के किनारे पर दोनों का मुकाबला हुआ, मगर हरराज ने देवीसिंह को पहिचाना जिससे युद्ध न करते आपस में बातचीत करने को आया. देवीसिंह ने मेणों के साथ जो शर्त तय की थी

उसका जीक्र हरराज को किया और बूंदी में न आने की सलाह दी, जो उसने कबूल की. यह घटना होने बाद देवीसिंह ने अपनी पुत्री की सगाई की, लेकिन वह स्वरूपवांन होने से बूंदी के मेणाने शादी करना चाहा. देवीसिंहने प्रथम इन-कार किया मगर बाद में कुछ विचार करके मंजुर रखा. इस मौके पर हरराज डोड अपने सगे 'सिधुर सोलंकी' की मदद के साथ चढाई करके बूंदी आया और मेणों कों मार डाले, जिससे देवीसिंह बूंदी का मालिक बना.

उपर मुआफिक बातें मूता नेणसी की ख्यात में दर्ज कराई हैं, लेकिन मूता नेणसीने यह भी लिखा है कि देवीसिंहने बूंदी का राज्य लिया तब बूंदी के मालिक मेणा जेता के पुत्र इन्द्रदमन व विग्रहराज थे और उनका प्रधान 'गोलवाल चौहान जसराज' नामक था. मेणा ने जसराज की पुत्री रूपसुन्दरी से विवाह करना चाहा, जिस पर जसराजने 'सामोर बारोट' द्वारा देवीसिंह की मदद चाही. देवीसिंहने चितौड के राणा की मदद लेकर मेणों पर चढाई की. जसराजने शादी करने के बहाने से मेणों को शराब पिला कर गाफिल कर रखे थे, उन पर देवीसिंहने अचानक हमला करके सब मेणों को कतूल कर दिये, और बूंदी अपने कब्जे कर ली. पाया जाता हैं कि मेणों ने किसी की कन्या से जबरन शादी करना चाहा उस अत्याचार के निमित्त से देवीसिंहने किसी सुरत से मौका पाकर मेवाड के राणा की सहायता से बूंदी का कब्जा करके हाडा चौहानों का राजस्थान वहां पर कायम किया, यह बात निर्विवाद है.

प्रकरण ११ वाँ.

'हाडा चौहान बूंदी'.

बूंदी के हाडा चौहानों के इतिहास की शुरुआत हाडा देवीसिंह ने मेणों को मार कर बूंदी कब्जे की वहां से होती है. मूता नेणसी की ख्यात में (वंश वृक्ष बूंदी में) नं. $\frac{११}{१}$ राव भोजराज तक का इतिहास लिखा गया है. 'सूर्जन चरित्र' की पुस्तक नं. $\frac{१०}{१}$ राव सूर्जन की प्रशंसा में रचने में आई है, उसमें सूर्जन को सांभर की शाखा के महान् पृथ्वीराज का भाई माणकराज के वंशज गिन कर रणथंमोर के हमीर हठीला की ओलाद में वह था ऐसा बताया है, जिससे उक्त पुस्तक से उपलब्ध होता वंश वृक्ष हाडा चौहानों के वास्ते विश्वास पात्र नहीं रहता है, बल्कि उस ग्रंथ सें राव देवीसिंह से राव सूर्जन तक के राजाओं की जो वंशावली उपलब्ध होती है वह भी अपूर्ण है.

इस विषय में (राव देवीसिंह से राव भोजराज तक में) कौन २ पुस्तकें में कितने २ नाम मिलते हैं, वह देखने से मालूम होता है कि—

१ 'सूर्जन चरित्र' की पुस्तक में बूंदी कायम करने वाला देवीसिंह से क्रमशः २ नरपति, ३ हमीर उर्फ हापा, ४ वराहसिंह, ५ भारमल, ६ नर्मद, ७ अर्जुन, ८ सूर्जन व ९ भोज के नाम उपलब्ध होते हैं.

२ 'मूता नेणसी की ख्यात' में देवीसिंह के बाद क्रमशः २ समरसिंह, ३ नापा, ४ हापा, ५ वरसिंह, ६ वेरा, ७ भांडा, ८ नरबद, ९ अर्जुन, १० सूर्जन व ११ भोज के नाम अंकित हुए है.

३ 'वंशभास्कर' की पुस्तक में १ देवीसिंह सें क्रमशः २ समरसिंह, ३ नरपाल, ४ हापा, ५ वरसिंह, ६ वैरीसाल, ७ सुभांड उर्फ भारमल, ८ नारायणदास, ९ सूर्यमल, १० सूर्जन व ११ भोज, इस मुआफिक नाम होना मालूम होता है.

उपर्युक्त 'सूर्जन चरित्र' की नामावली में समरसिंह, वैरीसाल, नारायणदास व सूर्यमल (जो बूंदी की गद्दी पर होने का अन्य ऐतिहासिक प्रमाणों से साबित है,) के नाम छोड दिये हैं और नर्मद व अर्जुन बूंदी के राजा नहीं थे तब भी उनके नाम अंकित किये है. (जो कि भारमल का दूसरा पुत्र नर्मद व नर्मद का पुत्र अर्जुन था, उसमें कोई शक नहीं है लेकिन वे राजा नहीं थे.) उसी मुआफिक मूता नेणसी की ख्यात में भी नारायणदास व सूर्यमल जो राजा थे उनके नाम नहीं लिखे गये हैं.

हाडा चौहानों की बूंदी में गद्दी कायम होने बाद जो ख्यात वंशभास्कर की पुस्तक में

लिखी है उससे उपलब्ध होती वंशावली अन्य ऐतिहासिक साहित्यों से मिलाते बहुत ठीक पाई गई है, जिससे उक्त ग्रंथ पर से ही बूंदी के हाडा चौहानों का वंश वृक्ष अंकित करना योग्य है, क्यों कि कविराज सूर्यमल्ल ने बडुए आदि के पुस्तकों भी देख कर यह पुस्तक पद बंध की है वैसा पाया जाता है.

वंश वृक्ष हाडा चौहान बूंदी (वंशभास्कर के ग्रंथानुसार.)
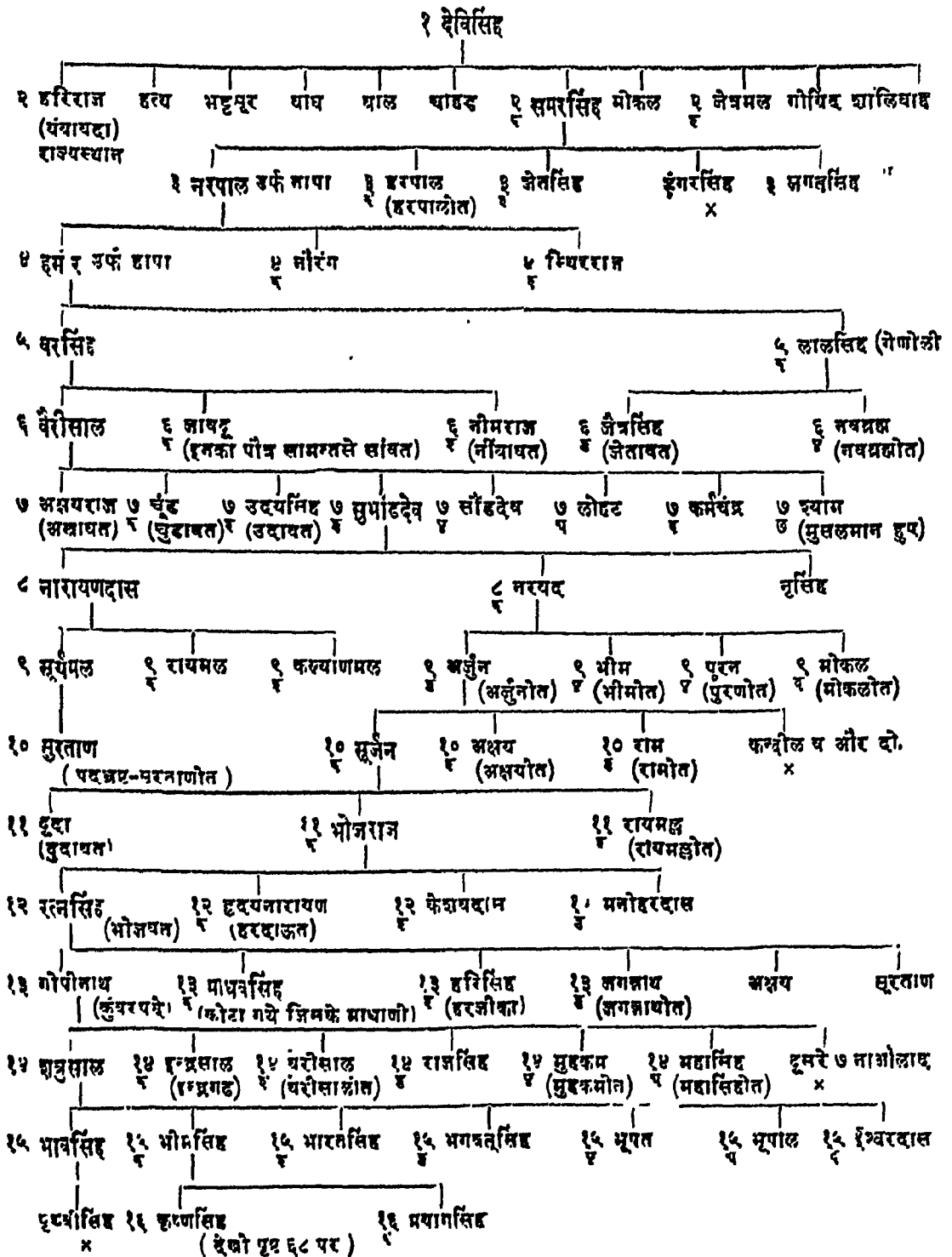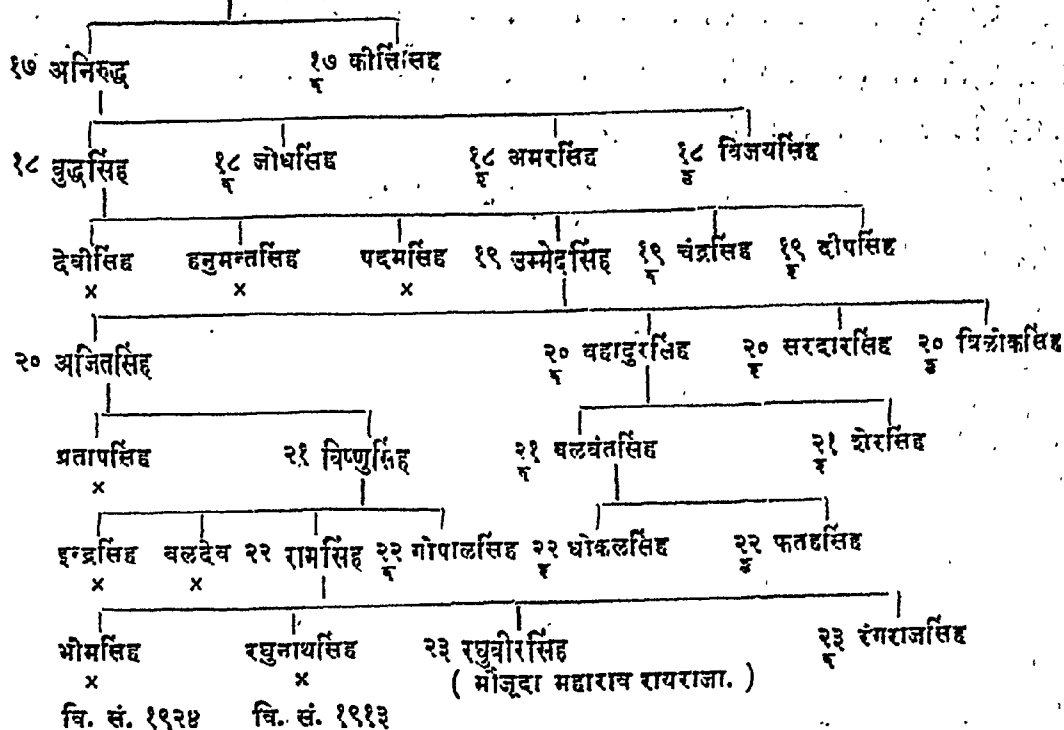
बूंदी के हाडा चौहानों का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ राव देवीसिंहने भैंसरोड से आकर बूंदी कायम की, उसका अहवाल प्रकरण १० वां में लिखा गया है. वंशभास्कर में लिखा है कि देवीसिंह के पिता वंगदेव उर्फ राव वाघने चितौड, जीरण, दसोर, भानपुर, मांडल, पानगढ, हिंगलाजगढ, खैरोली, कैथोली, व भैंसरोड आदि २४ किले कब्जे किये थे, परन्तु यह सब किले उसके कब्जे में होने का दूसरा कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है वलिक इतिहास वेत्ताओं की यह राय है कि हाडा चौहानों का उस समय में खास राज्य नहीं था, और चितौड के महाराणा की सेवा में वे उपस्थित थे, वैसे बूंदी राजस्थान कायम होने वाद भी राव सूर्जन ने शाही सेवा का स्वीकार किया वहां तक बूंदी के राजाओं का ताल्लुक मेवाड के महाराणा के साथ रहा है.

वंशभास्कर के ग्रंथानुसार राव देवीसिंह के ११ पुत्र थे, लेकिन मूतानेणसी की ख्यात से पाया जाता है कि उनके सिवाय भावचंद व रायचंद नाम के दूसरे दो पुत्र ओर भी थे. देवीसिंह की पुत्री 'मंगनी' का विवाह महाराणा लक्ष्मणसिंह के पुत्र अरिसिंह उर्फ अरसी के साथ हुआ था, और राणा की सहायता से ही देवीसिंह को बूंदी प्राप्त हुई. इससे पाया जाता है कि देवीसिंह अलाउद्दीन खिलजी के समय में विद्यमान था, क्यों कि अलाउद्दीन ने चितौडगढ लिया उस युद्ध में राणा लक्ष्मणसिंह और उसके कुमार अरिसिंह आदि शाखा करके काम आये थे.

नोट—इस वंश वृक्ष में राजाओं के नाम बडे हरफों से बताया हैं और जो जो शाखएं हुई वह नाम अंकित किया गया है.

नं. २ हरिराज बंबावदे में रहा था. जो मुसलमान के साथ लड कर मारा गया. इसके बारह पुत्र होना वंशभास्कर में लिखा है.

नं. $\frac{२}{१}$ राव समरसिंह को बुंदी की जागीर मिली. वंशभास्करानुसार यह वि. सं. १३०० में बूंदी की गद्दी पर बैठा (परन्तु यह संवत् विश्वासपात्र नहीं है.) और बंबावदे में अपने भाई की सहायता करने में काम आया. मूतानेणसी की ख्यात में समरसिंह के पिता का नाम 'रामचंद' लिखा है. इसके पुत्र नं. $\frac{३}{२}$ जैतसिंहने कोठिया भील को मार कर कोटा शहर आबाद किया. इसकी पुत्री 'जसमादेवी' राठौर राव सूजा की माता थी.

नं. ३ राव नरपाल उर्फ नापा बुंदी की गद्दी पर बैठा, उसके बाद नं. ४ राव हमीर उर्फ हापा गद्दी पर आया.

नं. ५ राव वैरसिंह अपने पिता के बाद गद्दी पर बैठा. इसका भाई नं. $\frac{५}{१}$ लालसिंह की पुत्री का विवाह चितौड के महाराणा खेतसिंह के साथ ठहराया था. जब कि खेतसिंह लग्न करने को आया तब लडाई होकर खेतसिह व लालसिंह दोनों मारे गये.

नं. ६ राव वैरीसाल बूंदी की गद्दी पर बैठा, इसके समय में 'मांडू' का बादशाह होशंगने बूंदी पर घेरा डाला, राव वैरीसालने बहादुरी से उसके साथ मुकाबला किया और लडाई में काम आया.

नं. ७ अक्षयराज बूंदी की गद्दी पर आने नहीं पाया, लेकिन नं. $\frac{७}{३}$ राव सुभांडदेव अपने पिता के बाद बूंदी की गद्दी पर बैठा. समरकंद नाम के मुसलमान सरदारने इसको मार कर बूंदी कब्जे कर ली, परन्तु राव नारायणदासने वह समरकंद और दाउद नाम के सरदारों को मार कर वापिस हस्तगत की.

नं. ८ राव नारायणदास अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसकी राणी जोधपुर के राठौर सूजा की पुत्री 'खेतुबाई' थी. राव नारायणदास को अफीम खाने की आदत बहुत ही बढ गई थी, बल्कि अफीम के नशे में यह दिन रात चकनाचूर रहता था. इसकी राणी खेतुबाई नशे के समय में इसको इतनी हिफाजत से रखती थी कि उसका राव नारायणदास पर बहुत गहरा असर हुआ और राणी को अफीम का संग्रह सुपुर्द कर दिया. पतिव्रता खेतुबाई ने अपने पति की तबियत देख कर आहिस्तह २ अफीम कम खावे वैसा प्रबंध करके अफीम कम खाया जाय ऐसी तदबीर करने से उसका व्यसन कम हो गया, बाद इसकी ताकत इतने दर्जे बढ गई कि इसने मेवाड के राणा 'सांगा' की सहायता में रह कर मांडवगढ के बादशाह को पकड लिया. इसका देहान्त वि. सं. १५८४ में हुआ.

नं. ⁸⁄₁ नर्मद ने अपनी पुत्री 'कर्मवतीबाई' का विवाह चितौड के राणा सांगा के साथ किया था, जो पीछे से 'हाडी कर्मवती' के नाम से राजस्थान के इतिहास में प्रसिद्धि में आई है. हाडी कर्मवती ने जब कि मालवे के बादशाह बहादुरशाह ने चितौड गढ पर आक्रमण किया तब उसके सामने शस्त्र ग्रहण करके किले का बचाव किया, और जब किला बचने को उम्मेद नहि रही तब झमर खडक कर अग्नि प्रवेश नहीं करते दुश्मन के उपर केशरिया कर के जुहार किया. उसने ऐसी वीरता से युद्ध किया कि बहादुरशाह की फौज के पैर उखड गये, लेकिन उसी युद्ध में कर्मवती का देहान्त हो गया. यह घटना वि. सं. १५९९ में हुई.

नं. ⁹⁄₁ राव सूर्यमल अपना पिता के पीछे बूंदी की गद्दी पर बैठा. इसकी बहादुरी, उदारता व स्वामी भक्ति के कई एक उदाहरण प्राप्त होते हैं. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि महाराणा सांगा ने हाडी कर्मवती की इच्छानुसार उसके बालक राजकुमार विक्रमादित्य व उदयसिंह को रणथंभोर का किला दिया था, लेकिन रणथंभोर की हिफाजत के वास्ते राव सूर्यमल जैसा वीर क्षत्री का सहारा की जरुरत होने से कर्मवतीने अपने पुत्रों व उनकी जागीर की सम्भाल के वास्ते सूर्यमल को कहलाया, तब सूर्यमलने अपने भाँजों का लिहाज नहीं करते जुवाब दिया कि मैं चितौड की गद्दी के टीकैत का हुक्म उठाऊंगा, यदि युवराज रत्नसिंह (राणा सांगा का पाटवीकुमार) मुझे आज्ञा देंगे तो मैं रणथंभोर जा सकता हुं, जिस पर रत्नसिंहने आज्ञा दी तब सूर्यमलने उनकी हिफाजत रखना स्वीकार किया.

सूर्यमल की उदारता के विषय में यह बात मशहूर है कि जब वह बूंदी की गद्दी पर बैठा तब महाराणा सांगाने उसको 'ऐराकी' नाम का वीस हजार रुपये की कीमत का घोडा और 'मेघनाद' नाम का साठ हजार की कीमत का हाथी वगैरः इनायत किये थे, जिनको सूर्यमलने 'भाण' नाम के चारण कवि को बक्षिस में दे दिये. चारणने महाराणा रत्नसिंह (सांगा का पुत्र) के आगे सूर्यमल के दान वीरता की प्रशंसा की, तिस पर रत्नसिंह को नाखुशी पैदा हुई. सूर्यमल वीर राजपूत होने से युद्ध करके वह द्वेशाग्नि शान्त किया जाय वैसा न होने से रत्नसिंह राणाने उसको दगा से मार डालने का प्रपंच अखत्यार किया. उसने सूर्यमल को शिकार खेलने के बहाने से मेवाड व बूंदी की सीमा पर गौकर्ण नामक तीर्थ के पास बुलाया, जिस पर वह अपनी पवार राणी के साथ वहां आया. राणा रत्नसिंहने उसका बहुत आदर सत्कार किया और पूर्बिया पूरणमल द्वारा छलसे मरवाने की युक्ति की. पूरणमलने तदनुसार सूर्यमल के साथ चूक किया, परन्तु परिणाम यह हुआ कि मरते मरते उसने पूर्बिया पूरणमल व राणा रत्नसिंह को भी मार डाले. इसकी पवार राणी गौकर्ण तीर्थ में सती हुई. यह घटना वि. सं. १५८८ में

हुई. हाडाराव सूर्यमल को राणा रत्नसिंहने चूक कराया उस विषय में बारहट हरसूरने कहा है कि.

" वांधी अन सुहड सोह कर्ज वीजां, प्रवसी सांरे भीड पडी; सुजडी चूक हुएं सूरजमल जांणे हुती हाथ जडी. "
" पह अन पडप कारणे परठी, भड सांचवे नही भाराथ; अरी अं हणवा कारण उठी, हाडा तणे कटारी हाथ. "
" धार पहाड सीस धड ढलतें, जग त्रिसारें धार जिण; वेरा हरा छु कर वाढाली, रोपी रीपु साजवा रिण. "
" उगम लाग उअर सत्र उगी, तुझ सु कर नारेण तण; परणमि तें सूरज प्रतिमाली, रणफळ तण लागो स्यण. "

इस विषय में कवि आसीया करमसी ने कहा है कि.

" प्रतमाली नीयकर चूक प्रगटीयो, सु मेले नारायण सु जाव; अंत आपरो कीयो आधो, स्यण सरस हाडा हर राव."
" भोग लीयाल करग कर भेलो, रोस नवेस नीर दले राण; तुं वीच हीये विघन वाहचनता, चहेरा पांक थीयो चहुआण,
" चूक हुए जम दाढ न चूको, पाण जुआल काढी अणपाल; रांणां सरस रोसगे राणो, मरण वहचीयो सूरजमाल. "
" पोह रतनसी पुर मथ पायक खल चूका चूके रण खेत, लोभ गणे एकले न लीधो वेंहचे दीधु नारायण घेत. "

नं. १० सुरताण, राव सूर्यमल के पीछे गद्दी पर आया लेकिन इसकी चाल चलन अच्छी न होने के कारण हाडे सरदार सहसमल व सातल ने उसकी आंखे फोड दी. तव भी वह नेकी पर न रहा जिससे महाराणा उदयसिंह को अर्ज करके हाडे सरदारों ने इसको पदभ्रष्ट किया और नं. ९/३ अर्जुन के पुत्र (नर्मद के पोते) सूर्जन को बूंदी की गद्दी पर वेठाया.

नं. ९/३ अर्जुन चितोड के राणा की सेवा में रहा था. जब कि मालवे के सुलतान वहादुरशाह ने चितोड पर चढाई की तव यह उस लडाई में ५०० सेनिकों के साथ मारा गया. इस विषय में टॉडराजस्थान में लिखा हे कि हाडा अर्जुन अपने सेनिकों के साथ वीका पहाड के उपर से प्रचंड युद्ध कर रहा था, उस पहाड के नीचे सुलतान की फौज के 'लाव्रीखां' नामके फिरंगी गोलंदाज ने पैंतालीस हाथ गहरी सुरंग खोद कर वारुद भर के उंडा दी, जिससे हाडा अर्जुन अपने साथीयों के सहित मारा गया.

नं. १०/१ राव सूर्जन, हाडा राव सुरताण के पीछे बूंदी की गद्दी पर वेठा, इसके विषय में 'सूर्जन चरित्र' नामकी पुस्तक में इसकी वीरता व कार्य दक्षता की वहुत ही प्रशंसा करने में आई है. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा हे कि जिस समय हाडी कर्मवती ने चितोडगढ में जुहार किया उस लडाइ में इसका पिता अर्जुन काम आने से चितोड के महाराणाने इसको मेवाड में वारह गांवकी जागीर दी थी, बाद राणा की अच्छी सेवा करने से इसको फूलिया व वदनोर परगणें की जागीरें मिली. बूंदी की गद्दी पर वैठाने के समय इसको रणथंभोर की किलेदारी, पाटण, कोटा, करखडा, लाखेरी, मेळवाय परगना, आतरणो, व खेरावाद, आदि दिये गये. यह महाराणा उदयसिंह के वहुत ही मिहरवानी के पात्र था. महाराणा उदयसिंह जव द्वारिका यात्रा करने को गये तव यह उसके साथ था.

और इस समय जिस मन्दिर में श्री रणछोडराय विराजते हैं वह मन्दिर महाराणा की आज्ञा से इसने ही बनवाया था.

वि. सं. १६२४ में अकबर बादशाह ने चितौडगढ सर किया, और वहां से लौटते रणथंभोर पर घेरा डाला, उस समय राव सूर्जन रणथंभोर के किले में विद्यमान था. उसने अपनी कम ताकत व सिसोदियों की पडती देख कर कछवाहे भगवान्दास द्वारा तजवीज कराकर *रणथंभोर का किला बादशाह को सुपुर्द किया, और चूनार के साथ वाराणसी आदि चार परगने उसकी एवज में लेकर बादशाह की मातहती स्वीकार कर ली. शाही उमराओं में इसका दर्जा 'दो हजारी मनसब' का था. इसका छोटा पुत्र भोजराज शाही सेवा में उपस्थित रहा, लेकिन बडा पुत्र दूदा शाही तावेदारी से विमुख होकर मेवाड में भाग गया.

राव सूर्जन के वास्ते सूर्जन चरित्र की पुस्तक में लिखा है कि इसने अपने पुत्र भोज को बूंदीका राज्य देकर इश्वर भक्ति के कारण बनारस में कालक्षेप किया था, लेकिन मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि चितौड गढ पर महाराणा के निमकहलाल सरदारों (सिसोदिया पता व रावत जयमल) ने अपने मालिक का नमक अदा करने को जान कुर्बान की, उसकी कदर करके अकबर बादशाह ने आगरे पहुंचकर किले के दरवाजे पर दो पत्थर के हाथी बनवा कर दोनों वफादार सरदारों की मूर्तियां वे हाथीओं पर स्थापन की, (जो इस वक्त भी आगरे के किले के दरवाजे पर विद्यमान हैं.) और राव सूर्जन के आगे 'कूकरीभात'+ मडवाया, जिससे सूर्जन शर्मिन्दा होकर बनारस तीर्थ में काशीनिवास करने के वास्ते चला गया, जहां वि. सं. १६४२ में उसका देहान्त हुआ.

---

* रणथंभोर का किला राव सूर्जन ने दिया उस विषय में 'भारत राज्य मंडल' नामके ग्रंथ में लिखा है कि अकबर बादशाह ने रणथंभोर के किले पर हमला किया, परन्तु सूर्जन राव के पराक्रम से फतह नहीं पाई, जिससे आमेर के कुमार मानसिंह कछवाह के साथ बादशाह उसके छडीदार बन कर रणथंभोर का किला देखने को गया. राव सूर्जन ने उसको पहिचान लिया और अच्छा सत्कार किया. मानसिंह ने बादशाह के साथ संधी करने की समजूत करने से यह शर्त करार पाई कि, "रणथंभोर के एवज में चूनार का किला व काशीक्षेत्र राव सूर्जन को दिये जावे, और बूंदी के हाडा चौहानों के मान मर्यादा के विषय में खास शर्तें की गई कि बूंदी राज्य को अपनी राज कुंवरी मुगल को देने की फर्ज नहीं रहेवे. 'जजियावेरा' न लिया जाय. सिन्धु नदी उतर कर जाना पडे वैसी जगह न भेजा जाय. इनके अलावा जो जो बातें हिन्दु रईस अपमानित मानते हैं वैसी बातें व ऐसे करों से बूंदी मुक्त रहेगी."

सूर्जन राव ने यह भी शर्त मंजुर कराई कि जब बूंदीके नरेश शाही दरबार में हाजिर होवे तब अपने हथियार साथ रख कर बादशाह की मुलाकात लेवे, और बूंदी के देवालयों को मुसल्मान पवित्र रखे. बूंदी रियासत को दूसरे हिन्दु राजा की मातहती में न दी जाय, और शाही तावेदारी का खास चिन्ह (घोडे सवार की छलाट पर एक फूल रखा जाता था) न रखा जाय व बूंदी नरेश शाही पायतख्त में आवे तब लाल दरवाजे तक अपने डंके निशान साथ रखें.

\+ 'कूकरीभात' मडवाने का सबब यह है कि सिसोदिया पता व रावत जयमल ने अपने मालिक की सेवामें प्राण समर्पण किये, तब राव सूर्जन ने रणथंभोर का किला बादशाह को देकर उसके बदले में चूनार आदि जागीरें लेकर शाही सेवामें उपस्थित हुआ. यानी नमक अदा नहि करते अपना स्वार्थ साध लिया.

बूंदी के इतिहास में यह उल्लेख है कि हाडा चौहान कब भी मेवाड के महाराणा की मातहती में नहीं रहे है, और मेवाड के इतिहास में जगह २ राव सूर्जन तक के हाडे चौहान मेवाड के प्रथम श्रेणी के सामन्त होने का लिखा गया है. मूता नेणसी की ख्यात व टॉड राजस्थान से पाया जाता है कि बूंदी के हाडा चौहानों का ताल्लुक राव सूर्जन तक मेवाड के साथ रहा है, और अकबर के साथ रणथंभोर का अहदनामा हो जाने से मेवाड का संबंध बंध हुआ. मेवाड के इतिहास में यह दावा जगह जगह होना पाया जाता है कि मुगल सलतनत कायम होने पहिले राजपूताना के सब राजाओं मेवाड के महाराणा की मातहती में थे, और उसके समर्थन में जब जब मेवाड के राणाओं को राजपूताना के दूसरे राजाओं ने सहायता की थी, या समयानुसार मेवाड के राणा की पनाह लेने में आइ थी, वे वृतांत दिखलाये जाते है, लेकिन राजपूताना के राज्यों का इतिहास देखते मालूम होता है कि वे सब राज्यों मेवाड के मातहती में नहीं थे, परन्तु मेवाड के महाराणाओं के लिये उनके दिल में बहुमान था, जिससे परस्पर एक दूसरे की सहायता की जाती थी. पाया जाता है कि राव सूर्जन के पहिले हाडा चौहानों का ताल्लुक उसी मुआफिक था, लेकिन नं. ९ अर्जुन, महाराणा सांगा का साला होता था और चितौड के युद्ध में वह काम आने से उसके पुत्र सूर्जन को महाराणा ने मेवाड में जागीर दी थी, जिससे उसको मेवाड का सामन्त गिना गया है.

नं. ११ दूदा, राव सूर्जन का गद्दी वारस था, परन्तु सूर्जन ने शाही सेवा स्वीकार ली जिससे नाखुश होकर वह मेवाड में चला गया. दूदा का मेवाड में जाना सूर्जन को नापसंद होने से उसने इसको पकड कर लाने के वास्ते 'जैनखां कूका' के साथ अपने पुत्र भोजराज व रामचंद्र को भी भेजे, उन्हो ने दूदा को जबरन पकड कर बादशाह के आगे खडा किया, लेकिन जबरन लानेका मालूम होने से बादशाह ने उसको छोड दिया. सूर्जन ने इस कारण से उसका बूंदी की गद्दी का हक रद्द किया, जिससे दूदा ने बूंदी के प्रदेश में बगावत करनी शुरु की. कई दफे उसने भोजराज को आगरे में मारने का प्रयत्न किया, परन्तु सफलता न होने से वह विजापुर के ब्राह्मणी सुलतान की सहायता लेने के वास्ते आगरे से रवाने हो गया, उसका प्रयाण दक्षिण में चलू था, दरमियान मालवे के प्रदेश में देवगढ के पास उसके भाई भोजराज के किसी आदमी ने उसको विष प्रयोग से मार डाला. यह घटना वि. सं. १६३८ में हुई. इसके पुत्र चतुर्भुज, अमरसी व श्यामसिंह थे.

नं. ११/१ राव भोजराज अपने पिता सूर्जन से नाखुश होकर पहिले से ही शाही सेवा में उपस्थित हो चुका था, और अपनी कार्य दक्षता व बहादुरी से शाही कृपा का पात्र बनकर सूर्जन की हयाती में ही इसने बूंदी राज्य की सनंद हासिल कर ली थी. कहा जाता है कि भोजराज ने

अंबर (आमेर) के राजा भगवानदास कछवाहे की बातों में आकर शाही सेवा करना पसंद किया लेकिन खास +शर्तों के साथ इसने वह चाकरी कबुल की थी. कुच्छ समय बाद किसीने अकबर बादशाह को जाहिर किया कि भोजराज की राजकुमारी बहुत स्वरुपवान है, जिससे बादशाहने भोजराज से उसके साथ अपनी शादी करने की इच्छा प्रकट की. भोजराज ने अपनी शर्त की याद दिलाई लेकिन बादशाह उस शर्त पर पाबंध रहने को तैयार न रहेगा वैसा मौका देख कर उसने यह भी अर्ज कर दी कि मेरी पुत्री की सगाई हो चूकी है. जिस पर उसका नाम ठाम पूछा गया. हाडा राव धर्म शंकट में आ पडा, उसने जुवाब देने के पहिले दरबार में उपस्थित रहे राजपुत्रों की तरफ अपनी नजर डाली परन्तु किसीने उससे आंखें न मिलाईं, सिर्फ 'सवियाणे' के राठौर कला (जोधपुर के राव मालदेव का पोता होता था.) जो बहादुर और स्वाभिमानी राजपुत्र था, उसने भोजराज की आपत्ति मिटाने को उससे आंख मिला कर अपनी मूछों पर हाथ डाला. चतूर हाडाने बादशाह के आगे राठौर कला का नाम जाहिर किया. बादशाहने उस मांग पर से अपना हाथ उठा लेने की कला राठौर को आज्ञा की. परिणाम यह हुआ कि उसने हाडा चौहान की इज्जत बचाने के खातर भोजराज की गैरहाजरी में बूंदी जाकर हाडी कन्या से लग्न कर लिया और बादशाह की खफगी में आकर अपनी जान व जागीर उसके वास्ते कुर्बान की. (कला राठौर के वीरत्व व राजपूताई के बहुत से गीत कवित्त राजपूताना में प्रसिद्धि में हैं.)

राव सूर्जन के गुजर जाने पर राव भोजराज पूरे तौर से बूंदी के राजा बना और वि. सं. १६६४ में उसका देहान्त हुआ.

नं. १२ राव रत्नसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसने शाही सेवा में बडी वीरता के साथ नोकरी दी, जिससे बादशाह 'जहांगीर' ने इसको 'सर्बलंदराय' और 'रावराय' के खिताब इनायत कर पांच हजारी मनसब के दर्जे तक पहुंचाया, और खीची चौहानों का राज्य छीन लेने के वास्ते शाही फौज को मदद दी, जिससे उसने गढ गागरुन, चाचरणी, वगेरह इलाका खीची गोपालदास और बाघा से छीन कर बूंदी के राज्य की सीमा बढा ली. राव रत्नसिंह मुल्ला मुहम्मद लारी के साथ बुराहनपुर (दक्षिण में) की किलेदारी पर था, उस वक्त शाहजादे खुर्रम ने तथा ब्राह्मणी सुलतान के सरदार हबसी अमर ने बुराहनपुर लेना चाहा मगर उनको इसने सफलता प्राप्त न होने दी. शाहजहां बादशाह के वक्त में भी यह दक्षिण में तइनात था, और वहां ही वि. सं. १६८८ में इसका देहान्त हुआ. इसके कुंवर नं. $\frac{१३}{१}$ माधवसिंह को शाहजहां बादशाह ने

+ वे शर्तें की तफसिल इस प्रकरण में आ चूकी है. मतान्तर इतना ही है कि वे शर्तें राव सूर्जन ने की थी या भोजराज ने ? अनुमान होता है कि भोजराज ने राव सूर्जन के पहिले शाही सेवा का स्वीकार किया था, जिससे उसने ही यह शर्तें की होगी, क्यों कि भोजराज बडा कार्य दक्ष राजपुत्र था.

कोटा और पलायता वगैरह परगने की जागीरें देकर ढाई हजारी मनसब किया था, जिसकी ओलाद वाले ' माधाणीं हाडा ' (कोटा) कहलाये. कोटे के हाडा चौहानों की ख्यात अलग प्रकरण में लिखी गई है.

नं. १३ गोपीनाथ, रावराया रत्नसिंह की हयाती में ही लगभग पचीस वर्ष की उम्र में गुजर गया था. इसके कम उम्र मे गुजर जाने का सबब यह बताया है कि वह दूबले वदन के होने पर भी इतना ताकात वर था कि शामियाने के खंभे के बराबरी जितनी दरख्तों की दो शाखें अलग हुइ हो ऐसे दरख्त देख दोनों शाखें की जगह पर बैठ कर एक शाख पर अपने पैर व दूसरी शाख पर पीठ लगा कर उस दरख्त को चीर देता था. ऐसी २ फाजिल ताकत अजमाने के काम करने से यह कम उम्र में मर गया. इसके १३ पुत्र थे, जिसमें १ उदयसिंह २ सूरसिंह ३ श्यामसिंह ४ केसरीसिंह ५ कनकसिंह ६ नगराजसिंह ७ रामसिंह ये सब ना ओलाद होने से इनके नाम वंशवृक्ष में दर्ज नहीं किये हैं.

नं. १४ रावराया शत्रुसाल अपने दादे रत्नसिंह के पीछे बूंदी की गद्दी पर बैठा. इसने खीची नगसिंह को मार कर वेलनपुर परगना ले लिया. इसकी शादी मेवाड के महाराणा जगतसिंह की पुत्री के साथ हुई थी. पहिले यह शाहजादा दाराशिकोह के साथ कंधार गया और दूसरी दफे (वि. सं. १७०२ में) शाहजादा मुरादबक्ष के साथ ' वलख ' गया था. वि. सं. १७१५ में जब कि औरंगजेब व दाराशिकोह दरमियान युद्ध हुआ, तब यह दाराशिकोह की फौज में हरावल का अफसर था, और इसी लडाई में मारा गया. इनके भाई नं. १४/१ इन्द्रसाल ने इन्द्रगढ वसाया जिसके वंशज इन्द्रगढ के महाराज कहलाते हैं.

नं. १५ रावराया भावसिंह अपने पिता के बाद गद्दी पर आया. इसका भाई नं. १५/२ भगवत्‌सिंह आलमगीर बादशाह की नोकरी में था. रावराया शत्रुसाल दाराशिकोह की मदद में मारा जाने से जब कि रावराया भावसिंह बादशाह के पास पहुंचा तब आलमगीर ने बसबब नाराजगी भगवत्‌सिंह को राव का खिताब देकर बूंदी में से कितनेक परगने दे दिये. रावराया भावसिंह का पुत्र पृथ्वीसिंह बचपन में गुजर गया था, जिससे इसने अपने भाई नं. १५/१ भीमसिंह के पुत्र कृष्णसिंह को युवराज ठहराया था, लेकिन बाद में वह भगवत्‌सिंह के गोद जाने से उसका युवराज पद रद्द करके उसका बेटा नं. १७ अनिरूद्ध को गोद रखा. भावसिंह औरंगाबाद के पास भावपुरा गांव में वि. सं. १७३८ में गुजर गया.

नं. १६ कृष्णसिंह अपने काका रावराया भावसिंह के युवराज ठहराये गये थे, लेकिन बाद में नं. १५/२ भगवत्‌सिंह के गोद गये. इसका सबब यह है कि आलमगीर बादशाह ने

भावसिंह वगैरह राजाओं से +एक मजहब कर लेने की तजवीज कर रखी थी, उस मुआफिक बूंदी के नजदीक केशवरायजी के मन्दिर को गिराने के वास्ते फौज आई, तब कृष्णसिंह ने शाही फौज से लड कर मन्दिर बचाया. इस लडाई में नं. १५/२ भगवत्सिंह काम आया, जिससे कृष्णसिंह, भगवतसिंह के गोद बैठा. पाया जाता है कि कृष्णसिंह अपने सनातन धर्म के वास्ते ज्यादह ख्याल रखने वाला था. कृष्णसिंह वि. सं. १७३४ में उज्जेन में मारा गया, उसके मारे जाने का सबब यह हुआ कि जब कि शाहजादा महम्मद अकबर मालवे का सुबेदार होकर उज्जेन आया, तब कृष्णसिंह उसके पास हाजिर हुआ, वहां पर मजहबी तकरार पैदा होने से मुसलमानों ने उसको मार डाला. फारसी तवारीख वाले लिखते हैं कि उसने वहां पर खिल्लत पहिनने के वक्त पर बहुत जिद्द की और अपने आप खंजर मार कर मर गया.

नं. १७ रावराया अनिरुद्ध नं. १५ भावसिंह के पीछे कम उम्र (पंदरह साल की) में गद्दी पर बैठा. जब कि ये बादशाह के साथ दक्षिण में था, तब वहां पर यह खबर मिली के हाडा दुर्जनसालने बदी अपने कब्जे कर ली है, उस पर शाही फौज की मदद लेकर इसनें बुंदी का कब्जा वापिस ले लिया. (वि. सं. १७४० में) बाद में इसको काबुल की तरफ भेजा गया, वहां ही वि. सं. १७५२ में इसका देहान्त हुआ.

नं. १८ रावराया बुद्धसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसके समय में कोटा के राव रामसिंह ने शाही कृपा से भूषित होने के कारण 'मऊ-मेदाना' का प्रदेश बूंदी से हठवा कर अपने कब्जे में ले लिया. इस कारण से बूंदी व कोटे के हाडे चौहानों के बीच में विरोध पैदा हुआ, और उसी समय पर शाहजादे बहादुरशाह व आजमशाह के दरमियान में ना इत्तिफाकी हो गई. अतः रावराया बुद्धसिंह ने बहादुरशाह का पक्ष लिया और कोटे के राव रामसिंह आजमशाह के पक्ष में रहा. दोनों शाहजादों के दरमियान वि. सं. १७६३ में लडाई हुई, जिसमें आजमशाह मारा गया. इस लडाई में रावराया बुद्धसिंह ने वडी बहादुरी दिखलाई थी व इसके पहिले भी यह बहादुरशाह के साथ काबुल में हो आया था. बहादुरशाह वैसे ही इस पर बहुत खुश था जिस से इसको महाराव का खिताब व कई परगनों की नई जागीर मिली.

कोटे के राव रामसिंह का देहान्त होने बाद रावराया बुद्धसिंह ने कोटा कब्जे करने की गरज से बहादुरशाह के पास कोटा को सनद हासिल करके हाडे जोगीराम आदि सरदारों को कोटे पर भेजे, परन्तु उन्हों को युद्ध में हार कर वापिस आना पडा. बहादुरशाह गुजर जाने से 'फरूखसीअर' बादशाह हुआ, जब कोटे के राव भीमसिंह ने

+ एक मजहब का मायना यह था कि मुर्ति पूजा की प्रथा बंध कर देना पाया जाता है कि भावसिंहने उस मजहब का स्वीकार किया था.

सैयदो की मदद से बूंदी पर अपना कब्जा कर लिया; जिससे रावराया बुद्धसिंह अपने ननिहाल चला गया. बुद्धसिंह की शादी उदयपुर, जयपुर व वेगु में हुई थी. उसने अपनी कछवाही राणी को आमेर भेज दी. राठौरी राणी भणाई गई व चूडावतजी वेगु चली गई.

बुद्धसिंह ने पीछे से बादशाह फरूखसीकर को राजी करके बूंदी वापस ले लिया, मगर फरूखसीकर गुजर ने बाद वि. सं. १७७६ में कोटे के राव भीमसिंह ने बूंदी छीन ली. अतः बुद्धसिंह अपने ससुराल आमेर चला गया, वहां पर इसके तरफ से एक काम ऐसा कलंकित हुआ कि जिससे इसकी सब नेकी व बहादुरी पर पानी फिर गया, वह यह कि वेगु की राणी से वह खुश था और कछवाही राणी से नाखुश रहता था. जब कि आमेर में कछवाही राणी का पुत्र इसके सामने लाया गया तब उसको देख कर महाराज जयसिंह से इसने कहा कि बारह साल से तो मैं नामर्द हुं फिर लडका कैसे पैदा हुआ? अच्छा यह है कि आप इस लडके को जहर देकर मार डालो. इसने आमेर के महाराज को यह भी लिख दिया कि आप जिसको बूंदी देंगे उसको मैं अपने गोद रखूंगा और कभी चूडावत राणी के लडका होगा तो वह उससे छोटा गिना जायगा. महाराज जयसिंह ने इसके कहने मुआफिक उस लडके को जहर देकर मार डाला. इतना अन्याय बुद्धसिंह ने इसी कारण से किया कि कछवाही राणी का लडका गद्दी का मालिक न हो और चूडावत राणी के लडके को यह लाभ मिले, लेंकिन महाराज जयसिंह ने हाडा सालिमसिंह के बेटे दलेलसिंह को बुद्धसिंह के गोद रख कर मुआफिक इकरार बूंदी का राजा बना दिया जिससे बुद्धसिंह नाखुश होकर अपनी राणी चुडावत के पास वेगु चला गया. वेगु के रावत देवीसिंह ने इसकी बहुत खातिर की, बल्कि अपनी जागीर भी इसके सुपुर्द कर दी. इस इहसान का असर बुद्धसिंह पर गहरा होनेसे इसने रावत देवीसिंह को कहा कि—

"भर पलटी पलट्यो धरम, पलट्यो गोत निसंक,"
"दवो हरिचंद राखियो, अधिपतियाँ सिर अंक."

मतलब कि जमीन गई, इमान गया, गोत्रि भाई भी बदल गये, ऐसे वक्त पर हरिसिंह के पुत्र देवीसिंह (वेगुरावत) ने राजा (बुद्धसिंह) के उपर इहसान किया.

इसके जवाब में रावत देवीसिंह ने कहा कि—

"देवा दरियावाँ तणो, होड़ न नाड़ों होय; जो नाड़ों पाजां छले, तो दरियाव न होय."

मतलब कि दरियाव (यानी राजा बुद्धसिंह) की बराबरी (देवा जैसा) नाड़ा नहीं कर सक्ता. कभी नाड़े का पानी उछल कर बहार निकले तब भी व दरियाव नहीं होता है.

महाराव रावराया बुद्धसिंह बारह वरस तक वेगु में रहा और वि. सं. १७९६ में

वेगु के पास वाघपुरे गांव में इसका देहान्त हुआ. इसके पुत्रों में से नं. १९/३ उम्मेदसिंह जो वेगु रावत के भांजा था, उसको वेगु में ही बूंदी रावराया की गद्दी नशिनी की गई.

नं. १९/३ रावराया उम्मेदसिंह दस साल की उम्र में बुद्धसिंह की गद्दी पर बैठा. उसने जयपुर महाराज जयसिंह के अन्तकाल होने वाद नवाव फकरूदौला तथा कोटे के महाराव दुर्जनसाल और शाहपुरे के राजा उम्मेदसिंह की सहायता से वि. सं. १८०१ में दलेलसिंह को भगा कर बूंदी पर कब्जा किया, लेकिन जयपुर के महाराज ईश्वरसिंह ने वि. सं. १८०२ में बूंदी वापस ले ली, जो वि. सं. १८०३ में रावराया उम्मेदसिंह ने पुनः संपादन की, परन्तु राजा ईश्वरसिंह ने नारायण खत्री की सरदारी के साथ बडी भारी फौज भेजकर उम्मेदसिंह को हराकर फिर भगा दिया.

उम्मेदसिंह ने मल्हारराव हुल्कर की मदद से वि. सं. १८०५ में बूंदी फिर कब्जे की. वाद जयपुर महाराज ईश्वरसिंह का देहान्त हुआ और राजा माधोसिंह जयपुर की गद्दी पर आया, और उसकी जाटों के साथ लडाई हुई तव रावराया उम्मेदसिंह ने अपने पुत्र अजीतसिंह को जयपुर महाराज की मदद में भेजा, जिसका वदला अदा करने को जव माधवराव सैंधिया ने वि. सं. १८१९ में बूंदी पर घेरा डाला तव महाराजा माधोसिंह और शाहपुरे के राजा उम्मेद सह ने इसको मदद दी, जिससे सैंधिया को हठना पडा. वि. सं. १८२७ में इसने संसार त्याग करके केदारनाथ में अपना स्थान किया और अपने वडे पुत्र अजीतसिंह को बूंदी की गद्दी पर बैठा दिया.

नं. २० रावराया अजीतसिंह जवानी में गद्दी पर आये, इसको वहादुरी का ज्यादह अभिमान था. वि. सं. १८१९ में इसने महाराणा अरिसिंह को धोखे से मार डाला. और वि. सं. १८३० में इसका देहान्त हो गया. राणा अरिसिंह को मारने का यह कारण था कि अजीतसिंह की कछवाही राणी अपनी छोटी वहिन के (जिसका विवाह उदयपुर के राणा अरिसिंह के साथ हुआ तव) लग्न प्रसंग पर जयपुर गई थी. वहां राणा अरिसिंह ने छल कपट से उसका हाथ पकड लिया. राणी ने वह हाथ अपवित्र होना मानकर काट दिया और बूंदी चली आई. रास्ते में राव अजीतसिंह शिकार खेल रहा था वहां राणी से उसकी मुलाकात हुई. राणी ने हाथ काटने का कारण रावराया को कहा, जिससे अजीतसिंह ने राणा अरिसिंह विवाह करके आ रहा था, उसको रास्ते में ही रोक कर धोखा से मार कर अपमान का वदला लिया.

नं. २१ रावराया विष्णुसिंह अपने पिता के देहान्त के समय पर साढे चार महिन का था जिससे राज्य की संभाल इसके दादा रावराया उम्मेदसिंह ने रखकर 'सुखराम' को मुसाहिव किया. रावराया उम्मेदसिंह वि. सं. १८६१ में देवलोक हुआ वहां तक में विष्णुसिंह राज्य संभालने लायक हो चूका था. उस समय म इसके काका

मौजूदा महाराजा साहब बूंदी.
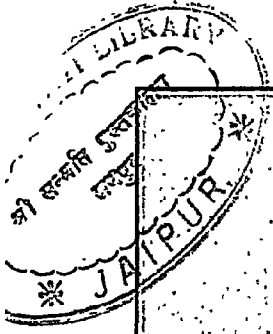
महाराव राजा राव राया सर रघुबीरसिंह साहब बहादुर.

जी. सी. एस. आई., जी. सी. आई. ई., जी. सी. वी. ओ.

[विभाग पहिला पृष्ठ ७९ नं. २३]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

बहादुरसिंह के पुत्र बलवन्तसिंह जो 'गोदरे' की जागीर पर था उसने फिसाद खडा करने से उस पर फौज भेजी, जिसमें बलवंत व उसका भाई शेरसिंह और बेटे धोंकलसिह, व फतहसिंह काम आये. वि. सं. १८७५ में बूंदी दरबार व कम्पनी सरकार के दरमियान अहदनामा हुआ और वि. सं. १८७८ में इसका देहान्त हुआ.

नं. २२ रावराया रामसिंह अपने पिता के पीछे साढे नौ बरस की उम्र में गद्दी पर बैठा. इसकी राणी जोधपुरी सरूपकुंवर थी, जिनके कामों में मुसाहिब किशनराम बेपरवाही करता था इस लिये जोधपुर महाराज मानसिंह के इशारे से 'सालू' नाम के राजपूत ने उक्त मुसाहिब को कचहरी में मार डाला और सालू भी मारा गया. इस रावराया के समय में पाटण का दोतिहाई परगना जो पहिले सेंधिया महाराज को दे दिया था वह बतोर इस्तमरार वापस लिया. वि. सं. १९१४ के बलवे में रावराया ने सच्चे दिल से अंग्रेज सरकार को मदद दी, और वि. सं. १९१५ में बागियों की फौज जब बूंदी पर आई तब बागियों पर खूब तोपें चलाकर उनको भगा दिये, बाद खेराड के मीणों ने जब सिर उठाया तब उनको भी सजा दी. 'गोदरे' के महाराज बलवंतसिंह के बेटे भीमसिंह ने अदूल हुक्मी करने पर गोदरा की जागीर खालसे करके उसको निकाल दिया. इसके बडे दो कुमार भीमसिंह और रुघनाथसिंह इसकी हयाती में ही गुजर गये थे.

नं. २३ महाराव राजा रावराया रघुवीरसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर आये. यह मौजूदा रावराया हैं. सन १९१२ ईस्वी में महाराणी साहब क्वीन मेरी ने बूंदी की महमानगिरी स्विकार कर बूंदी शहर की मुलाकात ली, और रावराया रघुवीरसिंह की सरभरा महमान गिरी से उनको संतोष हुआ था. रावराया सर रघुवीरसिंह बहादुर को ब्रिटिश सरकार की तर्फ से 'महाराव राजा' का खिताब के साथ, जी, सी, एस, आई. जी, सी, आई, ई. और जी, सी, वी, ओ. के खिताब हासिल हैं. आप को पुराने तरीके से रहना पसंद होनेसे राजरीत और लिबास वगैरह पुराने ढंग के रखते हैं बल्कि वर्तमान समय में प्राचिन राजनीति अनुसार चलने वाले रइशों में मेवाड के महाराणा व बूंदी के रावराया ही हैं.

प्रकरण १२ वाँ.

हाडा चौहान कोटा.

कोटा के हाडा चौहानों का मूल पुरुष बूँदी के हाडा चौहान के वंश वृक्ष में दर्ज हुआ नं. $\frac{१२}{१}$ माधवसिंह है, जो बूँदी रावराया रत्नसिंह का द्वितीय कुमार था. कोटे की जागीर उसको बूंदी सें वि. सं. १६८८ में मिली थी, लेकिन बूँदी के रावराजा भोजराज का शाही सेवा में ताल्लुक हो जाने से कोटा की जागीर पाने पेस्तर वि. सं. १६८४ में माधवसिंह बादशाही सेवा में मन्सबदार हो चुका था. कोटा के हाडा चौहानों का वंश वृक्ष नीचे मुआफिक है.

वंश वृक्ष हाडा चौहान कोटा.

१ माधवसिंह (बूंदी के हाडा चौहान वंश वृक्ष में नं $\frac{१२}{१}$ वाले ने कोटा पाया.)

- २ मुकुन्दसिंह (कोटा)
  - ३ जगतसिंह (कोटा)
- $\frac{२}{२}$ मोहनसिंह (पलायता)
- $\frac{२}{३}$ कहानसिंह
  - $\frac{३}{१}$ प्रेमसिंह (कोटा, बाद पदभ्रष्ट)
- $\frac{२}{४}$ जुझारसिंह
- $\frac{२}{५}$ किशोरसिंह (कोटा)
  - $\frac{३}{२}$ विष्णुसिंह (कोटा)
    - ४ पृथ्वीसिंह (अणता)
      - भोपालसिंह ×
      - ५ अजितसिंह (कोटा)
        - ६ शत्रुसाल (कोटा)
        - $\frac{६}{२}$ गुमानसिंह (कोटा)
          - ७ उम्मेदसिंह (कोटा)
            - ८ किशोरसिंह (कोटा)
            - $\frac{८}{२}$ विष्णुसिंह
            - $\frac{८}{३}$ पृथ्वीसिंह
              - ९ रामसिंह (कोटा)
                - १० शत्रुसाल (कोटा) × गोद आये
                  - ११ उम्मेदसिंह (मौजूदा महाराव कोटा)
      - $\frac{५}{२}$ सूर्यमल्ल
      - $\frac{५}{३}$ बख्तसिंह
      - $\frac{५}{४}$ चैनसिंह
  - $\frac{३}{३}$ हरनाथ
    - $\frac{४}{२}$ कुशलसिंह (सांमोद)
  - $\frac{३}{४}$ रामसिंह (कोटा)
    - $\frac{४}{३}$ भीमसिंह (कोटा)
      - $\frac{५}{५}$ अर्जुनसिंह
      - $\frac{५}{६}$ श्यामसिंह
      - $\frac{५}{७}$ दुर्जनसाल
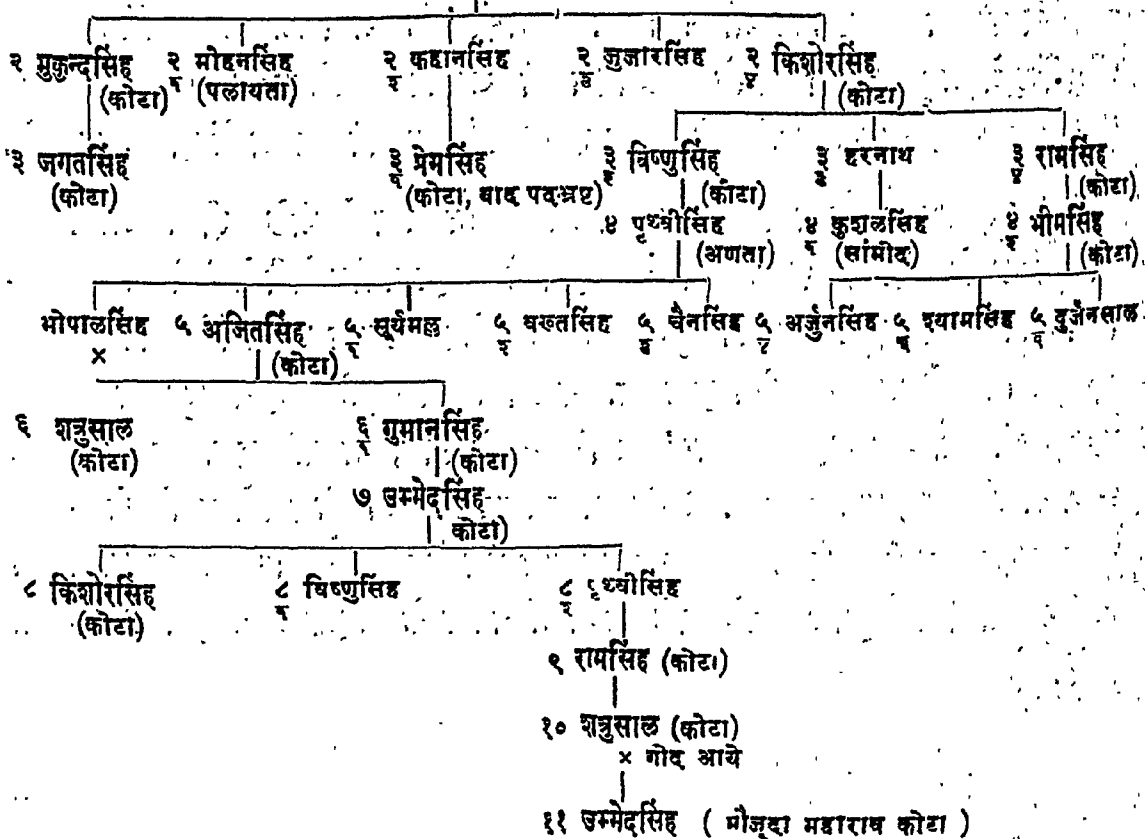
कोटा के हाडे चौहान राज्य कुल का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ राव माधवसिंह—वि. सं. १६८४ में शाही सेवा में उपस्थित हुआ था, उसने बागी लोदी खानेजहां को बरछी सें मार डालने पर इसको तरक्की मिली और दो हजारी मन्सब के साथ निशान इनायत हुआ. वि. सं. १६८८ में इसको कोटा की रियासत

मिली. वि. सं. १६९० में जुझारसिंह बुन्देला को सजा देने के काम में वीरता बताने से तीन हजारी मन्सब व सोलहसों सवार का दर्जा पाया. वि. सं. १६९२ में यह शाहु छत्रपति के सामने शाही फौज के साथ गया और वि. सं. १६९४ में सुलतान सुजाअ के साथ काबुल गया. वि. सं. १६९६ में सुलतान मुरादवक्ष के साथ यह फिर काबुल पहुंचा और वहां से वापस आनेपर इसको तीन हजारी मन्सब व ढाई हजार सवारों की हकुमत प्राप्त हुई. वि. सं. १६९९ में पांचसो सवारकी फिर तरक्की पाई और वि. सं. १७०१ में मुरादवक्ष के साथ 'बलख' पहुंचा, वहां से वि. सं. १७०४ में कोटे आया जहां पर इसका देहान्त हुआ.

नं. २ राव मुकन्दसिंह जो माधवसिंह का वडा पुत्र था वह माधवसिंह के बाद गद्दी पर आया. शाहजहांन बादशाहने इसको दो हजारी व देढ हजारी सवारों की मन्सब दी. यह दो वक्त औरंगजेब के साथ व एक वक्त दाराशिकोह के साथ कन्धार गया था और वहां से वापस आनेपर नक्कारह निशांन के साथ तीन हजारी व दो हजार सवारों की मन्सब पाया था. वि. सं. १७११ में चितोड की चढाई में यह शरीक था, वैसे औरंगजेब को मालवे में रोकने के वास्ते महाराजा जसवंतसिंह नियत हुए तब यह अपने दूसरे चारों भाईयों साथ उस युद्ध में शामिल रहा. यह युद्ध वि. सं. १७१५ में फतहाबाद में हुआ, जहां राव मुकन्दसिंह व उसके भाई नं. २/१ मोहनसिंह, नं. २/२ कान्हसिंह, व नं. २/३ जुजारसिंह यह चारों भाई वडी वीरता के साथ युद्ध करके काम आये. सिर्फ नं. २/४ किशोरसिंह जख्मी हालत में बच गया, मगर उसको ४० जख्म लगे थे. इस युद्ध के विषय में कविने कहा है कि—

" प्रथम मुकुन्द, मोहन, अणी धणी जुझार पण; सही भट्ट किशोवर कान्ह साथै "
" अथग अवरंग अलंग ठील्डी अवतां; अधारा रावतां लांघ माथे. "
" उरेडे सेन सारस गडे उपडै, जागिया रूडे घणा सवद जाड़ा. "
" फाल दखणादरा दलीसर दाकले; हाकले आणियां सीस हाडा. "
" लगस फोजां गजा थलोवल लूंबियां, सांचरे हियां कहे भडां सांचां "
" उरसरी गजां साही सरस उतरे, मांथग ओढिया कमल पांचां. "
" किस वटे रण वडे थटे अवरंग कुसे, अंवर सह धर हरे फ़रहरे आंच. "
" पांच नर नीमटे नाही सारी पृथी, पेट हेकण तथा नीमटे पांच "
" पेस चाढे जहर रमा आवध दगल, ध्याप धरम पार पाडे स उजा. "
" सार अड़वड़ थकां उपाड़े किशोवर, देवपुर च्यार गा रतन दुजा. "

राव जगतसिंह चौदह वर्ष की अवस्था में अपने पिता के पीछे गद्दीपर आया, यह दो हजारी मन्सबदार था और दक्षिण में तहेनात रहा था. वि. सं. १७२० में इसका देहान्त हुआ, और अपुत्रवान् होने से नं. २/२ कान्हसिंह के पुत्र नं. ३/२ प्रेमसिंह कोटा की गद्दीपर आया, लेकिन उसका चलन दुरुस्त न होने के कारण दूसरी साल वह पदभ्रष्ट हुआ और उसके काका नं. २/४ किशोरसिंह को गद्दी मिली.

नं. २/४ राव किशोरसिंह, राव प्रेमसिंह के पीछे गद्दीपर आया. यह विजापुर के युद्ध में जख्मी हुआ था. वि. सं. १७४३ में यह सुलतान मुअज्म के साथ हैदरावाद गया और वि. सं. १७४९ में इसको नक्कारह की इनायत हुई, वाद में यह जाटों की* बगायत मिटाने के काम में शाहजादा वेदारवख्श के तहेनात था, वहां जख्मी होने से कोटे चला आया, और अपने पुत्र नं. ३/२ विष्णुसिंह व नं. ३/३ हरनाथ को वहां जानेका कहा मगर वह नहीं गये, जिससे छोटाकुमार नं. ३/४ रामसिंह गया. वि. सं. १७५२ में अर्काट की लडाई में यह रामसिंह के शरीक रहा और बहादुरी से लडकर काम आया. इस युद्ध में रामसिंह भी जख्मी हुआ.

नं. ३/२ राव विष्णुसिंह अपने पिता किशोरसिंह के देहान्त होने वाद कोटा की गद्दी पर वैठा, लेकिन जख्मी रामसिंह जव तनदुरूस्त होकर शाही दरवार में पहुंचा तव इनकी शाही सेवा की कदर करने को जुलिफक्कारखां वहादुर ने सिफारिश करने से रामसिंह को कोटा इनायत किया गया. रामसिंह शाही फौज के साथ कोटा कब्जे करने को आ रहा है यह खवर सुनने पर राव विष्णुसिंह अपनी फौज के साथ इनके सामने आये. 'आंवा' गांव के पास दोनों फौजों का मुकावला हुआ, जिसमें इसका छोटा भाई नं. ३/३ हरनाथसिंह काम आया. राव विष्णुसिंह जख्मी होकर अपने ससुराल में चला गया और तीन साल रहने वाद वहां ही गुजर गया.

नं. ३/४ राव रामसिंह ने शाही फौज की मदद से कोटे का कब्जा किया और गद्दी पर वैठा. वि. सं. १७५७ में इसको नक्कारह इनायत हुआ और वि. सं. १७६१ में ढाई हजारी व एक हजारी स्वारों की मन्सब के साथ 'मऊ मेदाना' की जमीदारी बूंदी के रावराया बुद्धसिंह से छीन कर इसको इनायत हुई. औरंगजेब के शाहजादों में जव तकरार हुई तव राव रामसिंह ने आजमशाह का पक्ष लिया और चार हजारी मन्सब पाकर सुलतान अजीमुश्शान के साथ वडी वीरता से युद्ध करके काम आया.

नं. ४ पृथ्वीसिंह को राव रामसिंह ने उसका पिता विष्णुसिंह का देहान्त होने वाद मेवाड से वुलवा कर 'अणता' पट्टा की जागीर दी. व नं. ४/३ कुशलसिंह को 'सांगद' का पट्टा दिया.

नं. ४/२ राव भीमसिंह अपने पिता राव रामसिंह के देहान्त पर कोटे की गद्दी पर वैठा. उस वक्त बूंदी के रावराया बुद्धसिंह जो बहादुरशाह के पक्ष में था उसने कोटे की जागीर का फरमान अपने नाम का हासिल कर कोटे पर फौज भेजी. भीमसिंह ने यह खवर सुन कर सामना किया. कोटे से पांच कोस 'पाटन' के पास दोनों फौजों का

* इस लडाई में घाटी के रावत तेजसिंह, गागरोन के आपजी गोवर्धनसिंह, थानाहेडा के सोलंकी सुजानसिंह, नाराण के ठाकुर राजसिंह आदि कोटे के सरदार काम आये.

मुकावला हुआ उसमें राव भीमसिंह की फतह हुई, बाद भीमसिंह नें बदला लेने की गरज से जव कि महमुदशाह का अमल हुआ, तब सैयदों से फौज की मदद लेकर बूंदी सर की और बहुतसा इलाका कब्जे कर लिया, पिछे वह निजामुलमुल्क 'फतहगंज' से युद्ध करने को गया.

राव भीमसिंह बादशाही बक्षी हुसेन अलीखां का वडा मददगार व महरवानी वाला रईस था. इसको सात हजारी मन्सब और 'माहिमरातिब'[1] का खिताब देकर दिलावर अलीखां व राजा गजसिंह की मदद में पन्द्रह हजार जरीर सवारों की जमियत समेत निजाम के सामने मुकर्रर किया, और बक्षीने यह वायदा किया था कि निजाम को सजा देने बाद 'महाराजा का खिताब और जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह को बाद करते दूसरे रईसों को जो इज्जत है, उनसे ज्यादह इज्जत दिलाई जायगी, लेकिन वह हासिल करने का इसके प्रारब्ध में नहीं था जिससे वि. सं. १७७७ के जेष्ट सुदी १५ के रोज बुराहनपुर से कुछ फासलेपर निजाम की फौज के साथ युद्ध हुआ उसमें यह काम आया.

नं. ५ राव अजीतसिंह अणता की जागीरपर था, और नं. $\frac{५}{४}$ राव अर्जुनसिंह, नं. $\frac{४}{३}$ वाले राव भीमसिंह के जेष्ट पुत्र होने से कोटे की गद्दी पर बैठा, लेकिन तीन साल में ही (वि. सं. १७८० में) अपुत्रवान गुजर गया. इसने अपने पीछे अपने छोटेभाई नं. $\frac{५}{६}$ दुर्जनसाल को गद्दीपर बठलाने का कहने से वह गद्दीपर बैठा, जिससे दुर्जनसाल का वडा भाई नं $\frac{५}{८}$ श्यामसिंह, अपना हक मारा जाने से नाखुश होकर जयपुर चला गया, और वि. सं. १७८५ में जयपुर से फौज की मदद लेकर कोटे पर आया. राव दुर्जनसाल उससे युद्ध करने को सामने आया, और 'अन्नालिया' गांव के पास मुकावला हुआ जिसमें श्यामसिंह मारा गया; कुछ समय बाद राव दुर्जनसाल भी अपुत्रवान गुजर गया जिससे नं. ५ अजीतसिंह अणता वाला महाराव पद से कोटे की गद्दी पर बैठा और वि. सं. १८१५ में महाराव का देहान्त हुआ.

नं. ६ महाराव शत्रुसाल वि. सं. १८१५ में अजीतसिंह के पीछे कोटे की गद्दी पर बैठा. इसके साथ जयपुर के महाराजा माधौसिंह को विरोध हुआ, जिसका कारण यह था कि किला रणथंभोर जो बादशाह के पास था उसकी रखवाली के ताल्लुक इन्द्रगढ, खातोली, वगरेह के हाडा सरदार रणथंभोर के किलेदार की मातहती में रहकर पेशकशी देते थे, परन्तु रणथंभोर का किला जयपुर के महाराजा को सौंपा जाने पर हाडा सरदारों ने जयपुर की मातहती का स्वीकार नहीं करते कोटा के महाराव शत्रुसाल की मातहती स्वीकार ली, जिससे जयपुर वालों ने अपनी वडी फौज कोटे पर भेजी. महाराव ने उसका सामना किया और 'भाटवाडा' गांव के पास दोनो सैन्यों का मुकावला हुआ,

---

१ माहि (मछली) मरातिब (मरतबा) याने मछली के निशानवाला वडे दर्जा का मरतबा.

जिसमें जयपुर का पराजय हुआ. इस युद्ध में जयपुर की फौज के १७ हाथी, १८०० घोडे, ७३ तोपें और हाथी का पचरंगा निशान आदि असबाब कोटे वालों के कब्जे में आया था. वि. सं. १८२१ में इस महाराव का देहान्त हुआ.

नं. $\frac{६}{१}$ महाराव गुमानसिंह अपने बडे भाई (महाराव) अपुत्रवान गुजरने से गद्दी पर बैठा. इसका मुसाहिब झाला जालमसिंह हुआ. झाला का सम्बन्ध कोटा के साथ इस कारण से होना पाया जाता है कि नं. $\frac{५}{४}$ राव अर्जुनसिंह की राणी झाला माधवसिंह की बहिन थी, उस समय से झाला का ताल्लुक कोटे में बढ गया था, और नं. ६ महाराव शत्रुसाल के साथ जयपुर वालों की लडाई हुई उसमें जयपुर की मदद में मल्हाराव हुल्कर आया था, मगर झाला जालमसिंह जो चतुर और बहादुर राजपूत था, उसकी कारगुजारी से हुल्कर ने इस युद्ध में किसी का पक्ष नहीं लिया था, इस कारगुजारी के सबबसे व अ नी बहिन की शादी महाराव के साथ करने के कारण, उसको मुसाहिब पद पर नियत किया गया. कितनेक वर्ष बाद जालमसिंह पर महाराव की नाखुशी होने से वह उदयपुर चला गया. झाला जालमसिंह के अलग हो जाने से कोटा के राज्य कारोबार में अव्यवस्था हो गई जिससे महाराव ने उसको वापस बोला लिया, और अपनी वृद्धावस्था में अपने कुमार उम्मेदसिंह को उसको सौंपा. वि. सं. १८२७ में इस महाराव का देहान्त हुआ.

नं. ७ महाराव उम्मेदसिंह अपने पिता के बाद कोटे की गद्दी पर बैठा, लेकिन राज्य कारोबार की लगाम झाला जालमसिंह के हाथ में ही रही, जिससे झाला जालमसिंह का दखल दिनबदिन बहुत बढ गया. झाला का दखल बढा हुआ देखकर हाडा स्वरूपसिंह जो महाराव के नजदीक के भाइयों में था उसने जालमसिंह की मुख्तियारी में खलल डालना शुरू किया, जिससे झाला ने स्वरूपसिंह को मरवा डाला. स्वरूपसिंह को मरवाने से दूसरे हाडे सरदार नाखुश होकर कोटे से चले गये, जिस पर जालमसिंह ने उनकी जागीरें जप्त कर ली, लेकिन बाद में उनके वारिसोंको मरहठों की सिफारश से बबुलिया, खेडली आदि जागीरें दी गई.

जालमसिंह झाला कुशल मुत्सद्दी और बहादुर राजपूत था. उसने मुत्सद्दी पन से मरहठे, पठाण अमीरखां व अंग्रेजों के साथ मेलझोल रखकर कोटे की रियासत में उन लोगों के जरिये से खराबी होते न दी और मुगल सलतनत कमजोर हो जाने से उसका लाभ लेने के वास्ते महाराव के साथ रहकर केलवाडा व शाहबाद के किले वि. सं. १८४७ में ले लिये, और गागरून वगैरह परगने कोटे की रियासत में मिला लिये. वि. सं. १८६० में जब अंग्रेज व हुल्कर के दरमियान युद्ध हुआ तब इसने अंग्रेजों की सहायता की. इस युद्ध में कोटा के 'कोयला' व 'पलायता' के

सरदार जो दोनों अमरसिंह नाम के थे वे काम आये. जालमसिंह की मुसाहिबी में मेवाड के जहानपुर, सागानेर व कोटडी आदि इलाका कोटा में शामिल किया गया था, लेकिन वि. सं. १८७४ में जब कोटा की रियासत का कंपनी सरकार के साथ अहदनामा हुआ तब वह मेवाड के जिले वापस मेवाड को दिये गये. महाराव उम्मेदसिंह का देहान्त वि. सं. १८७६ में हुआ.

इसके समय का एक शिलालेख जो वि. सं. १८५३ का झालरापट्टन के स्तंभपर है उसमें महारावने कितनेक कर मुआफ करके प्रजा को पुनः अपने वतन में आवाद होने के वास्ते आमंत्रण किया है. जिसमें महाराव उम्मेदसिह के नाम के साथ इसके मुसाहिब झाला जालमसिंह व उसका पुत्र झाला माधोसिंह के नाम भी अंकित हैं, इससे पाया जाता है कि महाराव नाममात्र के कोटा के राजा थे.

नं. ८ महाराव किशोरसिंह अपने पिता के वाद कोटा की गद्दी पर बैठा, लेकिन झाला जालमसिंह के साथ इसका मेल न रहा. इसका इरादा झाला जालमसिंह को मुसाहिबी से अलग करने का था परन्तु अंग्रेज सरकार के साथ जो अहदनामा हुआ था, उसमें जालमसिंह को वंश परम्परा के मुसाहिब स्वीकार किया था, जिससे महारावकी मुराद हासिल न होने पाई, वल्कि कर्नल टॉड की सलाह से महाराव को धमकाने की गरज से जालमसिंह ने किले पर तोपों का मार चलाया जिससे (वि. सं. १८७८) महाराव बूँदी चला गया, वहां भी इसको चाहिये जैसा सहारा न मिलने के कारण देहली गया. देहली में महारावने अंग्रेज सरकार का सहारा चाहा मगर नहीं मिला, जिससे वापस 'हाडोती' तरफ आया, जहांपर करीब ३००० हाडा राजपूत इसकी मदद के वास्ते हाजिर हुए.

कोटा की रियासत के इतिहास में महाराव किशोरसिंह के राज्य अमल के जमाने का इतिहास यादगार व चिरस्थायी घटना है, जिससे इसके लिये कुछ ज्यादह हकिकत लिखी जाती है. झाला जालमसिंह महाराव के नाना होता था और झाला माधोसिंह इसके मामा होता था. जालमसिंह की पासवान का बेटा गोवर्धनदास नामक था, उसने मामा भांजा दरमियान वे दिली खडी की और महाराव को वरगलाये, इसी तरह महाराव के दूसरा भाई नं. $\frac{9}{1}$ विष्णुसिंह, झालों के साथ मिल गया, और छोटाभाई नं. $\frac{9}{2}$ पृथ्वीसिंह, महाराव के पक्ष में रहा. इसी खटपट के कारण गोवर्धनदास व पृथ्वीसिंह को महाराव के पास से निकाल देने की तजवीज हुई. महारावने वह मंजुर न रखने से किले पर झालाने तोपें चलाई, जिससे महारावने भी कोटे से चल दिया था.

हाडोती में हाडा सरदारों की जमियत इकट्ठी होजाने पर महारावने पोलिटीकल एजन्ट को अपनी शर्तें लिख भेजी, उसमें झाला माधोसिंह और नं. $\frac{9}{1}$ विष्णुसिंह, नं. $\frac{9}{2}$

पृथ्वीसिंह, इन तीनों को जागीरें देकर इलाहिदा करने का व मालिक नोकर के नांई महाराव व मुसाहिब का नाता रहकर अपनी स्वतंत्रता कायम रहे यह मुराद बताई गई, लेकिन पोलिटीकल एजंटने वे शर्तें ना मंजूर की. नतीजा यह हुआ कि महारावने अपनी स्वतंत्रता हासिल करने को एक फौज तैयार की. अंग्रेज सरकारने झाला जालमसिंह का पक्ष स्वीकार किया और एम. मिलनेकी साहब की सरदारी में दो पलटनें, छः रिसाले, व एक तोपखाना की मदद भेज दी. झाला जालमसिंह के पास रियासत का कब्जा होनेसे उसने आठ पलटनें, चौदह रिसाले व बत्तीस तोपों के साथ महाराव के सामने युद्ध करने को कूच किया. महाराव के पास सात आठ हजार राजपूतों की फौज विदून तोपखानें के थी.

दोनों तरफ की फौजों का मुकाबला वि. सं. १८७८ आश्विन शुदी ५ (ता. १-१०-१८२१ इस्वी) के रोज 'मांगरोल' गांव के पास 'काली सिन्ध नदी' पर हुआ. झाला जालमसिंह ने हाडा राजपूतों पर तोपें चलाना शुरू किया, जिसमें एक गोला महाराव के पास चाबुकसवार अलफुखां नामक था उसको लगा और वह मारा गया. खुद महाराव के जान पर खेल होता देख कर हाडे राजपूत विवश हुए और अंग्रेज सरकार ने अन्याय से मुसाहिब का पक्ष स्वीकार किया है, ऐसा मान कर 'कोयला' के राजसिंह व 'मेला' के कुंवर बलभद्रसिंह व उनके भाई दुर्जनसाल आदि सरदारों ने अंग्रेजी रिसाले पर हमला किया. हाडा सरदारों ने इस युद्ध में 'हाडा वंका राढ में' यह कवि का कथन सच्चा करके दिखाया. इन लोगों के उपर तोपों के गोले धनधनाट आ रहे थे, और राजपूत सैनिक गोलों से उड रहे थे, तब भी उन्हों ने पीछा पेर नही दिया, और अंग्रेजी फौज से हाथ मिलाकर कोयला के राजसिंह ने लेफ्टीनेन्ट क्लार्क को व कुंवर बलभद्रसिंह ने लेफ्टीनेन्ट रीड को मार दिया. ले. कर्नल, केरिन. सी. बी. भी जख्मी हुआ.

दूसरी तरफ से महाराव के भाई पृथ्वीसिंह और राजगढ के देवीसिंह ने झाला की फौज पर धावा किया. इस लडाई में वह दोनों जख्मी हुए, जिससे पृथ्वीसिंह दूसरे रोज गूजर गया. हाडा राजपूतोंने अपने मालिक के वास्ते समरांगण में कई जानें कुर्बान की, और ऐसी वीरता दिखाई की–कर्नल टॉड साहेब जो उस युद्ध प्रसंग में मौके पर विद्यमान था, उनको यह बहादुर राजपूतों की बहादुरी व स्वामीभक्ति की प्रशंसा करना ही पडा. इस युद्धमें साधन के अभाव से महाराव किशोरसिंह की मुराद हासिल नहीं हुई, जिससे वह मेदान छोड कर नाथद्वारा चला गया. महाराव के चले जाने पर युद्ध बंध हुआ, और हाडा सरदारों को मुआफि बक्षी जाने से वह अपनी २ जागीर में आबाद हो गये.

महाराव किशोरसिंह के वास्ते अखीर महाराणा भीमसिंह की शिफारिश से यह

मौजूदा महाराजा साहब कोटा.

लेफ्टन्ट कर्नल महाराव सर उम्मेदसिंह साहब बहादुर.

जी. सी. एस. आई., जी. सी. आई. ई., जी. बी. ई.

[विभाग पहिला पृष्ट ८७ नं. ११]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

ठहराव करार पाया कि उनको उदयपुर के महाराणा के जितना खर्चा की रकम कोटा रियासत के खजीने में से मिला करे, उसमें झाला जालमसिंह दखल करने न पावे, और रियासत के इन्तजाम में महाराव दखल न करें. यह शर्त होने वाद वि. सं. १८७८ पोष वदि ९ के रोज महाराव पोलिटीकल एजंट के साथ कोटे गये. वि. सं. १८८० में झाला जालमसिह का देहान्त हुआ और उसकी जगह उसके पुत्र झाला माधौसिंह मुसाहिव हुआ. वि. सं. १८८४ में महाराव किशोरसिंह देवलोक हुए. इसको पुत्र न होने से इसने अपने पीछे अपने छोटा भाई पृथ्वीसिंह के कुमार नं. ९ रामसिंह को युवराज ठहराया था.

नं. $\frac{८}{१}$ विष्णुसिंह—महाराव किशोरसिंह के पीछे गद्दी के हकदार था, लेकिन नं. ९ रामसिह (जो नं. $\frac{८}{२}$ पृथ्वीसिंह लडाई में काम आया था उसका कुमार) को युवराज मुकरर करने से और मुसाहिव झाला माधौसिंहने भी इसका पक्ष छोड देनेसे इसको गद्दी नही मिली.

नं. ९ महाराव रामसिंह, महाराव किशोरसिंह के पीछे गद्दी पर वैठा. वि. सं. १८९० में झाला माधौसिंह गुजर गया और उसका पुत्र मदनसिंह झाला मुसाहिव बना. मदनसिंह खुद रईस के मुआफिक अखत्यार चलाने लगा, जिससे महाराव के साथ उसका विरोध वढ गया. यह विरोध यहां तक वढने पाया कि फ़साद न होने पावे उसके वास्ते अंग्रेज सरकारने वीच में पड कर झाला मदनसिंह को वारह लाख रूपिये की पेदायश का इलाहिदा इलाका देकर राजा वनाकर कोटा से अलग कर दिया. तव से राजपूताना में झालावाड का नया राज कायम हुआ. महाराव रामसिंह वि. सं. १९२३ में देवलोक हुए, इसकी राणी ' फ़ूलकुंवर ' उदयपुर के महाराणा सरदारसिंह की पुत्री थी.

नं. १० महाराव शत्रुसाल के वक्त में राज के इन्तजाम में वहुत वे वंदोवस्ती होगई, वल्कि "कोटा के वावन हुकम" यह कहावत मशहूर हुई. रियासत करजदार हो गई और करजे की वसूली के वास्ते साहुकारों को इलाका सोंपा गया. इस हालत में व्रिटीश सरकार की तरफ से रियासत का इन्तजाम सुधारने की सलाह देने में आई, जिस पर वि. सं. १९३० में महाराव शत्रुसाल ने अपनी रियासत, वास्ते करने प्रवंध अंग्रेज सरकार को सुप्रद करना स्वीकार किया व उसके वास्ते जयपुर के मुसाहिव नवाव फैजअलीखां साहव सी. एस. आई. को व्रिटीश सरकार ने मुकरर करने से उसने राज प्रवंध अपने हाथ में लिया. महाराव शत्रुसाल का देहान्त होने वाद वह अपुत्रवान् होने के कारण इनके पीछे कोटडी के महाराव छगनसिंह के पुत्र उम्मेदसिंह वि. सं. १९५० में गद्दी पर आया.

नं. ११ महाराव उम्मेदसिंह गद्दी पर आये तव वारह साल की उम्र में थे. इसने

मेओकॉलेज में विद्याभ्यास किया और बाद में फौजी तालीम पाई, जिससे 'लेफ्टन्ट कर्नल' का फौजी दर्जा हासिल है. गद्दी पर आने बाद राज का अच्छा प्रबंध करने की कदर में ब्रिटीश सरकारने महाराव को जी. सी. एस. आई, जी. सी. आई. ई. और जी. बी. ई. के बडे दर्जे के खिताब इनायत किये है. वि. सं. १९५६ सन १८९९ इस्वी में मरहूम झाला मदनसिंह को कोटा रियासत सें जो बारहलाख की आमदनी के परगने रियासत कोटा से देकर झालावाड की अलग रियासत मुकरर की गई थी वह कुल परगने (१ चेचट, २ सुकेत, ३ अकलेरा, ४ बकानी, ५ छीपाबडोद, ६ मनोरथाणा,) वापस कोटा रियासत को मिल गये, बल्कि झाला का पाटनगर जो 'झालरापाटण' नाम से मशहूर है वह भी वापस आने काबिल था, मगर उसकी एवज में किला शाहाबाद मय शाहाबाद परगने के (जो झालावाड की रियासत कायम होने बाद झाला रईस ने अपने तोर से प्राप्त किये थे वे) रियासत कोटा में लिये गये, जिससे पट्टण झालावाड के तरफ रहा.

सन १९१२ इस्वी में महाराणी क्वीन मेरी ने महाराव की महमानगिरी स्वीकार किया और सरभरा महमानगिरी से वह संतुष्ट हुई थी. इस महाराव के दिवान बहादुर चौबे सर रूघनाथ सी. आई. ई. के. टी. महाराव साहब गद्दी पर बिराजमान होते ही दिवान पद पर आये थे जो अपना देहान्त पर्यंत उसी पद पर कायम रहे और देहान्त होने बाद, उसके पुत्र राव बहादुर वीसंभरनाथ व पलायता के आपजी उँकारसिंह, सी. आई. ई. यह दोनो वि. सं. १९८० से दिवान पद के काम भुगताते हैं.

नोट—कोटा के हाडा चौहानों का इतिहास कविराज सामलदान कृत 'वीरविनोद' नाम की हस्तलिखित पुस्तक जो कविराज आढा शंकरदान पांचेटिया वाले की तरफ से प्राप्त हुई थी, उस परसे लिखा गया है.

प्रकरण १२ वाँ.

खीची चौहान व उनका ऐतिहासिक साहित्य.

खीची चौहान की शाखा, नाडोल के राव लाखणसिंह की ओलाद में अश्वराज के पुत्र माणकराज से कहलाई गई, और उसके पुत्र 'अजयराव' से खीची चौहानों की शाखा विभक्त हुई, ऐसा इस पुस्तक के प्रकरण ९ वां में पृष्ट ५२ पर अंकित किया गया है, लेकिन वर्तमान समय में खीची चौहानों की जो तीन वडी (तोपों की सलामी वाली) रियासतें मालवे में (खीलचीपुर) व गुजरात में (छोटाउदयपुर और देवगढ वारीया.) विद्यमान है, उन रियासतों की ख्यातों में उनकी शाखा 'खीची चौहान' होना स्वीकार हुआ है, परन्तु उनमें नाडोल के वदले सांभर के चौहानों में से खीची खाखा अलग होने का उल्लेख है, वल्कि गुजरात के खीची चौहानों की ख्यात में वे देहली के महान् पृथ्वीराज के उत्तरोत्तर वंशज होने का लिखा है. जो कि इतिहास वेत्ताओं ने स्वीकार किये हुए ऐतिहासिक साहित्यानुसार इस ग्रंथ के वास्ते खीची चौहानों की शाखा नाडोल से ही अलग होने का मान्य रखा गया है, तव भी इन रियासतों की ख्यातों से खीचो चौहानों के इतिहास में कितना फर्क है वह मालूम करने के लिये इस प्रकरण में उन ख्यातों का सार अंकित किया गया है.

(अ) खीची चौहानों का मूल पुरूष.

खीची चौहानों का मूल पुरूप कौन था, उस विषय में गुजरात के खीची चौहानों का इतिहास जो रेवाकांठा डायरेकटरी आदि छपी हुई पुस्तकों में मिलता है, उनमें खुलासा नहीं किया गया है, परन्तु मालवे के खीची चौहानों के विषय में 'भारत राजमंडल' (जो गुजराती भाषा में वडोदे के मौजूदा दिवान साहव सर मनुभाई नंदशंकर महता ने प्रसिद्ध किया है.) नामक पुस्तक में व खीलचीपुर रियासत की तरफ से (राजगुरू पंडित कृष्णदास की लिखी हुई ख्यात खीलचीपुर के दिवान, साहिबजादाए अजीजुर रहीमखां साहिव के तरफ से इस पुस्तक के कितनेक प्रकरण छपजाने वाद) हस्त लिखित ख्यात मिली है उसमें सांभर के +विशलदेव के पुत्र अजयराव से खीची शाखा कहलाना लिखा है.

+ खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात में सांभर के विशलदेव के चौवीस पुत्रों से चौहानों में चौवीस शाखाएं होने का अंकित हुआ है, जिसमें १ अजयराय से 'खीची' (गायलगढ) २ अनुराग से 'हाडा' ३ अनहदेव से 'रणथंभोर के चौहान' ४ देवीसिंह से 'देवडा' (सिरोही) ५ सोनसिंह से 'सोनगरा' (जालोर) ६ हरिसिंह से 'हरेला उर्फ नगहरिया' ७ नैनसिंह से 'नरवाण' (नागोर) ८ फतेसिंह से 'पपैया' (फतहपुर) ९ सूपकरण 'समरेचा' (सांभर) १० मालसिंह से 'मालचा' (चोटीलगढ) ११ भीमसिंह से 'भीमडा' (रूपनगर) १२ यशवन्तसिंह से 'सांचौरा' (सांचौर)

मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि नाडोल के राव लाखणसी से आठवी पुश्त पर माणकराज हुआ जो 'खीची' कहलाया, और उसके पुत्र अजयराज से खीची चौहान की शाखा अलग हुई.

तात्पर्य यह है कि अजयराव नामक चौहान खीची चौहानों की शाखा का मूल पुरूष है यह बात सर्व मान्य है.

(क) ' खीची ' कहलाने का कारण.

राजपूतों में बहुधा शाखा का नाम गांव के नाम से या नामी पुरुष के नाम से प्रसिद्धि में आता है. ' खीची चौहानों ' के वास्ते गुजरात के खीची चौहानों की ख्यात (रेवाकांठा डायरेकटरी में) में लिखा है कि ' सांभर ' के माणकराय के वंशज सिंध के खीचपुर पाट्टन में गये. वैसे ' भारत राजमंडल ' नामक ग्रंथ में लिखा है कि अजेराव ने खीलचीपुर बसाया जिससे खीची चौहान कहलाये गये. खीलचीपुर रियासत से मिली हुई ख्यात में लिखा हैं कि अजयराव ने सोने चांदी की खीचडी करके बांटी जिससे इसके वंश वालों का 'खीची' नाम पड़ा. मूता नेणसी की ख्यात में ' खीची ' कहलाने का यह कारण बताया है कि ' नाडोल ' के राव आसराव (अश्वराज) ने अपने पुत्र माणकराज को कहा कि एक दिन में सूर्योदय से सूर्यास्त तक में तू जितनी भूमी में फिर कर आवेगा वह तेरेको दी जायगी. जिस पर माणकराज सूर्योदय होते ही सवार हुआ और नागोर पट्टी के ८४ गांवों की सीम में होता हुआ भदाण होकर जायल पहुचा, वहां पर रास्ते में ' गवार ' लोगों का डेरा पडा था उन्हों ने इसको भोजन के वास्ते आग्रह किया. जिस पर जल्दि के कारण माणकराज ने कहा कि अन्न पकाने की जरूरत नहीं है जो हांवे सो दे दो. उस पर उन्हों ने चावल व मुग की दाल की खीचडी दी जो उसने कच्ची (वगैर पकाई) सवार की हालत में ही खा ली. यह बात आसराव को मालूम होने पर उसने माणकराज को कच्ची खीचडी खाने के कारण ' खीची ' का उपनाम दिया, जिससे इसकी ओलाद वाले ' खीची चौहान ' कहलाये गये.

मूता नेणसी का लिखना दूसरी ख्यातों के मुकाबले में ज्यादह मानने योग्य है, क्यों कि अजयराव का राज्य राजपूताना की नागोर पट्टी में भदाण व जायल में था.

---

१३ बलभद्र से 'बालचा' (मणाय) १४ मानसिंह से 'मादलेचा' (मुकुंदगढ) १५ बीकाजी से 'बाकेटा' (बीकानेर) १६ वाघसिंह से ' वागौर ' (देवगांम) १७ प्रेमसिंह से ' पावच ' (बांदनवाड) १८ कानसिंह से ' कठारा ' (मारवाड) १९ उदयसिंह से ' उदरेचा ' (उदयापुर) २० रणधीरसिंह से ' मदोरा ' (भिण्ड-भदावर.) २१ परशुरामसिंह से ' समपेठा (रत्नपुर) २२ गुलजी से ' गोडवाल ' (जहाजनगर) २३ गेहराज से ' गेहरा ' (भटनावर) २४ वा का नाम नहीं है.

नोट—इन शाखों से इस पुस्तक के पृष्ट १६ पर जो ११५ शाखाओं के नाम अंकित हुए हैं उसमें १ नगहारिया, २ मालचा, ३ भीमडा व ४ कठारा इन च्यार शाखों का अजाफा होता है.

खीलचीपुर उसने बसाया नहीं था न खीलचीपुर से उसका कोई ताल्लुक उस समय में था. बल्कि खीची चौहानों को मालवे में जाने का प्रसंग अजयराव से कितनीक पुश्तों बाद उपस्थित होना खीलचीपुर रियासत की व मूता नेणसी की ख्यात से मालूम होता है, और 'उग्रसेन' नामक पुरूष ने खीलचीपुर में राज्य स्थापन करने का हरएक ख्यातो में स्वीकार हुआ है.

तात्पर्य यह है कि अजयराव के पिता माणकराज ने कची खीचडी खाने के कारण उसकी ओलाद वाले 'खीची चौहान' कहलाये गये हैं.

(क) खीची चौहानों का गढ गागरून (मालवे) पर कब्जा.

वर्तमान समय में खीची चौहानों की जो तीन वडी रियासतें विद्यमान है, वे तीनों रियासतें गढ गागरून के खीची चौहानों की ओलाद वालों में होना *हरएक ख्यातों में स्वीकार हुआ है. अजयराव के तरफ भदाण व जायल (राजपूताना में) था. बाद में उसकी ओलाद वालों ने गढ गागरून में कब राज्य स्थापन किया और किसने किया ? इस विषय में कुछ मत भेद है. गुजरात के खीची चौहानों की ख्यात में इस विषय में कुछ भी खुलासा नहीं है, लेकिन भारतराजमंडल नामक ग्रंथ में लिखा है कि अजयराव से +३२ वीं पुश्त पर 'गेसिह' नामक पुरूष हुआ, उसके पोता 'देवनसिंह' ने मालवे में धुलरगढ के राजा विजलदेव को मार कर वि. सं. १२५१ में धुलरगढ कब्जे किया और उसका नाम 'गागरून' दिया गया.

खीलचीपुर रियासत से मिली हुई ख्यात में अजयराव से ÷७ वी पुश्त पर गोहनराय

---

* गुजरात के खीची चौहानों के विषय में लिखा है कि सांभर के माणकराज के वंशज सिंध में 'खीचपुर पाट्टन' में गये जिनके वंशमें धर्मगज उर्फ बिरबिनदेव हुआ, उससे क्रमशः २ विशल, ३ सारंगदेव, ४ आना, ५ जयपाल, ६ आनंददेव, ७ सोमेश्वर व ८ पृथुराज हुए. पृथुराज के वंशज मालवे में गये जहां खेंगारसिंह नामक पुरुषने गढ गागरूनमें राज्य स्थापित किया. खेंगारसिंह की ओलाद में रणथंभोर का हमीर (हमीरहठाला) हुआ. उसकी ओलाद में पालनदे व प्रताप नामक भाईओंने गुजरात में जाकर 'चांपानेर' व 'कारवण' में राज्य स्थापित किया. मतलब यह है कि उक्त ख्यात से खीची चौहानों का राज्य प्रथम सिंध में खीचपुर पाट्टन व बाद में क्रमशः सांभर, अजमेर, देहली, गढ गागरून और वहां से रणथंभोर व चांपानेर में हुआ है. चांपानेर वालों की ओलाद में वर्तमान समय में छोटाउदयपुर व बारीया की रियासतों के खीची चौहान है.

+ भारत राजमंडल के ग्रंथ में अजेराव से क्रमश–२ दुलेराय, ३ गौतमराय, ४ रामदत्त, ५ मानराव, ६ मुकंदराव, ७ सोमेश्वर, ८ लखणसी, ९ लालसिंह, १० मोमचंदराय, ११ सूरसेन, १२ मोहोबतराय, १३ कांधाकराय, १४ मांणराव, १५ लुणकरण, १६ रामराव, १७ बुद्धसेन, १८ सुन्दरसेन; १९ कल्याणराव, २० बालनराव, २१ इन्द्रराव, २२ सग्रामराव, २३ बंगराव, व २४ जोधाजी हुए. जोधाजीने मातुल नगर बसाया, उनके पीछे क्रमशः २५ हरिसिंह, २६ चौंडराय, २७ धुंपालराय, २८ रहीहरराय, २९ मालराय, ३० रंगराय, ३१ महेपाल व ३२ गेसिंह हुए. गेसिंह का पुत्र नं. ३३ वरसिंहराय महान पृथ्वीराज की सहायता मे मारा गया व उसका भाई – बेलमंजु का पुत्र नं. ३४ देवनसिंह ने धुलरगढ के राजा विजलदेव को मारकर वि. सं. १२५१ में धुलरगढ कब्जे किया और उसका नाम गढ गागरून दिया गया.

÷ खीलचीपुर रियासत से मिली हुई ख्यात में अजयराज से क्रमशः २ आसाराव, ३ जोधचंद, ४ प्रीतिपाल, ५ उग्रपाल

ई. सं. ११३८ (वि. सं. ११७५) में हुआ जिसने राजधरना शुरू किया. इस गोहनराय से १४ वीं पुश्त पर देवनसिंह हुआ, उसने 'ढोलनगढ' (गागरून) के राजा बिजलसिंह को मार कर गागरून का राज्य ई. सं. १२५० (वि. सं. १३०७) में स्थापित किया ऐसा उल्लेख किया है.

मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि अजयराव से *६ वी पुश्त पर गुंदलराव हुआ, जो महान् पृथ्वीराज का सामन्त था और जायल में रहता था, लेकिन किसी कारण से पृथ्वीराज नाखुश होने से चामुंडराय दाहिमा को फौज देकर जायलगढ पर भेजा, जिससे गुंदलराव भाग कर मालवे में चला गया, वहां पर डोडियाल राजपूतों के बारहगढ थे वे उनको मार कर ले लिये, उनमें गढ गागरून भी शामिल होना अंकित हुआ है, लेकिन डोडियाल राजपूतों के हाथ से उनका राज्य लेने के विषय में उक्त ख्यात में पीछे से जो अहवाल दर्ज हुआ है उससे पाया जाता है कि गुंदलराव के पोतों में 'धारू' आनलोत नामक पुरूष हुआ वह बहुत ही बहादुर व दातार था. धारू अपने मामा डोडियाल राजपूतों की सेवा में उपस्थित था. उसके कब्जे में वह भूमि आई. अनुमान होता है कि गेसिंह, गोहनसिंह व गुंदलराव यह तीनों नाम जो अलग २ ख्यातों में उपलब्ध हुए है वह एक ही पुरूष के नाम है और इसी पुरूष का पोता देवनसिंह उर्फ धारू हुआ है, जिसने बिजलसिंह को मार कर गढ गागरून का राज्य स्थापित किया है.

(ड) गढ गागरून में राज्य स्थापन होने का समय.

देवनसिंह उर्फ धारू ने गागरून में किस समय में राज्य स्थापन किया उस विषय में भी मतभेद है. भारत राजमंडल की पुस्तक में यह घटना वि. सं. १२५१ में होने का उल्लेख किया है, जब खीलचीपुर की हस्तलिखित ख्यात में गागरून में राज्य स्थापन होने का समय ई. स. १२५० (वि. सं. १३०६) अंकित है. मूता नेणसी की ख्यात में समय के वास्ते खुलासा नहीं किया गया है परन्तु गुंदलराय, महान् पृथ्वीराज के समय में

६ प्रतापपाल, ७ गोहनराय, ८ संग्रामराय, ९ सालमराव, १० सेडूजी, ११ श्यामराव, १२ संग्रामसिंह, १३ निहन्नराय १४ पीलुपंजर, १५ पाल्हनसिंह, १६ प्रसंगदेव, व १७ करमसिंह, १८ बालनराव, १९ विनयराव, २० मलयसिंह हुए. मल्यसिंहने विलासपुर बसाया. ई. स. १२१५ में नं. १९ विनयराव का छोटा भाई १९ नियमसिंह के पुत्र गंगासिंहने बूंदी के आसपास का देश जीतकर वहां राज्य किया, उसके वंशज 'पहाडी खीची' के नामसे प्रसिद्ध है, वैसे नं. २० मल्यसिंह का छोटा भाई कालुसिंहने 'जुदाहेटीया' नगर में राज्य किया और अपने नामसे 'कालुहेडा' और 'कोटडा' नाम के गांव बसाये. मल्यसिंह का पुत्र २१ सामन्तसिंह व सामन्तसिंह के च्यार पुत्रो में बडा पुत्र नं. २२ देवनसिंह हुआ.

* मूता नेणसी की ख्यात में अजयराज से क्रमशः २ चंद्रराव, ३ लखणराव, ४ गोविंदराव, ५ संगमराव, व संगमराव का पुत्र ६ गुंदलराव हुआ.

नोट—वंश भास्कर के ग्रंथ में लिखा है कि वि. सं. १२९८ में 'गंगदेव' नाम का खीची चौहान गढगागरून में विद्यमान था.

विद्यमान था और उसके पोता धारू ने डोडियाल राजपूतों का राज्य कब्जे किया वैसा लिखा है. जिससे खीलचीपुर की ख्यात में जो वि. सं. १३०६ दर्ज हुआ है उस समय के करीब २ राज्य स्थापन होना सम्भव है.

भारत राजमंडल के ग्रंथ में जो संवत् अंकित हुआ है उसमें शंका लाने का यह भी कारण है कि गेसिंह का बडा पुत्र वरसिंहराय पृथ्वीराज की सहायता में मारे जाने का उक्त ग्रंथ में लिखा गया है, साथ यह भी लिखा है कि गेसिंह का पोता देवनसिंह को महान् पृथ्वीराज ने ५२ परगने दिये थे. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि गुंदलराय मालवे में भाग गया, बाद 'आंना' नामक खीची के साथ सांखला 'सिहड' नाम के राजपूत ने अपनी 'पांगली' पुत्री बीहाई, उस समय में दुष्काल पडनेसे वह डोडवाडे जाता था, तब उसकी 'पांगली स्त्री सांखली' के पूरे मास का गर्भ हो गया था, जिससे जब आना ख ची कोटा परगने का गांव 'सूरसेन गुढा' में पहुंचा तब उसकी गर्भवती स्त्री को कष्ट होने लगा इस कारण वहां पर एक पुराना मंदिर था वहां उसको रखी गई. जहां 'धारू' नामक पुत्र का जन्म हुआ. इससे अनुमान होता ह कि देवनसिंह उर्फ धारू महान् पृथ्वीराज के समय में विद्यमान नहीं था.

खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात में लिखा है कि जब कि ई. सं. ११९२ (वि. सं. १२४९)में महान् पृथ्वीराज का पराजय हुआ तब करमसिंह नामक खीची चौहान उसकी सहायता में था, और बाद में करमसिंह ने जायल छोड के बूंदी के पास खटकड नगर के तिगाला जाति के राजपूतों को मार कर वह देश कब्जे किया और खटकड का नाम 'रामगढ' देकर रामगढ में राज्य स्थापन किया. इस करमसिंह से ५ वी पुश्त पर देवनसिंह हुआ. जो कि यह पांच पुश्तों में करिब ५८ वर्ष का समय होता है और वह बहुत कम है, लेकिन महान् पृथ्वीराज के समय में देवनसिंह न होने का इस पर से भी अनुमान होता है.

उपर्युक्त कारणो से गागरून में खीची चौहानों का राज्य स्थापन होने का समय वि. सं. १३०६ का होना ज्यादह भरोसा पात्र है.

नोट—खीची धारू विक्रम संवत् की चौदहवी सदी की शुरूआत में हुआ था, इस विषय में मूता नेणसी की ख्यात में सांगमराव राठौर की ख्यात लिखी है उसमें लिखा है कि सांगमराव के पुत्र राठौर मूलु ने गुजरात के राजा सोलंकी (वाघेला) विशलदेव को अपने पिता का वैर लेने के कारण तंग कर रखा था, उस समय खीची धारू आनलोत का आश्रित 'विसौढा' नामका चारण विशलदेव सोलंकी के पास गया. विशलदेव ने चारण के साथ चौपट खेलने में पहिली दफे यह शर्त की थी कि चारण हार जावे तो मूलु राठौर को नजर से दिखलावे, और दूसरी दफे यह शर्त की थी कि मूलु राठौर को विशलदेव के महल में ले आवे. धारू खीची का विसौढा चारण दोनों दफे हार गया और उसने उदार व बहादुर मूलु राठौर को याचना करके अपनी शर्तें पुरी की. इस विशलदेव का राज्य अमल वि. सं. १३०२ से वि. सं. १३२० तक का होना 'प्रवचन परिक्षा' नामकी पुस्तक में लिखा हुआ है.

खीची चौहानों के मूल पुरुष अजयराव से गागरून में राज्य स्थापन करने वाला देवनसिंह या धारू नामक पुरुष तक का वंशवृक्ष बनाने में बहुत मुश्किली आती है क्यों कि 'भारत राजमंडल' के ग्रंथानुसार अजयराव से देवनसिंह तक में ३४ पुश्तें होती है. खीलचीपुर रयासत की ख्यात मुआफिक २२ पुश्तें, और मूता नेणसी की ख्यात से ८ पुश्तें होना पाया जाता है. यह तीनों ख्यातों से उपलब्ध होते नामों का मुकाबला करते मूता नेणसी की ख्यात से उपलब्ध होते नामों के साथ भारत राजमंडल के सिर्फ ४ नाम मिलते है, और खीलचीपुर की ख्यात के सिर्फ २ नाम मिलते है.

खीलचीपुर रियासत की हस्तलिखित ख्यात में अजयराव से देवनसिंह तक में (२२ पुश्तों में) २११ वर्षों का अन्तर बताया है, लेकिन उसमें अजयराव का समय ई. सं. १०४८ (वि. सं. ११०४) का होना अंकित किया है वह* विश्वास पात्र नहीं है.

अजयराव के बाद देवनसिंह या धारू तक में उपर्युक्त तीनों ख्यातों में जो जो नाम उपलब्ध होते हैं वह इस प्रकरण के पृष्ठ ९१ व ९२ की टिप्पणी में दिये गये हैं. ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करते अजयराव का पिता माणकराज वि. सं. ११७२में विद्यमान था, क्योंकि माणकराज का पिता अश्वराज के समय का वि. सं. ११७२ का शिलालेख 'वाली' गांव में होना मालूम हुआ है. (देखो इस पुस्तक के पृष्ठ ५६ पर) इस हिसाब से भी धारू खीची के समय तक में (१३६ वर्षों में) ८ पुश्तें होती है, जिससे अनुमान होता है कि मूता नेणसी की ख्यात से अजयराव के बाद जो नाम उपलब्ध होते हैं वह ठीक है, परन्तु इसका अखिरी निर्णय करने के वास्ते विद्वान व इतिहास वेत्ताओं के तरफ छोडकर खीची देवनसिंह ने वि. सं. १३०६ में गढ गागरून का राज्य स्थापन किया वहां तक में जो जो खीची चौहाना का इतिहास मिला है वह अंकित किया गया है.

वंशवृक्ष खीची चौहान.

१ अजयराव (देखो इस पुस्तक के पृष्ठ ५२ पर नाडोल के चौहानों के वंशवृक्ष में नं. ९/६ वाला)
|
इससे कितनीक पुश्त पर गोहनराय, गेसिंह या गुंदलराय हुआ जिसका राज्य जायल में.
|
२ गुंदलराय उर्फ गेसिंह (इसका पोता देवनसिंह या धारू हुआ)

---

* खीलचीपुर से मिली हुई ख्यात में अजयराव का पिता विशलदेव का समय ई. स. १०२० (वि. सं. १०७६) व विशलदेव के पिता धर्मागत का समय ई. स. ९६७ (वि. सं. १०२३) होना बताया है, लेकिन चौहानों की ख्यात के वास्ते हर्ष का वि. सं १०२६ का शिलालेख जो सांभर के विग्रहराज के समय में लिखा गया है उसकी नामावली के साथ इस ख्यात के कोई भी नाम व संवत् मिलते नहीं है. उसी मुआफिक वि. सं. १२२६ का बिजोलिया के शिलालेख के नामों से भी इस ख्यात के अजयराव के पहिले के राजाओं के नाम मिलते नहीं है. जिससे वंशभास्कर, बडुआ की पुस्तक आदि पुस्तकों में राज्यस्थान कायम होने के पहिले की प्राचीन नामावली, दंतकथा या कल्पना से अंकित की गई है वैसा इस ख्यात म भी होना पाया जाता है. इसी कारण से खीची चौहानों की ख्यात से 'चाहमान' से लगाकर विशलदेव तक का प्राचीन इतिहास उपलब्द हुआ है वह इस प्रकरण में नहीं लिखा गया है.

२ गुंदलराय उर्फ गेसिंह (वंशवृक्ष खीची चौहान वल्लू)

३ वेलमंजु या आना (आंनलदेव) अथवा सामन्तसिंह

४ देवनसिंह या धारू — ४ रत्नसिंह — ४ कमलसिंह — ४ नयनसिंह

उपर्युक्त नामों वाले खीची चौहानों के समय की ख्यात.

नं. १ अजयराज के तरफ नागोर पट्टी के ८४ गांव व भदाण और जायल नाम के दो किले थे.

नं. २ गुंदलराय उर्फ गेसिंह के वास्ते मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि महान् पृथ्वीराज को राणी 'सुंहवदेवी' जोयाणी रूसणा करके अपने पिता के वहां चली गई थी और वहां 'खाटुरी' नामकी पहाडी पर मालिया बांध कर रहती थी. उसके पास गुंदलराय खीची आता जाता था. जो वात पृथ्वीराज को मालूम होने पर उसने गुंदलराय को जायल से भगाया. जिससे गुंदलराय मालवे में गया, और वहां के डोडियाल राजपूतों से १ मऊ, २ मेदानो, ३ गागरून, ४ वाला भेट, ५ सारंगपुर, ६ गुंगोर, ७ वार, ८ वडोद ९ खाता खेडी, १० रामगढ, ११ चाचरणी आदि वारह गढ छीन कर जायल में राज्यस्थान किया. इस तरह होनेसे भदाणगढ में राव गालण मालिक हुआ, जिसने नागोर में गोदाणी तलाव कराया. (राव गालण की ओलाद मारवाड में रही जिन्होंने राठौरों की सेवा में उपस्थित रह कर वहुत काम दिया. वर्तमान समय में उनकी ओलाद वाले जोधपुर रियासत में विद्यमान है.)

गीदा उर्फ गुंदलराय पहिले 'भदाणीया' कहलाता था और पीछे से 'जायलवाल' कहलाया गया, इस विषय में उक्त पुस्तक में आधा दोहा उपलब्ध होता है उसमें लिखा है कि—

" गीदा हुता भदाणिया, कूं गै जायल वाल. "

गीदा वहुत वहादुर राजपूत था इसके विषय में कवि ने कहा है कि—

' खंडपुर गल खल भलते कोट मर वटां टलके, देरावर डिगमिगे लसें वरी हा हा संके "
" लद्रुवो थर थर छैलपुर नह संगठे, श्रुटां अनै भाटीयां सास नी वट नीवटै "
" वीक्रमपुर वसै न वार ही धुजै धर पाटण पडै, गीदो रोद्र भदाणीयौ धाये सो मेई धडै "

गीदा के तरफ पश्चिम में ८४ गढ (गांव) थे. इसका एक पुत्र 'महंगराव' नामक था वह भी वहादुर था, उसके विषय में कवि ने कहा है कि—

" आखंडीया रतनालीयां मूंछ अवंदा फेर, तीण भण कांपै गजणो आ-गीदाणी केर "

'भारत राजमंडल' के ग्रंथ म लिखा है कि गेसिंह का बडा पुत्र ÷वरसिंहराय महान् पृथ्वीराज की सहायता में काम आया, और दूसरा वेलमंजु था जिसका पुत्र देवनसिंह हुआ.

खीलचीपुर की* ख्यात में गोहनराय के विषय में इतनाही लिखा है कि ई. सं. १११८ (वि. सं. ११७४) में इसने राजधरना शुरू किया. नं. ३ वेलमंजु के विषय में भारत राजमंडल के ग्रंथ में लिखा है कि इसके गंगाबाई व जमनाबाई नामकी दो पुत्री थी. जिसमें गंगाबाई का विवाह धुलरगढ के राजा विजलदेव के साथ हुआ था.

मूता नेणसी की ख्यात में इस विषय में कुछ खुलासा नहीं है, परन्तु खीलचीपुर रियासत की हस्तलिखित ख्यात में लिखा है कि देवनसिंह के पिता सामन्तसिंह के १ देवनसिंह २ रत्नसिंह ३ +कमलसिंह व ४ नयनसिंह नाम के च्यार पुत्र और गंगाकुमारी नामकी पुत्री थी जिसका विवाह 'ढोलनगढ' के विजलसिंह के साथ हुआ था.

÷ वरसिंहराय का दूसरा नाम महंगराव होतो ताज्जुब नहीं, क्यों कि महंगराव से गिजनी का बादशाह डरता था ऐसा उपरोक्त दोहे से पाया जाता है.

* इस ख्यात में लिखा है कि गोहनराय के समय में महमुद गजनवी ने लूट मार की. इसके समय में बंगाल में सुखसेन, गुजरात में सिद्धसेन, कनौज में मदनपाल व चितौड म विजयसिंह नामक राजा थे.

उक्त ख्यात में यह भी लिखा है कि गोहनराय से ६ वी पुश्तपर जिहजराय नामक राजा हुआ उसने जोधपुर के राठौर पाबुजी को मारा. उसका कारण यह बताया है कि जिहजराय ने २००००० रूपियों में १००० घोडे एक चारण से मोल लिये थे वे घोडे लेकर चारण जायल को जा रहा था, उसको पाबुजी ने घोडे ले लेने वास्ते रोका जिससे जिहजराय ने उसपर चढाई की और युद्ध में पाबुजी मारा गया. लेकिन मूता नेणसी की ख्यात में पाबु नहीं परन्तु पाबु नामका राठौर जो सिंहा राठौर के पौत्र धांधल का पुत्र था, उसको 'जीदराव' नामके खीची चौहान ने मारने की ख्यात विस्तार से लिखी है, जिसमें यह उल्लेख किया गया है कि जीदराव पाबु का बहिनोई होता था. एक काछेला चारण के पास 'कालवी' नामकी देवांशी घोडी थी वह जीदराव ने चारण के पास मांगी मगर चारण ने उसको न देते पाबु राठौर को दी, जिससे जीदराव ने उस चारण की गौएं घेर ली. उस समय पाबु शादी करने को गया था, जिससे चारण की स्त्री 'बिरवडी' ने पाबु के बडे भाई 'बुडा' क आगे पुकार की, इतने में पाबु भी आ पहुंचा. चारणी की पुकार सुनकर पाबु ने उसकी सहायता की और गौए छुडाई, लेकिन पाबु के आने पहिले 'बिरवडी' चारणी की छोटी बहिन ने राठौर बुडा क पास जाकर कहा कि पाबु काम आया, जिससे बुडा राठौर ने खीची जीदराव पर चढाई की जिसम बुडा काम आया. यह सुनकर पाबु भी लडने को गया, और वह (पाबु) भी मारा गया.

इस ख्यात (मू. ने. ख्या.) में यह भी लिखा है कि बुडा की गर्भवती राणी 'डोड गहेली' अपने पति के पीछे सती होने लगी परन्तु उसके सात महिनों का गर्भ था. जिससे लोगों ने उसको सती होने क लिये मना करने पर उसने अपना पेट छुरी से फाडकर गर्भ को निकाल दिया. वह गर्भ पुत्र का था और उसका नाम 'झरडा' रखा गया. झरडा ने बारह साल की उम्र में अपने पिता का वैर लिया. यानी जीदराव खीची को मार डाला.

+ सामन्तसिंह के पुत्र कमलसिंह के विषय में खीलचीपुर की ख्यात में लिखा ह कि इसने अपने बडे भाई देवनसिंह जो जायल में राज्य करता था उसकी सहायता करके राज्य की सिमा बहुत बढाई थी और देहली के बादशाह महमुद गोरी से बहुत युद्ध किये थे. दूसरे पुत्र नयनसिंह ने नेपाल में बहुत युद्ध किये.

नं. ४ देवनसिंह या धारू ने गागरून में अपना राज्यस्थान किया. इसने गांगरून कब्जे करने के विषय में भारत राजमंडल नामक ग्रंथ में लिखा है कि इसको पृथ्वीराज ने ५२ परगने दिये थे. इसके वहिनोई धुलरगढ के राजा विजलदेव थ उसके कामदार गंगदास वडगुज्जर के साथ देवनसिंह को विरोध होनेसे इसन धुलरगढ पर चढाई की, इस युद्ध में विजलदेव तथा गंगदास मारे गये, देवनसिंह की वहिन गंगावाई सती हुई, उस समय से धुलरगढ का नाम गागरून पडा. यह घटना वि. सं. १२५१ में हुई. उक्त पुस्तक में यह भी उल्लेख किया है कि देवनसिंह ने वि. सं. १२६२ में सुलतान कुतवुद्दीन की मातहती स्वीकार ली, और वि. सं. १२६६ में इसको 'हजारी की पदवी' के साथ 'माहि मरातल' का वावटा दिया गया, और 'सनंद' प्राप्त हुई.

खीलचीपुर की ख्यात में इस विषय में लिखा है कि ढोलनगढ के राजा विजलसिंह अपनी राणी गंगाकुमारी के साथ चौपट खेलते थे उस समय में राणी की सार (दाव) मारते समय राजा अभीमान से वोला कि 'हमने खीची की सार मारी', जिसपर राणी ने जवाव दिया कि खीची लोग इस प्रकार मार नहीं खाते है. उन्होंने वडे २ संग्राम जीते है. जिस पर विजलसिंह ने कहा कि हमसे लडे तो उनकी दशा विगाड दें. राणी ने पति का अभीमान दूर करने के वास्ते अपने भाई देवनसिंह को पत्र लिखा, जिसपर देवनसिंह अपने भाईओं के साथ ढोलनगढ पर चढ आया. इस युद्ध में विजलसिंह मारा गया जिससे गंगाकुमारी ने अपनी सोलह सोतों के साथ सती होने के वक्त देवनसिंह को कहा कि तुम्हने वुरा किया. अव तुम्ह यहां पर राज्य करो और इस गांव का नाम पलटा दो, ऐसा कह कर वह सती हुई.

देवनसिंह ने अपने वहिन, वहिनोई के शोक के कारण दोनों राज्य छोड दिये, अखिर ब्राह्मणों के समजाने पर उसने जायल का राज्य अपने तीसरे भाई कमलसिंह को दिया और खुद गागरून का राज्य करने लगा. इसने २१ वर्ष पर्यंत गागरून का राज्य किया.

इसके भाई नं. $\frac{४}{१}$ रत्नसिंह के पुत्र सारंगदेव के खड्गसिंह व खुसालसिंह नामके पुत्र थे, जिसमें खड्गसिंह की ओलाद वाले 'खीची' कहलाये और खुसालसिंह के वंशज 'खीचड' कहलाने लगे, इन दोनों की ओलाद वाले वर्तमान समय में उज्जेन के

नोट—खीलचीपुर की ख्यात में लिखा हैं कि जिहनराय का पुत्र पिलुंजर के पुत्र पालनसिंह के दो पुत्र प्रसन्नदेव व पार्थसिंह नामक हुए वे दोनों पृथ्वीराज की सहायता किया करते थे. प्रसन्नदेव के दो पुत्र, करमसिंह व करणसिंह नामक हुए, उसमें करमसिंह शहावुद्दीन गोरी के साथ पृथ्वीराज का अंतिम युद्ध हुआ उसमें लडने को गया था. देहली मुसलमानों के पास जाने से करमसिंह ने जायल छोड दिया और वूंदी के पास 'खटकड' नगर में तिगाला जाति के राजपूतों को जीत कर उस स्थान का नाम रामगढ देकर राज्य किया. इसका छोटा भाई करणसिंह 'जायल' में रहा, परन्तु उक्त ख्यात में यह भी लिखा गया है कि देवनसिंह ने गागरून कब्जे किया तव वह जायल में था, और गागरून में राज्य स्थान करने पर उसने अपने छोटे भाई कमलसिंह को 'जायल' का राज्य दे दिया. वस्तुतः नाडोल के जेन्द्रराव को ही जिहनराव होना वतलाया है. दंतकथा में यह वात कही जाती हैं कि पावुजी राठौर के साथ जींदराव की लडाई आवु पहाड की तलेटी में गिरवर की घाटी (तोडा के दरवाजे) में हुई थी.

पास 'कालूहेडा' आदि गावों में काश्तकार है, और नं. $\frac{४}{२}$ कमलसिंह की ओलाद में क्रमश २ फतहसिंह, ३ चाचिगदेव, ४ शार्दूलसिंह व ५ दिलावरसिंह हुए, उनको जागीर 'सागर' के पास बारह गांवों में थी, जिससे उनके वंशज 'सागरखीची' के नामसे कहलाये गये. दिलावरसिंह से क्रमश ६ ज्ञानसिंह, ७ आनंदसिंह, ८ दुर्जनसाल, ९ सौभाग्यसिंह, १० शेरसिंह, ११ छत्रसाल, १२ मंगलसिंह, व विरुदसिंह आदि हुए जिनकी जागीरें 'धनावदा' में है. (जो ग्वालियर एजन्सी में ताल्लुकदार है.)

सूता नेणसी की ख्यात में 'देवनसिंह' नाम नहीं है, लेकिन 'जायल' के गुंदलराय का पुत्र आनलदेव दुष्काल के समय में अपनी गर्भवती सांखली राणी के साथ 'डोडवाडे' (डोडियाल राजपूतों के राज्य में) जाता था, वहां रास्ते में राणी को प्रसूती की वेदना होने से कोटे परगने का 'सूरसेन गढा' नामक गांव की सिव में एक पुराना देवमन्दिर था, उस मन्दिर में राणी ने 'धारु' नामक पुत्र का जन्म दिया. धारु को मन्दिर की पिढी पर रखा था वहां एक सर्प आया और पिढी की प्रदक्षिणा करके अपने मूह में से एक सूवर्ण की मोहोर छोड कर चला गया. इस मुआफिक वह सर्प हररोज एक २ मोहोर रख जाता था. सांखली राणीने यह बात अपने पति को कही और वह तमाशा दिखाया, जिस पर सर्प को वाचा हुई और उसने आनलदेव को कहा कि पूर्व काल में इस देश में 'हूण' नामका वडा राजा हुआ था उसका जीव तुम्हारे यहां पुत्र होकर जन्मा है. मैं उस राजा का मित्र था जिससे उसने मोहोरों से भरे हुए तीस चरु सुपुर्द किये थे वे इस मन्दिर में मेरे बिल के पास हैं, उसका मालिक तुम्हारा पुत्र है सो तुम्ह ले लो और यह जगह मत छोडो, यह सब भूमि तुम्हारे वेटे पोतें को प्राप्त होगी. जिससे आनलदेव डोड राजपूतों की इजाजत लेकर वहां ही कोट करा कर रहा. धारु वडा हुआ तब मामा की सेवा में उपस्थित हुआ. डोड राजपूतों ने उसको लायक देखकर राज्य का सब काम सोंपा, बल्कि डोड राजपूतों के एवज में वह बादशाह के वहां चाकरी भी करने लगा. कुछ दिनों में डोड राजपूत नाबूद हो गये और वह मुलक खीची के कब्जे में आया.

अनुमान होता है कि देव मन्दिर में जन्म होने के कारण धारु का नाम पीछे से देवनसिंह दिया गया होगा.

खीची चौहानों की राजपूताना में भी जोधपुर आदि रियासतों में छोटी वडी जागीरें हैं, परन्तु मुख्य स्थान मालवे में बन जाने से उनके कब्जे में जो देश था उसका नाम 'खीची वाडा' मशहूर हुआ. वर्तमान समय में माळवा, गुजरात व पूर्व में जो जो खीची चौहान विद्यमान है वे ज्यादह प्रमाण में सब मालवे के खीची चौहानों की ओलाद वाले है.

प्रकरण १४ वाँ.

मालवा के खीची चौहानों (गागरून व खीलचीपुर.)

राव देवनसिंह के वाद गागरून से 'राघवगढ' की शाखा अलग हुई. लेकिन नं. १३ राव अचलदास के हाथसे गागरून छूट जाने से उसके पुत्रों इधर उधर हो गये. उनमें से एक पुत्र पूर्व में गया, उसने गाजीपुर में राज्य कायम किया. दूसरे पुत्र गुजरात के तरफ चले गये उन्होंने पावागढ के पास अपने राज्य स्थापित किये. परन्तु धीरदेव नामक पुरूषने पुनः गागरून सम्पादन किया, जिसमें से 'चाचरणी' को शाखा अलग हुई. वादमें गागरून का राज्य राव रायसल के हाथ से हमेश कें लिये चला गया, और चाचरणी की शाखा में उग्रसेन नामक पुरूष ने खीलचीपुर का राज्य कायम किया.

राव रायसल के पुत्र को पीछे से 'मऊ' मिला था, लेकिन राव इन्द्रभाण से बूंदी के हाडा चौहानों ने वह ले लिया जिससे उसकी ओलाद वालों के तरफ मामुली जागीर रही, वे भी वि. सं. १८७९ में भोपालसिंह नामक पुरूष अपुत्रवान हालत में सीहोर के युद्ध में काम आने से नाबूद हुई.

गागरून के खीची चौहानों के वंशज की नामावली में भी एक दूसरी ख्यात में कितनाक फर्क आता है. खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात से राव रायसल से ही नाओलादी होने का उल्लेख किया है, परन्तु भारत राजमंडल नामक ग्रंथ में रायसल की ओलाद में ११ वी पुश्त पर भोपालसिंह हुआ, उस दरमियान के नाम क्रमवार अंकित हुए है और उन नामों में से वहुत से नाम दूसरी ख्यातों से भी मिल रहे है. इस तरह फर्क होने से मालवे के खीची चौहानों का वंशवृक्ष अंकित करने पहिले क्या २ फर्क आ रहा है वह मालूम करने के वास्ते उन ख्यातों से उपलब्ध होते नामों की नामावली दर्ज करना आवश्यक है.

(अ) भारत राजमंडल के ग्रंथ में १ राव देवनसिंह के पीछे (गागरून में) क्रमशः २ चौंडपाल, ३ संगपाल व ४ वजेपाल उर्फ वजेराज, ५ रत्नसिंह, ६ मलसिंह, ७ जीतसिंह, ८ साडनसिंह, ९ सावन्तसिंह व १० करोधसिंह हुए, (उससे क्रमशः)
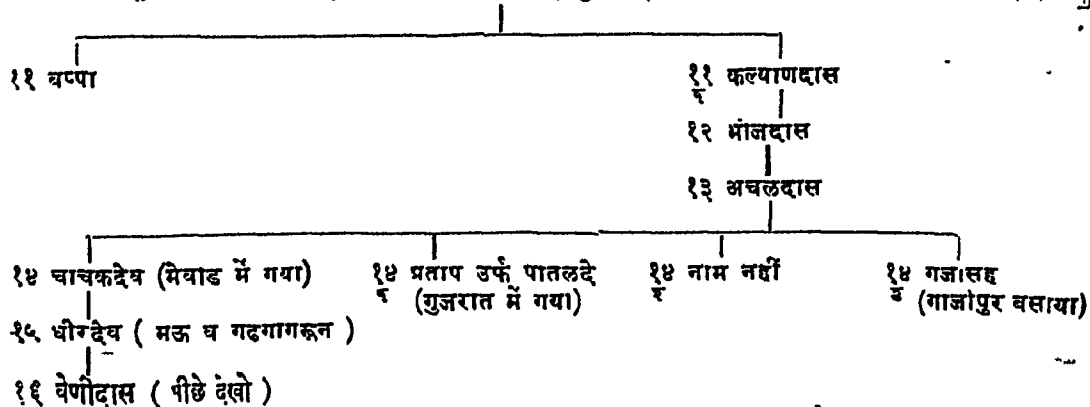
१६ वेणीदास (चलू)

- १७ जटाम (गागरून)
  - १८ रायसल (गागरून छूटा)
    - १९ गोपालदास (मऊ)
      - २० इसरीसिंह (मऊ)
        - २१ माधुसिंह
          - २२ इन्द्रभाण (मऊ छूटा)
            - २३ रत्नसिंह
              - २४ धीरतसिंह
                - २५ जोरावरसिंह
                  - २६ उम्मेदसिंह
                    - २७ चतरसिंह
                      - २८ भोपालसिंह (सीहोर काम आया) ×
                  - २६ प्रतापसिंह
                  - २६ लालसिंह
          - २२ उदेभाण
          - २२ रायभाण
      - २० सूरतसिंह
      - २० हरिसिंह
    - १९ जोझार (जोझारखानी मुसलमान)
- १७ देवसिंह (चाचरणा)
  - १८ मानसिंह
    - १९ चक्रसेन (ब्यावरा)
    - १९ उग्रसेन (खीलचीपुर)

(आ) खीलचीपुर रियासत की हस्त लिखित ख्यात पर से.

१ देवनसिंह (गागरून)

- २ क्षेत्रराव
  - ३ कल्याणराव
    - ४ कड़वाराव
      - ५ पीपाराव (गोद)
        - ६ कल्याणराव
          - ७ भोजराव
            - ८ अचलदास (गागरून छूटा)
              - ९ कानसिंह ×
              - *दूसरे नौ (देखो नीचे)
              - ९ खड्गसेन (पूर्व में गाजीपुर)
              - ९ पालसिंह (गुजरातमें)
      - ५ भजनसिंह
      - ५ मलयसिंह (राघवगढ)
      - ५ चाचादेव
        - ६ धीरदेव (गागरून)
          - ७ वेणीदास
            - ८ दब्बुजी (गागरून छूटा)
              - ९ मानसिंह
                - १० चक्रसेन ×
                - १० उग्रसेन (खीलचीपुर)
              - ९ कपुरसिंह
            - ८ जटाम
              - ९ कल्याणसिंह उर्फ रायसल (गागरून) ×
    - ४ प्रतापराव
      - ५ गोविन्दराव
      - ५ कल्याणराव (गोद गया पीपाराव के)

* नं ८ अचलदास के छोटे ९ पुत्रों के नाम, २ नाहरसिंह, ३ शेषमल, ४ शेरसिंह, ५ योगकरण, ६ कुन्दनसिंह, ७ श्यानसिंह, ८ सूजनकरण, ९ मालसिंह, १० नायसिंह थे. इनके सिवाय पासवानों में से एक गोपालदास नामका पुत्र था.

उपर्युक्त दोनों नामावली के नाम मिलाते नी. (अ) की नामावली में देवनसिंह से अचलदास तक में १३ पुश्तें होनी हे, जब नी. (आ) की नामावली में ८ पुश्तें दर्ज हैं. इसी मुआफिक नी. (अ) की नामावली में अचलदास का पुत्र नं. १४ चाचकदेव नाम अंकित हुआ हे तब नी. (आ) की नामावली में नं. ४ कडवाराव का पुत्र नं. ५ चाचादेव होना लिखा . यह फर्क नीकालने के वास्ते दूसरा कोई साधन नहीं है, लेकिन नी. (आ) की नामावली के राजाओं के समय के संवत् हस्त लिखित ख्यात में दर्ज हुए है, उन पर ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करते अनुमान होता है कि नी. (अ) की नामावली में नं. १० के करोधसिंह व नी. (आ) की नामावली मे नं. ४ कडवाराव यह दोनों एक ही पुरुष के नाम हे. देवनसिंह से कडवाराव ७५ वर्षके बाद होना खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात मे पाया जाता हे, इतने समय में १० पिढी गुजर जाना असंभवित हे. जिससे कडवाराव उर्फ करोधसिंह तक के नाम नी. (आ) की नामावली में दर्ज हुए हे वह ठीक होना पाया जाता हे.

चाचादेव उर्फ चाचकदेव, कडवाराव का पुत्र था या अचलदास का ? इस विषय में खीलचीपुर रि. की ख्यात से मालूम होता हे कि चाचादेव, अचलदास का समकालिन था, और ई. स. १४२६ (वि. सं. १४८२) में अचलदास की सहायता में ही वह काम आया. कडवाराव की गद्दीनशिनी का समय ई. स. १३२५ (वि. सं. १३८१) का होना उक्त ख्यान में लिखा हे, इतने समय में (१०१ वर्ष में) एक ही पुश्त गुजरना यह बात मान्य होने में शंका रहती हे, और कडवाराव के पुत्र पीपाराव अपुत्रवान होने से अपने सगे भाईओं को गोद न लेते काका के पुत्र को गोद लेना यह बात भी उस शंका को पुष्टी देती हैं, जिससे अनुमान होता हे कि नी. (अ) की नामावली के मुआफिक चाचकदेव, अचलदास का पुत्र होना अंकित हुआ हे वह ज्यादह भरोसापात्र हे.

उपरोक्त कारणों से यह दोनों ख्यात की नामावली पर नजर दे गढगागरून के खीची चौहानों का वंशवृक्ष निम्न अंकित होना योग्य होगा. (जो कि सायद इसमें किसी की राय और भी होगी, लेकिन अनुमान से सिर्फ लेखक की राय दर्ज की गई हे.)

१ वंशवृक्ष गढ गागरून के खीची चौहान.

१ देवनसिंह (खीची चौहान वंश वृक्ष में नं. ४ वाला देखो पृष्ठ ९९ पर) गढ गागरून के मूल पुरुष.
|
२ जेतराव उर्फ जितराय
|
३ कल्याणराव (पीछे देखो)

नोट—मू. नं. की ख्यात में सीसोदिया राजपूतों से मालवे के सुलतानने चितोडगढ ले लिया और महाराणा सांगा की राणी करमेती हाडी ने जुहार किया उस समय करमेती हाडी की पुत्री जो खीची चौहान भारथीचंद के साथ बिहाई थी, वह भी जुहार में शामिल होने का उल्लेख किया है. लेकिन भारथीचंद खीची का नाम दुसरी किसी ख्यात से मिला नहीं है.

३ कल्याणराव (चलू)

४ कडवाराव उर्फ करोधसिंह

५ पीपाराव उर्फ बप्पा × गोद — ५ द्. प्रतापराव — ५ तृ. अजयसिंह — ५ च. मलयसिंह (राघवगढ)

६ कल्याणराव — गोविन्दराव × — कल्याणराव (गोद गया नं. ५ के)

७ भोजराव

८ अचलदास

९ चाचिगदेव (मेवाड) — ९ द्. कहानसिंह आदि दश पुत्रों × — ९ तृ. पालनदेव (गुजरात-चांपानेर) — ९ च. प्रताप उर्फ पातल (गुजरात-कारवण) — ९ पं. खड्गसेन उर्फ गजसिंह (पूर्व में गाजीपुर)

१० धीरजदेव (गागरून)

११ वेणीदास

१२ जटाम — १२ द्. दब्बुजी उर्फ देवीसिंह (चाचरणी)

१३ रायमल (गागरून) — १३ द्. मानसिंह — १३ तृ. कपुरसिंह

१४ गोपालदास (मऊ) — १४ द्. जोझार (जोझारखानी मुसलमान) — १४ द्. चक्रसेन (ब्यावरा) — १४ तृ. उग्रसेन (चाचरणी व खीलचीपुर)

१५ इसरसिंह (मऊ) — १५ सूरतसिंह — १५ हरिसिंह

१६ माधुसिंह

१७ इन्द्रभाण

१८ रत्नसिंह

१९ धीरतसिंह

२० ज़ोरावरसिंह

२१ उम्मेदसिंह — २१ द्. प्रतापसिंह — २१ तृ. लालसिंह

२२ चतरसिंह

२३ भोपालसिंह ×

उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ राव देवनसिंह ‘ गागरून ’ में गद्दी पर बैठा. जिसका अहवाल अगले प्रकरण में आ चुका है.

नं. २ राव जेत्रराव उर्फ जितराव ई. सं. १२८० (वि. सं. १३३६) में गागरून में

गद्दी पर बैठने का खीलचीपुर रि. की हस्त लिखित ख्यात में अंकित हुआ है. इसने ३० वर्ष राज्य किया.

नं. ३ राव कल्याणराव ई. स. १३०० (वि. सं. १३५६) में गद्दी पर आया और ३५ वर्ष तक राज्य किया.

नं. ४ राव कडवाराव उर्फ करोधसिंह ई. स. १३३५ (वि. सं. १३९१) में गद्दी पर आया और २५ वर्ष राज्य किया.

नं. ५ राव पीपा उर्फ वप्पा ई. स. १३६० (वि. सं. १४१६) में गद्दी पर आया. यह बडे ईश्वर भक्त और महात्मा सिद्ध था, इसका चरित्र ' भक्तमाल ' में भी लिखा गया है. भारत राजमंडल के ग्रंथ में लिखा है कि इसकी राणी सोलंकणी सीतावाई, सोलंकी ' हाजा ' की पुत्री थी. जब कि वप्पाराव ने संसार त्याग करने के इरादे से द्वारिका तरफ चल दिया तब ' सोलंकणीराणी ' भी उसके साथ गई. द्वारिका पहुचने पर श्रीकृष्ण की मुलाकात न होने पर इसने अपनी राणी के साथ समुद्र में झंपापात किया, वहां श्रीकृष्ण से मुलाकात हुई. समुद्र के अंदर सुवर्ण मन्दिर में वे आठ दिन तक रहे और शंख, चक्र, गदा व पद्म की छाप लगा कर बाहिर आये. इसकी राणी सीतावाई को रुकिमणीजी ने अंगूठी दी. कहा जाता है कि इस समय से ही द्वारिका में छाप देनेका रिवाज प्रचलित हुआ, और जो छाप लगाई जाती है वह वप्पा समूद्र में से लाया था वही छापां है. यह घटना का समय वि. सं. १४१४ होनेका उक्त ग्रंथ में अंकित हुआ है. अगर यह संवत् सही है तो अनुमान होता है कि यह घटना इसके कुंवरपद में हुई थी, और उसके दो साल बाद यह गद्दी पर आया. इसने २५ वर्ष राज्य किया ऐसा खी. रि. की हस्त लिखित ख्यात से पाया जाता है. इसके पुत्र न होने के कारण इसका भतीजा कल्याणराव गोद आया.

नं. ५/१ प्रतापराव व नं. ५/२ अजयसिंह के विषय में ज्यादह हाल मालूम नहीं हुआ.

नं. ५/३ मलयसिंह के विषय में. खी. रि. की हस्तलिखित ख्यात में लिखा है कि इसने गागरून से बंट लेकर शेरगढ में अपना अलग राज्य कर लिया था, जब कि नं. ८ राव अचलदास के समय में युद्ध हुआ तब इसके वंशजोने उसकी सहायता नहीं की. वर्तमान समय में ' राघोगढ ' के खीची चौहान इसके वंशज है.

राघोगढ के खीची चौहान मालवे में बहुत प्रसिद्ध हे, प्राचीन काल में 'राघोगढ'का एक अलग राज्य था, लेकिन वि. सं. १८५२ में खीची राजा जयसिंह के हाथसे सैंधिया ने राघोगढ का राज्य छीन लिया, जिससे राघोगढ के खीची कमजोर हो गये. 'वीर विनोद' नामका हस्तलिखित ग्रंथ में 'टोंक' के पठाण अमीरखां की तवारिख में लिखा है कि

" अमीरखां राघोगढ के खीची राजा जयसिंह व दुर्जनसाल (खीलचीपुर के राजा) के पास नोकर हुआ, जिनको सैंधिया ने राज्य छीनकर नीकाल दिये थे, इन राजपूतों के साथ अमीरखां ने लूटमार करने में खुब नामवरी हांसिल की. खीची सरदारों से नाइतिफाकी होने के कारण उसने उनकी नोकरी छोड दी." वर्तमान समय में राघोगढ की रियासत वट जाने से मालवा, भोपाल, और ग्वालियर एजंसी में राघोगढ के खीची चौहानों की अंग्रेज सरकार के संरक्षण में छोटी २ रियासतें (ताल्लुकदारी) हैं. जिसमें ग्वालियर एजंसी में राघोगढ, धुलेटोया, नांगुन, आदि व भोपावर एजंसी में गरहा, भोपाल एजंसी में ' मकसुदनगढ ', वेस्टर्न मालवा एजंसी में पीपलीया, कालुहेडा, विलउडा, आदि व मालवा एजंसी में ' धनगऊँन ' आदि जागीरें हैं.

नं. ६ कल्याणराव ई. सं. १३८५ (वि. सं. १४४१) में गद्दी पर आया और सिर्फ एक वर्ष राज्य किया ऐसा खी. रि. की हस्तलिखित ख्यात में लिखा है.

नं. ७ भोजराव ई. सं. १३८३ (वि. सं. १४४२) में गद्दी पर आया. इसने २४ वर्ष राज्य किया. ऐसा खी. रि. की हस्तलिखित ख्यात में अंकित हुआ है.

नं. ८ अचलदास ई. सं. १४१० (वि. सं. १४६६) में गद्दी पर आया. खी. रि. की हस्तलिखित ख्यात में लिखा है कि इसके+ सात राणी और च्यार पासवान भी थी. उक्त ख्यात में यह भी लिखा ह कि इस राजा के एक तोते के कारण से सुलतान गोरी होशंग के साथ युद्ध हुआ, लेकिन गागरून का किला हाथ नहीं आने से सुलतान ने धोवी से मिलकर धर्म विगाडने का यत्न किया जिससे राव अचलदास ने किले से वाहिर आकर मैदान में युद्ध किया. जिसमें इसके दस वडे पुत्र व पासवान का एक पुत्र भी युद्ध में साथ थे, और छोटे दो पुत्रों को वंश रखने के कारण दूर भेज दिये. युद्ध में इसके पुत्र काम आये, परन्तु अन्त में राव की जीत हुई. जव कि फतह पाकर राव अचलदास वापिस लौटे तव मोतीदास और महेश्री सुन्दरदास नाम के सख्स जो शत्रुओं से मिले हुए थे उन्होंने जीत का निशान पीछे कर लिया, जिससे राणीयां वारूद से जल गई. (जमर खडक के जल कर मर गई.) इस कारण अचलदास ने किले में न ज . पुनः युद्ध शुरू किया और वहुत से शत्रुओं को मार कर खुद भी काम आया. यह घटना ई. स. १४२६ (वि. सं. १४८२) में हुई. सुलतान होशंग ने मालवा कब्जे किया और गागरून में अपना सुवा रखा.

+ १ भटीयाणीजी उमादेवी (यह वडी भक्त हुई जिसका चरित्र भक्तमाल में है.) २ राणावतजी लालांदेवी (मेवाड के महाराणा की पुत्री) ३ राठौडजी महेच्छी (लोम्वडोया राठौर की पुत्री) ४ अहाडी (डुंगरपुर के राजा की पुत्री) ५ सेखावतजी (फतेपुर सीकरी के सेखावत की पुत्री) ६ कच्छवाही (जयपुर (आमेर) के राजा की पुत्री) ७ यादवनी (करौली के यादव की पुत्री).

इस विषय में भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा है कि अचलदास वीर पुरूष हुआ, इसने वारह दिन तक दुश्मन के साथ वडी वीरता से युद्ध किया और तेरहवे दिन इसका सिर कटकर 'भमरपोल' के पास गिरा और धड 'सखर' तलाव पर जाकर पडा. जहां इसका स्मार्क वना हुआ है और पूंजन होता है.

नं. ९ चाचिगदेव के विषय में खी. रि. की हस्त लिखित ख्यात में लिखा है कि वह नं. ४ कडवाराव के चौथा पुत्र था और राव अचलदास की सहायता में काम आया. इसकी राणी 'उणीयारा' (जो जयपुर रियासत में है) की थी, वह युद्ध समय में गर्भवती होनेके कारण पिअर में थी. चाचिगदेव का देहान्त सूनने पर वह मरने लगी परन्तु ब्राह्मणों ने धीरज देकर मरने नहीं दी, उस समय पीछे उसके पुत्र का जन्म हुआ. जिसका नाम धीरजदेव रखा गया. जिसने गढ गागरून पुनः सम्पादन किया.

भारत राजमंडल के ग्रंथ में लिखा है कि चाचिगदेव अचळदास का पुत्र था, और वह भाग कर मेवाड के महाराणा पास चला गया था, इसका पुत्र धीरदेव हुआ उसने पुनः मऊ व गागरून प्राप्त किये.

नं. $\frac{९}{६}$ कहानसिह व दूसरे नौ (नाहरसिंह, शेपमल, शेरसिंह, योगकर्ण, कुन्दनसिंह, श्यानलसिंह, सुजसकरण, मालसिंह, व नाथसिंह) यह दस पुत्र व गोपालदास नामका पासवान का पुत्र राव अचलदास के साथ ही युद्ध में मारे जानेका खी. रि. की हस्त लिखित ख्यात में लिखा है परन्तु भा, रा. मं. के ग्रंथ में एक ही पुत्र (जिसका नाम नहीं वताया गया.) युद्ध में मारे जानेका लिखा है.

नं. $\frac{९}{२}$ पालनदेव का नाम खी. रि. की ख्यात में पालसिंह अंकित हुआ है जो छोटा होने से वंश रखने के लिये दूर देश में भेजा गया था. भा. रा. मं. के ग्रंथ में खीलचीपुर की ख्यात लिखी है उसमें इसका नाम नहीं है, लेकिन गुजरात में छोटाउदयपुर रियासत की खीची चौहानों की ख्यात में इसका नाम अंकित किया है. पालनदेव ने गुजरात में जाकर 'पावागढ' कब्जे किया और 'चांपानेर' में राज्यस्थान स्थापित करके 'रावल' पद धारण किया. इससे कितनीक पुश्तों वाद चांपानेर की गद्दी पर रावल जयसिंहदेव उर्फ पताईरावल हुआ उसके हाथ से चांपानेर का राज्य छूट गया, और उसके पोतोंने 'छोटाउदयपुर' व 'वारीया' के राज्य कायम किये, जो वर्तमान समय में उनके वंशजो के तरफ है.

नं. $\frac{९}{३}$ प्रताप उर्फ पातल का नाम खी. रि. की हस्त लिखित ख्यात में नहीं है लेकिन भा. रा. के ग्रंथ में खीलचीपुर की ख्यात में यह अचलदास के पुत्र होना अंकित हुआ है. वैसे उक्त ग्रंथ में रेवाकांठा के मांडवा स्टेट (ताल्लुकदार) के खीची चौहान की

ख्यात में लिखा है कि चांपानेर वाले पालनदेव के साथ उसका भाई प्रतापसिंह आया था, उसने चांपानेर से ' कारवण ' जाकर ३५० गांवों का अलग राज्य कायम किया, जिसकी ओलाद में वर्तमान समय में मांडवा स्टेट के खीची चौहान है.

नं. $\frac{९}{४}$ खड्गसेन उर्फ गजसिंह का नाम खी. रि. की हस्तलिखित ख्यात में खड्गसेन है, जो छोटा होने से वंश रखने के लिये दूर देश में भेज दिया गया था. जिसने पूर्व देश में जाकर कानपुर और प्रयाग के बीच में ' गाजीपुर असोथर ' में राज्य सम्पादन किया जिसकी ओलादवाले वर्तमान समय में भी वहां राज्य करते है.

भा. रा. मं. के ग्रंथ में खड्गसेन के बदले गजसिंह नाम अंकित हुआ है, जिसने गाजीपुर बसाया. उक्त ग्रंथ में यह भी लिखा है कि इसके वंश में भगवानदास नामका नामांकित पुरूष हुआ. जिसकी किर्ती पूर्व देश में बहुत फैली थी.

नं. १० राव धीरजदेव ने गागरून पुनः सम्पादन करने के विषय में खी. रि. की हस्तलिखित ख्यात में लिखा है कि मालवे के सुलतान महमुद ने मेवाड के कुंभा राणा पर विजय प्राप्त करने के वास्ते सहायता के लिये दूसरे राजाओं के पास गुप्त रिति से दूत भेजे तब जयपुर (आमेर) के राजा भारमल ने कहलाया कि तुम्ह हमारे भानेज धीरजदेव को गागरून का राज्य देदो तो हम सहायता करें, जिस पर सुलतान महमुद ने प्रसन्न होकर धीरजदेव को अपने पास बुलाकर छत्र चमर आदि राज्य चिन्ह व हाथी वगैरह लवाजमा देकर अपने हाथ से राज्य तिलक नीकाल कर गागरून का राज्य सुपुर्द किया. यह घटना ई. स. १४५४ (वि. सं. १५१०) में हुई. राव धीरजदेव ने ई. स. १४७८ (वि. सं. १५३४) में गागरून के पास मऊ, मैदाना में एक लूटेरा भील रहता था उसका मार कर, मऊ, मैदाना बसाया और वहा राज्यधानी रखी. इसने ४९ वर्ष राज्य किया.

धीरजदेव के विषय में टॉड राजस्थान नामक ग्रंथ में लिखा है कि 'गागरून' के खीची वंश के सरदार के साथ मेवाड के महाराणा मोकल ने अपनी लालबाई नामकी कुंवरी जो बहुत स्वरूपवान थी उसका सबंध किया, परन्तु लग्न करने के समय पर उस खीची सरदार ने क़सम खिला कर महाराणा से प्रतिज्ञा कराई कि " शत्रुओं की तरफ़ से खीची चौहानों के राज्य पर आक्रमण होवे तब राणा उस को सहाय करेगा. " कितनेक वर्षों बाद मालवे के सुलतान होशंग ने गागरून पर आक्रमण किया तब खीची सरदार का पुत्र धीरजसिंह, राणा के पास सहायता लेने को गया, महाराणा मोकल उस वक्त ' मादेरिया ' के तरफ था, वहां जाकर धीरजसिंह मिला और जरूरत मुआफिक फौज लेकर अपने वतन को चला आया. यह घटना उक्त ग्रंथ

मुआफिक वि. सं. १४७५ में होना पाया जाता है, और गढ गागरून राव अचलदास से सुलतान होशंग ने वि. सं. १४८२ में लेने का खीलचीपुर की ख्यात में लिखा है. जिससे अनुमान होता है कि यह वनाव राव अचलदास के समय में हुआ होगा.

नं. ११ वेणीदास ई. स. १५०३ (वि. सं. १५५९) में गद्दी पर आया. खी. रि. की ह. लि. ख्यात में लिखा है कि इसके वडा पुत्र दव्बुजी व छोटा जटाम था. जटाम के पुत्र कल्याणराव उर्फ रायसल ने दव्बुजी को दगा से अलग किया और आप ई. सं. १५२४ (वि. सं. १५८०) में गद्दी पर वैठ गया, लेकिन भारत राज्यमंडल के ग्रंथ में नं. १२ जटाम वडा होना व वेणीदास के पीछे गद्दी पर आना लिखा है.

नं. १२/१ देवसिंह (उर्फ दव्बुजी) को चाचरणी परगना मिला था ऐसा उल्लेख किया गया है. जिनके वंशज खीलचीपुर के खीची चौहान है.

नं. १३ + रायसल का एक जगह ई. स. १५२४ (वि. सं. १५८०) में व दूसरी जगह

\+ खी. रि ह. लि. ख्या. में लिखा है कि दव्बुजी की हयाती में ही उसके दोनों पुत्र और राणी मर गये थे उस दुःख से व वृद्धापकाल से वह आंखों से नहीं देख सके थे, ऐसी हालत में देहली के मुगल बादशाह बाबर ने उसको देहली बुलाया जिससे उसने अपने भतीजा कल्याणसिंह को अपनी फौज देकर देहली भेजा. कल्याणसिंह राज्य प्राप्त करने के वास्ते सूर्य की उपासना करता था. जब वह देहली पहुंचा तब राज्य लेने की इच्छा से बादशाह के वजीर आदि को धन देकर अपनी तरफ मिला लिये.

बादशाह के बुलावे पर कल्याणसिंह हाजिर हुआ और बादशाहने दव्बुजी व उसके पुत्रों का कुशल वर्तमान पूछा तब कल्याणसिंह ने कहा कि राजा के दोनों पुत्र मर गये और नाती भी नहीं है. जिससे मुझे पुत्र कर रखा है. और राज्य कार भी मेरे से कराते है. बादशाह ने एक दिन उसकी मल्ल विद्या की परिक्षा ली तो वह बहुत कुशल पाया गया, जिससे कहा कि ' सिले ' नाम (सिले का मायना) सब है और ' राय ' नाम अच्छे राजा का है, इस लिये आज से तुम्हारा नाम हमने ' रायसल ' रखा, और दव्बुजी के पीछे तुम्ह को ही राजा बनाये. तब यह अपनी सेना के साथ मालवे में वापिस आया. और दव्बुजी को कैद करने का व उसके पोते को मार देने की योजना करने लगा, जो खबर ' घांटोली ' के जागीरदार फतहसिंह को होने पर उसने दव्बुजी को कह दिया, जिस पर दव्बुजी ने अपनी कुंवराणी से कहा कि मेरा तो जो कुछ होना होगा सो होगा परन्तु तुम्ह इन बच्चों की जान बचाओ. तब कुवराणी दोनों पुत्रों को लेकर ' मलीगाव ' के पटेल रामकिशन मीणा को भाई बनाकर उसके आश्रय में रही.

तीन वर्ष बाद दव्बुजी मर गये और उनके पोतों में से बडा चक्रसेन भी मर गया. तब ई. स. १५४१ में रायसल गद्दी पर बैठा. दव्बुजी का दूसरा पोता उग्रसेन कुछ होंशियार हुआ तब रामकिशन पटेल उसको साथ लेकर ' खाताखेडी ' के भील ठाकुर चक्रसेन के पास सहायता के लिये गया, तब उसने कहा कि मै तुम्हारे बैठने का ठिकाना तो अभी कर देता हुं. युं कह कर अपनी सैना और उग्रसेन की सैना को साथ ले के ' मनोरथाने ' में तिगाला जात के क्षत्रीयों को मार कर पांती से ठिकाना बनाया, फिर चक्रसेन भील उग्रसेन को साथ लेकर देहली गया. उस समय देहली में शेरशाह बादशाह था, उससे मिल कर रायसल के सब कपट के अहवाल विदित किया. जिस पर बादशाह ने उग्रसेन को ' गागरून ' और ' मऊ, मैदाना ' का राज्य देना चाहा परन्तु शाही वजीर आदि रायसल के पक्ष में होने के कारण उन्हों ने बादशाह को उल्टा समजाया कि मालवे में ' सारंगपुर ' के पास ' खेजडपुर ' उत्तम स्थान है वहां इसको भेजा जाय, जिससे बादशाह ने खेजडपुर की सनद कर दी और खिल्लत वगेरह देकर विदा किया.

उग्रसेन ने मालवे में आकर 'नारदा' के पास रामगढ नामका नया गांव बसा कर वहां निवास किया और खेजडपुर का नाम ' खीचीपुर ' दिया ई. स. १५४४ में उग्रसेन ' खीचीपुर ' की गद्दी पर बैठा.

ई. स. १५४१ (वि. सं. १५९७) में गद्दी पर बैठने का समय खी. रि. की हस्त लिखित ख्यात में लिखा है, और वह नाऔलाद गुजर जाने बाद गागरून का राज्य शाही सलतनत के शामिल कर लेने का उक्त ख्यात में उल्लेख किया है, परन्तु भा. रा. सं. के ग्रंथ में लिखा है कि अकबर बादशाह ने राव रायसल पर फौज भेज कर गागरून छीन लिया लेकिन पीछे से 'मऊ' वापिस दिया.

मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि अकबर बादशाह के जमाने में खीचीओं का बहुत दाम दमाम था. उस समय में बादशाह ने कछवाहा मानसिंह भगवानदासोत को शाही फौज दे कर खीचीवाडे पर भेजा तब खीची राव रायसल ने उनके साथ युद्ध किया जिसमें रायसल हार गया, इस युद्ध में रायसल का सरदार राठौर देवीदास सुजावत का पोता राव पृथ्वीराज हरराजोत काम आया. उसके बाद बीकानेर के राठौर पृथ्वीराज कल्याणमलोत को बादशाह ने गढ गागरून दिया, उस वक्त भी खीची चौहानों ने उजर कर उसके साथ युद्ध किया परन्तु सफलता नहीं हुई. उमट परमारों की ख्यात में लिखा है कि इस युद्ध में तेजसिंह व साहबखान नाम के दो उमट परमार खीचीओं की सहायता में काम आये थे. इससे पाया जाता है कि राव रायसल की हयाती में ही अकबर बादशाह ने गढ गागरून ले लिया था, जिसको वापिस लेने के वास्ते पुनः पुनः प्रयत्न किया गया परन्तु सफलता नहीं हुई. बल्कि राव रायसल, जहांगीर बादशाह के समय में भी विद्यमान हो और वह बूंदी के राव राया रत्नसिंह से युद्ध कर काम आया हो वैसा *अनुमान होता है.

नं. १३/१ मानसिंह व नं. १३/२ कपुरसिंह जो दव्वुजी के पुत्र थे उनके विषय में खी. रि. ह. लि. ख्या. में लिखा है कि वे अपने पिता दव्वुजी की हयाती में ही गुजर गये थे, परन्तु भा. रा. सं. के ग्रंथ में लिखा है कि जब कि हुमायु बादशाह मालवा के सुलतान बहादुरशाह के उपर फौज लेकर आया तब नं. १३/१ मानसिंह हुमायु की सेवामें उपस्थित हुआ था.

नं. १२ गोपालदास के तरफ मऊ, मैदाना का राज्य था. ऐसा भा. रा. सं. नामक ग्रंथ में लिखा है. खीलचीपुर रियासत की हस्त लिखित ख्यात में इसका नाम व इसकी औलाद वालों के नाम नहीं है लेकिन ÷ मूता नेणसी की ख्यात में खीची चौहानों के इतिहास में व बूंदी के इतिहास में भी राव गोपालदास का नाम मिलता है. इसके तरफ

---

* मूता नेणसी की ख्यात में खीची चौहानों का राजा शालवाहन राव रत्नसिंह के साथ युद्ध में मारे जाने का जिक्र है उस समय में शालवाहन नामक कोई राजा खीचीवाडे के खीची चौहानों में होना पाया नहीं जाता है जिससे रायसल का ही नाम शालवाहन अंकित होने का अनुमान होता है.

÷ मूता नेणसी की ख्यात में खीची चौहानों के इतिहास में लिखा है कि राव गोपालदास बडा बहादुर राजा था. खीची चौहानों का देश और तो सब छूट गया था, परन्तु राव गोपालदास के तरफ मऊ, मदाना, के १२०० गांव थे. और पहाड व झाडी से भरा हुआ वह देश था. जहांगिर बादशाह की खीची चौहानों पर इनायत हुई, और उसने बूंदी के राव राया रत्नसिंह

१४०० गावों का मऊ मैदाना का राज्य था, यह शाही सेवा में उपस्थित रहा था और वडा वहादुर राजपूत गिना जाता था. जहांगीर वादशाह ने खीची चौहानों का बल कम करने के वास्ते बूंदी के राव राया रत्नसिंह को खीचीओं को मार कर उनका देश ले लेने की आज्ञा दी, जिससे उसने शाही फौज की सहायता से खीची चौहानों से वहुतसा देश ले लिया परन्तु मऊ का राज्य लेने नहीं पाया था.

नं. $\frac{१४}{१}$ जोझार मुसलमान हो गया. जिसके वंशज जोझारखानी मुसलमान कहलाये गये ऐसा भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा हुआ है.

नं. $\frac{१४}{२}$ चक्रसेन के विषय में खी. रि. ह. लि. ख्या. में लिखा है कि यह 'मलीगांव' के पटेल रामकिशन मीणा के आश्रय में रहा था वहां ही मर गया था, लेकिन भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा है कि चक्रसेन के तरफ व्यावरा का राज्य था और उमट राजपूतों ने व्यावरे पर चढाई की जिसमें चक्रसेन युद्ध में काम आया.

नं. $\frac{१४}{३}$ उग्रसेन के विषय में खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात में लिखा है कि राव रायसल ने गागरून का राज्य दवा लेनेसे वह पटेल रामकिशन व खाताखेडी के भील ठाकुर चक्रसेन के साथ देहली के वादशाह शेरशाह पास पहुंचे. वादशाह ने इसको

को आज्ञा की कि तुमको खीची का मुल्क इनाम में दिया गया मार के छीन लो, जिससे रावराया रत्नसिंह ने खीची चौहानों के साथ युद्ध करना शुरू किया, उसने च्यार थाणे मऊ के देश में रख कर उनमें २००० सवार रखे, और राजपूतों को गांव बांट दिये व राठौर गोविन्ददास उग्रसेनोत और राठौर कहान रायमलोत आदि राठौरों को वहां पर रखे. खीची चौहानों ने जगह २ राव रत्नसिंह के साथ युद्ध किया परन्तु उनके हाथसे भूमी छूटने लगी. राजा शालवाहन को भी रावराया रत्नसिंह की सेना ने मार डाला. दिनोंदिन खीची चौहान कमजोर होने लगे और हाडा चौहानों का वल वढने लगा. हाडों ने खीचीओं की वहुतसी भूमी कब्जे कर ली. उनका मुख्य इरादा मऊ, मैदाना, के १४०० गांव लेनेका था. पाया जाता है कि राव गोपालदास वहादुर राजा होनेके कारण उसके समय में 'मऊ' हाडे चौहानों के पास जाने पाया नहीं था.

इसी ख्यात में वि. सं. १७२१ के जेष्ट महिने में बूंदी के राज्य में कितने परगने थे उन की सुंद मूता नेणसी के पास राठौर रामचंद जगन्नाथोत ने कराई है उसमें खीची चौहानों की भूमी जो हाडे चौहानों ने ले ली थी उनकी तफसिल दी गई है उसमें लिखा है कि (१) खटकड के गांव ३६०, (जो पहिले खीची कामसिंह के पास थे, वह हाडा राव सूर्जन के कब्जे में हो चूके थे) (२) मऊ के गांव, १४००, जिसमें ७४० गांवों में पहाड व जंगल हाडा भगवतसिंह की जागीर में. (३) वाटी के गांव ८४, (४) घाटोली के गांव, ९१, (५) गागरून के गांव ३१, (६) गुंगोर के गांव ३६०, (७) चाचरणी खीची वाघसिंह के गांव, ८४, (८) चाचरडो खीची सांवलदास के गांव ४२, इसके सिवाय 'खाताखेडी' के गांव ७०० भील चक्रसेन की जागीर भी हाडा भगवतसिंह के पास होनेका लिखा है. लेकिन मऊ का राज्य राव गोपालदास से बूंदी के रावराया रत्नसिंह ने ले लेनेका उल्लेख नहीं है जिससे पाया जाता है कि राव गोपालदास से मऊ नहीं ले सके थे, परन्तु बाद में राव इन्द्रमाण के पास से मऊ लिया गया था. बूंदी के रावराया रत्नसिंह के गद्दी नशिनी वि. सं. १६६४ व उसके देहान्त का समय वि. सं. १६८८ में होना वीर विनोद नामक हस्त लिखित पुस्तक में अंकित हुआ है. उस समय में मऊ में राव गोपालदास व चाचरणी में राव वाघसिंह थे. चाचरणी लेने के लिये मुंगल व हाडा चौहानों की फौज ने वहुत प्रयत्न किया था लेकिन राव वाघसिंह की माता सिंधलजी गोपालदे ने सफलता प्राप्त न होने दी थी. उसके देहान्त के बाद नवशेरखान ने चाचरणी लेने में सफलता पाई थी. उस समय में राव गोपालदास विद्यमान था और उसके तरफ मऊ का राज्य था.

' खेजडपुर ' की सनद कर दी. उस खेजडपुर का नाम ' खीचीपुर ' देकर ई. स. १५४४ (वि. सं. १६००) में राव उग्रसेन गद्दी पर बैठा, लेकिन भा. रा. सं. के ग्रंथ में व मालवा गझेटियर में उल्लेख हुआ है कि राव उग्रसेन को ई. सं. १५४४ में ×मुगल बादशाह ने जागीर दी.

नं. १५ इसरसिंह व नं. १६ माधुसिंह के लिये कोई ज्यादह हाल उपलब्ध नहीं हुआ परन्तु नं. १७ इन्द्रभाण के हाथ से बूंदी के हाडा चौहानों ने मऊ का राज्य छीन लिया वैसा भा. रा. मं. के ग्रंथ में उल्लेख किया है. उक्त ग्रंथ में बूंदी के रावराया रत्नसिंह ने इन्द्रभाण से 'मऊ' ले लेने का लिखा है परन्तु वह भरोसापात्र नहीं है, क्यों कि रावराया रत्नसिंह का समकालिन मऊ के राजा राव गोपालदास था, और गोपालदास से इन्द्रभाण चौथी पुश्त पर हुआ है. इन्द्रभाण के बाद इसके वंशजो के तरफ राज्य होना पाया नहीं जाता है, सिर्फ भारत राजमंडल के ग्रंथ में इसके वंश की नामावली देकर नं. २३ भोपालसिंह के विषय में लिखा है कि वह वि. सं. १८७९ में नृसिंहगढ के युवराज उमट (परमार) चेनसिह की सहायता में सीहोर में अंग्रेज सरकार के साथ युद्ध हुआ उसमें काम आया था, और बाद में इसके वंश का अस्त हुआ.

मालवे के खीची चौहानों की राघोगढ की शाखा के सिवाय शिवगढ, सुतेलिया आदि छोटी २ स्टेट है, और उसके सिवाय मालवे की दूसरी बडी रियासतों में बहुतसी जागीरेंभी विद्यमान है.

मालवे के खीची चौहानों जो गढगागरून के खीची के नामसे मशहुर थे उस गढगागरून के राज्य का हाडे चौहानों के बार बार होते आक्रमण से अस्त होकर वह भूमि हाडौती में जा मिली, जिससे खीची चौहानों को बहुत हानी हुई. इसी कारण से खीचीवाडे के खीचीओं के पास सिर्फ राघोगढ व खीलचीपुर नामकी दो रिसायतें रही, उसमें से भी राघोगढ की रियासत का बहुतसा हिस्सा मरहठों ने लेलिया, जिससे अंग्रेज सरकार के समय में उसकी हैसियत कम होगई और सिर्फ खीलचीपुर के खीची चौहानों को एक ही तोपों की सलामी वाली रियासत मालवे में रहने पाई है.

× भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा है कि उमट राजपूतों ने चक्रसेन को मार कर ब्यावरा लेलेने से उग्रसेन अकबर बादशाह के पास भाग गया और जब अकबर बादशाह मालवे में आसिरगढ पर चढाई लाया तब उग्रसेन भी उसके साथ आया. आसिरगढ फतह होने बाद बादशाह ने इसको १ खीलचीपुर, २ ब्यावरा, ३ चाचरणी, ४ बेल्लणपुर, ५ डकीवाडा, व ६ भोल्वाडा, यह छः परगने दिये और शिका व पोशाक इनायत किया.

२ वंशवृक्ष खीलचीपुर के खीची चौहान.

खीलचीपुर के राव उग्रसेन से लगाकर वर्तमान समय तक के राजाओं के नाम खीलचीपुर रियासत की हस्त लिखित ख्यात व भारत राजमंडल के ग्रंथ, इन दोनों ख्यातों का मुकावला करते ठीक २ मिलते हैं. जिससे इन पर नजर दे यह वंशवृक्ष अंकित किया गया है.
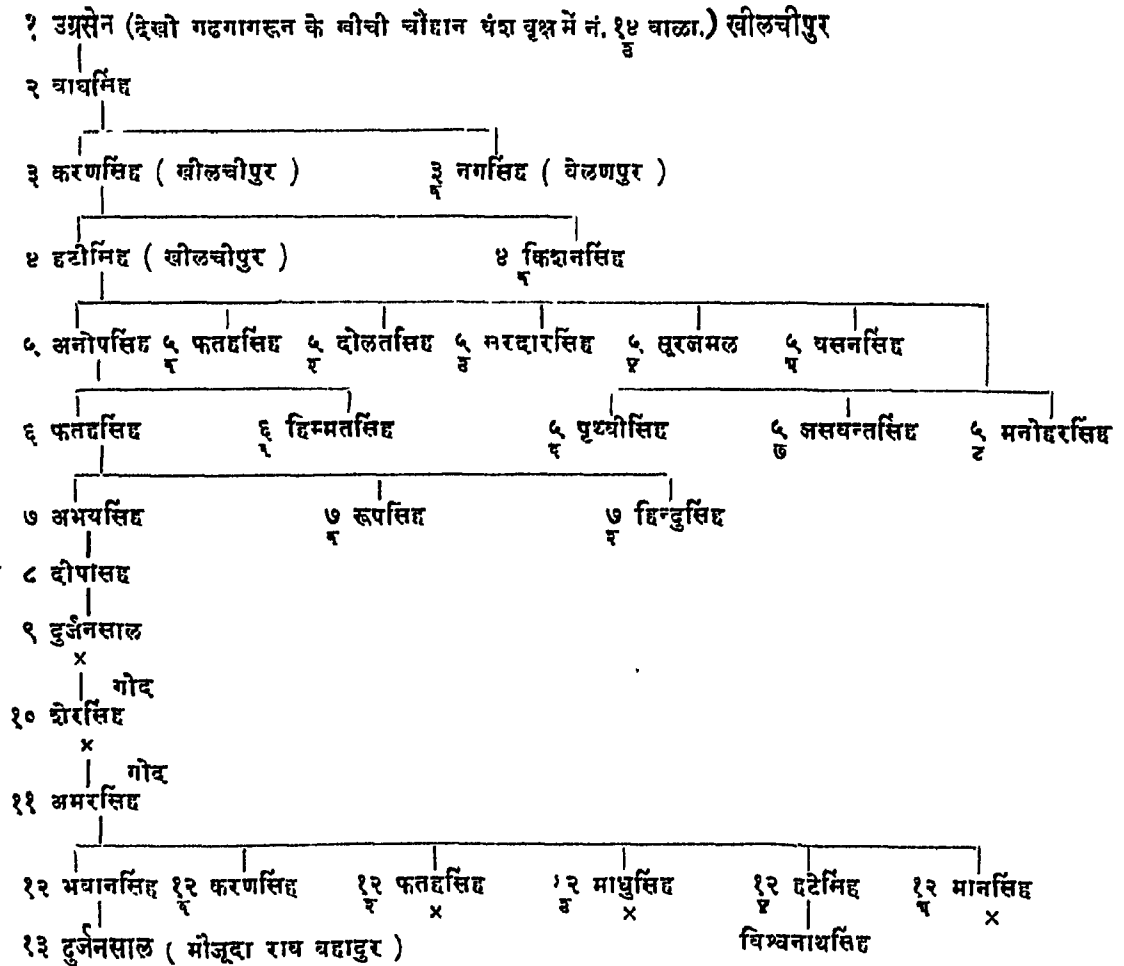
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ राव उग्रसेन 'खीलचीपुर' रियासत के स्थापक व मूल पुरुष है. इसके विषय में अगले प्रकरण में अहवाल अंकित हुआ है, उस मुआफिक अकबर बादशाह ने (वि. सं. १६००) ई. स. १५४४ में छः परगने देकर खिल्लत बक्षी थी लेकिन उन पगरनों के सिवाय 'जीरापुर, मोसालपुर, व सुजालपुर' परगने भी 'खीलचीपुर के तहेत में दिये थे, ऐसा मालवे के गेझेटियर में उल्लेख किया गया है.

नं. २ राव बाघसिंह के समय में जहांगीर बादशाह ने बूंदी के रावराया रत्नसिंह को खीचीवाडा बक्ष कर खीचीओं को मार कर उनका देश छीन लेने की आज्ञा दी थी, और मुगल व हाडों की फौज ने सामिल होकर इस पर आक्रमण किया. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि जब कि मुगल व हाडों की फौजने 'चाचरणी' पर हमला किया तब खीची बाघसिंह की माता (उग्रसेन की राणी) सिंधलजी 'गोपालदे' ने बक्तर पहिन कर उसके साथ युद्ध किया, और मुगल व हाडों की फौज को सफलता होने नहीं दी. बल्कि वह विद्यमान रही वहां तक युद्ध करती रही और चाचरणी का रक्षण किया. उसका देहान्त हो जाने बाद नवशेरखान ने चाचरणी छीन लिया. भा. रा. सं. के ग्रंथ में लिखा है कि राव बाघसिंह जहांगीर बादशाह के समय में था, और बूंदी के राव रत्नसिंह ने उससे चाचरणी छीन लिया था. खी. रि. ह. लि. ख्यात में राव बाघसिंह के लिये कुछ भी लिखा नहीं है.

नं. ३ दिवान करणसिंह ई. स. १५६७ (वि. सं. १६२३) में गद्दी पर बैठने का खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात में अंकित हुआ है, परन्तु वह *संवत् गलत् है क्यों कि इस संवत् में मुगल बादशाह अकबर था, और दिवान करणसिंह के समय में 'शाहजहां' बादशाह होनेका भा. रा. सं. के ग्रंथ में स्पष्ट उल्लेख हुआ है. उक्त ग्रंथ में लिखा है कि करणसिंह को शाहजहां बादशाहने दिवान की पदवी दी. दिवान करणसिंह व उसका भाई नगसिंह शाहजहां बादशाह की सेवा में थे, और ये दोनों भाई बारह वर्ष तक बंगाला में तहनात रहे थे. बादशाह ने नगसिंह को 'बेलनपुर' परगना बक्षा था. खी. रि. ह. लि. ख्यात में करणसिंह बादशाह की सहायता में बंगाले पर चडे थे, ऐसा उल्लेख किया गया है.

नं. ३/३ नगसिंह के तरफ बेलनपुर परगना था, परन्तु बूंदी के रावराया छत्रसाल ने उसपर चडाई करके मार डाला और बेलनपुर छीन लिया, ऐसा भा. रा. सं. के ग्रंथ में उल्लेख किया गया है. खी रि. ह. लि. ख्यात में नगसिंह का नाम नहीं है.

नं. ४ दिवान हरीसिंह खीलचीपुर की गद्दी पर बैठा. इसने खीलचीपुर शहर के आसपास कोट बनाया ऐसा खी. रि. ह. लि. ख्यात में लिखा है.

---

* खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात में नं. ३ दिवान करणसिंह के गद्दी बैठने का समय ई. स. १५६७, नं. ४ हरीसिंह का समय ई. स. १५९९, नं. ५ करणसिंह का समय ई. स. १६५६, नं. ६ फतहसिंह का समय ई. स. १७१८ व नं. ७ अमरसिंह का समय ई. स. १७५० का अंकित हुआ है, उनमें अमरसिंह का समय 'मालवा गॅझेटियर' में लिखा हुआ सन के साथ मिलता है. उसके पहिले के दूसरे राजाओं के समय की तसदीक होनेका साधन नहीं है.

नं. ४/१ किशनसिंह का नाम खी. रि. ह. लि. ख्यात में नहीं है, परन्तु भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा है कि यह करणसिंह के द्वितीय पुत्र था, और बादशाह शाहजहां ने इसको 'रनाला व दांहेला' की हकुमत पर नियत किया था.

नं. ५ दिवान अनोपसिंह ई. स. १६५३ (वि. सं. १७०९) में खोलचीपुर की गद्दी पर बैठा. भा. रा. मं. के ग्रंथ में इसके ओर भाइओं के नाम भी अंकित हुए है और यह औरंगजेब बादशाह के समय में होनेका उल्लेख हुआ है. खी. रि. ह. लि. ख्यात में इस के भाईओं के नाम नहीं है.

नं. ५/१ से नं. ५/८ तक जो नं. ५ अनोपसिह के भाई है, उनके विषय में सिर्फ नाम अंकित हुए है ज्यादह तफसिल नहीं है.

नं. ६ दिवान फतहसिंह ई. स. १७१८ (वि. सं. १७७४) में गद्दी पर बैठने का खी. रि. ह. लि. ख्यात में अंकित हुआ है. भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा है कि यह बादशाह महमुद के समय में विद्यमान था.

नं. ६/१ हिम्मतसिंह का नाम खी. रि. ह. लि. ख्यात में नहीं है, परन्तु भा. रा. मं. के ग्रंथ में अंकित हुआ है, और इसके विषय में उक्त ग्रंथ में लिखा है कि इसने अपना वकील पद्मसिंह को बाजीराव पेश्वा के पास चाकरी करने के वास्ते भेजा था.

नं. ७ दिवान अभयसिंह ई. स. १७७० (वि. सं. १८३६) में गद्दी पर बैठा, ऐसा खी. रि. ह. लि. ख्यात में लिखा है. मालवा गेझेटियर में खीलचीपुर के इतिहास में उल्लेख किया गया है कि राव उग्रसेन को मुगल बादशाह ने जागीर दी थी उसमें से दिवान अभयसिंह के समय में ई. स. १७७० में जीरापुर व मासलपुर परगने इंदोर के तरफ गये और सुजालपुर परगना ग्वालियर के तरफ गया.

नं. ७/१ रूपसिंह का नाम खी. रि. ह. लि. ख्यात में प्रथम अंकित हुआ है तब भा. रा. मं. के ग्रंथ में यह तीनों में छोटा भाई होनेका लिखा गया है. इसके वंशज बावडीखेडा, भूमरिया व अमानपुरा आदि जागीरें पर विद्यमान है.

नं. ७/२ हिन्दुसिंह के वंशजो 'जेतपुरा' आदि जागीरें पर मोजूद है.

नं. ८ दिवान दिपसिंह ई. स. १७९५ (वि. सं. १८५१) में गद्दी पर बैठा. इसने सोमवारिया नदी के किनारे पर अपने नाम से दिपगढ वसाया.

नं. ९ दिवान दुर्जनसाल ई. स. १८०० (वि. सं. १८५६) में गद्दी पर बैठा. मूता नेणसी की ख्यात से पाया जाता है कि सैंधिया ने खीची चोहानों का राज्य छीन लिया उस समय राजा दुर्जनसाल ने पठाण अमीरखां को अपनी सेवामें रखा था. टॉड राजस्थान की पुस्तक में लिखा है कि वि. सं. १८५६ में महाराष्ट्रि गणेशपंत और लखवादादा इन दोनों के दरमियान बनास नदी के तट पर युद्ध हुआ तब गणेशपंत की सहायता में ज्योर्ज टॉमस नामक अंग्रेज सेनापति था, और लखवादादा की सहायता में खीची राजा दुर्जनसाल, मेवाड के सरदारों तथा ५०० सवारों के साथ उपस्थित होकर गणेशपंत किसी की सहायता प्राप्त नहीं कर सके उसके लिये गणेशपंत की छावणी की चारों तरफ घुम रहा था, परन्तु अंग्रेज सेनापति ने उसका श्रम निष्फल कर दिया. भा. रा. मं. के ग्रंथ में लिखा है कि दिवान दुर्जनसाल इ. स. १८१९ (वि. सं. १८७५) में अपुत्रवान गुजर गया, जिससे उसकी माता व राणी ने बलवंतसिंह नामक भायात को राज्य शासन का अधिकार सुपुर्द किया, परन्तु 'अमानसिंह' नामक हकदार वारिस ने अंग्रेज सरकार के आगे अपना हक होनेका दावा पेश किया, जिसका स्वीकार होनेसे अमानसिंह के पुत्र शेरसिंह को गद्दी प्राप्त हुई.

नं. १० दिवान शेरसिंह ई. स. १८२० (वि. सं. १८७६) में गद्दी पर बैठा, और ता. २७ नवेम्बर सन १८६८ (वि. सं. १९२५) में अपुत्रवान गुजर गया जिससे अमरसिंह उसके गोद आया. (भा. रा. मं. के ग्रंथ से.)

नं. ११ राव बहादुर अमरसिंह ई. स. १८६९ (वि. सं. १९२५) में गद्दी पर आया. खीलचीपुर रियासत के राजाओं को पहिले 'राव' या राजा की पदवी थी, लेकिन नं. ३ करणसिंह को +'दिवान' की पदवी बादशाह ने दी थी. दिवान अमरसिंह को अंग्रेज सरकार ने ता. १८ एप्रील सन १८७३ ईस्वी के रोज 'राव बहादुर' का खिताब मौरुसी (वंश परंपरा के लिये.) इनायत किया. और 'राव बहादुर राजा साहिब खीलचीपुर' के इलकाब से खरिते में तहरीर होने लगी व नौ तोपों की सलामी हुई. इसके छः कुमारों में बडे भवानसिंह खीलचीपुर की गद्दी पर आया.

नं. १२ राव बहादुर भवानसिंह ई. स. १८९९ (वि. सं. १९५५) में गद्दी पर बैठा. इसको तीर्थ यात्रा पर बडा प्रेम था. खी. रि. ह. लि. ख्यात में लिखा है कि इसने चारों

+ 'दिवान' की पदवी एक किस्म का बहुमान है. मेवाड के महाराणा 'दिवाण' कहेलाते है. नृसिंहगढ के राना को भी दिवान पद था. पालणपुर राज्य के नवाब 'दिवान' कहे जाते हैं. पाया जाता है कि बडे व छोटे भाईओं का अलग २ राज्यस्थान होने पर छोटे भाई को 'दिवान' पद मिलता था.

मौजूदा महाराजा साहब खिलचीपुर.

राव बहादुर राजा साहब दूर्जनसाल बहादुर.

[विभाग पहिला पृष्ठ ११९ नं. १३]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

धामों (द्वारिका, वद्रीनारायण, जगन्नाथ व रामेश्वर.) की दो दो दफे यात्रा की, जिसमें वद्रीनारायण व नाथद्वारा पैदल चलकर गये थे. इसके भाईओं में नं. $\frac{१२}{१}$ करणसिंह विद्यमान है. नं. $\frac{१२}{२}$ फतहसिंह, नं. $\frac{१२}{३}$ माधुसिंह व नं. $\frac{१२}{८}$ मानसिंह यह तीनों भाई वालकपन में स्वर्गवासी हुए थे.

नं. $\frac{१२}{४}$ हटेसिंह के पुत्र विश्वनाथसिंह 'अशोथर' में गद्दी पर वैठा, जो वहां पर विद्यमान है.

नं. १३ राव वहादुर दुर्जनसाल खीलचीपुर के मोजूदा राजा साहवि है, इसका जन्म ता. २६ ऑगष्ट सन १८९७ ईस्वी को हुआ. ता. २८ जनवरी सन १९०८ ईस्वी को गद्दी पर वैठा, और ता. २३ फरवरी सन १९१८ ईस्वी को रिसायत का पुरा अखत्यार से राज्य करने लगे. (मा. गेझेटियर से.) ता. ६ मार्च सन १९१८ ईस्वी के रोज युवराज यशोधरसिंह का जन्म हुआ है.

प्रकरण १५ वाँ.

गुजरात के खीची चौहान.

खीची चौहानों की गुजरात में छोटाउदयपुर व वारीया नामकी दो वडी रियासतें व कितनीक छोटी २ स्टेट (तालुकदारी) अंग्रेज सरकार के संरक्षण में हैं, वैसे दूसरी रियासतों में जागीरें भी हैं. इनका राज्य पहिले पावागढ के पास चांपानेर नामक नगर में था. रासमाला नामक पुस्तक में लिखा है कि ' चौहानों ने चांपानेर में राज्य कौन समय में स्थापन किया उस विषय में कल्पना करना फ़ुज़ूल है. ' भावार्थ यह है कि खीची चौहानों ने चांपानेर में राज्य स्थापन किया, वह समय निश्चय करनेका कोई ऐतिहासिक साहित्य प्राप्त नहीं हुआ है.

गुजरात के खीची चौहानों की ख्यात बोम्बे गॅझेटियर, रेवाकांठा डायरेक्टरी, व रासमाला आदि पुस्तकों में लिखी गई है, उनमें यह स्वीकार हुआ है कि +'पालनदेव' नामक खीची चौहान ने चांपानेर में राज्य स्थापन किया और वह पालनदेव मालवे के गढ गागरून के खीची चौहानों के वंशज था. लेकिन इस पुस्तक के प्रकरण १४ वां में जो अहवाल अंकित किया गया है, उससे स्पष्ट मालूम हो चुका है कि गढ गागरून के राव अचलदास के पुत्र 'पालसी उर्फ़ पालनदेव' था, और वह गुजरात के तरफ़ आया था.

पालनदेव गुजरात में कब आया? उस विषय में मालवे के खीची चौहानों की ख्यात से * मालूम हुआ है कि गढ गागरून सुलतान होशंग ने वि. सं. १४८२ में खीची राव अचलदास से लेलिया था, उस समय पालनदेव गुजरात के तरफ़ आया था.

चांपानेर का राज्य पालनदेव ने किसके हाथ से लिया उस विषय में ' गुजरात राजस्थान ' नामक ÷ पुस्तक में लिखा है कि–" पालनदे की सरदारी में खीचीओं गुजरात

+ छोटा उदयपुर के खीची चौहानों के वास्ते उपर्युक्त पुस्तकों में लिखा गया है कि देहली के महान् पृथ्वीराज के उत्तरोत्तर वंशज का एक पुरुष मालवे में गया, जिनमें सेंगारसिंह नामक पुरुष ने गढ गागरून में राज्य स्थापन किया, उनके वंश में रणथंभोर का हमीर हुआ, और हमीर के वंश में ' पालनदे ' हुआ, उसने गुजरात में आकर पावागढ का राज्य संपादन कर चांपानेर में राज्य गद्दी की. जो कि इसमें महान् पृथ्वीराज की औलाद में सेंगारसिंह होनेका लिखा गया है वह गलत् है, परन्तु पृथ्वीराज से देहली छूटने बाद खीची ' गोसिंह ' ने मालवे में प्रवेश करने का (यानी ' गोसिंह ' का नाम ' सेंगारसिंह ' अंकित हुआ है.) अन्य ख्यातों से भी तसदिक होता है. (देखो इस पुस्तक का प्रकरण १३–१४.) इसी मुआफिक रणथंभोर के हमीर हटाला के वंशज ' पालनदे ' नहीं था, परन्तु बहुओं की पुस्तक में रणथंभोर क हमीर हटाला को ' हमीर खीची ' लिखा गया है. (देखो इस पुस्तक का पृष्ठ १० वां.) जिससे दंतकथानुसार ' पालनदेव ' खीची चौहान होनेसे उसको रणथंभोर के हमीर हटाला की औलाद में होना माना गया है.

* देखो प्रकरण १४ वां में पृष्ठ १०४–१०५ पर.

÷ गुजरात राजस्थान का पुस्तक गुजराती भाषा में श्रीयुत् कालीदास देवशंकर पंड्या ने ई. स. १८८४ में प्रसिद्ध किया है-

की पूर्व दिशा में आये और पावागढ की तलेटी में 'चांपा' नामक भील के पास 'चांपानेर' का राज्य था वह जीत लिया." इससे पाया जाता है कि उस समय में यह देश जंगल की हालत में था, और भीलों से पालनदेव ने लिया.

प्रसिद्धि में आये हुए पुस्तकों में जगह २ यह अंकित हुआ है कि पालनदेव से 'पताई रावल' (जिसके हाथ से पावागढ गया.) तक में चांपानेर की गद्दी पर * १४ राजा हुए, परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से अवलोकन करते वे नाम राजाओं के नहीं होते पालनदेव के पुत्र व पोतें आदि के होना अनुमान होता है, क्यों कि वि. सं. १५४१ में चांपानेर का राज्य पताई रावल के हाथ से गुजरात के महमुद बेगडा के पास चला गया था. यानी पालनदेव गुजरात में आया, और पताई रावल के हाथसे चांपानेर गया उस समय दरमियान सिर्फ ५९ वर्ष का अन्तर है, और ५९ वर्ष में १४ पुश्तें गुजरना असंभवित है.

रासमाला (फार्बस साहिब कृत) की प्रथम विभाग की पुस्तक में लिखा है कि– 'गुजरात के सुलतान अहमदशाह का शाहजादा महंमदशाह ई. स. १४४२ से १४५१ तक गद्दी पर था. उसके समय में ई. स. १४४९ (वि. सं. १५०५) में चांपानेर के रावल गंगदास पर उसने ÷चढाई की थी इससे मालूम होता है कि पालनदेव गुजरात में आया, उसके बाद सिर्फ २३ वर्ष होने पर रावल गंगदास चांपानेर में राजा था. रावल गंगदास का पुत्र जयसिंहदेव उर्फ पताई रावल होना हर एक ख्यात में स्वीकार हुआ है, इससे अनुमान होता है कि शायद पालनदेव के पुत्र ही रावल गंगदास होगा.

ई. स. १४७१ (वि. सं. १५२७) में इडर के राठौर राव भाण ने चांपानेर के रावल के साथ +विग्रह करके उसको पकड कर छः महिने तक इडर में रखने का उक्त पुस्तक में लिखा है. (लेकिन रावल के नाम का उल्लेख नहीं हुआ है).

गुजरात के सुलतान महमुद (बेगडा) ने ता. १७ मार्च सन १४८३ ई. के रोज चढाई करके पावागढ की तलेटी में फौज का डेरा लगाया और बाद खुद भी वहां आया, उस समय रावल जयसिंह थे, उसने तावे होनेका पैगाम कहलाया, परन्तु महमुदने स्वीकार

* उक्त पुस्तकों में १ पालनदेव के पीछे क्रमशः २ रामदेव, ३ चांगदेव, ४ चाचींगदेव, ५ सोनंगदेव, ६ पालनसिंह, ७ जीतकरण, ८ कंपुरावल, ९ वीरधवल, १० सवराज, ११ राघवदेव, १२ त्रींबकभुप, १३ गंगदास व १४ जयसिंहदेव उर्फ 'पताई रावल' के नाम अंकित हुए है.

÷ गुजराती रा. मा. भाग १ ला के पृष्ट ५४९ पर इस विषय में लिखा गया है कि ई. स. १४४९ में (महंमदशाहने) चांपानेर के रावल गंगदास पर चढाई करके हराया और उसको किले में घुस कर बैठने की फरज पडी, परन्तु रावल ने मालवे के खीलजी बादशाह को अपनी सहायता में बुला लिया, जिससे महंमदशाह को हार कर भागना पडा.

+ विग्रह होनेका कारण यह बताया है कि राव भाण का रंग श्याम व बदन दुबला पतला था. चांपानेर के रावल ने नाटक कराया जिसमें विदूषक से राव भाण का वेश रावल ने बनाने का कह कर उनकी नकल कराई, जो मालुम होनेसे राव भाण ने उस पर चढाई की.

नहीं करने से युद्ध शुरु हुआ, राजपुतों ने ऐसी वीरता से हमला किया कि महमुद को घेरा उठाने की फर्ज पडी. फिर महमुद ने युद्ध शुरु किया, जिसमें राजपुतों को पीछा हठना पडा और मुसलमानों ने दूवारा घेरा डाला, जिस पर रावल ने मालवे के सुलतान की सहायता चाही. मालवे का सुलतान सहायता के लिये तत्पर हुआ परन्तु महमुद ने उस परभी चढाई लेजाने से उसने सहायता करने का मुलतवी कर दिया. ता. १७ नोवेम्बर सन १४८४ ई. के दीन मुसलमानों ने किले के गुह्यद्वार पर कब्जा कर लिया. पताई रावल ने वीरता से केशरियां किया परन्तु सफलता न मिली और जख्मी हालत में रावल व उसका प्रधान डुंगरसिंह को महमुद ने पकड लिये, और बाद में मार डाले.

इस विषय में किसी कविने कहा है कि—

" संवत पंदरह प्रमाण, एकतालो संवत्सर; पोष मास तिथि त्रीज, वदे हु वार रवि सु दिन. "
" मर शिया खट भूप, प्रथम वेरसी पडीजे; जाडेजो सारंग, करण, तेजपाल कहीजे. "
" सरवरियो चंद्रभाण, पताई काज पिंडज दियो; मेमदावाद मेहेराण लघु कटक सर पावों लियो "

(रा. मा. पु. पृष्ट ६३१.)

उक्त पुस्तक में (रासमाला में) दंतकथानुसार लिखा गया है कि पावागढ की 'कालिकादेवी' नवरात्री के दीनों में मनुष्य के रूप में दूसरी स्त्रीओं के साथ + गरवा गाने के वास्ते आई थी, उसको देख कर रावल ने मोहांध बन कर उसका पल्ला पकडा जिससे देवी ने शाप दिया कि तेरे राज्य का नाश होगा.

चांपानेर पर महमुद ने चढाई लेजाने के विषय में यह भी उल्लेख किया है कि यह घटना होने पहिले सुलतान ने अचानक पांच लाख फौज से पावागढ पर आक्रमण किया था, लेकिन पताई रावल ने उसको सफलता प्राप्त होने न दी, जिससे बारह साल तक घेरा डाल रखा, और निष्फल होनेसे सुलह कर ली. सुलह की संधी में यह बात तय पाई कि सुलतान कभी चांपानेर के राज्य में हस्तक्षेप नहीं करे, और रावल अपना *'लोवा' नामक ब्राह्मण पुत्र (जो चालाक लडका था और रावल के पास था.) को सुलतान को सुपुर्द करे. यह अहदनामा की शर्त पुरी करने को रावल ने 'लोवा' को दे दिया और सुलतान ने 'गादोतरा' लिख कर 'कोई मुसलमान चांपानेर न लेवे.' ऐसी प्रतिज्ञा का शिलालेख लिख दिया, परन्तु बाद में उस प्रतिज्ञा का पालन नहीं हुआ, और चांपानेर कब्जे करके वहांपर 'महमुदाबाद चांपानेर' नामका नगर बंधवाया गया.

+ कालिका माता ने पताई रावल को शाप देनेके विषय में गरवे में भी वृत्तांत मिलता है. कोइ कहते हैं कि यह शाप देने वाली स्त्री कालिका नामकी एक ब्राह्मण की कन्या थी.

* लोवा ने सुलतान चडाई लानेकी बात इस पर से ताड ली थी कि सुलतान ने चांपानेर के किल्ले तरफ देख कर मूछ पर ताल दी थी, वह लोवा ने देख कर रावल को सावधान कर लिया था.

मूता नेणसी की ख्यात में चांपानेर लेनेके विषय में लिखा है कि महमुद वेगडाने पावागढ के पताई रावल पर चढाई की और वारह साल तक घेरा डाल रखा. पताई रावल का साला ' सइया वांकलिया ' (सरवरिया राजपूत) था, उस पर ज्यादह विश्वास होनेसें रावल ने गढ की कूंची उसको दे रखी थी, लेकिन सइया वांकलिया की नियत में फर्क आनेसे उसने सुलतान को मिल कर गढ की कूंची उसको दे दी. गढ का दरवाजा खुलने से सुलतान की फौज गढ पर आई, तव राजपूतों ने केशरियां किया और लड कर काम आने लगे, राणीयां ने पहिले से ही झमर खडक रखा था वे उसमें गीर कर जलने लगी, सइया वांकलिया मारे जाते राजपूतों के नाम सुलतान को सूना कर उनकी राजपूताणी के अग्नि प्रवेश का दृश्य दिखलाता था और सुलतान उन राजपूत, राजपूताणीयां को धन्यवाद देकर उनकी प्रशंसा करता था, सव राजपूत काम आजाने पर सुलतान ने खजाने का हाल सइया वांकलिया से जान लिया और अवशेष राजपूतों के सिर काट कर ईकट्ठे किये, वाद ' सइया वांकलिया ' का सिर काट कर उन सव के उपर रख कर कहा कि " जिसका वहुत खाया था उसका भी नहीं हुआ सो हमारा कहांसे होगा ! "

सुलतान महमुद ने पावागढ जीत लेने पर वह ' वेगडा ' कहलाया, क्यों कि गीरनार व पावागढ नामक दो वडे दुर्ग जीत लेनेसे उसकी वहुत नामवरी हुई थी. रासमाला को पुस्तक में लिखा है कि पावागढ जीतने के कार्य में इडर के राठौर राव भाण ने उसकी सहायता की होगी, ऐसा अनुमान किया गया है, वह योग्य है क्यों कि सिरोही की ख्यात से मालूम होता है कि सिरोही के महाराव लखा व इडर के राव भाण दरमियान वहुत मित्राचारी थी और उसी कारण से सिरोही इलाके के गांव 'लास' में सोलंकी भोजराज को मारने के कार्य में इडर के राव भाण ने महाराव लखा को स्वयं आकर सहायता की थी. सिरोही के महाराव लखा महमुद वेगडा ने पावागढ सर किया तव उसकी सहायता में गया था, जिसके वदले में राणा कुंभा से आवु पहाड का कब्जा पुनः प्राप्त करने में गुजरात के सुलतान ने अपनी फौज दी थी. सिरोही की ख्यात में यह भी उल्लेख है कि पावागढ पर से कालिका माता की मुर्ति हाथी पर वैठा कर महाराव लखा ले आया था जो वर्तमान समय में भी विद्यमान है.

चांपानेर के अंतिम रावल जयसिंह उर्फ पताई को तीन पुत्र थे, जिसमे १ रायसिंह का देहान्त पहिले ही हो चूका था, लेकीन रायसिंह के पुत्र पृथ्वीराज व डुंगरसिंह थे उन्होंने नर्मदा नदी के तट पर ' हांफ ' गांव में अपना राज्य स्थापन किया. २ लिंवा, चांपानेर के राज्य की पडती देख कर भाग गया. ३ तेजसिंह केद हो गया उसको मुसलमान वनाया गया, जिसके वंशज रेवाकांठा में वर्तमान समय में १ अगर, २ वनमाला, ३ अलवा, ४ देवलिया आदि ताल्लुकों के ताल्लुकदार है.

रायसिंह के पुत्रों ने हांफ में निवास स्थान करके वगावत (लूटफाट) शुरू किया, जिससे गुजरात के सुलतान ने उनको कितनेक गामों की चोथ देना स्वीकार किया. उन्होंने स्वपराक्रम से आस्तह २ अपने राज्य की सीमा वढाई और राजपीपला से गोधरे तक का देश कब्जे किया, जब कि दोनों भाईओं दरमियान बटवारा हुआ तव वडे भाई पृथ्वीराज के तरफ 'मोहन' (छोटा उदयपुर) व छोटे भाई डुंगरसिंह के तरफ 'बारिया' आया. जो उनके वंशज के तरफ वर्तमान समयमें भी है.

उपर्युक्त हकीकत से चांपानेर के खीची चौहानों का वंशवृक्ष निम्न होना योग्य है.

१ वंशवृक्ष चांपानेर (पावागढ) के खीची चौहान.

१ पालनदेव (देखो मालवा के खीची चौहान (गढ गागरून के खीची वंशवृक्ष में नं. १/२ वाला) के प्रकरण में पृष्ट १०५ पर.)
(वि. सं. १४८२ में गुजरात तरफ आया.)

२ गंगदास (वि. सं. १५०५ में विद्यमान था.)

३ जयसिंहदेव उर्फ पताई रावल (वि. सं. १५४१ में काम आया.)

४ रायसिंह | ४/५ लिंबा (भाग गया.) | ४/६ तेजसिंह (मुसलमान बनाया गया.)

५ पृथ्वीराज (हांफ वाद में छोटाउदयपुर.) | ५/६ डुंगरसिंह (बारिया)

नोट—उपर्युक्त वंशवृक्ष के रावलों का इतिहास पहिले ही आ चूका है. अन्य प्रसिद्धि में आये हुए पुस्तकों मुताबिक इस वंशवृक्ष में बारह पुश्तों के रावलों के नाम बाद किये गये है, उसका कारण यही है कि ऐतिहासिक दृष्टि से संशोधन करते वे नामके पुरुष नं. १ व, नं. ३ के दरमियान में होनेका कोई प्रमाण नहीं है, वैसे संवतों का मिलान करते इतनी पुश्त गुजरना असंभवित है, जिससे इस पुस्तक के लेखकने अपनी अल्प मतिनुसार अपनी राय से यह वंशवृक्ष अंकित किया है. उम्मेद है कि इतिहास वेत्ताओं की तरफसे इसमें कुछ गलती हुई हो तो वह सुधारने की तजवीज होगी. अफसोस यही है कि गुजरात के खीची चौहानों का इतिहास इतना अपूर्ण है कि हांफमें राज्यस्थापन होने बाद के राजाओं की नामावली में पृथ्वीराज से वाजी रावल तक में कौन २ राजा हुए उनके नामों के वास्ते भी शंका होने जैसा दिखाई देता है, बल्कि बादमें भी कई एक नाम जगह २ 'मालूम नहीं' होना अंकित हुआ है. इस सूरत में प्राचीन इतिहास में अपूर्णता होवे उसमें आश्चर्य नहीं है.

२ वंशवृक्ष छोटाउदयपुर के खीची चौहान.

१ पृथ्वीराज (चांपानेर के खीची चौहानों के वंशवृक्ष में नं. ५ वाला हांफ.)

वाद में कितनीक पुश्त पर नं. ७ जशवंतसिंह हुआ, उसका नाम वाजीरावल होगा ऐसा अनुमान किया है. (गु. रा. पृष्ट १७४ की टीप.)

२ करणसिंह

(देखो पीछे के पृष्ट पर)

नोट—यह वंशवृक्ष में नं. २ से नं. ७ तक के नाम किस आधार से अंकित किये गये है वह किसी जगह खुलासा नहीं हुआ है, और इन नाम वाले राजाओं का कुछ भी इतिहास किसी तवारिख में मिलता नहीं है. इस लेखक की राय में गुजरात के खीची चौहानों की ख्यात बहुत अपूर्ण है. अगर उस प्रदेश की प्राचीन दंतकथा, भाट चारणों के गीत कवित्त और राज्य के आश्रित वहीवंचा वगैरह से ज्यादह तलाश की जाय तो कुछ न कुछ फायदा होने की उम्मेद रहती है.

उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ रावल पृथ्वीराज ने हांफ उर्फ मोहन में अपना राज्य स्थापन किया. फारसी तवारिख से मालूम हुआ है कि 'मोहन' का राज्य ६० कोस लंबा व ४० कोस चौडे

विस्तार में था. उस देश में जंगली हाथी ज्यादह थे, और वहां के चौहान राजा के पास में ६०० घोडे सवार और १५००० पैदलों की सेना थी.

नं. २ से नं. ७ जसवंतसिंह तक के वास्ते ज्यादह अहवाल मालूम नहीं हुआ है, लेकिन 'बाजीरावल' नामक राजा ने छोटा उदयपुर में राज्यस्थान किया, जिसके समय में मुगल सत्ता कमजोर हुई व मरहठों की बढती होने लगी थी. यह बाजीरावल का दूसरा नाम जशवंतसिंह होगा ऐसा गुजरात राजस्थान के पुस्तक में अनुमान किया गया है.

नं. ८ रावल दुर्जनसिंह, बाजीरावल के गोत्री भाई था, और बाजीरावल अपुत्रवान होनेसे उस के गोद आया.

नं. ९ रावल समरसिंह, रावल दुर्जनसिंह के भतीजा था. और दुर्जनसिंह अपुत्रवान होनेसे उसके पीछे गद्दी पर बेठा.

१० रावल अभयसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसका देहान्त घोडे से गीरजाने से हुआ था.

नं. ११ रावल रायसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर आये. बारिया रियासत की ख्यात से मालूम होता है कि बारिया का राजा रावल गंगदास ई. स. १८१७ (वि. सं. १८७३) में इसके आश्रय में रहा था. ई. स. १८१९ (वि. सं. १८७५) में इसका देहान्त हुआ.

नं. १२ रावल पृथ्वीराज अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसके समय में इस रियासत से गायकवाड का ताल्लुक हट कर वि. सं. १८७८ में रु. १०५०० गायकवाड सरकार का टांका (खंडणी) मुकरर हुआ, व अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा हुआ, और इसी संवत् में इसका देहान्त हुआ. यह अपुत्रवान होने के कारण इसके काका के पुत्र गुमानसिंह गद्दी वारिस हुआ.

नं. १३ रावल गुमानसिंह वि. सं. १८७८ में गद्दी पर बैठा. यह बडे उदार रईस था. वि. सं. १९०७ में इसका देहान्त हुआ. यह अपुत्रवान होनेसे इसके काका मोतीसिंह के पुत्र जीतसिंह गद्दी वारिस हुआ.

नं. १४ रावल जीतसिंह के समय में वि. सं. १९१४ में गदर हुआ, और मरहठा तातीया टोपी ता. २९ नोवेम्बर सन १८५८ ई. के रोज मय तोपखाने के बडी फौज के साथ छोटा उदयपुर आया, उस वक्त रावल के पास बचाव करने जितनी फौज न होनेसे बागीओं ने शहर लूट लिया. लेकिन पीछे से रेवाकांठा के पोलिटिकल एजंट 'मेजर

छोटा उदयपुर के महारावल नं. १६

स्वर्गवासी महारावल फतहसिंह साहब बहादुर,
रिसायत छोटा उदयपुर, (रेवाकांठा)

Lakshmi Art, Bombay, 8.

बकल ' की सहायता आ जाने पर बागी भाग गये. इसका देहान्त वि. सं. १९४७ (ता. ७ जुलाइ सन १८९१ ई.) में हुआ. इसके नौ राणीयां, सात पुत्र व छः पुत्रीयां थी. इस रावल का विचार अपने दूसरे कुमार नं. $\frac{१५}{२}$ चंद्रसिंह को गद्दी देनेका था परन्तु अंग्रेज सरकार ने मंजुर नहीं किया जिससे वडे कुमार मोतीसिंह गद्दी पर बेठा.

नं. १५ रावल मोतीसिंह ता. ११ ऑगष्ट सन १८९१ ई. (वि. सं. १९४७) के रोज गद्दी पर बैठा. इसके राज्याभिषेक के जलूस में पोलिटिकल आसिस्टंट एलन साहिब, आलीराजपुर के राजा रुपदेव व बारिया के रावल मानसिंह आदि शामिल थे. इसके समय में रियासत में अच्छा सुधारा हुआ. ई. स. १८९५ (वि. सं. १९५१) में इसका देहान्त हुआ.

नं. १६ रावल फतहसिंह वि. सं. १९५१ में अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसने राजकुमार कॉलेज में विद्याभ्यास करके अच्छी तालीम हासिल की, और अपने राज्य में पाठशालाएं, सफाखाने, टेलीफोन आदि नये सुधारे करके राज्यहीत व प्रजाहीत के बहुत अच्छे २ काम किये, इसके समय में छोटाउदयपुर से बोडाली तक की रेलवे शुरु हुई. यह महाराजा विद्या विनोदी व प्राचीन ऐतिहासिक साहित्य के वडे प्रेमी थे. आबु पहाड पर हवा खोरी के वास्ते अकसर करके इनका आना होता था. वि. सं. १९६३ (ता. १६ नोवेम्बर सन १९०६ ई.) में युवराज नटवरसिंह, व (ता. ६ मार्च सन १९०९ ईस्वी.) वि. सं. १९६५ में द्वितिय कुमार नाहरसिंह के जन्म हुए.

युरोप की वडी लडाई में रावल साहिब ने अपनी रियासत की मकदूर से भी ज्यादह सहायता अंग्रेज सरकार को देकर अपनी वफादारी प्रदर्शित की थी. ता. २९ ऑगष्ट सन १९२३ ईस्वी (वि. सं. १९७९) में इनका स्वर्गवास हुआ.

नं. १७ रावल नटवरसिंह अपने पिता के पीछे वि. सं. १९७९ में गद्दी पर बैठे. आपने राजकुमार कॉलेज में अपने छोटे भाई नाहरसिंह को साथ रखकर विद्या संपादन की है. नाबालगी के कारण छोटाउदयपुर की रियासत वर्तमान समय में अंग्रेज सरकार की निघरानी में है, और रावल साहिब विलायत की सफर को पधारें है.

३ वंशवृक्ष बारिया (देवगढ बारिया) के खीची चौहान.

बारिया के खीची चौहानों का मूल पुरुष रावल डुंगरसिंह ने अपना राज्यस्थान बारिया में किया, जहां पर ' देवगढ ' नामक किला होनेसे ' देवगढ बारिया ' के नाम से यह रियासत मशहूर है. रावल डुंगरसिंह चांपानेर का राज्य जाने के समय में विद्यमान हो वैसा अनुमान होता है. (जो समय वि. सं. १५४१ था.) डुंगरसिंह से मौजूदा रावल साहिब रणजीतसिंह के दरमियान केवल १२ पुश्तें और होने का बारिया के इतिहास से पाया जाता है. (जिसमें चारसौ वर्ष से ज्यादह समय व्यतित हुआ है.) इससे अनुमान

होता है कि बारिया के खीची चौहान राजाओं की नामावली भी अपूर्ण है, वल्कि रावल मानसिंह जिसके समय में बारिया का राज्य छूट गया था वह ई. स. १७२० (वि. सं. १७७६) में होने का बताया है, जो रावल डुंगरसिंह से पांचवी पुश्त पर है, उस दरमियान २३५ वर्ष होते है, जिससे पाया जाता है कि बीच में दूसरे कितनेक राजा हुए होंगे, वे नाम प्राप्त करने के वास्ते इस पुस्तक के लेखक ने खास करके बारिया रियासत से ख्यात मंगाने की कोशिश की, और वहांके दिवान साहिवने श्रम उठाकर ख्यात भेज दी, परन्तु उसमें प्राचीन इतिहास की अपूर्णता रफे होजाय वैसा न होनेसे प्रसिद्धि में आई हुई ख्यातों मुआफिक ' बारिया ' के खीची चौहानों का वंशवृक्ष अंकित करना फर्ज हुआ है.

वस्तुतः बोम्बे प्रेसिडन्सी के देशी राज्यों में बारिया रियासत की ख्यात से यह पाया जाता है कि जैसे राजपूताना में सिर्फ सिरोही रियासत (देवडा चौहान) मुगल, मरहठा आदि के मातहती में न रहते अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा होनेके समय तक स्वतंत्र रहने पाई है, उसी मुआफिक बोम्बे इलाके के देशी राज्यों में सिर्फ बारिया के खीची चौहानों ने चौहान राजपूतों का प्राचीन गौरव कायम रख कर अपनी +स्वतंत्रता को बेदाग रखी है. बारिया की रियासत में होकर मालवे से गुजरात में आनेका मार्ग होनेसे ई. स. १७८५ (वि. सं. १८४१) में अंग्रेज सरदार मी. मेलेट ने जब बारिया के रावल साहेबखान की मुलाकात की तब रावल साहिब ने उसके साथ दोस्ताना बरताव रखकर हरेक प्रकार की सहायता की थी, और वाद में भी वक्तन फवक्त सहायता करने से सेंन्धिया आदि मरहठे सरदारों ने इस रियासत को बहुत

+ अंग्रेज सरकार के साथ बारिया रियासत का ताल्लुक होनेके समय में बारिया रियासत स्वतंत्र होनेके विषयमें पोलिटिकल अफसरों ने लिखा है कि—

१ मी. मेलेट अपना ता. १ एप्रील सन १७८९ ई. के रिपोर्ट में लिखता है कि—" बारिया के राजा इस समय तक स्वतंत्र रईस है." (देखो बोम्बे मरहठा सिरीझ वोल्युम १ पृष्ट ४९८ पर सिलेकशान फ्रोम स्टेट.)

२ लेफटनट जनरल सर जॉहन मालकम ने ' मेमरिझ ऑफ सेंट्रल इन्डिया ' (इ. स. १८२४) नामक पुस्तक की द्वितिय आवृति में बारिया रियासत को स्वतंत्र राज्य होना स्वीकार किया है.

३ मी. हेमिलटनस साहिब ने अपना ' डीस्क्रिपसनसऑफ हिन्दुस्तान ' नामक पुस्तक के पृष्ट ६८९ में लिखा है कि— " हिन्दुस्तान में इस समय (अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा होनेके समय) में जो गीनती के स्वतंत्र राज्य है, उस पैकी बारिया रियासत भी एक गीनी जासक्ती है. इस रियासत ने किसी को टांका (खंडणी) नहीं दिया है; इतनाही नहीं परन्तु नजदीक के (दूसरे के ताबे के) परगनों से 'चोथ' यह रियासत वसुल करती है.

नोट—बारिया रियासत पर ई. स. १८२४ तक अंग्रेज सरकार की भी खंडणी नहीं थी, लेकिन नं. १३ पृथ्वीराज रावल के नाबालगी के समय में ' जीजीभाई ' नामक कारभारीने बेवफा होकर रू. १२०००) की खंडणी अंग्रेज सरकार को देनेका करार कर दिया, लेकिन अंग्रेज सरकार के न्यायी पोलिटिकल अफसरों को अन्याय होना मालूम होनेसे ता. १२ सप्टेम्बर सन १८९२ ईस्वी के अहदनामे से वह रकम बारिया रियासत को वापिस दिलाई गई. जिससे यह रियासत पर अब किसीकी खंडणी नहीं है; बल्कि जो चोथ लगती थी वह मिल रही है.

नुकसान पुहुंचाया था, और उस नुकसान का बदला देनेको अंग्रेज सरकार के अफसरों ने वादे किये थे, लेकिन उन वादों (Promise) को पूरे नहीं किये तब भी इस रियासत ने अपनी दोस्ताना फर्ज अदा करने में पीछा पैर नहीं दिया वैसा हरएक अंग्रेज अफसरों ने जाहिर किया है.

वारिया रियासत क राजाओं का वंश वृक्ष प्रसिद्धि में आई हुई ख्यातों मुआफिक निम्न अंकित किया गया है.
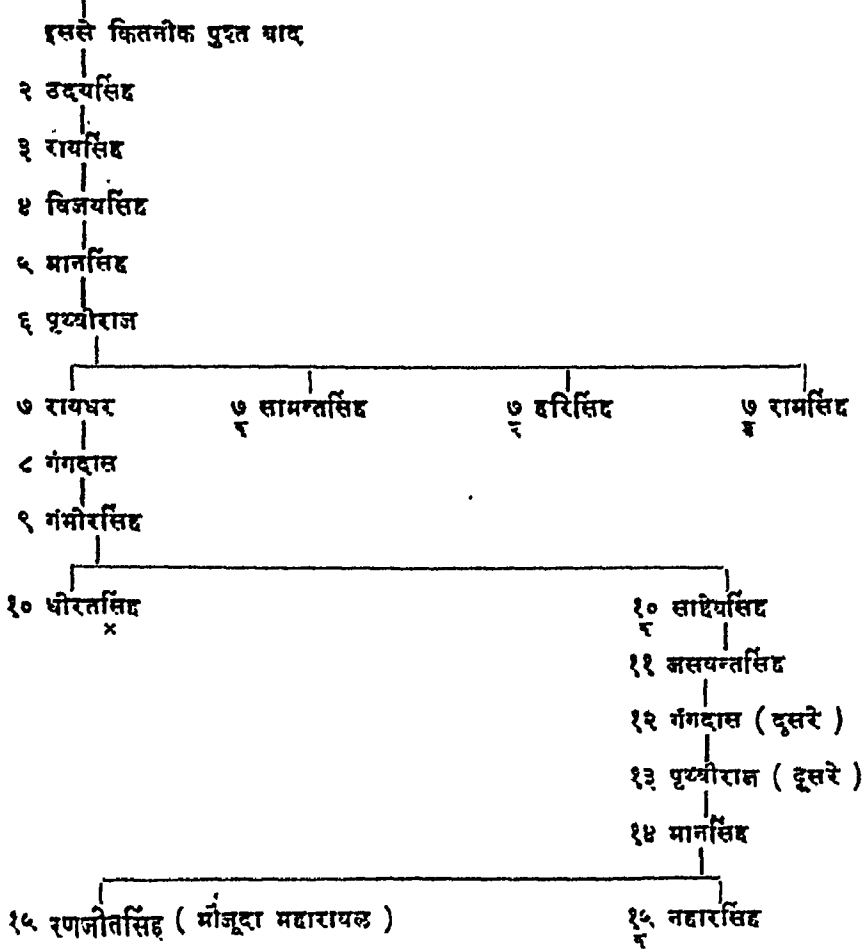
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ रावल डुंगरसिंह ने वारिया जात के मेवासीयों से 'वारिया' संपादन करके वहां अपना राज्य स्थापीत किया.

नं. २ रावल उदयसिंह, नं. ३ रायसिंह, नं. ४ विजयसिंह ये तीनों राजाओं के सिर्फ नाम उपलब्ध होते हे परन्तु उनके समय व ख्यात के विषय में कुछ भी उल्लेख नहीं है.

नं. ५ रावल मानसिंह के हाथ से ई. स. १७२० (वि. सं. १७७६) में वारिया का राज्य छूट गया, और उसका देहान्त होने पीछे एक वलूची सरदार ने इस राज्य पर कब्जा कर लेनेसे मानसिंह की राणी अपना वालक कुमार को लेकर डुंगरपुर के रावल के पास चली गई.

नं. ६ रावल पृथ्वीराज (पहिले) अपनी माता के साथ वारह वर्ष 'डुंगरपुर' के रावल पास रहे. जव यह समजदार हुआ तव ई. स. १७३६ (वि. सं. १७९२) में डुंगरपुर की फौज की सहायता से वलूची सरदार को निकाल दिया, और पुनः कब्जा करके 'देवगढ' का किला वनाया.

इस राजा के समय में मरहठी सैन्य (उदाजी पुंवार, मल्हारराव होल्कर, व जनकोजी सैंधिया की फोज) ने वारिया की सीमा में प्रवेश किया, परन्तु रावल पृथ्वीराज की कुनह से उन्होंने खंडणी नहीं डालते ईसको 'वारिया' राज्य के मालीक होना स्वीकार किया, वल्कि दूसरे लूटेरे वारिया की हदमें न आने पावे उसमें सहायता देनेका मंजुर करके कालोल, हालोल, व दाहोद के परगनों में वारिया रियासत की 'चोथ' लगती थी वह वसुल लेने में रोक टोक नहीं की.

नं. ७ रावल रायधर अपने पिता के पीछे गद्दी पर वैठा. इसने अपने भाई नं. ७/१ सामन्तसिंह, नं. ७/२ हरिसिंह, नं. ७/३ रामसिंह व अपनी दो वहिनों को जागीरें दी. जो उनके वंशजो के तरफ विद्यमान है, उसमें नं. ७/२ हरिसिंह की ओलादवालों के तरफ कालोल परगने की 'हेराल' नामक ताल्लुकदारी है.

नं. ८ रावल गंगदास (पहिले) व उसके वाद नं. ९ रावल गंभीरसिंह और उनके पीछे नं. १० रावल धिरतसिंह वारिया की गद्दी पर वैठे, इतनाही वृतान्त मालूम होता है. नं. १० रावल धिरतसिंह अपुत्रवान गुजरने से उसका भाई साहेवसिंह गद्दी पर आया.

नं. १०/१ रावल साहेवसिंह वडे मिलनसार और कार्य कुशल राजा था. इसके समय में माधोजी सैंधिया राघोवा की तलास में नीकला हुआ वारिया की रियासत में आ पहुंचा, रावल साहेवसिंह ने उसकी अच्छी तरह आगत स्वागत की जिससे सैंधिया ने उससे खुश होकर पोशाक वक्षा. ई. स. १७८५ (वि. सं. १८४१) में अंग्रेज अफसर मीस्टर मेलेट ने रावल साहेवसिंह की मुलाकात की और उससे उसको (मी. मेलेट को) इतना संतोष हुआ कि उसने अंग्रेज सरकार को वारिया के राजा निसवत सव हकीकत निवेदन की जिससे व्रिटीश गवर्मेन्ट ने खास खरीता के साथ पोशाक आदि वारीया के राजा को वक्षे.

ई. स. १७८९ (वि. सं. १८४५) में रावल साहेवसिंह ने सोनगरा चौहान सरदारसिंह को मारकर 'राजपुर' नामक राज्य ले लिया.

नं. ११ रावल जसवन्तसिंह ने संजेली के सोनगरा चौहान वहादुरसिंह को युद्ध में मारा. इसकें समय में सैंधिया का जो मुलक भरूच आदि गुजरात में था वह अंग्रेज सरकार के हाथ में आया, उसका कब्जा लेनेके वास्ते अंग्रेज सरकार के अफसरों का कई दफे वारिया रियासत की हद में आना जाना हुआ, उस समय रावल जसवन्तसिंह ने अंग्रेज सरकार के अफसरों के साथ दिलोजान से दोस्ताना वरताव रख कर सहायता की, जिससे सैंधिया की इस रियासत पर खफ़गी हुई लेकिन रावल ने उसकी परवाह न की.

ई. स. १८०३ (वि. सं. १८५९) में वारिया रियासत का अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा हुआ, लेकिन इस अहदनामा के जरिये से वारिया रियासत को जो लाभ मिलने की आशा थी उसमें कुछ नहीं मिला.

नं. १२ रावल गंगदास (दूसरे) के समय में मरहठों ने पूर्व वैर को याद करके वारिया रियासत पर आक्रमण करके मुलक वैरान करना शुरू किया. रावल गंगदास में राज्य चलाने की शक्ति न होनेसे उसकी माता राज्य कारोवार चलाती थी. मरहठों ने इस रियासत पर अपने हमले वडे जोर से जारी रखे. ई. स. १८०५ (वि. सं. १८६१) में सैंधिया की तरफ से शंभाजी आंग्रे ने रू. १४०००) भुजंगराव नामक सरदार ने रू. ८०००) व होल्कर के फौजी सूवा महिपतराव ने रू. ३३०००) वारिया रियासत से लिये.

ई. स. १८०८ (वि. सं. १८६४) में फिर बापुसाहेव सैंधिया ने वारिया पर आक्रमण किया और रू. २३०००) लिये, इनताही नहीं लेकिन पीछे से इस रियासत में लूट भी चलाई.

ई. स. १८१० से १८१५ (वि. सं. १८६६ से १८७१) तक में मरहठों की तरफ से रामदीन, होल्कर के फौजी सरदार रोशनवेग, व धार का वापु रूघनाथ और गोविन्दराव वोळे आदि मरहठों ने वारिया पर आक्रमण करके खिराज वसुल की.

रावल गंगदास (दूसरे) की माता वहुत बुद्धिमान व राज्य कारोवार में कुशल क्षत्राणी थी उसने नारण दवे नामक ब्राह्मण जो वारिया रियासत में राजगढ परगने का थाणदार था उसको नोकरी में से निकाल दिया था, नारण दवे ने सैंधिया के सूवा किशनाजी की फौज में नोकरी करना शुरू किया, उसके तेहत में १०० घोडेसवार व ४०० पायदल थे, इसने वारिया रियासत पर हमला किया और वाद में सूवा को रू. ५०००) रिशवत देकर १०० घोडेसवार व ३०० पायदल के साथ वारिया के नजदीक पडाव किया, उसने फौज को एक जगह छीपा कर २५ आदमीओं के साथ रात्री के समय वारिया के राज्य महल में प्रवेश किया और निंद्रावश राज माता को जान से मार कर महल लूट कर चला गया. यह घटना ई. स. १८१७ (वि. सं. १८७३) में हुई.

राज माता का खून होनेसे रावल गंगदास वारिया छोडकर छोटाउदयपुर के रावल रायसिंह के पास चला गया परन्तु थोडे ही दिनों में गोध्रे के सूवा का भाई वीठाजी के साथ दवे नारण की लडाई हुई जिसमें नारण दवे सख्त जख्मी होकर मर गया. जिससे रावल गंगदास अपने राज्य में वापिस आगया.

रावल गंगदास के समय में मरहठों के हमलों से रियासत की बरबादी हुई और पंचमहाल जिला जो इनकी सरहद पर था वह सैंधिया के तरफ होनेसे सैंधिया उसके पडोसी हुए परन्तु वारिया रियासन पर कायमी तौर पर कोई खिराज कायम नहीं कर सके, इतनाही नहीं लेकिन सैंधिया के तावे के परगने दाहोद, कालोल व हालोल में वारिया के रावल को जो चोथ लगती थी वह बरावर वसुल लेते रहे, ई. स. १८१९ (वि. सं. १८७५) में इस चोथ की रकम रू ४७५०) तय होकर वारिया रियासत को मिल[illegible] ठहराव हुआ. इसी साल में रावल गंगदास का देहान्त हुआ. इसका पुत्र पृथ्वीराज का जन्म होते पहिले ईसकी राणीने दो लडके गोद लिये जिसमें से भीमसिंह नामक लडके को कारभारी ने गद्दी पर बैठाया लेकिन वह भीलडी के पेट का होनेके कारण जीजीभाई नामक कारभारी ने उसको गद्दी से हटा दिया और पृथ्वीराज जो सच्चा वारिस था जिसको गद्दी पर बैठाया.

नं. १३ रावल पृथ्वीराज (दूसरे) बालक होनेसे कारभारी जीजीभाई राज्य चलाने लगा, इसके समय में बहुत अंधाधुंधी चली. ई. स. १८२४ (वि. सं. १८८०) तक वारिया रियासत के उपर अंग्रेज सरकार या दूसरे किसी की खिराज नहीं थी परन्तु जीजीभाई कारभारी (जिसको वारिया रियासत के इतिहास में विश्वासघाती कारभारी होना अंकित किया है) ने बालराजा के नाम से अंग्रेज सरकार को तारिख २१ एप्रिल सन १८२४ ई. के इकरार से रू. १२०००) सालमशाही की खिराज देना कबुल किया, जो कि जीजीभाई ने अपना अंधाधुंधी कारभार नीभाने के खातिर यह काम किया परन्तु केप्टन मेकडोनल्डे पोलीटीकल ओफिसर ने इसी साल में उसको हटाकर रावल के रिश्तेदार नथुभाई नामक सरदार को कारभारी नियत किया और रावल पृथ्वीराज लायक होने तक अंग्रेज सरकार ने यह राज्य अपनी निगरानी में रखा.

ई. स. १८३८ (वि. सं. १८९४) में इस राज्य के सागटाला नामक परगना के भील नायक केवल ने छोटाउदयपुर व पंचमहाल की हद के भीलों को शामिल कर वलवा किया, उसका समाधान अंग्रेज सरकारने किया लेकिन सागटाला परगने की हुकुमत अंग्रेज सरकार ने अपने हस्तक में लेकर वहां अपनी तरफ से एक थाणदार मुकरर किया.

ई. स. १८५७–५८ (वि. सं. १९१४) के गदर में इस रियासत से अंग्रेज सरकार को

मौजूदा महाराजा साहब (देवगढ) बारिया.

केप्टन महारावल सर रणजीतसिंह साहब बहादुर.

के. सी एस. आई.

[विभाग पहिला पृष्ठ १२९ नं. १९]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

हरएक प्रकार की सहायता दी गई, और वारिया व दामावाव में छावणी रखने की इजाजत दी.

ई. स. १८६४ (वि. सं. १९२०) में रावल पृथ्वीराज का देहान्त हुआ और इसके आठ वर्ष का कुमार मानसिंह गद्दी पर आया.

नं. १४ रावल मानसिंह बालक होनेके कारण राज माता तख्तकुंवरवा रियासत का काम चलाने लगी परन्तु चाहीये जैसा इन्तजाम न होनेसे अंग्रेज सरकार ने दूसरे साल (ई. स. १८६५ में) राज्य का इन्तजाम अपने हाथ में लिया. नाबालगी के समय में इ. स. १८६८ (वि. सं. १९२४) में नारूकोट के तावे के डांडीयापुरा के भील नायक रूपसिंह व जोरीया वगैरह भीलों ने बलवा किया और वारिया रियासत का राजगढ नामक थाणा लूटकर जलादिया.

रावल मानसिंह ने अहमदावाद की तालुकदारी स्कूल व राजकोट की राजकुमार कॉलेज में विद्याभ्यास करके ई. स. १८७६ (वि. सं. १९३२) में राज्य की कुल सत्ता अपने हाथ में ली, इसकी राज्य चलाने की कुशलता देखकर ई. स. १८८१ (वि. सं. १९३७) में सागटाला परगना की हुकुमत अंग्रेज सरकार ने इसको सुपुर्द कर दी. ई. स. १८९२ में अंग्रेज सरकार के न्यायी पोलीटीकल अफसरों ने कारभारी जीजीभाई के समय में जो रू. १२०००) खिराज के लेना शुरू किया था वह वापिस कर वारिया रियासत को खिराज से मुक्त कर दी.

इस महारावल के समय में वारिया रियासत में पाठशालाएं सफाखाने आदि प्रजाहीत व दूसरे सुधारे दाखिल हुए और अच्छी नामवरी पाकर वि. सं. १९६४ (ता. २९ फरवरी सन १९०८ ई. में) में इसका देहान्त हुआ.

नं. १५ महारावल रणजीतसिंह वारिया के मौजूदा महाराजा है इसने राजकुमार कॉलेज में विद्याभ्यास करके फौजी तालीम लेकर ब्रिटीश सैन्य में ऑनररी केप्टन की पदवी पाई है. इसने गद्दी पर आने वाद अपनी रियासत में प्रजाहीत के कार्य के साथ रियासत की तरक्की करने से अंग्रेज सरकार ने उसकी कदर करके के. सी. एस. आई. का मानवंता खिताव इनायत किया है.

मौजुदा महारावल साहव अपने वडाउओं के मुआफिक अंग्रेज सरकार के वफादार और सहायक रहे है. ई. स. १९१३ (वि. सं. १९६९) में सुंथरामपुर की सरहद में भीलों का वलवा हुआ तव उसको रफा करने के काम में आपने ब्रिटीश अफसरों को अच्छी सहायता की थी, वैसे युरोप के महान युद्ध के प्रसंग में वारिया रियासत कम आमदनी वाली रियासत होने पर भी महारावल साहव ने २७० फौज के सिपाही व करीव

रू. १११६०००) की गंजावर रकम और दूसरी लडायक सामग्री अंग्रेज सरकार को अर्पण की थी, इतनाही नहीं परन्तु आप खुद इस युद्ध में हिन्दुस्तानी घोडेसवारों की सातवी टुकडी के साथ फ्रान्स व फ्लेन्डरस की भूमी में युद्ध में उपस्थित हुए थे और जर्मनों ने जब कि लाईझरनिस नामक गांव पर हमला किया तब खाईयों में रहकर उनके साथ मुकाबिला किया था, बल्कि इस विषय में अंग्रेज अफसर मीस्टर विलोची ने लिखा है कि बारिया रियासत ने अंग्रेज सरकार के फायदे में जो जो तजवीजें की है वे उसकी वफादारी को इनसाफ देने के वास्ते काफी सबूत है.

नं. $\frac{१५}{१}$ नहारसिंह मौजूदा महारावल के छोटे भाई है जो ब्रिटीश फौज में लेफ्टनंट कर्नल की पदवी धराते है.

३ वंशवृक्ष मांडवा (रेवाकांठा) के खीची चौहान.

मांडवा के खीची चौहानों का मूल पुरूष गढ गागरून (मालवा) के राव अचलदास का पुत्र प्रतापसिंह है. वह अपने भाई पालनदेव के साथ गुजरात में आया था. पालनदेव ने चांपानेर में राज्य स्थापन करने बाद प्रतापसिंह ने 'कारवण' में ३५० गांव का अलग राज्य स्थापित किया, उसके वंश में नहारसिंह नामक पुरूष हुआ उस पर गुजरात के सुलतान महमुद वेगडा ने चढाई की जिससे वह भाग कर अपने सुसराल 'नंदेरिया' में चला गया. और 'नंदेरिये' का राज्य उसको मिला. वहां से मालसिंह नामक पुरूष ने अपना राज्यस्थान 'चांदोद' (नर्मदा नदी के किनारे पर प्रसिद्ध कस्बा है.) में किया.

प्रसिद्धि में आये हुए इतिहास मुआफिक मांडवा के खीची चौहानों की करीब १६ पुश्तों के नाम जाहिर में आये है. इससे पाया जाता है कि उसमें बहुत सी त्रुटी रहने पाई है, क्यों कि प्रतापसिंह का गुजरात में आनेका समय वि. सं. १४८२ में जबकि राव अचलदास के हाथ से गढ गागरून छूट गया उसके बाद का है, जिसको ५०० वर्ष हुए हैं, इतने अरसे में करीब २५ पुश्तें होना चाहीये, परन्तु दूसरे नाम प्राप्त करने का कोई साधन न होनेसे गुजरात राजस्थान व रेवाकांठा डायरेक्टरी आदि प्रसिद्ध हुए पुस्तकों में जो नाम उपलब्ध होते है उस परसे मांडवा के खीची चौहानों का वंशवृक्ष अंकित किया गया है.

१ प्रतापसिंह (देखो मालवा के खीची चौहान गढ गागरून के खीची चौहान वंशवृक्ष में नं. $\frac{२}{३}$ वाला.)
×
×
|
२ नहारसिंह
×
|
३ मालसिंह
×
×
|
४ वाघसिंह

(देखो पीछे के पृष्ट पर)
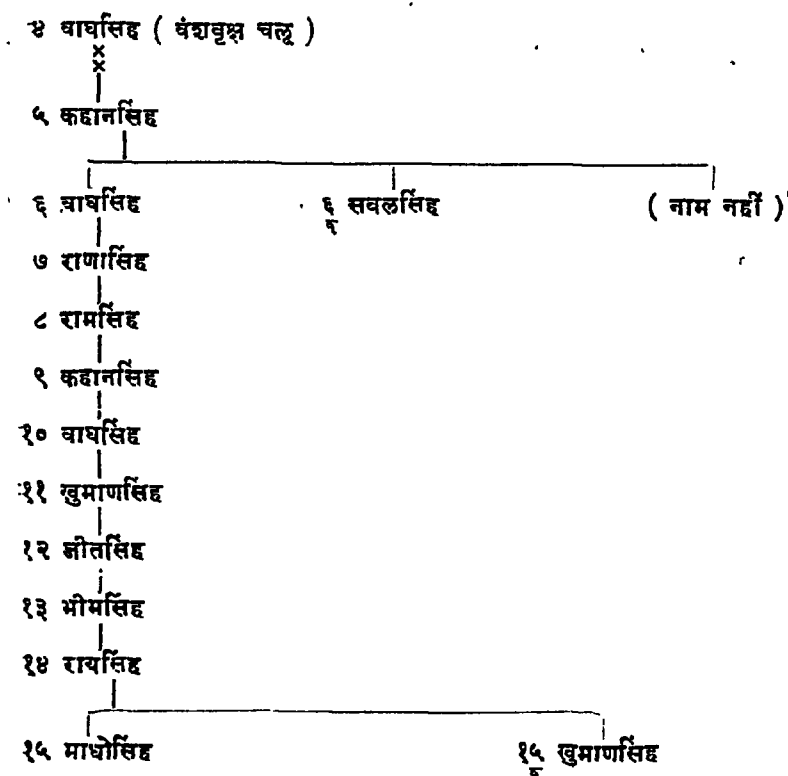
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ प्रतापसिंह ने कारवण में अपना अलग राज्य स्थापन किया.

नं. २ राणा नहारसिंह के हाथ से वि. संवत् की सोलहवी सदी में महमुद बेगडा ने कारवण का राज्य ले लिया. इसकी राणी ' नंदेरिया ' के नंदराजा की पुत्री थी जिससे यह नंदेरिये चला गया और पीछे वह राज इसको ही मिला.

नं. ३ राणा मालसिंह राणा नहारसिंह का पोता होता था. इसने नंदेरिया से राज्य गद्दी हटा कर चांदोद में स्थापित की.

नं. ४ राणा वाघसिंह नं. ३ मालसिंह से कितनीक पुश्त पर हुआ. उसने चांदोद से राज्य गद्दी हटा कर पुराना मांडवा में स्थापित की.

नं. ५ राणा कहानसिंह के विषय में कोई इतिहास जाहिर में नहीं आया है.

नं. ६ राणा वाघसिंहने ई. स. १६६९ (वि. सं. १७२५) में पुराना मांडवा छोड कर मौजूदा मांडवा में अपनी राज्य गद्दी स्थापित की.

नं. ६/१ सवलसिंह को सनोर ताल्लुका मिला. जिनके वंशज के तरफ सनार की ताल्लुकदारी विद्यमान है.

नं. ७ से नं. $\frac{१५}{१}$ तक के राणाओं के नाम मात्र अंकित हुए है, दूसरा कोई इतिहास इनके विषय में प्राप्त नहीं हुआ है.

नं. $\frac{१५}{१}$ राणा खुमाणसिंह अपने वडे भाई माधोसिंह के पीछे ई. स. १८७१ (वि. सं. १९२७) में गद्दी पर बैठा.

नोट—गुजरात के खीची चौहानों में ताल्लुकदार की पंक्ति के मांडवा के राणा के सिवाय सनोर व गढ बोरीयाद के ताल्लुकदार भी है और गुजरात की दूसरी रियासतों में भी खीची चौहानों की छोटी छोटी जागीरें हैं.

प्रकरण १६ वाँ.

वाव (गुजरात) के नाडोला चौहान.

गुजरात में नाडोल के चौहानो की शाखा के वाव (थराद) व सूईगांव नामके ताल्लुकदार है, जो नाडोल के चौहानो के वंश वृक्ष में नं. $\frac{१०}{३}$ देदा की ओलाद वाले है. वाव के चौहानों का मूल पुरुष देदा नाडोल से अलग हुआ, वह अहवाल प्रकरण ९ वाँ ' नाडोल के चौहान. ' में सविस्तार आ चूका है, जिससे उनके लिये लिखने की जरुरत नहीं है. वाव के चौहानों के इतिहास मुआफिक देदा का पुत्र रत्नसिंह अपने मामा जो थराद का मालिक था उसके पास आया, और बाद में ' थराद ' का प्रदेश उसको ही (रत्नसिंह को) मिला.

वाव के नाडोला चौहानों का इतिहास ' पालणपुर डायरेक्टरी ' से उपलब्द होता है, वलिक मूता नेणसी ने अपनी ख्यात में भी इनके विषय में थोडीसी ख्यात लिखी है जो प्रकरण ८ वां में. ' निशानी (आ) के वंश वृक्ष में नं. १ से नं. १० देदा तक लिखी गइ है.' नेणसी मूता जब गुजरात में गया तब ' वाव ' की गद्दी पर भोज (देखो नं. १७ वाला) विद्यमान था, और उसने देदा के बाद भोज तक का वंश वृक्ष सम्पूर्ण लिखा है, वलिक वाव के चौहानों का शृंखलावद्ध वंशवृक्ष बना है यह उस महाशय की लेखिनी का ही प्रताप है, क्यों कि राजपूताना के राज्यस्थानों के मुकाविले में गुजरात के राज्यस्थानों के राजपूतों ने अपना ऐतिहासिक साहित्य की संभाल नहीं रखने से उनका प्राचीन इतिहास बीलकुल अंधेरे में ही रह गया है. नेणसी की ख्यात से जो नाम 'देदा' के बाद उपलब्द्ध होते है, वे 'वाव' के प्रसिद्धि में आये हुए इतिहास के साथ ' अपभ्रंश ' शब्दों का फर्क बाद करते मिलते है.

जेसलमेर की ख्यात से पाया जाता है कि वाव के चोहानों का वेटी व्यवहार जेसलमेर के भाटीओं के साथ ज्यादह रहा था, लेकिन उससे मिलान करते संवत् और नामों में वहुत अन्तर आता है, इस लिये नेणसी की ख्यात व पालणपुर डायरेक्टरी से जो जो नाम मिलते है उनको दुरूस्त समज कर वाव के चौहानों का वंश वृक्ष अंकित किया गया है.

१ वंशवृक्ष वाव के नाडोला चौहान.

१ देदा (देखो वंशवृक्ष 'नाडोल के चौहान' में नं. $\frac{१०}{३}$ वाला.)
|
२ रत्नसिंह यह नाडोल से थराद आया. बाद में इसको थराद प्राप्त हुआ.
|
३ गोगल मुता नेणसी की ख्यात में ' धुघल ' लिखा है.

(देखो पृष्ट १३६ पर)

३ गोगल (वंशवृक्ष वाव के नाडोला चौहान चल्लू)

४ महिपाल — इसका नाम नेणसी ने 'महिष' लिखा है.

५ हरब्रह्म — इसका नाम 'भरमा' लिखा है.

६ पिथल — इसका नाम 'पीतो' लिखा है.

७ पूंजसिंह — इसके समय में थराद के उपर मुलतानी मुशलमानों ने हमला किया, जिस युद्ध में पूंजसिंह काम आया और इसकी सोढी राणी अपने बालक पुत्र को लेकर अपने पिता के पास 'थर पारकर' चली गई.

८ वजेसिंह — इसने वि. सं. १३०० में थराद के नजदीक का कितनाक प्रदेश कब्जे किया और 'वाव' गांव बसाकर 'राणा पद' से वहां अपना राज्यस्थान जमाया.

९ शिवसिंह

१० रडमल — इसको नेणसी ने 'राम रुदो भाई' लिखा है. शायद यह नं. ९ का भाई होगा.

११ सिंह

१२ महेशसिंह

१३ वणवीर

१४ सांगा

१५ पीथा उर्फ पाता (वाव) — १५ पंचायण (सूई गांव) द

१६ कल्याणसिंह

१७ राणाभोज — १७ राजसिंह द

१८ चंद्रसिंह

१९ जोगराव — १९ शिवराज (वेणप) द

२० पंचायण (इसकी पुत्री सोनकुंवर जेसलमेर के रावल अखेसिंह से विहाई थी.)

२१ विजयराज

२२ गजेसिंह — इसकी पुत्री लाडकुंवर जेसलमेर के रावल जसवन्तसिंह से विहाई थी.) वि. सं. १७५९.

२३ भगवानसिंह × गोद (नं. २४) — २३ भारतसिंह

- भारतसिंह के पुत्र: जालमसिंह (गोद गये); २४ डोससिंह द
- २४ डोससिंह द → २५ चंद्रसिंह द (गोद गये)

२४ जालमसिंह

२५ सरदारसिंह

२६ उम्मेदसिंह × गोद आये नं. २५ द

२७ चंद्रसिंह

२८ गंभीरसिंह × गोद आये नं. २८ द — २८ हरिसिंह द (गोद गये)

२९ हरिसिंह (मौजूदा राणा वाव)

मौजूदा राणा साहब वाव. (पालणपुर एजंसी गुजरात).

राणा साहब हरिसिंह साहब वाव. (गुजरात).

[विभाग १ ला. पृष्ट १३९. नं. २९]

The Luhana Mitra Steam P. Press Baroda

नोट—नं. १९ जोगराव ने अपने वडाऊओं का 'थराद' राज्य सम्पादन करने के लिये थराद का प्रदेश वरवाद किया, और सांचौर के परगने में लूटफाट करने लगा. इस विषय में पालणपुर रियासत के इतिहास में लिखा है कि वाव के जागीरदार चौहान राणा जोगराज ने सांचोर परगने में लूटफाट शुरु की और शाही खिराज देनेसे इनकार हुआ, जिस पर गुजरात के सूवा ने उस पर फौज भेजी लेकिन सफलता प्राप्त न होनेसे पालणपुर के दिवान फतहखान को सूचना की, जोगराज ने सुना कि दिवान फतहखान फौज के साथ आ रहा है तव वह मुकाविला करने को सामने आया, दोनों के वीच वडा जोर शोर से युद्ध हुआ, और दोनों तरफ के वहुत सरदार काम आये, लेकिन दिवान को विजय प्राप्त हुआ. जोगराज ने शाही खिराज जो चढी हुई थी वह दे दी, और भविष्य में खिराज दाखिल करने के वास्ते व शाही चाकरी वजा लाने के लिये उससे जामिन लिया गया. इस कार गुजारी में दिवान फतहखान को औरंगजेव वादशाह ने खुश होकर सांचौर, भिनमाल, व जालोर पगरने की सनद देकर वह परगने वापस पालणपुर रियासत के शामिल कर दिये.

इस घटना के विषय में पालणपुर रियासत के इतिहास में जो दुहे पृष्ट ११२–११३ पर लिखे हैं उससे पाया जाता है कि राणा जोगराज वडा वीर राजपूत हुआ था क्योंकि यह दूहे विरुद्ध पक्ष के कवि ने रचे है. कवि कहता है कि.

× × × × ×

" गढ पत वंको वावे, गढ जोगो रांण जडाग; एक वसे आखाड सीव, खलां खपावण खाग. " ७
" राण पितामह भोज राज आगा लगे अजीत; भारथ ईसो भंजीयो. वढ दोय वार वदीत. " ८
" वीरचंद चांदो वहे, पृथीराज पंड वेश; केवांण केवी हरां, रांणो न सहे रेश. " १०
" जोगराज जसराजसुं, भड जुत्थो भाराथ; रांणो रोद्रालां तणो, हेक न आवे हाथ. " ११
" पेस कसी परठे नहि, दए न सारे दाम; कला हरा पादर करे, सुरां शुं संग्राम. " १२

× × × × ×

तात्पर्य यह है कि जोगराज की वीरता का यह प्रत्यक्ष प्रमाण है कि उसकी प्रशंसा विरुद्ध पक्ष के कवि लोगों ने भी की है.

नं. २१ विजयराज के वास्ते भी पालणपुर रियासत के इतिहास में लिखा है कि–जव कि दिवान फिरोजखान ने 'थराद' जीता, उसके पहिले फौज के सिपाहिओं ने वाव परगने के गांवों में भी लूट की थी, उसका वदला लेने के वास्ते राणा विजयराज ने शांगा व वजा नामके सरदारों को फौज देकर थराद पर आक्रमण किया, लेकिन सफलता प्राप्त न हुई, इस युद्ध की प्रशंसा में कविने वारह दुहे, १०४ मोतीदाम छंद के चरण और ३ कवित रचे हैं जो पृष्ट १४० से १५९ तक में छपे हुए हैं.

नं. २९ हरिसिंह वाव के मौजूदा राणा है. वाव ताल्लुका पालणपुर एजन्सी में पोलिटीकल एजंट की निगरानी में है; और उनको अपनी रिआया पर अमुक दर्जा तक दिवानी, फौजदारी हुकुमत चलाने का अधिकार ब्रिटिश सरकार ने दिया हुआ है.

२ वंशवृक्ष वेणप के नाडोला चौहान.
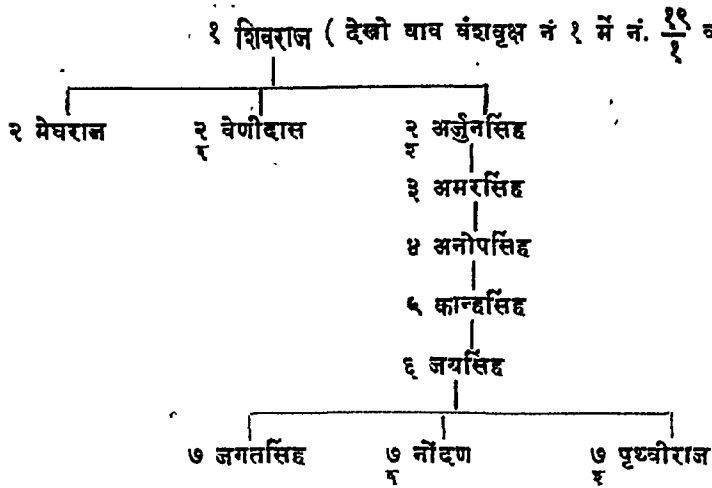
३ वंशवृक्ष सूईगांव के चौहान.

सूईगांव के चौहान भी अलग ताल्लुकदार है जिनका मूल पुरुष वाव के चौहानों में नं॰ १४ सांगाजी का बेटा पंचायणजी है. उसका वंशवृक्ष नीचे मुआफिक है.

१ पंचायण (देखो वाव वंश वृक्ष में नं. १५/१ वाला) इसने सूई नामका रवारी के नाम से ई. स. १५६९ (वि. सं. १७३५) में सूईगांव वसाया.

२ हेगोल — २ जेतमल (वडाढीमा) — २ वजेराज

३ राजसिंह (इसने सणोती व दूसरे पांच गांव, अंजाणा चौहान से, और कुंभारका आदि गांव जत लोगों से छीन कर अपना ताल्लुका जमाया.

४ मानसिंह — ५ कानसिंह — ६ सूरसिंह — ७ भगवानसिंह

४ मनोहरसिंह — ५ हरिसिंह — ६ अमरसिंह — ७ सवलसिंह, ७ मेघसिंह

४ शार्दूलसिंह — ५ अदेसिंह — ६ पुजाजी (पृष्ठ १३७ पर देखो)

७ भगवानसिंह के: सवसिंह ×, ८ नाथुसिंह, ८ कल्याणसिंह

७ सवलसिंह के: ८ जसवंत, ८ राणाजी

७ मेघसिंह के: ८ मालसिंह, ८ गुमानसिंह

८ नाथुसिंह के: ९ नारणसिंह ×, ९ मालुजी ×, ९ गंभीरसिंह ×

८ कल्याणसिंह — ९ रामसिंह — १० खेंगारसिंह ×

८ जसवंत — ९ जैसिंह — १० वाघसिंह

८ राणाजी — ९ मेरुजी — १० खानजी ×

८ मालसिंह के: ९ कुंभाजी — १० अलुजी — ११ गंभीरसिंह; ९ दरजनसिंह — १० लगधीर — ११ हरिसिंह; ९ राघवसिंह — १० पुजाजी

८ गुमानसिंह — ९ रायमल — १० पृथ्वीराज — ११ सूरताण

१० वाघसिंह के: ११ भोजराज, ११ अखेराज, ११ नारणसिंह, ११ लादाजी

११ भोजराज के: १२ पचाण, १२ हठीसिंह

११ नारणसिंह — १२ नथसिंह

नोट—सूईगाव के ताल्लुका में दो हिस्सेदार ठाकुर है. गुजरात राज्यस्थान में लिखा है कि उसमें एक हिस्से में ठाकुर भूपतसिंह और दूसरे में नाथुसिंह है. इनको तीसरे दर्जा के न्यायाधिस का फोजदारी अधिकार (Power) है.

नं. ६/२ जैसिंह वि. सं. १८१९ में था. उसकी पुत्री जेसलमेर के रावल मूलराज से बिहाई थी. (जेसलमेर इतिहास.)

प्रकरण १७ वाँ.

'सांचौरा चौहान.'

सांचौरे चौहानों का वर्तमान समय में कोई राजस्थान नहीं है, सिर्फ जोधपुर राज्य के सांचौर परगने में उनकी छोटी बडी जागीरें हैं. सुना गया है कि इन लोगों में 'चारणीआ वंट' (हरएक भाईयों का सरीखे हिस्सों में वंट) कदीम से होता आया है, इस सवव से इनमें वडी वडी जागीरें रहने नहीं पाई है. सांचौरे चौहान वडे वहादुर और स्वामी भक्त हुए है, इतिहास से पाया जाता है कि वहुत से सांचौरे राजपूत युद्ध में ही मारे गये, इन लोगों ने वीरता से जगह २ काम देकर जागीरें प्राप्त की थीं. वादशाही जमाने से यह लोग वादशाह और जोधपुर के राठौर राजाओं की चाकरी करते आये है, जिससे इनकी जागीरें हर वक्त वदलती रही है. इन लोगों ने जोधपुर के राठौर राजाओं की जैसी सेवा वजाई है वैसी शायद ही दूसरे राजपूतों ने वजाई होगी. इन लोगों को एक दफा वादशाही सेवामें सीधे तौर से (वलु निवावतको) सरदारी प्राप्त करने का मौका हाथ लगा था, लेकिन वाद में उनकी औलाद में राज्य कार्य कुशलता वाले राजपुत्र न होनेसे वह मौका हाथ से निकल गया और राठौरों की सेवा में ही उपस्थित रहने लगे. अगर वह मौका हाथसे न गुमाते तो, सांचौरे चौहानों की एक अलग रियासत कायम होजाती.

ये राजपूत नाडोल के चौहान आल्हणसिंह (देखो वंशवृक्ष नाडोल में नं. ९/६ वाला) के पुत्र नं. १०/२ विजयसिंह की औलाद के हैं, विजयसिंह ने वि. सं. *११४१ फाल्गुन वदी ११ के रोज सांचौर लिया. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि 'विजयसी चौहान सिहवाडे (सीयाणा) रहता था उस वक्त "साचौर" दहिया राजपूत विजयराज के पास था, दहिया का भाणेज महीरावण वाघेला था, उसकी दियानत सांचौर को कब्जे करने की थी अतएव उसने विजयसिंह चौहान के साथ यह ठहराव किया कि हम लोग दहिया को मार कर आधा आधा सांचौर का प्रदेश वांट लें, विजयसिंह ने यह मंजूर करके दहिया राजपूतों को मारे और वाद महीरावण वाघेले को भी मारकर आप सांचौर का मालिक वना, इस सवव से उसकी औलाद वाले 'सांचौरा चौहान' कहलाये. इस घटना के वास्ते कवि ने कहा है कि.

"वरा वुण क चाल कीव दहिया दइ वटे, सवदी सवलां साय भाग मेवा सप छटे, ;;
"आलण सुत विजयसी वंश आसराव भागवह, खाग त्याग सरण त्रिनें पंजर सोह; "
"चौहान राव चौरंग अचल नरा नाह अण भंग कर; कुमेर सेस जालंग अचल तामराज सांचौर धर."

---

* संवत में गल्ती है वि. सं. १२४१ होगा.

इस समय सांचोरे चौहानों की खास रियासत नहीं है तो भी मूता नेणसीने इनकी विस्तार पूर्वक तपसीलवार ख्यात लिख कर इन वहादुर व निमकहलाल राजपूतों को इनसाफ दिया है, इसके वास्ते यह लोग मूता नेणसी के ऋणी रहेंगे, क्यों कि इन लोगों की रियासत न होने से कभी इतना इतिहास प्रसिद्धि में आनेका मौका न था, यद्यपि इनके वडुओं के चौपडों से इनका वंशवृक्ष वन सकता है तथापि ऐतिहासिक घटनाओं के मूता नेणसी ने जो २ उल्लेख किये है वे घटनाएं प्रसिद्धि में नहीं आती.

वि. सं. १७२५ तक के इतिहास को देखने से पाया जाता है कि सिवाय सांचोर के इन लोगों की जागीरें (जो विक्तन फ् विक्त् इस खानदानवालों को मिली थीं) स्थायिन् नहीं रहने पाई हैं इस सबब से खास जागीरों के गांव के नामसे इनका वंशवृक्ष तैयार होना मुश्किल है. अतएव इनमें से जो २ पेटा शाखाएं कहलाई गई है, उनके नाम से मिल सक्ता है वहां तक का वंशवृक्ष और उनके इतिहास की तपसील दी जाती है.

१ वंशवृक्ष सांचोरे चौहानों का.

उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

+ नं. ४ सालसिंह उर्फ सालहा यह बडा वीर राजपूत था अलाउद्दीन खिलजी ने जालोर गढ पर घेरा डाला तब किले की पहिली पोल पर यह उपस्थित था, अतः स्वामी भक्ति बताने को यह युद्ध में सबसे आगे होकर 'अश्वमेघ' यज्ञ का फल मनमें सोचता हुआ सोनगरा राव कान्हडदेव के सामने घोडे पर सवार होकर अपने दोनों पैरोंकी जांघ घोडे की जीन के साथ खीलों से जडकर अलाउद्दीन की फौज में शेर की तरह घुसा और बडी वीरता के साथ दल को छिन भिन कर के मारा गया. इसके वास्ते कविने कहा है कि,

" अलादीन प्रारंभ कीध सोनगर उप्पर, हुवो समरतल हटी जुड चहुआण मछर पर. "
" सकती पुरवे सांम, प्राण सूरताण संकायो, गांजे धड गजरूप, चीत्त आलम चमकायो. "
" सजीयो राव कान्हड रीणह कोतक रीव रथ थंभीयो, वरमाल कंठ अपछर वरे सालह विमाणे मालीयो. "

नं. ५/६ सहसमल के नामसे 'सहसमलोत' सांचौरा कहलाये. १ सहसमल के पीछे २ भोजदेव ३ उधरण ४ वीसो ५ डुंगर ६ रांणोमांन. (उससे क्रमशः)
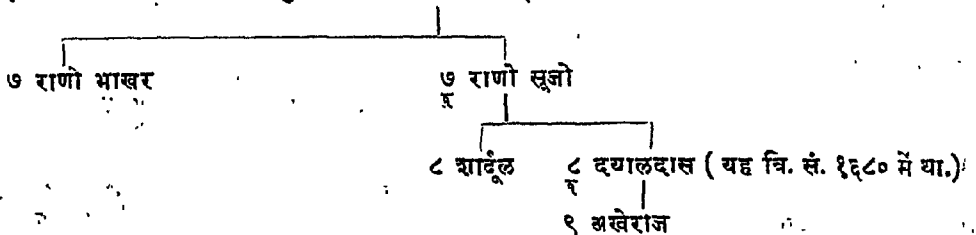
नं. ६ वरजांग इसके साथ वि. सं. १४७८ में 'मलिकमीर' ने युद्ध किया जिसमें वरजांग मारा गया और 'सांचौर' मुसलमानों के कब्जे में गया, वरजांग का लग्न जेसलमेर के भाटी के यहां हुआ था उस लग्न में त्याग का (शादी के वक्त भाट चारणादिकांको इनाम अकराम दिया जाता है सो) खर्च इतना किया गया कि अबतक उतना खर्च करनेवाला नहीं हुआ है, जिससे उस लग्न की चौरी पर दूसरे की शादी

+ सिरोही के वहुआ की पुस्तक में जालौर के सोनिगरा राव सामन्तसिंह का पुत्र 'सालजी' होना और उसने वि. सं. १३७० में सांचौर लेना लिखा है. यह बात सही नहीं है क्यों कि वि. सं. १३६८ में कान्हडदेव का मारा जाना सिद्ध हुआ है वहुआ की पुस्तक में कान्हडदेव का वि. सं. १३७२ में मारा जाना लिखा है.

नहीं हुई है. मतलब चौरी की वह जगह वैसी ही छोड रखी है, सारांश यह है कि जब वरजांग जितना चौरी दापा देने वाला हो, तब ही उस चौरी पर दूसरे की शादी हो सके.

नं. ७ जयसिंहदेव इसने सांचौर पुनः लिया इसकी शादी मेवाड के महाराणा के वहां हुई थी.

नं. ७/१ तेजसिंह के नामसे 'तेजाओत सांचौरा' कहलाये. उससे क्रमशः २ पीथल
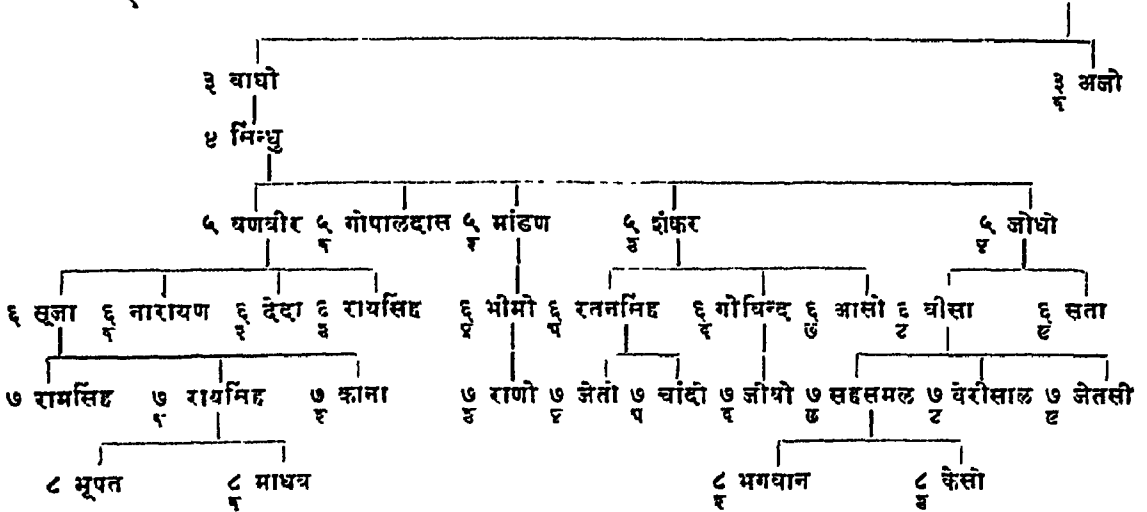
= तेजाओत का संक्षिप्त इतिहास--नं. २ पीथल यह राठौर राव सूजा का सुसरा होताथा यानी राठौर सेका व देवीदास इसके दोहित्र होतेथे, इसने अपने काका के बेटे जगमाल (सांचोरा चौहान वंश वृक्ष नं. ८/२ वाला) को मारकर सांचौर कब्जे किया, इसका पुत्र नं. ३ वाघा भी सांचौर में पाट बैठा, लेकिन निंबावत राणसिंह (नं. ९ वाले) ने मुलक वैरान किया जिससे यह 'कोढाणे चलागया वहां इसने 'वाघावस' गांव बसाया. इसने माहाराणा उदयसिंह को मेवाड की गद्दी पर बैठाने में सहायता की थी.

नं. ३/१ अजा, यह राठौर पृथ्वीराज का मांमा होता था, जब सेकाजी राठौर मारा गया और राठौर देवीदास को निकाल दिया, तब देवीदास के साथ अजा भी चित्तौड गया. और बाद में चित्तौड की लडाई में देवीदास काम आया, तब उसकी सहायता में यह भी मारा गया.

नं. ५ वणवीर मोटा राजा का सुसरा होता था, इसका पौत्र नं. ७ रामसिंह के तरफ 'खारडी थौंभ के पट्टे की जागीर थी.

नं. ५/३ शंकर यह नं. ५/१ गोपालदास के साथ रहता था, गोपालदास 'उहड' का नाना होता था, सो गोपालदास काम आया तब यह भी उसके साथ मारा गया, इसका

पौत्र नं. ७/४ जेता दक्खिन में मुहब्बतखां के साथ गया था वहां दौलताबाद की लडाई में मारा गया, जेताका भाई नं. ७/८ चांदा यह 'मांडण' में रहा.

नं. ५/४ जोधा यह राठौर राव चंद्रसेन को सहायता में मारा गया, इसका पुत्र नं. ६/८ वीसा, गोपालदास व उहड की सहायता मैं काम आया, वीसा का पुत्र नं. ७/७ सहसमल भी 'मांडण' ग्राम में उहड की सहायता में मारा गया.

नं. ६/२ देदा इसके 'पाटाऊ' ग्राम का पट्टा था.

नं. ६/६ गोविन्द इसको 'पाटोडी' की लडाई में भाटी ने मारा, इसका पुत्र नं. ७/६ जीवा 'मांडण' में उहड राठौड के साथ रहा था.

नं. ७/३ राणो, इसका लग्न हुआ उसके दूसरे रोज ही बाहडमेरा चढाई ले आया, यह उसके सामने लडाई के लिये मदद में गया वहां मारा गया.

नं. ७/२ हिमाला इसकी ओलाद वाले 'हिमालोत सांचौरा' कहलाये इनका वंश वृक्ष व संक्षिप्त इतिहास नीचे मुआफिक है.
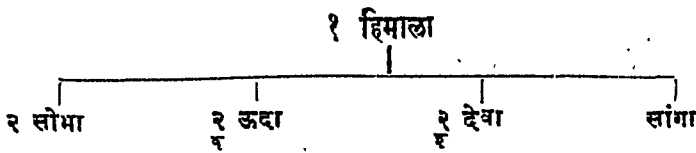
नं. २ सोभा बडा बहादुर चौहान था, सांचौर का आधा हिस्सा इसका था और आधा गुजरात के बादशाह 'प्रेममुगल' का था जब मुगल ने सांचौर में गौवध किया तब सोभा ने उसको मारा इसके पराक्रम के वास्ते कवि ने कहा है कि.

दुहा.

"विसमतो वरजांगदे छायफूल बिछाय, तिण अमास अडावीया, गैमर गोरी राय" ॥ १ ॥
"चहुआणो चोथे चलण, इसडे़ सै अणि नाण, सुजड़ीआरो सोभडो डख डख ती दिवांण" ॥ २ ॥

सोरठा.

"काळा काल कलास, सरस पलासां सोभड़ा, विकम सिंहा वास मांढ़ी मसीतां मांडजे" ॥ ३ ॥
"हीमाला ऊत हीज, सुजडी साही सोभडे, खलल वलकी खोज, ढील पहारी महां घडी" ॥ ४ ॥
"सोभड़ासुं अर सीत, दूछर धावे ज्यां दीसो, रोइती कर जत रांत, भीत हुवा भड भड वडे" ॥ ५ ॥
"चोल वदन चहुआंण, मिलक अटारे मारीया, डख डखती दिवाण, सुजडीयाओ सोभडो" ॥ ६ ॥
"वण वीरोत वखाण, हीमाला वत मन हुवा, चलणं दीए चहुआण त्रिजड़ी काढे वात" ॥ ७ ॥
"सो भेड़ कियो सुगाल, सुहगो एकण तालमें, चूड खै चामरी पाल, खेतल वाहण खड खडे" ॥ ८ ॥
"लोद्रां चीलू आध, भागी सोह कोइ भणे, वावा तोरण बांध, सोभडा श्रग सातमे." ॥ ९ ॥

पाया जाता है कि सोभा 'सुजडिया' ग्राम में रहताथा, और इस लडाई में खुदभी मारा गया.

नं. ८ निवसिंह उर्फ नींवो, इसकी ओलाद 'निंबावत सांचौरा' कहलाई गई.

नं. ८/१ धीरसिंह इसकी ओलाद वाले 'धीरोत सांचौरा चौहान' कहलाये गये. इनका वंशवृक्ष व संक्षिप्त इतिहास नीचे मुआफिक है.
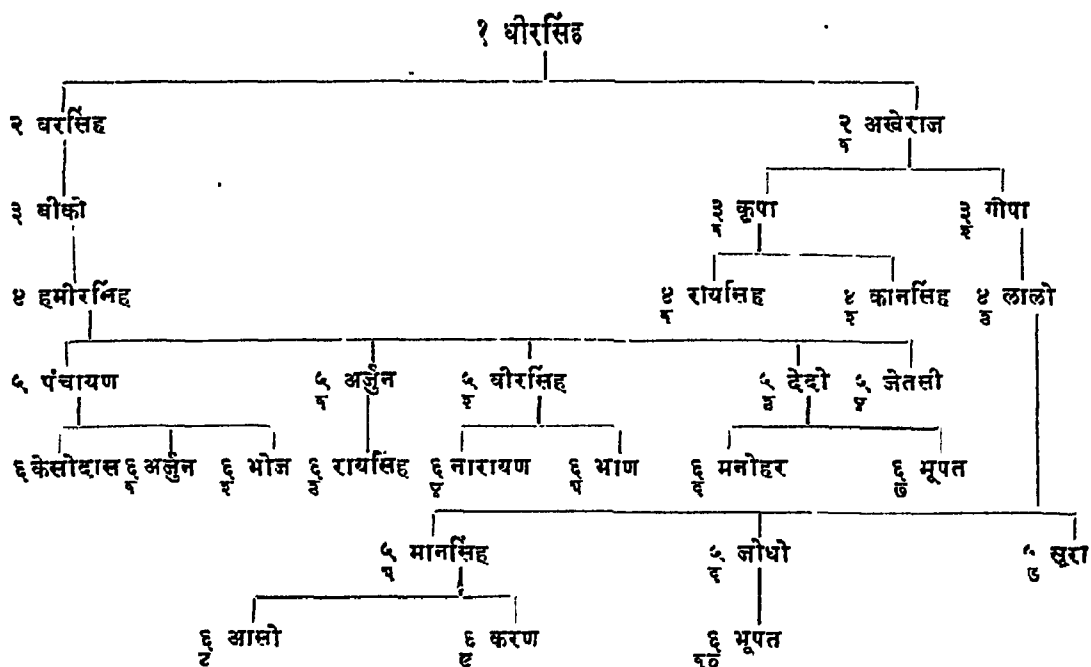
नं. २ वरसिंह सांचौर में मारा गया, उसका पुत्र नं. ३ वीका को 'भामराणे' सींधल ने मारा, और इसका पुत्र नं. ४ हमीरसिंह, राठौर राव चंद्रसेन का सुसरा होता था, जिसको हरदास राठौर (महेशदास के पुत्र) ने मारा. इसके पुत्र नं. ५ पंचायण को वि. सं. १६६६ में भाद्राजण का 'विजली' पट्टा मिला था.

नं. ३/२ गोपा–जेतसी उदावत की सहायता में मारा गया. इसका पौत्र नं. ५ मानसिंह सुगालिया से गंधल आया वहां मारा गया, मानसिंह का भाई नं. ५/७ सूरा देदा के सुसराल गया था वहां मारा गया.

नं. ४/१ रायसिंह, यह राठौर भाखरसी दासावत के संग मारा गया, वैसेही ईसका भाई नं. ४/२ कानसिंह भी जेतसीओत की सहायता में काम आया था (मारा गया था)

नं. ५/१ अर्जुन चाकरी करता था, इसका पुत्र नं. ६/३ रायसिंह को 'रोहिचे' (जोधपुर) का पट्टा मिला था, बाद में वि. सं. १६६९ मे भाद्राजण के 'रायमा' का पट्टा नं. ६ के केसोदास के शरीक में मिला था, वैसे इसे वि. सं. १६८५ में 'सोहराणा'

का भी पट्टा मिला था. नं. ६ केसोदास के पट्टे में लालपुर भी संयुक्त था, और नं. ६/१ अर्जुन को वि. सं. १६८९ में 'सिंहराणे' का पट्टा मिला था.

नं. ५/२ वीरसिंह के पट्टे में भाद्राजण का गाम 'रेवडा' था व नं. ६/६ मनोहर 'तावराणी' में रहता था. नं ५/४ जेतसी, राठौर नगावत को तुरक ने पकड लिया उस झगडे में यह मारा गया.

नं. ८/८ भैरव, इसकी ओलादवाले 'भरोत सांचौरा चौहान' कहलाये इनका पुश्त नामा व संक्षिप्त इतिहास नीचे मुआफिक है.
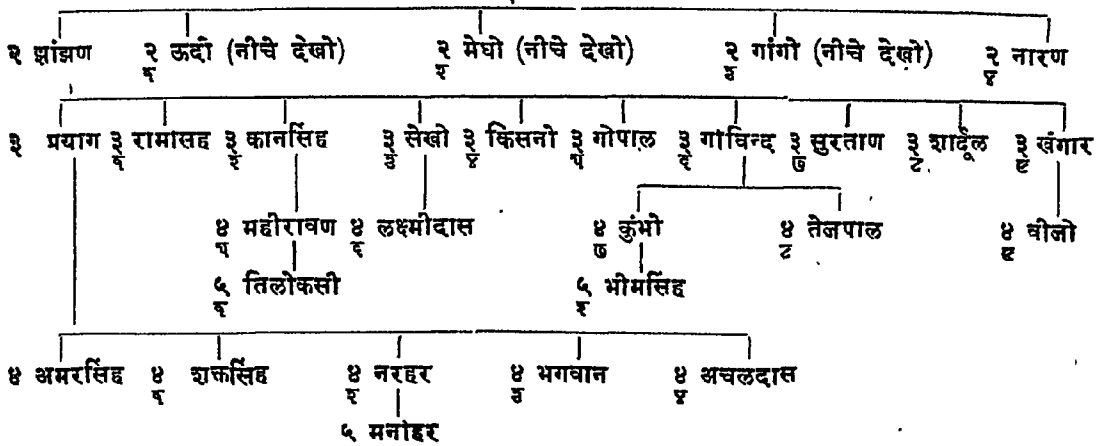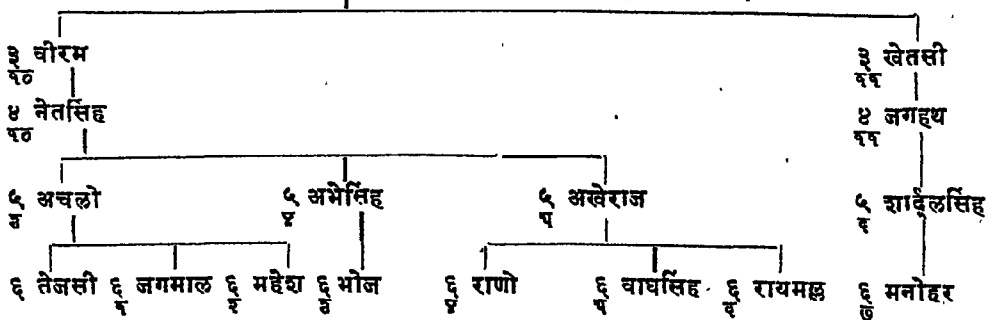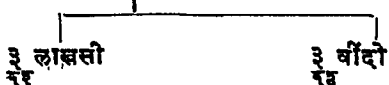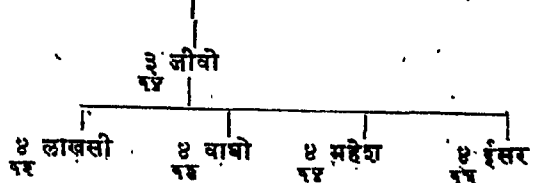
नं. २ झांझण राठौर मालदेव का सुतरा होता था, उसका पुत्र नं. ३ प्रयाग को मोटा राजा ने ‘ गादेरील ’ का पट्टा दिया, प्रयाग का पुत्र नं. ४ अमरसिंह के तरफ ‘ गादेरील ’ था, और नं. ४/१ शक्तसिंह के तरफ ‘ गोपडी ’ गाम था, बादमे वि. सं. १६७२ में ‘ रूदिया कुवेल ’ मिला जो पीछे से छूट गया. नं. ४/२ नरहर को वि. सं. १६७० मे ‘नरावास’ का पट्टा मिला, वि. सं. १६७१ में अजमेर की लडाई में राठौर गोविन्ददास मारा गया तब यह भी वहां मारा गया, नरहर का पुत्र नं. ५ मनोहर वि. सं. १६७२ में ‘ वरकरार ’ में रहा वाद वि. सं. १६८१ में उसे ‘हलाणा’ मिला, और वि. सं. १६८२ में वह राठौर अमरसिंह नागौर वाले की सेवामें चला गया, उसके काका नं. ४/३ भगवान को वि. सं. १६७८ में ‘ तातूवास ’ मिला था.

नं. २/२ मेघा, यह राठौर पृथ्वीराज की सहायता में मेढते की लडाई में मारा गया.

नं. २/३ गांगा का पुत्र नं. ३/१४ जीवा यह मोटा राजा की सेवा में था, इसको वि. सं. १६४० में ‘ दातणिया ’ ग्राम का पट्टा व बाद में ‘ माणकवाव ’ का पट्टा मिला था इसके पुत्र नं. ४/१२ लाखसी उर्फ भोज के पास ‘माणकलाव’ व ‘वरकरार’ का पट्टा था, मगर वादमे राठौर देवराज से डर कर चला गया, यह दलपत राठौर की सेवा में रहा वहां मारा गया, जीवा के पुत्र नं. ४/१४ महेश के पट्टे में वि. सं. १६७४ में ‘भूतेल, भाटीव ’ ग्राम का पट्टा था.

नं. ३/१ रामसिंह, यह ‘पोकरणा’ ग्राम में चंद्रसेन राठौर की जो देवराज के साथ लडाई हुई थी उसमें मारा गया.

नं. ३/२ कानसिंह, यह ‘मेहगढ’ में मरा, इसका पौत्र नं. ५/१ तिलोकसी को ‘वाघलोप’ ग्राम का पट्टा सियाणा परगने का मिला.

नं. ३/३ सेखो यह वि. सं. १६४० में सिरोही के राव ‘ सुरताण ’ के साथ शाही फौज को लडाई हुई उसमें ‘ दताणी खेत ’ में मारा गया, यानी यह राठौरों की सहायता में था, इसके मारे जाने पर इसका पुत्र नं. ४/६ लक्ष्मीदास को वि. सं. १६४० में ‘ वासणो ’ का पट्टा मिला व वि. सं. १६७७ में ‘ सिराणां ’ का पट्टा मिला.

नं. ३/४ किसनो, यह राठौर चंद्रसेन के पुत्र उग्रसेन के पास था सो उसके साथ मारा गया.

नं. ३/५ गोपाल यह राठौर कल्याणदास (कला राठौर) रायमल्ल के पुत्र जो ‘ सिवाणागढ ’ का मालिक था, उसकी सेवा करता था, अकवर वादशाह ने सिवाणागढ पर चढाई की तव कला राठौर के संग यह भी मारा गया.

नं. ३/६ गोविन्द, इसके तरफ 'गोदरी, करमसीसर' का पट्टा वि. सं. १६४२ में नं.३ प्रयाग के शरीकमें था, बाद में 'हीरदासर' का पट्टा इसके पुत्र नं. ४/७ कुंभा के शरीक में था. कुंभा वि. सं. १६६२ में गुजरात के ग्राम 'मांडवा' जो (रेवाकांठा में है) वहां मारा गया. कुंभा के पुत्र नं. ५/२ भीमसिंह को वि. सं. १६७५ में भाद्राजण का गांव 'कोराणा' वि. सं. १६७८ में तथा जोधपुर का गांव 'झंझाडा' वि. सं. १६८६ में व मेडते परगने का ग्राम 'पोलावस' का पट्टा मिलाथा बाद में वह वि. सं. १६९१ में राठौर अमरसिंह नागौर वालेकी सेवामें चला गया, गोविन्द का पुत्र नं. ४/८ तेजपाल के तरफ 'हीरदासर' का पट्टा था.

नं. ३/७ सुरताण, यह वि. सं. १६४० में एक माह 'हीरदासर' रहा बादमें 'गादेरी' गया और आखिर में इसके पास 'चीनडी' (आसोप परगने का) पट्टा था, इसका भाई नं. ३/८ शार्दूल, धवेसां के साथ युद्ध हुआ उसमें मारा गया. इसका भाई नं. ३/९ खंगार राठौर किसनसिंह के साथ रहता था.

नं. ३/१० वीरम व उसका पौत्र नं. ५/३ अचला, यह दोनों वि. सं. १६१८ में राठौर देवीदास के साथ मेडते की लडाईमें मारे गये. अचला के पुत्र जो नं. ३/१ उदा के भाद्राजण में था, (नं. ६ तेजसी वि. सं. १६८२ में) उसको वि.सं. १६८५में जालोर परगने का 'तालीयाणा' ग्राम पट्टे में मिला.

नं. ५/८ अखेराज के पुत्र नं. ६/१ राणा को वि. सं. १६७७ में 'खिलोहरी' का पट्टा मिला, बाद वि. सं. १६८४ में 'अहूर' व वि. सं १६९० में 'डांगरे' का और वि. सं. १६९५ से 'ससूचे' का पट्टा मिलाथा.

नं. ५/६ शार्दूलसिंह इसको वि. सं. १६७२ में, 'भूभादडे का.' पट्टा (परगना पाली) मिला जो उसके पुत्र नं. ६/७ मनोहर के पास वि. सं. १६८१ में कायम रहा अलावा इसको वि. सं. १६८८ में सोजत परगने के 'सापां' ग्राम का पट्टा मिला था.

नं. ९ राणसिंह इसको राठौर राव मालदेने (मालाणी वाले ने) सिवाणा में 'समदडो' की जागीर दी. उस वक्त सांचोर की जागीर नं. ७/१ तेजसिंह के पुत्र पीथल ने अपने चचेरा भाई जगमाल (नं. ८/२ वाले) को मार कर दबा लीथी जिससे राणसिंह ने सांचोर के प्रदेश पर हमला करके उसको बरबाद किया जिससे पीथल सांचोर छोड कर चला गया.

नं. १० महकरण इसकी पुत्री की शादी राठौर राव उदयसिंह (मोटा राजा) के साथ हुई थी जिसका पुत्र राव दलपत हुआ. यह तुरकों के साथ युद्ध में मारा गया.

नं. १०/१ लूणसिंह, इसकी ओलादवाले ' लूणावत सांचौरा चौहान ' कहलाये, इनका वंशवृक्ष नीचे मुआफिक है.
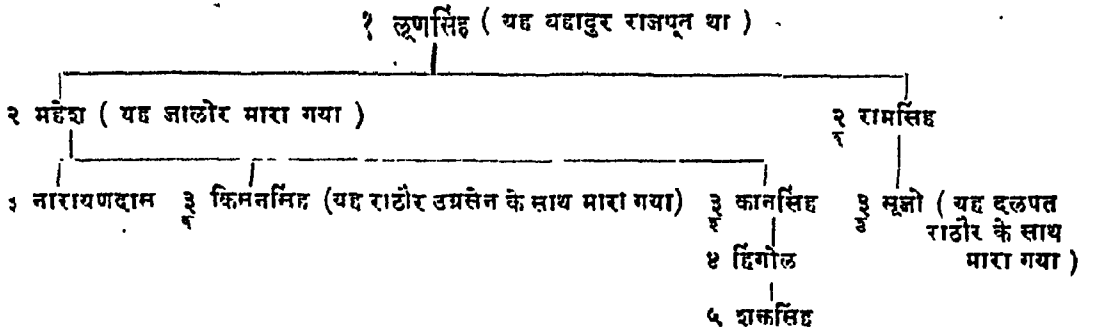
नं. १०/२ मांडण, इसकी ओलादवाले ' मांडणोत सांचौरा चौहान ' कहलाये. इनका वंशवृक्ष व संक्षिप्त इतिहास नीचे मुआफिक है.
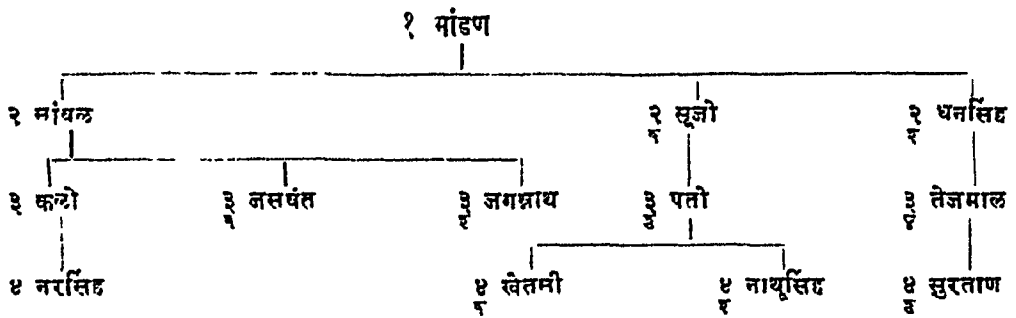
नं. २ सांवल, खेरालु परगने के ' रावला ' ग्राम में मारा गया, वि. सं. १६७१ में इसको और नं. २/१ सूजा को भाद्राजण का गांव, वाला व नीलकंठ पट्टे में मिले.

नं. २/२ धनसिंह, इसको वि. संवत् १६७० में 'मेहली' व वि. सं. १६८३ में 'इंद्राणे' का पट्टा मिला.

नं. ३/३ पत्ता, इसको वि. संवत् १६८५ में ' सीराणा ' पट्टे में मिला.

नं. ३/४ तेजमाल, यह धनसिंह के बदले चाकरी करता था सो ' तीमरणीराम ' कहा गया.

नं. ११ सीखरा, इसकी पुत्री की शादी राठौर राव रायमल्ल से की थी, यह ' मोटा राजा ' के पास चाकरी करता था, 'खेजडली' का पट्टा तीन गांवों सहित इसकी जागीर में था, इसकी ओलाद में नं. १४/२ उदयसिंह को (नं. १४/३ त्रिसनराम के शामिल) मेडते

परगने का 'भीनावास' पट्टा वि. सं. १६८३ में दिया गया, इसके अतिरिक्त नं. १४/३ विसनराम को वि. सं. १६८२ में पाली परगने का 'रूपावास पट्टा' भी मिला था.

नं. ११/१ देवीदास यह 'मोटाराजा' की सेवामें था और वीरत्व में उसके वरावरी का गिना जाता था, इसको वि. सं. १६४० में जोधपुर परगने का 'चेवाडिआ' व ओइसा परगने का 'तातूवास' व दूनाडे का 'गोविंदवाडा' व जोधपुर का 'दहीपुरा' वगरह पट्टे की जागीरें मिली थी. इसके बेटे नं. १२/४ 'कचरा' को वि. सं. १६६३ में 'तातूवास' व. वि. सं. १६७४ में 'हूणगांम' (सोजत परगने का) का पट्टा मिला, यह वि. सं. १६७७ में 'तीवरली' में मारा गया, इसके भाई १२/५ केसोदास को वि. सं. १६७३ में 'दहीपुरे' का पट्टा मिला था.

नं. ११/२ सावंतसिंह यह राठौर राव दलपत का मामा होता था, इसकी ओलाद के 'निवावत सांचौरों' ने दलपत राठौर की वहुत ही चाकरी उठाई थी, इसके चार पुत्र नं. १२/६ शार्दूलसिंह नं. १२/७ गोपालदास नं. १२/८ वलूजी १२/९ अचलदास, दलपत के पुत्र महेशदास राठौर के संग में रहते थे, जव शाही सेनापती 'मुहव्वतखां' दक्षिण में फौज ले गया तब 'दौलतावाद' की लडाई में तीनों भाई मारे गये सिर्फ नं. १२/८ वाला वलूजी व राठौर महेशदास वचने पाये, वादशाहने राठौर महेशदास को 'जालोर' दिया ओर वलूजी को 'सांचौर' इनायत किया.

नं. १२/८ वलूजी, यह वादशाही फौज में मनसवदार (सरदार) था, इसके पास सातसौ पैदल और चारसौ घोडे की सरदारी थी. इसको वि. सं. १६९९ में 'सांचौर' वादशाह की तरफ से मिला. वि. सं. १७१७ में यह पूरव में गया और वहां पर ही मर गया. किसनगढ के महाराज मानसिंह इसका दौहित्र होता था. वलूजी का पुत्र नं. १३/३ वेणीदास शाही फौज में चारसौ पैदल व एकसौ घोडे का सरदार था. जिसका भाई नं. १३/४ नरहरदास वि. सं. १७१४ में धोलपुर की लडाई में मारा गया. वेणीदास के पुत्र नं. १४/४ शक्तसिंह के पास ढाईसौ पैदल व तीस घोडे की ही सरदारी रहने पाई थी.

नं. १२/१० कल्यांण यह राव दलपत के पुत्र झुझारसिंह के संग रहता था जव झुझारसिंह मारा गया तव यह भी साथ मारा गया.

नं. १२/११ अजीतसिंह इसको संवत् १६७५ में 'केरला' का पट्टा (पाली) मिला था, यह राठौर कनीराम (दलपत के वेटे) के संग वराहनपुर में मारा गया.

वर्तमान समय में 'साचौरा' चौहानों की कहां २ जागीरें हैं उसका पुरा पत्ता नहीं मिला, वैसें सांचौर में जो चौहान मोजुद है उनका इतिहास नहीं मिलने से जोधपुर

रियासत की एक हस्त लिखित ख्यात से जोधपुर रियासत में सांचौरा चौहानों का जो इतिहास मालूम हुआ, वह नीचे मुआफिक है.

उक्त ख्यात से पाया जाता है कि जोधपुर रियासत में वर्तमान समय में, कल्याणपुर, अरणाप, सूराचंद, राखी, सखवाव, सर, चित्तलवणा, गोलासण, सोपतरो,· सापलो, वडा रोड़चा, आदि गांवोंकी जागीरें सांचौरे चौहानों के तरफ है, जिसका पुश्तनामा नीचे मुआफिक है.

उपर के पुश्त नामा के नं. ६ दूर्जनसिंह कल्याणपुर की जागिर पर वि. सं. १८६१ में था, और जब जोधपुर की फौज सिरोही पर आई तब यह भी फौज में शामिल होना जोधपुर महाराजा के मिती चैत्र सुद १० सं. १८६१ के ×परवाने से मालूम होता है.

नं. ९ दोलतसिंह के तरफ भी कल्याणपुर की जागीर थी, और वह 'राव' की पदवी से भूषित थे, इनको जोधपुर रियासत में कुरब की इज्जत 'दोए हाथ का कुरब, बांहपसाव बैठक में डावी मिसल में, सिरायत के बाद बैठक, व घोडा डावी बाजु में सिरायत के पीछे खडने को' थी. इनके वहां गमी होवे तब रियासत जोधपुर की तरफ से 'मातमपोसी' होती थी और एक टंक आधी रात को नोबत, गमी के मान में बंध रखने में आती थी. इस समय क्या बरताव है वह मालूम नहीं है.

× उक्त परवाने में चुां. राव दुर्जनसिंग जालमसिंघोत का नाम है और जोधपुर दरबार ने अपनी कलम से आडी ओल में लिखा है कि "बंदगी में हमगीर हो ज्युंही हमगीरी सु उठे रह उठारो (सिरोही का) बंदोबस्त मजबूती राखजो." दूसरा परवाना वि. सं. १८६८ कार्ती सुद १२ का वि. सं. १८६९ वैशाख वद १४ व इसके अलावा फिर भी है.

९/१ मुलराज के तरफ 'सुराचंद' की जागीर थी. यह वि. सं. १८९२ में जोधपुर के महाराजा के पास गया था, उस समय इसको वडी इज्जत के साथ शिरोपाव दिया गया था.

नं. ६/१ नाथुसिंह के तरफ 'अरणाप' की जागीर थी. इसको कुरव एक व बांह पसाव की इज्जत थी.

नं. ७/१ पदमसिंह के तरफ 'राखी' पट्टे की जागीर थी, यह 'राव' की पदवी से भुषित थे. वि. सं. १८६० में 'राखी' पट्टा इसके वडाउओं को मिला था, वैसा पाया जाता है. इसको कुरव दोए, बांहपसाव, हाथका कुरव, सामावेसण का कुरव, घोडा आगे खडने का कुरव, और खासा ठांभण के कुरवों की इज्जत रियासत जोधपुर की तरफ से दी गई थी, वि. सं. १९२३ में रियासत की तरफ से जो कागज पत्र लिखा जाय उसमें इनको "सरवोपमा" का इलकाव लगाकर लिखावट करने की इज्जत थी.

नं. ७/२ शंभुसिंह, नं. ७ पृथ्वीसिंह नाओलाद होनेसे, कल्याणपुर की जागीर पर गोद गया था.

नं. ७/३ लक्ष्मणसिंह के तरफ 'सर' गांव की जागीर थी. इसको वि. सं. १८८१ में कुरव एक व वि. सं. १८८७ में 'वांह पसाव' की इज्जत जोधपुर रियासत के तरफ से दी गई.

नं. १० खुमाणसिंह के तरफ 'सखवाव' की जागीर थी. इसको जोधपुर रियासत के तरफ से कुरव वगैरह इज्जत नं. ७/१ पदमसिंह के मुआफिक थी, लेकिन लिखावट में 'सरवोपमा' नहीं लिखा जाता था मगर 'मातमपोसो' होती थी.

दयालदासोत के सिवाय सांचौरा चौहानों के तरफ जो जो जागीरें है उनके वास्ते अनुमान होता है कि, सांचोर के चौहानों के वंश वृक्ष के साथ उन लोगों का नीचे मुआफिक सम्बन्ध है, यानी–

१ नं. ८/१ धीरसिंह की ओलाद के धीरोत सांचौरा के वंश वृक्ष में नं. ६/३ रायसिंह, अर्जुनोत की ओलाद में क्रमश २ शिवदान ३ अमानसिह ४ भीमसिंह ५ हिम्मतसिंह ६ विजयसिंह व ७ देवीसिंह हुए थे. देवीसिंह के तरफ 'वडारोईचा' की जागीर थी, और एक वडा कुरव व वांह पसाव की इज्जत जोधपुर रियासत के तरफ से इनायत थी. गुजरात राजस्थान के इतिहास से पाया जाता है कि जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के पुत्रों आणंदसिंह, रायसिंह व कीशोरसिंह को 'रोइचा' के चौहान मानसिंह व देवीसिंह ने अपने पास रखकर सहायता की थी, वल्कि आणंदसिंह को इडर का राज्य मिला तव देवीसिंह उसकी सेवा में उपस्थित था, वाद में वह

लडाई में काम आया, उसके भाई मानसिह को इडर के राज्य में ' मुडेटी ' की जागीर मिली थी. पाया जाता है कि मुंडेटी के चौहान 'सांचौरे चौहान' है.

२ नं. $\frac{८}{}$ भैरव को ओलाद के ' भैरोत सांचौरा ' के वंशवृक्ष में नं. $\frac{४}{१८}$ इसरदास की ओलाद में क्रमशः २ रायसिह, ३ मालदान, ४ मोहकमसिंह (यह वि. सं. १८९१ में था. परवाना मिती पोप सुद ,६) व ५ वेरीसाल हुए, थे. वेरीसाल के तरफ ' सापला ' वगैरह जागीर थी, और इसको एकवडा कुरव व बांह पसाव की इज्जत रियासत जोधपुर के तरफ से थी.

३ इनके सिवाय ' सोपतरा ' की जागीर पर क्रमशः१ अनाडसिह, २ शार्दूलसिंह, ३ जुवानसिंह व ४ पीरदान हुए. पीरदान को कुरब एक की इज्जत थी. "चीतलवाणा व गोलासण " की जागीर अणंदसिंह वीरमोत के तरफ वि. सं. १८७६ में (परवाना रियासत जोधपुर मिती जेठ वद ५ सं. १८७६ का है.) थी. इसमें से 'चीतलवाणा' उसकें पुत्र ' पदमसिंह ' को मिला, जिसको एक वडा कुरव व वांह पसाव की इज्जत थो, और आणंदसिंह के पौत्र रामसिंह विजयसिंहोत के तरफ ' गोलासण ' की जागीर थी, जिसको एकवडा कुरव की इज्जत थी. इन लोगो के सिवाय, एक दूसरी जागीर में क्रमशः १ हरिसिंह, २ फतहसिंह. ३ खुमाणसिह, ४ थानसिंह, ५ सरदारसिंह व उसका पुत्र जगतसिंह था, जगतसिंह को जोधपुर रियासत की तरफ से एकवडा कुरव व वांहपसाव की इज्जत थी. इसी मुआफिक फिर दूसरी एक जागीर में क्रमशः १ रडमल, २ अभयसिंह, ३ मूलराज व उसका पुत्र अमानसिंह था, जिसको एक कुरव व वांह पसाव को इज्जत थी.

जो कि ' सांचोरा चौहानों ' के तरफ से इतिहास प्राप्त न होनेसे उनका सम्पूर्ण शृंखलावद्ध वंश वृक्ष नहीं वना है, लेकिन यह वहादुर, और निमकहलाल राजपूतों के वास्ते मूता नेणसी ने तकलिफ ऊठाई थी, उसकी कदर हावे और उससे ' सांचोरा चौहानों को अपनी जाहोजलाली का ख्याल पेदा हो सके, इसो कारण से इस पुस्तक के लेखक ने हांसकी उतनो तपास करके उपर का इतिहास लिखने की अपनी फर्ज समजी है.
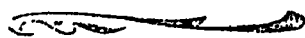
नोट—मुडेटी ठीकाना ईडर के राज्य में है. वहां के चौहानों में ' सूरजमल ' नामका वीर पुरुष ने ' मुडेटी का सूरजमल ' नाम, प्रख्याती में लाया था. रासमाळा नामकी पुस्तक में फार्बस साहेब ने इसके वास्ते कई पृष्ट लिखे है.

प्रकरण १८ वाँ.

वागडिया चौहान.

नाडोल के राव लाखणसी के वंशज अश्वराज उर्फ आसराव के पुत्र 'सोहड' वागडिया चौहानों का मूल पुरुष था. (प्रकरण ९ वां के वंशवृक्ष में नं. ६/३ वाला) सोहड के बाद क्रमशः २ मुंधपाल, ३ हापा, ४ महीया, ५ पत्ता, ६ देदा, ७ सहराव, ८ दूसरा मुंधपाल, ९ वरसिंह, १० विशलदेव, ११ भोजदेव, १२ वाला, व १३ डुंगरसिह हुए. इन लोगों के कब्जे में पहिले नागोर पट्टी का देश था, पिछेसे 'डाहलिया परमारों' का छापर, द्रोणपुर आदि इलाके पर कब्जा करके वहां राज्य करने लगे. 'मोहिल चौहानों' की ख्यात में लिखा है कि 'साजन' नामक चौहान श्रीमौर नामक परगने में राज्य करता था उसका पुत्र मोहिल था, मोहिल को अपने पिता के साथ अन बनाव होनेसे उसने संतन नामक शाहुकार से द्रव्य की सहायता पाकर, छापर-द्रोणपुर के उपर आक्रमण किया, इस युद्ध में १००० आदमी दोनों तरफ के काम आये और मोहिल चौहान का विजय हुआ, जिससे इन लोगों के हाथ से छापर-द्रोणपुर का राज्य छूट गया.

नं. १३ डुंगरसिंह वीर राजपूत था, वह कुछ समय तक वागड (वांसवाडा-डुंगरपुर का देश वागड कहलाता है उस में) में रहा था. इसी कारण से 'सोहड' की ओलाद वाले 'वागडिया चौहान' कहलाये गये. डुंगरसिंह मेवाड के राणा 'सांगा के' समय में विद्यमान था. सूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि राणा सांगा इसका वडा सन्मान् करता था, और 'वदनोर' की जागीर उसको दे रखी थी. डुंगरसिंह के बनाये हुए महलान तलाव आदि वहुतसे स्मारक वदनोर में विद्यमान है. इस समय 'वागडिया चौहानों' के कब्जे में वांसवाडा व डुंगरपुर रियासत में वडी २ जागीरें है. सूता नेणसी की ख्यात से नीचे मुआफिक वंशवृक्ष डुंगरसिंह की ओलाद वालों का वि. सं. १७२१ तक का प्राप्त होता है. उसके बाद कोन २ हुए उसका इतिहास तलाश किया गया, परन्तु उन लोगों के नहीं देने से जो कुछ ख्यात मिली है उससे ही सन्तोष करना पडा है.

१ वंशवृक्ष वागडिया चौहान.
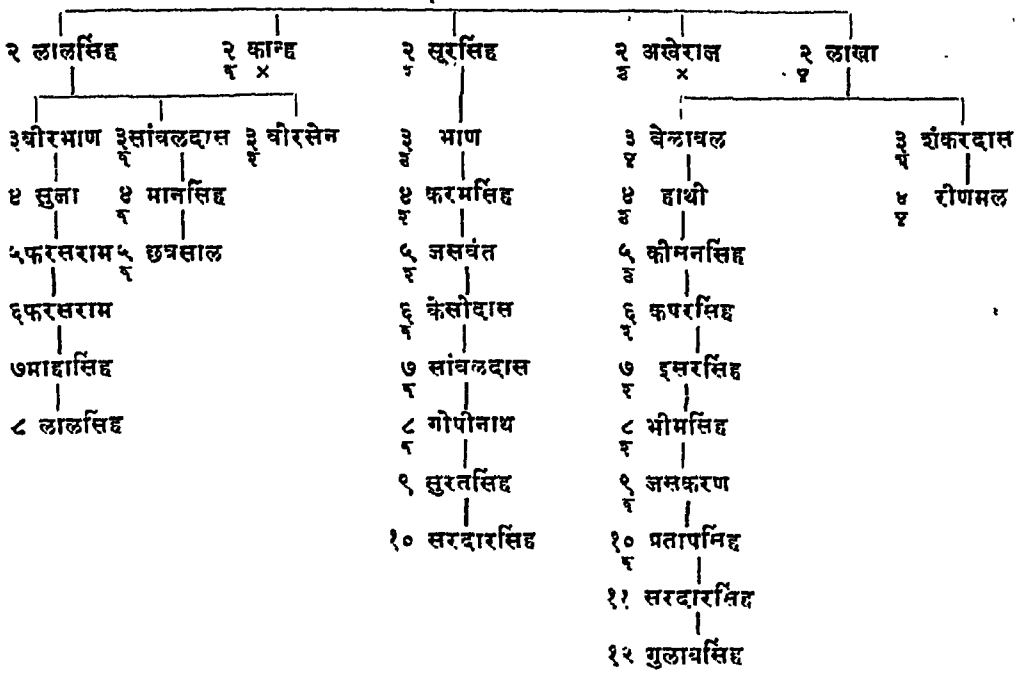
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ डुंगरसिंह—इसका दूसरा नाम पर्वतसिंह होना पाया जाता है. सिसोदियों की ख्यात में लिखा है की, जब वांसवाडा का राज्य नहीं था, और वागड के ३५०० गाव डुंगरपुर के रावल उदयसिंह के कब्जे, में थे,. उस जमाने में चौहान पर्वत उनकी चाकरी में था. रावल उदयसिंह को पृथ्वीराज व जगमाल नामक पुत्र थे. रावल पृथ्वीराज जब डुंगरपुर की गद्दी पर बैठे तब जगमाल वागी हो गया. पृथ्वीराजने जगमाल के उपर फौज भेजी जिसमें चौहान पर्वतसिंह मुख्य था. पर्वतसिंह ने जगमाल को हरा कर भगा दिया, और वह रावल पृथ्वीराज के पास आया, लेकिन किसी आदमी ने कह दिया कि जगमाल को मारना चाहते तो मार सक्तेथे, परन्तु रावत पर्वतसिंह ने उसको नहीं मारा जिससे रावलजी चौहान पर्वतसिंह पर नाखूश हुए, और जब पर्वतसिंह मुजरा करने को आया तब मुजरा नहीं लिया, जिससे वह नाखुश होकर जगमाल के पास चला गया, जगमालने इसकी मदद से वडे जोर शोर से वगावत शुरू की और चार पांच महिनो में डुंगरपुर का देश वरवाद किया, अखीर डुंगरपुर का देश आधोआध जगमाल को देना कवूल करने पर पर्वतसिंह ने सुलह करा दी, उस रोज से वांसवाडा की रियासत अलग कायम हुई, और १७५० गांव लेकर जगमाल वांसवाडा में रावल पद को धारण करके गद्दी पर बैठा.

राणा सांगा ने जब कि अहमदनगर के बादशाह पर चढाई की उसमें डुंगरसिंह और उनके बहुत से भाई बेटे काम आये. बांसवाडा का राज्य कायम होनेसे वागडिया चौहानों का पैर वागड में बहुत मजबूत हुआ, और मही नदी के किनारे का देश उनको जागीर में दिया गया.

नं. २/१ कान्ह बडा वीर राजपूत था. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि राणा सांगा ने अहमदनगर पर चढाई की तब अहमदनगर के किले के किवाड जो लोह के थे वो ऐसे गरम होगये थे की उन किवाडों को तोडने के वास्ते हाथी को उस पर लगाये गये, लेकिन गरमी के सबब से हाथी वापस लौटे, जिस पर कान्ह ने महावत से कहा कि मैं किवाड के पास खडा रहता हुं सो मेरे को बीचमें रख कर मेरे बदन पर हाथी अपने दांत लगा कर किवाड गिरा देवे ऐसी तजवीज कर. महावत ने उस मुआफिक उसको बीचमें रख कर हाथी से हमला कराया, जिससे किवाड टूट गये और कान्ह का चूराचूरा हो गया.

नं. ४ सुजा बडा पराक्रमी हुआ, वह मही नदी पर अपने काका सांवलदास आदि चौहानों समेत उदयपुर महाराणा के विरुद्ध युद्ध में काम आया. जिसके वास्ते पांचेटिया के कवि आढा किशना ने कहा है कि—

" गज ढाटे पछे गाढीयो गिरपुर, धर मंडल दर पछे ढया; वध वाजीयो भाजने वागड, सूंजे कटक नां सांसे ढीया. "
" डुंगर हरा भूजे डुंगरपुर, जगत जाणंता जुओ जुओ; दीठा हां कढीयां [३]दिवाणे, मही किनारे सही मुओ. "
" पत्तिसे तणा उल पंडा, सामहा हे देससहस सकज; भूजे पूजा तणा न सहियां, गोखे दोट खांजंता गज. "
" सांवल, कैमा सरीखा साखे, भांण तणो वढीयो कुल भाण; महिमल्ल वडो कटक मेवाडां, चासी चल वहूहो चहुआण."

नं. ७/१ मानसिंह—बांसवाडा के रावल मानसिंह का प्रधान था, उसके वास्ते मूता नेणसी की ख्यात में बहुत कुच्छ लिखा गया है.

मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि × × " डुंगरपुर बांसवाडे मुदे चहुआण वागडीआ चहुआण डुंगरसी वालाऊत रा पोतरा माथे इणारे बाप दादे सदा डुंगरपुर बांसवाडा रा धणीया ने सदा थापे उथापे छे. वाहरली फोजां राणा री पातसाह री आवे छे तरे चहुआण स्यांम नदी राणा रे मुलक रे गडा संध छे. तिण लोपतां चहुआण सदा मरे छे. सोम नदी रे ढाहे चहुआण काम आया त्यांरी छतरी छे. वागडरे कांठे चहुआण भड किवाडरा राजपूत वैधीला छे. सु धणीयांरे ने चहुआणांरे रस थोडा दिन हुवे छे. तद मारवाड रा रजपूतानूं वडा वडा पटा देने सदा वागड रे थान वास राखे छे. " × ×

वागडिया चौहानों और बांसवाडा के रावल के दरमियान विरोध होने का यह

---

१ सुजा. २ डुंगरसिंह का पौत्र. ३ राणा. ४ महाराणा की फौज. ५ सावलदास. ६ कलमसी. ७ वीरभाण का पुत्र.

कारण पाया जाता है कि रावल जगमाल के बाद बांसवाडा की गद्दी पर रावल प्रतापसिंह बैठा उसको पुत्र न होनेसे उसने अपनी पासवान पदमणी के बेटे मानसिंह को गद्दी दी. उसके समय में खंघु के भीलों ने सिर उठाया, रावल मानसिंह ने भीलों को सजा दी और उनके मुखीये को पकड लिया, लेकिन मौका मिलने पर भील ने मानसिंह को मार डाला, जिस पर रावल का प्रधान वागडिया चौहान मानसिंह सांवलदासोत (नं. ४/१ वाला) था, उसने भील को मार डाला, और खुद बांसवाडा का मालिक बनकर गद्दी पर बैठ गया.

इस विषय में मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि ××"तिण दीन डुंगरपुर रावल सहसमाल धणी छे. तिणनुं मान सुं कहाव कियो जु तू कूण आदमी सु (किस रिस्सेदारी से) वांसवाडा री धरती खाय. सुं आ वात मानी नहि. मांन दत्त मांहो माह अदावत हुई तद रावल सहसमल चढ मान उपर आयो वेढ हुई सो मान सावलदासोत वेढ जीती. रावल सहसमल वेढ हारी वेस रह्यो. तठा पछे राणे प्रताप उदैसिंघौत (महाराणा प्रतापसिंह) वात सूणी. इण भात मान सोट मरद थको वांसवाडो खाय छै तरै वांसवाडा ऊपर फोज सीसोदीयो रावत रायसिंघ खंगारोत नै सीसोदीया रतनसी कांधलोत ने असवार हजार ४००० दे विदा कियो. चहुआण मान यांरे सामे आयो. आयनै वेढ करी. रावत रायसिंह काम आयो. दीवाण री (महाराणा की फोज) साथ भागो. मान चहुआण वेढ जीती. राणौ ही वेस रह्यो. तठा पिछे चहुआण मान नुं सारा (सब.) वागडीया चहुआण मिलैने कह्यो. तो नुं धणी फत्री छे. आपै वांसवाडा रो धणी कदी नहि. 'आपै वांसवाडा रा भड कीवाड छां. थंभ छां. नु को हेक पाटवी जगमाल रो पोतरो पाट माथे थाप. तद उग्रसेन कल्यारो (१ जगमाल रावल का पुत्र किसनसिंह व उसका पुत्र कल्याणसिंह किसनसिंह व कल्याणसिंह को गद्दी क्यों नहीं मिली थी इसका पत्ता नहीं चलता है.) मोसाल थो तिणांरे तेड ने रावलाई रो टीको दीयो." ×× तात्पर्य यह है कि मानसिंह ने वांसवाडा दवा लेने पर उनके उपर डुंगरपुर के रावल ने व उदयपुर के महाराणा ने फौज भेजी परन्तु उन दोनों की सफलता नहीं हुई जिससे वह बैठ रहे, और वागडीया चौहान भाइयातों के कहने पर उसने रावल जगमाल का पौत्र कल्याणसिंह के पुत्र उग्रसेन को बुलाकर वांसवाडा का रावल मुकरर किया.

वागडीया मानसिंह को राज्य प्राप्ति का बहुत लोभ था, उसने रावल उग्रसेन को गद्दी पर बेठाया लेकिन वांसवाडा रियासत व महलातों में अपना आधा हिस्सा कायम रखा, और खुद महलात में रहने लगा. रावल उग्रसेन उस समय नाम के धणी थे, क्यों कि वांसवाडा में भी उसका अधिकार नहीं चलता था, वल्कि एक महल में दोनों रहने से रावल के जनानी सरदारों की बेअदवी होने लगी. रावल के राजलोकां साथ जोधपुर

के राठौर राव आसकरण चंद्रसेनोत की विधवा राणी 'हाडी' रहती थी. उसके तरफ मानसिंह की कुदृष्टि होनेसे वह अपना शील बचाने को आपघात करके मर गई, इस घटना से रावल उग्रसेन को बहुत बूरा मालूम हुआ, जिससे रावत सूरजमल जेतमलोत द्वारा चोली महेसर का केसोदास भीवोत को पक्ष में लेकर वांसवाडा पर अचानक हमला कर मानसिंह को भगाया. इस मदद के बदले में रावल ने अपनी तीन वहिनों के विवाह केसोदास के साथ किये, और रावत सूरजमल को रु. २५००० की जागीर का पट्टा इनायत किया.

मानसिंह भाग कर वादशाह के पास पहुंचा और शाही फौज की मदद से वांसवाडा छीन लिया, जिससे रावल उग्रसेन पहाड में चले गये. सूरजमल ने रावल को सुसराल में भेज दिया और खुद पहाड में रहा. वाद मौका पाकर भीलों की सहायता से अचानक शाही फौज पर छापा मारा. इस लडाई में मानसिंह के बहुत आदमी मारे गये, और शाही फौज का सरदार अपनी फौज लेकर चला गया, जिससे मानसिंह को वांसवाडा छोडना पडा. वह फिर वादशाह के पास पहुचा, लेकिन सूरजमल भी रावल के साथ उसके पीछे शाही खिदमत में हाजिर हुआ, जिससे मानसिंह को वादशाह की सहायता नहीं मिल सकी और वापिस लौटना पडा. वह अपने वतन के तरफ आ रहा था तब रासते में ब्राहनपुर में सूरजमल ने उसको (वि. सं, १६५८ में) मार डाला.

मानसिंह के वाद वागडिया चौहानों का इतिहास प्राप्त नहीं हुआ, परन्तु उनका सम्बन्ध वागड के साथ मजबूत जुडा हुआ था. वागडिया चौहानों का दवाव ज्यादह होने के कारण राठौर आदि दूसरी खांप के राजपूतों को रख कर वांसवाडा के रावल ने चौहानों को काबू में रखने का यत्न किया था, उसी कारणसे 'कुशलगढ' की वडी जागीर राठौरों की वांसवाडा रियासत में होने पाई है.

नं. ९ सूरतसिंह, नं. ८ गोपीनाथ का पुत्र जो पागल हो गया था, और उसी कारण से उसके पैर में हमेश वेडी रखी जाती थी. जबकि वांसवाडा पर राणा की फौज आई, और युद्ध के वाजे वजने लगे, तव सूरतसिंह ने अपने भाइओं से पूछा कि यह क्या है, तव किसी ने कहा कि आज दुश्मन आ रहा है सो तुम्हारा तमाशा देखेगा, जिस पर वह एकदम होशमें आया और वेडी कटवा कर युद्ध करने में प्रवृत्त हुआ, उसने इस कदर पराक्रम दिखाया कि दुश्मनों को भी आश्चर्य हुआ. उसके विषय में पांचेटीया के कविराज आढा दयालदास ने कहा है कि.

" रावल री चाड वाजीयो रैंकां; अणी भांग जुद्ध वेळ अरडींग; "
" आपरे भोम उपरे आया; सहे नहि दल सूरतसिंघ. "

१ पोकार. २ तलवार.

" उपरे मही सामहे अणीये; साका लग वचीया पतसाह; "
" राव चहुआण भलो रोहडीयो, राण कटक खागां रैम राह. "
" समरह मोहेर वाजीयो सूजो, सरगे तको उचाले चांव; "
" पहेलां नाथ तणो भड पडीयो, पाछे दिया धरा दैस पाव. "
" कल हण वर दूसरो केशैव, वारांगना आई वरण. "
" सूरज चांद किया दोए साखी; मोटे भव कीधो मरण. "

दूसरा इसके विषय का एक त्रंबकडा कविराज आढा शंकरदान के मुखजवान से उतारा गया जिस्में इसके पागल पन के विषय में इशारा किया है वह यह है कि–

" तैंडा जोवसी खल अजव तमाशा; पेंडा रोप खडा जुद्ध पग्गा. "
" एंडा बोलणहार अनर्म्मा; वेंडा उठ त्रंबागळ वेग्गा. "
" भालां खूर अचालां भारत; सवळां वाजी सांक सरगां. "
" झीक ऊपाड दिये खळ झाला; कालां वावर खाग करंग्गा. "
" आयो चाल फवजां उपर; रे जग मांही सबोल रहल्ला. "
" साह भूजां मशरिक हमे श्रम; गाह खळां खग वाह गहल्ला. "
" वीत्त समापण क्रांत तणो वर; दारुण फोज अरि दल ढूंकी. "
" नाथ तणो सूरतेस नभ्रे नर; चीत्त न धो ठकैं रीत न चूंको. "

तात्पर्य यह हे कि सूरतसिंह दुश्मन की फोज को हटाकर महो नदी पर मारा गया.

इस पुस्तक के लेखक ने वागडिया चौहानों का ज्यादह इतिहास प्राप्त करने की कोशिश की, मगर नहीं मिला, सिर्फ इतनाही मालूम हो सका कि वर्तमान समय में वांसवाडा व डुंगरपुर रियासत में जो ' सोलह–वत्तीस ' सरदार कहलाते है उनमें वागडिया चौहानों की नीचे मुआफिक जागीर है, यानी १ मोटागांव, २ अथुर्णा, ३ मेतवाला, ४ गड़ी व ५ गनोडा, यह पांच ठीकाने वांसवाडा रियासत में 'सोलह' में गीने जाते है, और ६ वीछीवाडा, ७ छाजा, ८ भुखीया, ९ माईयावा, १० वसी, ११ भूवाला, यह ठिकाने 'वत्तीस' में शुमार हे. उसी मुआफिक डुंगरपुर रियासत में, १ वनकोडा, २ ठाकरडा, ३ पीठ, ४ माड़व, ५ एमदवाडा व ६ वमासा, यह ठिकाने ' सोलह ' में व ७ गांमडा, ८ वडीपारडी, ९ छोटी पारडी, व १० वगेरी यह ठिकाने ' वत्तीस ' में है.

३ दुश्मन. ४ पहिले. ५ गोपीनाथ. ६ राणा. ७ केसोदास.

१ तुम्हारा. २ बामनेलगा. ३ बुलाया. ४ पागळ. ५ ठाकर की रीत.

प्रकरण १९ वाँ.

वालीसा चौहान.

वालीसा चौहान की शाखा नाडोल से निकली हुई है. (देखो पृष्ठ ५२ पर नाडोल वंशवृक्ष में. नं. २/२ वाला अजेतसिंह.) नाडोल के राव लाखणसी के पुत्र अजेतसिंह की ओलाद में 'वाला' नामक पुरुष से 'वालीसा' कहलाये है. वालीसा चौहानों की जागीर गोडवार परगने में (नाडोल के नजदीक में.) थी उसका वंशवृक्ष नीचे मुआफिक है.

वंशवृक्ष वालीसा चौहान. (परगने गोडवार इलाके जोधपुर के गांवों में.)

राव लाखणसी के पुत्र अजेतसिंह से क्रमशः २ वजेसिंह, ३ भीमदास, ४ जोधसिंह, ५ भोजराज व ६ वाला हुआ, और उससे क्रमशः
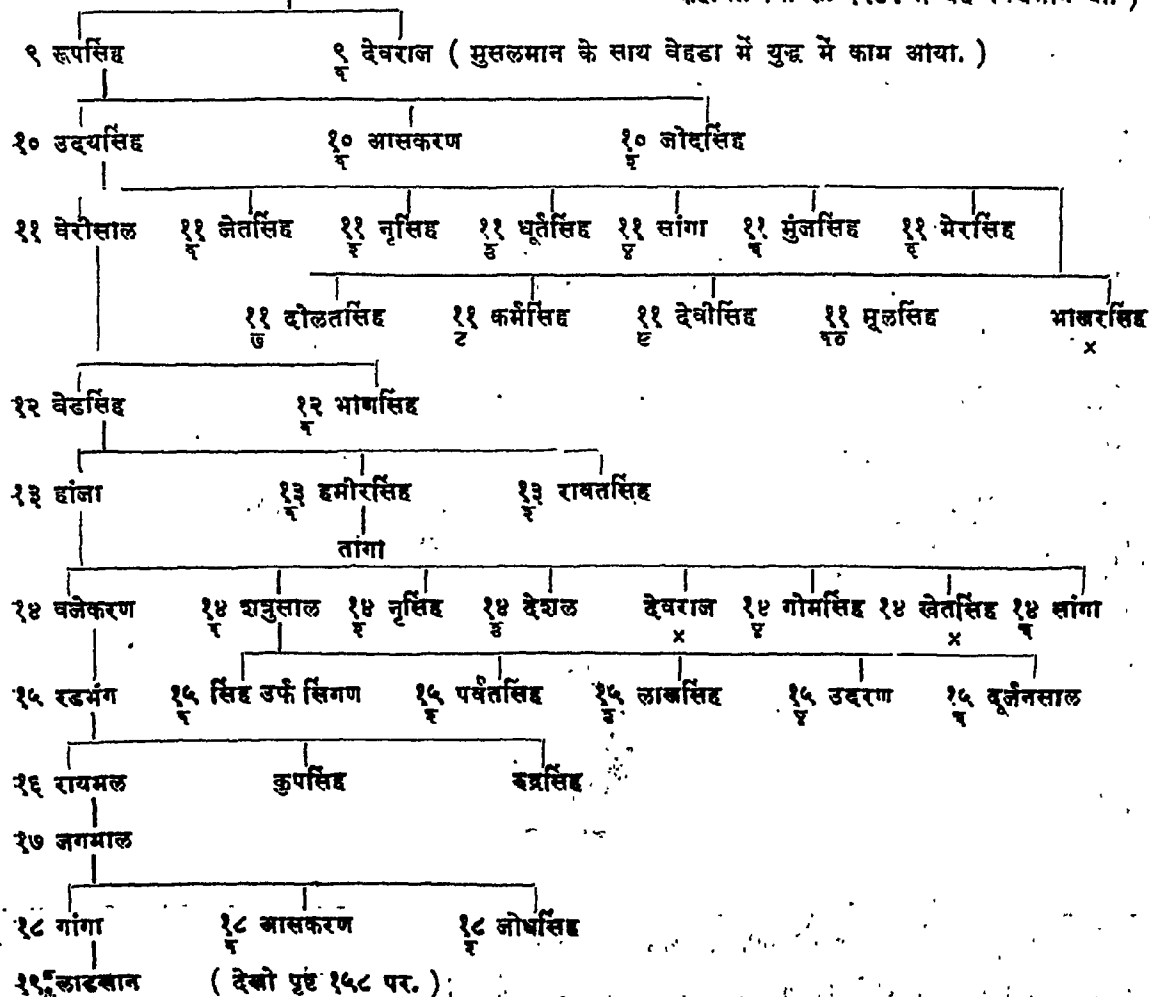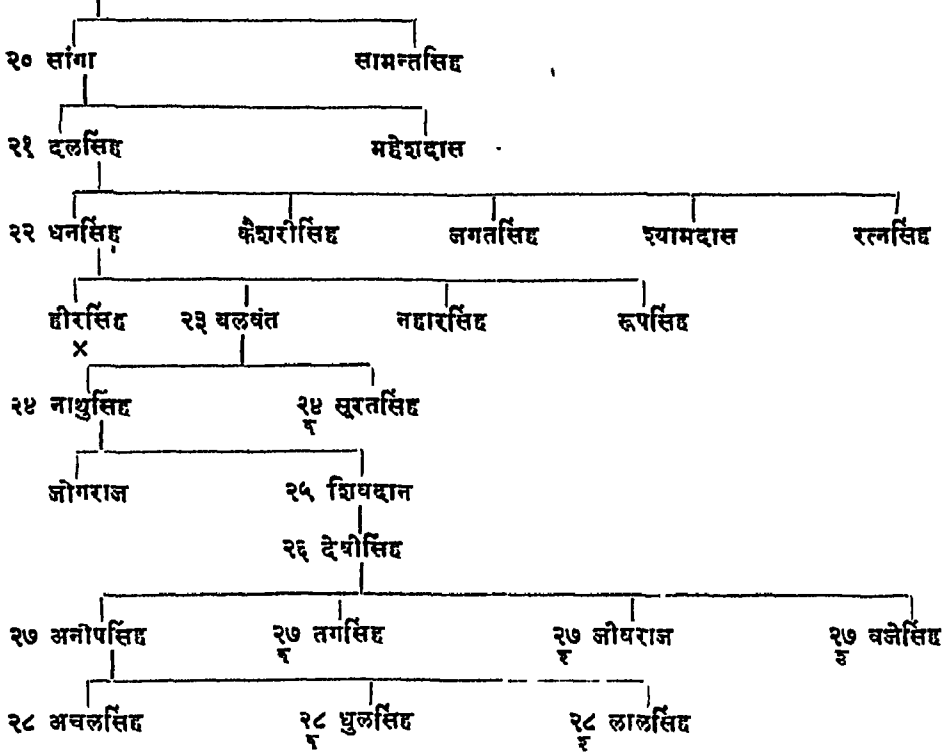
उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ से नं. ६ वालें वाला तक का इतिहास प्राप्त नहीं हुआ है. वडुआ की पुस्तक से पाया गया है कि यह नाडोल में ही थे.

नं. ७ वरसिंह ने सींगा हतुडिया नामके राठोर को मार कर वि. सं. १२३२ में वेहडा-बुजरक आदि ४२ गांवो पर कब्जा किया, और वि. सं. १२३५ में 'राह' नामक पहाड पर किला बनवाया, तव से वालीसे चौहानों का स्थान 'वेहडा' गिना गया. इस विषय में कविने कहा है कि.

"वरवे लीधो वांकडे वहां वल वालीस, सींगो कमधज साजीयो वारासें वत्तीस."

नं. १० उदयसिंह ने 'सेंदला' गांव वसाया, यह वि. सं. १३३५ व १३४० में विद्यमान था. इसके समय में मेवाड के सीसोदिये रुद्रसिंह व उसके पुत्र लाखा ने वि. सं. १३४९ में 'वेहडा' पर आक्रमण किया. इस युद्धमें उदयसिंह का भाई नं. $\frac{१०}{१}$ आसकरण काम आया.

नं. ११ वेरीसाल पर अलाउद्दीन वादशाह ने चढाई करके उसको पकड कर देहली ले गये थे, यह घटना वि. सं. १३६५ में हुई, मगर वादमें 'ईडर' के राव 'खरहत' जो इसके वहिनोई होतेथे उसने दहेली के वादशाह से छूडवा कर 'वेहडे' में कायम रखवाया. यह वि. सं. १३७० में विद्यमान था.

" तोगे टुंक अजवालिया विशलपुर वाला; राणा तणा दल काढ़िया चढ़िया ने पाला. "

राणा के साथ युद्ध में उसने स्वपराक्रम से उसको कई एक महिनों तक रोक रखा, जिससे राणा की नौयोवना राणी चिन्ता करके राणा की राह देखने लगी और अपनी सखी से बार २ पूछती रही, जिस विषय में कविने कहा है कि—

" झुमली मद जोवन भीनी, वना सुहार चंदा वदिनी. "
" आवे नहीं सखे घर सुंधा, राण तणां दल तोगे रूधां. "
" वरषा रूत आई वसंती, कोयल कंठ अलाप करंती. "
" रंग महेल चितारे राणी, नींद कवर रूधाने ताणी. "
" आप तणो कंथ घरे ना आवे, वरसालो केम करी वोलावे. "
" कहो शखी हमे कांई करसां, तो बलवंत वल रूधां वालीसां. "
" माथे श्रावण जोवन माती, राज कुवार महेल रंग राती. "
" वरू घर ना वे वासण वोले; नागणियां छात्र विण डोले. "

नं. १३/२ रावतसिंह की ओलादवाले इलाके जोधपुर के गांव १ कानपुरा, २ अखेराज का गुडा, ३ बांता, ४ बुसी, आदि गांवों में है.

नं. १४/१ शत्रुसाल की ओलादवाले जोधपुर इलाके के गांव १ घाणेरा, २ सुंडा, ३ भाटुड, ४ मांदल व सिरोही इलाके के गांव पोसालिया व मासाल आदि में रहते हैं.

नं. १४/२ नृसिंह की ओलादवाले सिरोही इलाके के गांव बारेवडा व रांवाडा में रहते हैं.

नं. १४/३ देशल का परिवार जोधपुर इलाके का गांव नाणा में व सिरोही इलाके के गांव धनारी व काछोली में है.

नं. १४/४ गोमसिंह की ओलादवाले जोधपुर इलाके के गांव १ गोबरिया, २ कंटालिया, ३ जादरी, ४ विशलपुर व सिरोही इलाके के गांव १ मांडवाडा, २ आमथला, ३ भारजा व ४ पिन्डवारा में रहते हैं.

नं. १४/५ सांगा से 'सिंगणोत बालीसा' कहलाये गये. जिसकी ओलाद जोधपुर इलाके के गांव १ विजापुर, २ सेवाडी, ३ टीपरी, ४ विशलपुर व सिरोही इलाके के गांव भारजा में रहते हैं. सिंगणोत बालीसों में से, ' जेतसिंह ' सिंगणोत, महाराव शिवसिंह के पास प्रधान था. जिसने पिन्डवारा के राणावत ठाकुर को चूक करके मारा था.

नं. १७ जगमाल बालीसा बहादुर सरदार था. वह सिरोही के महाराव की सेवामें रहता था, जबकि महाराव उदयसिंह (राजकुल सिरोही में नं. १८/१ वाला) का देहान्त हुआ तब महाराव दूर्जनसाल के कुमार मानसिंह जो महाराणा उदयसिंह के पास चला गया था, उसको बुलाने के वास्ते यह मेवाड गया, और युक्ति से मानसिंह को सिरोही भेज दिया.

मानसिंह सिरोही की गद्दी पर बेठने बाद यह महाराव की सेवामें रहा. जब कि मानसिंह के पीछे महाराव सूरताणसिंह सिरोही की गद्दी पर आये, तब डुंगरावत वजेसिंह ने सिरोही की गद्दी दवाना चाहा और उसके लिये लखावत सूजा को चूक करके मारना चाहा, उसमें जगमाल वालीसा ने बाधा डालने से वजेसिंह ने अपने चचेरे भाई डुंगरावत रावत सेकावत के हाथ से जगमाल को मरवा दिया, और बादमें लखावत सूजा को चूक किया.

नं. १८ गांगा, 'वेहडा व बुजरग' की जागीर का मालिक था. इसके समय में वालीसे चौहानों ने आपस में जागीर के वास्ते तकरार खडी की. वालीसा चौहानों के पास जागीर कम थी, और परिवार ज्यादह था. वे लोग पाटवी–खाटवी की मर्यादा न रखते सब ठाकुर होकर वरताव करने लगे, जिससे गांगा ने आपस की तकरार रफे करने को मेवाड के महाराणा खेतसिंह के छोटे पुत्र ' सेका ' को बुलवा कर वेहडा में पाटवी करके रखा. जिसको सब वालीसे चौहानों ने अपना मालिक माना, लेकिन बाद में 'सेका राणा' के पुत्र 'चत्रभाण' ने वालीसों से 'वेहडा' की जागीर छीन ली. जिससे वालीसे चौहान बहैसियत ' भोमिये ' रह गये.

नं. $\frac{१८}{१}$ आसकरण की ओलाद वाले जोधपुर इलाके के गांव १ कोटाड, २ चांवडेरी, व ३ वीरमपुर में रहते है.

नं. $\frac{१८}{२}$ जोधसिंह की ओलाद वाले सिरोही इलाके के गांव मांडवाडा में रहते है.

नं. १९ लाडखान की ओलाद वाले 'वेहडा' इलाके जोधपुर में भोमिये राजपूतों के दावे से विद्यमान है. जिसमें नं. $\frac{२४}{१}$ सूरतसिंह काम आया था. वर्तमान समय में वेहडा के वालीसे चौहानों में नं. २८ अचलसिंह पाटवी गिना जाता है. और दूसरी सब जगह जहां २ वालीसे चौहान है. वे जागीरदार के तोरसे नहीं लेकिन राजपूत दावे से या भोमिया के तोरसे अरहट खेतों की जागीर खाते है.

प्रकरण २० वां.

जालोर के सोनगरा चौहान.

सोनगरा चौहानों का मूल पुरुष नाडोल के चौहानों में अंकित हुआ नं. १/३ कीर्तिपाल उर्फ कीतू है. जिसके तरफ नाडोल से मिली हुई सिर्फ बारह गांव की 'नारलाई' पट्टा की जागीर थी, लेकिन उसने स्वपराक्रम से जालोर, व केराडु के परमार राजाओं को मारकर अपना अलग राज्य कायम करके जालोर में राजगद्दी स्थापन की. कहा जाता है कि जालोर के पहाड का नाम 'सोनग या सोनगिरी' होनेसे इसकी ओलाद वाले 'सोनगरा चौहान' कहलाये गये. अन्य मत से कहा जाता है कि कीर्तिपाल के पुत्र का नाम 'सोना' था, जिससे 'सोनगरा' कहलाये, परन्तु सिवाय सिरोही के राजपुरोहित की पुस्तक के दूसरी किसी ख्यात में कीर्तिपाल के पुत्र 'सोना' नामक होना मालूम नहीं होता है, जिससे 'सोनगिरी' के नाम से ही 'सोनगरा चौहान' कहलाये गये यह बात ज्यादह भरोसा के पात्र होना पाया जाता है.

सोनगरे चौहानों की ख्यात के वास्ते भी पृथक २ ऐतिहासिक साहित्य उपलब्ध होते हैं, उनसे नीचे मुआफिक अलग २ नामावली पाई जाती है.

(१) 'सूंधा पहाड का शिलालेख,' जो वि. सं. १३१९ में सोनगरा चाचींगदेव के समय में लिखा गया है, उससे १ कीर्तिपाल के बाद क्रमशः २ समरसिंह, ३ उदयसिंह व ४ चाचींगदेव के नाम अंकित हुए है.

(२) 'मूतानेणसी की ख्यात' की पुस्तक से १ कीर्तिपाल के बाद क्रमशः २ समरसिंह, ३ अरसिंह, ४ उदेसिंह, ५ जसीवर, ६ करमसी व ७ चाचगदेव और उसके बाद (नीचे देखो).
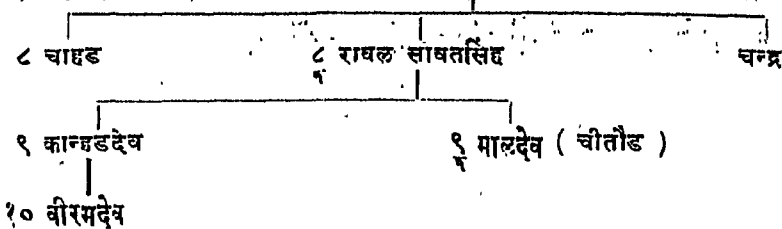
(३) सिरोही के बडुआ की पुस्तक से १ कीतू (उससे क्रमशः)

(४) सीरोही के राज पुरोहित की पुस्तक से १ केतु

२ पोरछा — २ सोना

३ चाचकदेव — ३ सवरीजी

४ सामथीजी — ४ माणीजी

५ कान्हडदेव, ५ वणवीर, ५ सालजी, ५ डुडरराव, ५ गोकलानाथ, ५ मालदेव

६ वीरमदेव

५ देवराज उर्फ पाताराव, ५ वीडा, ५ वाला, ५ अभा
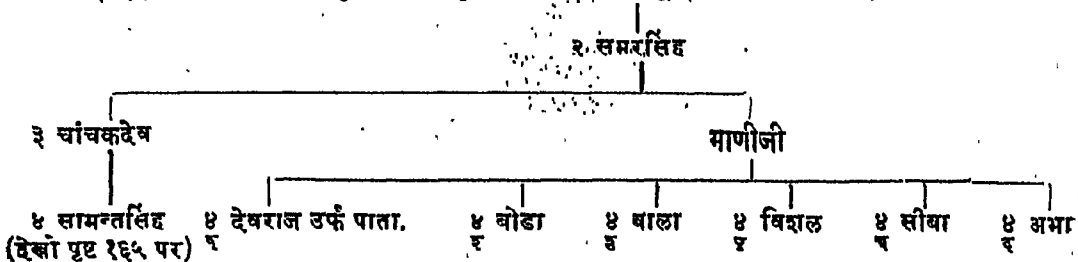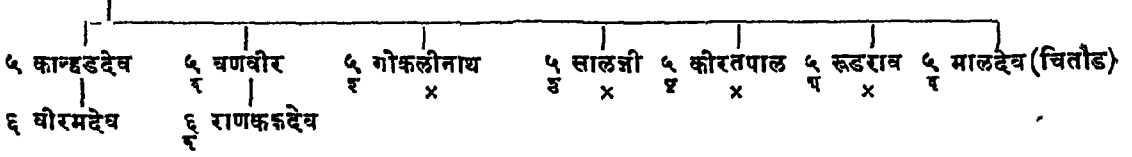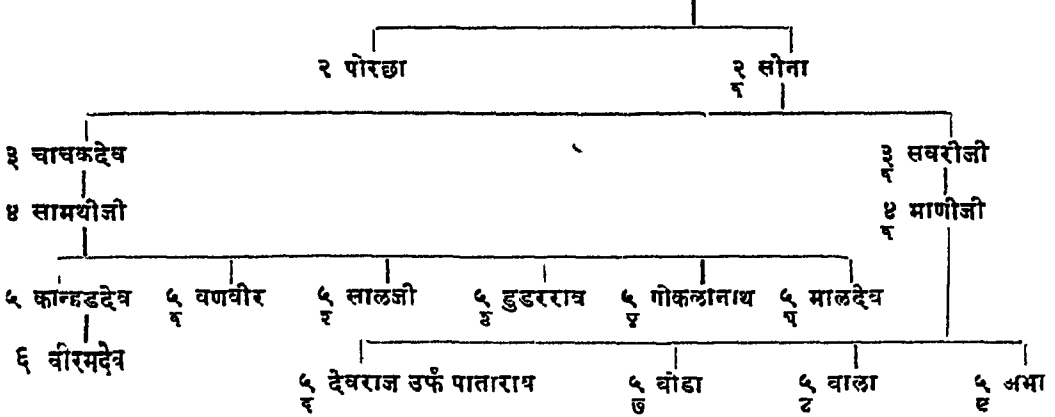
(५) खा. व. मुंशी न्यामतअलीखां की ख्यात से १ कीतू
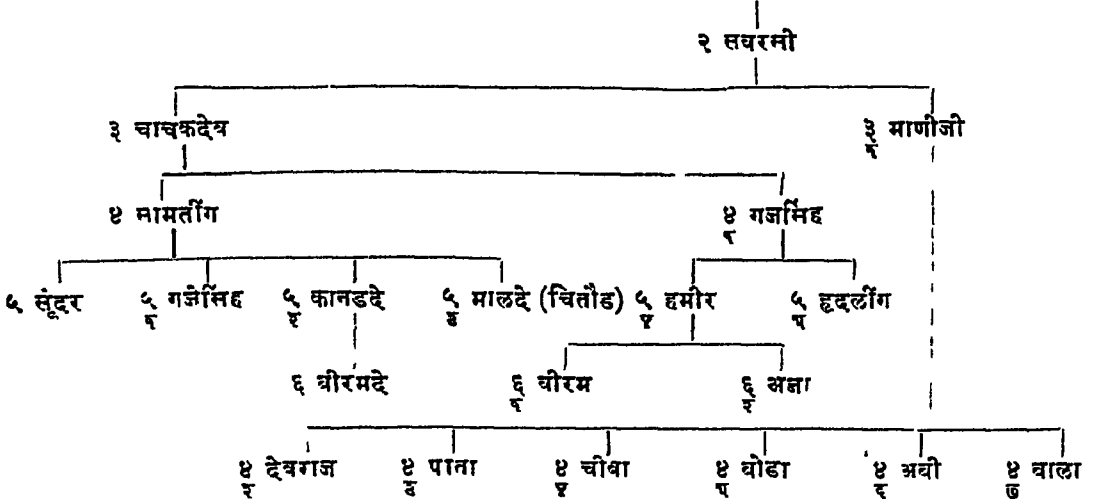
(६) सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक से १ कीर्तिपाल
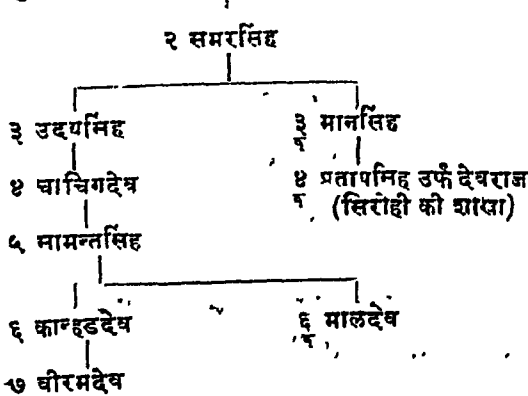
नोट—१ जालोर के सोनगरा वीरमदेव के विषय में 'वीरमदेव सोनगरा' नामक हस्तलिखित पुस्तक से व गीत कवित्तों से कीतू, सावंतसिंह, महणसी (मानसिंह) नाम उपलब्ध होते हैं जिसमें सांवतसिंह के पुत्रों के नाम १ कान्हडदेव, २ वणवीर, ३ गोकलीनाथ, ४ मालदेव व ५ मालजी होने का मालूम होता है।

२ कान्हडदेव प्रबंध नामक पुस्तक में सामन्तसिंह के पुत्र १ कान्हडदेव, २ मालदेव व उनका एक भतीजा सांतल नामका था जो गढ सवियाणे का किलेदार था. इतने ही नाम उपलब्ध होते है.

उपर्युक्त ऐतिहासिक प्रमाणों के सिवाय आबु पर वि. सं. १३७७ का महाराव लूभा के समय के शिलालेख से पाया गया है कि समरसिंह के वडा पुत्र मानसिंह उर्फ माणीजी था, और छोटा पुत्र उदयसिंह था. वस्तुतः शिलालेखों में हर जगह यह पाया जाता है कि उनमें जो वंशावली दी जाती है वह संकुचित और सिर्फ अपने वडाऊओं के नाम ही लिखे जाते हैं, बल्कि सगे भाई के नाम तक वाजे जगह नहीं लिखे गये हैं. जालोर के सोनगरे चौहानों के वंशवृक्ष के वास्ते उपर के प्रमाणों में जो जो नाम उपलब्ध हुए हैं, उन पर तुलना करते नीचे मुआफिक वंशवृक्ष बनता है.

वंशवृक्ष जालोर के सोनगरा चौहान.
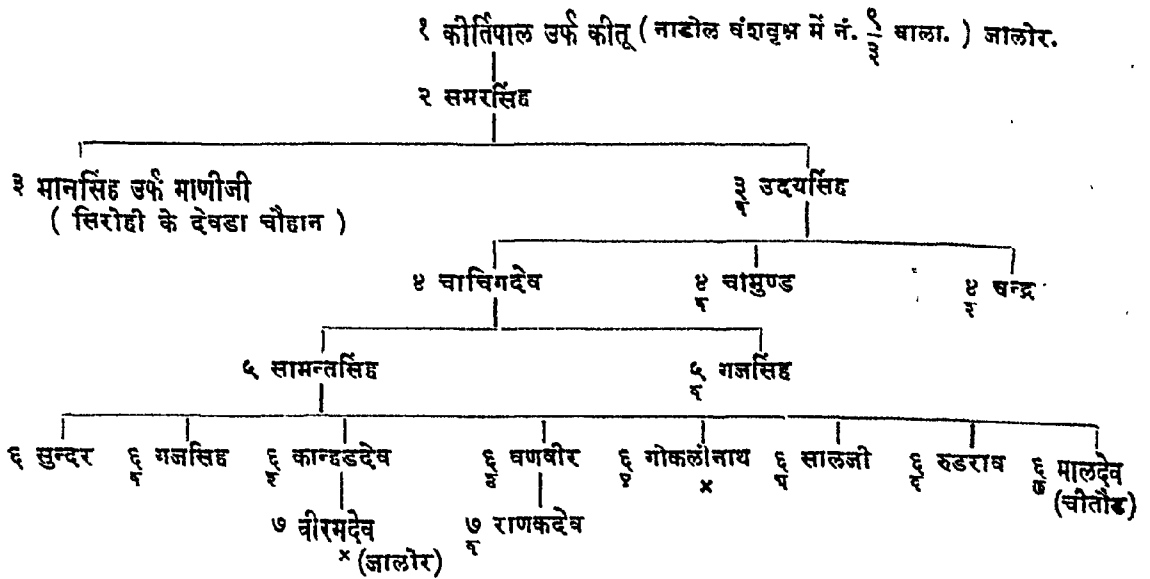
जालोर के चौहानों का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ कीर्तिपाल के विषय में सूंधा के शिलालेख में लिखा है कि इसने किरातकूट (केराडु) के राजा आसल को मारा. कासहृद (कायद्रां उर्फ काशिद्रा—यह गांव आबु की पूर्व दिशा में सिरोही राज्य में है.) की लडाई में मुसलमानों को जीत कर नाडोल के इस राजा ने 'जावालिपुर' (जालोर) को अपना निवास स्थान बनाया. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि कीतू बडा वीर पुरुष हुआ, उस समय में जालोर में कुंतपाल पवार, और सिवाणे (सवियाणा) में वीरनारायण पवार थे. कुंतपाल के प्रधान दहिया राजपूत ने भेद बताने से कीतू ने जालोर लिया और सिवाणा भी लिया. इस विषय में आसीया माला नामक चारण कवि ने (यह कवि सिरोही राज्य के 'खाण' नामक गांव का था.) सिरोही के राजवंश की राजावली के कवित में कहा है कि.

× × × × ×

" जिन्द राव तणै कीतू जिसा जै जालोर लीधो जुड; कर त्युं समो पूजै न कौ त्यैस कूंण पूजंत जुड. " ॥ ९ ॥
" सिवियाणो सोनगर जैण एक दिन जीता; वीर नारायण वंस हेवे सासे वदीता. "

" टहीया वत टंटार मार संग्राम मनोवैं; घर सहवरसं कटक पछै नाहूल प जावैं. "
" मूरताण सवल सामहा आपं प्राण अवरजीयो; कीतू कंधार मछरीक कुल गहपेव वडे गरजीयो. " ॥१०॥

× × × × ×

सिरोही के वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि कीतू वि. सं. १२०४ में गद्दी पर वैठा था. (पाया जाता है कि इस संवत् में इसको नारलाई पट्टे की जागीर मिली है.) वि. सं. १२३२ में इसने जालोर का किला वंधवाया. वि. सं. १२३५ में जालोर राजस्थान से इसने वहुआ वजेचंद को सीख (दक्षिणा) दी. उक्त पुस्तक में यह भी लिखा है कि-" राव कीतू को जलंधरनाथ प्रसन्न हुए. " जालोर गढ वंधाने के विषयमें निशाणी है कि-

" वारासें वर्त्तासे परठ जालोर प्रमाण; तें कीदि कीतू जिंद राव तणा गढ अडग चहुआण. "

कीतू कें विषय में दंतकथा में यह कहा जाता है कि यह वालक था तवसे नारलाई गांव इसको दिया गया था. किसी ज्योतिषी ने इसके वास्ते राजा होनेका भविष्य कहा था, जिससे इसका घात करने का प्रपंच हुआ, परन्तु एक दासी ने युक्ति से इसको वचा लिया. वाद यह चंद्रावती के परमार राजा की सेवा में उपस्थित हुआ, और उनकी सहायता से ही इसने जालोर व केराडु के राजाओं को मार कर जालोर लिया. शहावुद्दीन गोरी (वि. सं. १२३५ में) गुजरात पर चढाई लाया, तव आवु के परमार राजा धारावर्षादेव की सहायता में इसने कायंद्रा गांव के पास युद्ध किया, और उसमें यह जख्मी होकर भाग गया था. जलंधरनाथ योगी ने इसको +पारसमणी दिया था, जिससे सुवर्ण वना कर उसके जरिये से इसने जालोरगढ वंधवाया.

राव कीर्तिपाल का देहान्त वि. सं. १२३५ से वि. सं. १२३९ के दरमियान होना पाया जाता है, वल्कि उपरोक्त कवित्त के आखिर के चरण से (सूरताण सवल सामहा आपं प्राण अवरजीयो.) पाया जाता है कि यह मुसलमानों के साथ युद्ध हुआ उसमें ही मारा गया था.

नं. २ समरसिंह के विषय में सूंधा के शिलालेख में लिखा है कि इसने कनकाचल (जालोरगढ) का कोट वनवाकर उसके वुर्जों पर नाना प्रकार के लडाई के यंत्र (शायद तोपें होगी.) लगवाये. सोमवती अमावस्या के दिन इसने सुवर्ण का तुलादान (अपना वजन हो जितना सुवर्ण तोल कर दिया जाय उसको सुवर्ण तुलादान कहते हैं.) किया, और 'समरपुर' नामक शहर वसाकर उसको वगीचों आदि से सुशोभित वनाया, सि. रा. ई. की पुस्तक में तदुपरांत लिखा गया है कि इसकी वहिन रूदलदेवीने जालोर में दो

+ पारसमणी जालोर के सोनागरा चोहानों के पास होनेकी कथा गीत कवित म भी आती है. 'वीरमदेव सोनगरा' नामकी हस्त लिखित पुस्तक वनारी के जैन आचार्य भटारक श्री विजय महेन्द्र सूरेश्वर के पुस्तक भंडारसे मिली है उसमें लिखा है कि जव कि अलाउद्दीन खिलजी के साथ जालोर के सोनगरा राव कान्हडदेव ने युद्ध किया तव विजय प्राप्ति की आशा न रहेनेसे उसने 'पारसमणी'को वावडी में डाल दिया. अन्य मत से यह कहा जाता है कि कान्हडदेव को पारसमणी प्राप्त हुईथी.

शिवालय बनवाये, जो गुजरात के राजा दूसरे भीमदेव सोलंकी की राणी लीलादेवी होना चाहिये वैसा उक्त पुस्तक के पृष्ठ १८० की टीप्पणी में अंकित हुआ है. इसके समय के दो शिलालेख जालोर के तोपखाने में लगे हुए जाहिर हुए है, जिनका समय वि. सं. १२३९ व वि. सं. १२४२, होना अंकित है.

सिरोही के वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि इसने वि. सं. १२४९ में वडुआ फतेचंद को ' गोवड ' गांव और राजगुरु पुरोहित को ' सकराणा ' गांव दिया.

समरसिंह के पुत्रों के विषय में सिवाय सूंधा का शिलालेख के दूसरे प्रमाणों में ' उदयसिह ' का नाम नहीं है. मूता नेणसी की ख्यात में अरसिंह के बाद उदयसिंह का नाम मिलता है, लेकिन अरसिंह का नाम किसी ख्यात में नहीं है. सिरोही के देवडा चौहानों को ख्यात लिखने वालों ने ' उदयसिंह ' का नाम कतई उडा दिया है, और चाचिगदेव को समरसिंह का पुत्र होना अंकित किया है, वलिक पुरोहित की पुस्तक में चाचिगदेव को समरसिंह का वडा पुत्र होना लिखा है, जो विलकुल विश्वासपात्र नहीं है. आबु के वि. सं. १३७७ के शिलालेख में समरसिह का वडा पुत्र मानसिंह और छोटा उदयसिंह होनेका उल्लेख है. अनुमान होता है कि समरसिंह का वडा पुत्र मानसिंह होगा, परन्तु छोटे पुत्र उदयसिंह ने जालोर की गद्दी उससे छीन लेनेसे मानसिंह को ओलाद वालों की ख्यात में द्वेशभाव से उदयसिंह का नाम नहीं लिखा गया है, जैसे कि सूंधा के लेख में मानसिंह का नाम लिखने को परवाह नहीं की है. इसी कारणसे वि. सं. १३७७ के आबु के शिलालेख के आधार से वंशवृक्ष में मानसिंह उर्फ माणीजी को इसका वडा पुत्र और उदयसिंह को छोटा पुत्र होना अंकित किया गया है.

* समरसिंह के देहान्त का समय वि. सं. १२४९ के बाद व वि. सं. ×१२६२ के पहिले होना पाया जाता है.

---

* वडुआ की पुस्तक में समरसिंह का देहान्त वि. सं. १२७० में होने का लिखा है, परन्तु सि. रा. ई. की पुस्तक में पृष्ठ १८३ पर लिखा है कि उदयसिंह के समय के वि. सं. १२६२ से १३०६ तक के शिलालेख है, जिससे वडुआ की पुस्तक में दर्ज हुआ संवत् विश्वास पात्र नहीं रहता है, शायद उदयसिंह ने अपने पिता की हयाती में ही राज्य कब्जे कर लिया हो तो वैसा होना सम्भवित है.

× समरसिंह को व जालोर के दूसरे राजाओं को 'रावल' की पदवी होने का कवित्तों में व मूता नेणसीकी ख्यात में भी उल्लेख है, उससे व इनका राज अमल का समय देखने कभी ऐसा अनुमान किया जाय कि पृथ्वीराज रासा में जो समरसी रावल को चितौड का राजा होना बताया जाता है वह जालोर का राजा समरसिंह हो, क्योंकि इतिहासवेत्ताओं की दलील है कि उस समय में ' समरसी ' नामका राजा नहीं था. वल्कि टॉड राजस्थान में लिखा है कि चितौड के राजा कर्णसिंह मानसिक दुःख से पिडित होनेके कारण अपने ननिहाल जालोर में पडा रहता था, और उसने अपनी पुत्री का विवाह भी जालोर के सोनगरा रणधवल के साथ किया था. जबकि कर्णसिंह का देहान्त हुआ तब सोनगरे सरदारों ने रणधवल को चितौडकी गद्दी पर बैठा दिया, जिस पर एक भाटने राणा 'रायप' को उत्तेजित करके चितौड कब्जे करने की प्रेरणा करनेसे रायप ने फौज इकठ्ठी करके रणधवल पर चढाई की. दोनों सैन्य का ' पाली नगर ' के पास मुकाबला हुआ जिसमें सिसोदिया रायप को विजय प्राप्त हुआ. यह घटना का समय

नं. ३ मानसिंह उर्फ माणीजी की ओलाद वालों ने सिरोही का अलग राज्य प्राप्त करके कायम किया था, जिससे इनकी ख्यात 'देवडा चौहान' के प्रकरणों में लिखी गई है. जो कि सिरोही के वडुआ की पुस्तक में माणीजी का वि. सं. १२७० से १२८५ तक व उनका वडा पुत्र देवराज का वि. सं. १२८५ से १३०७ तक जालोर में होना लिखा गया ह, परन्तु उदयसिह का जालोर में गद्दीपर आनेका समय वि. सं. १२६२ के पहिले का होनेसे मानसिह व उनके उतराधिकारीयों की ख्यात सिरोही की ख्यात में लिखना उचित समजा गया है.

नं. ३ रावल उदयसिंह के विषय में सूंधा के शिलालेख में लिखा है कि यह जालोर की गद्दी पर आया और वडा ही पराक्रमी राजा हुआ. इसने नाडोल का राज्य अपने राज्य में मिलाकर जालोर को विस्तीर्ण देश का राज्य बनाया. इसके आधीन नाडोल, जालोर, मंडोर, वाहडमेर, सुराचन्द्र, राटहृद, रामसेण, श्रीमाल, (भीनमाल) रत्नपुर और सत्यपुर (सांचोर) आदि देश थे. 'ताजुलम आसिर' नामक फारसी तवारीख में लिखा है कि हि. स. ६०७ (वि. सं. १२६७) में 'शमशुद्दीन अल्तिमश' ने जालोर के किले पर चढाई की और वहां के राजा उदेशाह पर विजय पाकर १०० ऊंट व २० घोडे खिराज में लेकर सुलह कर ली, परन्तु इस विषय में मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि 'उदयसिह के समय में (वि. सं. १२९८ में माह सुद ५ को) 'जलालुद्दीन' सुलतान जालोर पर आया लेकिन उसको भागना पडा.' इस विषय में निशाणी का दोहा है कि:—

" सुंदरसर असुरह दले जप्पीयो येणेह; ऊदे नरपद काढीयो तस नारी नयणेह. "

सि. रा. ई. की पुस्तक के लेखक की यह राय है कि सूंधा के लेख में लिखा गया है कि उदयसिह ने तुर्कों के वादशाह का गर्व गंजन कर दिया. और नेणसी मूता की ख्यात में भी मुसलमानों को भगाना लिखा है. इस वातों के साथ सिर्फ १०० ऊंट व २० घोडे खिराज में लेकर वादशाह का लौट जाना, इन वातों का मुकावला करके निर्णय करने का काम पाठकों पर हम छोड देतें हैं. वस्तुतः मुसलमान वादशाहों का अपने शत्रुओं के साथ के वरताव पर खयाल किया जाय तो यही अनुमान होता है कि वादशाह को सफलता प्राप्त न होने से १०० ऊंट व २० घोडे इधर उधर से छीन कर चले गये होंगे, और अपना विजय दर्शाने के वास्ते खिराज में लाने का प्रसिद्ध किया गया होगा.

वि. सं. १२५७ के पहिले वारह वर्ष पर होनेका उक्त पुस्तक में उल्लेख हुआ ह. दूसरी छपी हुई ख्यातों में भी जालोर के सोनगरे चौहानों ने वि. सं. की तेरहवीं सदी में चितौड कुछ वर्षों तक दवा लिया था, वैसा लिखा गया है, परन्तु सूंधा पहाड के शिलालेख में उस वावत कुच्छ भी जिक्र नहीं हैं. अनुमान हो सक्ता है कि रावल समरसिंह के पास उस समय चितौड होनेसे चितौड के रावल समरसी के नामसे मशहूर हुए होंगे और चितौड का रावल कर्णसिंह जिसका नाम रणसिंह होना मेवाड के इतिहास में प्रसिद्ध है, उससे पृथ्वीराज की वहिन पृथा विहाई हो, और रणसिंह के वदले उसका नाम समरसिंह 'रासा' में लिखा गया हो.

उदयसिंह साहसिक व बहादुर राजा होनेसे शहाबुद्दीन गोरी ने देहली का 'चौहान राज्य' को नष्ट कर दियाथा, जिसका बदला लेनेको मुसलमानों पर हमला शुरू किया, और सिंधुराज को मारा. इसने जालोर में दो शिवालय बनवाये. यह भारत आदि ग्रंथों का ज्ञाता था. इसकी राणी 'प्रल्हादन देवी' से चाचिगदेव व चामुण्डराज नामक दो पुत्र हुए. (सि. रा. इ. पर से.) इसका देहान्त वि. सं. १३०६ से १३१९ के दरमियान होना पाया जाता है.

नं. ४ रावल चाचिगदेव के विषयमें सि. रा. इ. की पुस्तक के पृष्ट १८३ की टीप्पणी से पाया जाता है कि इसके समय के वि. सं. १३१९ से १३३३ तक के शिलालेख मिले है. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि रावल चाचिगदेव ने वि. सं. १३१२ में सूंधा पहाड पर चामुण्डा देवी का मन्दिर बनवाया था. सिरोही के वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि राव चाचिगदेव ने बुआडा (सिरोही राज्य का गांव है.) में 'मात्रा माता' का देवल बंधाया, और सूंधा भाखर (पहाड) में चामुण्डाजी का मन्दिर कराया. इसके सात राणीयां थी जिसमें पाटराणी आबु के परमार उदयसिंह (चंद्रावती का परमार राजा विक्रमसिंह जो पदभ्रष्ट हुआ था, उसका पुत्र था.) की पुत्री 'सरादेवी' थी. इसका देहान्त का समय वि. सं. १३३३ से १३३९ के दरमियान का होना पाया जाता ह.

नं. $\frac{४}{१}$ चामुण्ड व नं. $\frac{४}{२}$ चंद्र के नाम मूता नेणसी की ख्यात से उपलब्ध हुए ह. इनके विषय में दूसरा इतिहास नहीं मिला है.

नं. ५ रावल सामन्तसिंह के समय के वि. सं १३३९ से १३५९ तक के शिलालेख होना सि. रा. ई. की पुस्तक से जाहिर है. इसके पुत्रों के विषय में मूता नेणसी की ख्यात मुआफिक कान्हडदेव व मालदेव ये दो पुत्र होना पाया जाता है, तब देवडा चौहानों को अलग २ ख्यातों से ज्यादह पुत्र होने मालूम होता है. 'कान्हडदे प्रबंध' नामक पुस्तक में भी मूता नेणसी की ख्यात में लिखे हुए नाम अंकित है, परन्तु प्राचीन कवितों में ज्यादह नाम मिलते हैं. जो कि सामन्तसिह के पुत्रों में से सिर्फ मालदेव का वंश चलना पाया गया है, लेकिन यह पुस्तक खास वंशवृक्षों का होनेसे जो जो नाम उपलब्ध हुए है वे सब अंकित किये है, जिससे इसके आठ पुत्र होना माना गया है.

नं. $\frac{६}{१}$ गजसिंह का नाम सिर्फ खा. ब. मुंशी न्यामतअलीखां की ख्यात में मिला है, उससे मालूम होता है कि गजसिंह को हमीर व हदलींग नामक दो पुत्र थे. हदलींग के विषय में कुच्छ इतिहास नहीं लिखा है, परन्तु हमीर के वीरम व अजीत नामके पुत्र होना और वे दोनों बादशाह के हाथ से मारे जानेका उक्त ख्यात में उल्लेख किया गया है.

नं. ६ सुन्दर के विषय में मुंशी न्यामतअलीखां की ख्यात में लिखा है कि वह 'चंदल' में मारा गया, और नं. ६/१ गजसिंह के विषय में लिखा है कि वह भीनमाल में काम आया. पाया जाता है कि ये दोनों सामन्तसिंह की हयाती में ही काम आ चूके थे.

नं. ६/२ रावल कान्हडदेव अपने पिता के पीछे गद्दी पर आये. इसके समय में अलाउद्दीन खिलजी से अरसे तक विग्रह चलू रहा. कान्हडदेव के साथ अलाऊद्दीन खिलजी ने कहां कहां युद्ध किया, उस विषय में कवि पद्मनाभ ने गुजराती भाषा में वि. सं. १५४५ में 'कान्हडदे प्रबंध' नामक पुस्तक की कविता में रचना की है. जिसका सारांश 'कान्हडदे प्रबंध' नामके अलग प्रकरण में लिखा गया है. जालोर गढ राव कान्हडदेव के हाथसे वि. सं. १३६८ में जाना प्रसिद्ध है. कान्हडदेव के विषय में मूता नेणसी की ख्यात व दूसरे गीत कवित्तों में भी बहुत कुछ कहा गया है, उक्त पुस्तक और दूसरी हरएक प्रति में लिखा गया है कि कान्हडदेव श्रीकृष्ण का दशवां अवतार था, जो जालोर गढ से अलोप हो गया.

कान्हडदेव वडा वीर पुरुष था, उसी कारण से वि. सं. १३६८ तक जालोर गढ +इसके कब्जे में रहने पाया था. कान्हडदेव के साथ बादशाह अलाऊद्दीन को विरोध होने का यह कारण नेणसी की ख्यात में लिखा है कि गुजरात देश का प्रधान 'माधव' शाही फौज लेकर गुजरात पर जाता था, उस फौज को अपनी सीमा में से कान्हडदेव ने जाने न दी. और जब शाही फौज गुजरात, सौराष्ट्र आदि देशों को बरबाद करके सोमनाथ महादेव के लींग को उखेड कर देहली ले जा रही थी, तब जबरदस्ती जालोर की सीमा में आनेसे कान्हडदेव ने शाही फौज से युद्ध कर सोमनाथ महादेव के लींग को छुडा लिया, जिससे युद्ध की चिणगारी शुरु हो गई, पीछेसे अलाऊद्दीन की शाहजादी ने कान्हडदेव के कुमार वीरमदेव के साथ शादी करना चाहा, जिस बात को सोनगरे चौहानों ने मंजुर न की, उस पर शाही फौज ने जालोर गढ पर घेरा डाला, जिसमें बादशाह को सफलता प्राप्त न हुई, परन्तु 'विका दहिया' नामक राजपूत ने लालच वश होकर दूश्मनों को किले में दाखिल किये, जिससे गढ तूटा. उस समय कान्हडदेव अलोप हो गये, और बहुत से सोनगरे चौहानों के साथ देवडा कांधल, उलेचा कांधल, लखमण सोभात, देवडा जेता, वाघेला जेता, लूणकरण, मान लणवाया, अर्जुन विहल, चांदो विहल, जेतपाल, रा. सातल, सोमवद व्यास, सलो राठौर, सलो सेवटो, जांझण भंडारी, गाडण सैहजपाल, वगैरह वडे २ सरदार काम आये, और चार राणीयां सती हुई. इसके विषय में 'कान्हडदे प्रबंध' नामके प्रकरण में सवि-

---

+ मूता नेणसी की ख्यात से पाया जाता है कि अलाउद्दीन खिलजी ने वि. सं. १३५० में मान तंवर से ग्वालियर, वि. सं १३५२ में यादवराम से दोलताबाद, वि. सं. १३५३ में करणगेहलडा के पास से गुजरात, वि. सं. १३५५ में रावल रत्न से चितौड, वि. सं. १३५८ में चौहान हमीरदे से रणथंभोर, वि. सं. १३६४ में चौहान सातल-सोम से सिवाणागढ, वि. सं. १३६५ में अजमेर, और वि. सं. १३६८ में चौहान कान्हडदे-वीरमदेव से जालोर का किला लिया.

स्तर इतिहास लिखा गया है. सिसोदियों की ख्यात में मूता नेणसी ने लिखा है कि महाराणा लक्ष्मणसिंह के पुत्र नेतसिंह नामक था वह भी इस युद्ध में जालोर काम आया.

नं. ६/३ वणवीर के विषय में 'वीरमदेव सोनगरा' नामकी पुस्तक से व नेणसी की ख्यात में लिखी हुई दंतकथा की वातों से पाया जाता है कि यह कान्हडदेव का भाई था, और इसका पुत्र राणकदेव था.

नं. ६/४ गोकलीनाथ व नं. ६/६ रुडराव यह दोनों लडाई में काम आये थे ऐसा वडुआ की पुस्तक में लिखा है. राजपुरोहित की पुस्तक में लिखा है कि रुडराव उर्फ डुडरावत की औलाद वाले 'रेवडिया चौहान' हुए हैं.

नं. ६/५ सालजी के विषय में वडुआ की, व पुरोहित की पुस्तकों में लिखा है कि इसकी ओलाद में 'सांचौरा चौहान' हुए, लेकिन वह लिखना सही नहीं है, क्यों कि सांचौरा चौहान की शाखा नाडोल के चौहान वंश वृक्ष में नं. ५ विजयसिंह से विभक्त हो चूकी थी, और कान्हडदेव के समय में बादशाह के साथ युद्ध हुआ उसमें साल्हा सौभात सांचौरा वडी वीरता से युद्ध करके काम आया था. (जिसका अहवाल सांचौरा चौहान के प्रकरण में लिखा है.) पाया जाता है कि यही साल्हा सांचौरे को कान्हडदेव का भाई होना कयास से ही लिख दिया है.

नं. ६/७ मालदेव के विषय में नेणसी की ख्यात और दूसरे प्रमाणों से पाया जाता है कि जालोर के युद्ध में सिर्फ यही बचने पाया था, जिसको पीछेसे बादशाह अलाउद्दीन ने चितौड गढ दिया. इसकी ज्यादह ख्यात 'दूसरे सोनगरे चौहान' के प्रकरण में लिखी गई है.

नं. ७ वीरमदेव के विषय में सविस्तर अहवाल 'कान्हडदे प्रबंध' नामके दूसरे प्रकरण में लिखा गया है. मूतानेणसी की ख्यात से भी पाया जाता है कि कान्हडदेव अलोप होजाने बाद तीन दिन तक वीरमदेव ने शाही फौज के साथ प्रचंड युद्ध मचाया. इसकी प्रशंसा में 'वीरमदेव सोनगरा' नामक हस्त लिखित पुस्तक में कई बातें लिखी गई है, 'जिसमें इसकी मल्ल विद्या की कुशलता देख कर शाहजादी 'शाहबेगम' ने इसके साथ शादी करने का निश्चय करना, व बादशाह ने कान्हडदेव के साथ इसको देहली बुलवाकर अपनी शाहजादी से सगाई करने की तजवीज की, जिस पर बरात लेकर आनेके वास्ते तीन वर्ष की मोहोलत लेकर वीरमदेव जालोर आया, लेकिन बादशाह ने बतौर जमानत उसके काका वणवीर के पुत्र राणकदेव को देहली में रखा. जब म्याद गुजर जाने पर भी वीरमदेव बरात लेकर नहीं आया, तब बादशाह ने राणकदेव को बेडी पहनाकर पूरे जाब्ते से रखने का हुकम किया, परन्तु राणकदेव भाग आया, जिससे जालोर पर शाही फौज ने घेरा डाला.' वगैरह बातें लिखी गइ हैं. 'कान्हडदे प्रबंध' की पुस्तक में यह बातें नहीं हैं, लेकिन शाहजादी के साथ शादी न करने के कारण जालोरगढ पर घेरा डाला

गया और साढेतीन दिन युद्ध करके वीरमदेव काम आनेकी वात अंकित की गई है. वीरमदेव ने जिस समय केशरियां करके शाखा किया तव उसके साथ विहल अडवाल, देवडा अलहण, सोहड अलहड, सोढा धारा, धांधल भाणा, सिंधल पत्ता, व. पडियार जांझण नामके वहादुर राजपूत काम आये, और गेहलोत लूढो, मेरो, अरसो, विजयसी, सेलार सांगो, सलूंणो, जैसो, लखमण, दहियो लूणो, धुंधलियो साहणी, दहियो पत्तो, विलण सोभत, सेपटो मूलू, लालो, सिंधल नरसिंघ, सिंधल जगसी, व करमसी यह राजपूतों अपनी जान वचाकर युद्ध में से भाग गये.

वीरमदेव की वीरता के विषय में और दूसरी वातें जो जो प्रसिद्धि में आई है उनके विषय में इस पुस्तक के लेखक ने 'देवी खड्ग अने चितोड नी पुनः प्राप्ति' नामक ऐतिहासिक उपन्यास गुजराती भाषामें वि. सं. १९७१ में प्रसिद्ध किया है. जो कि इसके विषय में उपलब्ध होते प्राचीन हस्त लिखित ग्रंथो में अतिशयोक्तिपन व ऐतिहासिक दृष्टि से तुलना करते स्वीकार न की जाय ऐसी कथा मालूम होती है, परन्तु प्राचीन विद्वानों और कवियों ने इसके वास्ते इतना श्रम उठाया है कि जिससे इसकी नेक टेक और क्षत्रीवट के वास्ते मानभरी दृष्टिसे देखना ही पडता है. इसकी हठ के वारे में एक कविने कहा है कि.

"शीप फर्यो दिन सातमें, मोतीयां थालना मांय, शाहबेगम सत् वाधियो मंगळ धवल गवाय."

यानी वीरमदेव का कटा हुआ मस्तक सुवर्ण थाल में रख कर शाहजादी ने जव उसको वरमाल पहिनाने का इरादा किया तव कटा हुआ मस्तक उलटा फिर गया, जो सात दिन वाद जव शाहजादीने पूर्व जन्मों की कथा उसको सूनाई तव सूलटा हुआ. लेकिन दूसरा कवि कहता है कि वीरमदेवने अपनी जिन्दगी हालत में शाहजादी का मूंह नहीं देखा, वल्कि उसके कटे हुए मस्तकने भी फिटकार देकर उलटा मूंह कर दिया. इस विषय में कवि कहता है कि—

"समशेर कटाये कटे नह शर्कायो, टार न शकिया अद्र दुख; फेरतां भलो वीर गुर फरीयो, पंड वीण शीप परार मुख."
"पैहम पटोल्लो वीर पूजीयो, देखे कुंवरज मांही दिवांण; आणाये पछे हुओ उपराठे सोरताय शोभ वदे मूलतान."
"राय कुंवर न रुचे राय जादो, गय भवित रांझीयो रुख; वरवा कज उभी शशी वदनो; मख देखे फरायो मुख."
"छचोक छत्तिस पहोरची छेटी, वीर तव्हे तन विसरियो; वढियां पछे भले विरमदे, फोट फीट कही कमल फीरीयो."
"सोनिगरा कान्हडदे संभ्रम, घट पालट न मेंछधर; ब्रह्मा, विष्णु, महेश वीखाणे, वेंरतो भली के भलो वर"
"इंद्र महल वीरमदे आयो, सूर रंभा मानय सुख, मुलताणी धीं जोयो सामहो, मरीयो ताग, फेरीयो मुख."

नं. ७/१ राणकदेव के विषय में 'दूसरे सोनगरे चौहान' के प्रकरण में अहवाल लिखा गया है.

वीरमदेव युद्धमें काम आ जाने वाद जालोरगढ सोनगरे चौहानों के हाथसे छूट गया. वर्तमान समय में सोनगरे चौहानों की छोटी वडी जागीरें राजपूताना व गुजरात में विद्यमान है.

<=ooooooooooooo=>

---

१ असुर (मुसलमान,) २ पहनकर. ३ शाहजादी. ४ वरने वाली. ५ सुलतान की बेटी.

प्रकरण २१ वाँ.

' कान्हडदे प्रबंध. '

जालोर के राव कान्हडदेव व वीरमदेव के विषय में राजपुताना के प्रदेश में बहुतसी दंत कथा व हस्त लिखित गद्यपद्य की प्रतिआं प्राप्त होती है, परन्तु ' कान्हडदे प्रबंध ' की पुस्तक (जिसका अनुवाद गुजराती भाषा में श्रीयूत डाह्याभाई पीतांबरदास देराशरी बार-एट-लॉ. अहमदावाद निवासी ने किया है.) देखने से पाया गया कि, उसमें से राव कान्हडदेव का जितना इतिहास मिल सक्ता है उतना और पुस्तकों में नहीं है. बल्कि इस पुस्तक का जितना महत्त्व ' पुरानी गुजराती भाषा ' के वास्ते गिना जा रहा है, उससे ज्यादह महत्त्व इसके इतिहास में है. इसि कारण सें कवि पद्ममनाभ का यह एतिहासिक काव्य के वास्ते एक खास प्रकरण इस ग्रंथ में रखना उचित समजा गया है.

यह पुस्तक विशनगरा नागर ब्राह्मण कवी पद्मनाभ ने अखेराज सोनगरा की आज्ञा से काव्य में रचा है, पुस्तक की रचना के वास्ते, चौथे खंड की चोपाई अंक ३३६ व ३३७ में लिखता है कि

" अखयराज आज्ञा अनुसरी, किर्ति पद्मनाभे विस्तरी; सुणतां मांह्य शरीर उलहसे, चोपाई बंध ऐंसी सातसें. "
" पिस्तालीसो पुठ वरीश, मास मागसर पुनम दीस, संवत पंदरसें ने वार, विस्तारी दिने सोमवार. "

इससे पायाजाता है कि अखेराज सोनगरा जो पालीनगर का जागीरदार था, उसने अपने वडाउओं की तारिफ में वि. सं. १५४५ में जालोरगढ में काव्य रचना कराई है. उपरोक्त चोपाई से ऐसा भी मालूम होता है कि " संवत पंदरसें ने बार " यानो वि. सं. १५१२ हो, परन्तु वैसा नहीं है, क्योंकि अखेराज सोनगरा का देहान्त वि. सं. १६०० में हुआ था. जिससे वि. सं. १५१२ मे शायद उसका जन्म भी नहीं हुआ होगा, अगर जन्म हुआ भी हो तब भी काव्य रचना कराने जितनी उम्र उस समय तक में होना असम्भवित है, बल्कि " पिस्तालीसो पुठवरीश. " का मायना ' पीस्तालीसो ' (४५) बता ते हैं, और वह ठीक है.

अखेराज सोनगरा का राव कान्हडदेव के साथ क्या सम्बन्ध था, उस विषय में मूतानेंणसी की ख्यात से मालूम होता ह कि कान्हडदेव के भाई मालदेव की ओलाद में क्रमशः २ वणवीर, ३ राणकदेव, ४ लोला, ५ सता, ६ रणधीर व उसका पुत्र ७ अखेराज था, परन्तु कान्हडदे प्रबंध की पुस्तक (चौथा खंड की चोपाई अंक ३२८-३२९-३३०) में लिखा है कि-

" कान्ह तणो उत्तम अवतार, कळिशं खट दर्शण दातार, ते वंशे वीरमदे नंद मेगलदे थयो आनंद. "
" सोनगिरा कूल साहसी घणो, अंबुराज मेगलदे तणो, पद्मनाभ कवि बोले एम, खेतसी अंबु केरो तेम. "
" लक्ष्मी वंत खेतसी तणो, अखय राज सोनगिरो गणो, ब्राह्मण कने कराव्या जाग, सवालाख दीधा छे ताग. "

इससे यह पाया जाता है कि कान्हडदेव से क्रमशः २ वीरमदेव, ३ मेगलदेव, (शायद यही मालदेव की जगह हो तो ताज्जुब नहीं) ४ अंबुराज, ५ खेतसिंह व उसके पीछे ६ अखयराज हुआ है.

राव कान्हडदेव वि. सं. १३५९ बाद गद्दी पर आये, और वि. सं. १३६८ में उसका देहान्त हुआ, यह वात निर्विवाद है. काहनडदे प्रवंध, में इसकी गद्दी नशिनी का संवत् नहीं दिया गया है, वैसे इसके भाई भत्तीजों में सिर्फ मालदेव व सांतल का नाम अंकित है. जिसमें सांतल जो 'सवियाणे' रहता था वह कान्हडदेव का भत्तिजा होना लिखा है. इस पुस्तक में जो जो नाम उपलब्ध होते है वह ओर साहित्यों के साथ मिलान करने से मिलते है, जिससे पाया जाता है कि कवि ने कल्पित नाम व कल्पित इतिहास के काव्य नहीं रचते ऐतिहासिक तत्त्व के पाया पर ग्रंथ रचना की है, ओर च्यार खंडो में च्यार अलग २ प्रसंग वता कर सोनगरे चौहानों की अच्छी सेवा वजाई है.

पहिले खंड में अलाउद्दीन वाहशाह अणहिल्ल पट्टन के उपर गुजरात के मंत्री माधव की प्रेरणा से जाना चाहता था, उसको कान्हडदेव ने अपनी सीमा में होकर जाने की मनाई की. जिससे रावल समरसी की सीमा में (मेवाड में) होकर शाही फोज गुजरात पर गई, उसने गुजरात, सौराष्ट्र आदि देश जीतकर सोरठी सोमनाथ का लींग उखेड लिया, और सौराष्ट्र व गुजरात में से वहुत से केदी गिरफतार करके सोमनाथ के लींग के साथ वापिस लौटते समय रास्ते में कान्हडदेव को सजा देनेके लिये शाही फौज ने जालोर की हदमें मुकाम किया. कान्हडदेव को यह समाचार मालूम होने पर उसने, १ व्यास सोमचंद्र, २ जयतदेवडा, ३ सेवडा लक्ष्मण, ४ लूणकरण, ५ सांचौरा साल्ह, सोभ्रंत (देखो सांचोरा चौहान वंशवृक्ष में नं. ४ व नं. ३ वाले.) ६ लक्ष्मण रावत, आदि सत्ताईस सरदारों को शाही छावणी में तपास करने को भेजे, उन्होंने वादशाह के अत्याचार की राव कान्हडदेव को खवर देने पर कान्हडदेव ने कहा कि जव तक सोमैया महादेव के साथ सोरठिया व गुजराती केदीओं को मुक्त नहीं कर सकुं वहां तक अन्न प्राशन नहीं करूंगा, ऐसी सख्त प्रतिज्ञा करके जयत देवडा की सरदारी से उनपर फौज भेजी.

जयत देवडा ने वडी वीरता के साथ युद्ध किया जिसमें शाही फौज का पराजय हुआ. शाही फौज का सरदार अलेफखान भाग गया, मलिक उमर मारा गया, सादल और सिंह (इसका नाम सिंह पातला था.) गिरफतार हुए, और सोमैया महादेव के लींगो के साथ, वादशाह के केदो व फौज का माल असवाव लेकर जयत देवडा,

कान्हडदेव के पास आया, राव कान्हडदव ने, सब केदीओं को मालमता देकर अपने २ वतन को भेज दिये, और महादेव का एक लींग सौराष्ट्र में, दूसरा वागडमें, तिसरा आबु पहाडपर, चौथा जावालीपुर में, व पांचवा, अपनी वाडी में स्थापन कराया.

मूता नेणसी की ख्यात में इस विषय में लिखा है कि वादशाह ने सोमैया महादेव का लींग आले चमडे में लपेट कर देहली लेजाना चाहा था, जिससे कितनेक हिन्दु केदीओं को साथ रखकर वह लींग ले जा रहा था, रास्ते में जालोर से नौ कोस दूर 'सकराणा' गांव में डेरा किया, यह खवर कान्हडदेव को होने पर उसने अपना प्रधान कांधल आलेचा को दूसरे चार सरदारों के साथ वादशाह को यह कहलाने को भेजे कि आपने हिन्दुओं को मारवांध कर सोमैया लींग के साथ मेरी हदमें मेरे गढ के नजदीक मुकाम किया यह अच्छा नहीं है.

कांधल आलेचा वादशाह के वजीर सिंहपातला को मिला, और कान्हडदेव का समाचार वादशाह को पहुंचाने की गरज से सिंहपातला को सूनाया. सिंहपातला ने वह समाचार वादशाह को निवेदन कर के कहा कि, कांधल देखने जैसा राजपूत है, जिससे वादशाह ने उसको अपने पास ले आनेका हुकम दिया. मगर सिंहपातला ने अर्ज किया कि कांधल वहादुर राजपूत है, वह कान्हडदेव के सिवाय अन्य किसी को जुहार नहीं करता है ऐसा न हो कि कुछ खूनरेजी हो जाय, जिस पर वादशाह ने दरगुजर करने का वचन देनेसे सिंहपातला उसको ले आया, कांधल को देख कर वादशाह ने कहा कि हमारा यह नियम है कि रास्ता के वीचमें जो गढ आवे, उसको लिये वगैर आगे नहीं वढना, तव भी कान्हडदेव के साथ दोस्ताना होनेसे हम अपने रास्ते २ जा रहे हैं, उसमें भी कान्हडदेव ऐसा कहलाते है तो अब हम जालोर छिन कर आगे वढेंगे.

कांधल शाहीदरवार में विद्यमान था, तव वादशाह ने अपना सामर्थ्य दिखलाने के वास्ते तीरंदाजों को हुकम किया कि देखो वह 'सांवली' (चील) फौज के उपर गीरना चाहती है उसको तीरों से रोक दो, यह सूनकर तीरंदाजों ने तीर चलाने शुरू किये. कांधल समजा कि यह मेरेको दिखलाया जा रहा है, जिस पर उसने 'सादूला' नामका वडा भारी भैंसा (जिसके सींग पूछ तक पहुंचे थे और पांनी की पखाल भरी हुई उस पर लदी थी) जो वहां खडा था, उस पर अपनी तलवार चलाई. कांधल की तलवार के एक झटके से सींग समेत पाडा कट गया, ओर तलवार जमीन में जा वैठी, उस रक्त को देख कर 'सांवली' उस पर आई. और पखाल का पांनी रक्त के साथ वहने लगा जिसमें वह वह गई. इस विषय में पद्मनाभ कवि अपने काव्य मे लिखता है कि—

" खाने सान करीके मुगले पणछे परठी तीर; ताणी गगने पंखिणी विंधी, न्याले मोटा मीर. "
" लखण राऊ ते एकज घा ये खांडे सहीत म्याने; पाडो रेंशी कीध वे कडका, वखाण करियां खाने. "
" पूछे खान-कान्हड घर केटला त्हारा जेवा शूरा ? सुणो लखण कहे पूछो छो तो छे चोवीसें पूरा. "

इससे पाया जाता है कि ' लक्ष्मण ' ने शाही फौज में भैंसा मारने का पराक्रम दिखाया था, और उस फौज में बादशाह वि ान नहीं था 'मगर अलुखान' (अल्फ़्खान) था यह लक्ष्मण राऊत (राव का पुत्र) र.व बीजड (देखो देवडा चौहान वंशवृक्ष म नं. $\frac{2}{8}$ वाला) का पुत्र था.

' सांवली ' जमीन पर गिरने से तीरंदाजों को नीचा मुंह करना पडा, और उन्होंने कांधल के उपर तीर चलाना चाहा, तब सिंहपातला ने बिचमें आकर रोका, पीछे कांधल सोमैया महादेव के लींग के पास आया, आर कहा कि जल तो पीना होगा लेकिन जबतक महादेव के लींग बादशाह के हाथसे न छोडाऊं वहांतक अन्नप्राशन नहीं करूंगा, यह बात शाही फौज के सरदार ' ममुसाह ' व ' मीरगाभरू ' ने सूनी वे दोनों भाई थे, और पचीस हजार घोडों के सरदार थे, बादशाह ने उनका अपमान किया था. जिससे वे दोनों कांधल को मिले. अपमान करने के विषय में ख्यात में लिखा है कि " हरमरी खुट कनै मुरगा ब्यांपगां उठाणा सा तीजै भाईनुं आ पडीयो थो सो. आ घणी वात छे." इन दोनों भाईओं ने कांधल को सहायता देनेका कहा.

कांधलने यह सब समाचार रावल कान्हडदेव को विदीत करने पर सोनगरों की फौज शाह के सामने आई. एक तरफ से ममुसाह व मीरगाभरू ने हमला किया, और दूसरी तरफ से राजपूतो ने युद्ध शुरू किया, बादशाह भाग निकला, और कान्हडदेव ने अपनी पीठ पर सौमैया का लींग उठाकर ' सकराणा गाँव ' में स्थापन किया. दोनों मुसलमान सरदार कान्हडदेव के पास रहे, मगर उनके पास ' धारू पात्रीयां ' (वेश्या) थी, वह मांगी गई. जिससे वे रणथंभोर के हमीर हठीला पास चले गये, बादशाह ने ' हमीर हठीला ' को इन दोनों को अपने पाससे नीकाल देनेका कहलाया, लेकिन शरणांगत के बिरद के वास्ते उसने नहीं मांना, इसी कारण से रणथंभोर का युद्ध वि. सं. १३५८ में हुआ और रणथंभोर चौहानों के हाथ से छूट गया.

मूतानेणसी की ख्यात व कान्हडदे प्रबंध की पुस्तकों से पाया जाता है कि यह युद्ध वि. सं. १३५३ बाद व वि. सं. १३५८ पहिले हुआ था. इससे यह भी पाया जाता है कि उस समय में जालोर की गद्दी पर राव सामन्तसिंह था, और कान्हडदेव युवराज पद पर होगा, क्यों कि सामन्तसिह के समय का वि. सं. १३५९ का शिलालेख मिलता है.

कान्हडदे प्रबंध के दूसरे खंड में अलाउद्दीन बादशाह ने सवियाणा का किला लेने के वास्ते तीन दफे फौज भेजी, उसका वर्णन कवि ने किया है. मूतानेणसी की ख्यात से इतनाही मालूम होता है कि वि. सं. १३६४ में सिवाणागढ बादशाह अलाउद्दीन ने लिया, और चौहान सातल, व सोम, काम आये.

सवियाणा के युद्ध के विषय में कवि पद्मनाभ अपने काव्य में लिखते है कि सोमैया महादेव का लींग, कान्हडदेव ने छूडा लेनेसे, बादशाह 'अलुखान' पर नाखूश हुआ और मलिक 'नाहरखान' को बडी फौज के साथ, जालोर पर भेजा. नाहरखान ने सवियाणा पर हमला किया, उस समय वहां का थाणेदार ' सांतल ' था, उसने युद्ध करके शाही फौज को हराई, और नाहरखान भाग गया. जिस पर बादशाह ने दूसरी फौज सवियाणा पर भेजी, जिसने गढ पर घेरा डाला, यह खबर सूनकर कान्हडदेव खुद सांतल की सहायता करने के वास्ते सवियाणे गया. दोनों सैन्य का मुकाबला हुआ जिसमें मलिक नाहरखान और ' भोजला ' नामक शाही सरदार मारे गये, और फौज भाग गई, कान्हडदेव की फौज में ' सपराण सिंघल ' काम आया.

दो दफे शाही फौज का पराजय होने से बादशाह ने मलिक खानजहान, मलिक कमालुद्दीन, मलिक अमादल व मलिक नेब (नबीबक्ष) यह चारों सरदारों को बुलाकर कहा कि, मैंने हिन्दुस्तान के सब बडे २ किले फतह किये. काश्मीर से समुद्रद्वार - पर्यंत जोर तल्वी वसुल लेता हुं. खुरासान् , जीत लिया और चीन, भूतान, दंडुर, आदि देशों से नजराने आते है, देवगीरी के राजा रामदेव ने मेरे को अपनी बेटी व्याह दी, सिंहल-द्वीप का राजा हाथी की भेट देता है, उच्च (कच्छ होना चाहिये) कलहथ, जावा-बंदर, व होरमज (इरान का बंदर) वगैरह जगह से खिराज आती है, लेकिन जालोर में दो च्यार दफे हार हुई, जिससे बडी लज्जा आती है, सो अब जालोर पर चढाई की जाय, कहां तो सोनगिरी जीत लेवे या तो हथियार त्याज कर दिये जाय.

बादशाह ने ऐसी प्रतिज्ञा करके गुजरात के सूबा को भी बुलालिया और बडी फौज का जमाव करके खुद चला, कवि ने शाही फौज की कूच का इन्तजाम बहुत कुशलता व विस्तार से वर्णन किया है, परन्तु स्थल के संकोच के कारण यहां इतनाही लिखना योग्य है कि वह अपनी सम्पूर्ण सामग्री के साथ मारवाड में आया. और सवियाणा गढ पर घेरा डाला. सांतल सोनगरा ने गढ के कोट पर यंत्र चढाकर युद्ध करना शुरू किया, सात वर्ष तक यह घेरा पडा रहा. सवियाणा गढ में अन्नादिक सामग्री घट जाने जैसा नहीं था, और गढ की रचना अच्छी होनेके कारण राजपूत लोग निर्भय होकर युद्ध करते थे और ×बेफिकर रहते थे, कवि लिखता है कि, जब कोई प्रकार सें बादशाह को सवियाणा गढ जीतने की उम्मेद न रही, तब किले के तलाव में, गौमांस डलवानें का प्रपंच किया. गौरक्त वाला पांनी देखकर हिन्दुओं ने वह जल अपवित्र होना मानकर

× कविनें इस जगह एक रमुजी किस्सा लिखा है कि राजपूत लोग किले पर नाटारंग कर रहे थे; वह देख कर बादशाह ने कहा कि यह ज़लसा कोई तीरंदाज भंग करे उसको मुंह मांगा ईनाम दूंगा, जिस पर मलिक अमादल का पुत्र 'हबाखुमीर' नें तीर चलाया जो सोढी राणी को लगा. जिससे रंगमें भंग हो गया. उस पर सांतल के राजपूतो मेंसे ' रामसिंह ' नामका राजपूत ने शाहीफौज पर तीर चलाया जिससे हबाखुमीर मारा गया, और बादशाह का तख्त तूट पडा व बादशाह उठ कर भागा.

पीने के काम में न लाया. पानी न होने से सांतल ने केशरियां करने का निश्चय किया. राजपूताणीओं ने झमर खड़का और सांतल की राणी 'नारिंगदे व प्रेमांदे' ने अग्नि प्रवेश किया. दूसरे दिन सांतल ने गढ के दरवज्जे खोल कर केशरियां किया. तीन पहर तक युद्ध करके सांतल काम आया.

सांतल के शाखा के विषय में कवि ने दंतकथानुसार वर्णन किया है कि सांतल ने अपनी इष्ट देवी आशापुरी का ध्यान करने पर देवी ने दर्शन दिये और सांतल को देवी, उस बादशाह पास ले गई, बादशाह उस समय निंद्रावश था. सांतल ने देखा तो बादशाह रूद्ररूप में नजर आया. सदाशिव के जैसा पंचमुख, त्रिनेत्र, आदि देख कर सांतल ने उसको प्रणाम किया, और उसी कारण से उसको मार डालने की तजवीज नहीं करते बादशाह का 'गुर्ज' पडा था, वह लेकर सांतल किले पर आया. जब कि तलाव का पानी अपवित्र हो गया, और शाखा करने का समय आ पहुंचा, तब उसने वह 'गुर्ज' बादशाह के पास भेजकर कहलाया कि हमारी भलाई देखो, अगर मैं चाहता तो तुमको मार देता, जिस पर बादशाह ने सांतल को कहलाया, कि अगर हमारे साथ दोस्ताना रखो तो मैं गुजरात का प्रदेश तुम्हे दूंगा, लेकिन +सांतल ने इनकार किया.

कान्हडदेव प्रबंध के तीसरे खंड में, अलाउद्दीन बादशाह के साथ बाहडमेर, भीनमाल, ओर जालोर में युद्ध हुआ, उसका वर्णन किया गया है, जिसके वास्ते कवि पद्मनाम अपने काव्यग्रंथ में लिखता है कि सवियाणा का किला लेने बाद बादशाह ने अपने वजीर को जालोर भेजकर कान्हडदेव को कहलाया कि जैसे सवियाणा गढ लिया गया उसी मुआफिक जालोर भी लिया जायगा. बहतर है कि, जो युद्ध में हारते नहीं है वैसों के साथ हठ नहीं करना चाहिये और मेलझोल रखना चाहिये जिसका प्रत्युत्तर कान्हडदेव ने दिया कि—

" सुलतानी दल दव्युं सांतले, रखड्या सात वरस गढ तळे; पादशाहनी एवडी आय, पल चाव्युं सहस्त्र पळ मांय. " ९
" सरवर जळ पीधुं पोपटे, कहो केटलुं तेथी घटे ? कान्ह वचन बोले ए विधे, शो पुरूपार्थ सवियाणुं लिधे. " १०

× × × ×

" जो सागर वडवानल समे, तो कान्हड तुरको ने नमे ? शानो गर्व नमे मन धरो, वरसे सात लीधो टेकरो. "

तात्पर्य यह हुआ कि कान्हडदेव ने शाही वजीर की कुच्छ भी दरकार न की, जिस पर बादशाह ने बाहडमेर पर हमला करके उसको बरबाद किया, ओर भीनमाल पर

+ कविने सांतल के विषय में लिखा है कि अलाउद्दीन ने सांतल को लालच बताई कि तुं मेरे पक्ष में आजाय तो गुजरात का प्रदेश तुझे देडूं. जिसका जुवाब सांतलने दिया कि —" तजुमाण, पण न तजु मान; लाजे शाख भली चौहान" सांतल का यह प्रत्युत्तर और कविके कथन में यदकिंचित् अतिशयोक्ति नहीं है, चौहानों के इतिहास के तत्वंसार जगह २ यही कथन की पुष्टि कर रहा है यदि चौहान राजपूतों ने स्वमान की तीव्र महत्वाकांक्षा और नेकटेक रखने के वास्ते जातिय स्वभाव न होता, तो वर्तमान समयमें जो सिर्फ सात रियासतें छोटी २ रहने पाई है, उस जगह उनकी वीरता के कारण बहुत सी बडी २ रियासतें रहने पाती.

आक्रमण करना चाहा. भीनमाल में ब्राह्मणों का निवास होनेसे उनकी रक्षा के वास्ते कान्हडदेव ने देवडा महीप व जयत की सरदारी में बडे २ वीर राजपूतों को भेजे, शाही फौज में से १ मलिक हाजी, २ मलिक मौताज, ३ मलिक शाहबाज, ४ मलिक बुवन, ५ मलिक कबीर, ६ मलिक अबु, ७ मलिक रसीद, व ८ मलिक फरीद नाम के आठ बडे सरदारों ने भीनमाल पर हमला करने से, दोनों फौजों का मुकाबिला होतेही युद्धने उग्र रूप धारण किया. इस युद्ध में शाही फौज के आठौं सरदार काम आये, और फौज भाग जानेसे राजपूतों ने शाही फौज के हथियार, घोडे, आदि माल असबाब लूट लिया.

युद्ध बंध होजाने पर देवडा महीप और जयत दोनों फौज को भीनमाल छोडकर जालोर को चले गये, और विजय प्राप्त करने का समाचार राव कान्हडदेव को विदित किया.

राजपूत सैन्य भीनमाल में पडा था, और उस रोज अमावस्या होनेसे सेवटा लक्ष्मण व सांचौरा सालहा शोभावत दोनों ने तलाव के किनारे अपने अश्व खडे रख कर व दूसरे कितनेक राजपूतों ने तलाव में स्नान करना शुरू किया, यह बात शाही फौज के सरदार मलिक नेव (नबीबख्श) को मालूम हो जानेसे उसने तीस हाथी व छत्तीस हजार घोडों से आकर तलाव पर घेरा डाला, और जो जो राजपूत सुभट स्नान कर रहे थे उन पर तीरों का मारा चलाया, जिससे वह बहुत ही जख्मि होने लगे, राजपूतों तीरों का मार खाते खाते खुल्ले बदन किनारे पर पहुंचे, वहां पर भाले तलवार आदि शस्त्रों के उन पर प्रहार होने लगे. इतना मार पडने पर भी कितनेक राजपूत खुल्ले बदन घोडों पर सवार हुए और युद्ध किया. इस युद्ध में अजयसी सोलहण, और सालहा शोभावत ने कइ एक घाव लगने पर भी दुश्मनों के साथ युद्ध करके काम आये. लक्ष्मण सेवटा ने ईक्कीस हमले करके ऐसी वीरता दिखला कर काम आया कि दुश्मन ने उसके रक्त का अपने ललाट पर टीका करके उसकी बहादुरी की प्रशंसा की इस विषय में कवि कहता है कि,

" मलिके केही लख्खणा तणु, अवी ललाट कर्यु वंदणु, कीधी वली प्रशंसा घणी. धन्य धन्य माडी तुज तणी. " १०५
" रण रजपुत बड लखणा जसी, हिंदु तुरकमां संभवी नथी, समरांगण साना जे मरे. लहू सूर तेने वंदन करे. " १०६

इस युद्ध में चार हजार राजपूत काम आये, और एक भी बचने नहीं पाया. जबकि भीनमाल से राजपूतों की फौज वापिस नहीं लौटी तब कान्हडदेव ने पूछा की जीत हुई और फौज क्यों न आई ? जिसपर व्यास ने कहा कि होनहार मिथ्या नहीं होता है.

दूसरी तरफ महीप देवडा की पुत्री ने अपने पिता को कहा कि आप मार के डर से भाग कर आये हो, जीतकर नहीं आये. यह सुनते ही महीप देवडा लज्जाशील होकर शाही फौज पर गया. और दोसौ सिपाईओं के साथ मलिक सरूप को मारकर खुद भी अपने पचास सैनिकों के साथ काम आया, तात्पर्य यह है कि, बादशाह ने भीनमाल में फतह पाई और जालोर तरफ प्रयाण किया.

जालोर तरफ शाही फौज चली उस समय बादशाह की शाहजादी सीताई ने बादशाह को नमन करके अर्ज गुजारी कि मै पूर्व जन्म की कथा जानती हुं, जिससे कहती हुं कि आदि पुरूष परमात्मा ने नौ अवतार धारण करके असूरों का संहार किया था, उसी देवता ने यह दशवीं दफे चौहान कुल में कान्हडदेव के नामसे अवतार लिया है. सो आप मारे जावेंगे, लेकिन बादशाह ने वह बात नहीं मानी और प्रयाण चलू रखा, सीताई ने फिर बादशाह को कहा कि मेरी इच्छा कान्हडदेव के कुमार वीरमदेव के साथ शादी करने की है, बादशाह ने कहा कि हिन्दु व तूरक का व्याह नहीं हो शक्ता है, किसी शाहजादा से तेरी शादी कर दूं गा. उसपर शाहजादी ने हठ करके वीरमदेव से शादी करने की प्रतिज्ञा की इस विषय में कवि कहता है कि.

" तुरक कोई परण्यो नव लहु, भले तात कुंवारी रहुं; कहे कुंवरी वीरमदे वरूं, तात निकर हुं निश्चे मरू. "

बादशाह ने शाहजादी की हठ देखकर उसकी इच्छा पूरणकरने के वास्ते, 'गोलहणसा' नामके भाट को कान्हडदेव के पास भेजा, गोल्हणसा ने, वीरमदेव कुमार के साथ, शाहजादी की शादी करने का प्रस्ताव कान्हडदेव को सुनाकर उसके साथ गुजरात का प्रदेश भी देनेका कहा, लेकिन सोनगरों ने इनकार किया, जिसपर बादशाह शाही फौज के साथ जालोर पर आया, सात दिन तक युद्ध हुआ, जिस में शाही फौज को नुकसान पहुंचने से बादशाह ने देहली जाने को कूच की शाही. फौज ने कूच कर के गढ़ी में मुकाम किया, वहां राव कान्हडदेव की आज्ञा से, १ मालदेव, २ कुमार वीरमदेव, ३ आनंद सिसोदीया, ४ जयत बाघेला, ५ जयत देवडा, ६ दानकरण माल्हण, ७ देवडा सोभीत, व ८ सहजपाल, यह आठ सरदारों ने बादशाह के जमाई समशेरखान के उपर आक्रमण किया, जिसमें शाही फौज के तीन हजार सेनिक मारे गये, और समशेरखान व उसकी बीबी (बादशाह की शाहजादी) को पकडकर जालोर ले आये. जबकि अलाउद्दीन को यह खबर पहुंची तब शाहजादी सीताई ने कहा कि मैं अपनी बहिन और बहिनोई को जालोर से छूडा लाऊंगी, जिसपर बादशाह ने उसको भेजी, सीताई ने कान्हडदेव से मिलकर, मलिक शार्दूल, सिंहपातला, समशेरखान, व अपनी बहिन, को छुडाए, इस शर्त पर कि आयंदा शाही फौज किसी देवल को न तोडे और गौ ब्राह्मण और प्रजा को जालोर की हद में तकलिफ न देवे.

चौथे खंड में कवि ने जालोरगढ पतन होने की कथा का खूबसूरती के साथ वर्णन किया है, जिसका सारांश यह है कि, शाहजादी अपनी बहिन व बहनोई आदि को छूडवाकर बादशाह को रास्ते में जा मिली, जिस पर बादशाह ने जालोरगढ की रचनाका हाल दरियाफत करने पर शाहजादी ने उसका वर्णन किया. जालोर की तारीफ सूनने पर उस गढ को लेनेकी तीव्र अभिलाषा बादशाह को हुई, ओर देहली पहुंच कर मलिक

कमालुद्दीन, सिंहपातला, मलिक सादल, मलिक अमादल, मलिक नयामद्दीन, मलिक नेव, मलिक बहाद्दीन वगैरह सरदारों को बडी फौज के साथ, जालोर पर भेजे. उन्होंने जगह २ सोनगरे चौहानों से युद्ध किया, लेकिन सफलता न हुई जिससे बादशाह ने खानजहान वजीर को भेजा, शाही फौज ने जालोर पर आक्रमण किया, जिसमें मलिक नयामद्दीन, कान्ह उलेचा के हाथसे मारा गया, जबकि जालोरगढ तूटने की कोई उम्मेद न रही तब शाही फौज ने घेरा उठाकर देहली तरफ प्रयाण किया, यह खबर सूनने पर सेजपाल विका (जो कान्हडदेव का सरदार था) आधी रात को जाकर सिंहपातला को मिला, और जालोरगढ खुद को मिले इस शर्त पर किले का भेद बताने को जाहिर किया, शाही सेनापति ने उसको कितनाक द्रव्य देकर जालोर देनेका भी मंजूर किया, जिससे विका ने आगे होकर आधी रात के समय पर शाही फौज को किले में दाखिल की. विका की स्त्री हीरांदे को यह बात मालूम होने पर उसने अपने पति को फिटकार देकर तंसली उसपर फैंकी जिससे विका का देहान्त हो गया. हीरांदे ने तुरन्त ही किले में दुश्मनों के प्रवेश होनेकी खबर राव कान्हडदेव को दी. जिसपर राजपूतों ने उनका सांमना किया.

किले में प्रवेश करने का मौका हाथ लगने से मुशलमान सैनिकोंने अपनी सम्पूर्ण ताकत अजमाई, राजपूतों ने मरणीये होकर शाही फौज को हटाने का प्रयत्न किया, लेकिन इस युद्ध में कांधल उलेचा, कान्ह उलेचा, जयत देवडा, जयत वाघेला, लूणकरण मोल्हण, व वडाउला अर्जुन, आदि मुख्य २ सरदार काम आये, राव कान्हडदेव ने किला बचाने की आशा छोड दी. और सोनगरों की सम्पती दुश्मन के हाथ नहीं जावे उसके वास्ते दान पुन्य करके बाकी का द्रव्य रत्नादिक भंडार को झालरवाव में डाल दिया. वि. सं. १३६८ वैशाख सुदि ५ के रोज उसने अपने कुमार वीरमदेव को गद्दी पर बैठाया. कान्हडदेव की चार राणीयां, जयतदे, भावलदे, उमादे, व कमलादे, १५८४ अन्य स्त्रीयों के साथ झमर रचकर जल गई. कान्हडदेव ने केशरियां किया, और स्वधाम पहुंचा.

कान्हडदेव स्वधाम पहुंचने पर वीरमदेव ने युद्ध करना शुरू किया, कान्हडदेव के साथ बहुत से राजपूत काम आये थे, और कितनेक राजपूत विजय की आशा न होनेसे भाग गये थे, जिससे वीरमदेव को गढका रक्षण करने की उम्मेद नहीं थी. परन्तु हठीला चौहान ने अपनी हठ पुरण करने को, अपनी राणी को झमर में जलादी, और गिरफतार न होने पावे उस कारण से अपने बदन में कटारी मार कर घाव पर मजबूत पाटा बांध कर केशरियां किया. इसने साढेतीन दिन तक राज्य किया, और वह समय युद्ध मेंहीव्यतित हुआ, इसने दुशमनों को हटाकर किलेसे नीचे उतार दिये. वीरमदेव की सहायता में आये हुए बहुत से राजपूत काम आ चूके थे, जिससे शाही फौज ने एकत्र

होकर उसको जिन्दा पकडने के वास्ते चारों तरफ से मरणीये होकर धावा किया, वीर राजपूत्र ने अपना देहान्त होने तक दुश्मनों को हाथ अडाने नहीं दिया और वि. सं. १३६८ वैशाख सुदि ८ के रोज काम आया.

शाही फौज ने जालोरगढ कब्जे किया, और वीरमदेव का सिर काटकर बादशाह के पास ले गये, जहांपर सुवर्ण थाल में रख कर शाही जनाने में पहुंचाया गया, जबकि शाहजादी सोताई उसके तरफ आई, तब हठीला चौहान ने अपनी प्रतिज्ञा पूरण करने के वास्ते मुंह फिरा दिया, यानी शाहजादी का मुंह जिन्दगी हालत में नहीं देखा था, परन्तु मरजाने पर भी कटे हुए मस्तक ने अपनी हठ नहीं छोडी, शाहजादी ने उस मस्तक की प्रशंसा करके ×पूर्व जन्मकी कथा सूनाई और यमुना के किनारे जाकर उसका अग्नि संस्कार करके खुद यमुना के जलमें झंपापात करके मर गई.

× शाहजादी ने वीरमदेव के साथ अपने पूर्व जन्मों का सम्बन्ध होनेकी, व कान्हडदेव, अलाउद्दीन के पूर्वजन्म की कथा, अपने पिता को व वीरमदेव को सुनानेका कान्हडदेव प्रबंध में उल्लेख किया है. उसी मुआफिक दूसरी हस्त लिखित प्रति जो ' वीरमदेव सोनगरा ' नामकी है, उसमें शाहजादी व वीरमदेव के अगले जन्मों का वृतान्त लिखा गया है, और मूता नेणसी की ख्यात में कान्हडदेव व अलाउद्दीन के पूर्वजन्म का वृतान्त उपलब्ध होता है, अतएव इतिहास के वास्ते वह कथा जरूरी न होनेसे उसके लिए विवेचन नहीं किया गया है. परन्तु यह तीनों पुस्तकों की कथा एक दूसरे से मिलती नहीं है, जिससे पाया जाता है कि यह कथा प्राचीन पुराणादि काव्यों की रीति मुआफिक दंतकथा के आधार से या कवि ने अपनी तर्कशक्ति से कल्पना करके लिखी है.

कान्हडदेव प्रबंध में वीरमदेव अगले जन्म में, सोमेश्वर का पुत्र पृथ्वीराज होना, और शाहजादी पाल्हण की पुत्री पद्मावती होकर पृथ्वीराज की राणी होना लिखा है. जब ' वीरमदेव सोनगरा ' की प्रति में वीरमदेव पूर्व जन्म में शाहुकार का पुत्र होना व शाहजादी दूसरे शाहुकार की पुत्री होकर उसकी स्त्री होनेका उल्लेख किया है, उसी मुआफिक कान्हडदेव प्रबंध में कान्हदेव ईश्वरका दशमा अवतार होना और अलाउद्दीन पूर्व जन्म में असूर होना लिखा है, तब मूता नेणसी की ख्यात में एक तापस ब्राह्मण के आधा अंग का अलाउद्दीन होना और आधा अंग का कान्हदेव होना लिखा गया है.

' वीरमदेव सोनगरा ' की पुस्तक, मूता नेणसी की ख्यात व दंतकथा में कान्हडदेव युद्ध में काम नहीं आते ' अलोप ' हो गये वैसा लिखा है, तब कान्हडदेव प्रबंध में रामचंद्र व्यास के कहनेपर अवतार लेनेका कार्य सम्पूर्ण होनेसे स्वधाम जानेका उल्लेख किया है.

कान्हडदे प्रबंध के पुस्तक में वीरमदेव का शिर काटकर देहली ले जाना और यमुना के तटपर उसका अग्नि संस्कार कर के शाहजादी ने यमुना के जलमें देह पात किया. वैसा उल्लेख है तब ' वीरमदे सोनगरा ' नामक पुस्तक में वीरमदेव को शाही सैनिकों ने जिन्दा पकडा और छावणी में बादशाह पास ले गये, बादशाह ने उसको स्नान कराकर मुसलमान बनाने बाद शाहजादी से शादी करने का हुकम दिया, जिसपर हमाम में स्नान कराने को ले गये. वीरमदेव ने पहिले से ही आंतरले काट रक्खे थे, जब कि कम्मर खोली गई तब सब आंतरले बहार नीकल आए, और उसी समय उसका देहान्त, हमाम में हो गया, जिसपर शाहजादी ने उसके शिर के साथ शादी करना चाहा तब शिर उल्टा फिर गया. सो सात दिन तक सोने के थाल में रख कर शाहजादी ने उसके आगे विनती की. जबकि उसको पूर्व के सब जन्मों की सम्बन्ध की कथा शाहजादी ने सूनाई तब शिर सूल्टा फिरा, और शाहजादी ने उसको वरमाल पहिनाकर उसके साथ जालोर में ही सती हो गई.

कान्हडदेव प्रबंध के काव्य की पूर्वजन्म की कथा में से एक ऐतिहासिक तत्त्व ऐसा उपलब्ध होता है कि जो देहली का अंतिम हिन्दुराजा महान पृथ्वीराज के इतिहास पर खास बात पर असर डालता है यानी दंतकथा व पृथ्वीराज रासा से पाया जाता है कि शहाबुद्दीन ने पृथ्वीराज को पकड लिया, और गिजनी ले गया, पिछेसे चंद बारोट ने गिजनी जाकर सुल्तान को बाण

काहनडदे प्रबंध के मुआफिक कान्हडदेव के साथ जालोर के अन्तीम युद्ध में ५० मुख्य सरदार (जो खास रावत यानी राजा के पुत्र) काम आये थे, जिनके नाम मूता नेणसी की ख्यात में उपलब्ध होते नामों के साथ मिलते हैं.

वेध का तमाशा दिखलाया, जिसमें पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को मारा और चंद व पृथ्वीराज आपस में हथियार चलाकर मर गये लेकिन कान्हडदे प्रबंध में लिखा है कि पृथ्वीराज घाघर नदी के तटपर मारा गया, और राणी पद्मावती अयोध्या में सती हुई, जिसके वास्ते कवि लिखता है कि—

" सोमेश्वर घर छट्ठीवार, लीधो पृथ्वीराज अवतार. पाल्हण ने घेर हुं पछी फरी, पद्मावती नामे अवतरी. " २०३

" ते जन्मे दुष्कृत आचयु, गाय विणासी कामण कर्युं, साध्यो मंत्र गर्भे गायने, चित्त विकार थयो रायने. " २०४

" राय वश कर्या लोपी लाज, हण्या प्रधान भोगविघुं राज; शाहबुद्दीन सुलताने सूण्यो, पति घाघर ने तीरे हण्यो. " २०५

× × × ×

(देहली के तख्त पर बैठने वाले राजाओं की राजावली में अंतिम हिन्दुराजा जयमल हुआ, जिसको शहाबुद्दीन ने किले हांसी में पकड लिया और घाघर में मारडाला (देखो प्रकरण ६ वा में) वैसा कई प्रति में लिखा है).

उपर्युक्त चोपाईओं से पाया जाता है कि वि. सं. १५४५ तक यह बात प्रसिद्धि में थी कि पृथ्वीराज गिजनी में नहीं मारा गया, लेकिन गग्गर नदी के तटपर मारा गया था. पाया जाता है कि बानवेध भी गग्गर नदी के तट पर पर हुआ होगा.

प्रकरण २२ वां.

'दूसरे सोनगरे चौहान.'

सोनगरे चौहानों के हाथसे जालोर का राज्य जाने बाद सिर्फ जालोर के राव कान्हडदेव का भाई मालदेव बचने पाया था, वैसा मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है, परन्तु वडुआ की पुस्तक से पाया जाता है कि जालोर के राव कान्हडदेव के मालदेव के सिवाय दुसरे पांच भाई औरथे, जिनके नाम क्रमशः १ वणवीर, २ गोकलीनाथ, ३ सालजी, ४ किरतपाल, व ५ रूडराव थे. मालदेव इन सब से छोटा था.

एक कवित जिसमें जालोर के कान्हडदेव व उसके तीन भाई जो 'धनुर विद्या' में कुशल गिने जाते थे उनका मुकाविला ओर चौहान वीर राजपुत्रों के साथ करने में आया है उसमें लिखा है कि,

> " वडोराव वेणवीर, हुवो हमीर हठालो; मूछालो मालदे, तको धारू वकता रो. "
> " तगो उभा रण तेग, गोग मामा सत्र जाणे; आली शोर पृथीराज, चाह पुगो चहुआणे. "
> " गोकलीनाथ, कान्हड हुवा, त्रिशलदे जुग जाण रे; अतरा जोध अणघर हुवा, धनुर धार चहुआण रे. "

इस कवित में नं. १ वणवीर, २ मालदे मूछाला ३ गोकलीनाथ, व ४ कान्हडदेव, यह नामवडुए की पुस्तक के नामोंकेसाथ मिलते हैं. इसके सिवाय एक दूसरागीत जिस में कान्हडदेव गद्दी पर आये तव देढ क्रोड नव लाख सुवर्ण का दान दिया गया था, जिस के वासते जालोर गढ के महल में शिलालेख होना कहा जाता है, यह दान किस किस ने किया उस विषय में कवित है कि,

> " तीन सहस तोखार, पांच मेगळ मेमंता; तीण उपर दश गाम, तको सासन सहेता. "
> " सोला सेर सूवर्ण, पांच माला मुक्ताहर; दीधा नर्ग जर कमर, सो वाहन धोलाहर. "
> " सेजपाल सर सामन्त रे, दत्तकर मोजांदानजी; जालोर पाट वेठां जदी, क्रोड समरपो कानजी. "
> " त्रीस लाख वेणवीर, तुरत आपीया त्यागी; त्रीस लाख मालदे, आण धरीया मों आगी. "
> " सात लाख सालजी, दियों रूपो सूवरणे; एक लाख पवार, साग आपीयो कवन ने. "
> " सेज पाल सर सामन्त रे, पाली अग लुणी सवर; चहुआण राण लेखे क्रोडसु उपर मोज कर. "

इस कवित से १ कान्हदेव, २ वणवीर, ३ मालदे व ४ सालजो, यह चार नाम मिलते हैं, इससे अनुमान होसक्ता है कि वडुआ की पुस्तक में जो नाम लिखे है वह विश्वास पात्र है. वडुआ की पुस्तक में यह भी लिखा है कि गोकलीनाथ व रूडराव लडाई में काम आये, और नाओलाद हुए. सालजी ने सांचोर लिया, वाकी रहे वणवीर, कीरतपाल, व मालदेव की ओलाद वाले 'सोनगरे चौहान' कहलाये गये. मालदेव को चितौड मिला, और वणवीर की ओलाद वाले वर्तमान समय में जोधपुर रियासत (परगने गोडवार में)

के गाँव बोईओ, सादलो, मादलो, व लाटाड, आदि में. और मालवे में गाँव नामली व मेवाड में भोमट कहलाता प्रदेश जुडा–मीरपुर में है.

दंत कथा व प्राचीन हस्त लिखित पुस्तकों में यह बात मशहूर है कि वणवीर का पुत्र राणकदेव उर्फ राणुआ था, जो बडा पराक्रमी और वीर राजपूत हुआ, इसके विषय में कवियों ने बहुत प्रशंसा के गीत कवित रचे है, जबकि कान्हडदेव का कुमार विरमदेव, पंजुनायक के साथ कुश्ती खेलने को बादशाह के पास देहली गया, तब राणकदेव उसके साथ था, और शाहजादी से शादी करने की जमानत में राणकदेव को बादशाह ने अपने पास रोक रखा था, कोल मुआफिक विरमदेव वरात लेकर नहीं आनेसे बादशाह ने राणकदेव से पूछा कि विरमदेव कहां है? उसपर राणकदेव ने वीरमदेव गूम हो जानेका कहा, लेकिन थोडे समय में ही बादशाह को खबर मिली कि वीरमदेव जालोर में मोजूद है.

बादशाह ने पहिले से ही राणकदेव को तघलखां की हवेली में नजर बंध रखा था, मगर वह कभी भाग कर चला जावे इस खयाल से उसके पैर में सोने की बेडी डालकर रखने का हुकम किया. तघलखां व मघलखां नामके दो सरदार उसको सोनेकी बेडी पहनाने को हवेली पर आये, उनको देखकर 'आसा' नामका चारण जो राणकदेव की तहनात में था उसने कहा कि,

"रणका सूण जुणैह, राय आंगण रमो नहि; तो पहिरीस केम पगेह, वड नैवरी वणवीर उत्त."

जो सूनते ही राणकदेव चेतन हुआ, और 'झींथड' नामक घोडे पर पलाण मांडने की खवास को आज्ञा दी. जिस पर मुसलमानों ने उसको 'तुं' कारा से रोकना चाहा. तब आसा चारण ने कहा कि,

"तगा तगाई मत कर, बोलै मुंह संभाल; नाहर ने रजपूत नै, रें कारे ही गाळ."

इतना सूनतेही राणकदेव ने कटार नीकाली और दोनों सरदारों को मारकर घोडे पर चढ के रवाना हुआ. ईस विषय में कविने कहा है कि,

"तगा मगा रे तूत, उडे पतशाह आगले; दानव दोय जमदुत, रेशम कीधा राणुवे."
"तातो कर तोखार, नीसरीयो उभे नगर; मगा तगा ने मार, रंगी कटारी राणुवा."
"जमदंड ग्रहियो जाय, चोल वरण वां चौवटे; असुर न आडो थाय, राणवो रातंखी थयो."
"तगा न जाणे तोल, मुरख मशरिका तणो; कारण एक क बोल मारे के पंडे मरे."

जब कि रूधिर से भरी हुई कटारी और खूनसे भरी आँखो से राणकदेव बजार बीच होकर नीकला तब बाजार में बडा भारी कोलाहल मच उठा, और वह बादशाह ने सूना जिसपर बादशाह कहता है कि,

"कहो कोलाहल कटक, सुध पूछे सुलतान; के मयंगल थंभ मरोडियो, के रिसाणो राण."

राणकदेव इस रीत से कुशलक्षेम देहली से जालोर चला आया, इसके विषय में 'वीरमदेव सोनगरा' नामक हस्त लिखित प्राचीन ग्रंथ में सविस्तर अहवाल लिखा हुआ है.

राणकदेव के दो पुत्र थे जिसमें सोडमल की ओलाद गोडवार व मालवे में उपर लिखे गाँवो में है. और दूसरा पुत्र शांगा की ओलाद वाले सिरोही रियासत की सीमापर आडावला पहाड के जंगली प्रदेश में जुडा–मीरपुर नामकी भोमट है वहां मौजूद है, जो 'रावत' कहलाते है. दंतकथा में यह भी कहा जाता है कि जब जालोर सोनगरों के हाथ से छूट गया, तब शांगा या उसकी ओलाद का कोई सानगरा राजपूत इस प्रदेश में होकर जा रहा था, रास्ते में प्यास लगने से वहां के भील नायक के घर का पानी उसने बगैर पूछे पी लिया, और पिछे से जात भात पूछी, जब मालूम हुआ कि यह भील के घर का पानी था, तब वह बहुत रंज करने लगा, जिससे भील नायक ने अपनी बेटी की शादी उससे करके अपना राज़ उसको देदीया. इस समयमें जुडा के रावत का दूसरे राजपूतों के साथ, रोटी, बेटी, का सम्बन्ध नहीं है, परन्तु दंतकथा की बातें भी सम्पूर्ण विश्वास पात्र पाई नहीं जाती, क्यों कि यह अरवल्ली के प्रदेश में अलग २ कई एक भोमटें है, जो 'नवसो नाहर' के नामसें मशहूर हे, इन भोमटों में भोमीये सोलंकी आदि दूसरी खांप के राजपूत भी है, इन लोगों का रोटी बेटी व्यवहार एक दूसरी भोमट में होता रहता है, यदि जुडा–मीरपुर के सोनगरे चौहान ने भील के घरका पानी पी लिया, जिससे उसका बहिष्कार होनेकी दंतकथा सच्ची मानी जाय, तब भी दूसरी भोमट वाले राजपूतों का बहिष्कार क्यों हुआ. इस प्रश्न का भी खुलासा होना चाहिये. पाया जाता है कि यह सब भोमटें जंगली व पहाडी प्रदेश में (इस प्रदेश में अबतक गाडे जासके वैसा रास्ता नहीं है) होनेसे व इस प्रदेश की आबहवा ना दूरुस्त होनेके कारण से (इस जमाने में भी वहां की आबहवा ना दूरूस्त होनेके कारण सपाट प्रदेश का रहनेवाला वहां जाने पर बिमार हो जाता है.) सपाट प्रदेश के राजपूतों ने इन भोमट वाले राजपूतों से रोटी बेटी का व्यवहार नहीं रखा है.

मूता नेणसी ने अपनी ख्यात में सांचोरा चैहानों के मुआफिक सोनगरे चौहानों की ख्यातभी उस समय तक की लिखी है, और टॉड राजस्थान में सोनगरे चौहानों का इतिहास, मेवाड के सोसोदीया, व जोधपुर के राठौरों के साथ जुडा हुआ, त्रूटक २ उपलब्ध होता है. परन्तु उससे सिलसीले वार वंशवृक्ष बन सक्ता नहीं है, सिर्फ ' भारत राज्यमंडल ' नामकी गुजराती भाषा की पुस्तक में, रेवाकांठा एजन्सी के ' संजेली ' नामक ताल्लुकादार सोनगरा चौहान है, जिसका इतिहास प्राप्त होता है, उस पर से जो वंशवृक्ष बन सक्के है वह इसमें दर्ज किये जाते है.

वस्तुतः देवडे चौहान, बोडा, बालोतर, सीवां, अबसी, आदि सिरोही के देवडे चौहानों

से ताल्लुक रखनेवाले चौहान सोनगरे चौहानों की शाखाएं है, जिसका सम्पूर्ण वृतान्त इस पुस्तक के दूसरे विभाग में दिया गया है. उनके सिवाय के सोनगरे चौहानों का इतिहास इस प्रकरण में देने में आया है. दूसरे सोनगरे चौहानों का इतिहास प्रसिद्धि में नहीं आनेका यह भी कारण है कि, उनका कोई राजस्थान नहीं है, अगर संजेली के सोनगरों के मुआफिक दूसरे स्वतंत्र ताल्लुकदार भी होते, तो भी उनका इतिहास जरूर प्रसिद्धि में आता. वर्तमान समय में संजेली के सिवाय, गुजरात, राजपूताना, व मालवा, में जो जो सोनगरे है, वह दूसरे देशी राज्यों की तहत में होनेसे ही उनका इतिहास अप्रसिद्ध रहने पाया है. उन लोगों को अपना प्राचीन इतिहास मालूम हो सके और मूता नेणसी ने जो श्रम उठाया है, उसका लाभ सोनगरे चौहानों को मिले, इस कारण से ही मिल सका उतना सोनगरे चौहानों का वृतान्त देकर सन्तोष माना जाता है.

इस प्रकरण के वास्ते दूसरे सोनगरे चौहानों का मूल पुरुष जालोर का अंतिम राव कान्हडदेव का छोटा भाई मालदेव मूछाला है, जिसको अलाउद्दीन बादशाह ने चित्तौडगढ दिया था. जिससे उसकी ओलाद वालों का वंशवृक्ष दिया जाता है.

वंशवृक्ष दूसरे सोनगरे चौहान.

उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ मालदेव के विषय में मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि राव कान्हडदेव (देखो जालोर के सोनगरा चौहान वंशवृक्ष में नं. ६/७ वाला) ने सोनगरा चौहानों की ओलाद कायम रखने के वासते इसको युद्ध के समय किला के बाहर निकाल दिया था. इसने बहुत बगावतें की, जिससे सिवाणखान फौज के साथ इसके पीछे पडा था.

मालदेव की मूछां बढकर वह ' मूछाला ' कहलाया इस विषय में मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि, देवी चारण सेणी देहली आई, उसके साथ मालदेव भी आया, और सेणी वीवर में पेठी तब मालदेव भी उसके साथ वीवर में गया, वहां पर " वडुली जोगण ' बैठी थी, उसने अपने गले का रत्नजडित कंठा, मालदेव को दिया, और एक रक्त भरा हुआ पात्र दिया, लेकिन मालदेव ने रक्त समजकर वह नहीं पिया, सिर्फ थोडासा मुंहपर लगाया, जो मुंछो की जगह पर लगने से मूछ वढी, हकीकत में वह रक्त नहीं था, परन्तु अमृत था. पीछे कान्हडदेव की आज्ञा से मालदेव वादशाह की हुजूर में हाजिर हुआ. वादशाह के उपर बीजली पडी जो मालदेव ने झटका सुं टालदी. पीछे वादशाह ने उसको चित्तौडगढ दिया, जहां सात वर्ष राज्य करके उसका देहान्त हुआ.

टॉड राजस्थान और दूसरी हस्त लिखित प्रतिओं में लिखा है कि 'सीणी' नाम की वेदा चारण की पुत्री थी, उसको विजानंद नामका भूसलिया चारण ने शादी करने के बाद नहीं बुलाने से सत् चढा, और वह हिमाले अपना देहान्त करने को जा रही थी, देहली में मालदेव के वहां उसने मुकाम किया, और वहां पर जोगमाया का विवर था, उसमें जोगणीओं की मुलाकात करने को गई, मालदेव भी उसके साथ गया, सीणी देवी की सिफारिश से जोगणी ने उसको एक माला व खडग देकर वरदान दिया कि तुझको चित्तौड मिलेगा, मूछां बढने के विषय में नेणसी की ख्यात से मिलती हुई बात पाई जाती है. इस घटना के वास्ते कवि ने कहा है कि—

" वेदाणी वर दायनी, राखे रंग सुहाय, मूछां दीनी मालदे, विरद मूछालो पाय. "
" दीन खड्ग गढ चित्रकुट, तुठी मशरिका राव; खलजी खोला पाथरे, दियो गुमायो दाव. "

अलाउद्दीन वादशाह को यह वात मालूम होने पर उसने मालदेव को चित्तौड की सूबागिरी दी. इस विषय में यह बात मशहूर है कि जबतक ' देवी खड्ग ' कब्जे में रहे वहांतक चित्तौड सोनगरों के पास रहेगा ऐसा देवी ने कहा था. लेकिन जबकि राणा हमीर अरसीवत, मालदेव की पुत्री ' वालबाई ' के साथ शादी करने को चित्तौड आया, तब वालबाई द्वारा वह " देवी खडग ' चूरा कर केलवाडे ले गया. और वाद में चित्तौडगढ दगा से ले लिया. मालदेव के बाद उनके पुत्र वणीवीर आदि मेवाड के राणा की चाकरी में उपस्थित रहकर जागीरें खाने लगे.

देवी खड्ग के विषय में टॉड राजस्थान में लिखा है कि भगवती चतुर्भुजा ने विश्वकर्मा द्वारा बप्पा रावल को यह खड्ग दिया था. अलाउद्दीन बादशाह ने चितौड लेकर

१ देवीखड्ग के विषय में " देवीखड्ग अने चितोड की पुनः प्राप्ति " नामक ऐतिहासिक नवलकथा का पुस्तक देखने से सविस्तर अहवाल मालुम हो सक्ता है, वर्तमान समय में वह खड्ग उदयपुर महाराणा के खास महलात में रक्खा जाकर उसका पूजन किया जाता है.

मालदेव सोनगरा को दिया, जब मालदेव ने धन प्राप्ति अर्थे चितौड के एक भोंयरे के अंदर प्रवेश किया यह भोंयरा अन्धकारमय व भयंकर था, जैसे २ मालदेव भीतर जाता गया वैसे २ अनेक प्रकार के अदभूत द्रष्य उसके सामने आने लगे, लेकिन उनसे यह भयभीत न होते अपना धैर्य कायम रक्खा. दरमियान भयंकर नागणीओं ने, मालदेव को इस स्थान में आनेका कारण पुछने पर मालदेव ने कहा कि बप्पा रावल को देवी ने जो खड़्ग दिया था, उसका पत्ता नहीं चलता है सो आप के पास होतो दे दो, जिस पर नागणीओं ने एक कढाई का ढक्कन खोल दिया, तो मालूम हुआ कि उस कढाई में अनेक प्रकार के प्राणीयों के शरीर के टुकडे पडे हुए थे, उनके बीचमें एक बालक का हाथ नजर आया, मालदेव उस विषय में विचार कर रहा था. दरमियान नागणीओं ने रक्त मांश और चरबी वाले टुकडे एक पात्र में रख कर मालदेव को प्राशन करने के वास्ते इशारा किया, मालदेव ने उसमें से कुछ खा लिया. जिससे नागणीओं को निश्चय हुआ कि यह वीर राजपूत खड़्ग काम में लानेके वासते सम्पूर्ण लायक है. जिससे उन्हों ने, मालदेव को खड़्ग दिया, जो लेकर वह भोंयरे से बाहर निकला.

राणा हमीरसिंह ने चितौड कब्जे करने से मालदेव महमुद खीलजी के पास गया, जिसपर खीलजी ने बडी फौज के साथ चितौड पर चढाई की, और सींगोली में महाराणा की फौज के साथ मुकाबिला हुआ. इस लड़ाई में मालदेव का पुत्र हरिसिंह मारा गया और बादशाह महमुद खीलजी गीरफतार हो गया, जो तीन मास तक केद में रहकर, अजमेर, रणथंभोर, नागौर, सुआ, व शीवपुर, के किलों के साथ पचास लक्ष रूपिये नकद व सौ हाथी राणा को देकर मुक्त हुआ.

नं. $\frac{२}{२}$ वणवीर ने महाराणा हमीरसिंह की आधिनता स्विकार की जिससे उसको निमच, जीरण, रत्नपुर, आदि प्रदेश राणा ने जागीर में दीये.

वणवीर ने अल्प समय में भैंसरोड पर आक्रमण कर वह चितौड के राज्य में शामिल कर दिया.

मूता नेणसी की ख्यात से मालुम होता है कि वणवीर को ओलाद वालों के तरफ नाडोल आदि प्रदेश भी था. जिसपर राठौर राव रिणमल ने हमला करके वि. सं. १४७९ में नं. $\frac{५}{१}$ करमचंद को और वि.सं. १४८२ में नं. $\frac{५}{२}$ राजधर रणधिरोत को मार डाले. जिस का बदला लेनेके वासते सोनगरे चौहानों ने रिणमल को मारने की युक्ती रची, लेकिन रिणमल की भोजाई जो सोनगरी थी, उसने रिणमल को औरत के कपडे पहिनाकर भगा दिया. इस अपमान का बदला लेनेके लिये रिणमल ने मौका पाकर १४० सोनगरों को मारकर कुए में डाल दिये, और सोनगरे चौहानों का कुल उच्छेदन कर डालने

की दयानत से जहां २ सोनगरे चौहान नजर आये, उन सब को कत्ल कर दिये. सिर्फ नं. ३/१ राणकदेव की स्त्री जो जैसलमेर के भाटी राजा की पुत्री थी वह गर्भवती होनेके कारण जेसलमेर थी, उसका गर्भ बचा.

नं. ३/१ राणकदेव के विषय में नेणसी ने अपनी ख्यात में जिस राणुवा की तारीफ की है (इस पुस्तक में आगे आ चूकी है) वह राणुवा यही था, ऐसा लिखा है, लेकिन ऐतिहासिक द्रष्टि से गोर करते यह बात सही नहीं है, कारण यह है कि सौ वर्ष से ज्यादह अन्तर इनदोनों में पडता है.

नं. ५ राघवसिंह जिस वक्त राणा सग्राम और बाबर के दरमियान युद्ध हुआ, उस लडाई में राणा की सहायता में मारा गया.

नं. ५/१ करमचंद व नं. ५/२ राजधर यह दोनों राठौर राव रिणमल के हाथ से मारे गये.

नं. ५/३ लोला का जन्म, जैसलमेर में हुआ, जब वह बारह साल का हुआ, उस समय राव रिणमल, जैसलमेर के रावल के वहां मेहमान हुआ, जैसलमेर के भाटी राजा व राव रिणमल शिकार को गये तब उनके साथ लोला भी हुजूरिया के तौरपर गया था. शिकार में एक प्रचंड नाहर ने शिकारीयों का सामना करने से सब पीछे हट गये, लेकिन लोला ने अपनी छोटीसी बरछी से नाहर पर आक्रमण करके ऐसी चोट लगाई कि नाहर के च्यार दांत गीराकर बरछी मुँह में होकर गुदा से बाहर निकली, यह द्रश्य देखकर राव रिणमल ने कहा कि यह सोनगरा जैसा दिखता है, उसपर रावल ने कहा कि सब सोनगरों को आपने मार डाले, सिर्फ यह बच्चा अपनी माता के उदर में होनेके कारण बचने पाया है, जिसपर राव रिणमल ने जैसलमेर से विदाय होते वक्त लोला को रावल से मांग लिया, और अपने साथ लाकर राव जोधा की पुत्री सुँन्दर से उसका विवाह करके पाली की जागीर उसको दी. उस समय से सोनगरे चौहान राठौरां की चाकरी में उपस्थित हुए.

लोला से चौथी पुश्तपर नं. ७/१ अखेराज सोनगरा हुआ. अखेराज का पुत्र नं. ८/१ भाण की पुत्री चितौड के पाटवी कुमार उदयसिंह को ब्याही थी. जब कि चितौड की गद्दी वणवीर ने दबा ली, तब उदयसिंह ने अखेराज सोनगरा की सहायता चाही, जिस पर अखेराज ने मारवाड के बहादुर राजपूतों के साथ उदयसिंह की सहायता की, और वणवीर का पराजय करके उदयसिंह को कुंभलनेर में गद्दी पर बैठाया, अखेराज सोनगरा पराक्रमी, दातार, और प्रभावशाली राजपूत था, मूता नेणसी ने लिखा है कि, इसके जैसा शायद ही दूसरा राजपूत हुआ होगा. वि. सं. १६०० के पोस महिने में जोधपुर के राव मालदेव ने बादशाह के साथ युद्ध किया उसमें अखेराज काम आया.

नं. ८ मानसिंह अपने पिता के जैसा प्रभावशाली राजपूत था, जबकि राणा उदयसिह का देहान्त हुआ और राणा के पाटवी कुमार प्रतापसिंह को गद्दी पर नहीं वैठाते राणा उदयसिह की ईच्छानुसार दूसरे पुत्र जगमाल को गद्दी पर वैठाने की तजवीज हुई, तव अपने भांणेज प्रतापसिह को गद्दी पर वैठाने के लिये मानसिंह ने मेवाड के सरदारों के आगे अपना प्रस्ताव रजु किया, जिस पर मेवाड के सरदारों ने प्रतापसिंह को गद्दी पर वैठाया. वि. सं. १६२१ से मानसिंह ने राठौरों की सेवा छोडकर मेवाड के राणा की चाकरी करना शरू किया था, और वि. सं. १६३२ में जब महाराणा प्रताप ने अकवर वादशाह की फौज के साथ हलदीघाट में युद्ध किया तव यह काम आया.

नं. ८/१ भाण की एक पुत्री का विवाह महाराणा उदयसिंह के साथ व दूसरी पुत्री का विवाह जोधपुर के उदयसिह राठौर (मोटा राजा) के साथ हुआ था. यह शाहवाजखां के साथ महाराणा का कुंभलनेर में युद्ध हुआ तव काम आया.

नं. ८/३ भोजराज यह कुंपा महेराजोत के पास रहता था, और कुंपा की सहायता में काम आया.

नं. ८/४ जयमल वीकानेर में रहता था, जिसको ' रिणोनीजो ' के पट्टे की जागीर मिली थी.

नं. ९ जसवंत वहुत वडा सरदार हुआ. जोधपुर के मोटा राजा उदयसिंह ने इसको मेवाड के महाराणा के पाससे बुलाकर वि. सं, १६४४ में पाली पट्टे की जागीर २७ गांवों के साथ दी. पीछे ३० गांव और भी दिये. वि.सं. १६६५ में यह राठौरों की फौज के साथ अहमदावाद गया था, और वहांपर इसने गांव 'देवीखेडा' मांगा, लेकिन वह गांव धनराज ने मांग लेनेसे, इसको कहा कि उसके वदले में हम तुमको दूसरा गांव देंगे, जिससे यह नाखुश होकर मेवाड में चला गया, और वहां ही इसका देहान्त हुआ. इसके विषय में प्रख्यात कवि आडा दूरसा ने कहा है कि—

' अगर झालियो डुंगरा वाग झाले अरण, मूर के इसां वेहुं साथे;
माजीयां तणे मूह जसे मांडीया, मान जुद्ध मांडियो जसा माथे. "
" कान हर मान ने संपेखे करमसी, वाज सुंसतो कियो अरण गह वाज;
सतां सँधा मुहां डाव मांडयो सवल, जोये तां उपर आज जस राज. "
" सोर सर पाथरां तणो वरसे सघण, पेल जे सेल खग चढे पिठाण;
हाथ उभा किया मुगले हिन्दवा, भाणरो त्यार वखाणीयो भाण. "
" जेम हुई जीवियां तेम जाणे जगत. कहु मूह कमु करणाल कहियो;
जिवत संभ ताहरी रही वाजी जसा, रूख अरथे पछे भींच रहीयो. "

नं. ९/१ नारायणदास भाणावत, यह शाही चाकरी में उपस्थित हुआ था, वाद राठौर उदयसिंह ने वि. सं. १६४१ में अपने पास बुलाकर भाद्राजण को जागीर दी. वि. सं.

१६४५ में राठौर उदयसिंह जब सिरोही पर चढाई लेजाता था, तब उसकी खबर नारायणदास ने सिरोही के राव सुरताणसिंह को पहुंचाई, जिससे राठौर उदयसिंह ने इसकी जागीर लेली, उस पर नारायणदास मेवाड के महाराणा के पास चला गया, वहां पर महाराणा ने इसको खोड के पट्टे की जागीर दी.

नं. $\frac{९}{४}$ सूरजमल को वि. सं. १६५७ में पाली की जागीर का पट्टा नं. $\frac{९}{८}$ शक्तसिंह के शामिल था. वि.सं. १६६५ में शक्तसिंह गुजर जाने बाद नं. $\frac{१०}{१४}$ देवीसिंह को शक्तसिंह का हिस्सा मिला, वि. सं. १६७१ में सूरजमल ने पाली छोड दी और मेवाड में गया लेकिन, वि. सं. १६७३ में फिर वापिस मारवाड में आया, जहां इसको 'नवसरा' का पट्टा सात गांवों से मिला, बाद में वि. सं. १६७४ में 'देछु' का पट्टा छः गांवों से मिला.

नं. $\frac{९}{८}$ शक्तसिंह को सूरजमल के साथ, आधी पाली की जागीर पट्टे में थी. यह वि. सं. १६६२ में मर गया.

नं. $\frac{१०}{६}$ जगन्नाथ, वि. सं. १६६७ में मेवाड में, राणा के पास था, वहां इसको 'सिणगारी' गांव का पट्टा मिला, पीछे वि. सं. १६७७ में मारवाड में पाली का पट्टा मिला, वि. सं. १६९१ में यह कुमार अमरसिंह के साथ जानेसे इसको पाली के पट्टे की जागीर चली गई. विकानेर के राठौरों के साथ मेवाड के महाराणा का युद्ध हुआ उसमें इसने बडी वीरता दीखाई थी. इस विषय में कवि आडा किसना ने कहा है कि—

" उवारिया असत मारका अडीया, अवडो कुण लोपे अनड; वीकाणा जोधपुर विचाले, जालंधर मंडीयो जगड. "
" निव जण गया प्रसण निठहीया, सूर मंडल अमीये सिर; जस राणो मंडाणो जांणे गढां विऊ विच सोनलगिर. "
" आडे दांहे गया अपांणा, मारणहार न फाडे मोर; जंगल दलां हीये जालोरो, जांणे ने ठहीयो जालोर. "
" उवारिया कटक आपांणा, वीकां कटक सरस घाये वाज; मूछालो मशरिक मालदे, अजुआलियो विये अखेराज. "

नं. $\frac{१०}{७}$ श्यामसिंह को वि. सं. १६७९ में जोधपुर की तरफ से गुडा पट्टा की जागीर थी. वि. सं. १६९० में भाद्राजण की जागीर मिली, मगर यह एक साल रहा.

नं. $\frac{१०}{८}$ राजसिंह वि. सं. १६६६ में मेवाड में राणा के पास गया, वहां पर इसको कुंढणा का पट्टा पांच गांवों से मिला. वि. सं. १६७२ में नं. $\frac{९}{४}$ सूरजमल पाली छोडकर चला गया तब सूरजमल का हिस्सा इसको मिला. वि. सं. १६७७ में पाली की जागीर इससे छीन कर नं. $\frac{१०}{६}$ जगन्नाथ को दी. जिससे यह रामसिंह सिसोदिया के पास गया, वहां वि. सं. १६९२ में कच्छवाह के हाथ से यह मारा गया.

नं. $\frac{१०}{१०}$ सांतल को वि. सं. १६८२ में भाद्राजण का पट्टा जागीर में था. वि. सं. १६८३ में नवसरा का पट्टा दस गांवा से ईसको मिला, जो वि. सं. १६८८ में छूट गया.

नं. $\frac{१०}{११}$ चत्रभूज बहादुर राजपूत हुआ, यह शाही चाकरी करता था, इसको ' पखेरीगढ ' की जागीर मिली थी.

नं. $\frac{१०}{१२}$ पृथ्वीराज के तरफ वि. सं. १६७८ में एहनला पट्टा की जागीर थी, बाद वि. सं. १६८८ में कुंढला गांव की जागीर फिर मिली थी.

नं. $\frac{१०}{१३}$ माधवदास यह बहादुर राजपूत था, वि. सं. १६८४ में इसके पास भवराणी पट्टे की जागीर दस गांवों से थी. पीछे वह छोड देनेसे वि. सं. १७०० में सोलह हजार रूपयों की रेख का ' गुंदवच ' पट्टा जागीर में मिला, वि. सं. १७१४ के वैशाख महिने में यह उज्जेन में काम आया.

नं. $\frac{१०}{१४}$ देवीसिंह इसके तरफ आधी पाली की जागीर थी, और इसका भाई नं. $\frac{१०}{१५}$ वणवीर को वि. सं. १६७७ में भंवरी का पट्टा दो गांवों से मिला था.

नं. $\frac{१०}{१६}$ मुकुन्ददास बगावत में रहा था, बाद वि. सं. १६८५ में इसको भाद्राजण का गांव दांमण का पट्टा मिला.

नं. $\frac{१०}{१७}$ जसवंत, यह राठौर दलपत रायसिंगोत के पास था, पीछे वह भटनेर रहा. भटनेर पर बादशाह की फौज ने घेरा डाला तब यह वहा काम आया.

नं. $\frac{१०}{१८}$ केशवदास को युद्ध में जाटों ने मारा.

नं. $\frac{१०}{२३}$ राव यह नं. ९ जसवंत सोनगरा के पास रहता था.

नं. $\frac{११}{१३}$ जगतसिंह को पट्टा नहीं था, यह उज्जेन में जख्मी हुआ, और धोलपुर में काम आया.

नं. $\frac{११}{१६}$ भींव, यह मेवाड के राणा की सहायता में मारा गया.

नं. $\frac{११}{२०}$ जेतसी वि. सं. १६८७ में आसा नीबावत के साथ जोधपुर भेजा गया वहां काम आया.

उपर्युक्त वंशवृक्ष के सोनगरे चौहानों की ओलादवाले वर्तमान समय में राजपूताना व गुजरात के प्रदेश में छोटी बडी जागीरों के मालीक है, लेकिन उनका इतिहास उपलब्ध नहीं होनेसे, गुजरात में रेवाकांठा एजंसी के संजेली नामक ताल्लुकदार जो सोनगरे चौहान है उनका वंशवृक्ष जो दूसरे पुस्तकों की ख्यात से मिला है वह लिखा जाता है.

' संजेलि के सोनगरे चौहान. '

संजेली के सोनगरे चौहान के वास्ते उनके इतिहास में लिखा है कि मालदेव सोनगरा का पुत्र छत्रसाल हुआ, जो चितौड छोडकर ' मांडवगढ ' गया, वहांपर उसने आसीरगढ के चौहान राजा असोगंध को जीतकर आसीरगढ बादशाह को दिया, उसके अलावा एक बागी बेगम को माहत की व खानदेश और नीमाड जीतकर बादशाह को दिये. उनके बदले में बादशाह ने उसको छः सौ छत्रीसी नामका, सातसौ गांवों का एक परगना दिया, बाद इसने राजपुर (जो बारियां के राज में है) के भील सरदार डुंगरसिंह को मारकर वहां अपनी राजधानी की. छत्रसाल के बाद क्रमशः २ नाहरसिंह, ३ पृथ्वीराज, ४ रणछोडदास, ५ बजेसिंह, ६ अभयसिंह, ७ रायसिंह, ८ उग्रसिंह, ९ महासिंह, १०उम्मेदसिंह, ११ अनोपसिंह, १२ कनकसिंह, १३ कल्याणसिंह १४ वाघसिंह, १५ मोतीसिंह, १६ गुलाबसिंह, १७ सग्रामसिंह, १८ मेघराज, १९ दलेलसिंह, २० कुशलसिंह, २१ हरिसिंह, २२ हमीरसिंह, २३ लालसिंह, २४ गोकुलनाथ, २५ भींवसिंह, २६ रत्नसिंह, २७ मानसिंह, २८ दयालदास, २९ नवलसिंह, ३० भगवानदास, ३१ धीरसिंह, ३२ खुमाणसिंह, ३३ रूपसिंह, ३४ रणमलसिंह, ३५ इन्द्रसिंह, ३६ केशवदास, ३७ बोलसिंह, व उसके बाद नं. ३८ सरदारसिंह गद्दी पर आये.

नं. ३८ सरदारसिंह के विषय में लिखा है कि उसको देवगढ बारिया के राजा साहेबसिंह ने दगासे मारकर उसका प्रदेश छीन लिया, जिससे सरदारसिंह की राणी अपने कुमार बहादुरसिंह को लेकर अपना पीहर 'जोबट' में था वहां चली गई, बहादुरसिंह लायक उम्र होने पर उसने बारिया के राजा जसवंतसिंह के साथ युद्ध करके अपने पिता की जागीर हांसिल की, और वि. सं. १८५२ (ई. स. १७९६) में गद्दी पर आया.

जोकि मालदेव से लगाकर बहादुरसिंह तक में ४० पुश्तें होना उपर्युक्त इतिहास से मालूम होता है, लेकिन मालदेव विक्रम संवत् की चौदहवीं सदी के पीछले हिस्से में हुआ था, जिससे पांच सौ वर्षों के अरसा के दरमियान में, चालीस पुश्त ही होना यह बात असम्भवीत है.

नं. ३९ बहादुरसिंह के पीछे नं ४० जगतसिंह ने संजेली में अपना राजस्थान किया, जो ' पुछडीया राजा ' के नामसे मशहूर था. जगतसिंह नाओलाद गुजरने से इसके भायात जीतसिंह का कुमार नं. ४१ प्रतापसिंह गोद आया, उसके बाद नं. ४२ रणजीतसिंह हुए.

प्रकरण २३ वाँ.

' देवडा चौहान ' शाखा कहलाने का समय.

' देवडा चौहान ' की शाखा कब निकली? इस विषय में प्राचीन साहित्यों के प्रमाणों में वहुत मतभेद है. वंशभास्कर की पुस्तकानुसार सांभर के माणकराज का पुत्र निर्वाण से ' नीरवाण ' व ' देवडा ' यह दो शाखाएं होनेका उल्लेख है. पूर्विया चौहानों की ख्यात मुआफिक सांभर के लाखणसी का पुत्र ' देवराज ' के नामसे ' देवडा ' शाखा होनेका अंकित हुआ है. सिरोही के वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि सांभर के माणकराज के पुत्र जेवराज व उसके पुत्र गोगराज उर्फ गोगादेव, और गोगादेव के दूसरा पुत्र ' देवसेन ' था, (देखो पृष्ठ २२ पर नं. $\frac{२७५}{१}$ वाला.) जिसके नामसे उस जमाने में (वि. सं. ७८२ में गोगराज था जिससे कुछ समय वाद) ' देवडा ' शाखा हुई थी. उस देवसेन की ओलाद में नाडोल का लाखणसी हुआ था, लेकिन वर्तमान समय में सिरोही रियासत के ' देवडे चौहान ' कहे जाते हैं वे जालोर के राव मानसिंह उर्फ माणीजी के पुत्र प्रतापसिंह उर्फ देवराज के नामसे ' देवरा ' या ' देवडा ' कहलाये है.

' सिरोही राज्य का इतिहास ' नामकी पुस्तक में पृष्ट १६२–१६३ की टीप्पणी में इस विषय में लिखा गया है कि " सिरोही की ख्यात में लिखा है, कि राव मानसिंह के पुत्र का नाम ' देवराज ' था, जिसके नाम परसे उसके वंशज ' देवडे ' कहलाये. इस लेख को हम सर्वथा विश्वास योग्य नही मान सकते. " इसका कारण यह वताया है कि ' देवराज ' उर्फ प्रतापसिह वि. सं. १२६० के पीछे होनेका सम्भव है, और उस समय के पहिले के जालोर के सोनगरे चौहान राजा समरसिंह के समय के वि. सं. १२३९ व १२४२ के शिला लेखो में उसका पुत्र मानसिंह (प्रतापसिंह उर्फ देवराज के पिता) का नाम उपलब्ध हुआ है, और वि. सं. १२२५ व १२२९ के शिलालेख आबु पर अचलेश्वरजी के मन्दिर वाहिर विद्यमान है उसमें ' देवडा ' नाम लिखा हुआ है. जो कि उपर्युक्त शिलालेख व दूसरे प्राचीन साहित्यों से भी जालोर के राव मानसिंह के समय में ' देवडा ' कहलाते चौहान विद्यमान थे, इसमें सन्देह नहीं है, और चौहान वंश के दूसरे पुस्तकों में भी ' सांभर ' से ही ' देवडा ' नाम की शाखा हुई थी वैसा जगह २ लिखा हुआ है. लेकिन उसी कारण से सिरोही के वर्तमान समय के ' देवडे चौहान ' जालोर के मानसिंह के पुत्र देवराज के नाम परसे ' देवडे ' कहलाये, यह विश्वास योग्य नहीं मानने की जो राय सि. रा. ई. के लेखक ने जाहिर की है वह स्वीकार होने जैसी नहीं

है, क्यों कि शाखाओं का कहलाना और अस्त होना 'नामी' (प्रसिद्ध) पुरुष पर आधार रखता है.

सि. रा. ई. के पुस्तक के लेखक की यह मान्यता हुई है कि नाडोल के राव लाखणसिंह के पुत्र सोहिय के बेटे का नाम देवराज था, जिसका नाम शिलालेख, व ताम्रपत्रों में 'वलीराज' मिलता है, उससे देवडे कहलाये है. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि "राव लाखण नाडुल धणी तिणरी पोढी आसराव हुवो तिणरै घरै *वाचाछल देवीजो आया छै तिणरै पेटरा बेटा ३ हुवा सु 'देवडा' कहांणां छे." तात्पर्य यह है कि नाडोल राज्यस्थान से ही देवडा चौहानों की शाखा कहलाई गई थी, वैसा माना गया है.

वस्तुतः देवडा चौहान की शाखा सांभर से कहलाई गई, या नाडोल से कहलाई हो, परन्तु जालोर के सोनगरा माणीजी के पहिले भी 'देवडे' कहलाते थे. लेकिन सिरोही रियासत के जो चौहान विद्यमान है वे सोनगरा चौहान की शाखा के वंशज है, और सोनगरा माणोजी उर्फ मानसिंह का पुत्र देवराज के नामसे ही यह सोनगरा शाखा वाले 'देवडा' कहलाये है, और उसके पहिले जो 'देवडा शाखा' कहलाई थी उसका अस्त हो गया है. अगर ऐसा न हुआ होता तो नाडोल से निकली हुई १ वागडिया, २ सोनगरा, ३ खीची, ४ हाडा, ५ वाव के चौहान, ६ सांचौरा आदि शाखा वाले भी 'देवडा' कहलाते. (देखो पृष्ट ५२ पर नाडोल के नं. $\frac{७}{२}$ अश्वराज से निकली हुई शाखाएं.) कभी ऐसा खयाल किया जाय कि उन शाखा वालों ने अपनी नई शाखा प्रसिद्धि में आनेसे पुरानी शाखा का नाम छोड दिया है, और अचलेश्वरजी के मन्दिर के वि. सं. १२२५ व १२२९ के शिलालेखो में जो 'देवडा चौहानों' के नाम लिखे हुए है वे नाडोल के चौहानों के नाम है, तब भी उन नाम वालों की ओलाद के उत्तरोत्तर वंशज सिरोही के देवडे चौहान न होनेसे नाडोल में देवडा कहलाती शाखा से ही यह देवडे कहलाये गये वैसा माना नहीं जाता, क्योंकि सिरोही का चौहान राज्यवंश जालोर के सोनगरे

* आसराव ने देवी को वचन बंध करके वाचा छल किया, उस विषय में मूता नेणसी की ख्यात में निम्न लिखा है.

× × × ×

"आसराव नाडुल सिकार रमतो हुतो. सो वडो दृढ राजवी हुवो तिणनुं देवी बीहाडण लागी, सु आसराव बीहै नहीं नै बाण हिरणनुं साधीयो हुतो सु वाह्यो तरै देवी खुशी हुई ने आसरावनु कहेण लागी तोनुं हु तूंठो. तूं जाणे सूं माग. तरै आसराव देवीरो रूप देखनै जाणीयो इसडी बैर व्हे तो भली. तरै देवी नूं कह्यो तूं म्हारे बैर हुय घरै रही. तरै वाचावल आई, तरै कह्यो अतरी वात हुं पहली कहुं छूं. कोई मोनुं जाणै सो तरै हुं परी जाईस. युं कहीनै देवी घरै आई तिणरै पेट कहे छे च्यांर बेटा हुवा. मांणकराव, मोकल, अलहण हुवा. ७ तिणरो बेटो केलण हुवो."

× × × × ×

नोट—खीलचीपुर की हस्त लिखित ख्यात में सांभर के राजा विशलदेव के चौवीस पुत्र में एक 'देवीसिंह' नामक था, उसके वंशज 'देवडा' कहलाये गये, ऐसा अंकित किया गया है, और वे सिरोही के 'देवडा चौहान' होनेका उल्लेख हुआ है.

चौहान के वंशज है, इसमें कुछ भी विवाद नहीं है, और उनको अपने बाप दादों की शाखा का नाम चलाना होता तो ' सोनगरा ' कहलाते, क्योंकि नाडोल के देवडों के मुकाबले में ' सोनगरा ' कहलाना बहुत वाजिब गिना जाता. इससे यही मानना योग्य है कि नाडोल के चौहानों के समय में जो ' देवडा ' शाखा कहलाई गई थी, उस शाखा का अस्त हो गया, और जालोर के देवराज से पुनः ' देवडा शाखा ' कहलाई गई.

माणीजी के पुत्र देवराज से देवडा शाखा कहलाई गई, यह सिर्फ वडुआ की पुस्तक से ही नहीं, परन्तु राणी मगा, कुलगर, राजपुरोहित की पुस्तकों में व दंतकथा में भी यह कहा जाता है, बल्कि एक+हस्त लिखित प्रति जिसमें तंवर, सिसोदिया, चोहान, व देहली के राजवंश की ख्यात लिखी हुई है, उसमें लिखा है कि—

× × × ×

" राव माणीजी चंडावल नगरी सूरेला तलाव शिकार पधारिया जरै देवी ' चंडका भवानी ' घर वासे आई तिणरो वेटो देवराज पातोराव. जठा सु ' देवडा ' केवाणा. देवी रा पुत्र ज है. "

× × × ×

दंतकथा में कहा जाता है कि राव माणीजी शिकार करने के वास्ते निकले थे, उसके वल की परिक्षा करने के वास्ते देवी ने ' सूर ' का रुप धारण किया. माणीजी सूर को देख कर उसका शिकार करने को पीछे पडे. वह सूर ने इसको इधर उधर बहुत भमाया और, चंद्रावती नगर से पश्चिम दिशामें (आबु पहाड की तलेटी में.) एक तलाव है वहां पहुच कर देवी अंतर्ध्यान हो गई, लेकिन माणीजी ने उस समय सूर को भाला मार दिया, जिससे वहां पर पत्थर का सूर हो गया, और भाला उस पत्थर के सूर को भेद कर जमीन में जा वैठा. देवी ने उसका प्राक्रम देख कर दर्शन दिये और वरदान मांगने की आज्ञा दी, जिसपर माणीजी ने अपनी स्त्री होकर रहने का वरदान चाहा, देवी ने उस कारण से उसकी स्त्री होकर रहना स्वीकार किया, जिससे पाता उर्फ प्रतापसिंह नामका पुत्र हुआ, वाद देवी चली गई. देवी के पुत्र होनेके कारण उसका नाम देवराज पडा, और उसकी ओलाद वाले ' देवडा ' कहलाये. माणीजी ने जिस तलाव पर सूर को भाला मारा उस तलाव का नाम *' सूरेला ' पडा.

+ यह हस्त लिखित प्रति सिरोही नगर निवासी शाह लक्ष्मिचंद जो सिरोही मे दिवान भी थे, उसने उदयपुर से प्राप्त की थी, और संगो भभूतमल सावक रेवन्यु कमीश्नर ने इस पुस्तक के लेखक को दी थी.

*सूरेला तलाव वर्तमान समय में भी विद्यमान है और 'सूरेला' के नाम से कहलाता है. कहा जाता है कि वह पत्थर का 'सूर' भी उस जगह भाला लगने का निशान वाला मौजूद था. (लेखक ने इस विषय में मौके पर तपास की परन्तु पत्थर का सूर नहीं मिला.)

नोट—जालोर के रावल कान्हडदेव के समय में १ अजित देवडा, २ कांवल देवडा वगैरह देवडे कहलाते राजपूत उसकी सेवा में थे, जो अलाउद्दीन के साथ वि. सं. १३६८ में युद्ध हुआ, उसमें बडी वीरता के साथ युद्ध करके काम आये—

सिरोही के वहुआ की पुस्तक में माणीजी की राणीयां कौन २ थी, उनके नाम खास तौरपर देखने से मालूम हुआ, कि उसमें माणीजी के पुत्र 'देवराज' का नाम लिखा है, परन्तु उसकी माता का नाम ठाम नहीं लिखा गया है. लेकिन उक्त हस्त लिलित प्रति में देवराज के पांच भाई ओर होना लिखा है, जिनकी माता के नाम ठाम भी दर्ज किये है. यानी माणीजी की पहिली राणी चावडीजो ' पद्मकुंवर ' माणसा के चावडा राव भाण सूरावत की पुत्री से कुमार १ वोडा व २ वाला, दूसरी पवार राणी ' कनकावती ' चंद्रावती का पवार कर्मसिंह की पुत्री से कुमार ३ विशलदेव, व ४ चीवा, और तीसरी राणी राठौरीजो ' केशरदे ' राठौर राव तींडा की पुत्री से कुमार ५ अभयसिंह के जन्म हुए थे.

उपर के वृतान्त से यह बात निर्विवाद है कि चाहे सांभर से या नाडोल से अव्वल ' देवडा चौहान ' की शाखा कहलाई गई थी, लेकिन वह शाखा पीछे से कम हुई या नाबूद हुई, और जालोर के सोनगरा माणीजी के पुत्र देवराज के नाम से पुनः ' देवडा ' शाखा कहलाई गई, जिसके वंशज वर्तमान समय में सिरोही के देवडे चौहान है. देवराज के पुत्रों की ओलाद वाले ही देवडा कहलाये, उसका यह भी संगीन प्रमाण है कि माणीजी के दूसरे पांच पुत्रों में से नं. ३ विशलदेव के सिवाय के पुत्रों की ओलाद विद्यमान है. जो १ वोडा के नामसे वोडा या वोडावत, २ वाला के नामसे वालोतर, ४ चीवा के नामसे चीवा या चीबावत, और ५ अभयसिंह के नामसे अवसी या अबावत कहलाते है. इसी मुआफिक देवराज के नाम से ' देवडा ' कहलाये है.

थे. जिसका वृतान्त ' कान्हडदेव प्रबंध ' में सविस्तर लिखा गया है, और मूता नेणसी की ख्यात में भी वह नाम मिलते है. इसका अहवाल सोनगरे चौहानों के प्रकरणों में लिखा गया है, यह देवडे मानसिंह उर्फ माणीजी की ओलाद से भिन्न थे, जिससे अनुमान होता है कि नाडोल वंशवृक्ष में नं. ९ रायपाल की ओलाद वाले होंगे और उसी कारण से देवडे कहलाये है. बाद उस शाखा का अंत हुआ होगा.

नोट—मूता नेणसी की ख्यात में चौहानों की चौवीस शाखा की गिनती में चीबा, व बोडा, शाखा 'देवडा शाखा' से भिन्न होनेका लिखा है. वैसे सिरोही के पुरोहीत की पुस्तकमें भी बालोत, बोडा, व चीबा की शाखाएं देवडा शाखा से भिन्न होना अंकित हुआ है. (देखो पृष्ट १२ पर दर्ज हुए चौवीस शाखाएं के प्रमाणो में.)

सिरोही राज्य के देवडा चौहानों का राज्य चिन्ह.

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.
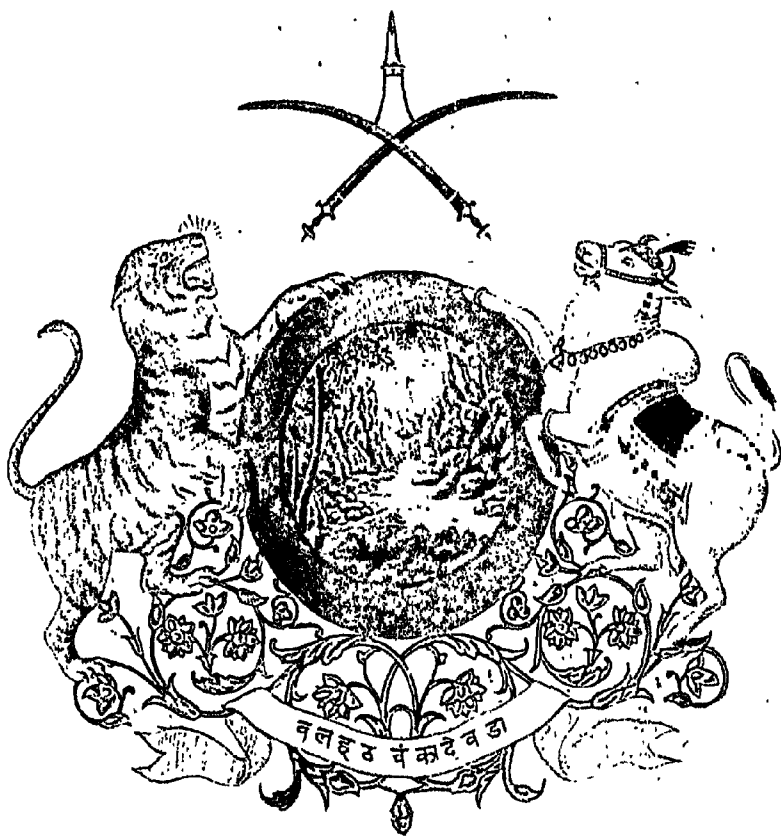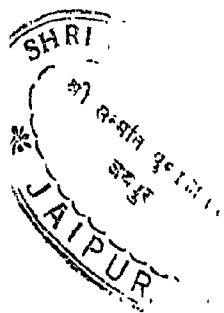
प्रकरण २४ वां.

आबु पहाड पर देवडा चौहान का कब्जा.

आबु पहाड की आसपास की भूमि अर्बूद भूमि कीवा 'अर्बूदारण्य' के नामसे प्रख्यात थी, जो वर्तमान समय में सिरोही रियासत कहलाई जाती है. जबकि जालोर गढ पर सोनगरे चौहानों का राज्य था, तब अर्बूदारण्य का पाट नगर +चंद्रावती उर्फ चंदावल में परमार राजपूतों का राज्यस्थान था, और आबु पहाड उनके कब्जे में था. आबु पहाड हिंदुस्तान में प्रसिद्ध जगह हानेसे इस देश के राजा 'आबु नरेश' कहलाये जाते हैं.

नाडोल के चौहानों ने जालोर, भीनमाल, केराडु आदि परमारों के राज्य कब्जे कर लिये थे, उसी मुआफिक जालोर में राज्य स्थान होने बाद आबु के परमारों के राज्य पर भी अपनी नजर डाली. चंद्रावती का परमार राजा 'धारावर्षादेव' व उसके भाई पाल्हनदेव के समय तक अर्बूदारण्य के प्रदेश में जालोर के चौहानों ने ज्यादह दखल नहीं किया, परन्तु उनकी वृद्धावस्था में सरणुआ पहाड की पश्चिम दिशा के देश में जालोर के +सोनगरा का प्रवेश हो चूका था. धारावर्षादेव के देहान्त बाद परमार राजपूतों की पडती शुरू हुई. आबु पहाड के पश्चिम दिशा के प्रदेश में मढार व वांकडिया वडगांव नामक परगने मुसलमानों ने दबाकर वहां पर उन्होंने अपना अमल कर लिया, उसी मुआफिक आबु की पूर्व दिशा के प्रदेश पर मेवाड के सिसोदिये का आक्रमण हुआ, और श्रीमंताई में श्रेष्ट गिना जाता 'चंद्रावती' नगर की लक्ष्मि पर लूट फाट होने लगी.

चंद्रावती के परमार राजा गुजरात के सोलंकी राजा के मांडलीक थे, जिससे जब जब मुसलानों का गुजरात पर हमला हुआ करता था, तब यह गुजरात के दरवाजे के स्थान पर गिना जाता चंद्रावती नगर पर प्रथम प्रहार होता था, इसी कारण से

+ चंद्रावती नगर आबुरोड के रेल्वे स्टेशन से दक्षिण दिशा में तीन माईल पर था. वर्तमान समय में यह जगह 'चंद्रावती' नामके छोटासा गांव के नाम से मशहूर है. दंतकथानुसार यह नगर में सैंकडों देवालय और तीनसौ साठ क्रोडपति शाहूकार रहते थे. आबु पहाड पर क्रोडों रुपिये खर्च करके जैन मन्दिर बंधाने वाला 'विमलशाह' चंद्रावती का रहिश था. वर्तमान समय में उस स्थान पर मन्दिर, कुए, बावडी आदि स्थानों के खंडेर विद्यमान है, और ये सब संगेमरमर के पत्थर से बने हुए थे, ऐसा वहां पर पडे हुए पत्थरों से स्पष्ट मालुम होता है. चंद्रावती नगर परमारों के हाथ से छूट कर देवडा चौहानों के तरफ गया, और देवडा चौहानों ने करीब एकसौ वर्ष वहां पर राज्य गद्दी रख कर पीछे से सिरोही नगर बसाकर वहां पर गद्दी कायम की, जिससे यह गुलजार नगर वैरान हो गया. कहा जाता है कि इस नगर के देवालयों के संगेमरमर के पत्थरों से अहमदाबाद की जुमा मशजिद बनी है.

चंद्रावती के परमारों का बल क्षीण होता रहा, और मेवाड के सिसोदियों ने कुछ समय तक चंद्रावती नगर व उसके आसपास (आबु की पूर्व दिशा) के परगनों पर अपना अमल जमा लिया था, लेकीन आबु पहाड 'अजीत दूर्ग' जैसा होनेसे आबु पर परमारों का कब्जा रहने पाया, जिससे परमारों ने *पुनः चंद्रावती नगर अपने कब्जे कर लिया था.

+ दंतकथानुसार आबु पर प्रथम 'राठौरों' का राज्य था, बाद 'गोहिल' राजपूतों का राज्य हुआ. उनसे परमारों ने आबु ले लिया, और परमारों से चौहानों ने लिया. इस विषय में जब कि देवडा चौहान 'लूंभकरण उर्फ लूंभा' ने आबु कब्जे किया तब 'आढा' खांप के कवि ने एक छप्पय में कहा है कि—

" आद पोट अरवद प्रथम राठोर प्रहे; ता पिछे गोहल, बंनसे बरस बयट्टे. "
" ता जाङा उवाड लीयो प्रमार त्रभे तण; त्रिच धारा वेराट; जत्र त्रिसतरं जणा जण. "
" परमार अबुठ रण बहे, लूभ करण लीयो लखे; कत्र अहु सुकर जोडे कहे, कैलास तास होंसी अखे. "

आबु पहाड व चंद्रावती नगर एक ही परमार राजा के सपूर्ण अधिकार में थे, या यह दोनों जगह पर अलग २ परमार राजपूतों का अधिकार था, यह शंकास्पद है. 'पृथ्वीराज रासा' नामक काव्य ग्रंथ से पाया जाता है कि, महान् पृथ्वीराज के समय में × आबुपर 'जेतसिंह' नामके परमार का अधिकार था, और उसका पुत्र 'सलख' परमार था. जेतसिंह परमार पृथ्वीराज की सहायता में शहाबुद्दीन गोरी के साथ युद्ध करके काम आया. सलख की पुत्री ÷ 'इच्छनी' पृथ्वीराज की राणी थी. 'सलख' के बाद आबु पर कौन २ परमार हुए, उनका शृंखलाबद्ध इतिहास नहीं मिलता हैं, जिससे चौहानों ने किस परमार से आबु पहाड लिया, वह शंका का *निर्णय नहीं हुआ है.

देवडा चौहानों ने आबु पहाड किस परमार से लिया उसके लिये जैसी शंका है, वैसीही शंका आबु किस देवडे चौहान ने कब्जे किया उसके विषय में भी है. महाराव

---

* इस विषय में ज्यादह अहवाल प्रकरण २५ वां में लिखा गया है.

+ अर्बूदारण्य के देश में किस २ के राज्य हुए, वह वृतान्त "सिरोही राज्य का इतिहास" नामक पुस्तक में सविस्तर लिखा है. उस मुताबिक—१ मौर्य वंश, २ क्षत्रप वंश, ३ गुप्त वंश, ४ हुण वंश, ५ बैस वंश, ६ चावडा वंश, ७ गुहिल वंश, ८ पडिहार वंश, ९ सोलंकी वंश, व १० परमार वंश के राजाओं का अधिकार प्राचीन समय में होनेका उल्लेख हुआ है. लेकिन इन वंशो में सिवाय परमारों के दूसरे राजवंशियोंने अपना पाटनगर अर्बूदारण्य के प्रदेश में किया हो, वैसा उक्त पुस्तक से पाया नहीं जाता है. बल्कि इस देश के वास्ते किसने कब आक्रमण किया, और आबु पहाड कब किस वंश के राजाने अपने कब्जे किया वह उल्लेख भी नहीं होते. सिर्फ उक्त वंशों के इतिहास दर्ज हुए है.

× जेतसिंह के समय में चंद्रावती नगर में प्रख्यात परमार राजा 'धारावर्षदेव' का राज्य अमल था, और जेतसिंह उसका मांडलिक आयात था.

÷ 'इच्छनी' के साथ गुजरात का राजा भीमदेव लग्न करना चाहता था, मगर जेतसिंह ने मंजूर नहीं किया, जिससे भीमदेव ने आबु पर चढाई की, यह वृतान्त गुजरात के इतिहास व पृथ्वीराज रासा की पुस्तकमें भी सविस्तर लिखा गया है.

* इस विषय में दंतकथा व गीत कवित्तों से जो अहवाल उपलब्ध हुआ है, वह इस प्रकरण में लिखा गया है.

लुंभा के समय का, वि. सं. १३७७ का, शिलालेख जो अचलेश्वरजी के मन्दिर में है, उसकी लिखावट में लिखा है कि, "महाराव लुंभा ने अपने प्रताप से चंद्रावती तथा अर्बुद का दिव्य देश प्राप्त किया." यानी देवडा चौहान लुंभा जो विजलराय उर्फ बीजड का पुत्र था, उसने परमारों के हाथसे आबु लिया, परन्तु आबु लेनेके समय में जो युद्ध हुआ उस वक्त विजलराय (देवराज का पुत्र) विद्यमान था. ऐसा अनुमान होता है.

वस्तुतः जालोर के रावल समरसिंह का वडा पुत्र मानसिंह उर्फ माणीजी था, वैसा अचलेश्वरजी के मन्दिर में लगा हुआ वि. सं. १३७७ के शिलालेख से व वडुआ की पुस्तक से भी मालूम होता है, लेकिन उसका छोटा भाई उदयसिंह जो वडा पराक्रमी राजा हुआ, उसने जालोर की +गद्दी दबा ली. (माणीजी ने वडुआ को सीख देनेका उसके पुस्तक में दाखला नहीं है जिससे पाया जाता है कि, वह जालोर छोड कर दूसरी जगह चला गया होगा.) वडुआ की पुस्तक मुताबिक माणीजी का पुत्र देवराज ने वि. सं. १२९० में वडुआ को सीख दी है, जिससे पाया जाता है कि, उसके पहिले माणीजी का देहान्त हो गया था. बल्कि उक्त पुस्तक मुआफिक देवराज का देहान्त वि. सं. १२९९ में होना पाया जाता है.

देवराज के पुत्र विजलराय और अरिसिंह ने स्वपराक्रम से अपना दूसरा राज्य स्थापन करने की शुरूआत की. वि. सं. १३०७ में उन्हों ने पाखरवा पठाण को मार कर वांकडीया वडगाम लिया, और वहां से आबु की पश्चिम दिशा के देश पर कब्जा करते २ वि. सं. १३२३ तक में आबु की तलेटी तक का मुलक कब्जे कर लिया था, वैसा वि. सं. १३३३ के 'टोकरा' गांव के शिलालेख से पाया जाता है, क्यों कि वह लेख में विजलराय का नाम है. वि. सं. १३४० में उसने मढार परगना (सायठ) 'पडपसाण' नामका मुगल को मार कर कब्जे किया, और मढार में रहने लगे. इस लडाई में

+ देवडा चौहान के वडुआ की पुस्तक में समरसिंह के एक ही पुत्र मानसिंह उर्फ माणीजी होना लिखा है. बल्कि जालोर के राजवंश में से रावल उदयसिंह का नाम भी उडा दिया है, और उसकी जगह 'चाचिगदेव' (जो उदयसिंह के पुत्र होना अन्य प्रमाणों से सिद्ध है उसका) नाम लिखा है. यही चाचिगदेव के समय (वि. सं. १३१९) में सूंधा पहाड का ऐतिहासिक शिलालेख लिखा गया है, उसमें 'माणीजी' का नाम अंकित नहीं किया है. पाया जाता है कि द्वेश बुद्धि से जैसे सूंधा के लेख में माणीजी का नाम नहीं लिखा गया, उसी मुआफिक वडुआ ने जालोर की गद्दी छीन लेनेवाला भ्रातृद्रोही उदयसिंह का नाम अपनी पुस्तक में नहीं लिखा है, बल्कि वडुआ की पुस्तक में उल्लेख किया गया है, कि 'माणीजी वि. सं. १२७० में जालोर गद्दी पर बैठा, और पंदरह साल जालोर रहा.' इससे पाया जाता है कि उदयसिंह ने कहां तो समरसिंह के देहान्त होने पर या पीछे से माणीजी से गद्दी छीन ली. सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक में पृष्ट १८० में लिखा है कि—× × "सिरोही के वडुवे की पुस्तक में उदयसिंह का बडा भाई लिखा है. × ×" वह ठीक नहीं है, क्योंकि वडुआकी पुस्तक में उपर लिखे मुआफिक उदयसिंह का नाम भी नहीं लिखा गया है. बल्कि वडुआ लक्ष्मणसिंह से दरियाफ्त करने पर उसने जाहिर किया कि मेरी पुस्तक से सिरोही राज्य के इतिहास के लेखक ने, न सहायता ली न मेरी पुस्तक देखी है, बल्कि मुलाकात भी न होनेका जाहिर किया. पाया जाता है कि राणीमगा भाटों की वही को वडुआ की पुस्तक मानी गई है.

बीजलराय का एक पुत्र लूणा उर्फ लूणकरण 'पडपसाण' मुगल जो भाग जाता था उसके पीछे पडा, उसने मुगल को धोरा (रेत का छोटा पहाड) के पास मार डाला, परन्तु एकिला होनेसे स्वयं भी सख्त जख्मी होकर वहां ही गीर पडा. लूणकरण को गीरा हुआ देख कर, उसको धूप से बचाने को 'सिंधुवा' नामके चारण ने अपनी पछेडी उस पर ओढाई, यह बात लूणकरण होश में आने पर मालूम होनेसे, उस चारण को मढार गांव में कितनोक भूमि, और मढार परगने के ६० गांवों पर चौरी दापा का हक बक्षा. वर्तमान समय में वह भूमि का टुकडा 'चारणिया पोह' के नामसे मशहूर है. दंतकथा में यह भी कहा जाता है कि जख्मी हुआ लूणकरण बाद में गुजर गया था, जिसके स्मारक का चबूतरा मढार में विद्यमान है, और 'लूणाजी का चबूतरा' के नामसे प्रसिद्धि में है.

बिजलराय का वि. सं. १२९९ में पाट बैठना, और वि. सं. १३६७ में देहान्त होना बडुआ की पुस्तक से पाया जाता है. इसके पांच पुत्रों को कवि ने पांडव की उपमा देकर प्रशंसा की है. जिस समय जालोर की गद्दी पर सोनगरा रावल कान्हडदेव[1] हुआ, उसी समय में विजलराय व उसके पुत्रों ने सरणुआ (वर्तमान समय में सिरोही नगर सरणुआ पहाड की तलेटी में है वहां) पहाड पर अपना अधिकार जमा लिया था,[2] और आबु के परमारों के साथ विवाह करने के बहाने से युद्ध करने की तदबीर रचने में आई. इस विषय में सिरोही राजवंश की राजावली का जो कवित मूता नेणसी की ख्यात में है, उसमें कवि ने कहा है कि.

× × × ×

"वीजड तणो वोआव पांच पांचैही पांडव, पर एके अगांह औंभ[3] शुह राखे असमर."
"जसवंत समर लूणो जिसा लोह गढ लूभा लखा, इक एक विरद गह उठिया मार मार करता मुखा."
"अरबद परमार, कान्ह ऐका कणियागर,[4] सिंह पांच सैरूणवे सहै कोटां ताके शिर.[5]"
"वीजड धरां वेध वसै विनलोध विचाले, क्रामत[6] है कां करे चक्र है काहु चाले."
"मा वै नहि से बी है न, मन पोहत्र प्रमाण प्रगटीया, देखडा रूंठ देशां दहण आग खाय कर उठीया.[7]"

× × × ×

आबु कब्जे लेनेके विषय में, मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है, कि आबु पर

---

१ जालोर का रावल कान्हडदेव बि. सं. १३५९ बाद गद्दी पर बैठा; और वि. सं. १३६८ में देवलोक हुआ था

२ सरणुआ पहाड का देश विजलरायने कन्हडदेव के समयमें कब्जे किया था, जिससे यह अनुमान होता है कि, वि सं. १३५९ तक में बिजलरायने आबु व सरणुआ की पश्चिम दिशा का मुलक कब्जे कर लिया था.

३ तलवार की अणी पर आकाश को रखे ऐसे. ४ जालोर गढ का प्राचीन नाम कणियागर है. ५ कवि का आशय यह है कि आबु पर परमार था, कणियागर में एक ही कान्हडदेव था, और सरणुआ में बिजलराय के पांच पुत्रों—पांच सिंह की नांई उनके शिर पर ताक रहे थे. ६ करामत यानी तदबिर. ७ कवि का आशय यह है कि, बिजलराय के पुत्रों भूमि प्राप्त करने के वास्ते अनेक प्रकार की करामत करके, जगह २ युद्ध करने को चक्र लगाने लगे. वे किसी का डर नहीं गिनते अपनी मरजी मुआफिक चक्कर अग्नि प्राशन क्रिया न हो वैसे गुस्से में आकर देश को दहन (जलाने) करने लगे. (पाया जाता है कि जालोर की गद्दी का हक जानेसे वे बगावत में रहे है).

जेत परमार था, वह पृथ्वीराज चौहान की सहायता में मारा गया, उसके वंशज आबु पर थे. जबकि सोनगरा कान्हडदेव जालोर की गद्दी पर था, तब देवडा विजड के पुत्रों (जसमरो, लूणो, लूभो, लखो व ×तेजसी,) सरणुआ के पहाड में रहते थे, उन्होंने आबु कब्जे करने का बिचार किया, दरमियान परमारों का एक चारण वहां पर आया, उस चारण के आगे पांच भाईओं के पांच २ पुत्री होना बताकर, उनकी शादी के विषय में चिन्ता प्रगट की. जिसपर चारण ने आबु के परमारों के साथ उनकी शादी करा देने की आशा दी, और चारण ने आबु पर पंहुंच कर परमारों को निवेदन किया, जिसपर वे शादी करने के वास्ते तैयार हुए, परन्तु धोका होनेकी शंका आनेसे, विजड के पुत्र लूणा को बतौर जामिन आबु पर अपने पास रखने की शर्त की. देवडों ने वह शर्त मंजूर रखी, और लूणा को आबु पर भेज दिया. बाद पचीस परमारों की बरात आई. देवडे चौहानों ने बरातीओं की अच्छी सरभरा महमानगिरी करके, शराब पिलाकर नशे में गुलतान कर दिये, और अपनी तरफ के पचीस जवान लडकों को स्त्री के कपडे पहिना कर, उनको कटारियां देकर चौरी में उपस्थित किये. उन लडकों को यह सूचना की गई थी कि, जब फेरा फिरने का कहा जाय, तब एक एक विंद पर एक साथ कटारी चलाना. जब कि २५ परमार विंद शादी के वास्ते मंडप में आये, तब बहुत से बराती नशे में चकनाचूर होनेसे डेरे पर पडे रहे थे, जिससे सिर्फ ४९ बराती विंदो के साथ चौरी पर आये थे, परन्तु देवडों ने मर्यादा भंग होनेका +बहाना बताकर उनको भी बहार रखे, और सिर्फ विंदों को ही चौरी में लिये गये, जिनको चौरी में ही पूर्व संकेतनुसार मार डाले, और बरातीओं को भी जानीवास में मार दिये. बाद एक राजपूत को आबु पर भेजा गया.

जब कि भेजा हुआ राजपूत आबु पर पहुचा, तब देवडा लूणा व आबु का 'दलपत' परमार दोनों बात कर रहे थे, जिनको राजपूत ने शादी हो जानेका समाचार निवेदन किया, जिस पर लूणा ने पूछा कि विवाह का जश किसको रहा? राजपूत ने चौहानों को जश मिलने का कहा, वह सूनते ही दलपत परमार को लूणा ने कहा कि, आबु मेरा है, अब तेरी दशा भी उसी बरातीओं के नांई होगी, इस तरह बात बात में ही दोनों के बीच लडाई हुई, और दोनों वहां काम आये, इतने में बरातीओं को मार कर दूसरे देवडे चौहानों भी आबु पर आपहुंचे और ※आबु कब्जे कर लिया.

× बिजलराय के पांच पुत्रों के नाम में भी मतभेद है. बडुआ की पुस्तक में व दूसरे कवित्तों में १ लूंभा, २ लूणा, ३ लक्ष्मण, ४ चूढराय व ५ लूढा, यह नाम अंकित है. उपर्युक्त कवित्त में जशवंत व समर नाम उपलब्ध होते है, व नेणसी की ख्यात में जसमरो व तेजसी के नाम लिखे है, ईस विषय में ज्यादह खुलासा प्रकरण २५ वां में किया गया है.

+ देवडा चौहानों में वर्तमान समय में भी शादी के समय पर विंद के पक्ष के, सिवाय विंद के दूसरे किसी आदमी को चौरी पर नहीं आने देते है.

※ आबु कब्जे करने के विषय में दंतकथा में कहा जाता है कि, देवडा चौहानों ने अपनी २५ कन्याओं के विवाह

इस विषय में उक्त पुस्तक में चौहानों की राजावली के कवित्त में कविने कहा है कि—

× × × × × ×

" पंचवीस पंवार तेड तोना तिड तोडै, थांणे गूजर खंड मुगल मंडाहर मोडै. "
" लूणो सामो लोह मुवो दलपल पंवारे, तेजसिंह अरव्रद सेस पीतीये वधारे. "
" पग आण धरा गिर पालटे, धणु विरद आव्रत धणां; सूर थांन गया राखै सिको तपे जुग बीजड तणां."

× × × × × ×

उपर्युक्त कवित्त से पाया जाता है कि तेजसिह नामके देवडा चौहान ने प्रथम आबु पर आकर 'दलपत' नामके परमार के हाथ से आबु कब्जे किया. तेजसिंह ने ही आबु लिया, उस विषय में एक दूसरा कवित्त के अखीर के चरण में कविने कहा है कि—

" आबु तेजल आन दवावे, मछर परमार सातसें मारे. "

बहुआ की पुस्तक में लिखा है कि, विजलराय के समयमें वि. सं. १३०७ में वडगाम व वि. सं. १३१० में मढार लिया गया, और वि. सं. १३५२ में परमारों के साथ 'वाडेली' में युद्ध हुआ, उसमें आबु कब्जे करने का संवत् दर्ज नहीं है, परन्तु दूसरी हस्त लिखित प्रति में लिखा है कि—

× × × × × ×

" राव लुबोजी तथा पांचेई भाई आबु लीधो परमारां ने मार ने. गाम वाडेली वाद हुवो. संवत १३५२ साल परमार ७५२ मारीया. श्री अचलेश्वरजी वर हुओ. "

× × × × × ×

परमारों के साथ करने का ठहराव मढार राज्यस्थान से किया, मगर परमारों ने बरात लेकर मढार आनेका मंजूर नहीं करनेसे आबु से पश्चिम दिशा में ' पाईमता ' नामक पहाड की तलेटी में देवडे चौहानों ने लग्न समारंभ की तैयारी की. परमारों ने पहिले से एक अपने चारण को वहां पर भेज रखा था, उसकी देवडे चौहानों ने अच्छी सरभरा की, मगर वह जाने न पावे और कुछ भी समाचार न भेज सके, उसके वास्ते पक्का इन्तिजाम रखा गया. चालाक चारण को लग्न की तैयारी के साथ हथियार दुरूस्त होनेकी बातमी भी मिली, लेकिन वह समाचार कहलाने का मौका हाथ न लगा, जिससे मौका पाकर एक मिट्टी के ठिंकरे पर कोयला से कुछ लिख कर एक भील आबु पर जा रहा था, उसको जंगल में वह ठिंकरा देकर परमारों को दे देने की समजूत की. उसमें लिखा था कि—

" विजड रे विवाह वख गोलीजे वाटके, बलके रे वाणां, सावल होवे सांतरा. "

भीलने आबु पर वह ठीकरा पहुंचा दिया. उसको पढ कर परमारों ने यह मतलब निकाला कि विजलराय के वहां विवाह की तैयारी बडी धामधूम से हो रही है, और अफीम कसुंबा कटोरे भर २ के निकल रहे है, जिसकी खबर चारण ने दी है. वस्तुतः चारण ने यह मतलब से लिखा था कि—" विजलराय के वहां विवाह की सामग्री में तीरों के भाथें बलक (झलक) रहे है, और भाले दुरुस्त किये जाते हैं, यानी तुम्हारे वास्ते कटोरे भर २ के विष तैयार हो रहा है. "

यह भी कहा जाता है कि पचीस परमारों की बरात आ पहुंची तब चारण ने एक विंद को सान करके भाग जानेका इशारा किया, जिससे वह शादी में शामिल न रहते भाग गया, जिससे उसकी जान बचन पाई, और वह रह गया जिससे ' रीयावर ' यानी ' बचा हुआ विंद ' कहलाया. जिसकी ओलाद वर्तमान समय में महीकांठा एजन्सी में ' मोहनपुर ' आदि के तालुकदार है. और परमारों में उनकी पहिचान ' रीयोवर ' नामकी शाखा से कहलाई जाती है. जिस स्थान पर यह लग्न समारंभ हुआ वहां पर ही सब परमार कतल हो गये, यह स्थान ' वाडेली ' यानी कतल करनेकी जगह के नामसे मशहूर है, बल्कि वहां पर जो गांव बसाया गया वह " वाडेली " कहलाता है.

उक्त प्रति में यह दोहा अंकित है कि—

" बीजड सूरां जे वढीयां, परमार सात सें परचंड; जालोर पत लीधो जुडे, आवै गढ अरबुद "

मूता नेणसी की ख्यात के कवित्त व दूसरे प्रमाणों में मत भेद इतना ही है, कि नेणसी की ख्यात मुआफिक जालोर में रावल कान्हडदेव था, उस समय में देवडे चौहानों ने आबु लिया वैसा मालूम होता है, और वडुआ की पुस्तक व दूसरी हस्त लिखित प्रति अनुसार वि. सं. १३५२ में वाडेली में युद्ध हुआ, और आबु कब्जे किया वैसा उल्लेख हुआ है. नेणसी की ख्यात में एक जगह लिखा गया है कि " वि. सं. १२१६ महा वदि १ के रोज लूणा ने अपना पुत्र तेजसिंह की मदद से आबु लिया." परन्तु इसमें दर्ज हुआ संवत् विश्वास पात्र नहीं है.

आबु पहाड देवडे चौहानों ने कौन संवत् में लिया ? इस विषय में हस्त लिखित प्रति से पाया जाता है कि आबु कब्जे आने पीछे सात वर्ष बाद, (वि. सं. १३५९ में) राव लूभा ने चंद्रावती कब्जे किया, परन्तु वडुआ की पुस्तक में स्पष्ट लिखा गया है कि महाराव लूभा ने वि. सं. १३६७ में चंद्रावती में राज्यस्थान किया और गद्दी पर बेठा. सि.रा.ई. में अचलेश्वर के वि. सं. १३७७ के शिलालेख अनुसार, लूभा ने वि. सं. १३६८ में चंद्रावती में राज्यस्थान करने का लिखा है. जिससे अनुमान होता है, कि वि. सं. १३६० के अरसे में आबु पहाड देवडा चौहानों के कब्जे में आया है, क्योंकि उस समय जालोर में रावल कान्हडदेव गद्दी पर आ चूका था.

मूता नेणसी की ख्यात व दंतकथा में यह बात मशहूर की गई है कि देवडे चौहानों ने अपनी पचीस कन्या के विवाह के वहाने से आबु के परमारों को बुला कर मार डाले, परन्तु वडुआ की पुस्तक में व दूसरी हस्त लिखित प्रति, जो उदयपुर से प्राप्त हुई है, (जिसमें सिर्फ देवडे चौहानों का नहीं परन्तु दूसरे राज्य वंशो का भी अहवाल लिखा हुआ है.) उसमें विवाह के वहाने का मुतलक जिक्र नहीं है, वल्कि वाडेली में युद्ध हुआ उसमें ७५२ परमार मारे गये, वैसा उल्लेख किया है. वस्तुतः ७०० (कवित्त में सातसों है.) या ७५२ परमारों का 'वाडेली' में दगा से मारा जाना, यह असम्भवित बात पाई जाती है, वल्कि पचीस विंदो की एक साथ वरात जाना, और धोका होनेके खोफ से मढार में शादी करने को नहीं जाते, पाईमता पहाड की तलेटी में डेरे खडे कराकर वहां पर लग्न समारंभ की तैयारी कराना, देवडा लूणा को आबु पर वतौर जामिन ओल में रखकर, वाद वरात लेजाना, वगैरह वातें इतनी अतिशयोक्ति वाली पाई जाती है, कि वह ऐतिहासिक दृष्टि से तुलना करने वाले हरगिज स्वीकार नहीं कर सक्ते है. पाया जाता है कि देवडे चौहानों ने युद्ध करने के वास्ते

पाइमता पहाड की तलेटी में डेरे लगाकर अपनी छावनी की, और आबु के परमारों के पचीस सरदार, दूल्हा के नांइ वन ठन कर अपनी फौज के साथ उनसे युद्ध करने को वहां पहुंचे, जो सातसों परमारों के साथ वहां काम आये, और +तेजसिह देवडा ने दूसरी तरफ से आवु पहाड पर पहुंच कर, दलपत परमार आदि जो आवु पर रहे थे, उनके साथ युद्ध करके आवु कब्जे किया है, जिसके वास्ते शादी के अलंकार देकर किसी कविने यह घटना जोडने की तजवीज की है, कींवा परमारों की वरात देवडों के वहां जाने पर शादी में कुछ तकरार उपस्थित होनेसे पचीस परमार सरदारों ने उन पर आक्रमण करनेसे 'वाडेलो' में आकर देवडे चौहानों से लडाई की होगी.

+ तेजसिंह विजडराय के पुत्र लूणा का पुत्र था. नेणसी की ख्यात में लूणा आबु पर दलपत परमार के साथ लडकर मारा जाना लिखा है, परन्तु दंतकथा व बडुआ की पुस्तक से 'लूणा' मदार के युद्ध में काम आया था, वैसा मालूम होता है.

प्रकरण २९ वाँ.

देवड़ा चौहान का चंद्रावती में राज्यस्थान.

विजलराय व उसके पुत्रों ने वि. सं. १३०७ से वि. सं. १३६७ तक ६० वर्षों का समय आबु व उसके पश्चिम दिशा के मुलक को कब्जे करने में व्यतित किया, परन्तु उन्हों ने किसी स्थान को अपना पाट नगर नहीं बनाया. इसका कारण यही होना पाया जाता है कि उनकी नजर परमारों के पाट नगर चंद्रावती पर थी, वह हाथ नहीं आया था, और वृद्ध विजलराय उस समय तक विद्यमान था, वि. सं. १३६७ में विजलराय के *बडे पुत्र लूंभा उर्फ लुंभकरण ने, अग्रसेन परमार के पुत्र मेरूपतंग से चंद्रावती नगर उसको मार कर लिया, और महाराव पद धारण करके, वहां पर देवड़े चौहानों की राज्यगद्दी स्थापन की.

आबु कब्जे आने बाद विजलराय के पुत्रों का जालोर के रावल कान्हडदेव के साथ मेल झोल होना पाया जाता है, बल्कि जब कि जालोरगढ पर प्रथम अल्लाउद्दीन की फौज ने आक्रमण किया, तब कान्हडदेव ने विजलराय के पुत्रों को सहायता के वास्ते बुलाये थे. इस विषय में कवि ने कहा है कि,

× × ×

" बलवंत विजडरा बाहला; हेरां कर हुंसव लगे हिमाला. "
" बलवंत विजडरा बाहला; पाडे ग्रहीणे हुंन पांखाला. "
" विजडरा एहवाज वखाणं; जहेवा पांचे पांडव जाणं. "
" सनमाने कान्हड तेडे सहु; रूखे प्रसन्न करे खग रहु. "

× × ×

जबकि वि. सं. १३६८ में जालोरगढ पर मुसलमानों का हमला हुआ, तब देवडे चौहानों ने सोनगरे चौहानों को सहायता की हो ऐसा नहीं पाया जाता.

---

* सि. रा. इं. की पुस्तक में पृष्ट १८४ पर लिखा है कि " बीजड की स्त्री नामल्लदेवी थी, जिससे ४ पुत्र, लावण्यकर्ण, लुंढ (लूंभा), लक्ष्मण और लुणवर्मा, (लूणा) हुए. लावण्यकर्ण का देहान्त अपने पिता के सामने ही हो गया था, जिससे इसका छोटा भाई लूंभा अपने पिता का उत्तराधिकारी हुआ, " परन्तु बहुआ की पुस्तक में लिखा है कि " विजडराय की राणी बारडजी हरियांदेवी दांता के राणा वैरीसाल की पुत्री से लुंबा, दूसरी राणी वाघेलीजी इन्द्रादेवी साणंद (गुजरात) के वाघेला मेहाजल माणावत की पुत्री से लूणा, तीसरी राठौरी पद्मादेवी से लक्ष्मण व चुंडराय, और चौथी वीरपदीजी प्रतापकुंवर लुणावाडा (गुजरात) के सोलंकी राणा राघवदेव की पुत्री से लूंढा का जन्म हुआ. बल्कि इस विषय में किसी कवि ने कहा है कि—

" विजड पूत पंच ही जाया, कूल उद्योत रण खत्री कहाया. "
" लूणो लूंढो लखमण लूंबो, असुरां सूंढ वढेवा उभो. "

इससे पाया जाता है कि बहुआ के पुस्तक में लिखे हुए नाम ज्यादह विश्वासपात्र है, और इन नाम वालों की ओलाद वर्तमान समय में कहां कहां है उसका भी उक्त पुस्तक में उल्लेख किया गया है.

महाराव लूंभा ने मेरूपतंग नामके परमार को मारकर चंद्रावती लिया, ऐसा हस्त लखित प्रति में लिखा है, परन्तु चंद्रावती के परमारों के इतिहास परसे, अग्रसेन व उसका पुत्र मेरूपतंग चंद्रावती में ÷राजा थे ऐसा मालूम नहीं होता है, जिससे यह अनुमान होता है कि महाराव लूंभा ने चंद्रावती नगर कब्जे किया, उस समय में चंद्रावती के परमारों की स्थिति बहुत अव्यवस्थित होजाने के कारण से चंद्रावती नगर एकही राजा के कब्जे में स्थायी नहीं रहने पाया था.

१ वंशवृक्ष चंद्रावती के देवडे चौहान.

उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ माणीजी व नं. २ देवराज का अहवाल प्रकरण २३ व २४ में आचूका है.

नं. २/१ वोडा के पोते 'विकल' को चंद्रावती में राज्यस्थान होजाने बाद काछोल पट्टा की जागीर दी गई, और बाद में वह छूडाकर सियाणा का पट्टा १३ गांवों से दिया. इसकी ओलाद वाले 'वोडावत' या 'वौडा चौहान' कहलाते हैं. वर्तमान समय में

÷ चंद्रावती के परमार राजाओं के इतिहास में वि. सं. १३४४ मे परमार प्रतापसिंह होना पाटनारायण के मन्दिर के शिलालेख से, वि. सं. १३४७ में प्रतापसिंह का पुत्र अर्जुनसिंह होना धांधपुर गांव के शिलालेख से, और वि. सं. १३५६ में विक्रमसिंह होना वर्माण गांव के सूर्यमन्दिर में लगे हुए शिलालेख से, मालूम होता है. बडुआ की पुस्तक में विवाह शादी के अहेवाल में जो जो परमारों के नाम उपलब्ध होते है, उनसे उस समय में जालोर के रावल चाचिगदेव की परमार राणी आबु के पंवार उदयसिंह की पुत्री थी, व महाराव लूंभा की परमार राणी परमार कर्णसिंह की पुत्री होना लिखा है, (कर्णसिंह कहां का था वह नहीं लिखा है.)

नोटः— उपर्युक्त वंशवृक्ष में जो जो शाखाएं बतलाई है उनमें से, नं. ४/२ बावनगरा देवडा व नं. ४/५ वसी के देवडा, इनका अहवाल इस प्रकरण में लिखा है, और दूसरी शाखों का वंशवृक्ष इस पुस्तक के दूसरे विभाग में दिया गया है, जिससे उनके वास्ते ज्यादह अहवाल इस प्रकरण में नहीं लिखा है.

चोडावतों के पाटवी 'सियाणा' के ठाकुर है, और वह जागिर जोधपुर राज्य में है, बोडावतों की दूसरी जागीरें परगने जालोर व दहियावटी में भी है.

नं. २/२ वाला की ओलाद वाले 'बालोतर चौहान' कहलाते है, बालाजी के पुत्र विसलदेव 'गुडा' छोडकर चंद्रावती आया, जिसको वि. सं. १३७९ में डोडीआली पट्टे की जागीर ८४ गांवों के साथ दी गई, डोडीआली पट्टा इस समय में भी बालोतर चौहानों के कब्जे में जोधपुर रियासत में है.

नं. २/४ चीबा के पुत्र सग्रामसिंह को वि. सं. १३६५ में आबु राज्यस्थान होने बाद 'कोरटा' पट्टे की जागीर ४२ गांवों के साथ दी गई, बाद में वह पट्टा छुट गया, और कालंद्री व मेर मांडवाडा आदि की जागीरें देनेमें आई थी, लेकिन पीछेसे वह जागीरें दूसरों को देकर चीबावतों को कपासीआ, पांथावाडा, आदि गांवों की जागीरें दी गई. चीवा की ओलाद वाले 'चीवावत' या 'चोबा चौहान' कहलाते है. इस समय में चीबावतों की जागीर के कितनेक गांव रिसायत पालनपुर में व कितनेक सिरोही रिसायत में है.

नं. २/५ अभयसिह को ओलादवाले 'अवसी' या 'अवावत' नाम से मशहूर है. अभयसिंह के पोता वाघसिंह के दोनों पुत्र 'हरपाल व हमीर' जालोर से मिली हुई 'गुडा' की जागीर छोडकर चंद्रावती में आये, जिससे वि. सं. १३९१ में उनको जीरावल, मांडवाडा, काइद्रा, आदि गांवों की जागीरें दी गई, परन्तु वह जागीरें नाओलाद होने पर खालसा राज हुई. इस समय अवावत चौहानों के तरफ सिरोही रियासत में, देलदर, कीवरली, आदि गांवों की जागीरें है.

नं. ३ बिजलराय का अहवाल अगले प्रकरण में आ चूका है.

नं. ३/१ अरिसिह के पुत्र वरसिंह को मामावली पट्टा जागीर में मिला था, जिससे इसकी ओलाद वाले 'मामावला देवडा' कहलाये गये. इस समय मामावले देवडों की खास स्वतंत्र जागीर नहीं है, मगर बाज २ जगह राजपूत दावे से अरठ, जमीन, दूसरे जागीरदारों की तहत में खा रहे है.

नं. ४ महाराव लूंभा उर्फ लूंभकर्ण देवडा चौहानों के राज्य की स्थापना करने वाला मूल पुरूष है. इसके विषय में, सि. रा. इ. के पृष्ट १९० पर लिखा गया है कि 'उनके समय के वि. सं. १३७२-१३७३-१३७७ के शिलालेख आबु पर से मिले है. उन्होंने अचलेश्वर महादेव के मन्दिर में मंडप का जिर्णोद्धार कराकर उक्त मन्दिर में अपनी व अपनी राणी की मुर्तियां स्थापन की. तथा हेठुंजी (हेटमजी) गांव अचलेश्वर महादेव को अर्पण किया. इनका मुख्य मंत्री साह देवोसिंह था.' वहुआ की पुस्तक मुआफ़िक इसकी राणी सिसोदणी सहोदरांदेवी चित्तौड के रावल रत्नसिंह की पुत्री थी, उससे

कुमार सलख का, और भटीयाणी गुमानदेवी जैसलमेर के रावल मेहाजल की पुत्री से कुमार दूदा का, व राठौरी द्रुपादेवी ‘ जोहल ’ के राठौर भाणा जेतमलोत की पुत्री से कुमार चाहड का, जन्म हुए थे. महाराव लूभा का देहान्त वि. सं. १३८९ में हुआ.

नं. ४/१ लूणा की ओलाद के वास्ते, बडुआ की पुस्तक मुआफिक उसका पुत्र नं. ५/३ तेजसिह को आबु, मढार, वांकडीया वडगाम, आदि गांव देनेमें आये थे, और दूसरा पुत्र नं. ५/४ तिहणुक को ‘ धाका धानेरा ’ आदि गांव मिले थे, लेकिन तेजसिंह की ओलाद में ना ओलादी होनेसे, आबु व मढार की जागीरें रियासत में शामिल हो गई, और वांकडीया वडगांम की जागीर तिहणुक के पोता देवीसिंह को देनेमें आई, जिसकी ओलाद वाले ‘ वडगामा देवडा ’ कहलाते है.

वडगामा देवडों का एक ‘ आकुना ’ नामक गांव सिरोही रियासत में है. और दूसरी सब जागीरें रियासत जोधपुर की हद में जाने पाई है.

सिरोही राज्य का इतिहास नामक पुस्तक में. नं. ५/३ तेजसिंह के नामके वि. सं. १३७८–१३८७–१३९३ के शिलालेख आबु पर विमलशाह के बनाये हुए जैन मन्दिर में व अचलेश्वर के मन्दिर में होनेसे, उसको महाराव लूंभा का पुत्र, और उसके पीछे चंद्रावती का राजा होना माना गया है. सिरोही गेझेटियर में राव लूंभा के तेजसिह, कान्हडदेव, सलखा, व रणमल नामके चार पुत्र होना लिखा है, परन्तु देवडा चौहानों के बडुआ की पुस्तक, और दूसरी हरएक हस्त लिखित प्रतिओं में, व मूता नेणसी की ख्यात में भी तेजसिंह को लूंभा का पुत्र होना नहीं लिखा है, बल्कि महाराव लूंभा के पीछे उसका पुत्र +‘ सलखा ’ चंद्रावती में गदी पर आया था, वैसा स्पष्ट लिखा है. दंत कथा व गीत कवितों से भी लूणा का पुत्र तेजसिह होना, व ‘ सलखा ’ महाराव लूंभा का पुत्र होना पाया जाता है. मूता नेणसी की ख्यात में देवडा चौहान राज्यवंश का जो कवित है उसमें लिखा है कि.

“ तेजसिंह प्रमार उभै चूके आवेटै; दशमो ग्राह लूंभेण पुत्र ते ‘सलक्र’ प्रगटै. ”

इस विषय में दूसरे कवि ने कहा है कि.

“ तिये लूणा तणां कुंवर लंकाळु; तेजसी तेहणो ने रावत काळु. ”
“ आप तैहणो वडनगर वालो; मंडाहर तेजल मूछालो. ”
“ आबु तेजल आण दबावे; मछर प्रमार सात सें मारे. ”

+ मुता नेणसी की ख्यातं में राठौर ‘ सिंहा ’ के इतिहास में लिखा है कि ‘ सिंहा ’ के बाद उसकी ओलाद में क्रमशः आसथान, धुहड, रायपाल, व कान्ह हुए. कान्ह का विवाह देवडीजी कल्याणदे राव सलखा लूभावत की पुत्री के साथ हुआ था. इससे स्पष्ट मालूम होता है कि लूंभाजी का पुत्र ‘ सलख ’ ही था.

पाया जाता है कि तेजसिंह के तरफ़ पहिले मढार का पट्टा था, और चंद्रावती में राज्य स्थान होने बाद आवु भी तेजसिंह के तरफ रहा. आवु तेजसिंह के कब्जे में होनेके कारण से वहां के मन्दिरों में उस समय के कब्जे वालों का नाम राजा के तौर पर शिला लेखों में लिखा गया है, जो लिखने का मामूली प्रचार था.

नं. ४/२ लक्ष्मणसिंह को 'सकुडा' (जो आवु के पहाड की दक्षिण दिशा की तलेटी में है) पट्टा की जागीर दी गई थी. इसकी ओलाद वाले पीछेसे "वावनगरा देवडा" कहलाये. वावनगर कहलाने का कारण यह है कि, उन्होंने मेवाड के पहाडों में 'वावन गिरोह' अलग २ होकर निवास किया था, जिस जगह पर पीछेसे महाराणा उदयसिंह ने अपने नामसे 'उदयपुर' शहर वसाया, जिससे उन देवडों के कितनेक गांव, शहर की आवादी में व कितनेक गांव 'पीछोला' तालाव वनवाया उसके नीचे गये. 'वावनगरा देवडों' की मेवाड में मटोड, देवारी, लकडवास, आदि जागीरें है, और कितनीक मालवे में गांव वरडीया, वेपुर, आदि स्थान में है.

नं. ४/४ लूढा के पुत्र विशलदेव को ऊमरणी की (जो आवुराज के तलेटी में अमरावती नगर के नामसे मशहूर था) जागीर दी गई थी. विशलदेव एक सेर अमल (अफीम) रोजमररा खाता था, यह मेवाड के राणा साथ युद्ध हुआ उसमें काम आया. इसके दो पुत्र माणेक व मोकल थे, वे मांडवगढ के वादशाह की सेवामें उपस्थित हुए थे, जिससे उनको वहां अच्छी जागीरें मिली, मगर पीछे वह जागीरें छूट जानेसे 'वसी' गये, जिनकी ओलाद वाले 'वसी के देवडे' कहलाये. इस समय में 'वसी' की जागीर ग्वालियर रियासत की तहत में है.

नं. ५ महाराव सलखा के विषय में *वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि यह वि. सं. १३८९ में चंद्रावती की गद्दी पर आया, परन्तु 'सिरोही राज्य का इतिहास' नामकी पुस्तक में, राव लूभा के पुत्र तेजसिंह वि. सं. १३७८ के अरसे में गद्दी पर आना, और उसके पीछे तेजसिंह के पुत्र राव कान्हडदेव वि. सं, १३९४ में गद्दी वैठने का लिखा गया है, और उसके समर्थन में (पृष्ट १९०–१९१–१९२ पर) लिखा है कि आवु पर तेजसिंह

---

१ वावनगरा देवडा के स्थान के विषय में मूता नेणसी की ख्यात में उदयपुर वसाने की तवारीख में लिखा है कि.

× × × × "उदयपुर री ठोड अठे देवडा वसता गांव, ५२ गिरवार रा कहावता, तिका गांवांरी वीगत. गिरवार देवडारो. अजेस देवडा इण गावां मांहै माणस हजार २००० रहे छे, १ पीछोली, १ पालडी री ठोड उदैपुर–आहाड १ दहवारी १ ढीकली १ लकडवा १ कलडवा १ मटुण १ कोटको १ तीतरडी १ मवणो १ अंवेरी वेदलो १ रूआंध १ छापरोली १ लखाहोली १ वेहडवा १ चीखलवा, १ वडगांव १ देवली १ मुंडखसोल १ वडी १ थूर १ वरसडा १ नाई १ वुजडो १ सीतारमो १ घार देवडो वलू उदै माणोत देवडां में वडेरा दीवांण रो चाकरछे टका १५००० रेख पावें छे." × × × ×

* वडुआ की पुस्तक में राव लूंभा ने वि. सं. १३७५ में, व राव सलखा ने वि. सं. १३८९ में वडुआ हरिदान को सीख देनेका लिखा है.

के समय के वि. सं. १३७८-१३८७ व १३९२ के शिलालेख है, उसमें उसका नाम मिलता है, जिसने झामटुं, ज्यातुली, और तेजलपुर यह तीन गांव वशिष्टजी[१] के मन्दिर को अर्पण किये थे. उसी मुआफिक कान्हडदेव के समय के वि. सं. १३९४ व १४००, के शिलालेख आबु पर है, जिसके समय में आबु पर वशिष्टजी का मन्दिर, जो विद्यमान है वह नयेसर बना. कान्हडदेव की मूर्ति अचलेश्वर के मन्दिर के सभा मंडप में है, व उसके समय में वोरवाडा गांव वशिष्ट कें मन्दिर को भेट किया. कान्हडदेव के पीछे उसका पुत्र सामन्तसिंह गद्दी पर आया, जिसने लुहुणी, छापुली, और किरणथला, यह तीन गांव वशिष्ट के मन्दिर को भेट किये, उसके बाद ' सलख ' चंद्रावती की गद्दी पर आया. उक्त पुस्तक कें पृष्ट १९२ में यह तीन राजाओं के नाम और किसी जगह न होनेका कारण यह बताया है कि, राव लूंभा कें दो पुत्र थे, जिनमें बडा पुत्र तेजसिंह के घराणा में राज्य रहने बाद, छोटे पुत्र तिहणाक कें वंश में राज गया हो, और उसमें ' राव सलखा ' पहिला राजा हुआ होगा.

बडुआ की पुस्तक मुआफिक राव सलखा को चार राणीयां थी, जिसमें झाली जतनादेवी देलवाडा के झालाराज अजा की पुत्री से कुमार रडमल्ल का, व चुडासमा के राव भाण की पुत्री सरलादेवी से कुमार भाखरसिंह, के जन्म हुए थे. राव सलखा ने वि. सं. १३९९ के चैत्र वदि २ को आबु की तलेटी में ऋषिकेश का मन्दिर बंधाया, और वि. सं. १४०४ में युद्ध में काम आया. (युद्ध किसके साथ हुआ, वह लिखा नहीं है, लेकिन नं. $\frac{४}{४}$ लूंढा का पुत्र विशलदेव मेवाड के महाराणा के साथ युद्ध हुआ उसमें मारा गया है, जिससे पाया जाता है कि शायद राव सलखा भी उसी युद्ध में काम आया होगा.) इसके देहान्त होनेके कारण में यह भी कहा जाता है कि, उसने आबु पर ' ईशान भेरू ' नामक एक मणीधर सर्प का मणी निकाल लेनेके वास्ते, तेलकी कढाई गरम कराकर उसमें मणीधरको डालने का प्रयत्न किया, जिसपर ' ईशान भेरू ' चार वर्ष के बालक रूप में तेलकी कढाई पास आया, और पीछेसे भयंकर रूप करके गरम तेल पी गया, बाद सलखा मारा गया.

---

१ उपर्युक्त वशिष्टजी के मन्दिर में चढाये हुए गांव, इस समय में मन्दिर के ताफ नहीं है, और सिवाय वीखाडा गांव के दूसरे सब गांवों के ताल्लुक आबु व मढार परगने से हैं. तिहणुक की ओलाद में उनके पुत्र रामसिंह व सबलसिंह होना बडुआ की पुस्तक से पाया जाता है, और इन दोनों की ओलाद वाले वर्तमान समय में वडगामा व वागडिया देवडा कहलाते है. (देखो दूसरा विभागमे वंशवृक्ष वडगामा देवडा.)

नोट—दंतकथा में कहा जाता है कि राव सलखा के पीछे जो राजा हुआ. वह अपनी दो राणीयां के साथ आबुपर अचलेश्वर के मन्दिर पास जो मंदाकनी है, उसमें जलक्रीडा करने को गये. जिस पर महादेव के पुजारी को स्वप्न हुआ. पुजारी ने राजाको कहा, मगर उसने नहीं माना, और जलक्रीडा की, जिससे उसकी राणी का कुंडल मंदाकनी में गिर गया. वह निकाल ने के वास्ते राजाने जल में डुबकी मारी, लेकिन वापिस नहीं आया, उस पर उसकी दोनों राणीयों ने महादेव के मन्दिर में धरणा दिया, तब तीन पहर पीछे कटा हुआ शिर बहार आया, और देढ पहर बाद धड आया, उसको लेकर दोनों राणीयां वहां सती हुई.

नं. ५/१ डूदा की ओलाद में "कीतु" हुआ, जिससे उसकी ओलाद वाले 'कीतावत देवडे' कहलाये, वर्तमान समय में इसकी ओलाद सिरोही रियासत में व जोधपुर रियासत में विद्यमान है.

नं. ५/२ चाहड के पुत्र गोसल के नामसे उसकी ओलाद वाले 'गोसलावत देवडे' कहलाये, जिसकी ओलाद वाले सिरोही रियासत में 'मामावली' गांव में विद्यमान है.

नं. ६ महाराव रडमल उर्फ रणमल वि. सं. १४०४ में चंद्रावती में गद्दी पर बैठा, इसकी चार राणीयां थी, उनमें से मेवसीजी भगवतीदेवी राव मेहाजल की पुत्री से कुमार शोभा का, व राठौरी जतनांदेवी राठौर राव सेका वाघावत की पुत्री से कुमार गजेसिंह का, जन्म हुए थे.

इस महाराव के समय में काछेल (भटाणा पादर के उपर का जसोल का पहाड को काछेल कहते है.) के वोडा चौहान 'विकलसिंह' ने सोलंकियों की सहायता से वंड उठाया, जिसपर उसको मारकर 'काछेल' छीना गया, और वादमें उसके पुत्र महिपाल को 'सियाणा' पट्टा की जागीर १२ गांवों से दी गई, विकलसिंह की यह कसूर में उसकी ओलाद वालों को वहुत कम जागीर दूसरे भाईओं के मुकावले में रही.

विकल के साथ जो युद्ध हुआ, उस विषय में कवि ने कहा है कि.

× × ×

" अरवद ही रिणमल, अने विकल काचोले; सोलंकीयां सहाय, वोल हुय भारी वोले. "
" कटके ढक अरजक निवह देवडो निहद्दे; वोडो विरदपगार आव विसर आ हट्टे. "
" पलखंड चंड भुव डंड, रिवडात कारण खल खुंटीयां, ÷चापई वीस चवदह चढे आरोयण आवटीया "

नं. ७ महाराव शोभा उर्फ शिवभाण वि. सं. १४४९ में चंद्रावती में गद्दी पर आया. इसने चंद्रावती नगर को राज्यधानी के काविल न समजने से सरणुआ पहाड की तलेटी में वि. सं. १४६२ में अपने नामसे 'शिवपुरी' नामक शहेर व किला वनाने का 'सिरोही राज्य का ईतिहास' नामकी पुस्तक में लिखा है. वडुआ की पुस्तक में उसने वि. सं. १४६० में खोवा को सिरोही वसाना लिखा गया है. दूसरी हस्त लिखित प्रति में वि. सं. १४६१ मे सिरोही वसाना दर्ज हुआ है. जो जगह इस समय 'पुरानी सिरोही' कही जाती है, उसके प्राचीन खंडेर नष्ट प्राय हो गये है, परन्तु श्री आदिनाथ का जैन मन्दिर जो उस समय में वंधाया गया था, वह महाराव शोभा व पुरानी सिरोही का स्थायी स्मारक है. इस मन्दिर के पास वि. सं. १४७५ का शिला लेख है, जिसमें 'महाराजाधिराज देवडा शोभा केन, राजश्री सहसमल सहितेन 'सिरोही स्थाने' यह हरूफ लिखे हुए है. यह शिला लेख आदिनाथ की पुजार्थे जमीन देनेका प्रमाण होना कहा जाता है. वर्तमान समय में यह जगह 'थुंवकीवाडी' के नामसे प्रसिद्धि में है.

÷ इस चरण का आशय यह पाया जाता है कि वि. सं. १४२० में यह घटना हुई है.

महाराव शोभा की राणीयां में जुनागढ का यादव राजा 'सोढा' की पुत्री 'चंदा देवी' महासती होना, और वह वि. सं. १४७२ में सती होना वडुआ की पुस्तक म लिखा है, परन्तु राव शोभा का देहान्त होनेका समय वि. सं. १४८१ का होना बताया है. उपर्युक्त शिलालेख से राव शोभा वि. सं. १४७५ मे विद्यमान था. इस सूरत में राणी चंदादेवी को महासती होनेका कोई खास कारण होना चाहिये.

नं. $\frac{७}{१}$ गजेसिंह चंद्रावती में ही विद्यमान था, और उसका देहान्त भी चंद्रावती में होनेसे उसकी राणी 'देवकुंवर' सोलंकी जगमाल वीदावत की पुत्री चंद्रावती में सती हुई. उसके पुत्र 'डुंगरसिंह' को चंद्रावती राज्यस्थान सें ही 'राडवर' की जागीर मिली थी, जिसकी ओलाद वाले 'डुंगरावत देवडे' कहलाये गये. सिरोही रियासत में पाडिव, कालंद्रो, मोटागांव, व जावाल, ठिकाणों के सरदार डुंगरावत है, जो मुख्य सरायत (सामन्त) है.

महाराव शोभा ने सिरोही में राज्यस्थान करने से चंद्रावती नगर वरबाद होने की शरूआत होकर वह विक्रम संवत् की सोलहवी सदी की शरूआत में ही नष्ट हो गया, और शनै, शनै, इस नगर के आरसपहाण से वने हुए मन्दिरों ने भी उनके बनाने वालों के नाम नष्ट प्राय करने के वास्ते, जमीन दोस्त होने की शुरूआत करके, नगर को झगर बना दिया. वर्तमान समय में उनके खंडेर उनकी मुलाकात लेने वाले को, कुदरत के कोप की यादगार दिलाकर गर्वित मनुष्यों के गर्व गलित कर देते हैं.

प्रकरण २६ वाँ.

देवडा चौहान का सिरोही में राज्यस्थान.

चलू देवडा चौहान सिरोही. (नं. ७ शिवभाण से नं. ११ अखेराज तक.)

७ शिवभाण उर्फ शोभा (राज्यस्थान सिरोही नगर)

८ सहसमल (इसने वि. सं. १४८२ में मौजूदा सिरोही बसाया) — ८ शिहा (लोटाणचा) — ८ सातल (वालदा)

९ देवीसिंह × — ९ लखा (लखावत) — शांगा ×

१० जगमाल — १० हमीरसिंह — १० शंकरसिंह × — १० उदयसिंह (सिरोही के लखावत) — १० मांडण × — १० पृथ्वीराज × — १० राणेराव ×

११ अखेराज — ११ मेहाजल (विसलपुर के लखावत) — *११ रत्नसिंह — देदा ×

१२ रायसिंह — १२ दूदा उर्फ दुर्जनसाल — १२ गोपालदास

मानसिंह (गोद गया)

१३ उदयसिंह × — १३ नरहरदास × — हरिदास ×

गोद आया

१४ मानसिंह ×

गोद आया (१० उदयसिंह के पोता भाणसिंह का पुत्र)

१५ सूरताणसिंह

१६ रायसिंह (दूसरे) — १६ सूरसिंह (काछोली के लखावत)

१७ अखेराज (दूसरे)

१८ उदयभाण (कुंवर पद) — १८ उदयसिंह

बख्तसिंह × — १९ वेरीसाल — कल्याणसिंह × — अणंदसिंह × — फतहसिंह × — १९ छत्रसाल उर्फ दुर्जनसाल

२० सूरताणसिंह (पदभ्रष्ट) (देपातरा ई. जोधपुर के लखावत) — भीमसिंह × — २० मानसिंह उर्फ उम्मेदसिंह

२१ पृथ्वीराज — २१ जगतसिंह (देखो पृष्ट २१८ पर) — २१ जोरावरसिंह (मंडार के राजवी)

२२ तख्तसिंह × — रत्नसिंह × — अखेसिंह ×

---

* नं. ११ रत्नसिंह का नाम मूता नेणसी की ख्यात में है, जिसमें नं. १३ नरहरदास को नं. १७ महाराव अखेराजने चूक करके मारा था, वैसा उल्लेख किया है.
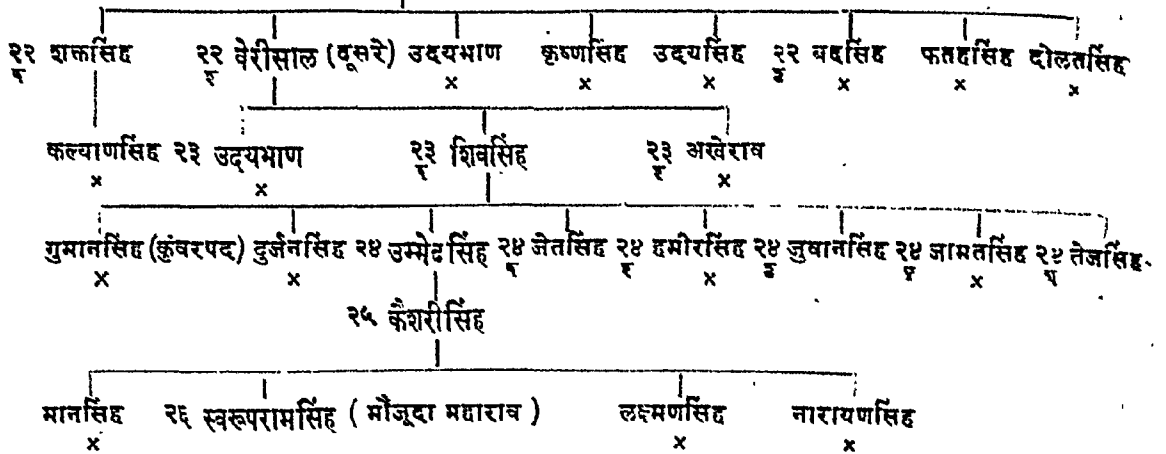
नोट—इस वंशवृक्ष में बडे हरफों वाले नाम सिरोही के गद्दी पर बैठे हुए महारावों के है.

उपर्युक्त वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. ७ महाराव शिवभाण उर्फ शोभा के विषय में प्रकरण २५ वां में अहवाल आ चूका है.

नं. ८ महाराव सहसमल उर्फ शेसमल, वि. सं. १४८१ में पुरानी सिरोही में गद्दी पर बैठा. यह एक दिन सरणुआ पहाड की पश्चीम दिशा की तलेटी तरफ शिकार खेलने को गया था, वहां सिचांणा आकाश में उड रहा था, उसके उपर खरगोश ने फाल भर करके सामना करने का तमाशा नजर आनेसे, वह भूमि वीरत्व वाली होनेका अनुमान कर, उस जगह पर नगर बसाने का निश्चय किया, और वि. सं. १४८२ के वैशाख सुद २ के रोज वर्तमान सिरोही नगर की नींव डाली गई. इस विषय में किसी कविने कहा है कि,

छप्पय

" सम्मत चउदेसाल वरस वियासी वखाणे; वीज सुद्ध वैशाख, जको गुरुवार ही जांणे. "
" श्री नृप चढे शिकार, धरा पुरख जण धरियो; शींचाणे खरगोश, फालदे पाछो फरियो. "
" शूरमी जगा देखे सुधर, खरे नेम वेला खरी; सहसमल्ल राव शोभा तणे, सिरोही थापन करी. "

इस महाराव के समय में मेवाड के राणा कुंभा को मेवाड छोडना पडा, जिसको महाराव नें आश्रय देकर वसंतगढ में रखा, और बाद में आबु पर अचलेश्वर में निवासस्थान दिया. आबु जैसी जगह हाथ लगने पर, राणा कुंभा की दियानत में फ़रक आया, उसने मकान दुरुस्त करने के बहाने से अचलगढ के क़िले की मरम्मत कराई, और बादमें मालिक बनकर बैठ गया. ' सिरोही राज्य का इतिहास ' नामक ग्रंथ में लिखा है कि, राणा कुंभा गुजरात के सूलतान की फौज से हारकर, महाराव लाखा की

रजामन्दि से आबु पर आ रहा था, और सिरोही की ख्यात में भी वैसा लिखा है, परन्तु मेवाड की ख्यात से मालूम होता है कि, सिरोही के महाराव सैसमल ने मेवाड के कितनेक गांव दबा लिये, जिससे राणा कुंभा ने आबु का किला अपने राज्य में मिलाना चाहा, और सिरोही पर फौज भेजकर आबु आदि स्थान छीने गये. कुंभा ने सिरोही की सीमा में वसंतगढ का किला बनवाया, और वि. सं. १५०९ में अचलगढ का किला दुरूस्त करके, अचलेश्वर के मन्दिर के पास कुंभ स्वामी का देवल और कुंड बनाये.

दंत कथा में कहा जाता है कि राणा कुंभा के समय में, सिरोही रियासत के रुवाई व भितरोट (पिन्डवारा, रोहीडा व सांतपुर) परगने, मेवाड के कब्जे में चले गये थे, और वर्तमान सिरोही से देढ कोश पर 'वारी घाटा' नामक जगह पर मेवाडीओं की चौकी वैठी थी.

देवडा चौहानों के वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि मालवे के सुलतान ने राणा कुंभा को मेवाड से भगाया, तव सिरोही के महाराव सहसमल ने उसको आश्रय देकर आबु पर शरणे रखा, वाद में मौका पाकर कुंभा नें आबु पर अपना कब्जा कर लिया. पाया जाता है कि महाराव सहसमल ने उसको आश्रय देकर रखने के वाद, उसकी दियानत में फर्क आनेसे जव उससे आबु छूडाने की तजवीज की है, तव उसने सिरोही पर आक्रमण करके यह परगने भी छीने है.

राणा कुंभा ने सिरोही पर आक्रमण करने से, उस युद्ध में+ कितनेक देवडे सरदार काम आने का वहुआ की पुस्तक से भी पाया जाता है, वल्कि महाराव सहसमल का वडा पुत्र 'देवीसिंह' वि. सं. १५०७ में कुंभा के साथ युद्ध में काम आनेका उक्त पुस्तक में उल्लेख हुआ है.

महाराव सहसमल ने राणा कुंभा से आबु छूडा ने के वास्ते वहुत युद्ध किया, परन्तु सफलता प्राप्त न होनेसे उसने गुजरात के सुलतान कुतवुद्दीन की सहायता लेना चाहा था, वैसा मूता नेणसी की ख्यात में लिखे हुए कवित्त से पाया जाता है, यानी कवि इस विषय में कहता है कि—

× × × × × ×

"कुंभ करण अरवद लियो, म सरणुओ सहेतो, साहसमल सुलतान, जाय श्रेग वास पहुंतो."
"कर उपर क्रुतवदी, ईतो क्युं वेगो आवे, गयो राण ओघाट, घाट पर गढ पाडावै."
"वीटे वहुरंग थांणे वहै, पनरेती पालेटीया, मछरिक सु क़र मेवाडरा, असंख शेर आहुटीया."
"पग आणे धर प्राण, संपरण साहसमल मंगे, तणे पाट लख धीर, मयंक उग्रे जग मग्गे."

× × × × × ×

+ वहुआ की पुस्तक में 'चीवा चौहानों की ख्यात में लिखा है कि चीवा गायघर शोभोत, मेवाड के राणा कुंभा ने वि. सं. १४९९ में सिरोही पर चढाई की तव सारणेश्वरजी के स्थान में युद्ध में मारा गया.

इस कवित्त का आशय यह है कि, राणा कुंभा ने आबु लेनेसे सरणुआ का सहेसमल खामोश नहीं कर सका. उसने सुलतान कुतबुद्दीन की सहायता चाही, और सुलतान से कहा कि राणा का घरका मुलक चला गया, और दूसरे का मुलक दबाना चाहता है. सहसमल ने बहुत दफे मेवाड के थांणो पर घेरा दे दे कर असंख्य मेवाडी सरदारों को मारे. और भूमी कब्जे करने के उद्योग में हो अपना प्राण दिया.

महाराव सहसमल को चार राणीयां थी. जिसमें सिसोदणी ' राजांदेवी ' नागोर के महाराज जशराज की पुत्री से कुमार देवीसिंह, व लखा, के जन्म हुए, और राठौरी ' वजादेवी ' मेहवाल के राठौर सामंतसिंह की पुत्री से कुमार शांगा का जन्म हुआ, जो बालकअवस्था में ही गुजर गया. वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि. इसका देहान्त वि. सं. १५०८ में हुआ, और इसकी तीन राणीयां सती हुई.

नं. $\frac{६}{१}$ ' शिहा ' की ओलाद वाले ' लोटाणचा देवडा ' के नामसे, प्रसिद्ध हुए. जिसकी ओलाद सिरोही रियासत में विद्यमान है.

नं. $\frac{६}{२}$ सातल की ओलादवाले ' लखमणोत देवडा ' कहलाये जिसकी ओलाद सिरोही व जोधपुर रियासत में विद्यमान है.

नं. ९ देवीसिह कुंवर पद पर ही, महाराणा कुंभा के साथ युद्ध हुआ उसमें काम आया. जिससे महाराव सहसमल का दुसरा पुत्र लखा सिरोही की गद्दी पर बैठा.

नं. $\frac{९}{१}$ महाराव लखा बडा पराक्रमी राजा हुआ, इसके नामसे देवडा चौहानों में ' लखावत ' नामकी शाखा प्रसिद्धि में आई. इसने आबु पहाड पर से मेवाडीओं को हटाकर पुनः अपना कब्जा कर लिया, और महाराव सहसमल के समय में डोडियाली के वालोतर, गोडवार के बालीसे चौहान, स्वतंत्र हो गये थे उनको सजा देकर अपनी हुकूमत जमाई, और काछेल पहाड के नजदीक रहने वाले कोलीयों को वश कर के अपने राज्य की सीमा में वहुत तरक्की की.

इसके समय में माल मगरे के आसपास (लाय, मणादर आदि) रहने वाले सोलंकीओं ने सामना करने से, उन पर चढाई कर सोलंकी ×भोज को मार कर उनके परिवार को देश नीकाल कर दिये.

महाराव लखा के विषय में, मूता नेणसी की ख्यात में अंकित हुआ कवित में लिखा है कि—

× × × ×

" जे बालोतो सिंह तला आकासह नांखे, औबासे उस सै ठाण कोटां नुं थांखे."
" शिवपुर वसै ग्रह सरणुंवो, देसां उपर देखीयो; बल सबल महाबल बोलीयो, परगह आप न पेखीयो."

" सोलंकी संग्राम सात फेरा संघारे, गोवुपर गाहटे मछर चढ डुंगर मारे. "
" डोडीयाल कावेल सहृत डंडे वालीसां, कोलीयां कहज काढ वोपतीसी चोवीसां. "
" जिण सयलतणां नदी नीर, जिम जीता सेन असंख जिण, लख धीर तणो सूरताण लग ताप न खिमे रोद्रतणं "

× × × ×

महाराव लखा ने आवु पहाड लेनेके विषय में वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि 'लखनऊ' का नव्वाव, महाराव का पगडीवंध भाई था, जिससे महाराव ने गुजरात के सुलतान महमुद वेगडा को 'पावागढ' फतह करने में सहायता की थी, जिसके एवज में गुजरात के सुलतान ने इसको १७०० गांव गुजरात के दिये, लेकिन वह मंजूर नहीं रखते राणा कुंभा से आवु छूडा ने की इच्छा प्रगट की. सुलतान ने अपनी फौज महाराव को दी, और उनकी सहायता से आवु कव्जे किया, परन्तु सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक में इस विषय में उल्लेख है कि—" आवु पर राणा कुंभा का कव्जा होना इससे (महाराव लखासे) सहन न होसका, परन्तु ऐसे प्रवल राजा से युद्ध करके आवु खाली कराना असम्भव होनेसे, जवकि गुजरात के सुलतान कुतवुद्दीन, और मालवा के सुलतान महमुद ने शरीक होकर कुंभा राणा के उपर चढाई की, तव आवु पर से मेवाड की अधिकतर फौज कुंभलगढ तरफ चली गई, और थोडेसे आदमी आवु पर रहे, उस समय (वि. सं. १५१४) में गुजरात के सुलतान की सहायता से आवुं पर अपना अधिकार कर लिया. "

गुजरात के सुलतान कुतवुद्दीन ने ई. स. १४५८ (वि. सं. १५१३–१४) में आवु कव्जे करने का रास माला नामक पुस्तक की पृष्ट ५०६ में अंकित हुआ है, जिससे पाया जाता है कि महमुद वेगडा के समय में नहीं, परन्तु कुतवुद्दीन के समय में ही आवु कुंभा राणा के हाथ से छूडाया गया था.

महाराव लखा ने गुजरात के सुलतान महमुद वेगडा को 'पावागढ' फतह करने के कार्य में सहायता करने का कई एक ख्यातों में उल्लेख हुआ है, परन्तु 'पावागढ' फतह करने का समय वि. सं. १५४१ का होना नीर्विवाद है. (देखो गुजरात के खीची चौहान कें प्रकरण १५ वां में पृष्ट ११८ पर) इससे अनुमान होता है कि शायद वि. सं. १५१४ में राणा कुंभा से गुजरात कें सुलतान कुतवुद्दीन ने आवु अपने कव्जे में लिया है, परन्तु महाराव लखा के स्वतंत्र अधिकार में आवु पहाड नहीं लिया गया था, और आवु पर अपना स्वतंत्र कव्जा करने की गरज सें ही, महाराव लखा ने 'पावागढ' लेनेके कार्य में सहायता करके उसके एवज में दिये जाते गुजरात के १७०० गांव नहीं लेते आवु पर अपना स्वतंत्र कव्जा कर लेना पसंद किया है.

यह वात प्रसिद्धि में है कि पावागढ फतह करने में शामिल होनेके कारण 'पावा' की

अधिष्ठात्री देवी कालकाजी की प्रतिमा पावागढ से लाकर, महाराव लखा ने सिरोही में अखेलाव तलाव के ऊपर +स्थापित की, जो वर्तमान समय में वहां पर विद्यमान है.

महाराव लखा ने माल के मगरे का सोलंकी भोज को मारने के विषय में, मूता नेणसी की ख्यात में सोलंकीयों के इतिहास में लिखा है कि, सोलंकी भोजा देपावत सिरोही के गांव लास, मुणावद, में रहता था, उसको सिरोही के राव लखा के साथ ※अदावत होनेसे युद्ध हुए, जिसमें पांच छः दफे सोलंकीयों ने सफलता न होने दी, जिससे ईडर के राजा की सहायता से हमला करके सोलंकी भोज को मार डाला.

इस विषय में रासमाला नामक पुस्तक को पृष्ट ६२५ में उल्लेख किया है कि, इडर के राजा राव भाण ने लास गांव के सोलंकीयों को सजा देनेके कार्य में, सिरोही के राव लखा को सहायता की थी.

सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक में लिखा है कि महाराव लखा ने सोलंकी भोज को मारा, और उसका इलाका छीन लिया, जिससे उसके बेटा रायमल व पोते शंकरसिंह, सामन्तसिंह, सखरा व भाण, मेवाड में चले गये.

महाराव लखा ने पावागढ सर करने के कारण, गुजरात के बादशाह महमुद बेगडा ने इनको 'राव' की पदवी दी. ऐसा पुरोहित की पुस्तक में और दूसरी हस्त लिखित ख्यात की प्रति में उल्लेख है. इसने वि. सं. १५१५ में बडुआ हरपाल को 'ढढमणा' गांव बक्षा. और अपने नामसे 'लखेराव' तलाव बंधाया. इसकी राणी अपूर्व देवी ने वि. सं. १५२६ में सारणेश्वरजी में हनुमान की मुर्ति स्थापित की. वि. सं. १५२८ में इसने अपने पुत्रों हमीरसिंह, शंकरसिंह, उदयसिंह व मांडण को जागीरें दी.

बडुआ की पुस्तक से मालूम होता है कि सके सात राणीयां थी, जिसमें १ भटीयांणीजी राजांदे जेसलमेर के भाटी रायसिंह की पुत्री से जगमाल, २ राठौरीजी 'जतनांदेवी' जोधपुर के राठौर राव सुंढा वीरमोत की पुत्री से हमीरसिंह, ३ चावडीजी जसांदेवी मांणसा के चावडा हमीरसिंह को पुत्री से शंकरसिंह व उदयसिंह, ४ वाघेलीजी

+ सिरोही राज्य का इतिहास नामक पुस्तक में पृष्ट २०० की टीपण्णी में लिखा है कि, "कालिका माता की मुर्ति वि. सं. १९१८ में पावागढ से लाई गई ऐसा एक ख्यात की पुस्तक में लिखा है" परन्तु जब कि वि. सं. १५४१ में महमुद बेगडा ने पावागढ पताई रावल से लेलेना मानित है तब वि. सं. १५१८ में कालकाजी की मुर्ति पावागढ से लानेकी बात असम्भवित पाई जाती है.

※ सोलंकी भोज के साथ महाराव लखा को अदावत होनेका कारण यह था कि सोलंकी भोजा के पास एक नामी घोडा था, उस घोडे को महाराव ने मांगा, जिस पर अपनी पुत्री के साथ विवाह करने पर घोडा देनेका उसने मंजुर किया. महाराव ने भोज की पुत्री के साथ शादी कर ली. पीछेसे भोज ने घोडा नहीं देते बहाना बताया कि यह घोडा मेरे भाई संग्राम का है सो देना न देना उसकी मर्जी पर है. महाराव ने सोलंकी संग्राम से घोडा मांगा परन्तु उसने नहीं दिया जिससे अदावत हुई, और उन लोगों पर चढाई करके मारकर देश निकाल कर दिये.

देवांदेवी साणंद के वाघेला वाघसिंह की पुत्री से मांडण, ५ सोलंकणीजी कुंभादेवी सोलंकी भोजा दीपावत की पुत्री से बाई फुलकुंवर का जन्म हुआ, जिसका विवाह चितौड के महाराणा *लाखा के साथ हुआ. इसकी एक राणी +सिसोदणीजी जसांदेवी चित्तोड के महाराणा रायमल की पुत्री थी, परन्तु सि. रा. ई. में इसकी एक राणी मेवाड के महाराणा शांगा की पुत्री होनेका अंकित हुआ है, लेकिन महाराणा शांगा वि. सं. १५६५ में गद्दी पर आया था, उस समय से ३५ वर्ष पहिले महाराव लखा का देहान्त होगया था. जिससे अनुमान होता है कि महाराणा रायमल की पुत्री होना वहुआ की पुस्त में लिखा है वह ठीक होगा.

महाराव लाखा के ५ पुत्र होनेका वहुआ की पुस्तक में व एक कवित्त में उल्लेख है यानी—

" लखपत रे झगडे हमीर जनमीया, साकर उदयसिंघ, मांडण कुंवर महाबली, धराधर राखण धींग. "
" मुख आदर नेणां अमी, पाणे लाख पसाव, राव लखारा पांडरू, रायां उपर राव. "

परन्तु सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक में इनके सिवाय पृथ्वीराज व राणेराव नामकें दो पुत्र और होना अंकित हुआ है. सिरोही के राजपुरोहित की पुस्तक में व दूसरी हस्त लिखित ख्यात की प्रति में, उन पांच पुत्रों के सिवाय सिर्फ पृथ्वीराज का नाम उपलब्ध होता है. वहुआ की पुस्तक में पृथ्वीराज का नाम नहीं है, परन्तु महाराव लखा का पोता (हमीरसिंह का पुत्र) राणुजी होना अंकित हुआ है. बल्कि हमीरसिंह के समय का वि. सं. १५४५ के महा सुद ३ के असवा गांव के शिलालेख में (हमीरसिंह ने दी हुई भूमी के दान पत्र में) हमीर के पुत्र देवडा राणा, जोधा, जीवा व बाई सूरताणदे, नवरंगदे, के नाम मिलते है. जिससे पाया जाता है कि राणेराव महाराव लखा का पोता होता था.

महाराव लखा के देहान्त कें समय के विषय में मत भेद है. सोलंकीयों कें इतिहास में लिखा है कि वि. सं. १४८८ के कातीक सुद १० को सोलंकी भोज के साथ युद्ध हुआ, जिसमें महाराव लखा अपने तीन पुत्रों सहीत व सोलंकी भोज अपने पांच पुत्रों सहीत मारे गये. परन्तु यह लिखना भरोसा पात्र नहीं है, क्यों कि वि. सं. १४८८ में सिरोही की गद्दी पर महाराव सहसमल विद्यमान था, और महाराव लखा अपने तीन

+ सि. रा. ई. में लिखा है कि महाराव लखा की एक राणी महाराणा शांगाकी पुत्री लक्ष्मीकुंवर थी. वैसे मेवाड के महाराणा रायमल का विवाह महाराव लखा की पुत्री चंपाकुंवर के साथ हुआ था. लेकिन वहुआ की पुस्तक में या सिरोही की दूसरी ख्यातो में इस विषय में कोई उल्लेख नहीं है. पाया जाता है कि मेवाड की तवारिख से यह लिखा गया होगा.

* राणा लाखा वि. सं. १४३९ में मेवाड में हुआ था, जिससे वहुआ की पुस्तक में फूलकुंवर का विवाह उसके साथ होनेका लिखा है वह सही नहीं है, पाया जाता है कि राणा रायमल के साथ होना सि. रा. ई. में अंकित हुआ है वह दुरूस्त है.

पुत्रों के साथ काम आनेका दूसरी किसी ख्यातों में या दंत कथा में भी जाहिर नहीं हुआ है.

सिरोही राज्य का इतिहास की पुस्तक में इसका देहान्त वि. सं. १५४० में होनेका लिखा है, परन्तु वह किस पर से लिखा गया वह अंकित नहीं हुआ है. बडुआ की पुस्तक में इसका देहान्त वि. सं. ÷१५३० में होनेका उल्लेख है.

नं. १० महाराव जगमाल अपने पिताके पीछे सिरोही की गद्दी पर बैठा. जो कि महाराव लखा ने अपने हाथ से ही सब पुत्रों को जागीरें दे दी थी, परन्तु हमीरसिंह बडा चालाक था उसको संतोष न होनेसे, उसने महाराव जगमाल से आधा राज लेने के वास्ते झगडा फैलाया. महाराव अपने भाइओं पर बडा प्रेम रखते थे, जिससे उसने करीब आधा राज जितनी जागीर उसको दी, लेकिन उस पर वह रजामंद नहीं हुआ, जिससे महाराव ने उसको दबाने के वास्ते फौज भेजी. हमीरसिंह ने उस फौज का सामना किया और युद्ध में काम आया.

इस विषय में मूतानेणसी की ख्यात में जो कवित लिखा है उसमें उल्लेख हुआ है कि.

× × ×

" धर खाटे लख धीर दीध जगमाल हमीरा; त्रिने पाट पत बेध वेहुवै नर वीरा. "
" एक राव अरवद वीयो, सरणुयै वयाठो; एकाएक आगाह एक एकाह अपूठो. "
" राय भाण अनै सत नथ राय, द्रोखे आर × × ख वे धीयो. "
" भूय तणो ग्रास विहु भाइयां, आधो आंध निमंधीयो. "
" दल मेले जगमाल पांड हमीर पहारै; त्रिहलिखीयो धर वेध तां मस हवर संघारै. "

× × × × ×

इस कवित का आशय यह है कि महाराव लखा ने भूमि सम्पादन की, और जगमल व हमीर को दी, जिससे दोए पाट (गद्दी) हुए. और आपस में विरोध होने लगा. वह तकरार राव भाण (इडर का राजा जो महाराव लखा का मित्र था,) ने मिटाई, और आधो आध जमीन बांट दी. हमीर तब भी हेरान करने लगा, जिससे जगमाल ने फौज भेजी, और इस बहाने से हमीर को मार डाला.

÷ महाराव लखा का देहान्त वि. सं. १५३० या वि. सं. १५४० में होनेकी बात इसने गुजरात के सुलतान महमुद बेगडा को पावागढ फतह करने के कार्य में सहायता की थी इस घटना के साथ सम्पुर्ण तौरसे बंध बैठती नहीं है, क्यों कि वि. सं. १५४१ में महमुद बेगडा ने पावागढ कब्जे किया था. अगर महाराव लखा ने पावागढ फतह करने में, गुजरात के सुलतान को सहायता की थी, यह बात मान्य रखी जाय तो यह अनुमान होता है कि, महमुद बेगडा के समय में नहीं परन्तु उसके पहिले गुजरात के सुलतान महमुद (जो वि. संवत् की पंद्रहवी सदी में हुआ था.) ने पावागढ के रावल गंगदास पर चढाई की थी, उसको सहायता की होगी. अगर ईडर का राजा राव भाण के साथ महाराव लखाकी ज्यादह मीत्रता थी और राव भाण ने अपमान का बदला लेनेके वास्ते पावागढ के रावल गंगदास के उपर आक्रमण करके उसको कैद किया था, उस कार्य में सहायता करने के कारण महाराव लखा ने पावागढ सर किया था ऐसा जगह २ ख्यातों में लिखा गया है.

नोट—पामेरा गांव में मंडलेश्वर महादेव के मन्दिर पास एक शिलालेख वि. सं. १५३५ वैसाख सुदि ७ का है उसमें ' महाराय श्री जगमाल ' ने मंडलेश्वर का प्रासाद बंधाने का अंकित है.

महाराव जगमाल की राणीयां व पुत्रादिक के विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इसकी पांच राणीयां थी, जिनमें एक मेवाड के महाराणा रायमल की पुत्री आनंदाबाई थी, और इसके तीन पुत्र अखेराज, मेहाजल और देदा व ×पद्मावती बाई नाम की एक पुत्री थी, जिसका विवाह जोधपुर के राठौर राव गांगा से हुआ था.

इस विषय में वडुआ की पुस्तक में महाराव जगमाल की राणी भटियाणीजी जैसलमेर के रावल जसपाल की पुत्री 'हीरांदे' का नाम सिर्फ अंकित है, और उससे कुमार अखेराज व मेहाजल के जन्म होनेका उल्लेख किया है, लेकिन एक जगह जगमाल का एक कुमार रत्नसिंह नामका फिर था वैसा दाखला मिला है, जिसकी ओलाद चली थी वह वंशवृक्ष में अंकित की है.

'टॉड राज्यस्थान' की पुस्तक में लिखा है कि मेवाड के राणा रायमल की एक कुंवरी का विवाह सिरोही के राव 'जयमल' (जगमाल) के साथ हुआ था, वह सिसोदणी राणी को दुःख देता था, जिससें राव जगमाल का साला पृथ्वीराज सिसोदिया ने सिरोही जाकर महाराव जगमाल को दवाकर अपनी बहिन का दुःख मिटा दिया, लेकिन उसका वेर लेनेके लिये महाराव जगमाल ने विष मिश्रित औषद पृथ्वीराज को दिया. पृथ्वीराज ने सिरोही से वापस मेवाड में लौटते रास्ते में उस औषध को खाया, जिससे उसका देहान्त हो गया, परन्तु सिरोही के वडुआ की पुस्तक में या दूसरी सिरोही की ख्यात में जगमाल का विवाह मेवाड के महाराणा के वहां होनेका उल्लेख नहीं है, बल्कि वडुआ की पुस्तक में महाराव लखा का विवाह मेवाड के राणा रायमल की पुत्री 'जसांदेवी' के साथ होनेका लिखा गया है.

महाराव जगमाल के देहान्त के विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में वि. सं. १५८० अंकित हुआ है, परन्तु वडुआ की पुस्तकमें वि. सं. १५५७ में इसका देहान्त होनेका उल्लेख किया है, और वह ※ज्यादह भरोसा पात्र होना पाया जाता है.

नं. $\frac{१०}{१}$ हमीरसिंह ने अपने नामसे हमीरपुरा गांव वसाया. यह महाराव जगमाल के साथ युद्ध में काम आया. इसके पुत्र राणा, जोधा व जीवा नामक होना वि. सं. १५४५ के असावा गांव के शिलालेख से पाया जाता है. राणा को धोरी पावटी के पट्टे की

× सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि पद्मावती बाई से जोधपुर के राव मालदेव, वेरसल व मानसिंह नामके तीन कुमार व सोनाबाई नामकी कुंवरी के जन्म हुए. पद्मावतीबाई ने जोधपुर में 'पदमलसर' तालाव बनवाया और वह वि. सं. १५८८ में अपने पति के साथ सती हुई.

※ महाराव जगमाल का देहान्त वि. सं. १५५७ में होना ज्यादह भरोसा पात्र मानने का कारण यह है कि इसका देहान्त वि. सं. १५८० में होनेका कोई प्रमाण सि. रा. ई. की पुस्तक में बताया नहीं है, जब इसका पुत्र अखेराज का वि. सं. १५५७ में गद्दी पर आना, वि सं. १५६० में उसकी तरफ से "अखेलाव' तलाव बंधाना, व वि. सं. १५६२ में जालोर के खान मुजाखान को पकड लेना पाया जाता है, जिससे महाराव जगमाल का देहान्त वि.सं. १५५७ में होना सम्भवित है.

जागीर मिली थी, लेकिन वह नाओलाद होनेसे लखावत भाणसिंह रणधीरोत का बडा पुत्र शार्दूलसिंह उसके गोद गया, जो भी धोरी पावटी में लडाई में काम आया.

नं. $\frac{१०}{२}$ शंकरसिंह को सांतपुर पट्टा की जागीर मिली थी, मगर उसके ओलाद न होनेसे वह जागीर राज्य में शामिल हो गई.

नं. $\frac{१०}{३}$ उदयसिंह को वि. सं. १५२८ में नादीआ पट्टा की जागीर मिली. इसकी ओलाद वाले सिरोही के लखावत कहलाये यानी—
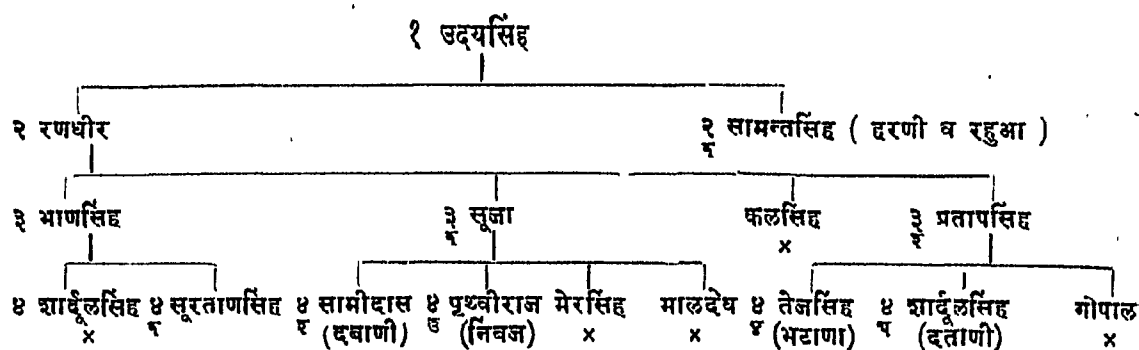
(नं. ४ शार्दूलसिंह नं. $\frac{१०}{१}$ हमीर के पुत्र राणा के गोद गया. नं. $\frac{४}{१}$ सूरताणसिंह नं. १४ महाराव मानसिंह के गोद जानेसे सिरोही के महाराव हुए, जिसके वंशज वर्तमान समय के महाराव है, नं. $\frac{४}{२}$ सामीदास, नं. $\frac{४}{३}$ पृथ्वीराज, नं. $\frac{४}{४}$ तेजसिंह, नं. $\frac{४}{५}$ शार्दूलसिंह व नं. $\frac{२}{१}$ सामन्तसिंह की ओलाद वाले क्रमशः दबाणी, निंबज, भटाणा, दताणी व रहुआ आदि के लखावत सरदार है.)

नं. $\frac{१०}{४}$ मांडण को दताणी पट्टा की जागीर मिली थी, मगर वह नाओलाद हुआ.

नं. $\frac{१०}{५}$ पृथ्वीराज के विषय में कोई हाल मालूम नहीं हुआ.

नं. ११ महाराव अखेराज बडा बहादुर राजा हुआ. बहुआ की पुस्तक में लिखा है कि यह वि.सं. १५५७ में अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. वि.सं.१५६० में इसने सिरोही में अखेलाव तालाव बंधाया, और वि. सं. १५६२ में जालोर के सूबा मुजाखान को पकड कर सिरोही में कैद रखा. इसने दियोल राजपूतों के प्रदेश पर हमला कर उनको हराये, और लोहीयाणा का किला फतह किया. गुजरात के वढियार परगने से जमीन का महसूल वसुल किया. इसका हमला इतनी झडप से होताथा कि, उड कर आया न हो वैसा मालूम होता था, जिससे यह ' उडणा अखेराज ' के नामसे मशहूर हुआ. इस विषय में खीमराज नामक कवि ने कहा है कि—

" लोहियाणा गढ लियो दाव दियोलां सर दीनो, मुजाखान मुगल पकड वेडी वस कीनो. "
" वाले खेत वढियार वठासुं भोग अणावे, अरवद धणी अभंग चांव जुद्ध परिया साडे. "
" जग जीत हुवो दूईज़ो जगो कवचे दारिद्र कापियो. उडणे अखे खेमाय ने सासन गाम समापियो. "

इसी मुताबिक मूता नेणसी की ख्यात में देवडे चौहानों की राजावली का जो कवित है उसमें इसके वास्ते लिखा है कि—

× × × × × ×

" रस तर संघण लील राज वक वाल वि वेनो, तेण पाट त्रुड ताण पछै अखई उतपनो. "
" अखेराज अर कर आहोसियो नर नरंद भंजेव निस, कल कले किरण दीपे कमल दसही दिस चत्वार दिस."
" जिके इंदु फण इंद कंता गलै निकासे, जुद्ध वीण रढ रांण यांण त्यां हूरि पिया से. "
" जिके छत्र गज गत जत्र त्याहु ये अलगा, जिके काल लंकाल लुलं लुल पाये लगा. "
" पूरवा पछिम उत्तर दखिण कीती रेण खत्र भले, अखेराज अरक ओहीसीयो हुय नरंद हालोहले. "
" वंध खाण आप वल मांण मेजे मिलकाणो, धरा राज धर धूण लीयो चांपै लोईयांणो. "
" डोडियाल की वेल वास गोयंभ वसावे, चापे तीस चोवी सरधर सत्र मनावे. "
" पतसाह सरस दस वार पीड जै ठंढो लगा दलां, अखेराज साल इल न अंतरे उरह निमंधे एतलां. "

× × × × × ×

वढियार परगने का महसूल वसूल करने का कारण यह प्रसिद्धि में है कि सिरोही रियासत से निकली हुई बनास नदी का पानी समुद्रमें नहीं जाते. वढियार परगने की जमीन में फैलाव करके गुप्त होजाता था, जिससे उस जमीन में बगैर पानी पिलाये अच्छी खेती होती थी. अपनी रियासत की नदी के पानी से खेती होनेके कारण इसने महसूल लेनेका +हक कायम किया.

महाराव अखेराज के विषय में सि. रा. ई. में लिखा है कि, इसने वि. सं. १५८० में लोहियाणा का किला बनवाया. वि. सं. १५८८ में पालडी गांव के ब्राह्मणों की चौकीदारी मुआफ की. इसके समय का शिलालेख 'वाडला' नामक वेरान गांव में वि. सं. १५८९ पोस वदि ७ का लिखा हुआ है.

इसकी राणीयों के विषय में बडुआ की पुस्तक में लिखा है कि इसकी राणी सीसोदणीजी, सजनादेवी महाराज रूपसिंह (वागोर ई. मेवाड.) की पुत्री थी, जिससे कुमार ❀रायसिंह व दुदा उर्फ दुर्जनसाल के जन्म हुए.

महाराव अखेराज का देहान्त वि. सं. १५९० में होनेका सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है, परन्तु बडुआ की पुस्तक में वि. सं. १५९२ में देहान्त होनेका उल्लेख किया है.

+ दंतकथा में कहा जाता है कि वढियार परगने से हजारों गाडी अनाज महसूल का सिरोही में आता था, लेकिन उन गाडीयांवालों को रास्ते में आने जाने के समय में खुराक राज्य से देनेका दस्तुर होनेसे लम्बी मजल के कारण इतना खर्च होजाता था, कि आये हुए अनाज में से रियासत को कुछ बचत नहीं रहती थी, जिससे पीछे से सिरोही के महाराव ने वढियार परगने का महसूल छोड दिया. (वढियार परगना वर्तमान समय में राधनपुर रियासत के तरफ है.)

❀ रायसिंह का जन्म वि. सं. १५७८ के पोष वदि ९ को होनेका सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है.

नं. ११/१ मेहाजल को 'वागसीण' पट्टा की जागीर मिली थी, लेकिन बाद में मेहाजल का पुत्र राव कला ने सीसोदियों की मदद से सिरोही कब्जे किया, और पीछेसे सिरोही उसके हाथ से छूट जानेके कारण राव कला को जोधपुर रियासत से जागीर मिली, बाद में इनकी ओलाद वालों को विसलपुर आदि जागीरें प्राप्त हुई, जिससे वे लोग विसलपुर के लखावत कहलाते है. वर्तमान समय में विसलपुर के लखावतों की जागीरें जोधपुर रियासत में विद्यमान है.

प्रकरण २७ वाँ.

चन्द्रावती देवडा चौहान.

(नं. १२ महाराव रायसिंह से नं. १४ महाराव मानसिंह तक.)

नं. १२ महाराव रायसिंह (पहिले) अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. सिरोही के राजाओं में इसका नाम, इसकी उदारता, परोपकार, और वीरत्व के विषय में ज्यादह प्रसिद्धि में आया हुआ है. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि.

× × × × × ×

" राव रायसिंघ महाराजा हुवो, पछे घणां दान पुन्य किया. मेवाड रो धणीयां सुं, जोधपुर रा धणीयां सुं वडा उपगार किया. माल आसीया नुं कोड दी, तिण मांहे गांव ' खाण ' सासण कर दी छे. सुकाल दुकाल अरहट ३०० हुवे छे. पता कलहट नुं कोड दी, तिण मांहे गांव ' मोटासण ' गुजरात रै पैडे नजीक छे. वडगांव कने तिण अरहट ५० हुवे छे. "

× × × × × ×

लेकिन मेवाड के महाराणा व जोधपुर के महाराजा के उपर क्या + उपकार किया

+ महाराव रायसिंह ने क्या उपकार किया, इस विषय में कवि आसीया करमसी खीवा सूरोतर ने कहे हुए मरसियों में चौथे मरसिये में कहा है, उससे मालूम होता है कि इसने कइएक राजाओं को शरणे रख कर उनका रक्षण किया था. जिसके वास्ते कवि कहता है कि,

× × × ×

" केहीक राव रखीया भोम निगमी भ्रंमता, कहिक राव रखिया मथै खुरमाण पुळंता. "
" केहीक लोम रखीया तणे पतसाह उदाले; केहिक रंक रखीया महा रौरवै दुकाले. "
" रिण खेत पिसण केही रखीया, कन्ही काय कवि पात्र कही; अभिनमो क्रन दानेसवर रायसिंघ विवनोम कही. "(४)

× × × ×

इस कवित के प्रथम चरण का भावार्थ यह है कि कितनेक राजा जो जमीन गुमाकर भटकते हो गये थे उनका, कितनेक राजा मुसलमानों के डर से भयभित थे उनका रक्षण किया, पाया जाता है कि जब कि राणा संग्रामसिंह से बाबर बादशाह ने मेवाड ले लिया तब इसने महाराणा को आश्रय दिया था, वैसे जोधपुर के राठौर राजा मालदेव पर मुसलमानों ने आक्रमण किया तब इसने सहायता करके उसका रक्षण किया है, जिससे ही इन दोनों राजाओं के उपर बडे उपकार होनेका, मूता नेणसी ने मोघम लफ्जों में अपनी ख्यात में लिखा है, और उसी मुआफिक उपर्युक्त कवितमें भी अपनी अपनी ख्यातमें अंकित करने से उस विषय में ज्यादह खुलासा नहीं लिखा हो.

इस महाराव के विषय में मेवाड के सरसिया गांव के कवि मेहडू विहारीदान ने कहा है कि—

" तिसका (महाराव सूरताणसिंह का) बाबा (दादा) राव रायसिंघ. सो किसा जी ! पट तीस वंश छतीस नीयातः पट दामण कु दुभर वार का ग्रेहणाः तंग वखत का खजानाः चौ सरी हेला सूक्रोड. का वरीसः जिसके गुजराती पातसाहः सरण आया सौ रहायाः नव कोटी मारवाड सरण राखीः तीस बातका जीहांन साखीः "

× × × ×

इसमें कवि ने खुद मेवाड के वतनी होनेसे मेवाड के राणा को शरण रखने का अहवाल जाहिर में नहीं लाया है, परन्तु इसका कथन भी कवि आसीया करमसी के कवित से मिलता है.

उसका खुलासा नहीं लिखा है. इस विषय में उदयपुर के 'वीरविनोद' नामक हस्त लिखित पुस्तक में उपरोक्त मू. ने. की ख्यात की तहरीर के आधार सेही लिखा गया है कि "इसने (महाराव रायसिंह ने) मेवाड और मारवाड के राजाओं की फौजों में बडी बहादुरीयां दिखलाई." जिसका पढने वालों को यही आशय मालूम होता है कि यह मेवाड व मारवाड के राजाओं का मातहत था, और उनकी फौजों में लडकर इसने वीरत्व बताया था. जो कि मू. ने. की ख्यात में स्पष्ट उल्लेख किया है की दोनों राजाओं पर इसने बडा इहसान किया, परन्तु पक्षपात से 'वीर विनोद' के लेखक ने और ही लफ्जों में वह बातें अपनी पुस्तक में लिखी है.

महाराव रायसिंह के समय में कवि आसीया माला ने सिरोही के पाटवीओं की राजावली का कवित रचा है, जो मूता नेणसी की ख्यात में लिखा गया है. जिसमें इसके विषय में कवि कहता है कि—

" कोड मवाडा करे सरग आखई (अखेराज) संमतो; रायसिंघ तिणपाट अरक वेदे उगंतो. "
" किरण झाल इल हले अंत्र अवर ओहासे; सपत दाप सारीख वदन उदोत विकासे. "
" नव मेक छत्र छाया निजरन, अठारह विल कुले; यह सिंघ मतये शिवपुरी जोत विंब जिम झल हले. "
" काय भोज विकम काय रुद्र नाग अरजन, काय रामणा बलराज काय जुजे ठल अर गंजन. "
" क्रन काय हरचंद क्रंनं कंज जुग हर कहंता, काय समर दधियच काय जीवाहन जंता. "
" सूजसिंघ सही सूजसिंघ सत एह न आरख आवरां; काय वात न माने पर किणी क्रग दिध जल तो करां. "

महाराव रायसिंह के समय का वि. सं. १५९९ का आसो वदि ३ का शिलालेख आबु की तलेटी में श्री हृषिकेश के मन्दिर में विद्यमान है, उससे मालुम होता है कि उसके समय में हृषिकेश का मठ बनाया गया, जिसमें रू. २०५०० पिरोजी खर्च हुआ था.

इसकी एक राणी राठौरीज़ी भावांदे जोधपुर के राठौर राव + वाघा की पुत्री थी जिससे कुमार उदयसिंह का जन्म हुआ. दूसरी राणी झालीजी जालमदे देलवाडा (मेवाड) के झालाराज अजयसिंह की पुत्री थी.

महाराव रायसिंह ने भीनमाल कब्जे करने के वास्ते विहारी पठाण पर चढाई कर भीनमाल पर घेरा डाला, लेकिन कोट के भीतर से विहारी की सहायता में आया हुआ, एक कावा परमार ने तीर मारा, जो महाराव के बख्तर की बांई में से कांख में लगा, जिससे इसका देहान्त हुआ, और कालंद्री गांव में इसका अग्नि संस्कार किया गया, और झाली राणी कालंद्री में अपने पति के साथ सती हुई.

महाराव ने अंतकाल के समय में अपने छोटे भाई दूदा उर्फ दुर्जनसाल को अपने

+ मूता नेणसी की ख्यात में महाराव रायसिंह की राणी चंपाबाई राठौर राव गांगा की पुत्री होना अंकित हुआ है. पाया जाता है कि बडुआ की पुस्तक में गांगा के बदले वाघा नाम लिखा गया है.

पीछे गद्दी पर बैठाने का सरदारों को हुकम किया और यह उम्मेद बतलाई कि दूदा मेरे बालक पुत्र उदयसिंह की परवरिश करके बडा करेंगे. इसके अंतकाल होने पर कवि आसिया करमसिह ने ७ मरसिये कहे जिसमें कवि कहता है कि—

" जै ऊपर रोत भरोसु पर वैह वार लहंतो; जिण थूं आ उपरी फाड़ फड़ वक्र फाडंतो. "
" जिण समये सोम्रंन जेण वदरा वंधावै; जिण सोझावै हाट जेण लासा लूसावै. "
" सू नीज रस संभार सदन घणो कृपणां तणा विरांमीयो; कर सू पर कीति करमसी रायसिंघ त्रिसरामीयो " (१)
" जहां अंब फल बछ सतही नींब फल न पामसि; जहां वीणी पकवान तहां को कसरथ मानसि. "
" जहां जाय सूंजपे तहां आदर नह पायस; जहां उपायस वोहत तहां थोड़तेरो खायस. "
" औषद दांन देशो कवण नहीणा विदोखीयै; हाय हाय शरीर छूटो नही रायसिंध अपरो खियो. " (२)
" राव राय रखपाल राव रहडण रिमराहां; राव कु रूप रायह राव वेरी पतसाहां; "
" राव रोर विडार राव संसार उधारै; राव भ्रम उधरै राव ईकोतेर तारै. "
" तण जास पास नय कुल सीवे भोर आसा सही; अभी नमो क्रन दाने सवर रायसिंघ विन्नोम कही. " (३)

(चौथा मरसिया टीप्पणी में दर्ज हुआ है.)

" कुण चारण कुण चंड कवण वंभण वंभेसर; कुण जोगी कुण जती कवण रवेस दिगंबर. "
" कुण पंडित कुण पात्र कवण पंखी परदेशी; जावैं जौ तलाव दर्नाय भद निवेसो. "
" रिण हुवो सीस दुहिला रहै रू लियो नह चुकै रिणा; हिन्दवै राव विंवनै हुवै मोटो छे हो मागणां. " (५)
" कंहि कं हिम मेर डोल है कयम मजल है सायर; कहि म चंद लुकि है कहि माछे हल है देवायर. "
" कहि म विस ग्रह मंड गाट छेडे है गगल, कहिं मसपत पाताल चले जाय हुंत अण चल. "
" खड हंढे इन्द्र कालम तरै पडें रूद्र ब्रह्मा पडै, रूपक नाम रायसिंघरो ताही जरा न आमडै. " (६)
" वित सुभाग खरचीयो चीत लीणो हरपाए, जिसो वेदे वार्वायो तिसी पर सिधायै. "
" सुरा खान नही कियो सर नार नरे ता, सायला धरम साव वे परम दरगह संभतो. "
" आखंत ब्रद सुद्यार अधिक अपछर आरती करै, सुर भुवण राव प्रभु वाड मल जयजयकार उव धरै. " (७)

सि. रा. इ. की पुस्तक में इसके देहान्त का समय वि. सं. १६०० का होना लिखा है. वहुआ की पुस्तक में इसके पीछे, इसका पुत्र उदयसिंह वि. सं. १६०३ में गद्दी पर बैठने का अंकित हुआ है, परन्तु इसका छोटा भाई दूदा इसके पीछे गद्दी पर आनेका महाराव दूदा के समय के *शिलालेखों से व दूसरी ख्यात से भी पाया गया है.

नं. १२/१ महाराव दूदा उर्फ दुर्जनसाल अपने वडे भाई महाराव रायसिंह के पीछे सिरोही की गद्दी पर बैठा. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि महाराव दूदा गद्दी पर बैठा परन्तु राज वैभव का मालिक महाराव रायसिंह का बालक पुत्र उदयसिंह को समजकर

* इस पुस्तक के लेखक को महाराव दूदा के समय के जो शिलालेख मिले है उसमें रोहीडा गांव में वाटेरा की सरहद पर काला पत्थर का शिलालेख वि. सं. १६०१ आसो सुदि १२ का है उसमें सिर्फ महाराव ' दरजणसाल ' का नाम अंकित है. लेकिन वि. सं. १६०३ कातिक सुदि १९ का ताम्रपत्र जो पाडिव गांव में चंद्रगृहण पर अरहट देनेका दानपत्र के निमित्त लिखा गया है, उसमें " महाराय श्री उदिसंघजी श्री दूजणसलजी " नाम अंकित हुए हैं. तीसरा शिलालेख वि. सं. १६०८ के असाढ सुदि २ का मिला है उसमें " श्री दूदाजी रू दत्त " नाम पढा जाता है.

उदयसिंह के साथ वैसाहो वरताव रखताथा, और अपना पुत्र मानसिंह को अपने पास नहीं आने देता था. इसने वाघेला अदा (कहां का था वह नहीं लिखा.) का गांव मारा, जिसके लिये कवि कलहट पता ने इस महाराव की प्रशंसा के वहुत से कवित कहे है.

वडुआ की पुस्तक से मालूम होता है कि इसकी राणी कछवाही मानदेजी कछवाह जगराम अनंदसिंघोत की पुत्री थी, जिससे कुमार मानसिंह का जन्म हुआ.

मू. ने, ख्या. में लिखा है कि महाराव दूदा ने अपने देहान्त के समय कहा कि मेरा पुत्र मानसिंह को गद्दी नहीं देना, और महाराव रायसिंह के पुत्र उदयसिंह को गद्दी पर बैठाना,वल्कि उदयसिंह को अपने पास बुलाकर कहा कि तेरी मर्जी होवे तो मेरा पुत्र मानसिंह को लोहियाणा गांव देना, उस मुआफिक इसका देहान्त होनेपर सरदारों ने उदयसिंह को गद्दी पर बैठाया, और मानसिंह को लोहियाणा दिया.

महाराव दूदा का देहान्त किस संवत् में हुआ, उसके लिये वडुआ की पुस्तक में खुलासा नहीं है, परन्तु सि. रा. ई. को पुस्तक में जोधपुर के प्राचीन हस्त लिखित प्रति से इसका जन्म वि. सं. १५८० में होनेका लिखा है, और देहान्त वि. सं. १६१० में होनेका अंकित हुआ है.

नं. १३ महाराव उदयसिंह अपने काका के पीछे गद्दी पर बैठा. मू. ने. ख्या. में लिखा है कि महाराव उदयसिंह ने एक साल तक तो भली बूरी रीति से निभाया, परन्तु पीछेसे महाराव की दियानत में फर्क आनेसे उसने वात चलाई, कि मानसिंह ने मेरे पर 'तुका' वाह्या था, जिसपर राजपूतो ने कहा कि मानसिंह के पिता ने आप के साथ भलाई करके अपने पुत्र को गद्दी न देते आपको गद्दी पर बैठाये, और मानसिंह भी आपके हुकम में रहता है, परन्तु उदयसिंह ने कहा कि मैं उसको लोहियाणे से निकाल दुंगा, और वाकेही लोहियाणे पर फौज भेजकर निकाल दिया. मानसिंह मेवाड के महाराणा उदयसिंह के पास गया, जहां पर महाराणा ने 'वरकाण विजेवा' की जागीर अठारह गांवों के साथ दी. पीछे मानसिंह ने दो च्यार दफे शिकार में मुजरा किया जिससे महाराणा की उस पर महरबानी हुई.

उक्त ख्यात में लिखा है कि एक वर्षबाद महाराव उदयसिंह को सीतला की विमारी होनेकी खवर मानसिंह को मिली, उस समय महाराणा उदयसिंह कुंभलनेर के तरफ शिकार को आया था, लेकिन उसको इस बिमारी की खवर नहीं थी. दरमियान सिरोही से आये हुए दूसरे आदमी ने महाराव उदयसिंह की विमारी सख्त होनेको वात मानसिंह को कही. इसी विमारी में महाराव उदयसिंह गुजर गया, तव सिरोही के सरदारों ने सोचा कि महाराव को पुत्र नहीं है और मानसिंह महाराणा के पास है, अगर यह खवर महाराणा को मालूम होवे, और मानसिह को वहां ही मार कर कुंभलनेर

से आगे वढकर इस तरफ आपहुंचे, तो देवडों के घर से आबु मेवाड के राणा के हाथ में चला जायगा, जिससे सरदारों ने महाराव के देहान्त की वात दो पहर तक छिपा कर 'जयमल साहाणी' नामका मौजिज व भरोसा पात्र राजपूत को मानसिंह के पास पत्र देकर भेजा, और सब वात समजा दी, वह रवाने होजाने वाद महाराव का अग्निसंस्कार किया.

साहाणी जयमल सारी रात मुसाफरी करके पहर दिन चढते कुंभलनेर में मानसिंह के डेरे आया. उस वक्त मानसिंह महाराणा के पास दरवार में था, और चीवा सामन्तसिंह डेरे पर मिला. जयमल ने यह सब वात सामन्तसिंह को कही, और दोनों मानसिंह के पास गये, मानसिंह उनको देख कर वहार आया, और जयमल से मिला. जयमल ने आंख के इशारे सें सब वातें समजाई, जिससे मानसिंह डेरे पर आया. मानसिंह ने चीवा सामन्तसिंह को सब बात समजाकर महाराणा के आदमी बुलाने को आवे तो कहना कि मानसिंह ने दो सूअर देखे है वहां गया है, वैसा कहकर पांच सवारों के साथ वह सिरोही के तरफ रवाना हो गया, एक पहर रात होतेही उन्होंने सिरोही नजदीक वगीचे में आकर मुकाम किया, जहांपर सब सरदार मानसिंह को आमिले.

दूसरी तरफ महाराणा ने मानसिंह को बुलाने के लिये आदमी भेजा, तव सामन्त सिंह ने सूअर के पीछे गया है सो अभी आवेगा ऐसा कहलाया, सूर्यास्त होने पर फिर महाराणा ने मानसिह को याद किया, तब एक आदमी ने कहा कि दूपहर के वक्त यहां से १० कोश के फासले पर ५ घोडे सवारों के साथ मानसिह सिरोही के तरफ भाग जाता था, जिस पर महाराणा ने पुछा के तेरे को केसे मालूम हुआ? उस पर उसने जवाव दिया कि मेरे यहां सिरोही से एक आदमी आया है, उसको वह रास्ते में मिला था, वह आदमी यह भी कहता था कि महाराव उदयसिंह को सीतला निकली है, और वहुत दुःखी है.

यह वात सूनते ही महाराणा समज गया कि महाराव उदयसिंह गुजर गया, जिससे मानसिंह के डेरे से उसके राजपूत को बुलाने को आदमी भेजा. उस वक्त डेरे पर देवडा (वालिसा) जगमाल नामका मौजिज राजपूत था, वह महाराणा पास हाजिर आया, महाराणा ने पूछा कि मानसिंह इस तरह क्यों भाग गया? उसका जगमाल ने जवाव दिया कि वह जाणे. जिस पर महाराणा ने जगमाल को कहा कि सिरोही के चार परगने हमको लिख दो, यह सून कर जगमाल ने सोचा कि मैं उजर करूंगा तो, महाराणा अपनी फौज के साथ पीछा करके मानसिंह को नुकसान पहुंचावेगा, जिससे उसने अर्ज की कि मानसिह आपका (महाराणा का) चाकर है, मै क्युं उजर करूं? मुनासिव हो उतना मुलक दिवाण ले सक्ते हैं, और मानसिंह दें गे. महाराणा ने उसी वक्त ४ परगने लेने का कागज लिखाया, लेकिन वात चीत में वहुत रात्रि चली जानेसे दूसरे दिन सही मत्ता

कराने का मुलतवी रखा. दूसरे दिन प्रभात होते ही जगमाल हथियार सज्ज के राणा के पास सीख मांगने को गया. जगमाल को देखकर महाराणा ने कहा कि, जो ४ परगने देनेका कागज लिख दिया है उस पर मत्ता कर दो, जिस पर जगमाल ने जवाब दिया कि मानसिंह और सिरोही के सब सरदार वहां है, मेरा मता करने से क्या होवे? तब महाराणा ने कहा कि राजपूत ने अपना अच्छा दाव दिखलाया, उसने जगमाल को कहा कि मैं ४ परगने लेना चाहता हुं, सो तेरे साथ आदमी कर दूंगा, तुं उन परगनों में थाणे बैठा कर अलग होजाना, जगमाल ने जवाब दिया कि सिरोही के धणी आप के सगे है, चाकर है, और आप ऐसी बात क्युं करते हो! अच्छा यह है कि आप अपना एक आदमी मेरे साथ भेजदो, वह महाराव से बात करके वापस आकर जवाब देगा, जिसपर महाराणा ने अपने पुरोहित को जगमाल के साथ भेजा.

महाराव उदयसिंह के विषय में बडुआ की पुस्तक में लिखा है कि महाराव उदयसिंह वि. सं. १६०३ में गद्दी पर बैठा, और वि. सं. १६१२ में हृषिकेश के कुंड में डूब कर मर गया, जहांपर उसको राणी सवागदेवी भटीयाणी सती हुई. परन्तु सिरोही राज्य के इतिहास की पुस्तक में लिखा है कि जोधपुर में प्राचीन हस्त लिखित पंचांगों में कहीं २ ऐतिहासिक घटनाएं लिख दी जाती थी, उनमें इसका देहान्त *वि. सं. १६१९ आसो सुदि ११ को होना लिखा है, और उक्त पुस्तक के लेखक को मिली हुई सिरोही की ख्यात में इसका देहान्त वि. सं. १६२० में होनेका लिखा है. (सि. रा. ई. पृष्ट २०९ की टिप्पणी में) उक्त पुस्तक में (सि. रा. ई. में) यह भी लिखा है कि महाराव उदयसिंह को १० राणीयांथी जिसमें ÷७ राणीयां सती हुई, और उनके अतिरिक्त तीन और

* महाराव उदयसिंह के देहान्त के समय के वास्ते उपरोक्त अलग २ संवतों, अंकित होनेसे शंका उपस्थित होती है. क्यों कि महाराव दूदा का देहान्त वि. सं. १६१० में हुआ था, उससे एक वर्ष बाद महाराव उदयसिंह ने मानसिंह से लोहियाणा लेलिया, जिससे मानसिंह मेवाड के महाराणा पास गया, और उसको मेवाड में जानेको एक वर्ष होने पर महाराव उदयसिंह का सीतळा की बीमारी से देहान्त हुआ, ऐसा मुता नेणसी की ख्यात में उल्लेख हुआ है, जिससे बडुआ की पुस्तक में इसका देहान्त का समय वि. सं. १६१२ होना अंकित हुआ है, वह ज्यादह भरोसा पात्र मालूम होता है.

इस पुस्तक के लेखक को महाराव मानसिंह के समय का एक ताम्रपत्र मिला है, उससे पाया गया है कि वि. सं. १६१९ के आसो सुदि ११ (उदयसिंह की मरण तीथी अंकित हुई हे उस दिन) के पहिले महाराव मानसिंह सिरोही की गद्दी पर आ चुके थे, क्योंकि उक्त ताम्रपत्र में वि. सं. १६१९ के आसो सुदि १० की मिति दर्ज है, और "महाराए मानसिंह वचनाएतां" इस नामसे ताम्रपत्र लिखा गया है. जिसमें बाई श्री चांपबाजी ने सारणेश्वरजी में सूर्य ग्रहण के पर्व में त्रवाडी हरदास को पिन्डवारा में लोहारा पुजा गांगा वाला खेत्र देनेका उल्लेख हुआ है, इससे भी महाराव उदयसिंह का देहान्त के विषय में प्राचीन हस्तलिखित पंचांग में जो मिति लिखी है वह सही होना पाया नहीं जाता, जिससे इस बाबत का निर्णय करने का काम अपूर्ण ही रहता है.

÷ सात राणियां सती हुई जिनके नाम १ सीसोदणीजी हरकुंवर महाराणा उदयसिंह की पुत्री, २ राठौरीजी राठौर कूपा मेहराजोत की पुत्री, ३ राठौरीजी जगमालोत वीरमदेवोत की पुत्री, ४ झालीजी, ५ पुरवणीजी, ६ भटियाणीजी, ७ सरवाणीजी.

जो तीन राणीयां सती होना चाहती थी और उनको रोकी वे ये हैं. १ बीकानेरीजी महाराव कल्याणमल की पुत्री, २ सिंधलजी सिंदल सींहा की बेटी, ३ बाघेलीजी.

राणीयां भी सती होना चाहती थी, परन्तु उनको बडी मुश्किल से रोकी, इन तीन राणीयां में बीकानेर के महाराजा कल्याणमल की पुत्री राणी बीकानेरी गर्भवती थी.

नं. १४ महाराव मानसिंह के विषय में मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि महाराव उदयसिंह का देहान्त होने पर यह गद्दी पर बैठा, बाद जगमाल के साथ महाराणा उदयसिंह का पुरोहित भी सिरोही आ पहुंचा, महाराव ने उसका बहुत आदर सत्कार करके महाराणा को नजर करने के वास्ते १ हाथी व ४ घोडे पुरोहित को दिये, और पत्र लिख दिया जिसमें बहुत मनुहार के साथ लिखा कि ४ परगने की क्या बात है, सिरोही का सब मुलक दिवाण (महाराणा) का है, और मैं भी दिवाण का राजपूत हूं, महाराणा इससे खुश हो गया.

उक्त ख्यात में लिखा है कि राव मानसिंह बडा बहादुर राजा हुआ, सिरोही का तेज प्रताप इसके समय में बहुत बढा, बादशाह की फ़ौज़ के साथ इसने बहुत लडाईयां की, और सिरोही की गुजरात तरफ की सरहद पर कोली लोगों का बडा मेवासी प्रदेश था, जिनपर उस समय पहिले किसी राजा ने कब भी अमल नहीं किया था, उन पर महाराव मानसिंह ने एक दिन में २२ जगह फौज भेजी, और हर जगह पर फतह पाकर कोलीयों को निकाल कर अपने थाणे बैठा दिये, छः महिने थाणे रहने के बाद सब कोली लोग महाराव के पैरों में आकर गिरे, और जो हुक्म किया गया उसको सिर पर चढा लिया, जिससे महाराव ने खुश होकर उनको जमीन वापस की, और वहांसे अपने थाणे बुला लिये.

महाराव मानसिंह के विषय में मरहूम महाराव उदयसिंह की माता चंपाबाई कहती रही कि, मेरी वहू गर्भवती है सो उसको कल पुत्र होगा, मानसिंह क्या चीज है जो राज करता है ? जिस पर मानसिंह ने चांपाबाई को व मरहूम मराराव उदयसिंह की बिकानेरी राणी को मार डाली,. वैसा मू. ने. ख्या. में उल्लेख है.

इस विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में जोधपुर के हस्त लिखित चंडू पंचांग में लिखि हुई ऐतिहासिक घटना के आधार से लिखा है कि, यह घटना वि. सं. १६२० के चैत्र सुदि ६ को हुई. उक्त पुस्तक में यह भी लिखा है कि चंपाबाई ने महाराव मानसिंह को कहलाया कि मेरे पुत्र की राणी बीकानेरी के गर्भ है, इसलिये यदि कुंवर पैदा हुआ तो तुम गद्दी से खारिज समजे जाओगे, इसपर इसको (मानसिंह को) बहुत क्रोध चढा, और इनके तथा चंपाबाई के बीच वैर बंध गया. फिर एक दिन बोल चाल यहां तक बढ गई कि, इसने जनाने में जाकर चंपाबाई तथा बीकानेरी दोनों को मार डाला, बीकानेरी के पेट से आठ मास का गर्भ निकला जिसको भी इसने वहीं मार डाला.

बडुआ की पुस्तक में इस विषय में कुछ भी उल्लेख नहीं है, परन्तु दंत कथा में यह बात कही जाती है कि, महाराव मानसिंह की झाली राणी के साथ चंपाबाई को हमेशा बोल चाल होती रहती थी, जिसमें चंपाबाई, महाराव मानसिंह व झाली राणी को सख्त व बद कलाम के लफ्जों से गाली देती थी. महाराव ने उसको समजा ने की तजवीज करने पर सास व बहू दोनों सामने आकर गालीयां देने लगी, उन्होंने ऐसे बूरे लफज कहे कि, उससे महाराव को सख्त गुस्सा आया, और क्रोधावेश में बीकानेरी राणी को हाथ से धक्का दिया जिससे वह गिर पडी, गिरते ही उसका गर्भ पुत्र पृथ्वी पर पडा, जो तुरन्त ही मर गया. यह देख कर चंपाबाई ने दिवाल में अपना शिर फोड कर आप घात किया, यह भी कहा जाता है कि, गर्भ गलित होनेके कारण बीकानेरी राणी भी मर गई, और उसने मरते वक्त शाप दिया कि मेरा हुआ है जैसा तेरा भी होगा.

महाराव मानसिंह के विषय में किसी कविने कहा है कि–

" एकला सो ना भला, भला सो मानाराव; दीधा दुजण सल रे, सर दीली रे पाव. ".

कवि का आशय यह है कि एक आदमी से बडा काम नहीं पार पड सक्ता, जिससे अकेला होना अच्छा नहीं है, परन्तु मानराव (महाराव मानसिंह) को भला कहना चाहिये, (शाबाशी देना चाहिये) यानी दुर्जनसाल के पुत्र ने (अकेले ने) देहली के सिर पर अपना पैर रखा. यह एक दोहे में इतनी ऐतिहासिक घटनाएं आजाती है कि जिसका विस्तार से वर्णन करने में एक स्वतंत्र पुस्तक होती है. यदि इतिहास लिखने वालों ने इस दोहे की ऐतिहासिक घटना का किसी जगह इशारा नहीं किया है, परन्तु मूतानेणसी की ख्यात में निम्न वाक्यों, इस महाराव के विषय में लिखे है. यानी– नेणसी लिखता है कि.

" राव मानसिंघ दूदारो वडो दूठ ठाकुर राव हुवो. सीरोही घणौ तपीयो. पातसाही फौजां सुं घणी बेढ कीवी. " यह तीनों वाक्यों का ताल्लुक उपरोक्त दोहे से है, और उसमें अतिशयोक्ति नहीं है, क्योंकि वर्तमान समयमें इस दोहे की +घटना के परिणाम

+ इस दोहे की ऐतिहासिक घटना के विषय में जो दंत कथा प्रसिद्धि में है, उसमें कितनीक मिलावट कल्पना से करके किसी चारण ने यह प्रसंग लिखाया है जो ' राजवीर कथा ' नामक पुस्तक गुजराती भाषामें छपी है. इस घटना का सारांश यह है कि महाराव मानसिंह की एक राणी 'झाली' थी, वह उद्धत स्वभाव की होनेके कारण महाराव ने कुछ नसीहत करने से अकबर बादशाह के साथ देहली चली गई, जिस पर मानराव सिर्फ एक ' दिया ' राजपूत के साथ देहली पहुंचा, और शाही महल में प्रवेश करके झाली राणी को वापस सिरोही ले आया, और उसको जिन्दी महल की दिवाल में गडवाने की सजा दी. जो दिया राजपूत उसके साथ गया था, उसने देहली के किले में प्रवेश करने के कार्य में अपनी जान दी, जिससे महाराव ने उसके पुत्र को ' केर पाटण ' नामके गांव की जागीर न करी (राज का कर नहीं लेने की शर्त से) दी. जो वर्तमान समय में भी वह जागीर उस दिया राजपूत के वंशज के तरफ है. और सिरोही रियासत के राजपूत जागीरदारों में सिर्फ ' केर ' की जागीर उपरोक्त

रूप, दिया राजपूत के वंशज के तरफ 'केर' गांव की न करी (बगेर राजहक वाली,) जागीर विद्यमान है, और देवडे चौहान अबतक झाला राजपूतों की कन्या के साथ लग्न नहीं करते हैं.

महाराव मानसिंह ने स्वपराक्रम से सिरोही रियासत की सीमा में बहुत तरक्की की. इसके समय में कई दफे मुसलमानों ने सिरोही पर आक्रमण किये थे, परन्तु उनको सफलता न होने दी, बल्कि अकबर बादशाह खुद एक दफा फौज के साथ सिरोही पर आया था. इस महाराव के समय में सिरोही राज्य में अठारह गढ थे, जिसके लिये कवि ने कहा है कि—

"अनड सरे अरबुद[१] ज्युं सूंधो[२] जाहेर[३]; बुडथलो[४] राणेक[५] वल नांदवणो[६] निलेर.[७]"
"नांदवणो निलेर पाट सरणवो[८] पर्णाजे; धोलागर[९] पिंधंग गडा[१०] श्रीकंठ[११] गणीजे"
"चोटीलो[१२] कालेल[१३] भलो कणीयागर[१४] भालो; निखंगर[१५] नरवह वले पाड्मता[१६] वालो."
"डोढो[१७] लुकडीयो[१८] दरंग युं आखे कीरत अला; मानसिंह राव जय मंडली तो सूं अठारे गढ उजला."

वहुआ की पुस्तक में लिखा है कि इसके समय में अकबर बादशाह फकीर के लिवास में आबु पहाड +देखने को आया था, और वहां से उसको भागना पडा था.

कारण से, और 'बारी घाटे' का 'बालदा' गांव की जागीर राजकुल में मरण होवे तब अग्नि संस्कार करने की फर्ज अदायगी के कारण से सम्पूर्ण माफी में चल रही है. दूसरी हरएक जागीरों में राजहक की अमुक आनी ली जाती है.

महाराव मानसिंह ने अकेले शाही महल में प्रवेश कर बादशाह की मौजूदगी में उसको अपना सामर्थ्य बताकर झाली राणी को वापस लाई, जिसको कविने (दीधा दुजणसल रे सर दीली रे पाव.) 'देहली के सिर पर दुर्जनसाल के पुत्र ने पैर देनेका कार्य किया.' वैसा बताया है. कहा जाता है कि इसी कारण से उस समय से देवडा चौहानों ने झाला राजपूतों की कन्या से लग्न करने का मुलतवी कर रखा है.

इस दोहे की ऐतिहासिक घटना के विषय में इस पुस्तक के लेखक ने 'बलहठ बंका देवडा' नामक ऐतिहासिक उपन्यास गुजराती भाषा में रचा है जो प्रेस में छप रहा है, उसमें विस्तार से सब बातें लिखने में आई है, जिससे इस पुस्तक में ज्यादह लिखना उचित नहीं समजा गया है.

+ दंतकथा में यह बात मशहूर है कि अकबर बादशाह साधु के वेश में आबु पहाड पर आया, और अचलेश्वर महादेव के दर्शन करने के वास्ते उस मन्दिर में प्रवेश करने लगा, तब उसको रोकने के लिये, तीन गेबी आवाज हुए, जिसकी दरकार न करने से लाखों भमरे उसके पीछे लगे, और बादशाह को डंसने से भयभीत कर दिया; जिससे बादशाह वहांसे भागा, और एक महात्मा का शरणा लिया. महात्मा के आगे बादशाह ने आबुराज व अर्बुदारण्य के तीर्थ मन्दिर और साधुओं को अपवीत्र न करने की प्रतिज्ञा करने से, महात्मा ने बादशाह को भमरों के त्रास से मुक्त कराया, इस नास भाग में बादशाह का बदन छील गया, और पैर में कई कांटे लगे थे, जिससे व्याकुल होकर वह 'नखी' तलाव के किनारे पर पडा था, जहां पर इसको साधु मानकर महाराव मानसिंह के मुसाहिब वजेसिंह डुंगरावत की माता (जो नखी तलाव में तीर्थ स्नान करने को आई थी.) ने दया लाकर बादशाह के पैर में, जो कांटे लगे थे वह निकाल दिये, जिसपर बादशाह ने केतकी के पत्तेपर छीद्र करके उसको दिया, और कहा कि कभी जरूरत पडे तो यह पत्ता लेकर तुम्हारे पुत्र को अकबर बादशाह के पास भेजना. कहा जाता है कि इसी जरिये से डुंगरावत वजेसिंह, महाराव सूरताणसिंह के समय में बादशाह की हुजूर में हाजिर हो सका था.

इस विषय में सिरोही के राजपुरोहित की वही में व दूसरी हस्तलिखित प्रति में लिखा है कि—"मानसिंघ दूदावत ने सिरोही रो पाट आयो तण वार में बादशाह अकबर फकीर रे वेस श्री आबुजी आयो. तणे श्री आबुजी रा मलक में खेदो करण री तलाक घाली."

यह भी बात मशहूर है कि अकबर बादशाह जब फौज लेकर सिरोही पर आया, तब सारणेश्वरजी महादेव की वाणगंगा के जल से, बादशाह के पैर में कोढ था वह मिट गया, जिससे बादशाह ने कइ लाख रूपियों का खजाना महादेव को अर्पण करके वापस देहली को लौट गये.

दंत कथामें यह बात प्रसिद्ध है कि महाराव मानसिंह का मुसाहिब डुंगरावत वजेसिंह, प्रेमा नामक खवास के साथ जासूसी के कार्य के वास्ते शाही दरबार में गया था, वहांपर शाही इक्के के साथ प्रेमा खवास को मल्ल युद्ध करने का प्रसंग बादशाह के सामने उपस्थित हुआ, प्रेमा ने इक्के को युद्ध में मारदिया, जिससे पुछगाछ करने पर वजेसिंह को अपना नाम जाहिर करना पडा. बादशाह ने देवडे चौहानों में कलह उपस्थित कराने की गरज से, वजेसिह को कई लालचें देकर अपनी सेवा में रखना चाहा, शाही दरबार के ठाठ माठ, और उसकी सेवामें रहे हुए बडे बडे राजवी व अमीर उमराओं को देखकर, वजेसिंह के दीलमें भी राज्य प्राप्ति करने की अभीलाषा के अंकुर पैदा हुए, परन्तु प्रेमा खवास ने बादशाह की तरफ से दी जाती लालच सूनकर उसको कहा कि.

" वजेसिंह हरराज रो, मत पाली संभाळ, माथे तरणो मेलतां, थने उठी न मंगल झाळ. "
" थारी वेळे थाळ, भल वाजीयो हरराजरा; कोरे कीधो काळ, हद सामत हरराज उत. "

यह सुनते ही वजेसिंह की आशा के अंकुर दब गये, और बादशाह की लालचों का× तीरस्कार करके इजलास से चल निकला, और देहली से सिरोही को चला आया, जिससे बादशाह ने महाराव मानसिंह को अपना मातहत बनाने के वास्ते सिरोही पर कई मरतबे फौज भेजी.

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इसकी माता धारबाई ने सिरोही के पास धारावती नामक वावडी बनाई, जो बावडी धारावती के नामसे वर्तमान समय में भी स्वरूप बिलास नामक बाग में विद्यमान है.

इसके राणीयां के विषय में बडुआ की पुस्तक में ४ राणी होनेका अंकित है, और पुत्रीयो के विषय में कुछ भी खुलासा नहीं है, परन्तु सि. रा. ई. की पुस्तक में इसकी ६ राणीयां होना, और ✻दो पुत्री होना लिखा है, जिसमें बाई उंकार कुंवर का विवाह वि. सं. १६२४ में जोधपुर के महाराव चंद्रसेन के साथ हुआ था, और दूसरी का विवाह मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह का भाई जगमाल के साथ होनेका उल्लेख किया है.

× बादशाह ने वजेसिंह को सिरोही का राज व मन्सब बनाने की लालच इस शर्त पर दी थी कि, वह बादशाह की मातहती में रहकर शाही फौज की मदद से मानराव को उसके जनाने के साथ कैद करके बादशाह के आगे हाजिर करे. और डौला नौरोज की कलंकित पृथा का स्वीकार करे.

✻ महाराव मानसिंह की प्रजा के विषय में ' राजवीरकथा ' नामक गुजराती भाषा का पुस्तक में वह पुरुषार्थ म न होनेसे प्रजा उत्पत्ति के कारण, उसने किसी साधु से पुरुषाथ प्राप्ति की दवा खाई थी, वैसा लिख कर लज्जित बातें अंकित की है, परन्तु ख्यातों से उसको दो राजकुमारीयां थी, और उनके विवाह भी उसके देहान्त होने पहिले हो चूके थे, जिससे स्पष्ट मालूम होता है कि उक्त पुस्तक में गलत और बनावटी बातें इस विषय में लिखने में आई है.

इसके देहान्त के विषय में मू. ने. ख्या. में लिखा है कि महाराव मानसिंह ने अवावत सूरताण (जो उसका फौज बक्षी था.) के साथ प्रधान ÷पंचायण परमार अदावत रखता था, जिससे पंचायण को जहर दिया. पंचायण का भतीजा कला परमार भी महाराव की चाकरी में था, वह महाराव के साथ आवु पर गया था, वहां कला को धक्का दिलाया, जिससे साम को महाराव थाल जिमते थे उस मोके पर कला ने महाराव को कटारी सें चूक किया, ओर भाग गया, कटारी लगने के वाद एक पहर महाराव जिन्दे रहे. इस विषय में सि. रा. ई. में लिखा है कि यह घटना वि. सं. १६२८ में हुई और इसकी दग्ध क्रिया आवु पर अचलेश्वर कें मन्दिर के सामने हुई, जहां इसके साथ, ५ राणीयां सती हुई. इस स्थान पर महाराव की माता धारवाई ने मानेश्वर का मन्दिर वनवाया, जिसकी प्रतिष्ठा वि. सं. १६३४ में हुई, उस मन्दिर में महाराव व उसकी राणीयां की मुर्तियां स्थापित हुई है.

महाराव मानसिंह को पुत्र न होनेके कारण उसने अपने पीछे लखावत भाणसिंह रणधीरोत के पुत्र सूरताणसिंह को सिरोही की गद्दी पर विठलाने की अपने सरदारों को आज्ञा की. इस विषय में यह वात प्रसिद्ध है कि जव महाराव को चूक हुआ, तव उस जगह अवावत सूरताण ओर सवरसिंह डुंगरावत आदि सरदार मोजूद थे, उनको महाराव ने अपने देहान्त के समय कहा कि सिरोही का मालिक सूरताण होवे वैसी तजवीज करना, जिसपर अवावत सूरताण ने सवको कहा कि महाराव ने मेरे को मालिक वनाया है, यह सूनकर डुंगरावत सवरसिह ने महाराव को अर्ज किया कि, कौन से सूरताण को हम मालिक गिने? तव उसने लखावत भाण के सूरताण का नाम वताया. इस विषय में कवि संडायस पूनाने कहा है कि—

" आखीर वखत चुआंण, मान सुणायो महीपती; छे धणां सूरताण, अणवध कीजो उमरां. " ॥ १ ॥
" अवी सूरताण उठ, सवने हुकम सुणावीया; जाहर वात न झुठ, सव पर धर मोए सुंपीई " ॥ २ ॥
" ऊण पल सवरें आये, सो नृप अरज सुणावीई; कयो सूरताण कहाय, वणने में मालक वतां. ॥ ३ ॥
" जाहर क्रांति जांण, भांण तणा सूरताण है; पोरस मेर प्रमाण सो मालक थांरे मही. ॥ ४ ॥

सरदारों ने महाराव की इच्छानुसार भाणसिंह के पुत्र सूरताणसिंह को सिरोही की गद्दी पर वैठाने की तजवीज की.

÷ दंतकथा में यह वात कही जाती ह कि परमार पंचायण मरहूम महाराव उदयसिंह का प्रधान था, और उसने महाराव मानसिंह को चूक करने का षडयंत्र रचा था, लेकिन उसमें वह खुद मारा गया. यह भी कहा जाता है कि पंचायण का भतीजा कला, जोधपुर के राठौर कुमार उदयसिंह (मोटा राजा) की प्रेरणा से, चूक करने के इरादे सें ही महाराव की सेवा में उपस्थित हुआ था, और मौका मिलने से चूक किया.

नोट—महाराव मानसिंह का देहान्त आवु पर होनेका वडुआ की पुस्तक में लिखा है परन्तु संवत १६२२ अंकित किया है. दूसरी हस्तलिखित प्रति व पुरोहित की वही में भी वि. सं. १६२२ दर्ज है, परन्तु ' केर ' गांव के पास एक शिलालेख गड़ा हुआ है जिसकी तहरीर हरूफ विगडे हुए होनेसे पढने में नहीं आती है, लेकिन संवत् का अंक वि. सं. १६२७ होना पाया जाता है, जिसको वहां के लोग केर गांव, दिया राजपूत को महाराव मानसिंह ने वक्षा उसकी सरी (शिलालेख) होना वतलाते है, जिससे सि. रा. ई. की पुस्तक में इसका देहान्त वि. सं. १६२८ में होनेका अंकित हुआ है वह ज्यादह मानने योग्य है.

प्रकरण २८ वाँ.

कलू देवडा चौहान. (महाराव सूरताणसिंह.)

(महाराव सूरताणसिंह से सिरोही छूटना व पुनः प्राप्त होना.)

सिरोही रियासत की गद्दी पर आये हुए देवडा चौहान राजाओं में, महाराव सूरताण-सिंह का नाम (जिस तरह मेवाड में महाराणा प्रतापसिंह अग्र पद पर गिना गया है, उस तरह) अग्र पदे है. भाट चारणों ने व इतिहासकारों ने भी यह बहादुर, स्वाभिमानी, उदार व शरणांगत का बिरद रखने वाला, महाराव को इनसाफ दिया है. यदि कर्नल टॉड साहिब जैसे विद्वान व निष्पक्षपाती लेखक को इसका इतिहास (मेवाड के महाराणा प्रतापसिह का इतिहास लिखा गया है, उस मुआफिक.) लिखने का मौका मिल जाता, तो मुगल सलतनत के समय के इतिहास में, (पूर्वकाल म जैसी चौहान राजपूतों की कीर्ति जग प्रसिद्ध हुई है, वैसी ही) चौहानों के गौरव व नेक टेक के विषय में ज्यादह प्रकाश मालूम होता.

महाराव सूरताण, महाराणा प्रतासिंह के समकालिन था, और इसके ३९ वर्ष के राज्य अमल में, देहली में महान् अकबर बादशाह का शासन विद्यमान था. अकबर बादशाह के राजसुत्र में राजपूत राजाओं के पास तावेदारी का स्वीकार करा कर उनसे ' डौला ' (राजपूतों की कन्या का पाणी ग्रहण करना.) व ' नौरोज ' (बादशाह ने एक दिन हर माहा में ऐसा मुकरर कर रखा था, कि उस रोज किले में सब अमीर उमरा व राजा महाराजा की राणीयां सोदा खरिदने को हाजिर आवे. जिसमें सोदागरी करने वाली व सोदा खरीदने वाली सब स्त्रीयां होती थी, उस दिन में भरे जाते मेले को ' नौरोज. ' कहेते थे.) लेना, जिस पृथा को अपमान कारक व कलंकित होना राजपूत लोग मानते थे. बल्कि कवि लोग इस पृथा को ' काजल ' (नैत्रांजन) की कोटडी के रुपक से जाहिर करते थे.

अकबर बादशाह के पराक्रम से, किंवा प्रारब्ध योग से यह तीनों अपमान कारक पृथा कई एक राजपूत राजाओं ने कबूल की थी, परन्तु उस में सिरोही के देवडा चौहान व मेवाड के सिसोदिये अलिप्त होनेसे, उनको लिप्त करने के वास्ते सिर्फ अकबर बादशाह नहीं परन्तु उनकी सेवा में उपस्थित रहे हुए दूसरी कोम के राजपूतों का सतत् प्रयाश रहा था, और उसी कारण से मेवाड व सिरोही के मुलक में शाही फौज के आक्रमण होते रहते थे. अकबर बादशाह ने करीब २ (सिसोदिया व देवडा चौहान के सिवाय के)

राजपूताना के दूसरे राजाओं के पास, शाही तावेदारी का स्वीकार करा लेने वाद, सिसोदिया से चितौडगढ लेनेके वास्ते व देवडा चौहानों से आबु पहाड लेनेके लिये प्रयत्न शुरु किया. कछवाहा भगवानदास की सहायता से वि. सं. १६२४ में अकबर बादशाह ने चितौडगढ ले लिया, परन्तु महाराणा उदयसिंह ने शाही तावेदारी का स्वीकार नहीं किया. उसी मुआफिक आबु लेनेके वास्ते सिरोही के महाराव मानसिंह के समय में बादशाह ने कई दफे आक्रमण किये परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई, वैसे महाराणा प्रतापसिंह व महाराव सूरताणसिंह ने भी शाही तावेदारी का स्वीकार नहीं किया, जिससे कवि ने उक्त दोनों राजाओं की प्रशंसा में कहा है कि–

" अवर नृप पतशाह अगे, होय भ्रत जोडे हाथ. "
" नाथ उदेपुर न नम्यो, नम्यो न अरबुद नाथ. "

जो कि कविने तारिफ के वास्ते सच्ची बीना जाहिर की, लेकिन उसकी असर राजपूताना के दूसरे राजाओं के उपर और ही हुई, जिससे अपनी पंक्ति में लानेके वास्ते जितना प्रयत्न बादशाह ने किया उससे ज्यादह प्रयत्न शाही सेवा में उपस्थित रहे राजाओं ने करके, यह दोनों रियासत के राजाओं को एक दिन भी अपनी शमशेर स्यान करने न दी.

अकबर नामा लिखने वाला अबुलफजल ने पक्षपात से बादशाह की बडाई और शाही तावेदारी न स्वीकारने वालों की घृणा करने का प्रयत्न अपनी लिखी हुई ख्यात में किया है. उसने सिरोही के महाराव पर फतह पाने का, सिरोही में शाही सूबा वि. सं. १६३३ से १६३८ तक रहने का, और एक दफे सिरोही का 'राव सूरताण' को बादशाह के पास पेश करने का, अहवाल पक्षपात से अपनी ख्यात में लिखा है, परन्तु सिरोही के किसी महाराव ने (महारव सूरताणसिंह और उसके पीछे भी.) मुगल बादशाह की तावेदारी स्वीकार करने का, या सिरोही के महाराव ने राजपूताना के दूसरे राजाओं के (जिसमें मेवाड के महाराणाओं भी शामिल है, क्योंकि महाराणा अमरसिंह ने शाही चाकरी कबूल करके अहेदनामा कर लिया था.) मुआफिक शाही चाकरी स्वीकार करने का, या अहेदनामा करने का किंवा खिराज देनेका अहवाल किसी मुसलमान ख्यात नविश ने भी नहीं लिखा है.

वस्तुतः काजल से भरी हुई कोटडी का दाग कवि लोगो ने 'डौला व नौरोज' की कलंकित पृथा के वास्ते ही कहा है, उससे 'चौहान राजपूत' बेदाग रहने पाए जिसके लिये कवि मोघम कहता है कि—

" काजल हंदी कुपली, दली सलताणां; सबको कलंक लग गयो बना चहुआणा. "

कवि दूसरे दोहे में 'डौला-नौरोज' का स्पष्ट उल्लेख करके कहता है कि—

"+धन चहुआणां धियडी, धन चहुआणी नार; असपत रे आंगले, सज न गई शणगार."

चौहानों की कन्या को धन्य वाद है कि बेगम बनने से वे बची, यानी चौहान राजपूतों ने बादशाह को डौला नहीं दिया. और चौहानों की राणीओं को भी धन्य वाद है कि उनको शणगार सज के बादशाह के पास जाना नहीं पडा, यानी 'नौरोज' में नहीं गई.

ऐसी २ कटाक्षें व ताना बाजी की कविता से दूसरे राजपूतों भी चौहानों का द्वेश ज्यादह करने लगे, लेकिन उसमें कभी चौहानों ने सफलता न होने दी, जिसमें सिरोही के महाराव सूरताणसिंह ने शाही सेवा, व डौला, नौरोज, यह तीनों बातों का अस्वीकार करने से, उस पर बादशाह की फौज के बावन दफे हमले हुए. जिसके वास्ते कवि दधवाडिया खेमराज ने अपने कवित के एक चरण में कहा है कि—

× × × × × ×

"एका वन वरस जीव्यो अनाड, जीतो नीज बावन महाराढ."

× × × × × ×

महाराव सूरताणसिंह व मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह की गद्दी नशिनी के समय में सिर्फ कुछ महिने का अन्तर है, दोनों राजाओं के गद्दी नशिनी के समय पर ही अपने भायातों में वैर भाव होने के संयोग उपस्थित हुए थे, लेकिन महाराणा प्रतापसिंह गद्दी पर बैठा तब उसकी उम्र ३३ वर्ष की थी, जब महाराव सूरताणसिंह बारह वर्ष के बालक पन में सिरोही की गद्दी पर बैठा था, जिससे वह पुख्त उम्र में आया, वहांतक में राज्य तृष्णा के लोभ वाले भायात सरदारों ने उसकी बाल्यवस्था का लाभ लेकर अनेक आफते खडी की, बल्कि उसकी सोलह वर्ष की उम्र होने पहिले उसको सिरोही छौडने का व पुनः प्राप्त करने का प्रसंग उपस्थित हुआ, जिसमें सिरोही रियासत के चार परगनें हमेश के वास्ते जालोर के तरफ चले गये, इतना ही नहीं परन्तु इसकी भलमनसाई, उदारता, वचन पालन राजनिती, और बाल्यवस्था का गेरव्याजबी लाभ लेकर, बिकानेर के महाराजा रायसिंह ने मित्र भाव बताकर छल से इससे आधा राज्य लिखा लिया था, जिससे इसको अपनी जिन्दगी खूली तलवार से व्यतित करना पडा.

हकीकत में 'चितौडगढ' राजपूताना व मालवे के केन्द्र स्थान होनेसे उसको सर करने की जितनी जरुरत बादशाह को थी, उसी मुआफिक आबु पहाड राजपूताना व गुजरात का केन्द्र होनेसे, और दूसरे पहाडों के मुकाबले में आबु की गौरवता

+ कविने उपर्युक्त दोह सब चौहान राजाओं के वास्ते कहे है, जो कि बूंदी के हाडा चौहान शाही सेवा में उपस्थित हुए थे, परन्तु ऐसी अपमान कारक पृथा से मुक्त रखने की खास शर्तें बादशाह ने मंजूर करने बाद उन्हों ने शाही सेवा में रहना मंजूर किया था. बूंदी के हाडा राव सुर्जन व भोजराज ने की हुई शर्तों के विषय में इस पुस्तक के पृष्ठ ७२ की टीप्पणी व पृष्ठ ७३ में सविस्तर अहवाल अंकित किया गया है.

ज्यादह होनेके कारण अकबर बदशाह ने आबु पहाड सर करने के वास्ते अथाग श्रम उठाया था, परन्तु सफलता नहीं होनेसे रातदिन उसके हृदय में आबु का राजा खटकता था, इसी कारण सिरोही के महाराव ने अपने मुलक की ज्यादह दरकार न करते आबु पहाड संभाल ने की खास जरुरत समजी थी.

महाराव मानसिंह का अकाल देहान्त होनेसे उसके मुसाहिब वजेसिंह व बक्षी सूरताण अबावत को राज्य का मुकुट धारण करने की अभिलाषा पैदा हुई, और जब कि महाराव के नजदीकी भाई 'कला मेहाजलोत' का नाम जाहिर न होते, 'सूरताण' का नाम जाहिर हुआ, तब अबावत सूरताण की लोलुप्ता बढ गई, परन्तु उसमें निष्फलता मिलने से, वह महाराव सूरताणसिंह का विरोधी बन गया. उसी मुआफिक डुंगरावत वजेसिह को अगले प्रकरण में लिखे मुआफिक शाही दरबार में दिखलाई हुई लालचों से राज्य लोभ के अंकुर पैदा हो चूके थे, और बाल राजा के समय का लाभ लेना चाहता था. महाराव सूरताणसिंह ने उसको अपना मुसाहिब रखने से राज्याधिकार की लगाम उसके हाथ में थी, जिससे उसको कुछ सबर थी, परन्तु बाल राजा को देवडे सरदारों ने उसके काका सूजा रणधिरोत के संरक्षण में रखने से लखावत सूजा सब काम देखने लगा, जिससे डुंगरावत वजेसिंह के स्वतंत्र व स्वच्छंदी राज्यकारोबार में बाधा पडने लगी.

मू. ने. ख्या. में इस विषय में लिखा है कि देवडा विजा (वजेसिंह) धणीधोरी बनकर राज्य कारोबार चलाता था, और उसके कहने मुआफिक महाराव चलता था, परन्तु महाराव के काका सूजा रणधीरोत के पास अच्छे २ राजपूत व घोडे हानेसे विजा उसकी इर्षा करने लगा, दरमियान मरहूम महाराव मानसिह की बाहडमेरी राणी को +पुत्र का जन्म हुआ, जिससे विजा ने सोचा कि महाराव सूरताणसिंह को हटाकर बाहडमेरी के पुत्र को गद्दी पर बैठा दूं तो मेरी उम्मेद बर आवेगी, परन्तु जबतक लखावत सूजा विद्यमान होवे वहांतक महाराव को गद्दी से हटाने का मौका नहीं होनेसे, उसने लखावत सूजा को चूक करके मारने के लिये अपने आदमीयों से कहा, लेकिन सब ने इसको कहा कि सिरोही का धणी सूरताणसिंह हो चूका है, तुम महाराव के काका को मत मारो, परन्तु विजा ने किसी का कहा नहीं माना, और अपने चचेरे भाई देवडा रावत सेखावत के पास लखावत सूजा को (जो उस समय जगमाल बालीसा के डेरे पर था.) चूक कराया, उधर विजा खूद लखावत सूजा का डेरा लूट ने को गया, जहां लखावत गोविन्ददास मौजूद था, उसने इसका सामना किया जिसमें गोविन्ददास काम आया.

+ मरहूम महाराव मानसिंह की बाहडमेरी राणी गर्भवती थी, उसको देवडा वजेसिंह ने बागला क्रूर (शायद महाराव सूरताणसिंह मार देगा ऐसा भय बता कर.) बहाडमेर (उसके पीहर) भेज दी थी, जहां पर उसको पुत्र का जन्म हुआ.

देवडा विजा ने वाहडमेरी राणी को अपने पुत्र के साथ बुलाई थी, वे जब सिरोही के नजदीक आने की खबर मिली तब विजा उनकी पेशवाई करने को कालंद्री गया, जाते वक्त उसने अपने भरोसा वाले दो राजपूतों (जिसमें एक डुंगरावत व दूसरा चोवावत सरदार थे.) को सूरताणसिंह को नजरबंध रखने की आज्ञा की. महाराव सूरताणसिंह ने सोचा कि अब विजा वापस आकर मुजको चूक करेगा, जिससे उसने डुंगरावत राजपूत को समजाया कि तू मेरे को यहां से बाहिर निकाल दे, यदि में मेवाड या जोधपुर के राजा के पास जाकर रहूंगा तो भी मुजे रू. २००००) की जागीर तो जरूर देंगे, और मैं तुजको पालुंगा, बल्कि उस बात का सारणेश्वरजी को बीच में रख कर बचन कथन किया, और शिकार के बहाने से महाराव बहार निकल गये, चोवा राजपूत को इस बात का भेद मालूम नहीं था, जब कि दो कोश निकल गये तब चोवा राजपूत ने डुंगरावत से कहा कि मैं कुछ जानता नहीं हुं इसको मत जाने दो, जिस पर डुंगरावत ने जवाब दिया कि, तू सीधा २ आ जा नहीं तो तुजे मार दुंगा, तब चोवा राजपूत झक मारकर चूप रहा, और महाराव *' रामसिण ' चले गये.

देवडा वजेसिंह सामैया करने को गया, वहां वाहडमेरी राणी ने अपना बालक पुत्र को वजेसिंह के खोले में रखा, लेकिन उस बालक को कुछ बलाए होनेसे अचानक मर गया. सिरोही में आने बाद महाराव चले जानेकी खबर मिलने पर, वजेसिंह ने लखावत सूजा की जागीर के गांव पर फौज भेजी, जिसमें सूजा का एक पुत्र मालदेव काम आया, सूजा की राणी ने अपने दूसरे पुत्र पृथ्वीराज व श्यामदास को एक कुए जैसे खड्डे में छिपा रखे, वजेसिंह की फौज गांव को लूट कर चली गई, बाद रात्री के समय में सूजा की राणी अपने पुत्रों को लेकर आबु पहाड के गोड में गई. सूरताणसिंह ने रामसिण जाकर सूजा के परिवार को गाडियां भेज कर माल असवाव के साथ रामसिण बुला लिये.

वाहडमेरी राणी का पुत्र गुजर जानेसे देवडा सबरसिंह को वजेसिंह ने कहा कि मेरे को गद्दी पर बैठा दो, जिस पर उसने जवाब दिया कि, महाराव लखा की ओलाद के इस समय बीस डीढ मौजूद है, जब तक एक दो वर्ष का भी बालक उनकी ओलाद में मौजूद हो, वहां तक तेरी क्या मजाल है कि तू सिरोही की गद्दी पर बैठ सके, जिससे इन दोनों के बीच में विरोध हुआ, और देवडा सबरसिंह नाखुश होकर वहां से चला गया, लेकिन वजेसिंह अपने मते से सिरोही का मालिक बन बैठा.

दूसरी तरफ अबावत सूरताण जो महाराव सूरताणसिंह को गद्दी पर बैठाने से

* रामसिण के ठाकुर कावा परमार केशवदास सिरोही रियासत का एक नमकहलाल सामन्त था, केशवदास की विधवा बहिन (जो महाराव सूरताणसिंह के बडे भाई शार्दुलसिंह की पत्नि थी.) कावीजी रामसिण में रहती थी, जिससे महाराव रामसिण गये.

नाखुश हुआ था, उसने चीवा खेमराज से मिल कर लखावत कला मेहाजलोत को सिरोही की गद्दी पर बैठाने का उद्योग शुरू किया था, जिसके लिये कवि संडायस पुना ने कहा है कि—

× × × ×

" अवीये करे उपाय चांवो खेमो साथ ले; कीजे जेज न काय कलांहु मालक करां. " ॥ ५ ॥

× × × ×

वजेसिंह को सिरोही का मालिक बना हुआ देखकर, चीवा खेमराज जो उसका विरोधी था, उसने इस मौके पर लखावत कला मेहाजलोत को मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह (जो लखावत कला का सगा होता था.) की सहायता लेकर सिरोही कब्जे करने को कहा.

वस्तुतः लखावत कला मेहाजलोत महाराव सूरताणसिंह के मुकावले में नजदीक का हकदार वारिस था, परन्तु महाराव मानसिंह ने अपने मुंह से सूरताणसिंह को सिरोही का राजा जाहिर करने से वह चूप बैठा था, लेकिन जबकि महाराव सूरताणसिंह सिरोही छोड कर रामसिण चले गये, और देवडा वजेसिंह सिरोही दवा कर बैठ गया, तव सिरोही की गद्दी पर लखावत कला का हक होनेसे, मेवाड के महाराणा ने फौज की सहायता दी. इस विषय में मू. ने. ख्या. में लिखा है कि देवडा विजा ४ महिने से सिरोही का राज्य भोग रहा है यह वात मेवाड के राणा ने सूनी, तव राव कला जो महाराणा का भांजा होता था, उसको टीका देकर फौज के साथ सिरोही विदा किया. राव कला सिरोही आतेही देवडा विजा भाग कर इडर चला गया, और राव कला सिरोही का मालिक हुआ, लेकिन उसका सव दारमदार चीवा खेमराज भारमलोत पर था. राव कला के पास वाद में देवडा सवरसिंह व देवडा हरराज (देवडा वजेसिंह का पिता) हाजिर हुए, और कहा जाता है कि महाराव सूरताण ने भी आकर, कला को जुहार किया जिससे कईएक गांव जागीर में दिये, वहां रहकर सूरताणसिंह चाकरी भी करते थे.

उक्त ख्यातमें यह भी लिखा है कि एक दिन राव कला दरबार में से उठकर चला गया, और देवडा सवरसिंह, सूरसिंह (सवरसिंह का भाई) व हरराज गालिचे पर बैठे थे, तब चीवा पाता (चीवा खेमराज का भाई.) ने फरास को कहा कि गालिचा ले आ, लेकिन ठाकुर लोगों को उस पर बैठे हुए देख कर समाचार विदीत किया, उस पर फरास को गाली देकर चीवा पाता ने कहा कि जा गालिचा ले आ, जिससे पुनः गालिचे के पास आया, फरास को वार २ आकर गालिचा के तरफ नजर डालता देख कर, सरदारों ने पूछा कि क्या चीवा पाता गालिचा मंगाता है, तव फरास ने कहा कि आप सव वात समजते हो, यह सूनतेही वे लोग उठे और कहा कि परमेश्वर करेगा

तो राव कला की जाजम पर नहीं बैठेंगे, इतना कहकर रीस करके वहां से चले गये. इस विषय में कवि संडायस पुना ने अपने कवित में कहा है कि—

× × × ×

" पातल राण प्रमाण कलारी मदतज करण, जाहर सगपण जाण सेना भेजी सामटी. " ॥ ६ ॥
" डुंगर दरबारां ए पण शीवपुर आवीया, वुई जाजम वारां ए डुंगर सव उठीया. " ॥ ७ ॥
" उण पल डुंगर उठ आप घरां दस आविया; जुध कर भडसां जुट कला सुं भारत करां. " ॥ ८ ॥

× × × ×

डुंगरावत सरदार चले जाने वाद राव कला ने क्या तजवीज की इस विषय में मू. ने. ख्या. में कोई उल्लेख नहीं हुआ है परन्तु कवि पुना ने अपनी कविता में कहा है कि—

× × × ×

" डुगरां पर देसोत कलारा आया कटक; उगां भांण उद्योत विध विध खागां वाजियां. " ॥ ९ ॥
" आंपां वातां उच उण मुख सुं जद उचरी; मुंह पर राखां मूछ सज फोजां लोहां चढां. " ॥१०॥
" मही पर रहसो माण ए वाता रहसी अमर; तप धारी सरताण अणरो तप लडसो अवस. " ॥११॥
" के लड थल लंकाल लुहर भालां ले रहां; कालंद्री भारत कले डेरा दोए फोजां दिया. " ॥१२॥
" सूरे खाग सवाए सवरे भाग सात्रवां; मगरारां धर मांए कला रा वलीया कटक. " ॥१३॥
" आप अखा गढ आवे सूरो पोरसीयो सवर; दोखीयां देसां दाव अरवद वर करां आपरां. " ॥१४॥
" छे धणी सरताण सूरे ने कहियो सवर; दल भांजां दईवाण कला सुं भारत करां. " ॥१५॥

× × × ×

मू. ने. ख्या. में लिखा है कि डुंगरावतों ने महाराव सूरताण को समाचार भेजा कि आप हमारे साथ होजाओ, जिस पर महाराव सूरताण उनको आमिला. डुंगरावतों ने इकठ्ठे होकर, महाराव सूरताण को टीका किया, और देवडा विजा जो 'इडर' के राजा की चाकरी में था उसको बुला लिया. इस विषय में कवि पुना ने अपनी कविता में कहा है कि—

× × × ×

" फोजां फरमांणा सूरे लखीयो सोढने; थर आवु थाणां, दोय हां छावा देवडा. " ॥१६॥
" राज तणा रजपूत सव दी करसां चाकरी; राखां परीयां रीत सज फोजां लोढां चढां. " ॥१७॥
" पहेला पामेरा भला हता जद भांण रे; मोहरे था मारे समप्या कले सोढ ने. " ॥१८॥
" खरोज साथ खंदार पायल खल लीधां प्रसण; आप होए असवार डेरा पामेरे दीया. " ॥१९॥
" पामेरे अणपार कर आया डुंगर कटक; मोटां मगरां मांहे पाखरणो कियो पवंग. " ॥२०॥
" डुगरां रा दल देख सोढ पवंग चलावीया; उचल गीया अनेक कलारो भागो कटक. " ॥२१॥
" खुव कही हथ नाल धुकारव माती धनंक; चोरंग वांधे चाल सूरो ने लडीया सवर. " ॥२२॥
" चढीयां घोडो सोढ सूरो ने लेगा सवर; गाजे आवु गोड कला सुं भारथ कियो. " ॥२३॥
" आप अखागढ आंण सोढ तिलक दीधो सही; पृथो लई खगपांण अरवद गढ कियो आपरो. " ॥२४॥
" अण वध करे उपाय दोए वध रा कागद दिया; जो इडर धर जाय वेगा पहोंचावो वजा. " ॥२५॥
" कागद कासिदे वेग दिया वजपाल ने; लंठाई धर ले अखागढ कियो आपरो. " ॥२६॥

× × × ×

मू. ने. ख्या. में लिखा है कि देवडा विजा ने इडर से रवाना होकर 'रोह, सरोतरे' आकर मुकाम किया, तब वह खवर चीवा पाता ने राव कला को पहुंचाई, जिसपर राव कला ने देवडा रावत हामावत (भूली गांव का देवडा हामा रतनावत जिसको महाराव

मानसिंह ने मारा था, जिसका पुत्र रावतसिंह था) को ५०० सवार देकर, देवडा विजा के सामने घाटा (तोडा का दरवजा) के नाकेपर भेजा, परन्तु रावत हामावत ने जब मालगांव में आकर मुकाम किया, तब देवडा विजा घाटे के नाके से बाहिर आ चूका था. वजेसिंह पास १५० सवार थे, वरमांण गांव से एक कोश के फासले पर दोनों फौजों का मुकाबला हुआ, जिसमें देवडा विजा की जीत हुई, और राव कला की फौज के ४० आदमी काम आए, ६० आदमी जख्मी हुए, और रावत हामावत सख्त जख्मी होकर गिरा. देवडा विजा के १३ आदमी काम आए, और वह रामसिण में महाराव सूरताणसिंह को जा मिला. इस विषय में कवि संडायस पुना ने इस लडाई का सवीस्तर वर्णन अपनी कविता में किया है, उससे पाया जाता है कि जीरावल गांव की कांकण पर यह युद्ध हुआ था, और चीवा खेमराज भी देवडा रावत हामावत की सहायता में आ पहुंचा था. कवि इसके वर्णन में कहता है कि—

× × × ×

" वचन सुणे वजपाल उससीयां लागो अमर; भारथ भीम भजाल देखो दखीयो देवडो. " ॥२७॥
" घणा साथ गमसांण दल मेले फोजां डमर; पोरस मेर परमांण वर दायक चढीयो वजो. " ॥२८॥
" वीरमदेरी वार इडर रा ले उमरा; सोढ अंग भीड सनाह पाखरीया खडीया पवंग. " ॥२९॥
" उडे खेह अपार खरीयाव भालांखवे; भोयंग न झेले भार वच फोजां सोभे वजो. " ॥३०॥
" ओ पंचायण एक अरवद री धर आवीयो; उडे गांम अनेक भाग गीया सोढ भाखरां. " ॥३१॥
" रावत कहीयो राव सोढ सुर मालक सही; तारां ज्युं तरसाव दन कर उगां देखीयो. " ॥३२॥
" राखे जतने राव खीमो ने रावत खडे; दोखीयां देसां दाव कांकल जीरावल करां. " ॥३३॥
" वजा तणा सुण वेण कलोज चढीयो जोर कर; तहां वजमल खग तोल विध विध खागां वाजीयो. " ॥३४॥
" कांकल जो करणा सुण खेमा रावत सपह; वजमल सुं लढणा भारथ में बाथां भरे. " ॥३५॥
" आडी फोजां एक, खेमो ने रावत खडे; ते खत्रवत री टेक, वरदायक राखी वजा. " ॥३६॥
" उडे सोर अपार, हथ नालां की हुबके; भुज है खत्रवट भार, वेरीयां पर झुके वजो. " ॥३७॥
" धपव्यां भालां ध्रीव, जीके सत्र कै झोकीया; हथ नालां पड हीव, गोले दोणा गुडावीया. " ॥३८॥
" राड करे रजपूत, वढवा उभो वीर वर; दोखीयां पर जम दूत, वीच फोजां दीसे वजो. " ॥३९॥
" करे कईक झटके, क्रुते अने कटारीए; कला तणे कटके, दसमो ग्रह वजमल दीपे " ॥४०॥
" धढचे खग धारां, वच फोजां जीतो वजो; पोरस अणपारां, वजमल अरी वखंडणो. " ॥४१॥
" वढतां थे वजपाल, छोवो खीमो साजीओ; वेरज लीधो वाल, पडीयो रावत पागती. " ॥४२॥
" हद कीधी हथवाह, वाह केहतां वाहीई; अणवध करे उपाह, गडथल खाए रावत गीयो. " ॥४३॥
" जोए जोए सूरा जात, क्षत्री केईक साजीया; वजा कलारी वात, च्यार जुगां रे' सी सदा. " ॥४४॥
" जुध जीते जमराण, वरदायक चढीयो वजो; घण घोडां गमसांण, चढ सूरो आया सवर. " ॥४५॥
" भारथ फोजां भंज, कांकल जीरावल करे; गडपत मोटा गज, वड कुसले आयो वजो. " ॥४६॥
" लंगर फोजां लार अखागढ आयो अनड; ते झाली तरवार, कलाह्रु भारत करण. " ॥४७॥
" आयो पारेवो ऊंट भलहथ सोना भारीयो; लाखों मालज लूट, सारंग दीधो सोढ ने. " ॥४८॥

× × × ×

वजेसिंह ने आकर महाराव सूरताण को मुजरा किया, और घोडा नजर करके अपने कसूर की मुआफि मांगी. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि देवडा विजा

आमिलने से राव सूरताण ज्यादह बलवान हुए. विजा देवडा पहिले से बंदोबस्त करके आगे बढने वाला राजपूत था, उसने महाराव को कहा कि जालोर के मलिकखान को सहायता लेना चाहीये, जिस पर मलिकखान के पास आदमी भेज कर कहलाया कि हम एक लक्ष रूपिये सहायता करने के एवज में देवेंगे, लेकिन उसने जुवाब दिया कि लक्ष रूपिये के वास्ते भाई बन्धु नहीं मराये जावे, सिरोही रियासत के सियाणा, वडगांव, लोहियाणा व डोडियालो यह चार परगने दे दो, तो मैं सहायता करने को तय्यार हुं. इस बात पर सलाह मसलत की गई तब विजा ने कहा कि खान अपने सिर के वदले में परगने मांग रहा है, खुशी से दे दो, जिससे चार परगने खान को सुपुर्द किये गये, और वह १५०० सवारों के साथ सहायता करने को आया.

राव कला ने ४००० फौज के साथ सिरोही से कूच की और कालंद्री के नजदीक मुकाम करके मोरचे बंदी की. महाराव सूरताण के पास ३००० सैनिक थे. राव कला की तरफ से कालंद्री में युद्ध की तय्यारी करने का हाल सून कर, महाराव सूरताणसिंह ने उसके सामने वहां जाने का इरादा किया, परन्तु उसके पास डुंगरावत सवरसिंह, सूरसिंह व वजेसिंह आदि बडे चतुर और दीर्घ दृष्टि राजपूत थे, उन्होंने कहा कि अपने को कालंद्री से क्या मतलब है ? सीधे सिरोही पर जायंगे, यदि राव कला को लडना होगा तो आकर लडेगा, जिस पर फौज के तीन हिस्से करके सिरोही तरफ महाराव की फौज ने कूच किया, जब कि कालंद्री से एक कोश के अन्तर पर वे पहुंचे तब राव कला रोकने के वास्ते आया, जिससे वहां ही युद्ध हुआ, और राव कला की हार हुई. इस युद्ध में विहारीओं ने (जालोर के खान की फौज ने.) वहुत अच्छा काम दिया. राव सूरताणसिंह की फौज में दस बीस आदमी काम आये, जिसमें मुख्य डुंगरावत सूरसिंह नरसिंहोत था, वह बडी वीरता से युद्ध कर काम आया. राव कला की तरफ के चीवा पाता, सीसोदिया मुकुन्ददास, सीसोदिया श्यामदास, सीसोदिया दलपत, यह चार मुख सरदार मारे गये, और राव कला भाग गया, महाराव सूरताणसिंह ने सिरोही पहुंच कर अपना कब्जा कर लिया.

इस विषय में कवि संडायस पुना की कविता से पाया जाता ह कि, यह लडाई में देवडा रावत हामावत और चीवा खेमराज भी काम आये थे, जो डुंगरावत सूरसिंह के हाथ से मारे गये थे. वडुआ की पुस्तक में भी चीवा खेमराज इस युद्ध में मारा जाना लिखा है. उक्त कविता में लिखा है कि यह युद्ध 'वराल व कालंद्री' गांव की सीमा पर हुआ, और राव कला भाग निकला. इस युद्ध में डुंगरावत सूरसिंह ने और सवरसिंह, वजेसिंह, आदि सरदारों ने जो वीरत्व दिखाया उसका कवि ने वर्णन किया है, कहा जाता है कि सूरताणसिंह के विषय में इस युद्ध के प्रसंग तक का इतिहास कवि पुना ने

७४ सोरठे में रच कर सूनाने से महाराव सूरताणसिंह ने कवि को एक गांव वक्षा, जो 'पुनावा' गांव के नामसे वर्तमान समय में उसकी ओलाद वालों के तरफ विद्यमान है. कालंद्री की लडाई के विषय में कवि ने कहा हैं कि—

× × ×

" भाई कर भेला कर डुंगर चढीया कटक; अरीयां उथेला कला सु भारथ करां. " ॥४९॥
" कटकां कुच करे वरदायक चढीयो वजो; फोजां वेंट फरे चढ सूरो आया सवर. " ॥५०॥
" पत्रंगज पाखरीया जोधां रे भीडे जरद; उपर ग्वड आया चढ वजमल सुरो सवर. " ॥५१॥
" सोह वीजली चलाव हाली हीमाला हुंती; तड आणीया तलाव तारू ज्युं सूरो तवां. " ॥५२॥
" जांणे वगला जाए दंतु सल ऊजल दीपे; महारे फोजां माए सिंधुर दीसे सांमठा. " ॥५३॥
" कर कांठल काली वच फोजां हाथी वे है; वा पलवट वाली, गीमर सुरे गुडावीया. " ॥५४॥
" पाडे पाखरीया गीमर कई एक गुडावीया; पाएल के पडीया धड वेडे कीधा ढगे. " ॥५५॥
" एकण कोर कनेक, हेकण कोर हरराजरो; ते क्षत्रवट री टेक, वरदायक राखी वजा. " ॥५६॥
" लुणो वाहे लोह, धडछे सत्र खागां धनो; जुध में मांनो जोह, वेरीयां दल भाजे वजे. " ॥५७॥
" मोटा मींगल मार, गीमर कई कीधा गरद; ते वाही तरवार, चढ दंतु सल सुरीया. " ॥५८॥
" रावसुं मचीया राड, वाहल कालंद्री वने; आयो खाग ऊपाड, सुर धनंजेय सारखो. " ॥५९॥
" पेद्दल हेय दल पाड, कर कांकल मछवे कला; मात्रव चाती चाड, धडचे सत्र कीधा ढगे. " ॥६०॥
" कटके कीया के वांण, सुरो वाहे चापडे; वेरी करे वखांण; कर भारथ राखी कथा. " ॥६१॥
" मार पडे रण मांए, फरडे कालज फोफरा; माटो अरी मलाए, सुरे मछव्यो सीफलो. " ॥६२॥
" ऊडे सोर अपार, हथ नालां की हुव के; मेवाडां दलमार, काले नर दलीया कटक. " ॥६३॥
" फोजां न पडे फेर, कर कांकल भागो कलो; मंडीयो सुरो मेर, वाहल कालंद्री वचे. " ॥६४॥
" उकलीया आरांण, गणवा जे भाजे गणा; मसण पडै खंग पांण, धमचक माचवीयो धरा. " ॥६५॥
" ऊभो दये उजेल सूरो वागज चापडे; मेवाडा जुध मेल, घाएल होए नाटा गणा. " ॥६६॥
" तंडल तरवारे, भ्रड वेहडे कीधा ढगे; मोह वडीया मारे, काले नीटवीया कटक. " ॥६७॥
" मारे +मेवाडा, कण कण दल फोजां कीया; पुरा पवाडा, कला सुं सूरे कीया. " ॥६८॥
" रणवट कर रटका, दोखी भगाया डुंगरे; वे वे कर वटका, फोजां रा दल फेरीया. " ॥६९॥
" छीवो खीमो साज, पाचटीयो रावत मसण; वेरीयों सांमो वाज, काले रामायण कीयो. " ॥७०॥
" पहेलो खेमो पाड पछेज रावत पाडीयो; रंग हो जीतो राड, पछेज सूरो पोढीयो. " ॥७१॥
" अपछर लुण ऊनार, गई सुरग ले गावती; धुरजटी सरधार, माला संकर रे महीं. " ॥७२॥
" नरसिंघोत न हार, सुरो पहुंच्यो सरग ने; सवलां वाए सार, कर भारथ राखी कथा. " ॥७३॥
" सुरे दीधी सोढ ने, सिरोही सव दीह; कहेतो जेसो थे कीयो, जस वोले कव जीह. " ॥७४॥

कवित छप्पय.

" वढे वीर विराध, जुध जीतो जेताई; खीमो पाडे रणखेत, वढे रावत वरदाई. "
" वढे डुंगर वजपाल, करे भारथ कालंधरा; मेवाडा दल मार, कण कण इम फोजां करी. "
" कलारा भांगे कटक, वड हत इम वरदावरी; सांम भ्रम लडे सूरो सवर, सोढ समापी सीवपुरी "

+ राव कला के साथ महाराव सूरताणसिंह का कालंद्री के पास युद्ध हुआ इस विषय में दंतकथा में कहा जाता है कि— जब कि महाराव सूरताणसिंह वख्तर टोप सज कर समरांगण में उपस्थित हुआ, और राव कला की फौज के पैर उखड ने लगे तब (सिवाय चीवावतों के) दूसरे सब सिरोही के सरदार जो कला की सहायता में थे, उन्होंने किनारा लिया, और राव कला भाग गया, लेकिन सीसोदियों को युद्ध में से पीछे पैर देनेमें लज्जा आनेसे वे अपने देहान्त तक लडते रहे, जिससे सिसोदियों की बहुत फौज इस युद्ध में मारी गई.

" कालंधरी जुध करे, स खर खीमो सकोडे; कलो भाज काढीयो, चोहस इम खाग वहोडे. "
" सुरे सवरे वजे कीया भारत सु पांणे; उथाहीयो अरवद. रेस खग दोवो सु रांणे. "
" नवड भड ग्रह मोटे नरे, कलह नांम चंदो कीयो, सोढ ने घणा दिन सरणए अवचल सूं थपीयो. "

यह लडाई वि. सं. १६३१ में होना पाया जाता है, क्यों कि डुंगरावत सूरसिंह वि. सं. १६३१ में काम आनेका उल्लेख उसके स्मारक की वनी हुई छत्री के लेख में किया गया है. महाराव सूरताणसिंह ने पुनः सिरोही कब्जे करने वाद राव कला के जनाने वाले जो सिरोही में विद्यमान थे, उनको वडी इज्जत व हिफाजत के साथ कला के पास पहुचा दिये, और चीवा खेमराज के तरफ कालंद्री पट्टे की जागीर थी वह डुंगरावत सूरसिंह के पुत्र सामन्तसिंह को दी, जो अवतक उनके वंशजों के तरफ है. महाराव सूरताणसिंह के हाथ से कौन संवत में सिरोही छूट गया, और कौन संवत् में पुनः कब्जा किया, उसका स्पष्ट खुलासा किसी ख्यात में नहीं है, परन्तु उसके समय के कितनेक ताम्रपत्र व शिलालेख (जो इस पुस्तक के लेखक को) मिले है, उनसे मालूम हुआ है कि वि. सं. १६२९ के आसो सुदि १३ के दिन उसने 'देरोल' नामका गांव देनेका ताम्रपत्र कर दिया है, और वि. सं. १६३२ के श्रावण वदि १३ के रोज 'कांटी' नामका गांव देनेका शिलालेख से पाया जाता है, जिससे अनुमान होता है कि इस दरमियान के समय में यह घटनाएं हुई है. वडुआ की पुस्तक में विसलपुर के लखावतों की ख्यात में उल्लेख है कि, वि. सं. १६३० में राव कला ने महाराणा की सहायता से सिरोही पर कब्जा किया था, और सूरसिंह डुंगरावत का काम आनेका संवत् १६३१ मालूम हुआ है, जिससे भी पाया जाता है कि वि. सं. १६३१ में महाराव सूरताणसिंह ने पुनः सिरोही कब्जे किया है.

प्रकरण २९ वाँ.

चलू देवडा चौहान. (महाराव सूरताणसिंह.)

(महाराव सूरताणसिंह के समय में वि. सं. १६३१ से १६४० तक की ऐतिहासिक घटनाएं.)

महाराव सूरताणसिंह ने पुनः सिरोही कब्जे किया तब उसकी उम्र पंद्रह साल की थी. यदि उसने बालकपन से ही× युद्ध की तालीम पाईथी, और डुंगरावत सरदारों के साथ अग्रणी होकर पामेरा की लडाई में और कालंद्री के युद्ध में भाग लिया था, परन्तु पुख्त वय न होनेसे राजकारोबार का बोजा उठाने का उसमें चाहिये जैसा सामर्थ्य न होनेसे, राजतंत्र निभाने के वास्ते पुनः देवडा बजेसिंह को अपना मुसाहिब बनाया. इस महाराव ने पुनः सिरोही में आने बाद (वि. सं. १६३१ से) वि. सं. १६४० में दताणी की लडाई हुई, उस दरमियान का अहवाल मूतानेणसी की ख्यात से व गीत कवितों से उपलब्ध होता है, परन्तु उसमें किस समय में वे ऐतिहासिक घटनाएं हुई उनके संवत् किसी जगह अंकित होना पाया नहीं गया है. सिरोही राज्य का इतिहास नामक पुस्तक में मुसलमानी तवारिख पर से हाल अंकित हुआ है, उसमें और ही बातें दर्ज है, और

× दंतकथा में कहा जाता है कि महाराव सूरताणसिंह बालकपन से ही तीर चलाने में इतना कुशल था कि जब कि वह १० साल की उम्र में था, तब अच्छे तीरंदाज का तीर जितने दूर जाता था उससे ज्यादह फासले पर इसका तीर पहुंचता था. यह कुशलता उसने अपने पिता भाण रणधीरोत से तालीम पाकर हासिल की थी. इसका पिता 'सुत्रपाणेश्वर' (जो वर्तमान समय में सूरताणेश्वर नाम से प्रसिद्ध स्थान है. यह स्थान 'नादीआ' गांव के पास 'लोटाणा' नामक गांव के पहाड में विद्यमान है.) महादेव का परम भक्त था, और 'भजनी भाण' के नामसे मशहूर था. भाण रणधीरोत की वृद्धावस्था में सूरताणसिंह का जन्म होनेसे भजनी भाण के बदले बालवय का सूरताण चाकरी में उपस्थित रहता था. कहा जाता है कि महाराव मानसिंह के समय में अकबर बादशाह खुद सिरोही पर चढाई लाया, तब सूरताण भाणवत के तीर से वह जख्मी हुआ था. जिसके लिये कवि ने कहा है कि—

" पर्वत जतो प्रमाण, नख जतरो अंजस नहीं; त्रां सहजा सूरतान, विंधो भाण नरंद वत. "

कवि कहता है कि मुकाबला किया जाय तो एक तरफ बडा पहाड, (यानी बादशाह) और दूसरी तरफ नख का प्रमाण (यानी बालक सूरताण.) तब भी हे, भाण नरेन्द्र का पुत्र तेने सहज में सुलतान को विंध डाला.

सूरताणसिंह के बल पराक्रम से महाराव मानसिंह अच्छी तरह वाकिफगार था, जिससे उसने अपने पीछे उसको सिरोही के मालिक बनाना योग्य समजा, बल्कि उसने अपने देहान्त के समय डुंगरावत सवरसिंह के पूछने पर सूरताणसिंह के बल पराक्रम के विषय में ईशारा किया था कि जिसकी मर्दानगी मेरू के समान जाहिर में आ चूकी है, वह भाण का सूरताण तुम्हारा मालिक है. जिसके वास्ते कवि पुना ने महाराव के लफ्ज खास कर अपनी कविता में अंकित किये है, यानी सवरसिंह ने पूछा कि कौन से सूरताण को हम मालिक माने, जिसके जुवाब में महाराव कहते है कि—

" जाहर क्रांती जाण, भाण तणा सूरताण है; पोरस मेर प्रमाण, सो मालक थांरे सही. "

उन बातों के संवत् भी दर्ज किये है, वैसे 'रासमाला' नामक पुस्तक में भी मुसलमानी तवारिख के आधार से संवत् के साथ कुछ हाल लिखा गया है. उन सब के सारांश यह है कि-

१ वि. सं. १६३२ में राजा टोडरमल (अकबर बादशाह का मुसाहिब.) गुजरात में आया तब, सिरोही के राजा ने रू. ५००) नकद व एकसौ मुहरें की खिराज दी. (रा. मा. पृ. ६५०).

२ वि. सं. १६३३ में अकबर बादशाह ने सिरोही पर फौज भेजी, जिसमें तरसुखां, बीकानेर के राव रायसिंह और सय्यद हासम को फौज के साथ भेजे गये, लेकिन महाराव सूरताण ने उनसे मुलाकात करली, जिससे वे वापस चले गये. (सि. रा. ई. पृ. २३७).

३ उसी समय (वि. सं. १६३३) में अकबर बादशाह मेवाड में राणा प्रतापसिंह से लडाई कर रहाथा, जब बादशाह बांसवाडे पहुंचा तब खबर मिली के राव सूरताण ने फिर फसाद शुरू किया है, उस पर बादशाह ने बीकानेर के रायसिंह व सय्यद हासम को फिर सिरोही पर भेजे, सूरताण किले में बैठकर उनका सामना करने लगा, शाही फौजने कई बार किले पर हमले किये, लेकिन हरवक्त हारकर लौटना पडा, इस तरह लडकर किला फतह करने की उम्मेद निष्फल जाने से वे किले को घेर कर पडे रहे. (सि. रा. ई. पृ. २३७).

४ इन्हीं दिनों में बीकानेर के राव रायसिंह का जनाना बीकानेर से आता हुआ सिरोही की हद में पहुंचा, जिसकी खबर पाकर महाराव सूरताण उसको लूटने के लिये गया, लेकिन वह रायसिंह के राजपूतों से हार कर आबु पर चला गया. रायसिंह किले पर अधिकार कर आबु पर जापहुंचा, राव सूरताण ने सुलह करना चाहा और राव रायसिंह से मिलकर उसके साथ बादशाह के पास चला गया, और सय्यद हासम हाकिम के तौर पर सिरोही में रहा. (सि. रा. ई. पृ. २३७)

५ वि. सं. १६३८ में राव सूरताण के बडे बेटे ने कुछ फौज इकट्ठी कर सय्यद हासम को मार डाला, और राव सूरताण भी अपने बेटे से जा मिला, इस पर बादशाह ने राणा प्रतापसिंह के भाई जगमाल को सिरोही का राज देकर, ऐतमादखां जालोरी को लिखा कि सिरोही का राज सूरताण से छीन कर जगमाल को दिला देना, जगमाल जालोर आया, जहांसे ऐतमादखां को साथ ले सिरोही पर गया, सूरताण ने उसका मुकाबला किया, लेकिन हार कर पहाडो में जाना पडा, जगमाल सिरोही पर काबिज हो गया, फिर राव मालदेव राठौर के पोते रायसिंह, विजा देवडा और बहुत सी फौज जगमाल की मदद के लिये छोड कर ऐतमादखां जालोर चला गया. (सि. रा. ई. पृ. २३८).

६ वि. सं. १६४० में जालोर वालों ने कुछ फसाद किया, जिसको मिटाने के लिये देवडा विजा तो जालोर गया, और सूरताण जो घात में लगा हुआ था, पोशिदा रास्ते से अपने महलों में चला आया. उस वक्त जगमाल और रायसिंह को, जो सोये हुए थे, घेर लिये तो उन दोनों ने सामना किया, परन्तु दोनों मारे गये. (सि. रा. ई. पृ. २३८)

उपर्युक्त वातों से यह पाया जाता है कि वि. सं. १६३३ में महाराव सूरताण से सिरोही का राज छूट गया था, और उस समय से वि. सं. १६३८ तक सय्यद हासम वादशाह के तरफ से वतौर हाकिम सिरोही में रहा था, और वि. सं. १६४० में सीसोदिया जगमाल व राठौर रायसिंह सिरोही के महलों में मारे गये थे. सिरोही राज्य के इतिहास के लेखक ने यह वातें पक्षपात से अकवर नामे में लिखि जानेका कारण वताकर उल्लेख किया है, तदुपरांत महाराव सूरताणसिंह ने दिये हुए दान के वहुत से ताम्रपत्र व शिलालेख विद्यमान है, जिसमें वि. सं. १६२९-१६३२-१६३४-१६३७-१६३८-१६३९ व १६४० के संवतों में अलग २ गांवों में भूमिदान करने के प्रमाण मिल रहे हैं, जिससे वि. सं. १६३३ से १६३८ तक सिरोही राज्य का कब्जा महाराव सूरताणसिंह का नहीं होते शाही हाकिम के तरफ रहने का अकवर नामा में लिखा गया है वह गलत होना पाया जाता है. उसी मुआफिक महाराव सूरताणसिंह के वडे वेटे ने वि. सं. १६३८ में सय्यद हासम को मार डालने की वात भी वीन पायेदार है, क्यों कि उस समय में खुद महाराव की उम्र २२ वर्ष की थी. अकवर नामे में यह भी लिखा है कि वि. सं. १६२८ में अकवर वादशाह के सरदार खान कलां जो गुजरात के तरफ जा रहा था, उसको सिरोही के कोई राजपूत ने ×सख्त जख्मी कर दिया, उसका वदला लेनेके वास्ते शाही फौज सिरोही पर गई, राव (सूरताण) सिरोही छोड कर पहाडों में चला गया, और १५० राजपूतों ने सिरोही में शाही फौज का सामना किया, और वे सव लडकर मारे गये, लेकिन वि. सं. १६२८ व वि. सं. १६३८ में सिरोही में कौन राजा था, उसका नाम भी दर्ज नहीं है. अनुमान होता है कि वि. सं. १६२८ की घटना महाराव मानसिंह के समय में हुई थी, और वि. सं. १६३८ में सय्यद हासम को महाराव के वडे पुत्र ने नहीं परन्तु खुद महाराव सूरताणसिंह ने मार डाला होगा.

महाराव सूरताणसिंह ने वि. सं. १६३३ में अकवर नामे में लिखे मुआफिक शाही फौज सिरोही के किले पर घेरा डाल कर पडी हुई थी, उस मौके पर वीकानेर के महाराजा रायसिंह के जनाने को लूटने का प्रयत्न किया था, यह वात भी मानने योग्य नहीं है, क्यों कि जव कि फौज घेरा डाल कर पडी थी, तो उसका घेरे में से चला जाना ही मुश्किल था, दोयम-वीकानेर के रायसिंह के साथ उसका रिश्ता था, सोयम

× दंतकथा में महाराव मानसिंह के समय में खुद अकवर वादशाह सिरोही पर आया था, और सूरताण के तीरसे जख्मी होनेका कहा जाता है.

महाराव सूरताणसिंह ऐसी प्रकृति के राजा नहीं था कि जनानी सर्दारों की मर्यादा का पालन नहीं करते, उसको तकलिफ देनेका इरादा करे, बल्कि मू. ने. की ख्यात में लिखा है कि बीकानेर के महाराजा सौराष्ट्र में जाते थे, तब सिरोही के पास होकर निकलने से महाराव सूरताणसिंह ने उनका उत्तम प्रकार से आतिथ्य किया था. सब से बडी बात यह है कि अकबर नामे में लिखे मुआफिक सिरोही का राज्य बादशाह के कब्जे में हो गया होता तो, शाही कब्जे से आबु पहाड सहल से पुनः महाराव के कब्जे में नहीं आने पाता. वगैरह कारणों से स्पष्ट पाया जाता है कि महाराव सूरताण के समय में सिरोही राज्य पर शाही फौज के बार बार हमले होने पर भी सफलता न मिलने से, सिर्फ बडाई दिखलाने के खातिर ऐसी बनावटी बातें लिखी गई है. इसी मुआफिक सिसोदिया जगमाल व राठौर रायसिंह चन्द्रसेनोत को सिरोही के महलों में मारे जानेकी बात भी गलत है, क्यों कि वे दोनों दूसरे कइएक सरदारों के साथ 'दताणी' में मारे जानेका अहवाल दूसरी हरएक ख्यातों से व गीत कवितों से भी मालूम होता है.

सिरोही राज्य के बडुआ की पुस्तक और दूसरे कवियों के गीत कवितों से मालूम होता है कि, महाराव सूरताणसिंह ने राव रायसिंह चंद्रसेनोत को व मेवाड के महाराणा को आपत्ति काल में आश्रय देकर बहुत नामवरी पाई है, इस विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में (पृष्ट २४३ पर.) लिखा है कि "ये बडे ही मिलनसार थे, और राजपूताना के कई राजाओं के साथ इनकी मैत्री थी. जोधपुर के महाराव चंद्रसेन को बादशाह ने मारवाड से निकाल दिया उस वक्त दो वर्ष तक वे सिरोही राज्य में रहे, उस समय इन्हों ने उनका बहुत कुछ सन्मान किया, और जब वे डुंगरपुर वांसवाडे की तरफ गये, उस समय अपनी माता तथा राणीयां को सिरोही छोड गये थे." मेवाड के महाराणा के विषय में उक्त पुस्तक में इतना ही लिखा है कि "महाराणा के साथ इनका स्नेह वैसाही बना रहा, जब उक्त महाराणा की विद्यमानता में उनके कुंवर अमरसिंह की पुत्री केसर कुंवर का सम्बन्ध महाराव सूरताण से होता देख, उनके भाई सगर ने उनसे निवेदन किया कि, अपने भाई जगमाल को सूरताण ने ही मारा है, इस लिये सिरोही वालों से तो वैर लेना चाहिये, परन्तु उक्त महाराणाने इनके साथ के स्नेह के कारण सगर के निवेदन पर कुछ भी ध्यान न दिया, जिससे उसने अप्रसन्न होकर कहा कि मुजे सीख दो, इस पर महाराणा ने यही उत्तर दिया कि तुम चाहो तो भले ही चले जाओ, परन्तु नामवरी तो जब जाने कि हमारे घराने के नामसे +देहली जाकर

+ महाराणा प्रताप का भाई सगर बादशाह के पास देहली चला गया था, उसके कारण के विषय में मूता नेणसी ने सीसोदिया की ख्यात में लिखा है कि—जगमाल सगर का सगा भाई था. सगर का ख्याल था कि राव सूरताण ने जगमाल को मारा है तब भी दिवान (महाराणा) उनकी तरफदारी कर रहे हैं, लेकिन राणा अमरसिंह राव सूरताण के पास जगमाल का वैर मांगेंगे, परन्तु महाराणा ने राव सुरताण को ओलभा भी नहीं देते, उसके साथ फिर भी स्नेह रखा, और राव सूरताण को अपनी पुत्री बिहाई. इस बातसे सागर को बहुत बूरा लगा और बादशाह के पास आया, उसने मेवाड की कुल हकीकत बादशाह जहांगीर को

मुसलमानों की सेवा में पेट न भरो, इस प्रकार अपने भाई से विगाड करके भी उक्त महाराणा ने अपनी पौत्री का विवाह अपने समान गुणशील वाले इन महाराव से करही दिया."

महाराणा प्रतासिंह के साथ सिरोही के महाराव सूरताणसिंह का स्नेह क्यों हुआ? और महाराणा के भाई सगर के कथन की दरकार न करते, महाराणा ने महाराव सूरताणसिह से ज्यादह पक्षपात क्यों रखा? इसके वास्ते सिरोही राज्य के इतिहास के लेखक ने व दूसरे ख्यात नविशों ने अपनी ख्यातों में कुछ खुलासा नहीं किया है, परन्तु सिरोही के वडुआ की पुस्तक में महाराव सूरताणसिह के समय में ही रचे हुए दो कवितों की नुंद हुई है, उससे मालूम होता है कि जवकि महाराणा प्रतापसिंह से उदयपुर भी वादशाह ने छीन लिया तव वे कुंभलमेर आये, और वहां से भी शाही फौज के आक्रमण से भागना पडा. यानो जव कि महाराणा प्रतापसिंह ने हताश होकर मेवाड भूमि का त्याग करके सिध के तरफ प्रयाण किया, तव महाराव सूरताणसिंह ने उसको आश्रय देकर 'सूंधा पहाड' में रखा, (जिसके वास्ते टॉड राजस्थान के पुस्तक में उल्लेख किया है कि 'अरवली के शिखर पर से उतरकर महाराणा मरूभूमी की सीमा पर आये.') और उनकी हर तरह की हिफाजत रख कर किसी तरह की उणप न आने दी. जिसके वास्ते कवि ने उक्त कवितों में कहा है कि.

" मरहट मरहटां कूल कुमेलनेर आवे राण सरखा; खाकी पहेर खाक, तुरत नाठा मूण तरकां."
" दाखे वालिया दिवाण, दशा राण कै दशा दोडो; लखावत देखे लंकाल, शरण आयो चितोडो."
" राखीयो शरण राणा जतन, चंद सूरज कर साखीयो; पृथीपत वाहदर हता पता, दर्ला जोधाणां जश दाखीयो."

भावार्थ यह है कि युद्ध में देहान्त पर ही जो हटते थे, वैसे महाराणा के वहादुर सैनिक सव काम आजाने से राणा कुंभलमेर आया, परन्तु वहांपर भी मुसलमान सैन्य आपहुंचने का समाचार सूनकर सीसोदिये भाग निकले, उस समय में महाराणा ने दुःखी होकर कहा है कि, अव कौन दिशा में अपन जा सक्के हैं? उसको उस समय में लंका के रावण जैसा वहादुर व हठिला लखावत सूरताणसिंह पाया गया,

---

जाहिर का सहल रास्ता दिखाया, जिससे बादशाह जहांगीर ने सगर को राणा की पदवी देकर चितौड के साथ मेवाड का सव राज देदिया, तदउपरांत नागोर, अजमेर और दूसरे कईएक परगने दिये, सगर ने १९ वर्ष चितौड में राज किया. वि. सं. १६७१ में महाराणा अमरसिंह ने शाहजादा खुर्रम से मिलकर १००० घोडे से शाही चाकरी करना कबुल किया, तव जहांगीर बादशाह ने मेवाड का राज महाराणा अमरसिंह को दिया, और सगर को 'रावत' की पदवी देकर पूर्व में जागीर दी.

टोड राजस्थान की पुस्तक में इस विषय में लिखा है कि—सगर ने खूद पश्चाताप करके अपने भतीजे महाराणा अमरसिंह को बुलाकर अपनी तरफ से ही मेवाड का राज सुंप दिया, और आप वानप्रस्थ होकर 'कंधार' नामक पहाड पर विश्रांती लेने लगा, परन्तु वहां पर उसको शान्ती नहीं मिली, कुछ समय वाद बादशाह की आज्ञा से वह देहली गया, जहां पर वादशाह ने उसका वहुत तिरस्कार किया, जिससे आम दरबार में उसने अपने हाथ से कटार खा कर, बादशाह के समक्ष अपना प्राण छोडा.

जिससे चितौड के महाराणा उसके शरण आया. महाराव सूरताणसिंह ने दुश्मनों से रक्षण कर वफादार रहने की प्रतिज्ञा सूर्य और चंद्र की साक्षी से की, और बहुत जतन के साथ महाराणा को रखा. जो कि उस समय में दूसरे बहुत से बहादुर व प्रतापी राजा विद्यमान थे, परन्तु सूरताणसिंह का यश देहली दरबार के सब योद्धाओं पर प्रकाशित हुआ.

दूसरा कवित जो आढा दुरशा ने कहा है जिसमें राठौर रायसिंह व राणा को महाराव सूरताणसिंह ने शरणे रखने का उल्लेख है, उसमें कवि कहता है कि—

" सूरताण कियो खुमाण सहायण, सुजस लखावत होव सवाये; राय शरणे रायसिंह राखियो,
राणोई शरणे राखीयो राये. "
" उपर माल अंबर उलटिया, हुवे पत बेलां हरण, अन शरणे गांगा उगरिया, सांगा उगरिया सोह तके शरण. "
" उगारता वर्णा राव आबु आ, हरको न करत अखाहर, घर घर हुत गंगेव तणो घर, घर घर हुत हमीर घर. "
" बेहु साथेवां धणां रालों दोऊ, वाले थरा वहुयो बंक; सबला अनड बेहु तणे सिर, आबु अनड तिहारो अंक. "

भावार्थ यह है कि—सूरताण ने खुमाण यानी महाराणा को सहायता करने से महाराव लखा के वंशज लखावतों का सुजश हुआ. जिस राव ने राव चंद्रसेन के पुत्र राव रायसिंह को शरणे रखा था, और उसी राव ने महाराणा को जबकि आमेर के कछवाहा मानसिंह पीछे पडे, जिससे पत जानेका वक्त आया, तब उनको आश्रय दिया. महाराव सूरताणसिंह के आश्रय से ही जोधपुर के महाराव राठौर गांगा की औलाद वाले का बचाव हुआ, और सांगा यानी महाराणा संग्रामसिंह के वंशज भी सोढ यानी सूरताणसिंह के आश्रय में आनेसे बच गये. अगर अखाहर यानी महाराव अखेराज उडणा के पोते अरबुद के राव ने इनको बचाने के वास्ते प्रयत्न न किया होता तो गंगेव का परिवार यानी राठौर गांगा के वंशज, और हमीर का परिवार यानी मेवाड के महाराणा हमीरसिंह के वंशज, घरघर भटकते यानी छीन्न भीन्न हो गये होते, परन्तु उनकी अच्छीतरह साहेबी यानी ठकुराई कायम रहकर पुनः राज्य प्राप्ति होकर आफत से (वे) मुक्त हुए. ऐसे दो समर्थ राजाओं के शिर पर (हे) अरबुद नरेश तेरा हाथ रहा.

उपर्युक्त कवितों से पाया जाता है कि महाराणा प्रतापसिंह का महाराव सूरताणसिंह के उपर ज्यादह स्नेह होनेका कारण यही था कि, महाराव ने उसको निराधार वन जानेके समय में आश्रय देकर उसका बचाव किया था, और अपने भाई जगमाल को महाराव ने मार देने पर भी उसका वैर न लेते, किये हुए उपकार की किंमत व कदर महाराणा के नजदीक इतनी समजी जाती थी कि, उसने अपने भाई सगर के कथन की परवाह न की, और स्नेह में वृद्धी करने के वास्ते अपनी पौती का, महाराव सूरताणसिंह के साथ विवाह किया.

मूता नेणसी की ख्यात में महाराव सूरताणसिंह व सीसोदिया जगमाल के दरमियान विग्रह होनेके विषय में लिखा है कि, राव कला से महाराव सूरताण ने सिरोही ले लिया, लेकिन राज काज का सब दारमदार देवडा विजा पर था, और देवडा विजा दिन व दिन ज्यादह वलवान होता जाता था, जिससे महाराव बहुत नाखुश थे परन्तु देवडा विजा को पहुंच नहीं सके थे, उन दिनों में सूरताणसिंह का ×विवाह वाहडमेर हुआ. जवकि वाहडमेरी राणी सिरोही आई, तव देवडा विजा का ठाठ व रीत भात देखकर उसने महाराव से पूछा कि मालिक आप हैं या विजा ? महाराव ने जुवाव दिया कि मेरे पास ऐसे राजपूत नहीं है कि वे विजा से सामना करें, जिसपर वाहडमेरी राणी ने कहा कि पेटपूर खाना दो गे तो वहुत राजपूत मिलेंगे. महाराव ने इसपर से १० आदमी बुलाने का राणी को कहा, जिसपर उसने अपने पीहर से २० वहादुर राजपूत बुलाकर महाराव के पास रखे. जव महाराव की हालत औरों को अच्छी मालूम हुई तव दूसरे और भी अच्छे २ राजपूत उसकी सेवामें उपस्थित हुए. महाराव और देवडा विजा के दरमियान शिर सट्टे की नोवत आपहुंची, उस मौके पर देवडा विजा के भाई देवडा लूणा व माना जो वहादुर राजपूत थे, वे भी देवडा विजा से विरूद्ध होकर महाराव के पक्ष में आये, इस तरह महाराव का पक्ष मजवूत होनेसे देवडा विजा को सिरोही से निकाल दिया.

देवडा विजा अपनी जागीर के गांव में रहता था, उन दिनों में वीकानेर के महाराजा रायसिंह सौराष्ट्र तरफ जा रहे थे, जव वह सिरोही के पास आया, तव महाराव सूरताण-सिंह उससे मिले. महाराजा ने महाराव का वहुत आदर सन्मान किया, पीछेसे देवडा विजा भी वहुत आदमीओं के साथ रायसिंह को मिला, उसने वहुतसी लालच दिखलाई लेकिन उनका स्वीकार नहीं किया. महाराजा रायसिंह ने महाराव से वातचीत करके सिरोही का आधा राज वादशाह का और आधा राज महाराव को रहेवे इस शर्त पर देवडा विजा को निकाल देनेका ठहराव किया, और उसको निकाल दिया.

× दंतकथा में कहा जाता है कि 'वाहडमेर' के रावल ने अपनी एक कन्या कि सगाई महाराव से व दूसरी की देवडा वजेसिंह के साथ की थी. और उसमें छोटी कन्या जो वहुत रूपवान थी उसका लग्न महाराव से करनेका था. वजेसिंह को यह मालूम होने पर उसने रावल की दासीओं को फोड कर जब कि कन्या को 'चवरी' में लाई गई, तव छोटी कन्या को वजेसिंह के तरफ रखवा दी. जव कि महाराव विवाह करके सिरोही आये, तव महाराव के साथ विहाई हुई (वडी पुत्री) कन्याने महाराव को कहा कि मेरे प्रारब्ध में आपकी राणी होना विधिने अंकित किया था सो हो गई, परन्तु आप के मुसाहिव ने ऐसा प्रपंच किया है.

वस्तुतः वाहडमेर रावल की वडी पुत्री वहुत चतुर व वीर वाला थी, उसकी युक्ति व सहायता से देवडा वजेसिंह को मुसाहिव पद से हटाया गया. यह कहा जाता है कि जब देवडा वजेसिंह अपनी जागीर के गांव 'वावली' में रहने लगा तव उसको अपने जान की सलामती का खतरा मालुम हुआ, जिससे उसने अपनी ठकुराणी (वाहडमेरी) को उसकी वहिन (राणी वहाडमेरी) के पास भेज कर अपना सौभाग्य अखंड रखने की मांगणी कराई. उदार महाराव ने उसको वचन दिया कि जब तक वजेसिंह मेरी नजर के सामने शस्त्र ग्रहण करके उपस्थित न होगा वहां तक तुम्हारा सौभाग्य मेरे हाथसे खंडित नहीं होगा. इस वचन के आधार से वजेसिंह ने वहुत फायदा उठाया था.

महाराजा रायसिंह ने आधा राज की संभाल के वास्ते मदनसिंह पातावत को ५०० सवार देकर सिरोही में रखा, जब वह सौराष्ट्र से वापिस बादशाह के पास गये तब अर्ज की कि, सिरोही के मालिक राव सूरताणसिंह को उसके सरदार विजा ने दबाया था, सो राव मेरे से मिला और आधा राज देना कबूल करने से मैंने राव का पक्ष लेकर विजा हरराजोत को निकाल दिया है, वैसे वह आधा राज शहेनशाहत में खालसा कर उसकी संभाल के वास्ते ५०० सवारों के साथ मैं अपना आदमी वहां छोड आया हुं, सो मुनासिब हो वैसा बन्दोबस्त किया जाय. जिसपर बादशाह के वजीर, बक्षी आदि सिरोही के आधे राज को क्या तजवीज करना वह सोच रहे थे, दरमियान मेवाड के मरहूम महाराणा उदयसिंह का पुत्र जगमाल जो सिरोही के मरहूम महाराव मानसिंह का जवाई होता था, और शाही सेना में उपस्थित था, उसने सिरोही का आधा राज मिलने की अर्ज की, जो बात उन्होंने अकबर बादशाह को जाहिर करने पर बादशाह ने मंजूर कर फरमान लिख दिया. देवडा विजा भी सिरोही का आधा राज प्राप्त करने के वास्ते बादशाह के पास पहुंचा था, लेकिन सफलता न हुई, जिससे वह भी सीसोदिया जगमाल के साथ सिरोही आया. महाराव ने सीसोदिया जगमाल का सन्मान कर के उसको आधा राज दे दिया.

महाराव सूरताणसिंह महल में रहता था, और सीसोदिया जगमाल दूसरे घर में रहताथा, जिससे जगमाल की राणीने कहा कि मेरे पिता के महल में मेरी मौजूदगी में दूसरे क्यों रहवे ? उस समय में महाराव कुछ दिनों के वास्ते बहार गये थे, जिससे मौका पाकर सीसोदिया जगमाल व डुंगरावत वजेसिंह ने महल पर हमला किया, लेकिन सोलंकी सांगा व कवि आसीया दूदा आदि जो महल में थे उन्हों ने सामना किया, जिससे लज्जित होकर उनको सिरोही छोडकर बादशाह के पास जाना पडा. बादशाह ने जगमाल की सहायता में राव रायसिंह चंद्रसेनोत (जोधपुर के राजा चंद्रसेन का पुत्र.) व दांतीवाडा के कोलीसिंह को मुसलमानी फौज की मदद देकर सिरोही पर भेजे. राव रायसिंह फौज के साथ सिरोही आया तब महाराव सूरताणसिंह सिरोही छोड कर पहाड में चले गये, जगमाल ने महल का कब्जा किया. कुछ दिन बाद जगमाल ने सोचा की, शहर (सिरोही) तो लेलिया लेकिन अब चढाई करके महाराव सूरताण-सिंह से आबु की तलेटी भी छुडाना चाहिये, जिससे जगमाल ने चढाई की, महाराव ने भी उसके सामने दो कोश के फासले पर अपना मुकाम किया.

सीसोदिया जगमाल से महाराव सूरताणसिंह का विरोध होनेका कारण व उस कारण से पीछेसे जो शाही फौज के साथ युद्ध का प्रसंग उपस्थित हुआ, उसकी ऐति-हासिक घटना के विषय में प्रख्यात कवि÷ आढा दुरशा ने अपनी नजर से देखा हुआ,

÷ कवि आढा दुरशा जोधपुर रियासत के पांचेटिया नामक गांव में हुआ था. उसका जन्म वि. सं. १५९२ में हुआ, वह

अहवाल गीत कवितों में रचा है, जिसमें " राव सूरताण के झुलणे " मुख्य है. उनमें उपरोक्त घटना के विषय में कवि कहता है कि.

महाराव सूरताणसिंह के झुलणे कवि आढा दुरशा कृत.

" श्याम गुणेश प्रसन्न हुय, सब्ब सुर अगवाणां; शूंडा दूंड प्रचंड में मुद वृद्ध घराणां. " ॥१॥
" मेरु दसण लंबो उदर फरसी धर पांणां; वंद वें आस वरणवू जीण कि धर पांणां. " ॥२॥
" हंसा वाहन शुभ धरणो पुत्री ब्रह्माणां, शारद मात सुमत दे सूरताण वखाणां. " ॥३॥
" रूप चहूं ठकुराईयां वायक चहुवाणां; कथ वरणु हूं सखरी सरसी खुमाणां. " ॥४॥

× × × × × ×

कवि मंगलाचरण में गणपति व शारदा की स्तुति करके चहुआणों की कथा के आरंभ में कहता है कि—'सरसी खूमाणां' यानी सीसोदियों से (महाराणा प्रतापसिंह से) भी अच्छी ख्यात वाले चहुआणों (सूरताणसिंह) की कथा वर्णन करता हुं ऐसा कहकर बाद में कथा शुरू करता है कि—

× × × × × ×

" कुल नारी धर कारणे मच दी जुद्ध च चत्रां; हुआ तुरकां हिन्दुवां किन्नर गंध्रव्वां. " ॥५॥
" सुंभ निसुंभ शकतियां. कथ वांचत कव्वां; कमला नार कुवारियां नाहां नव नव्वां. " ॥६॥
" विद्ध हमीरां बीजडां ते आर खतव्वां; हारी जेत होई दीयां करतार वशव्वां. " ॥७॥
" गाजी शाह सम्मापिया अरवद उझल्ला; वलिया राण प्रमांण कर ले पांन महोल्ला. " ॥ ८ ॥
" चढ खर्डाया खड आविया, यूं कीद्ध अपल्ला; सांमा मलिया सूरसह दल मेन्ह दुझल्ला. " ॥ ९ ॥
" शंकर बीच वे भाग धर किय चंगी गल्ला; आधी रेयत सा ' रही वांसे उथल्ला. " ॥ १० ॥
" जहां भव्यापन जाणवे, डर भज्ज अपल्ला; घात विशातां ओधतां जोये जगमल्ला. " ॥ ११ ॥
" शेल सीधांणां सूरतां हल्त जोध न हल्ला; आय हुवा वे एकठा रख सारा हल्ला. " ॥ १२ ॥
" तेडा दे तेडा विया वंका वज पाला; महलों उपर मंडिया चीतोडे चाला. " ॥ १३ ॥
" माल खणे सीरोहीया पेटा पूछाला; अरि दरवाजे आविया के उपर माला. " ॥ १४ ॥

जोधपुर के महाराजा के पास रहता था, और पीछेसे राठौर राव रायसिंह चंद्रसेनोत के पास रहने के कारण जब कि राव रायसिंह चंद्रसेनोत शाही फौज के साथ सिरोही पर आया, तब कवि आढा दुरशा भी उसके साथ विद्यमान था, बल्कि दत्ताणी के युद्ध में वह शामिल होनेसे सख्त जख्मी हुआ था. कवि आढा दुरशा १२० वर्षकी लम्बी जिन्दगी भुगत कर वि. सं. १७१२ में गुजरा. इस कवि ने उस समय के राजा बादशाहों के यश का प्रमाणीकपन से सच्चे यशोगान करने से इसकी प्रतिष्ठा शाही दरबार में व अन्य राजाओं में भी बहुत थी. वि. सं. १६४० की दताणी की लडाई में रणखेत संभाळ ते वक्त जख्मी हालत में यह महाराव सूरताण के नजर पडा, शस्त्र ग्रहण कर युद्ध में उपस्थित रहने के कारण, उसको राजपूत सरदार समजा गया था, परन्तु इसने चारण होना जाहिर करने से महाराव ने उसकी परिक्षा करने के वास्ते, उस युद्ध में महाराव का सामन्त देवडा समरसिंह जो काम आया था, उसके विषय में यश गाने का कहने पर सख्त जख्मी होनेकी हालत में भी इस शिघ्र कवि ने एक दोहे में यश वर्णन किया कि—

" धर रावां जश डुगरां व्रद पोत्रां शत्रु हांण "
" सबेर मरण सुधारियो चहू थोकां चहूआण. "

यह सूनकर महाराव को यकीन हुआ और उसको पालखी में बैठा कर ले गये, बाद इलाज करके उसकी अच्छी शुश्रुषा की, और उसकी विद्वता व प्रमाणीकता की कदर करके वि. सं. १६६३ में क्रोड पसाव के साथ ' पेसुआ ' गांव दिया और अपना पोळ बारहट मुकर्र किया. इसके बाद ' जांखर ' गांव इसको दिया गया. कवि आढा दुरशा को इन गांवों के सिवाय मेवाड व जोधपुर रियासत से भी कितनेक गांव मिले है, बल्कि बादशाह अकबर को भी इसके वास्ते बहुमान था.

" बाप कारे वेलियां सींधल सपखाला; शांगा भोजा दूसरा रीडमल रढाला. " ॥ १५ ॥
" भोज कलोंधर ढाहियो, भड आण भंडारे; तीर कबोंणां रावतां ले सुंज खंधारे. " ॥ १६ ॥
" आ वज्जा गिर गाजिया रूध वाज पंखारे; नायक पायक नमिया चडिया चौबारे. " ॥ १७ ॥
" मंदर भेल न सकिया, रख पाल न मारे; आवध वंन्ध खतंगियां, अरिमार विडारे. " ॥ १८ ॥
" सवली ओलज सों सही सवले सिरदारे; पहणता सोर धूणता आया उतारे. " ॥ १९ ॥
" वाऊ वाधा यू वदे थयो शों चोहट्टे; जिम हुआ तिम अखिया फुरमाण मगट्टे. " ॥ २० ॥
" सोढ चढे धर से धणी; नर मोगर थट्टे; शंकर अंवर दिपियो कर डंवर फट्टे. " ॥ २१ ॥
" राय दमांमां वाजिया, सव नियर चोहट्टे; मरण ना किंयो मेलिया संमंधां सट्टे. " ॥ २२ ॥
" जगा जुआरी हारिया सवले जू हट्टे; दाव अनेरो खेलवा आया कु रसते. " ॥ २३ ॥
" सगरा विजा आरोहिया, साकुर सम सम्मा; शहर फतेपुर सांमहा पेसाहर प्रणम्मा. " ॥ २४ ॥
" केती खेड निजोडीया, दरकूच मूकम्मा; आरत उपर आवीया, दरवार दूगम्मा. " ॥ २५ ॥

× × × × × ×

भावार्थ—यह है कि शाही फरमान लेकर सीसोदिया जगमाल सिरोही आया तब महाराव सूरताण ने उसका सत्कार करके आधा राज दिया, परन्तु जगमाल ने देवडा वजेसिंह (जिसको महाराव सूरताणसिंह ने निकाल दिया था.) को बूलाकर महाराव के महल पर आक्रमण किया, लेकिन महल के संरक्षकों से हार कर भागना पडा. महाराव को यह वात मालूम होनेपर वह उनके डेरे पर गये, परन्तु सगे होनेके कारण उसका वध नहीं करते भगा दिये. जिससे जगमाल बादशाह के पास चला गया.

× × × × × ×

" अंदर मालूम कीधयां, त्रेडो जो गम्मा; पै लग्गो कर धारियां फरियाद खतम्मा. " ॥ २६ ॥
" असी पूज न सकही, चहुवाणां जम्मा; शाह अरवद्ध उपरां की फोज हुकम्मा. " ॥ २७ ॥
" नजर दोलत शाह की वर आम सकज्जां; सव्वे हिन्दुस्थानियां खुरशाणां हज्जां. " ॥ २८ ॥
" राणा ज्यांमे रावलां, राव रावत रज्जां; सुलतांणां, खानां सहित खोजां मीरज्जां. " ॥ २९ ॥
" वीडा जने फेरिया तने कुल लज्जां; को भड वथ्थ सम्मथ है कारण पर कज्जां. " ॥ ३० ॥
" सिंध तरछे उठियो, माजी कम धज्जां; वीडा खुद शमापमो मैं खेतन भज्जां. " ॥ ३१ ॥
" राह तुरकां हिन्दवां सव्वे सोरसे; तोल ममाणे वोलीयो, कुलमाल कलेस्से. " ॥ ३२ ॥
" पूनम रेणी चंद ज्युं, श्री कमल मकाशे; असपत तेडे आगळे, भज पूज सहास्से. " ॥ ३३ ॥
" दीध नरम्मे कपड्डे, चंगी वर हास्से; मूर वेलांधर वंदिया फिर वेण मकास्से. " ॥ ३४ ॥
" राज करावू राण ने अरवन्ड अवास्से; काय जि रांण प्रणांममों जगमल्ला पासे. " ॥ ३५ ॥
" रासा सोजत आविया, चहु पंच मजल्लां; उलाका फिर तेडिया जोधा रिडमल्लां. " ॥ ३६ ॥
" राय छत्तीसे राजकुल, दलमेल दुझल्लां; पाये नमें यल नाल हथ पायक अण पल्लां. " ॥ ३७ ॥
" ऊँटस लीधा तंबूयां, चढी फोज हमल्लां; झाक्क झींण मंडावियां अश्व पीठ अलंलां. " ॥ ३८ ॥
" लह कलोधर मालदे अधकां उपल्लां; खडिया गंग अभे नमे आरत जगमल्लां. " ॥ ३९ ॥
" अतमत रायांवत कां, सवन अरि छोडाये; आधा जोजन उपरा रा मंडीयो राये. " ॥ ४० ॥
" वर वे मांन अभे नमो निसाण वज्जाये; गुझ गिरवर कुण लिये अण लगे घाये. " ॥ ४१ ॥
" किणही गढ पत देवडे चहुआण (न) लज्जाये; कमंध सीसोदां कु मखां उतरियां आये. " ॥ ४२ ॥
" पाए हुकम पातशाह को अब वज्जो आये; सारंग ज्युं दल चडीयो रज अंवर छाये. " ॥ ४३ ॥
" मेइल गिरवर मान रा तुं की वांसंदा; जगा जमाई से धणी नेहचे नरहंदा. " ॥ ४४ ॥
" टीलां पुत्रां भाईआं, भात्रीजां हंदा; गढ गिरवर ग्रास ले सिसोदां चंदा. " ॥ ४५ ॥

" कुडी टाप न कीजीये दुनिआंण हसंदा; कि ज्याणां की थायसी को वाये वजंदा. " ॥ ४६ ॥
" सा है ईश्वर उपरां, सो न्याये करंदा; अन्याई हारंदीयां अर न्याये जीयंदा. " ॥ ४७ ॥
" जगमाला दल शिवपुरी, दल सोढ गिरवर; जगमल्ल राये अरवीओ शुख हुतां नजर. " ॥ ४८ ॥
" मैं धर लांगां तें धणी, खडआवो पाधर; राव अखासर बोलियो जगमाल लखासर. " ॥ ४९ ॥
" दि ठाले डेरा दीया, वेहु आंण बराबर; वे निसाण वजाडिया, वे लागा अंबर. " ॥ ५० ॥

× × × × × ×

भावार्थ यह है कि–जगमाल ने बादशाह के पास हाजिर होकर फरियाद करने से आबु पर फौज भेजने का बादशाह ने हुकम किया, और अपने दरबार के अमीर, उमराओ, राजा, महाराजाओं में बीडा फिराया कि ऐसा कोई बहादुर योद्धा है कि जो सीसोदिया जगमाल को आबु पर कायम करे, जिस पर राठौर रायसिंह ने बीडा उठाया. बादशाह ने उसका सन्मान करके अच्छे कपडों का शिरोपाव आदि दिया. रायसिंह शाही फौज के साथ रवाना होकर सोजत आया, और वहां मुकाम कर अपने इलाके से दूसरे सब सरदारों को साथ लेकर सिरोही तरफ कूच की. उसने महाराव सूरताण को कहलाया कि मानराव का महल और गढ छोड दे तेरा क्या लगता है, क्यों कि जगमाल उसका जवाई है वह धणी है, और दूसरे भाई भतीजे आदि सीसोदियों से सिर्फ ग्रास पाने के हकदार हैं, जिसपर महाराव सूरताणसिंह ने जुवाब दिया कि ऐसो जुट्टी हकदारी करने से दुनिया में हंसी होगी, क्या मालूम कैसा पवन चलेगा और क्या होगा. महाराव सूरताणसिंह ने अपनी फौज आबु पर इकट्ठी की, और जगमाल की फौज सिरोही में आई, जगमाल ने महाराव को कहलाया कि हम मुलक ले लेंगे, अगर तुम मालिक हो तो लडने के वास्ते मैदान में आ जाओ, जिसपर महाराव ने उसके सामने आकर अपनी फौज का डेरा लगाया.

प्रकरण १० वाँ.

सहु देवड़ा चौहान. (महाराव सुरताणसिंह.)

(दत्ताणी खेत का महायुद्ध.)

सिरोही के देवड़ा चौहान के इतिहास में ' दत्ताणी खेत ' का युद्ध बहुत विख्यात है. इस युद्ध से चौहानों की बिरुदावली में यह ' दत्ताणी खेतरा ' इस बिरुद से मशहूर हुए है. दत्ताणी की लड़ाई ' बाविसी कटी ' इस नामसे प्रसिद्ध है. और कइएक भाट चारणों ने इस युद्ध के अनेक गीत कवित रचे है. मूता नेणसी की ख्यात में इस विषय में लिखा है कि—जगमाल की फौज ने सोचा कि महाराव के सरदारों की जागीर के गांवों पर अलग अलग फौज भेजी जाय, जिससे उनके सरदार अलग २ (अपनी जागीर संभाल ने के वास्ते) बिखर जायंगे, बाद सुरताणसिंह को मार देंगे, और देवड़ा विजा हरराजोत, सोना माडणोत, राव रतनसिंहोत, को तुरक की फौज देकर भीतरोट (आबु पहाड की पूर्व दिशा के परगने.) के तरफ भेजने का विचार किया, तब देवड़ा विजा ने जगमाल और रायसिंह को कहा कि तुम्ह मेरे को अलग करोगे तो महाराव तुम्हारे पर एकदम हमला करेगा. जिस पर राठौर ठाकुर (राव रायसिंह) ने जवाब दिया कि जिस गांव में कूकड़ा नहीं होता है वहां भी रात्री गुजर ने का मालूम हो जाता है. मतलब यह कि तेरे साथ रहने से ही हमारे सब काम होते है ! ऐसा नहीं है, जिससे बजेसिंह भीतरोट के तरफ चला गया. बजेसिंह भीतरोट के तरफ फौज लेकर गया यह बात देवड़ा समरसिंह को मालूम होने पर, उसने महाराव को कहा कि अब देर नहीं करना चाहीये, जिससे दत्ताणी गांव में सीसोदिया जगमाल और राव रायसिंह का डेरा था, उनपर महाराव ने नक्कारह देकर चढाइ की, एक दो कोस का फासला रहा वहां तक जगमाल को इस चढाइ की खबर नहीं हुई, और यह समजे कि महाराव देवड़ा विजा के पीछे भीतरोट के तरफ जा रहे है.

इस विषय में कवि आढा दुरसा ने कहा है कि—

× × × × × ×

" [illegible] कर एक दिन [illegible] " ॥ ५१ ॥

" [illegible] " ॥ ५२ ॥

" [illegible] " ॥ ५३ ॥

" [illegible] " ॥ ५४ ॥

" [illegible] " ॥ ५५ ॥

" [illegible] " ॥ ५६ ॥

" भीर देखाये भोमियां, त्यम जोर न माये; करणी वातां काछीयां न न वाहर थाये. " ॥ ५७ ॥
" युद्द सांमा जुठा मने परधान पठाये; सोढ माहा जुध तेवडे आलोज उपाये. " ॥ ५८ ॥
" किध जगमल तेजवर, कि सिंघ पमाये; वाचा वंधी देवडा अरवद न जाये. " ॥ ५९ ॥
" आकोली सु उपडे, मोगर अन मंधा, सैन दतांणी सांमहा; खुमाण कमंधा. " ॥ ६० ॥
" आए वोहर अडपीया, जुद्ध मेलण संधां; भीर दखाडण भोमीयां, साथे सनमंधां. " ॥ ६१ ॥
" जाण महाजूथ उपटे, रावण दह कंधां; सोढ न आवे आंगमण, केहर मद गंधां. " ॥ ६२ ॥
" कीध वजमल वेगलो, की मत कुबुद्धां; वीण सण गल बुंदीयां, वपरीतन वुद्धां. " ॥ ६३ ॥

× × × × × ×

भावार्थ—जगमाल ने देवडों की फौज को देखी, और उनको हराने में कठिनता मालूम होनेसे, एक रात्री विश्रान्ती लेकर दूसरे दिन सायठ परगने में मंढार के तरफ प्रयाण किया, और यह सौचा कि इनके सरदारों के गांव मारेंगे तो वे लोग महाराव को छोडकर अपना संभाल ने के वास्ते आयेंगे, इस विचार से उन्होंने सरदारों के गांवो में लूट खोस करना शुरू किया, जो समाचार राजगुरों ने सरदारों को पहुंचाया, परन्तु वे लोग महाराव को छोड कर नहीं गये, सिर्फ देखाव करने को परधान भेजे और कहलाया कि ऐसा करने से देवडों के साथ कोल करके आवु हाथ आया है वह नहीं जायगा, अगर लडना हे तो महाराव तैयार है, जिसपर 'आकोली' गांव से सीसोदिया व राठौरों की फौज ने कूच करके दताणी तरफ प्रयाण किया, उन लोगों ने रावण के जैसी युद्ध की तय्यारी की, परन्तु जिस तरह हाथी के फंद में सिह नहीं आता है उस मुआफिक महाराव के उपर उनका वस न चला, और देवडा वजेसिंह को अलग करने से विपरीत परिणाम आवेगा, उसका खयाल न करते वे समज से उसको अलग किया.

देवडा वजेसिंह शाही फौज के साथ भीतरोट के तरफ चले जाने वाद दताणी का युद्ध हुआ, उस विषय में मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि वि. सं. १६४० काती सुद ११ के रोज महाराव सूरताणसिंह ने शाही फौज पर हमला किया. इस लडाई में सीसोदिया जगमाल +राव रायसिंह, कोलीसिंह यह तीनों सरदार काम आये, इनके सिवाय राव गोपालदास किसनदासोत, राठौर शार्दूल महेसोत कूपावत, राठौर पूरणमल मांडणोत कूपावत, राठौर लूणकरन सूरताणोत गंगावत, राठौर केशोदास इसरदासोत, चौहान (सांचोरा) सिखो झाझणोत, पडीहार गोरा राघवोत, पडिहार भाण अभावत, देवा उदावत, भाटी नेतसी, मांगलिया जैमल, बारहट इसर, सेहलोत वाला, मांगलिया किशना, धांधु खेतसी, मुं. राजसी राघावत, भाटी कांन आंवावत, मांगलिया गोपाल भोजउत, राठौर खींवो रायसलोत, इंदा आदि रायसिंह की फौज के मुख्य मुख्य सरदार काम आये.

+ राठौर राव रायसिंह जोधपुर के महाराव चंद्रसेन के तीसरा पुत्र था. वि. सं. १६२९ में अकबर बादशाह ने उसको 'राव' की पदवी देकर सोजत का इलाका बक्षा था.

इस विषय में कवि आढा दुरशा ने अपने रचेहुए महाराव सूरताण के झुलणों में प्रथम महाराव की फौज के सैनिकों की पहिचान कराकर युद्ध की तय्यारी का वर्णन करके, बाद महाराव ने इस युद्ध में जो वीरता बताकर, शाही फौज को छीन्न भीन्न की, उसका सविस्तर वर्णन किया है. जिसमें फौज की तय्यारी के विषय में कवि कहता है कि.

× × × ×

" श्रवणे सत दळ साल्ले, हुवा दोऊ ढोडां; *सीसोदां दळ देखवा दळ मांगण दोडां. " ॥ ६४ ॥
" आंपण धर उग्राहवा, ओडण खग घोडां; आली सांपर खलवा वाह्यां खग जोडां. " ॥ ६५ ॥
" वाज धस मस पाखेलां, भ्रम वाजो घोडां; करण रसोई पलछरां, खग पांख वीचोडां. " ॥ ६६ ॥
" मान कळोधर मोझीयां, साजवा सजोडां; रूप चढावण देवडा, मोटां कूल मोडां. " ॥ ६७ ॥
" सोढ भूके सीसोदियां, ऊपर राठोडां; × × × × × " ॥ ६८ ॥
" पेगो जांक ससार में, रंग रंग त्रीचंदा; छे कडीयां कोऊ ग्रेह, वपतीन वणंदा. " ॥ ६९ ॥
" ऊपर पूछां ऊप जलां, दसतांन दीपंदा; टोप कवट परठीया, स्रोत्रन झगंदा. " ॥ ७० ॥
" डाहे जम डढ्ढ जीमणे, वांमे खंग वंदा; सेल भूजा डंड सोहीया, कर वच फुणंदा. " ॥ ७१ ॥
" सूरतांणा रथ पाथजीम, नेडा न आवंदा; आभ लगाडे आजरो, अढार गीरंदा. " ॥ ७२ ॥
" आंण पलांणत सांणीही, ताजी पे चंगी; घोडे घाट ऊलंगीया, पंच नंद ऊलंगी. " ॥ ७३ ॥
" घट सु घट स तेज मे, सव संग सूरंगी; त्रापो जापे कोप कर, जम नट कुलंगी. " ॥ ७४ ॥
" जेही पेवां काठवे, नारी पे चंगी; पाखर छमर ढोहकर, जम पोत मचंगी " ॥ ७५ ॥
" चढीयो सोढ मवाड मल, असवार अभंगी; कर ऊचा सह ओपीया, ग्रह पत न हंगो. " ॥ ७६ ॥
" मेख झक कळ साखीया, कातल छकडाला; पाधर मेंगल चालवे, खेगां खरताला. " ॥ ७७ ॥
" वाज दमांमां गाजगीर, पडसाद पयाला; खेहां अंवर ढंकीया, भ्रम परवत माला. " ॥ ७८ ॥
" करवा मांन अभ नमो, धर छक धक छाला; एक छत्र पत आवीयो, दहुसीस छत्राला. " ॥ ७९ ॥
" सिवर जसो कुण सोढ चल, नरसिंघ सूतनां; जांण जूजीष्टर जामीले, भीमेण अजनां " ॥ ८० ॥
" जांण द्रीयोधन पागती, भीसम करनां; जांण लछमण रांम छल, कपी वीर सूतनां. " ॥ ८१ ॥
" छल कुभेण के ईंद्रजीत, चत्र खट वदनां; अकर अक्रुर कनेछल, नर वीर सूतनां. " ॥ ८२ ॥
" महण रंभ वल ईश्वर, छल लेण रतनां; दोहु दोहु भीचां सारको, एको वडमनां. " ॥ ८३ ॥
" कर जलां आगे कीया, रावत राहाला; नग्रह धीर कंठीर धीर, लख धीर लंकाला. " ॥ ८४ ॥
" कहट भये कर वीर वर, डुंगर डाढाला; आखर वाघ अभंग भड, वीका वगताला. " ॥ ८५ ॥
" काना दूदा भोजराज रडमाल रढाला; वे वे गीर वर छालता, छीवा चमराला. " ॥ ८६ ॥
" जेत कमधज पीथवा, वाघेल वडाला; जोडे जगड कलो धरण, अवसी अडसाला. " ॥ ८७ ॥
" आया दूदा आसीया, ऊनहा आपाला; आज उजाले आप मल त्रणही त्रह टाला. " ॥ ८८ ॥
" सो हे रावत सूरताण का, भड भीम भूजाला; बेइए वांधीयां वाजूये नायक नेजाला. " ॥ ८९ ॥
" जांणके रावण रांम ही, जुधं लंका वाला; × × × " ॥ ९० ॥

× × × ×

भावार्थ—दोनों दल की तरफ से तय्यारी होकर युद्ध के मेदान मैं अपने २ जोडीदारों को संभाल ने लगे, सवारों के सामने सवार, पैदल के सामने पैदल, और सरदार के सामने सरदार, धर्म युद्ध करने को उपस्थित होने लगे. सीसोदिया जगमाल के विस्तीर्ण दल के सामने, देवडे अपने सैन्य की सजावट करके सामने आये. संसार में यश

* दूसरी प्रति में " मोसां दोसां मांगवा " अंकित हुआ है. १ रणखेत. २ मुखिया.

प्राप्त करने की तीव्र अभिलाषा में, युद्ध में होने वाला अनिष्ट परिणाम की दरकार न करते, लग्न समारंभ में तोरण वांदने के वास्ते विंद जाता न हो! वैसा उत्साह से अपनी नामवरी करने के लिये, सूवर्ण के अलंकार की जगह वक्तर, कवच व टोप, पहिन कर जिमणी तरफ जमैया, कटारी व डावी तरफ तलवार बांध कर धनुष, भाथे व ढाल आदि अस्त्रशस्त्र को अलंकार मान कर, योद्धे समरांगण में आने लगे. महाराव सूरताणसिंह ने गरुड के जैसे प्रवल वेग वाली घोडी पर पाखर डलवाया, और सवारी की, जिससे वह तारों के समूह में चंद्र देदिप्यमान होवे, उस तरह देवडों की फौज में दिपने लगा, जब उसने समरांगण के तरफ प्रयाण किया तब छत्र, चम्मर, ध्वजा पताका, आदि से सैन्य में जगमगाहट हो गया. वाजित्र वाद्यों के अवाज से अर्बुदगिरी गाजने लगा. घोडों की परगी और पैदलों के पैर पहार से इतनी धूल उडने लगी कि सूर्य ढंक गया. इस तरह धम धमाट मचाता हुआ, एक छत्रपति (महाराव सूरताणसिंह) दश छत्रपतिओं(शाही फोज में कईएक छत्र धारण करने वाले) के उपर चढ आया.

महाराव सूरताणसिंह के साथ देवडा सबरसिंह नरसिंहोत, जैसे युधिष्टिर के पास भीम–अर्जुन, दूर्योधन के पास भिष्म–कर्ण, राम–लक्ष्मण के पास–कपीश्वर हनुमान, रावण के पास कुंभकर्ण व ईन्द्रजीत, आदि के मुआफिक सहायक था. जब कि महाराव सूरताणसिंह ने प्रयाण किया तब उसके सैन्य में डुंगरावतो के सिवाय *बीकानेरीया भाखरसिंह, वाघा, (वोडा चौहान सियाणे का,) भेदावत कान्ह (चूली गांव का रतना हामावत का पौत्र.) देदा, भोजराज, (आकुना का वडगामा देवडा.) चीवा चौहान जेता खेमराजोत ÷राठौर पृथ्वीराज, वाघेला, (सोलंकी सांगा सामन्त) अवावत चौहान, और कवि आसीया दूदा आदि सरदार थे, और राम–रावण के युद्ध होता न हो ! ऐसी सोभा हो रही.

जबकि दोनों सैन्य अपनी सम्पुर्ण तय्यारी के साथ समरांगण में उपस्थित हुए, तब कवि आढा दुरशा अपने कवित में वर्णन करता है कि–

× × × ×

दोहा.

" महिपत वोणंतर मेलिया, सोत्तिर तुरक समेत. "
" आईया अरवद ऊपरे, कमधज कछवाह सहेत. "

---

* विकानेरीया भाखरसिंह–बीकानेर के राठौर राजा १ वीकासे क्रमशः २ लुणकर्ण, ३ रत्नसिंह (जिसकी जागीर 'महाजन' नामक पट्टे की थी.) ४ अर्जुनसिंह ५ खेमराज, ६ करमसी व उसका पुत्र भाखरसिंह था. अन्य मत से भाखरसिंह को लूणकर्ण के पोता होना कहा जाता है. वीका करमसी, महाराव सूरताणसिंह का मोजा होता था, और वीकानेर से नाखुश होकर सिरोही में रहता था. जिससे भाखरसिंह महाराव के पक्ष में था. महाराव ने इस युद्ध की समाप्ति होजाने पर वीका भाखरसिंह को वि. सं. १६४० महा वदि ८ को 'मेडा' नामक पट्टा तेरह गांव से दिया था. परन्तु पीछेसे उसके परिवार में 'मेडा' के पाटवी ठिकाने में नाओलादी हो गई, और उसके छोटे भाईओं को राजपूत दावे अलग २ गावों में अरहट खेतों की जागीरी है, जिसमें 'धल' नामक गांव में बीकानेरीया देवसिंह अनाडसिंहोत चौथी पांती के जागीरदार विद्यमान है.

÷ यह सवियाणा के कल्ला राठौर का पुत्र होना अनुमान होता है.

" सोर धुआं रवि ढंकियो, अरवद रिसांणुं; त्रई त्रई त्रंबक वाजिया, त्रिपुर सणाणुं. " ॥ ९१ ॥
" रांणे मन विचार कर, कमधज केवाणुं; जो घर जावां जिवता, ध्रग जिवन जाणुं. " ॥ ९२ ॥
" हिन्दु मुसलमान मिल, गिरवर घेराणुं; दस दुना दो लाख ने हुकम फरमाणुं. " ॥ ९३ ॥
" दधि सातुं सत छोडियो, गर मेर संकाणुं; गढ गिरवर घेरीयां इक राव तरकाणुं. " ॥ ९४ ॥
" गुंज्ये सिंह अभंग भड, तेजल सरताणुं; चढिया तेज खुमाण. से क्रपाण झलाणुं. " ॥ ९५ ॥
" खांपां ढाहर खां सही, वेजल मकांणुं; उडे सिच असराण के इक रावत राणुं. " ॥ ९६ ॥
" कर पोरस एम बोलियो, तेजल सरताणुं; आज न मेलुं जिवता, कर वांण रंगांणुं. " ॥ ९७ ॥
" धणी थापो वजपाल ने, जद जीता जाणुं; × × × " ॥ ९८ ॥

" बोल्यो राणो माहावल, सुंण तेजल सूरताण. "
" गढ गर वर घर करू, तोडुं तोरो मान. "

" केहर मांण न मेलसी, जद जिवत जांणुं; कहियो राण जगमाल ने, सरतांण चुहाणुं. " ॥ ९९ ॥
" कर मूछां पर नांखिया, कमर कस वांणुं; सांणी अस वस लागई ले मन उमंग आंणुं. " ॥ १०० ॥
" जद सांणी कर जोडिया, हुकम प्रमाणुं; आणी वाहर बोलाय लो 'केसर' भमराणुं. " ॥ १०१ ॥
" झाटक पिठ असझीण कर, सामांन सजाणुं; चढिया नृप सरतांण, सिंघण थट मेलाणुं " ॥ १०२ ॥
" सिंधुरा गज छेडिया, नोवत नेसाणुं; राग छत्तीसे घोर पड, कायर कंपांणुं. " ॥ १०३ ॥
" गोलां अरबद गाजियो, धर सेप धुणाणुं; असत्र दड वड वाजिया कर सेलं झलाणुं. " ॥ १०४ ॥
" कमधज कछवा रांण ने, सरतांण के वाणुं; होये चेतन संग्राम कर रंक रावत राणुं. " ॥ १०५ ॥

× × × ×

कवि के कथन का आशय यह है कि उन्होंने एक दूसरे को चेतन करने के वास्ते अपना बल पुरूषार्थ प्रगट किया, बाद युद्ध करने की शुरूआत की.

जबकि दोनों फौजों का मुकाबला हुआ, और युद्ध होने लगा. उस युद्ध के वर्णन में कवि कहता है कि—

× × × ×

" फरियां तोफां रेकलां, धज नेज फरकी; सोर अंबर रवि ढंकियो धर शेप धडकी. " ॥ १०६ ॥
" तारा मंडल तुट पड रणतुर रडकी; डक डक डमरू वाजिया ग्रिधाण गडकी. " ॥ १०७ ॥
" दिन कर थोभिया देखवा, रणझाट झलके; सेल चमंकै विजळा, अस त्रजड तरंके. " ॥ १०८ ॥
" सांगा गंग चेनसी, आरण ताल रछेवा; जड जूसांण के जम गरण, मांझीयां मलेवा. " ॥ १०९ ॥
" ऊपडीया ऊपडां खीया, असमांन छवेवा; मोगर सांमा मछकीया, मारवा मरेवा. " ॥ ११० ॥
" सूरतांणां भड सांमहा, जल हर जांणेवा; पंखा ले पंखी जता, सूर नर वरेवा. " ॥ १११ ॥
" जांणक दुलह आवीया, तोरण वांदेवा; × × × " ॥ ११२ ॥
" आडे घाये आवीया, दोहु घट सूभटां; सुरग गया सुरमा, कायर दह वटां. " ॥ ११३ ॥
" पूर सोढ दल पूरवर; रणमाल सू भटां; भागी मील वहादरां, हुवा खल खटां. " ॥ ११४ ॥
" झीक छडां फल ऊजलां पटां खग झटां; जम डढा कर जीमणे, वांमे कर चटां. " ॥ ११५ ॥
" सोढ गहे खांडो हथां, ऊभो गज थटां; जांण नदी जल आवटे, मध सायर तटां. " ॥ ११६ ॥
" वेई समोवड वाजगड, अण ख्याल मछे झड; तीर तड तड कुंत जड कर माल अवझड. " ॥ ११७ ॥
" ढीग कर कड उकरड, पडसोस दड दड; सोक सडवड वाज नड, वहे रथ दडी अड. " ॥ ११८ ॥
" ग्रीध झड पड पंख झड, हुवे वीर हड वड; भीच अण पड वाज धड, होय रूंड रड वड. " ॥ ११९ ॥
" रत गड गड सोख मड, भज डांण खडखड; पोहच त्रवड राठ वड, तो तेज समो वड. " ॥ १२० ॥
" होये वीजा डर ताक धर, धर वे ध टलो हर; होय पंचा हर राय हर, रख होये अवासर. " ॥ १२१ ॥

" द्रवड पलछर हार हर, वर होये अपछर; खेचर भूचर मंसले, मील रात नीसी चर. " ॥ १२२ ॥
" जोगण चलू अल ऊकले, ओघांणे पल छा; जालग अंबर सात सर, त्यां राज नरेसर. " ॥ १२३ ॥
" सोढ त्रभे नर वीर वर, गज फोज भयंकर; तुज असमरतो समर, जस भेट नरेसर. " ॥ १२४ ॥
" अंबर तारा क्रुण गणे, लेहरी महरांणां; सांवण बूंदां, रेण कण, अंतर असमांणां. " ॥ १२५ ॥
" कुण आंणे ऊजम करे, मथमाद प्रमांणां; सगत चरीत सेख वल, क्रन अरजन वांणां. " ॥ १२६ ॥
" वेद माहातम कुण लहे, भ्रम तंत पूरांणां; रीण तण छल रखीयो, राव रावत रांणां. " ॥ १२७ ॥
" परण मूरां कज ऊतरी अपछर अमर की; तेग वहे तेजल री विकराल वजरकी. " ॥ १२८ ॥
" गुंथ माला गल नाखिया शंकर अरसर की; कई खागा वल कापियां तडफे धड अर की. " ॥ १२९ ॥

दोहा.

" कहे तेज खुमांणसां, मूण उदेपुर राय. "
" कमधज कछवा राण ने, भान लिया मं माय. "

" मान्या ए महिपति मुज चामुंडने; खंडु जद मुंडला खवर पडसे तने. " ॥ १३० ॥
" झाली हथ नाल सणणाट गोला चले; मचे घण ठाट भाद्रव वादल टले. "
" गड गडे तोफ जद्दी गयंद फोडां गडे; कहे तेजल संग्राम हमे खवरां पडे. "

दोहा.

" गर अठारे गुंजियो, लडवा काज लंकाल. "
" कमधज कछवा ऊपरां, भड वंको भूपाल. "

" तेजल तीर कवांण छूटतां तडके; कमधज भाग कछवा रांण गाये भडके. "
" भगा एम भूपति देख सरतांण हथ; कहे एम तेजसी आज रावण कथ "

× × × ×

भावार्थ—दोनों तरफ से प्रचंड युद्ध हुआ, और खुद महाराव सूरताणसिंह ने अपनी ' केसर ' नामकी घोडी जिसका भमर रंग था, उस पर सवार होकर दुश्मनों पर शस्त्र चलाना शुरू किया, और तोपें व वंदूकों का मारा चल रहा था, उसमें मोखरे आकर कमधज कछवाह व सीसोदियों के उपर ऐसे तीर चलाने लगा कि उससे दुश्मन भडक कर भागने लगे.

दंतकथा में यह वात प्रसिद्ध हे कि शाही फौज के सरदारों को महाराव सूरताणसिंह का इतना भय होने लगा कि उसके सामने जाकर युद्ध करने में अपनी सलामती नहीं समजी, जिससे उन्होंने गजदल को मदमाते वनाकर आगे करके उनके पीछे रहने का निश्चय किया. इस विषय में कवि ने भी कहा है कि—

" पले राज वावन विचार किनो, वावीसेच गजेन्द्र हुकम दीनो. "
" भेलां गढ गिरिवर धरा खोस लिजे, वोल्यो राव सूरताण नां टेक दिजे. "

दूसरे दिन शाही फौज वालों ने गजदल को मद पिलाकर आगे किया, जो वारह मेघ के मुआफिक गर्जना करते हुए दरवाजे (दताणी से पूर्व दिशा में आनेके रास्ते में एक दरवाजा वना हुआ हे, जो तोडा का दरवाजा कहलाता है और वर्तमान समय में विद्यमान हे.) तरफ आये, जिसको देखकर महाराव सूरताणसिंह ने अपने सैनिकों

से कहा कि ऐसा कोई है कि इन हाथीयों के दल को वापिस लौटावे, जिस पर कवि दूदा आसीया ने कहा कि हुकम दो इतनी ही देर है, मैं अभी इस दल को वापिस लौटाता हुं, ऐसा कहकर दूदा आसीया आगे वढा, उसके साथ डुंगरावत मांडण का पुत्र (सीलदर का) कुंभा भी चला. आसीया दूदा ने सवियाणा के मरहूम कल्याणमल राठौर को याद कर कवांण पर हाथ डाला, और तीर चला ने लगा उससे हाथीयों के शिर फूटने लगे, और जैसे आये थे वैसे वापिस लौटे, इस विषय में कवि आढा दुरशा ने कहा है कि—

दोहा.

" दरवाजे हाथी दुजल. भलीया वारे मेग; युं रावे मन अखीयो, कोई वाले पाछा वेग. "
" कर जोडे कव युं कियो दीजे हुकम हमार; जो पाछल वलतां वले लागे केती वार. "
" अव हुकम मांगु अठे, पीछे करू प्रतिपाल; महिपत पडे महि परे, खलके रूधीर के खाल. "
" करे अरज +कल्याण कुं, कर नांख्यो कवांण; फुटा सिंच गजंद का ज्युं आया त्युं जांण. "
" कुंभ कवर भीडी कमर लहवा काज लंकाल; सामत ए रंग सांमता भडीयां दल वल माल. "

+ आसीया दुदा ने कल्याणमल राठौर को याद करने के कारण में दंतकथा में कहा जाता है कि कल्याणमल राठौर जोधपुर के महाराव मालदेव के द्वितिय पुत्र रायसिंह का पुत्र था. उसके तरफ मारवाड में ' सवियाणा ' के किले की जागीर थी, और शाही सेवा में वह रहता था. बूंदी के राव भोजराज की कुंवरी से अकबर बादशाह ने लग्न करना चाहा, परन्तु भोजराज ने वह कन्या की सगाई राठौर कल्याणसिंह से करना जाहिर करने से बादशाह ने कल्याणमल को उससे हाथ उठा लेनेका कहा. लेकिन कल्याणमल राठौर बहादुर, स्वाभिमानी और दृढ निश्चय वाला राजपूत था, उसने बादशाह की परवाह नहीं करते हाडा राव की मुश्केली दूर करने को व क्षात्रवट दिखलानेको, बूंदी जाकर उस कन्या के साथ लग्न कर लिया, और अपने वतन चला गया. बादशाह ने उसको सजा देने के वास्ते सवियाणे पर फौज भेजी.

राठौर कल्याणमल महाराव सूरताणसिंह का भांजा होता था, जिससे महाराव ने ' सवियाणे ' पर शाही फौज आनेका समाचार सूनने से आसीया दुदा को उसके पास भेजा. आसीया दुदा ने कल्याणमल को सवियाणा छोड कर सिरोही आनेका कहा, मगर उसने जुबाब दिया कि मेरा काका हरपाल ने ' खीपड ' गांव के खोल्डे (छोटे २ मकान) बगैर युद्ध के नहीं छोडे तो मैं ' सवियाणा ' जैसा किला कैसे छोडुं ! उस विषय में कवि ने कहा है कि—" खीपड तणां खोलडां तारे हैये नहीं छूटा हरपाल. "

राठौर कल्याणमल ने लडने का निश्चय नहीं छोडा, और कवि को कहा कि मैं जरूर केशरियां करके बादशाह को अपना हाथ बताऊंगा, सो आप मेरे कवित कहो, जिस पर दुदा आसीया ने उसके वीरत्व का वर्णन किया. कल्याणमल ने कहा कि मैं कैसी वीरता से काम आवुंगा वह सूनना चाहता हुं, और आप कहेंगे उसी मुआफिक युद्ध करूंगा. आसीया दुदाने एक बहादुर राजपुत्र केशरियां करते कैसे पराक्रम करके काम आता है, उसका विवेचन उसके नाम से किया, जिसमें कल्याणमल का देहान्त होने बाद ' सवियाणा ' बादशाह के हाथ में जानेके भाव के कवित कहै. कल्याणमल वह सुन कर बहुत खुश हुआ, और कवि को इनाम देने लगा. कविने कहा कि मैंने आपके ' मरसिये ' भी कह दिये, अब आप मर चू हैके जिससे आपके हाथ से मैं दान नहीं ले सका हुं, तब कल्याणमल ने कहा कि यदि मैं इस युद्ध में काम आऊंगा, परन्तु पीछेसे भी आप मुझे याद कर के मेरे कुंडलीये कहोगे तो मैं आप का मनोरथ पूर्ण करूंगा, और उसकी सच्चाई यह समजना कि आप यहां से रवाना होकर ' मांकरोल ' गांव के पडवे में ठैर जाना. अगर मेरे देहान्त बाद मेरा घोडा कवांण के साथ आपके पास आ पहूंचे, तो मैं 'वीर' (देवयोनी) हुआ हुं वैसा समज कर कवांण ले जाना, आसीया दुदा ने उस मुआफिक ' माकरोल ' में मुकाम किया. जब कि कल्याणमल युद्ध में काम आया, तब उसका घोडा कवांण के साथ भगा, और माकरोल पहुंचा. दुदा आसीया ने घोडे पर से कवांण उठा लिया कि घोडा वहां मर गया. जब कि दताणी के युद्ध में हाथी के समूह को पीछे लौटाने का बीडा दुदा आसीया ने

गजदल वापिस लौटतेही महाराव सूरताणसिंह और देवडा सवरसिंह ने शाही फौज पर हमला किया. इस युद्ध में देवडा सवरसिंह बडी वीरता के साथ कईएक योद्धाओं को मारकर काम आया, जिसके विषय में कईएक कवियों ने उसकी प्रशंसा के गीत +कवित कहे हैं, जो इस पुस्तक के दूसरे विभाग में ठिकाने पाडिव के डुंगरावत देवडों के प्रकरण में अंकित हुए है.

दंत कथा में कहा जाता है कि महाराव सूरताणसिंह के तीर से बचने के वास्ते राठोर राव रायसिंह हाथी पर सवार होकर ऐसी हिफाजत से बैठा था, कि उसको तीर या बंदूक का मार न लग सके, जिससे महाराव सूरताणसिंह ने उसके हाथी के सामने अपनी घोडी चलाई, चालाक घोडी महाराव की इच्छानुसार हाथी के पास जा पहुंची, महाराव ने वहां पहुंचतेही अपनी तलवार से हाथी की सुंढ काट दी, और घोडी को

उठाया, तब उसने कल्याणमल की वीरता के कुंडलिये कह कर उसने दी हुई कबांण उठाई, कोइ कहते है कि कल्याणमल खुद उसके सामने उपस्थित हुआ और उसने गैबी मदद दी. अन्य मत से कहा जाता है कि कल्याणमल के कुंडलिये कहने बाद कवि के अंग में ऐसा बल संचार हुआ कि उसने तीरों का मारा चला कर गज दल को उलटा लौटा दिया. राठौर कल्याणमल की वीरता की कईएक पुस्तकें रची हुई है, और आसीया दुदा.ने कहे हुए 'रण बंका राठौर कला' के कुंडलिये राजपूताना के हरएक कवि के मुख पाठ होना मालूम होता है.

+उन कवितों में सवरसिंह की रंभा (अपच्छरा) के साथ वातचीत होना, और उससे उत्तेजीत होकर सवरसिंह ने युद्ध में जो अतुल पराक्रम दिखाया उसके विषय में कवि आढा दुरशा ने कहा है कि—

" फजर उठ मसगे फाण, लेहर हामत कज; अमर रंभा ऊतरी कामणी सूरां कज. "
". कहे एम कामनि, सूरवीरां वरण; पटे नां आपके प्रसण पाडे धरण "
" होमे तन अगन में, नहीं पाछल फरे, यथों तन सवरमी मन पवनां फरे. "
" रंभा वचन सुणी जरां, दिया वचन देसोत; जो पाछल फेरूं जरां, जग अंधेरो होये. "
" होये जग अंधेरो पछम दस उगसी; भगे का मेदनी दधि सत छोडसी. "
" रमण उठ रंभ अब केम चंत्या करे; वचन सुण रंभ रा एम सवरो अखे. "

इसके बाद सवरा ने प्रचंड युद्ध किया जिसके विषय में कवि कहता है कि—

छंद पधरी

" जद चढगो वदण सवरेस वेग, मली घटा भूमंडळ वरत मेग. "
" कोप्यो सवरेस विकराल रूप, महिपत सूरतांण बरदही भूप.
" भडे भीम वा रण अर्जुन भपाळ, मळी राम लखन कुंभो लंकाळ. "
" मनलात शेस हल चली व्योम, भूपन असव रोहत होती पडत भोम. "
" भयो रूद्र कोप सवरो नरेश, गुंथत ग्रमाल, नाचंत महेश. "
" थट मले श्रेष्ट भृताल डाल, म्रत आप गिधणी करत आहार. "
" बक वकत धरा वे रूधिर खाल, हणु जेम करत हाकल नृपाल, "
" सहे इक अंबर मही उडत सोर, ग्रह ग्रह त्रंबक की वजत ठोर.. "
" घग घाये झुमंत अन गयंद घोर, छूटंत नाळ कूकंत मोर. "
" शूर धिर पडत कि वरत रंभ, गाळण सूरतांण केई वडा भ्रम. "
" धर भेल किया के वडा धींग, सिंघारिया शेप सवरेस सिंग. "
" पोढ्यो सवर प्रसणा पसाड, वर गई रंभ वैमान चाड. "

वाग खींचने पर उसने अपने अगले दो पैर हाथी के दंतूसल के उपर रखे, जिससे महाराव ने हाथी पर बैठे हुए, राठौर रायसिंह पर तलवार चलाकर उसे मार डाला, इस सबब से देवडा चौहानों की बिरदावली में "घोडे चढ हाथीयांरी गजधडा रा विदुशण हार" यह चरण दाखिल हुआ है. वैसे कवि आढा दुरशा ने महाराव सूरताण के मरसिये में भी कहा है कि—

× × × ×

" गज धडा आंगमण, तुरी गज दांत चढा वण. "

× × × ×

इस लडाई का परिणाम यह आया कि दताणी में उपस्थित रहे शाही फौज के सब सरदार अपनी फौज के साथ मारे गये, और महाराव सूरताणसिंह की जीत हुई. इस युद्ध में कौन २ मुख्य सरदार मारे गये, उस विषय में कवि ने कहा है कि—

" आशिप दे सूरताण अपसर, निग्रह वडा वदारण नेह. "
" वर ईच्छत लाधा तों वढतां, छत्र पतियांसुं वांधां छेह. "
" पुरणमल गोपाल पामिया, ईशर केसर वर परचंड. "
" सिंगज गड अने रायसिंग सारखा, वर सादुल सारखा सवड. "
" राव सूरताण तणे जुद्ध रंभा, जोई वर लाधा जुआ जुआ. "
" वर तरकस, वंध सदा वरुती, हमके वर गज वंध हुआ. "
" वडा सपह सरग लोग वशिया, धर वालता धर छेह खग धार. "
" सर कामण कहियो भव सारो, आवुराव कियो ऊपकार. "

महाराव सूरताणसिंह के सामने समरांगण में कौन कौन लडने को आये, ओर वे महाराव के हाथ से मारे गये, उसके विषय में कवि आढा दुरशा कहता है कि—

" रण खेत दतांणी रची जंगराण' थाट थडंवे थडा थडा. "
" कीधा कण कण शोढ वढे कण, वडे खेत कोण वडा वडा. "
" इशरसो सादुल अमे ऊर, रायसिंग जगमाल रता. "
" थिर हरे रण ग्रीध धपाडे, आवु तल राखिया अता. "
" कमधज एक एक केलपूरो, एक गोहील अने जेठुवो एक. "
" अतरां ने सरतांण एकले, सिरोहीये दीधो रण छेक. "
" सूरीचंद च्यारने सात सराएत, जुध मन धारे जुआ जुआ. "
" आया हता लेअण कज आवु, हेटल आवु झीक हुआ. "

दताणी के युद्ध में विजय प्राप्त होनेसे महाराव सूरताणसिंह ने चौहान कुल को दिपाया, और देवडा चौहानों की कीर्ति जग प्रसिद्ध हुई, बल्कि कवि लोगों ने उस समय जो 'विरदावली' रची, वह अद्यापि पर्यंत 'देवडा चौहानों की बिरदावली' के नामसे जब कि आम दरबार होता है, तब ' पोळ बारोट ' प्रथम गाते हैं, और वह सुनकर देवडे चौहान मगरूर होते हैं. उक्त विरदावली प्रख्यात कवि आढा दुरशा ने रची है. जिस में कवि ने कहा है कि—

" नंद गिरि नरेश, कटार वंध चहुआण, दताणी खेतरा, जेत जुहार. "
" गल जोडे छत्र, धरियारा गढनहार, वंका भडारा, पादोरणं हार. "

" घोडे चढ हाथीयांरी गजधडारा विदुशण हार, सूरताण ग्रह नभ भूषण. "
" शरणाया साधार, शरणा थी वज्रे पिंजर. "

इस विरदावली का भावार्थ यह है कि–अर्बुदगिरी के राजा, कटार बांधने वाला चौहान (चौहानों का राज्य चिन्ह कटारी है.) दताणी क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाला को नमस्कार हो. जिसने दो छत्र धारी (राणा जगमाल व राव रायसिंह) को साथ ही मारे, और जो निश्चय(विजय प्राप्त करने का तय) करके आवे उनको गाढ देने (नाश करने) वाला, वंका (वहादुर) योद्धाओं को सिधा करने वाला, घोडे पर सवार होकर हाथीओं की सवारी वालों को व हाथीओं के समूह को विध्वंश करने वाला, गगन मंडल के ग्रहों का आभूषण रुप (नक्षत्रों में चंद्र सूर्य रुप) सूरताण, (यानी राजाओं रुपी तारा मंडल में सूर्य–चंद्र जैसी शोभा देने वाला.) शरणे आने वालों को अच्छा आश्रय देने वाला, और शरण रहने वालों का वज्र के पिंजर समान वन कर रक्षण करने वाला है.

महाराव सूरताणसिंह ने दताणी के युद्ध में किये हुए पराक्रम के विषय में, कवि आढा दुरशा व अन्य कवियों ने वहुत गीत कवित कहे है, लेकिन स्थल की संकोचता के कारण से सिर्फ उस समय में व उस युद्ध में हाजिर रहे हुए, प्रतिपक्ष के कवि आढा दुरशा के कवित में जहां जहां खास ऐतिहासिक घटना पाई गई, वह अंकित करके दूसरे विद्वता दर्शक व अतिशयोक्ति से वर्णन हुए गीत कवित व झूलणां का हिस्सा छोड दिया है.

इस युद्ध में महाराव सूरताणसिंह का नामी सरदार डुंगरावत सवरसिंह काम आया, जिसके स्मारक की छत्री वर्तमान समय में भी ' दताणी ' गांव के गोंदरे पर विद्यमान है. जो कि इस युद्ध में सिलदर के डुंगरावत मांडण का पुत्र ' कुंभा ' भी काम आया था, मगर उसका स्मारक ' दताणी ' में होना पाया नहीं गया.

सि. रा. ई. की पुस्तकमें (पृष्ट २३२ पर) लिखा है कि वादशाह अकवर की भेजी हुई सेना की वूरी तरह हार हुई, और थोडे ही आदमी भाग कर वचने पाये. महाराव रायसिंह का +नक्कारह, शस्त्र, घोडे तथा सामान, ऐसे ही सीसोदिया जगमाल आदि का सव सामान महाराव सूरताण के हाथ लगा. इस लडाई में महाराव सूरताण की फौज के थोडेही राजपूत मारे गये, जिसमें मुख्य देवडा सवरा नरसिंहोत था. शाही फौज में कितने प्रसिद्ध पुरुष मारे गये उस विषय में उक्त पुस्तक में जोधपुर रियासत की हस्त लिखित ख्यात परसे टीप्पणी में अंकित किया है कि राव रायसिंह के ३२ प्रसिद्ध पुरुष, सीसोदिया जगमाल के २५ राजपूत व दांतीवाडा के कोलीसिंघ के १५ आदमी काम आये थे.

+ सि–रा–ई–की पुस्तक में लिखा है कि राव रायसिंह से छीना हुआ नक्कारह सिरोही में अवतक है. यह नक्कारह व दूसरा सामान वापस लेने के लिये जोधपुर के महाराजा सूरसिंह ने यत्न किया था, परन्तु उसमें सफलता प्राप्त नहीं हुई.

प्रकरण ३१ वाँ.

क्लू देवडा चौहान. (महाराव सूरताणसिंह.)

(दत्ताणी के महानयुद्ध के वाद की ऐतिहासीक घटनाएं.)

शाही फौज की हार होकर सव सरदार काम आजाने का समाचार सूनकर, देवडा वजेसिंह अपने भाई धनसिंह के साथ भाग जाने का, महाराव सूरताणसिंह को मालूम होने पर महाराव ने कवि आसीया दूदा को कहा कि, इन दोनों को हरएक उपाय से मारना चाहिये, जिसपर आसीया दूदा उनके पास पहुंचा, और उनको भगते हुए देखकर, दो दोहे ऐसे कहे कि वह सूनकर वे वापिस लौटे. उनके सामने डुंगरावत सामन्तसिंह सूरसिंहोत युद्ध में उपस्थित हुआ, जिससे धनसिंह मारा गया, धनसिंह के मारे जाने पर आसीया दूदा ने पुनः वजेसिंह को भागते देखकर कहा कि—

दोहा.

" ग्रुह डगे अंवर ग्रवे, मेले हद महेरांण; वजमल देखे वेरीयां, तुं भागे तह तांण "
" नेर्जीयो मरे मरं, परीय पण अूण भंग पणो; धनीया डलो घरे हाले क्युं दरराजोयत. "

लेकिन इस ताने की दरकार न करते वजेसिंह मेवाड के तरफ भाग गया. मेवाड में वह महाराणा प्रतापसिंह की सेवामें उपस्थित हुआ, यह सूनकर महाराव ने दूदा के पुत्र दला आसीया को कहा कि, इसको वहां से भी निकलवा देना चाहिये, जिस पर वह मेवाड के महाराणा के दरवार में पहुंचा, उस वक्त देवडा वजेसिंह भी दरवार में विद्यमान था. आसीया दला ने महाराणा की प्रशंसा कर मुजरा करने वाद देवडा वजेसिंह की प्रशंसा में कहा कि—

" वजपाल सरव संसार वखाणे, काला केहर भडां कमाड. "
" मारे साथ मोहर मेवाड़ा, महालीया वीच वले मेवाड. "
" हे दरराज तणा रद रावण, रूक वखाणे राजा राण. "
" तें भागे दस सेहस तणा दल, दस सेहसां मांने दीवाण. "
" जद थ वजा कालंद्री जूडतां, ध्यावा मसण उतारे थांण. "
" तव वेदेस आहडा तोने, समर वेवाल वडा चहुआण. "
" गोडवाड चढतां गाहटीयो, गोडवीया अन राण गणे. "
" मेवाडे वजपाल मानीयो, मार सार संसार मने. "

कवि का आशय यह है कि हे! वजेसिंह तुमने पहिले तो कालंद्री के युद्ध में (राव कलाको सिरोही से निकाल ने को) मेवाड के सैनिकों को मार दिये थे, तव भी मेवाड

के महाराणा के दरबार में मौज कर रहा है, इसका कारण यह है कि बहादुर होनेसे महाराणा ने तेरे मार के भय से, तेरे को अपने पास रखा है.

उपरोक्त कवित सूनतेही देवडा वजेसिंह अपने मन में समज गया कि अब महाराणा के पास रहने में बहेतरी नहीं है. जिससे वह अकबर बादशाह के पास चला गया.

मूतानेणसी ने अपनी ख्यात में लिखा है कि दताणी का युद्ध होने बाद, देवडा वजेसिंह फिर अकबर बादशाह के पास फरियाद करने को पहुंचा, जबकि राठौर उदयसिंह (जोधपुर के महाराव मालदेव का तीसरा पुत्र जो मोटाराजा के नाम से मशहूर था.) को अकबर बादशाह ने जोधपुर का राज बक्षा, तब उसने भी अपने भतिजे व भायात महाराव सूरताणसिंह के हाथ से मारे जाने के कारण अपना वैर का दावा (महाराव सूरताणसिंह से) होनेका जाहिर किया, जिससे बादशाह ने जामबेग. और मोटाराजा (जोधपुर के महाराजा उदयसिंह) को फौज देकर सिरोही पर भेजे, उन्होंने सिरोही पर आकर बहुत बिगाड किया, और देवडा सामन्तसिंह, पता व तोगा यह तीनों भाई जो डुंगरावत सूरसिंह (कालंद्री वाले) नरसिंहोत के पुत्र थे, उनको व चीबा जेता खीमराजोत को चूक कर के मारे, जिससे राठौर वैरसाल पृथ्वीराजोत (बगडी ठाकुर जो महाराव सूरताणसिंह के आगे इस चूक में मारे गये सरदारों का जामिन होकर मोटा राजा के साथ बातचीत करने को ले गया था.) अपने हाथ से कटार खाकर मर गया. इस विषय में सि. रा. ई. की पुस्तक में पृष्ठ २३४–२३५ में लिखा है कि मोटे राजा ने वि. सं. १६४४ के फागुन सुदि ५ को नितोरा गांव को लूटा, और एक मास तक सारी फौज सहित वे वहीं रहे, परन्तु आबु पर चढ कर महाराव से लडने में सब प्रकार हानि देख कर, उन्होंने सोचा कि अब किसी प्रकार अपनी बात रखनी चाहिये. इस पर उन्होंने दगा करना चाहा, और आपस में सुलह करने के बहाने से, बगडी के ठाकुर राठौर वैरसाल पृथीराजोत की मार्फत किसी प्रकार का छल कपट न करने का वचन दिलाकर महाराव की तरफ के देवडा सामन्तसिंह सूरावत, देवडा पता सूरावत, राडबरा हमीर कुंभावत, राडबरा वीदा सिकरावत, चीबा जेता तथा देवडा सावंतसी, को अपने पास बुलाया, और उनको धोखे से राम रतनसिंहोत के हाथ से मरवा डाले, राठौर वैरसाल अपना वचन भंग होनेके कारण बहुत ही बिगडा, और उसने मोटे राजा के डेरे पर जाकर उनके सामने राम रतनसिंहोत को मारा, फिर वह भी अपने ही हाथ से कटार खाकर मर गया, जिसका स्मारक चिन्ह (चबूतरा) नितोरा गांव में बना है.

दंत कथा में यह बात प्रसिद्धि में है कि बगडी ठाकुर वैरसाल महाराव सूरताणसिंह

के मामा का पुत्र होता था, और मोटे राजा की सेवा में उपस्थित था, उसने देवडा सामन्तसिंह सूरसिंहोत को अपने साथ मोटा राजा के पास बातचीत करने के लिये ले जाने के वास्ते बहुत आग्रह करने पर, महाराव सूरताणसिंह ने कहा कि–देवडा सामन्तसिंह मेरे कलेजे के बराबर है, जो तेरे को सुपुर्द करता हुं, जिसके लिये कवि ने कहा है कि.

" सोढ पयंपे वैरसल, सूणजे मामावत; देऊ सामन्तसिंह देवडो, मो कालज तों हथ. "

राठौर वैरसल ने यकिन दिलाया कि अगर इसको कुछ धोखा होगा तो, उसके एवज में मैं अपना कलेजा दूंगा, कहा जाता है कि सामन्तसिंह का चूक होने पर बगडी ठाकुर का कलेजा एक सुवर्ण थाल में रखकर उसके आदमी ने महाराव के पास भेजा.

मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि देवडा सामन्तसिंह का चूक हुआ, उस वक्त देवडा विजा और जामबेग, मोटे राजा से फौज लेकर दूसरी तरफ दौडे, जहां देवडा विजा को राव सूरताणसिह ने मार दिया. सि. रा. ई. की पुस्तक में इस विषय में लिखा है कि, इस प्रकार उनका उद्योग निष्फल होने पर देवडा विजा वासथानजी की तरफ से आबु पर चढने के इरादे से, जामबेग आदि को सेना सहित उधर ले चला, जिसकी खबर मिलते ही महाराव सूरताण भी वासथानजी के निकट आ पहुंचे, और वहीं लडाई हुई, जिस में विजा मारा गया. जामबेग का भाई घायल हुआ, और उनकी फौज भाग निकली.

इस विषय में दंत कथा में यह बात प्रसिद्धि में है कि देवडा वजेसिंह जब कि वासथानजी के तरफ होकर आबु पहाड पर चढने लगा, तब महाराव सूरताणसिह का सामन्त सोलंकी सांगा (जो देवडा वजेसिंह का मसिआई भाई होता था.) उसके सामने आया, और उसके हाथ से वजेसिंह मारा गया. इस विषय में कवि आसीया दला का स्रीने अपने तरफ से रचे हुए कवित्त में कहा है कि—

" परह बीडो लीयां हुकम पातशाह रे, आवीयो वजो चढ नंदगीरी उपरे "
" पर चढे राव सुरताण सू पाधरे, हाकले ओ रीयो वाज हरराज रे "
" गाजीआ वाण नीशाण सर गरगडे, चाव बे बे कटक आवीआ चापडे. "
" धूणीयां सैल जी फेकीयां धड धडे, देवडों उपरे ओरीयो देवडे. "
" सार झड मंडीयो उगता सूररो, खरां खोटां तणो निसरे ततखरो. "
" हाकतो थाट आवीयाटरो दाहरां, पवंग परताल गो मांझीयां पाधरां. "
" खींग भाजां पछे मांझीयां खडखडे, वजड धड उकरड छाडीया वेहडे. "
" प्रसण सांगा जसा पगां आगल पडे, चालीयो वजो वैकुंठ अणीयां चढे. "

वजेसिंह के विषय में कहा जाता है कि जब वह मारा गया, तब उसका * सिर

* वजेसिंह का धड बावली जाने के विषय में कविने कहा है कि—
" सरताण जतो कर खाग रुला है, मत्र एवडा दीव सजा; भाठां गाऊ तणों आंतरो, वदन अने धड हुओ वजा. "
" आतो वात सणी ऊर अंतर, मोटा रुपर्हा वेर मनः धड ले गया पाछला धाडायेत. वेरायत ले गीया वदन. "

वासथानजी में पडा, और धड घोडा पर सवार हुआ वैसांही रहा था, जो लेकर उसका घोडा उसके वतन के गांव ' वावली ' (वासथानजी से करीव सात कोश पर) पहुंचा. इस युद्ध में ÷ सांगा सोलंकी भी काम आया. इन दोनों के स्मारक आबु पहाड के उत्तरी ढाल में विद्यमान है. (वासथानजी के नजदीक)

वजेसिंह काम आनेसे जामवेग भाग निकला. सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि मोटे राजा ने भी वहां से कूच की, और राव कला को सिरोही में छोड कर वह चला गया, मगर जव कि राव कला ने सूना कि महाराव सिरोही तरफ आ रहे है, तब वह उसके आने पहिले ही, सिरोही छोड कर चले गये.

अकवर नामा में अनेक वक्त सिरोही नगर शाही फौजने सर करने का लिखा गया है, परन्तु सिरोही की हस्त लिखित ख्यातें व कवित्तों से मालूम होता है कि सिरोही के देवडे चौहानों को जितनी कीमत आबु के पहाड की थी, इतनी सिरोही नगर की न थी, जिससे उन्होंने आबु का संरक्षण करने की ही हर दफे चिन्ता रखी थी, वल्कि जो जो लडाईयां हुई वे सव आबु पहाड की तलेटी में हुई थी.

शाही फौज को शिकस्त मिलने से अकवर वादशाह ने पुनः २ सिरोही रियासत पर आक्रमण करना जारी रखा. जोधपुर के मोटे राजा ने राव कला को अपने पास रखा, और उसको सिरोही का राज्य दिलाने के वहाने से कई दफे फौज भेजी, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई, तव भी राठोरों ने अपनी ख्यात में महाराव को × एक दफे

" सत्र दी वडा वहे सामधु, वजां जकां नांह दिहवले; माथो धड वेह मेहलाणो, बल करता जुजवा वले. "

" हरराजुवत संग्राम होवतां, सोद सकर साहे सजड; भाण तणै कीधा वेहु भागां भोम मांगता तके भड. "

÷ सोलंकी सांगा बहादुर राजपूत था. देवडा वजेसिंह से इसकी हरहमेश बोल चाल होती रहती थी, सोलंकी सांगा का कद छोटा होनेसे, देवडा वजेसिंह उसकी मजाक किया करता था कि छोटे हाथ में बडी तलवार बूरी दिखती है, जिसपर सोलंकी सांगा कहता कि जब मौका आता है तब यह छोटे २ हाथ बडे हो जाते है. वह कोइ दिन दिखा ऊंगा. जबकी देवडा वजेसिंह को महाराव सूरताणसिंह ने मुसाहिब पद से हटा दिया और वह ' वावली ' में जाकर रहा, तब भंडार की कूंची उसके पास होनेसे सोलंकी सांगा कूंची लेनेको गया, उस वक्त वजेसिंह स्नान कर रहा था, सोलंकी सांगा ने घोडे पर से ही अपना भाला बताकर कहा कि भंडार की कूंची लाओ, तब वजेसिंह ने टालाटूली करना चाहा, परन्तु सांगा ने कहा कि कूंची ईस भाले की फणी में इसी वक्त लाकर डालो, वरना छोटे २ हाथ आज कैसे बडे होते है वह देखोगे. ऐसा कहकर उसने वजेसिंह की छाती पर भाला ताका. वजेसिंह को इतना भय पैदा हुआ कि उसने वहां बैठे २ कूंची मंगवा कर भाले की फणी में सांगा के कहने मुआफिक डाली.

× महाराव सूरताणसिंह को बादशाह के पास ले जाने के विषय में बीकानेर की ख्यात में लिखा है कि–' जगमाल के सिरोही में मारे जानेके कुसूर पर अकबर बादशाह ने राव रायसिंह को फौज देकर सिरोही भेजा. उन्होंने चार दीन तक लडाई की और पांचवें दीन सिरोही के राव को पकड लिया. जिस पर राव के चारण दूदा आसीया ने राव रायसिंह को शाइरी सूना कर खुश किया तो रायसिंह ने उसकी शाइरी के इनाम में राव सूरतान को बादशाह से सिरोही दिलाने का वादा किया, और बादशाह के पास पहुंच कर इस करार को पुरा किया. (सि. रा. ई. पृष्ट २३५–२३६ की टीप्पणी.)

टॉड राजस्थान की दूसरी जिल्द के प्रकरण ६ वां में राठोरों की ख्यात में लिखा है कि–जोधपुर के राजा जसवंतसिंह के समय में आसोप का कूंपावत मुकुंददास (नाहरखां) आबु पर से राव सुरतान को छल से पकड कर उक्त महाराजा के पास

पकड कर बादशाह के आगे ले जाने का लिखा है, परन्तु सिरोही राज का इतिहास के लेखक ने वह बात अस्वीकार की है.

महाराव सूरताणसिंह ने महाराणा प्रतापसिंह की नांई अपनी स्वतंत्रता का रक्षण किया इतना ही नहीं, परन्तु इसने दूश्मनों को जेर बार कर के आबुराज पर किसी को पैर न रखने दिया, और जिन्दगी भर दुश्मनों के सामने खडे रह कर अर्बूद भूमी को पराधिन न होने दी, बल्कि ऐतिहासिक दृष्टिसे इसके राज्य काल का अवलोकन किया जाय तो मालूम होगा कि, सिर्फ मुगल ही नहीं परन्तु अन्य दूसरे राजपूत राजाओं भी इसके कट्टे दुश्मन बन बैठे थे, लेकिन इसने अपने पास कमी फौज होने पर भी, अपने बाहुबल पर विश्वास रख कर किसी दुश्मनों को सफलता होने न दी. इसकी राज्य-नीति का अवलोकन करने से यह भी पाया जाता है कि कायरपन इसमें मुतलक नहीं था, और जैसा वीरत्व में यह श्रेष्ट था वैसाही और सद्गुणों से भी यह भूषित था. यह साहसिक राजपुत्र था, परन्तु इसके हाथसे एक भी 'सहसा' कार्य नहीं हुआ, बल्कि दूसरे बहादुर चौहान राजाओं ने अपना बलीदान देकर अपने राज्य की समाप्ति की, वैसा नहीं होते इसने यश, कीर्ति अपने सरदार व अपनी भूमि का भी संरक्षण करके ऐसी नामवारी प्राप्त की, कि जिसका लाभ इनके वंशजों को भी मिला, और मुगल काल के ताबेदारी के पवन से सिरोही के देवडे चौहान बाल २ बच गये.

कवि आढादुरशा को पीछेसे इसका बहुत परिचय हुआथा, उसने इसकी+ विरदावली

ले गया, और वे इनको बादशाह के दर्बार में ले गये, परन्तु ये (राव सूरतान) बादशाह के आगे सिर झुकाना नहीं चाहते थे, इस लिये इनको एक छोटी सी खिडकी के मार्ग से इस अभिप्राय से ले गये कि सिर झुकाये विना भीतर जाना ही न हो सके, परन्तु इसका मतलब ये जान गये, जिससे इन्होंने पहिले पैर अन्दर डाले फिर बिना सिर झुकाये भीतर गये. (सि. रा. ई. पृष्ट २४०)

उपरोक्त दोनों बातें सही नहीं होनेका कारण यह है कि मूता नेणसी (जो राठौरों का मौजिज मुसाहिब था.) ने ये बातें अपनी ख्यात में लिखी नहीं है, अगर वैसा हुआ होता तो जरुर वह अपनी ख्यात में यह अहवाल दर्ज करता, वैसे जगमाल काम आने बाद, बीकानेर के राव रायसिंह का सिरोही पर फौज लेकर आनेका अहवाल अकबर नामा में भी नहीं है. उसी मुआफिक जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह वि. सं. १६९५ में गद्दी पर आये थे, उसके पहिले (२८ वर्ष पर वि. सं. १६६७ में) महाराव सूरताणसिंह का देहान्त हो चूका था.

सि. रा. ई. की पृष्ट २४१ पर लिखा है कि—' इनको मेवाड के महाराणा प्रतापसिंह की नांई स्वतंत्रता ही प्रिय थी, जिससे बहुधा अपनी सारी अवस्था इन्होंने आराम छोडकर लडने भिडने में ही व्यतीत की. इन्हों ने ५२ लडाईयां लडी, परन्तु धैर्य न छोडा. × × × यह बडी सेना को कुछ भी नही समझते थे तथा सदा वीरता के साथ उसका मुकाबला करते थे. शाही फौजों से ये कई बार लडे और उनको शिकस्त दी. अकबर नामे में लिखा है कि ये अकबर के पास गये थे. यदि ऐसा हुआ हो तो भी वह नाम मात्र के लिये हो. इन्हों ने बादशाह की आधीनता कभी स्वीकार न की.'

+ कवि आढा दुरशा ने कहा है कि.

गीत भाखडी.

"ऐह रंग से धणीजी, सूरपत सम वडो, अधको ईखतांजी, धारण धूवडो, दन वध दीपीयोजी, परखंड प्रघडो, माजी मारणोजी,"
"दो मज देवडो, माझीयां मारण डार, माझी सार धार संघार, जणीआर जेत जूहार, जुध प्रभ भांजणो गज भार उदार वड दातार"

में इनके पूर्वजों से जो जो गुण महाराव सरताण ने ग्राह्य किये थे, उसके विषय में कहा है कि वीरता में जालोर के रावल कान्हडदेव, मालदेव, हमीर, वीरमदेव, समरसिंह, सोही, सोम, सातल साल्हा, सोभ्रं के जैसा है, यानी यह सब चौहान, अलाउद्दीन बादशाह के साथ अपनी स्वतंत्रता और नेक टेक के वास्ते अतूल पराक्रम बताकर काम आये थे.

लडाई में दुश्मनों को छीन्न भीन्न करके मार डालने में मानराव (मरहूम महाराव मानसिंह) जैसा है, बलिष्टपन में जालोर के रावल उदयसिंह जैसा ही अत्यंत बलवान हैं, महाराव रायसिंह के मुआफिक ही दूसरे राजाओं को शरणे रखने वाला है, महाराव अखेराज जैसा भूमि सम्पादन करने वाला है, मरने मारने के विषय में महाराव जगमाल जैसा, और दूसरों के साथ मेल मुलाकात रख कर क्षात्रवट का रक्षण करने में महाराव लखा जैसा है.

यह महाराव की वीरता के विषय में जितनी प्रशंसा हुई है, उतनी ही इसको + दातारी भी होना प्रसिद्धि में है. इसके समय के दानपत्र के प्रमाणों के इतने शिलालेख,

---

" उग्रन, सोम मार मैमाग, अदार गीर, भग्तार, इल पर सोढ कुल सीणगार, ॥ १ ॥ सुरतांण चहू सूरतांण, समा वड सत्र तप "
" सुरतांग, केवाण मृह सल्हाण कीधा राड रावत गण, दुनीआण सह वाखाण दाखे चाह उर चहुआण, मेहराण चित्त "
" हिन्दुआंण माथे, माण रा कुल भांण, ॥ २ ॥ बरदाल भींच भूनाल बानू, सत्रां काल संचाल, लटीयार अस पखराल लासां, "
"कांगू राल कमाल, शिवमाल मद दाताल मिथुर, कवि वंटाल लेकाल, कर माल हत्त छात्राल कविलां राव घर रख पाल ॥३॥ "
"उर वाहंद अर थाह अवन्ना नाह नीयोम मनाह, हय वाह होये गन गाह हिन्दु सवल ताह सराह, कीय क्राह वाह सवाह केवी "
"पतशाह लग छत्रवाह, प्राजो वदण वेर वराह, ॥ ४ ॥ संझान राग संगीत सुणजे, प्रात वेद पुरांण, मध्यान होय दीवांण गह मह "
" इन्द्र कर आथाण, लख दांन दे वारवांण लीजे एक एक मर छत्राण, चहुआण प्रतापो लखा चावर, सरणुर सुरताण, " ॥ ५ ॥
"गोकुली नाथ कर्णीग रो कुल नाम कान्हडदे, माल्हदे राण हमीरदेवण वीर वीरमदेव, समरसी, तोही सोम, सातल, साल सोभ्रम देह"
"सूरताण लाखण गोग सोहे त्रुहण तेजल देह. ॥ ६ ॥ मारको जिमडो राव मानो, अतल्ली उदल, रायसिंह जेम ओठम रायां, "
" दान दुनमल; इल लयण जमदो गव अखमल, जेण विध जगमल, लोढणो सात्रव जेम लखमण, भाणरो जग भल ॥७॥ सिव एक रवि"
" शशी दोय, त्रण संन वेद चार विचार, पंचपाल, रवर रतु जाम प्रगटो, उदत सात अचाल, आठ कुल अनड नाग नव कुल, "
" दशेही दिगपाल, सो भाग दे वर तपो सूर गिर सोढ कुल सणगार. " ॥ ८ ॥

+महाराव सूरताणसिंह ने ८४ गांव देने के विषय में कवि ववडिया खेमराज ने अपने कवित में कहा है कि " पालिगा लाड कवियां अपार, सासण चोरासी दियां सार. " जिसमें अपने पुरोहितों को वि. सं. १६३४ में कोजरा गांव देनेका व वि. सं. १६६३ में आढा दुरशा को क्रोड पसाव के साथ पेसुआ गांव देने का भी समावेश होता है. इसकी दातारी के विषय में कवि आढा दुरशा ने कहा है कि—

पेसुआ गांव क्रोड पसाव के साथ आढा दुरशा को दिया उस विषय के कवित मेंसे

× × × ×

" सहत दाख सुंढाल जीनं सहता जलवती; सु सुवरण समशेर, सहत वटुवा भगवती. "
" कूंचो सहत कमाड, गरथ सुं सूवरण माला; सित्तर लाख रोकडा, गाज करताकमाला. "
" पेसवा गाम तांबा पतर, अण भंग सासन आपियो; सूरताण राव भाणगरे कवचो दारीद्र कापीयो. "

महाराव सूरताणसिंह के दातारी के विषय में और राजाओं के साथ मुकाबला करके कवि आढा दूरशा ने कहा है कि—

" पाने पुछो शशी सुर पयंपो, अंबर चढियो ईपो; दानेसरी पृथी बीच दीठो, कोई सूरताण सरीखो. "
" सोले कला सहन कर स्वामी, रखेन मनमां राखो; भांण तणा जे हो दाता भल, दीठो वे तो दाखो. "

ताम्रपत्र व गीत कवित विद्यमान है कि, उनको एकत्र करके लिखा जाय तो एक छोटासा ग्रंथ होवे. वे सब का सारांश यह है कि, इस महाराव ने ८४ गांव सासनबंध कर दिये थे, और अरहट आदि भूमी के दान, इतने दिये है कि, उस समय के सिरोही रियासत के हद के गांवों में शायदही कोई गांव बचा हो कि जिसमें महाराव सूरताणसिह ने दी हुई भूमी के दान पत्र का शिलालेख न हो. बल्कि सिरोही रियासत के ब्राह्मणों में " महाराव सूरताणसिंह के तरफ से जमीन मिली थी, " ऐसा मुआफि के प्रमाण में कहने का जगह २ सुनने में आया है.

वीरविनोद नामक हस्त लिखित पुस्तक में महाराणा अमरसिंह को ख्यात में लिखा है कि महाराणा उदयसिंह के बेटे सगर ने अपने भाई जगमाल का बदला लेकर सिरोही को बरबाद किया था, परन्तु मू. ने. की ख्यात में व दूसरी और किसी ख्यात में राणा सगर ने सिरोही को बरबाद करने का हाल नहीं मिलता है.

महाराव सूरताणसिंह की राणीयां के विषय में बडुआ की पुस्तक में वि. सं. १६५१ में इसने बडुआ रतनसिंह को सीख दी वहां तक में, आठ राणीयां होना अंकित हुआ है, जिसमें जोधीजी ' रायदेकुंवर ' पाटोली के जोधा आशकरण जयसिंहदेवोत की पुत्री से कुमार रायसिंह व कुंवरी बाई जेतकुंवर के जन्म हुए. बाई जेतकुंवर का विवाह मेवाड के महाराणा जगतसिंह के साथ हुआ था, दूसरी राणी भटियाणीजी 'मयादेवी' जेसलमेर के भाटी भोजराज वाघावत की पुत्री से कुमार सूरसिंह का जन्म हुआ. सि. रा. ई. को पुस्तक में इसके बारह राणीयां होना अंकित किया है, जिसमें इडेरची चंपा कुंवर ने वि. सं. १६३९ में सिरोही के पास ' चंपावाव ' बनवाई.

" दूजा लखा सरीखो दूजो, दने प्रमाणे दावो; शाख रखां पूछां शशी सूरज सुने तो समजावो. "

" अंप दलंष कह्यो एकणव, निग्रह दान न दीठो; आबु गिरंदने राव आबुओ, दूजी ठोर न दीठो. "

नोट—महाराव सूरताणसिंह के समय में वि. सं. १६२९, १६३२, १६३४, १६३७, १६३८, १६३९, १६४०, १६४१, १६४२, १६४७, १६६०, १६६३, व १६६४, यह संवतों के कईएक ताम्रपत्र मिले है. सिरोही इलाके के राजगुर ब्राह्मणों के गांवों में व अरहट पर जगह २ शिलालेख गाडे हुए है, उनको वे लोग महाराव सूरताणसिंह ने दान में दी हुई भूमिके प्रमाण पत्र होना बताते है, परन्तु उसमें बहुत से लेखों के हरूफ पढे नहीं जाते हैं. कहा जाता है कि जालोर के सोनगरे चौहान के राजपुरोहित राजगुर ब्राह्मण थे, और उसी मुआफिक देवडे चौहान के पुरोहित भी वे लोग थे, परन्तु पीछे से औदिच ब्राह्मण की गोरवाल शाखा के ब्राह्मण राजपुरोहित हुए है. सिरोही रियासत में कईएक गांव में गोरवाल ब्राह्मण आबाद है. वैसे डुंगरी, साकदरा, नानरवाडा, खडात व वाडेली गांव के राजगुर ' पुरोहित ' कहे जाते है. सिरोही के चौहानों के राजपुरोहित ' कोजरा ' गांव के गोरवाल ब्राह्मण है, और व्यास पद ' श्रीमाली ब्राह्मण ' के तरफ है, व उनके तरफ अरहट खेतों होना पाया जाता है.

नोट—महाराव सूरताणसिंह की माता मेडतणीजी ' राजांदेवी ' मेडता का .राठौर मेघराज उदयसिंहोत की पुत्री होना बडुआ की पुस्तक में लिखा है. वैसे वि. सं. १६३४ के अषाड वदि ८ के ताम्रपत्र में महाराव के नाम साथ ' करमादेवी, ' धीरबाई, समरदेवी, मानदेवी, व लूणदेवी के नाम अंकित हुए है. अनुमान होता है कि यह नाम उनकी माजी व दादी मा के है, क्यों कि धारबाई (महाराव मानसिंह की माता होती थी जिसने वि. सं. १६३४ में आबु पर मानेश्वर का मन्दिर बनाया व ' धारावती ' नामक वावडी सिरोही में बनवाई.) उस समय में विद्यमान थी.

इस महाराव के समय के ताम्रपत्रों से पाया जाता है कि वि. सं. १६२९ में देवडा वजेसिंह व देवडा सवरसिंह इसके मुसाहिब थे. वि. सं. १६३४ में केशवराय व साहा खीमा भीमसिंह थे. वि. सं. १६३८ में लखावत +तेजसिंह, वि. सं. १६३९ में देवडा तोगा सूरसिहोत (कालंद्री का) व लखावत तेजसिंह, वि. सं. १६४१ में दे. मेहाजल, वि. सं. १६४७ में लखावत तेजसिह, व वि. सं. १६६० में केशवराय था.

महाराव सूरताणसिह का देहान्त वि. सं. १६६७ में होनेका हरएक ख्यात से उपलब्ध होता है, सि. रा. ई. की पुस्तक में इसके देहान्त की मिति वि. सं. १६६७ आसोज वदि ९ की होना अंकित हुआ है. इस महाराव के देहान्त होने पर इसके मरसिये कइ एक ॐकवियों ने कहे है, जिसमें कवि आढा दुरशा ने अपने मरसिये में उक्त महाराव

+ लखावत तेजसिंह महाराव सूरताणसिंह के काका प्रतापसिंह रणधीरोत के पुत्र था. जिसके नाम से 'तेजावत' कहलाये गये. तेजावतों के पाटवी भटाणा ठिकाने के ठाकुर है.

※ महाराव सुरताणसिंह के कई एक कवियों ने मरसिये कहे है उनमें से आढा दुरशा ने महाराव सूरताणसिंह को अग्नि संस्कार होने बाद शमशान भूमी से घरपे आया तब अफसोस के साथ उनके गुणानुवाद के मरसिये कहे हैं, उसमें कवि कहता है कि—

दोहा.

" मुख मंगळ घर मंगळीक, मीजलस मंगळवार. "
" मंगल रूपी महा मण, साहेब मना संभाल. "

" आज पडे असमान, आज घर कंकण भागो; आज महा उतपात, नीर घू तारे लागो. "
" आज कळू उयल, आज कव आदर छूटा; आज टले आसंग, आज सनमंध विछूटा. "
" हिन्दवाण आज खंडीत हुओ, विदग ब्रन विरामयो; प्रागवट आज पड्यो पृथी, राव सोढ विसरामीयो. "
" आज सत दे दीन, भाव हिणा छत्रपति; आज दान दुबला, आज सुहंगो सरस्वती. "
" खत्रवट विलखो आज, खग झलां कोण झहे; साडे कुण चंचलां कीत पांगळी न चहे. "
" कोण दीये घोड हाथी कवां, वारेसको वन टीयो; सूरताण विवनो माणरो, पृथी रूप पालटीयो. "
" राव रायां सम घरण, राव रंका साधारण; राव सु पात्रां दयण, राव कुपात्र पालण. "
" राव वरसण कळा, राव कारंर तरसण; राव परखण गुणा, राव मानणां दरशन. "
" दोहु दीन चाह मांडणो, हिन्दु मुसलमानरो; बहु दान देन बळो जावने त्यां महजे सूरताण रो. "
" दान मान दयनो, जको छोरू जाणतो; जिसु बल हालतो तको खुंदोया खमंतो, "
" झुमंतां झगटतां, लाड करतो ने ले आतो; मावितरा जीम मोज मेल अमेझ मंगातो. "
" सो लाख देण सिरोहीया, जण सुहगा मोळविया; सरताण मरण फुटो नहीं, हाय हाय फुटा हीया. "
" अकज सकज ओलखण, पात्र कुपात्र परखण; हिन्दु धर्म राखवण, कवां मन वात परीक्षन. "
" गजवडा आंगमण, तुरी गज दांत चढामण; देण अथ मर वथ, प्रित चहु दशा चलावण. "
" सूरताण सकोमल भालीयण, घणी दया लाखां घरे; अरबद पहाड अरबद पर, ए कारूं वळ आवरे. "
" हुं जाऊ शाह द्वार, तो पण नेह न बोलावे; जो जाऊ कर मतो, पण प्रगट मळतां जणाये. "
" जो जाउं दम महम, तो इसो आदर न पाऊ; ने एकण असब कारणे कोसुं जाडे चे जाउं "
" पण वल कुळ मळण, बांधव कारण; ध्रु मेरू जेवो नचे, भाण रो दान बायां भरण मो सूरताण न सांपजे. "
" जके जोड जाणसी, तके जोडसी किरती; जोडी नह जाणसी, तके सीखसी सुमती. "
" विजड विसारसी, जके आवडे उपगारी; खाधा चोर बंधरे तके कव अग्याकारी. "

के साथ उसका जो सम्बन्ध होनेका वणन किया है, उससे पाया जाता है कि, कवि आढा दुरशा उसके अंगत परिचय वालों में मुख्य था, बलिक जब कि महाराव को अग्नि संस्कार हुआ, तब यह शिघ्र कवि उसको जलते हुए देख कर शमसान भूमि पर कहता है कि.

" वेहु गालां भसन भजले, शत्रु की ऊर जले सूरताण; जमणी कुख जले जोधपरो, चितोडो दावी चहुआण. "
" कै, सख कमल हैया विच केवा, काढ न सकिया सोढ कने; ए कोई पेट तणे होमीजे, दहु मो रा दशोत दने. "
" दहु दाढां खल जले देवडा, उर पींजर भजले अनेक; भजल्या है कण सिंग भजले, है कण जगल धड हडे एक. "
" वनर भंडार हूढालो वाला, दल जलिया जल तेज दने; अंदर तोहारे राव आबुआ, बल जरडुए चात्र वने. "
" जनम मरण लगे जेरवीया, मेहपत छोडे न शकिया माग; मारू तो घणा घणा मेवाडा, दधिया थने पढंता दाघ. "
" त्रिजड हरा न शकिया वाले, दाखत तों ऊपर दाव; शाख घणा गलिया सुनरंजन ए राख होई छूटा हण राव. "

" सोय भाट सोय चारण सो गणी सम सरसेतो सारखो; सरताण हवे सो लाभ से, पात्र कुपात्र पारखो. "
" पे वामण अंधीयण, वाच कारणे वरसाले; चोमासे पोहता, क्रोड तेतिस पियाले. "
" इन्द्र रूद्रसूर जेठ, सहु अठ्यासी रूप हु; वाण क्रमे रस वृति सोह बेठा सुर वृष हुं. "
" सूरताण कना बल सांभले, सरग आव अखे सही; मछरिक तो हारो मेलीयो, नाग भार झीले नहीं. "
" आभ सिंग आमियां, सींघ लाया सुरताणे; सिंघ उखलोया राय, नेदलाये राय राणे. "
" दोघ सिंघ पहार, भडे भेजिया अभंगी; सिंघाले मांडीया सिंघ, साथा त्रि सभी. "
" सिंघाल वहण स प्रसन, जे इसा सिंघ सर आवरे; जणशार सोढ जीती गयो, सींग अलागे का करे. "
" मन रूखे जे मले, खेम पुछसी जे वातां; गुण धनक देखसी, मुह लागसी कु पातां. "
" एकला जीमसी, कीये ऐकला अमल्ले; वीच दई दे पुठ, ठठे होवसी अमहले. "
" आबुआ राव सत्रले अरथ, वले काज नत्रले वरस; सठ मठ लठ देखे सुपह, सोढ तियार संभ रस. "

कवि आढा दुरशा महाराव सूरताणसिंह के मरसिये कहने बाद अपने दिल को समजाने के वास्ते कहता है कि---

" रह आबु रहे सरणवा, खीम मले खेलाऊ; सोढ अबे न संपडे, गो राजेसर राऊ. "
" आबु में बोलावीयो, तुं मांने न बोलाय; आपां सोढ सिधावतां, क्या मलीयो न राव. "
" आबु खीज मां मोगकर, खम तुंदी मछरिक; धारा खमीयो भोज रज, खम्यो उजेणी वीक. "
" दोय दोय सत्र पछाडणां, करणा क्रोड पसाव; कालागर मीलसी, राता मोंहरो राव. "

प्रकरण ३२ वां.

<=0000000000000=>

चलू देवडा चौहान (महाराव रायसिंह (दूसरे) व महाराव अखेराज)

नं. १६ महाराव रायसिंह (दुसरे) अपने पिता के पीछे सिरोही की गद्दी पर बैठा. मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि यह भोला राजा था, इसके भाई सूरसिंह ने जागीर ज्यादह लेना चाहा, जिससे दोनों भाइओं दरमियान विरोध पैदा हुआ. देवडा भैरवदास सवरावत व दूसरे सब डुंगरावत देवडों ने सूरसिंह का पक्ष किया, और लखावत पृथ्वीराज सूजावत ने महाराव का पक्ष लिया, परिणाम यह हुआ कि दोनों भाई के बीच में युद्ध हुआ, जिसमें सूरसिंह हार गया.

सि. रा. ई. की पृष्ट २४५–२४६ में इस विषय में लिखा है कि देवडा सूरसिंह महाराव का मुसाहिब बना, और उसने अपना पक्ष दृढ करके गद्दी लेनेका ढंग अखत्यार किया. उसने सिरोही का राज्य छीनने के लिये जोधपुर के महाराजा सूरसिंह को अपना सहायक बनाना चाहा, और राठौरों के साथ + वैर मिटाने को यह शर्तें की गई कि, महाराजा सूरसिंह का कुमार गजसिंह का विवाह देवडा सूरसिंह की पुत्री के साथ होवे, और दूसरे २९ सरदार जो दताणी में मारे गये थे, उनके रिश्तेदारों के साथ देवडा सूरसिंह के पक्षवाले अपनी पुत्री के विवाह करे, और देवडा सूरसिंह को सिरोही की गद्दी पर बैठलाया जावे, उसके एवज में वह देवडा वजेसिंह का जडाऊ कटार, कुंवर गजसिंह को नजर करे व राव रायसिंह के डेरे का सब सामान (जो दताणी के युद्ध में महाराव सूरताणसिंह के हाथ आया था,) तथा उसका नक्कारह जोधपुर महाराज को वापस दे देवे. इतना होजाने पर महाराजा सूरसिंह उसको बादशाह के पास लेजाकर शाही सेवा में दाखिल करा कर, ऐसा प्रबंध कर देवेंगे कि देवडा सूरसिह का पुत्र भी सिरोही राज्य से कभी न निकाला जावे. ये शर्तें की तहरीर वि. सं. १६६८ के फालगुन महिने में हुई, और राठौर सूरसिंह ने उसको सिरोही का मालिक स्वीकार कर लिया, परन्तु जब कि दोनों भाईओं का युद्ध हुआ तब महाराव की विजय हुई, और सूरसिंह को सिरोही राज्य छोड कर भागना पडा.

सूरसिंह भाग जाने पर लखावत पृथ्वीराज महाराव का मुसाहिब हुआ. मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि लखावत पृथ्वीराज ने देवडा वजेसिंह के मुआफिक ही ढंग अखत्यार करने से दोनों के दरमियान विरोध हुआ. पृथ्वीराज के बेटे भतीजों

+ दताणी के युद्ध मे राठौर राव रायसिंह चन्द्रसेनोत आदि महाराव सूरताणसिंह के हाथ से मारे गये थे, उसका बदला अदा करने के वास्ते वैर मिटाने की तजवीज महाराव के भाई सूरसिंह ने की.

ने अच्छे २ राजपूत अपने पास रखकर महाराव पर जलने लगे. यह सूनकर मेवाड के राणा करणसिंह ने दोनों को समजाइश करने के वास्ते उदयपुर बुलाये, और समजाइश की, परन्तु पृथ्वीराज, रामसिंह, रायसिंह, (यह दोनों पृथ्वीराज के भतीजे थे.) नाहरखान, चांदा, (यह दोनों पृथ्राज के पुत्र थे.) की ऐसी रीत पाई गई कि वे राणा से भी बूराई करने को तैयार है. यह बात राणा के आदमी को मालूम होने पर उन्होंने राणा को कहा कि इसमें सार नहीं है, जिससे राणा ने वहां से सीख दे दी.

वि. सं. १६७४ मागसर सुद ५ को महाराव रायसिंह ने कवि आढा दुरशा को ÷ जांखर गांव बक्षा, और देवडा भैरवदास को अपना मुसाहिब बनाया. देवडा पृथ्वीराज का बल दिन दिन बढता जाता देखकर, महाराव रायसिंह ने इसी साल में राठौर कुमार गजसिंह की तरफ से नियत हुए, जालोर के थांणे के हाकिम भाटी गोपालदास व भाटी दयालदास को कहलाया कि यदि तुम पृथ्वीराज को सिरोही की हदसे निकाल दो तो हम तुमको ❀ १४ गांव देंगे, जिसपर कुंवर गजसिंह की आज्ञा से भाटी दयालदास जोधपुर की फौज के साथ पृथ्वीराज पर चढा, और उसको सिरोही राज्य से निकाल दिया, परन्तु वह पीछा आजानेसे महाराव ने वे गांव वापिस ले लिये.

देवडा पृथ्वीराज अब महाराव और देवडा भैरवदास को मारने का मौका ढूंढने लगा. उसने अपने बेटे व भतीजों को पहिले से समजा रखे थे, उस मुआफिक एक दिन महाराव रायसिंह सारणेश्वर गये थे, और देवडा भैरवदास पीछे रहा था, जिससे मौका पाकर उन्होंने भैरवदास को चूक कर मार डाला. महाराव उस समय सूनकर बैठ रहे, और भैरवदास के पुत्र रामसिंह को × पाडिव के साथ उसके पिता की जागीर का पट्टा देकर अपने पास रखा.

महाराव रायसिंह की राणीयां के विषय में दूसरी ख्यातों में कुछ खुलासा नहीं है, परन्तु बहुआ की पुस्तक से पाया जाता है कि इसके तीन राणीयां थी, जिसमें वीरपुरीजी

÷ जांखर गांव देने के विषय में कवि आढा दुरशा ने कहा है कि—

दोहा.

" सम्मंत सोल चीमोतरे, पंचम मगसर पाय; दिये जांकर कव दुरश को, राजडसी माहाराय. "

छप्पय.

" समंत सोल चीमोतरे, माह मागसर तय पंचम; वार गरु शुभ वगत, पिता सुण सजस अनूपम. "

" लखे पत्र त्रंब में, सेम हद अडग लखावे; दियो हेतकर दान, सोढ सुत उमंग सुभावे. "

" जश काम धन दुथजा जगड कव सुमेर सम वड कियो; राजसी राव कवि दुरश ने, दत सांसण जांकर कियो. "

❀ १४ गांवों के नाम—कोट्टा, पालडी, नावी, रांवाडा, माचाल, आलपा, पोसाल्या, वाडहा, वावीण, खेजडिया, भेव, अणदोर, अटवाडा व नारादणा.

× देवडा रामसिंह अपने पिता भैरवदास की हयाति में ही अलग जागीर पा चूका था. भैरवदास के तरफ ' वागसिण ' पट्टे की जागीर थी. तब रामसिंह को वि. सं. १६६३ में महाराव सूरताणसिंह ने ' पाडीव ' की जागीर दी थी.

(वाघेली) गुमानदेवी 'लूणावाडे' के वीरपुरा वणवीर की पुत्री से कुमार अखेराज (दूसरे) का जन्म हुआ. व राणी मेडतणीजी 'दरांदेवी' मेडता के राठौर जशराज हाजल की पुत्री से वाई 'दीपकुंवर' का जन्म हुआ, जिसका विवाह इडर के राठौर राव कल्याणमल के साथ किया गया.

इस महाराव के देहान्त के विषय में मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि देवडा रामसिह भैरवदासोत, महाराव के पास रहने वाद एक वर्ष पीछे लखावत पृथ्वीराज व उसके वेटे भतीजे, महाराव को मारने के ताक में ही फिर रहे थे, सो एक दिन महाराव को चूक करने के वास्ते गये, उस वक्त सीसोदिया पर्वतसिंह उपर था, देवडा रामसिह व महाराव कम आदमीओं के साथ वैठे थे, उन्होंने महाराव को *चूक किया, और सीसोदिया पर्वतसिंह को चूक करने का वहुत यत्न किया, परन्तु दिन उगजानेसे दाव नहीं लगा. उस समय कुमार अखेराज दो साल की उम्र में था, उसको धाय (दूध पिलाने वाली धा माता) ने भित्तर की एक कोटडी में छीपा कर उपर गूदडे रख दिये, पृथ्वीराज ने कुमार अखेराज को वहुत ढूंढा, परन्तु वह वलिष्ट प्रारब्ध वाला होनेसे हाथ नहीं आया.

इतने में महाराव के आदमी इकट्ठे हो गये. सीसोदिया पर्वतसिंह व देवडा रामसिंह ने अपने आदमीओं के साथ महल को घेर लिया, और वंदूकें चलने लगी. उन्हों ने कुमार अखेराज की खवर निकाली तो जनाने वालों ने कहलाया कि "अवतक कुमार कुशल क्षेम विद्यमान है, और अमूक कोटडी के अंदर है, परन्तु दुश्मन उस कोटडी के मार्ग पर ही वेठे हुए हे, दो पहर से वडे २ ने पाणी भी नहीं पिया है. इस कोटडी की अमूक वाजु खुली हे सो सिलावट को वुलवा कर (दिवाल तोडवा कर) अखेराज को निकाल लो." जिस पर सीसोदिया पर्वतसिंह ने सिलावट से उस तरफ की दिवाल खुलवाकर अखेराज को निकाल लिया.

कुमार अखेराज हाथ में आते ही महाराव के आदमीओं का वल वढ गया, उन्होंने ललकार कर कहा कि हरामखोरों, अखेराज हमारे हाथ आ चूका हे, जिससे दुश्मनों का वल क्षीण हुआ. जव कि रात्रि हुई तव महाराव के सेवकों ने चारों तरफ से मारा चलाया. लखावत पृथ्वीराज ने देखा कि अगर इस जगह पर रात्री निकालेंगे तो जरुर मारे जावेंगे, जिससे उसने अपने अच्छे २ राजपूतों को आगे व पीछे, और दोनों वाजुओं में रख कर आप वीच में रह कर जोर से दौड कर भाग निकले. महाराव के आदमीओं ने उनका पीछा किया, लखावत पृथ्वीराज के राजपूत पीछे लौट २ कर

* इस चूक में देवडा लूणा हरराजोत का पुत्र शार्दूलसिंह, वजावत केशवदास खेमराजोत, वजावत तेजमाल जसवंतोत, काम आनेका मू. नै. की ख्यात में उल्लेख किया है.

लडते गये मरते गये और भागना शुरू रखा. इस प्रकार लडते मरते भागने से पृथ्वीराज के बहुत आदमी मारे गये, परन्तु वह कुशल क्षेम अपने डेरे पहुंचा, वहां से घोडे पर सवार होकर निकल गया, और बचे हुए आदमीओं के साथ 'पाळडी' आया.

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि लखावत पृथ्वीराज अपने बेटे व भतीजों को लेकर महाराव को छल से मारने को अचानक महलों में आ पहुंचा. × × × इन लोगों को आते हुए देख कर महाराव ने अपना हाथ तलवार पर डाला, और पृथ्वीराज के पक्ष के ÷ २ राजपूतों को मार कर तलवार के कई घाव लगने बाद ये गोरे.

इस विषय में दंत कथा में कहा जाता है कि लखावत पृथ्वीराज ने, महाराव आदि को सोते हुए मारने का इरादा करके, कुछ रात्री रही थी तब महल में प्रवेश किया, और महाराव पर चूक कर लेने बाद कुमार अखेराज को मारने के वास्ते ढूंढा, लेकिन महाराव पर चूक होनेकी खबर पाते ही कुमार की 'धा' ने अखेराज को एक खाल में दुशाला लपेट कर रख दिया, और अपने पुत्र (जो कुमार अखेराज की समान वय का था उसको) को कुमार के पारणे में सुला दिया. जब कि पृथ्वीराज कुमार को ढूंढने के वास्ते वहां आया, और उसने पूछा कि कुमार कहां है, तब धा ने पारणे के तरफ हाथ किया, जिससे पृथ्वीराज ने पारणा में सोता हुआ (धा के पुत्र को) बालक को मार कर संतोष जाहिर किया. यह बात प्रसिद्धि में है कि सीसोदिया पर्वतसिंह ने जब कुमार के विषय में धा को पूछा तब, उसने पारणे में मरे हुए बालक को बताकर कुमार को खाल में रखने की बात छीपा रखी, परन्तु उस धा के मूह पर ग्लानी न देखने से उसको शंका हुई, और कईएक प्रतिज्ञा करके सच्च बात जान ना चाहा. धा को उसकी प्रतिज्ञा पर यकीन आनेसे उसने खाल के तरफ दृष्टि की, जिस पर पर्वतसिंह ने खाल में देखा तो, कुमार अखेराज दुशाला में लिपटा हुआ हंस रहा है, और एक बडा भारी सर्प (नाग) उस दुशाला को विटा देकर अपनी फेंण उंची कर उसका रक्षणार्थे खडा है. पर्वतसिंह को देख कर उस सर्प ने छीछकार मारी, जिस पर पर्वतसिंह ने प्रतिज्ञा करके कहा कि हे ! नाग देवता अगर मैं महाराव का सच्चा निमकहलाल राजपूत हूं तो, आप इस कुमार को लेजाने की तक देदो, यह सून कर सर्प अलग हो गया, और पर्वतसिंह कुमार अखेराज को दुशाले में छिपाया हुआ उठाकर पहाड पर चढ गया. उसने पहाड के शिखर पर पहुंच कर, अपने भाले पर दुशाले में अपना जूता लिपेट कर ललकार दी कि, देखो यह कुमार को मैं ले जाता हूं, जिस पर पृथ्वीराज ने उस पर गोली चलाई वह दुशाले में लगी, बाद पर्वतसिंह कुमार को लेकर पिन्डवारे चला गया.

÷ बडुआ की पुस्तक में लिखा है कि महाराव के हाथ से लखावत रामसिंह श्यामसिंहोत इस चूक में मारा गया.

महाराव रायसिंह के चूक के विषय में कवि आढा किशना (आढा दुरशा के पुत्र) ने कहा है कि—

" सिंग न धरे सिवपुरी, मरे हिन्दुस्थाणां; सीह चढावे देवडां, वडां चहुआणां. "
" पाय धरां वंश वडंग, गज घाव मथाणां; आंकस रायां सिर सर, जोर लगाणां. "
" लख माता लख उनमना, दल पार न जाणां; हिन्दु थान गरजिया, थर हर तुरकाणां. "
" सिथल धरां उपरे, मन शार मंडाणां; साथा कानां कारणे, अति हुओ अपाणां. "
" गिरन्द पक्गार पुर्हांणो, तेदी आपाणां; कर या धरतां कारणे, सबला घमसाणां. "
" हम आन्दर उवाईया, पल मोह पल्टाणां; उपर परमां औरवे, सबे सुयांणां. "
" पार पडां निव पाळनां, रनिया आ राणां, आप न हटा दोहीआं, हनिवाम कराणां. "
" गया नहि हूर हटग, वडोगा रोकाणां; मणा भचंवे जागिया, जोधार जुआणां. "
" वांधा मान्द्र राव सु. निवारे रक्वाणां: भाजुं फां अघोमिसां, ए सांह न आणां "
" गाढे सिखर नेहिया, आकाव अडमाणां; आवा ज्यु हा आदतां, ये अगर लखाणां. "
" आरे रामां भागले, दांवोण जुराणां; अगणे लोह अहारीयो, टगंले भाणां. "
" मारे लक्कड नेहमाल, मन माल वहाणां; राव हकारे रायसिंग फट फट अवसाणां. "
" मामा फेलिगा राव सुं, अनमद उथाणां: लोह करंता राव ने, दाई जणाणां. "
" राव आया उनराय ने, कोई दोर ल्वाणां; आया पांघल क्रोध कर. खग हाल उथाणां. "
" पाल्ह मारग स्तार्ण, गुरु ननन कहाणां: धार धनाया बाल्ह नीज. अह सेन सुआणां. "
" मारे पाल्हण पाय रा, अन जोग डकाणां: घा ए भरप नीज रन फर; जदी जगत रखाणां. "
" पांघल रे भत पावरा, पुल रहकेत लगाणां; आये वीर अनेक मल, रग तीर उकाणां. "
" ल्वाओ धरम विचार कर, न्डो जगराणा; पापां पृथ्वीराज पो. पेरा घमसाणां. "
" आमा भरव राम का, लो नगराणा. पाल्ह राव उगारया, कर पूछ धाराणां. "
" बाल्हड मार पड़े, नीज पकड पिठाणां: ये रे मुह हरामखोर, तुंने क्या जाणां. "
" भरवुद धर दोई वीर नाह, रूमा मन जाणां: अण रा फल अब पाई है, पोहि पसताणां. "
" नेर किया दोप पाहर नर, ल्नोवा आ राणां: पले लुपकां नीर ने, कोई मनुष कवाणां. "
" वां करतां रवि भाणये, अंघार लखाणां; तीन मलावण कारणे. पांघल मन जाणां. "
" वाप तेरलों माय पर, पट छाप पलाणां; सांप धर्मा हुंगर हरा, आडक चहुआणां. "
" हीर. ननावत मत मर, भीज कर नर जाणां: कई एक मारे खाग पल, कईएक भगवाणां. "
" धन गों पांघल तत्व तन, देरे परोवाणां: नांज घोड़े असवार होग, नीज माथ गजाणां. "
" ए र पठना मत विचारो, नोले में जाणां; माल मतंचार अगुप दिन ए कथ रहाणां. "

× × × ×

मूनानैणसी की ख्यात में लिखा है कि महाराव का चूक होनेसे सीसोदिया परवतसिंह, देवडा रामसिंह, बीधा दूदा करमसिंहोत व शाह तेजपाल आदि ने इकट्ठे होकर वि. सं. १६७५ में कुमार अखैराज को टीका किया, परन्तु उपरोक्त कवित, वहुआ की पुस्तक, और दूसरी ख्यातों में यह घटना वि. सं. १६७७ में होना अंकित है और वह ज्यादह भरोसा पात्र है.

नं १६/१ सूरसिंह ने जोधपुर के महाराजा की सहायता से अपने वडे भाई से राज्य लेना चाहा था, परन्तु निष्फलता होनेसे सिरोही छोड कर भागना पडा. जोधपुर के

महाराजा ने उसको 'भाद्राजण' की जागीर २५ गांवो से दी, परन्तु वि. सं. १६७१ में महाराव रायसिंह ने उसको 'काछोली' की जागीर देनेसे वह वापस आ गया, जिस के वंशज वर्तमान समय में सिरोही रियासत के काछोली गांव के लखावत है.

नं. १७ महाराव अखेराज (दूसरे) वालकपन में अपने पिता के पीछे गद्दी पर आये. मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि ये (महाराव रायसिंह के चूक होनेकी) खबर मिलने पर सिरोही के नजदीक के चितोड के महाराणा ने व इडर के राव कल्याणमल ने महाराव अखेराज की वहुत संभाल रखी, जिससे सीसोदिया परवतसिंह, देवडा रामसिंह, चीबा दूदा व शाह तेजपाल आदि बलवत्तर हुए, उन्होंने लखावत पृथ्वीराज को सिरोही राज्य की हद में से निकाल दिया, जिससे वह अपने जनाने के साथ अपने सुसराल के गांव चेखला के पहाड में जाकर रहा. उसका पुत्र 'चांदा' अंबाभवानी के तरफ जा रहा, और बहुत बगावत की. कितनेक गांवों से हांसिल लिया, और सिरोही के दस्तुर से आधा दाण लेना शुरु किया, परन्तु वह हरामखोर होनें से दिन २ कमजोर होने लगा, यानी बगावत से कुछ नतीजा नहीं हुआ. एक दिन पृथ्वीराज का भतीजा (श्यामदास का पुत्र) रायसिंह एक गांव लूटने को गया वहां मारा गया, बाद डुंगरावत देवराज के पुत्र राजसिंह व जीवसिंह (कुंभावत सोलदर) ने छल से पृथ्वीराज को मारने के इरादे से पृथ्वीराज के पास गये. पृथ्वीराज ने इनका विश्वास किया, जिससे मौका पाकर रात को पृथ्वीराज को मार कर वे सिरोही चले आये.

दंत कथा में यह कहा जाता है कि देवडा रामसिंह ने एक दफे दरबार मे यह प्रश्न किया कि, लखावत पृथ्वीराज का शिर काटकर कोई लासक्ता है? जिस पर कुंभावत देवडा राजसिंह ने बीडा उठाया. उसने दगाबाज के साथ दगा करनेका सोचा, और चेखले के पहाड में दोनों भाई चले गये, उन्हों ने देवडा रामसिंह आदि की बहुत बूराई की, जिससे पृथ्वीराज ने उनको अपने पास रखा, जिससे मौका मिलने पर पृथ्वीराज को चूक करके उसका शिर काटकर महाराव के पास ले आये. महाराव ने उनकी इच्छानुसार इस काम के एवज में 'लास' नामक गांव कुंभावत राजसिंह को व 'छीवा गाम' कुंभावत जीवा को बक्षा, जो वर्तमान समय में उनके वंशज के तरफ है, सि. रा. ई. की पुस्तक में यह घटना वि. सं. १६८१ में होनेका अंकित हुआ है, वैसे कवि आढा किशना ने भी अपने कवित में यही संबत् बताया है, परन्तु कुंभावत राजसिंह को 'लास' गांव मिलने का समय वि. सं. १६९९ है, पाया जाता है कि महाराव जब पुख्त उम्र के हुए तब उसका बदला दिया गया है.

लखावत पृथ्वीराज चूक करके अपने गांव पालडी कुशलक्षेम भाग जाने बाद, जो

राजकुल सिरोही के नं. १७ वाले महाराव.

महाराव अखैराज (दूसरे) साहब बहादुर.

[विभाग पहिला पृष्ठ २८१]

घटनाएं हुई, उसके विषय में कवियों के कंठस्थ साहित्यों में कवि आढा किशना ने अपने कवित में सविस्तर इतिहास अंकित किया है, जिसमें कवि ने कहा है कि–

× × × ×
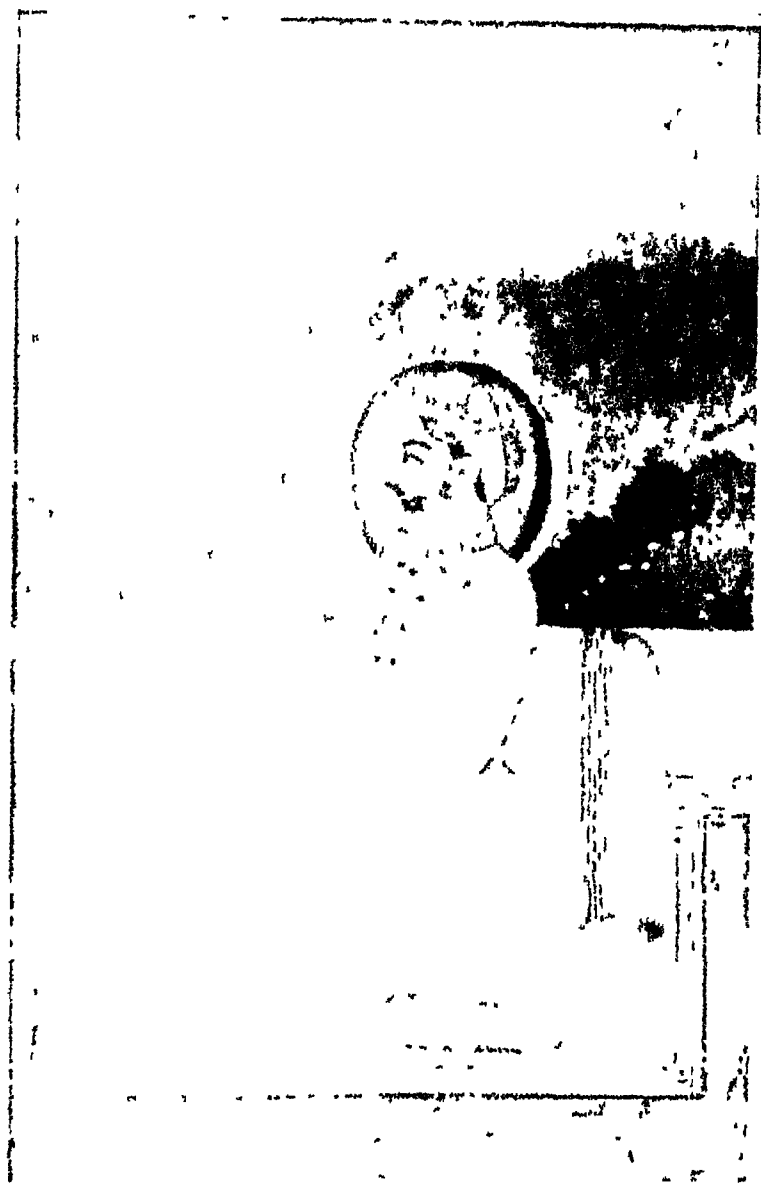
" पृथ्वी राज निकाल कर, मजलस मंडाणां; परवतसिंह सांसोदिया, रामा चहुआणां. "
" करमसिंह दूदा मले, सलाह कराणां; तेजपाल एक साह ने नीज मत कहाणां. "
" अखेराज महाराव को, नीज तखत बेठाणां; मामरस करके मुथ दील, नीज धरम पीछाणां "
" महाराव रक्षा करां, एह धरम आणां; पीथल मार भगाय के, नीसकंट रहाणां. "
" नीज दल वल संभाल के, परपंच रचाणां; प्रथवीराज द्रिोह दल, कढ देश आपाणां. "
" गो भगो मुसराल के जहं देवल राणां; नीज नारी के आगरे, कुचछ दिन कहाणां. "
" गांव नेवला जाये कर, वास ते रहवाणां; जहां गिरवर अतडी अगम, जग सवही जाणां. "
" चांदा जिसका पुत सो, अभीमान उफाणां; अंब भवानी के तरफ, सो जाए लुकाणां. "
" मारग पाडे लूट गांम, अनरथ आ पाणां; ले चुंगी मापेर लगान, क्रम भील कराणां. "
" सबही जांण हरामखोर, पीथल सोह जाणां; प्रथवीराज भात्रीज एक रायसिंघ रहांणा. "
" लूटे अरबद गांम कई, मेटे जमराणां; राजसिंघ एक डुंगरोत, जीवा एक राणां. "
" पापी प्रथवीराज को, मारण मन ठाणां; असने करनव भेस कर, नीज धरम पीछाणां "
" रामा भेरव दास की, निंदा केहवाणां; जिस पर प्रथवीराज ने नीज पास रखाणां "
" मोका पाकर एक दीन, कर घान अजाणां; आप सिरोही आय के सहवास कहाणां. "
" यह घटना शक वीक्रमी सोलासें जाणां; एकासी समंत मइ, सुद रूयात लखाणां "

महाराव अखेराज ने बालकपन में ही अपने पिता का वेर लेनेके वास्ते पृथ्वीराज के गांव 'निवज' पर चढाई की थी, उसके विषय में 'जांखर' के कवि मुकुन्ददास (कवि आढा दुरशा का पोता) जगमालोत ने कहा है कि–

" पत वेर संभाले पवंग पाखेर, वंका रावत चहु वला; अखेराज प्रथीराज उपर, +नांदवणो नीवजे नला. "
" पाखर घोडा घरर पागती, दरर बहादर मलेदल; खोरडो कुंजर करण खोखरो बालक केहर कर वल. "
" आठ पहोर ऊगवा वांस, मान अभनमो सुद्ध मयंद; गणीया चरे भाल्के गयंदां, गणीयां दीहां मरे गयंद. "

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इस महाराव ने होश संभालने बाद जो जो लखावत अपने पिता को मारने में शामिल थे, उनमें से बहुतों को अपने महलों में बुलाकर मरवा डाला, और अपने पिता का वेर लिया. इस विषय में दंतकथा में कहा जाता है कि दशहरा के दरबार में महाराव के नजदीकी लखावत भायातों को अपने जनानें के साथ सिरोही में आनेका रिवाज प्रचलित था, उस मुआफिक सब लखावत हाजिर हुए थे, उनको महाराव ने अपने पिता का वेर लेनेके कारण महल में ही मरवा डाले, और उनकी स्त्रीयां को उन लाशों के उपर से निकाली, जिससे पीछेसे लखावतों ने

+ निवज गांव 'नादवणा' नामक पहाड की तलेटी में पश्चिम दिशा में है, और उस पहाड की दक्षिण में जो खीण है वह 'नला' नामसे प्रसिद्ध है. अनुमान होता है कि लखावत पृथ्वीराज पाल्डी से निवज गया था. निवज गांव ऐसी सलामत जगह पर है कि कम फौज होने पर भी बचाव हो सक्ता है, बल्कि इसी कारण से पृथ्वीराजोत ने अपना पाट गांव 'निवज' रखा है.

दशहरा के तहेवार पर अपने जनाने वालों को सिरोही लानेका रिवाज बंध कर दिया. इस विषय में कवि धधवाडिया खेमराज जो मेवाड के महाराणा का आश्रित था, उसने कहा है कि—

× × × ×

"राजसिंह सोढ रै पाट काज; राजसिंह तणो सुत अखेराज."
"लखावत सब बोलाय लीध; दिन एक नीकंदन खलु कीध."
"अडवा न दीध खग आप अंग; राव ने दई पतशाह रंग."
"पत वैर लियो निज अखेराव; सरणुये चढ गो चोगुणो चाव."

× × × ×

महाराव अखेराज ने लखावतों को सिरोही बुलवा कर मरवा डाले, यह घटना कौन समय में हुई, उस विषय में किसी ख्यात में खुलासा नहीं है, वैसे कौन २ लखावत मारे गये वह भी अंकित नहीं हुआ है. सिरोही के बडुआकी पुस्तक में लखावतों के ठिकाने के अहवाल से मालूम होता है कि, भटाणा के लखावत ठाकुर मेघराज तेजावत को पाडीव के देवडा रामसिंह भैरवदासोत के पुत्र कैशरीसिंह ने मार डाला, जिससे महाराव अखेराज ने उसको 'जिरावल' की जागीर दी. रहुआ के सांगावतों की ख्यात से पाया जाता है कि लखावत सागा गोविन्दासोत का पुत्र रामसिंह वि. सं. १६९० में सिरोही में काम आया. इससे अनुमान होता है कि यह घटना वि. सं. १६९० में हुई है, बल्कि देवडा कैशरीसिंह रामसिंहोत ने वि. सं. १६९७ में कुंवरपद से जिरावल में बडुआ को सीख दी है, जिससे यह अनुमान सही होना पाया जाता है.

दंत कथा में कहा जाता है कि महाराव *अखेराज का ननिहाल उदयपुर में था, जिससे सीसोदिया पर्बतसिंह उनको महाराणा के पास हिफाजत से रखने के लिये ले गया, और बडे होने पर उसको सिरोही में लाया, परन्तु इसका ननिहाल वहां नहीं था, परन्तु लूणावाडा (गुजरात के रेवाकांठा) में था, इस विषय में कविने कहा है कि—

"अखा पखा दोइ उजला, तुं जण तां तडताण; माता पख वणवीर है दादो राव सूरताण."

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि महाराव अखेराज ने बारह वर्ष की अवस्था से ही शत्रुओं के साथ लडना शुरू किया था, मेवाड के महाराणा जगतसिंह ने वि. सं. १६८५ में सिरोही पर फौज भेजी, जो कितनेक गांवों को लूट कर लौट गई. इससे मेवाड तथा सिरोही की+ मैत्री में फर्क आ गया, परन्तु वि. सं. १७०९ में महाराणा

---

* सि. रा. ई. की पुस्तक में इसके पिता रायसिंह का ननिहाल उदयपुर में होना बताया है, परन्तु बडुआ की पुस्तक में इसका नहिहाल 'पाटोडी' के जोधा राठौर के वहां होनेका अंकित हुआ है.

+ मेवाड के महाराणा से मैत्री में फर्क आनेका कारण दंतकथा में यह प्रसिद्ध है कि महाराव अखेराज कुछ समय के वास्ते उदयपुर गये थे, सो वहां से वापस लौटती वक्त 'उकी' नामकी स्त्री को ले आये, और उसको अपनी पासवान बनाई, बल्कि

राजसिंह की गद्दी नशिनी हुई, उस समय महाराव अखेराज ने उनसे अपनी मैत्री पीछी दृढ कर ली.

वि. सं. १६९९ में महाराव अखेराज ने कवि आढा महेशदास दुरशावत को 'ऊड' गांव वक्षा. जिसके लिये कहा है कि–

दोहा.

"समंत सोल नीनांणवे चेत दशम पख सुद; दियो उड महेदास ने अखमल पटे अवध."

वि. सं. १७०७ में इस महाराव ने मेवाड के चारण कवि धधवाडिया खेमराज को 'कासंद्रा' गांव इनायत किया. उसके वास्ते उक्त कवि ने कहा है कि–

दोहा.

"समंत सतरो साते वरस, चैत्र सुदि चवदस; कासंद्रा कवि खेम ने अखमल दियो अवस."

कहा जाता है कि 'कासंद्रा' गांव बहुत ही सुन्दर था. कविने उस गांव की सर सब्जी का वर्णन अपने कवित में किया है, उससे पाया जाता है कि यह गांव खेडुत, महाजन आदि रियाया से पूर्ण आवाद हालत में कवि को दिया गया है.

मूतानेणसी की ख्यात में लिखा है कि पृथ्वीराज को डुंगरावतों ने चूक करने वाद पृथ्वीराज के दूसरे वेटे मर गये और वरवाद हो गये, परन्तु उसका पुत्र चांदा जो वहादुर व दृढ निश्चय वाला राजपूत था, उसने वगावत चलू रखी. कवियों ने इसके वीरत्व के बहुत कवित कहे हैं. उक्त ख्यात में लिखा है कि–' सिरोही में तिको रजपूत कोई नहीं जिको चादां आगे च्यार वार भागवो न छै.' चांदा ने दाण लिया और निंवज में आकर रहा, जिससे वि. सं. १७१३ के कार्तिक वद १४ के दिन सीसोदिया परवतसिंह, देवडा रामसिंह, चीवा करमसी, खवास केशर आदि महाराव की कुल फौज लेकर लखावत *रायोदास जोगावत की सरदारी में 'निंवज' पर गये. दो पहर

वहुआ की पुस्तक से यह पाया गया कि महारावने 'उकी' का नाम वहुए की वही में (और राणीयां के मुआफिक) दर्ज कराना चाहा, परन्तु वहुआ ने इनकार किया, जिससे महाराव ने उनपर नाखुश होकर उसकी जागीर के गांवों भी छीन लिये, जिससे वहुए 'वसी के देवडे' पास चले गये. इस विषय में वहुआ ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि—

" अखा उकी आणतां, चूकी मत चहुआण; एक तो अरबुद गढ लजियों दुजो रिसायो राण. "

कहा जाता है कि पासवान उकी से एक पुत्री का जन्म हुआ था, उसका विवाह अच्छे राजपूत से करनेका मौका न मिलने से वह कुंवारी अवस्था में ही देहान्त पर्यंत जनाने में रही थी. सिरोही के राजमहलों में उकी का निवासस्थान विद्यमान है जो 'उकीनीरा महल' के नामसे प्रसिद्ध है.

* लखावत रायोदास जोगावत 'सामन्तसिंहोत लखावत' था, और 'सांगा' के काका कृष्णसिंह जिसकी 'सेरुआ' गांव की जागीर थी, उसका पोता होता था. महाराव अखेराज ने वि. सं. १६९९ में इसके पिता जोगराज को 'सनवाडा' (पामेरा परगने में है.) की जागीर दी थी. लखावत रायोदास अपुत्रवान हालत में निंवज में काम आया, जिससे उसका छोटाभाई मानसिंह जोगावत को सनवाडा की जागीर मिली. वर्तमान समय में लखावत मानसिंह के वंशजों के तरफ 'सनवाडे' की जागीर विद्यमान है.

युद्ध हुआ जिसमें लखावत राघोदास ५० आदमी के साथ काम आया, और १०० आदमी जख्मी हुए. लखावत चांदा को इस युद्ध में विजय प्राप्त हुई.

लखावत चांदा का देहान्त कब हुआ उसका संबत् किसी ख्यात में दर्ज नहीं है, परन्तु ×वि. सं. १७१७ के पहिले वह गुजर चूका हो वैसा पाया जाता है, क्यों कि उक्त संवत् में उसका पुत्र अमरसिंह होना नेणसी की ख्यात से मालूम होता है.

जांखर के कवि आढा राघवदान ने मरहूम महाराव कैशरिसिंह साहेब की आज्ञानुसार प्राचीन कवितों का संग्रह करके 'चत्रभुज इच्छा प्रकाश' नामक हस्त लिखित पुस्तक लिखा है, उसमें महाराव अखेराज (दूसरे) के विषय में लिखा है कि, बादशाह का सूबा गोरीसाह के साथ महाराव अखेराज ने 'सोलदर' गांव के पास युद्ध किया, जिसमें गोरीसाह महाराव के हाथ से मारा गया. उस युद्ध में महाराव ने परमार मांडण को पूछा कि सूबा कहां है? तब परमार ने अंगुली से नहीं बताते, भाला मारकर बताया. महाराव ने उसी वक्त सूबा को अपनी तलवार से मार डाला. इस घटना की शहादत का कवि आढा प्रयागदास जांखर वाले ने गीत कहा है कि.

"आखेराव अल अखोई अखो, भोंयणे भडै पडंते भार; न झडै झडै दाखीयो नारण, पांण नं दाखवियो परमार."
"पोह परमार न दाखे पांणे, चोरंग पुछंते चहुआण; पहेलां सेल अणां सीर पे लै, पाछे कहीयो एह पठाण."
"अखे अल नारणो आखे, आहव माचंत आगाढ; कर आगी आंगली न कहीयो, कहीयो कुंत अणी सिर काढ."
"खल दल पेस वचे खेतावत, गोरी गंजे भांज गह; राव जते पूछते महारण, पोह आवुओ रोमपह."

इसी पुस्तक में लिखा है कि महाराव अखेराज इडर के राठौर राव कल्याणमल के वहां विवाह करने के लिये इडर गये थे, जहां पर राव कल्याणमल ने चवरी में ही उसको चूक करके मारने का प्रपंच रचा, जिसकी खबर डुंगरावत जामन्तसिंह सामन्तसिंहोत कालंद्री वाले को होनेसे, उसने राव कल्याणमल का हाथ पकड कर बाहर बैठा दिया, और कहा कि तुम्हारा इरादा महाराव पर चूक करने का है, सो अब सीधे २ यहां पर बैठ जाओ, नहीं तो मार दूंगा. जिस पर राव कल्याणमल ने कहलाया कि चूक नहीं करते शादी करा दो, वरना मेरी जान जायगी, तब चूक करने वाले बिखर गये, और शादी करादी. शादी होजाने पर जब महाराव की बरात इडर से दो कोश के फासले निकल गई, तब ठाकुर जामन्तसिंह ने राव कल्याणमल का हाथ छोडा, जिसके वास्ते कवि आढा प्रयागदास ने कहा है कि.

× वि सं. १७१७ के भाद्रपद माहा में मूता नेणसी गुजरात तरफ गया, और आसोज माहा में वापस लौटा. उसका मुकाम जालोर में था; तब लखावत अमरसिंह चांदावतने अपना प्रधान वाघेला रामसिंह को मूता नेणसी के पास अपनी ख्यात लिखाने के वास्ते भेजा था, जिससे अनुमान होता है कि चांदा उस समय में विद्यमान नहीं था. वाघेला रामसिंह ने उस वक्त नेणसी को कहा कि सिरोही का दाण पचास—साठ हजार रुपये आते थे, अब कम आता है, सिरोही का आधा दाण लखावत अमरसिंह लेता है, और विभंगे (भागदारी) के गांव १००—१२५ अमरसिंह के तरफ है.

" प्रथम अखेराज गो शांवले परणवा, गाएणी मले रंग राग गायो;
सरत कर राठवड, गरड भड सामहो, एथ पह जान कल्याण आयो. "
" हजारां थाट भूपाल भेला होये, कवी परदेश रे गीत कहीयो;
पटा झर मूछ पर नोख कर पटालो, सरत चहुआण लखरोस चहीयो. "
" चूकरी वात जामंत तर्ण सांभली, मेहपति खलां दल आये माजा;
वाग कलीयांण रे आये कर वलंबीयो, राव कुशले रख्यो अखेराजा. "
" जोधपुर, उदेपुर कहे यु जांमता, मेहपति खलां दल आये मलीयो;
आवुओ राव परणाव घर आंणीयो, वजाडे जेतरा ढोल वलीयो. "

महाराव अखेराज दूसरे के समय में देहली के शाहजहां बादशाह के शाहजादों में आपस में विग्रह पैदा होनेसे, इस महाराव को अपने पक्ष में रखने के वास्ते शाहजादे दाराशिकोह व मुरादबख्श ने कोशिप करने का उन दोनों शाहजादे के +' निशान ' पर से पाया जाता है. उक्त निशानों व फर्मान से यह भी पाया जाता है कि, शाहजादा दाराशिकोह के साथ महाराव का पत्र व्हेवार था, और मुरादबख्श के साथ नहीं था. सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि जमादिउल अव्वल हि. स. १०६९ (वि. सं. १७१५) में दाराशिकोह, औरंगजेब से मुकावला करने के लिये गुजरात से आगरे को जाता हुआ सिरोही में भी आया था.

महाराव अखेराज बहादुर व उदार राजा था, उसके कईएक गीत *कवित विद्यमान

+ शाहजादा की तरफ से जो पत्र राजाओं पर लिखा जाय उसको ' निशान ' कहते है, और बादशाह के तरफ से लिखा जाय वह ' फर्मान ' कहलाते थे, महाराव अखेराज के उपर शाहजादा दाराशिकोह के ' निशान '. (१) ता. ११ रवीउल् अव्वल हि. स. १०६० (वि. सं. १७०६) का, (जिसमें मुरादबख्श को सुबागीरी से उतार देनेका जिक्र है) दूसरा ता. १४ मुहर्रम हि. स. १०६७ (वि. सं. १७१३) का (जिसमें महाराव के तरफ से गया हुआ पत्र का मामुली जुवाब है.) तीसरा ता. ६ सफर सन् ३१ जुलूस मुताबिक सन् १०६८ (वि. सं. १७१४) का (जिसमें महाराव के पत्र के जुवाब में खातिर जमा रखने का लिखा गया है.) चौथा ता. ७ मुहर्रम हि. स. १०६९ (वि. सं. १७१४) का (जिसमें महाराव के पत्र के जुवाब में लिखा है कि कोई दुश्मन उस तरफ से न निकलने पावे वैसा प्रबंध रखनेका व शाहजादा मुरादबख्श बुलावे तो उसके पास जानेका बिचार मत करना वगैरह हाल लिखा है.) पांचवा ता. ७ रज्जब सन १०६८ (वि. सं. १७१५) का जिसमें शाहजादा मुरादबख्श व उसके साथियों को मार देनेका व उनका माल असबाब लूट लेनेका आम तोर पर अपने सरदारों को भी कहला देनेका वगैरह लिखा गया है.)

शाहजादा मुरादबख्श के तरफसे ता. २९ वी रवीउल अव्वल सन् २९ जुलूस मुताबिक हि. स. १०६६ (वि. सं. १७१२) का ' निशान ' में लिखा है कि बादशाही मिहर्बानी का भरोसा कर जल्दी हमारे पास हाजिर हो जाओ. दूसरा ता. ७ मुहर्रम सन् ३० जुलूस मुताबिक हि. स. १०६७ (वि. सं. १७१३) का (जिसमें लिखा है कि सय्यद रफीम बादशाह के पास से हमारे पास आता था, वह दांतीवाडे की हद में ' केसरी ' नामक राजपूत के हाथ से लूटा गया, जिसमें सय्यद के दोतीन आदमी मारे गये और तीन च्यार जख्मी हुए व आठ हजार नक्द व असबाब लूट लिया, जिससे लूट मार करने वाले को सजा देकर टा हुआ असबाब हमारी पास भेज दो वगैरह.)

महाराव ने उक्त निशान पर खयाल न करने से बादशाह शाहजहां ने ता. २३ × × × सन् ३० जुलूस मुताबिक हि. स. १०६७ (वि. सं. १७१४) में ' फर्मान ' लिखा है, जिसमें सिरोही इलाके में से चोरी से गया हुआ माल तलाश करके मालिक को दे देने की ताकीद की है.

* इस पुस्तक में सिर्फ इतिहास उपलब्ध होता हो, वैसे गीत कवित अंकित किये है, और दूसरे मामुली प्रशंसा के कवित्त दर्ज नहीं हुए है.

है. कवि आढा दुरशा ने कहा है कि यह महाराव सूरताणसिंह के जैसा ही राजा हुआ, इसने अपना वैर लिया, परन्तु पुराना वैर किसी को न दिया. इस विषय में कवि कहता है कि—

" पड ग्रेहणा लिये दीये नह पाछा, सत्र खतंग न दाखे ग्रहसार; सोड तणा त्रोपार सरीखो, वले मांडीयो अखे त्रोपार."
" रजवट जोस समो भ्रम राजड, भांण समो भ्रम तणी भतो; वेर रणां नवनवा वसावे, राव पुरांणां न दे रती."
" अखे अथाग मांडीयो ओहट, घणां तणा घट माए घणा; गर्लीया गाथ खजांने गेंहणा, ते लेहणा लांगवां तणा."
" मेल करे ऊखेल न मंडे, हव छूटी वड वडा हर; आवुरा धर सु अधपतीयां, साहोटण भागो समर."

इस महाराव ने सिरोही में नया महल बनवाया, और 'फूल गोख' की रचना कराई, जो वर्तमान समय में विद्यमान है. इसके विषय में कवि धधवाडिया खेमराज 'कासंद्रा' वाला ने कहा है कि—

" अखेराज करायो मेहल एक, इंद्र घटा पेम सोभंत देस."
" जड़ाया जालियां काच जोख, गज रीत करायो सुभग गोख."
" सतरा सु समंत सातो वरस; लख कैक दाम लागा सरस."
" हर गोख जोख कवलास होये; जगमगत जोत ×फूलगोख जोये."
" धधवाड खेम कीरत कहाये; नीज अडग रहो रव चंद तांये."

फिर कवि कहता है कि—

" लख मोज करे तलमात लेखवे. भाणहरो जल हलतो भाण: आवु तणे गोखडे अखेई, चमर ढोलावे राव चहुआण."
" भड जां वाल वंकडा भाखर, गर हर पाखर सेल धरे; मेवा डंमर जल इले माये, तखत वराजे सिंव तरे."
" त्रवंक धरे फरहरे तेजी, बरस अठार नवा जल बीक; ऊभे खाग जगत सू आडो, मोटे घड बेठो मशरीक."
" आखर लै ये दे आगाहट, पांतां कीजे रोर पखे; मूछां पंहेल लिया वल मूछे, आंकोरां आवता अखे."

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इसका जन्म वि. सं. १६७४ मार्गशिर्ष वदि १० को हुआ था, और इनके ११ राणीयां थी, जिसमें राणी रतनकुंवर ने वि सं. १७३२ में सिरोही में 'रतन वावडी' बनवाई. इन राणीयों से कुंवर उदयभाण, व उदयसिंह और कुंमारी आणंद कुंवर के जन्म हुए. बाई आणंद कुंवर का विवाह वि. सं. १७१५ में जोधपुर के राजा जशवन्तसिंह के साथ हुआ था, और महाराव की वहिन कमळ कुंवर का विवाह मेवाड के महाराणा करणसिंह के साथ हुआ था. बडुआ की पुस्तक में इसकी सिर्फ पांच राणीयां के नाम दर्ज है, जिसमें राठौरीजी 'सरदारदेवी'

× महाराव अखेराज ने बनवाये हुए महल में सूवर्ण से मिनाकारी काम किया हुआ है. उसमें 'फूलगोख' नामका 'झरूखा' प्राचीन शिल्प कला का खास नमूना है. 'फूलगोख' की रचना एक पत्थर के स्तंभ पर से करने में आई है, और कमळ के पुष्प के नांई दांडी से शुरुआत होकर सहस्र दल कमळ के मुआफिक उपर से खिला हुआ है. उसने बनाये हुए महल की सात भोम है, और उसी महल के भू तल में तालाव है, जिससे यह महल एक किले की जरूरियातभी पूर्ण कर सका है. सरणुआ पहाड की जडमें ही महल होनेसे उस पहाड के मोरचे से महल व सिरोही नगर का रक्षण होता है.

मोडासा के राठौर रामसिंह गोविन्दासोत की पुत्री से कुमार उदयभाण, व मेवशीजी 'नाधुदे' मेहवा के मेघराज दूदावत की पुत्री से कुमार उदयसिंह व बाई 'अणंदकुंवर' के जन्म हुए.

महाराव अखेराज के समय के वि. सं. १६८२, १६८४, १६८७, १६९०, १६९१, १६९८, १६९९, १७०३, १७०७, १७१५, १७२६, १७२७, १७२८, १७२९, इन संवतों के दानपत्र के कईएक शिलालेख व ताम्रपत्र प्राप्त हुए हैं, जिसमें वि. सं. १६८२ के मडवाडिया गांव के शिलालेख में देवडी फूलकुंवर बाई का नाम, व वि. सं. १६८४ के सिरोही के ताम्रपत्र में महाराव के नाम के साथ 'माजी श्री सूरजदेजी वचनात्' लिखा हुआ है. इसके मुसाहिबों में वि. सं. १६८४ में चीवा करमसी, वि. सं. १६९० में खवास देवा व साह तेजपाल, वि. सं. १६९१ में साह तेजपाल वि. सं. १७०३ में पं. केशव, वि. सं. १७०७ में सीसोदिया परवतसिंह, देवडा रामा व चीवा करमसी; वि. सं. १७१५ में सीसोदिया परवतसिह, वि. सं. १७२६ व १७२८ में पं. भगवानदास, वि. सं. १७२८ में मूता चांपा धरमदास, वि. सं. १७२९ में नारायणदास आदि होना उक्त संवतों के दानपत्रों से मालूम होता है.

इस महाराव को व आबु पहाड को प्रशंसा में मेवाड के गांव 'सरसिया' के कवि मेहडू वीहारीदान ने 'दोआवत' कहा है. जिसमें आबु पहाड की सोभा व श्रेष्ठता का वर्णन इतना विस्तीर्ण और *उत्तम प्रकार से किया है कि ऐसा वर्णन दूसरे किसी कविने नहीं किया होगा. वैसे उसमें महाराव रायसिंह (पहिले) तक के राजाओं की संक्षिप्त में (परन्तु बहुत झमक भरी भाषा में) ख्यात भी कही है. उक्त 'दोआवत' में कवि इस महाराव के उमराओं के नाम बताता है, और उनके विषय में कहता है कि—

× × × ×

" राऊ के उमराव कैसा? प्रथवीराज का सामंत जैसा! लखाओत, डूंगरोत, चीवा, अवसी सोलंकी, सीसोदिया, वागडीया और खट तीस वंश, जुए जूगा जाणी हुजूरिया. "

" तीसके बीच परवत सिंध रुद्रसिंहोत पाट का थंभ. दुजा उदेशाह, दुश्मनों का राह. "

" रांमा भेरव का डुंगरोत का धणी, फोज का अणी. ॥ ऊदा दुजण साल्का, फोज का सीखराल. ॥ "

" करमसो जेतसी का–धर का किवाड, रीण का पहाड. ॥ सींघ भाखरसी का–बीका राठोड, सुर धर का मोड. ॥ "

" नैरहर गोपाल का, वागडीया चहुआण. अमली सीर जुणी. ॥ ऊंगरा जोत का खलक का खंगाल, दूजा वजपाल ॥"

" सूरजमल पुरणमल का वीर भाण पुरणमल का, ए दोए वंधव वाहेल, लुलंगपुर अजुवाले ॥ "

" केशरी जसवन्त का, जुद्ध को चाऊ, परचांडो भेलीयां. कम धजां का राऊ. "

" केसरीया कट्टआणी, सो वहादरां का अणी पाणी. ॥ "

" और भी सीपाई लोक मुसलमान कैसे? सींधी ताजखांन, सुजालखांन नाहरखान जैसे! ॥

× × × ×

* विस्तार के भय से वह इस पुस्तक में नहीं लिखा गया है क्योंकि बहुत लम्बा है.

१ चीवावत. २ मेडा का वीकानेरीया. ३ अवावत कीवरली. ४ वजावत मणादर. ५ वहिल रामपूर. ६ तेजावत दडमणा.

मूता नेणसी की ख्यात में लिखा है कि वि. सं. १७२१ में महाराव को उसके पुत्र +उदयभाण ने राज्य लोभ से डुंगरावतो के साथ मिल कर कैद कर लिया, परन्तु देवडा रामसिंह भैरवदासोत व सीसोदिया साहेबखान (परबतसिंहोत) ने महाराव का पक्ष लेकर मुक्त किया. महाराव ने उदयभाण को उनके पुत्र सहित मार डाला, पीछे लखावत अमरसिंह चांदावत को (बगावत से) मना कर सिरोही की रियासत में लाया गया, और १ पालडी, २ जेतावाडा, ३ देदपुरा, ४ माकरोडा, ५ बापला, ६ पोथापुरा, ७ टोकरा, ८ मेडा, ९ गीरवर, १० मुगथला, ११ कालधरी, १२ मुंसावल, १३ धनेरी, १४ आवल, १५ देलवाडा. यह गावों का पट्टा दिया गया, जिसमें यह शर्त की कि " त्रिभोगो लेतो सु नहीं लेसी, दाण लेतो सु लेसी. "

लखावत अमरसिंह कब निंबज छोड कर चला गया, उस विषय में उक्त ख्यात व दूसरी ख्यातों में कुछ भी उल्लेख नहीं है, परन्तु कवितों से मालूम होता है कि लखावत चांदा के देहान्त बाद *अमरसिंह पर महाराव ने निंबज पर फौज भेजी थी, जिससे वह निंबज छोड कर चला गया था.

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि, इस महाराव का पुत्र उदयभाण बागी सरदारों से मेल वढा कर सिरोही की गद्दी पर बैठने का उद्योग करने लगा, और वि. सं. १७२० में एक दिन मौका पाकर अपने पिता को कैद कर सिरोही की गद्दी पर बैठ गया था, वह सूनते ही मेवाड के महाराणा राजसिंह ने महाराव से मैत्री के कारण राणावत रामसिंह को फौज के साथ सिरोही पर भेजा, जिसने उदयभाण को निकाल दिया, और महाराव को कैद से छुडाया.

महाराव अखेराज बडी नामवरी पाकर ५३–५४ वर्ष के लम्बे समय तक राज्य करके वि. सं. १७३१ में देवलोक हुआ, और उसके पीछे उनके द्वितिय पुत्र उदयसिंह गद्दी पर बैठा.
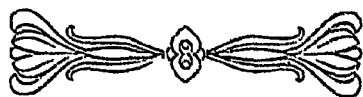
+ मू. ने. की ख्यात में 'उदयसिंह' नाम लिखा है, परन्तु वह गलती से दर्ज हुआ है. उक्त ख्यात में कुमार उदयभाण को उनके पुत्र (वख्तसिंह पाटवी कुमार था.) सहित महाराव ने मार देनेका लिखा है. सि. रा. ई. की पुस्तक में इस विषय में शंका–समाधान करने में आया है, परन्तु बहुआ की पुस्तक में स्पष्ट उल्लेख है.

* अमरसिंह पर फौज भेजने के गीत कवित इस पुस्तक के दूसरे विभाग में निंबज के लखावतों की ख्यात में अंकित किये गये है.

प्रकरण ३३ वाँ.

चलू देवड़ा चौहान. (महाराव उदयसिंह से महाराव उदयभाण तक.)

नं. १८ कुमार उदयभाण व उसका पुत्र वख्तसिंह, महाराव अखेराज के हाथ से मारे गये. इसकी कुंवराणी सीसोदणीजी 'रतनदे' सी. सुजाणसिंह सूरजमल की पुत्री थी, उससे पांच पुत्र हुए थे, जिसमें से चार गुजर गये और वेरीसाल विद्यमान था, परन्तु सिरोही की गद्दी पर महाराव अखेराज का दूसरा पुत्र वेठा.

नं. $\frac{१८}{१}$ महाराव उदयसिंह वि. सं. १७३१ में सिरोही की गद्दी पर आया. वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि इसने तीन वर्ष राज्य किया, और इसके समय में वि. सं. १७३३ में लोहियाणा का किला जोधपुर की रियासत में गया. इसके समय के दो दानपत्र मिले है, जिसमें एक वि. सं. १७३१ के चैत्र वदि ७ का धनारी गांव में, व दूसरा वि. सं. १७३१ असाड सुदि १ का शिला लेख 'जावाल' गांव में होना पाया गया है. इसकी राणी चांपावतजी उत्तम देवी, चांपावत अमरसिंह सूरजमलोत की पुत्री से कुमार छत्रसाल उर्फ दुर्जनसाल का जन्म हुआ. वडुआ की पुस्तक मुआफिक इसका देहान्त वि. सं.* १७३४ में हुआ.

नं. १९ महाराव वेरीसाल (नं. १८ कुमार उदयभाण का पुत्र) अपने काका के पीछे सिरोही की गद्दी पर आया. इसने जोधपुर के वाल राजा अजीतसिंह को वादशाह औरंगजेब की खफगी से वचाने को अपनी निगरानी व संरक्षण में सिरोही रियासत के 'डोडुआ' नामक गांवमें वहां के सरदार की देखरेख से एक राजगुर ब्राह्मण के वहा रखवाया, और उसकी वाल्यावस्था का काल इस महाराव के संरक्षण में हो व्यतीत हुआ था. सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि वाल राजा अजीतसिंह को जोधपुर के राठोर सोनिंग आदि सिरोही में ले आये, और मरहूम जोधपुर के महाराजा जशवंतसिंह की राणी देवडीजी (जो सिरोही के महाराव की पुत्री थी व सिरोही में विद्यमान थी) के पास लाये. महाराव वेरीसाल ने उसको गुप्त रखने के कारण 'कालंद्री' कस्बे में रखा, परन्तु महाराजा अजीतसिंह का 'डोडुआ' गांव में रहने का दंत कथा में प्रसिद्ध है, वल्कि जिस राजगुर ब्राह्मण की सुपुर्दगी में वह रहे थे, उस ब्राह्मण को

---

* सि. रा. ई. की पुस्तक में पृष्ट २९७ की टीप्पणी में महाराव वेरीसाल के समय का वि. सं. १७३३ का दानपत्र उक्त ख्यात के लेखक को प्राप्त होना लिखा है, जिससे वडुआ की पुस्तक में महाराव उदयसिंह का देहान्त वि. सं. १७३४ में होनेका लिखा है वह भरोसा पात्र पाया नहीं जाता. इस पुस्तक के लेखक को महाराव वेरीसाल के समय के वि. सं. १७४० व उसके वाद वि. सं. १७५२ तक के दानपत्र के शिलालेख व ताम्रपत्र मिले है, उसके पहिले के हाथ नहीं आये है

महाराजा अजीतसिंह ने जोधपुर रियासत से 'तवरी' नामक पट्टे की जागीर बारह गांव से दी, उस जागीर पर उसकी ओलाद वाले विद्यमान है. वैसे महाराजा अजीतसिंह ने वि. सं. १७५९ जेष्ट सुदि १२ के पत्र में डोडुआ के देवडा कैशरीसिंह व पाडीव के ठाकुर नारायणदास को अपनी सही महोर के पत्र साथ अपने खुद के हस्ताक्षर से भी लिखा है कि "जीण घडी थे तेडस्यो तीण घडी आवसां सही." इससे महाराज अजीतसिंह का डोडुए में बडा होना ज्यादह मानने योग्य है.

इस महाराव के समय में शाहजादा मोअज्जम (औरंगजेब का पुत्र) का 'निशान' ता. ९ रविउल् अव्वल हि. स. १०९२ (वि. सं. १७३८) में, उसने शाहजादा अकबर व दुर्गादास राठौर आदि को सिरोही की सिमा में वे फिर आ जाय, तो पकड लेनेकी या मार डालने की सिफारिश महाराव को की है.

इसके समय के वि. सं. १७४०, १७४४, १७४५, १७५२ के ताम्रपत्रो से वि. सं. १७४४, से १७५२ तक साह नानजी इसके मुसाहिब होना पाया जाता है. बडुआ की पुस्तक में लिखा है कि महाराव वेरीसाल वि. सं. १७३४ में जबरन गद्दी पर बैठा, और १९ वर्ष राज किया. इसके पुत्र सूरताण व भीमसिंह थे, जिसमें भीमसिंह बालक अवस्था में ही गुजर गया था. सि. रा. ई. की पुस्तक में वि. सं. १७५४ में इसका देहान्त होना और तीन राणीयां इसके साथ सती होनेका अंकित हुआ है. इस महाराव की छत्री की प्रतिष्ठा वि. सं. १७५९ में हुई है.

इस महाराव के पीछे कौन गद्दी पर आये, उस विषय में कितनीएक शंकाएं एक दूसरी ख्यातों के मिलान करनेसे उपस्थित होती है. एक हस्त लिखित ख्यात में इसके विषय में लिखा है कि, "वेरीसाल पाटवी था लेकिन सिरोही छूट गई जिससे 'देवतरे' (ई. जोधपुर) गया." जब सि. रा. ई की पृष्ट २६७ की टीप्पणी में लिखा है कि खा. बा. निआमतअलीखां ने महाराव वेरीसाल का देहान्त वि. सं. १७४९ में होनेका व उसके पीछे इसका पुत्र राव सूरताण गद्दी पर आनेका लिखते है. सि. रा. इ. की पुस्तक में इसके पीछे महाराव छत्रसाल वि. सं. १७५४ में गद्दी पर बैठने का अंकित हुआ है. बडुआ की पुस्तक में इसका देहान्त वि. सं. १७५३ में होना, व उसके पीछे नं. २० राव सूरताण का गद्दी पर बैठना लिखा गया है, और यह भी लिखने में आया है कि राव सूरताण ने एक साल राज्य किया व इसके समय में 'पालडी' पट्टा के गांव जोधपुर की रियासत के तरफ गये. राव सूरताण को पीछेसे महाराव उदयसिंह के पुत्र नं. $\frac{१९}{१}$ छत्रसाल ने पद भ्रष्ट किया और आप गद्दी पर बैठा. इस पर से पाया जाता है कि महाराव वेरीसाल को देहान्त वि. सं. १७५३ में हुआ था, और उसका पुत्र सूरताण

उसके बाद सिरोही की गद्दी पर बैठा था, परन्तु अल्प समय में ही वह पदभ्रष्ट हुआ, और वि. सं. १७५४ में महाराव छत्रसाल गद्दी पर आये.

नं. २० सूरताणसिंह अपने पिता के बाद गद्दी पर बैठा परन्तु अल्प समय में पदभ्रष्ट हुआ, जिससे वह जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के पास चला गया, जहां पर इसको ' देवांतरा ' पट्टा की जागीर मिली. वर्तमान समय में इसकी ओलाद वाले ' देवातरा के लखावत ' के नामसे कहे जाते है, और देवातरे में विद्यमान है.

नं. १९/१ महाराव छत्रसाल उर्फ दुर्जनसाल ने महाराव वेरीसाल के पुत्र सूरताणसिंह को हठा कर गद्दी कब्जे कर ली. वडुआ की पुस्तक में लिखा है कि इसके तीन राणीयां थी, जिसमें राणी सीसोदणीजी ' दीपदे ' सीसोदिया फतहसिंह सरदारसिंहोत की पुत्री से बाई कल्याणकुंवर का जन्म हुआ, जिसका विवाह मेवाड के महाराणा संग्रामसिंह के साथ किया गया. दूसरी राणी वाघेलीजी ' उत्तमदेवी ' साणंद के वाघेला हटेसिंह जगतसिंहोत की पुत्री से कुमार मानसिंह उर्फ उम्मेदसिंह का जन्म हुआ. तीसरी राणी वाघेलीजी ' रूपांदे ' साणंद के वाघेला कृष्णसिंह जगमलोत की पुत्री से बाई रूपकुंवर व बाई लाडुकुंवर के जन्म हुए, बाई रूपकुंवर का विवाह जोधपुर के राठौर राजा अजीतसिंह के साथ व लाडुकुंवर का विवाह इडर के राजा अणंदसिंह के साथ किया गया. इस महाराव का देहान्त वि. सं. १७६२ में हुआ.

नं. २०/१ महाराव मानसिंह उर्फ उम्मेसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसके समय के ताम्रपत्र व शिलालेखों में इसका नाम हर जगह ' महारायि उमेदसिंघ ' अंकित हुआ है. सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इसके समय में सिरोही राज्य में कच्चे लोहे की तलवार वनाने की मनाई होनेसे, और जगह से अच्छी तलवारें होने लगी, और +' शमशेर तो सिरोही की ' यह नाम प्रसिद्ध हुआ. इसने वनवाई हुई तलवार को ' मानासाही ' कही जाती है.

उक्त पुस्तक में यह भी ×लिखा है कि जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह वि. सं.

+ सिरोही की तलवार क्यों जगप्रसिद्ध हुई ? उस विषय में यह बात कही जाती है कि वर्तमान समय में सिरोही में जहांपर ' नीलकंठेश्वरजी महादेव ' का मन्दिर है, उस जगह एक ' वावडी ' थी, उसका पानी बहुत तेज था, वह पानी पिलानेसे हथियार बहुत तेज होते थे. पीछेसे वह वावडी बंध करके उस पर शिवालय बंधाया गया. दूसरी यह बात कही जाती है कि, सिरोही के लोहार लोग कच्चे लोहें को इस तरह पक्का बनाते थे कि एक खड्डे में लोहा रखकर उसमें गोबर भर के ऐसी रसायन चीज उस पर डालते थे कि, उस रसायण से विजली को आकर्षण होकर विजली उस पर पडती थी, जिससे गोबर जल कर लोहा भी पक्का हो जाता था. उस लोहे से बनी हुई तलवार सर्वोत्तम होती थी.

× सि. रा. ई. की पुस्तक में यह अहवाल जोधपुर रियासत को ख्यात से लिखा जानेका अनुमान होता है, क्योंकि सिरोही के बहुए की पुस्तक में जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह के साथ महाराव उम्मेदसिंह की बहिन की शादी होना अंकित

१७७२ में गुजरात को जाते हुए सिरोही में ठेरे थे, तब महाराव ने अपनी राजकुमारी की शादी उनके साथ कर दी. वैसे वि. सं. १७८७ में जोधपुर के महाराजा अभयसिंह अमदावाद के सूबेदार साथ लडने के वास्ते जा रहा था, तब उसने 'रांवाडा' (सिरोही का गांव) के देवडा ठाकुर (जो जोधपुर इलाके में लूट खोस करता था) से वदला लेनेके कारण 'रांवाडा' गांव वरबाद किया, और पोसालिया को लूटा, जिससे महाराव ने उससे सुलह कर अपनी राजकुमारी का विवाह महाराजा अभयसिंह के साथ वि. सं. १७८७ भाद्रपद वदि ८ को कर दिया, और पाडीव ठाकुर नारायणदास को कुछ फौज देकर उसकी सहायता में अमदावाद भेजा. जहां पर देवडों ने अद्वितीय वीरता वतलाई थी.

महाराव मानसिंह उर्फ उम्मेदसिंह की राणीयां के विषय में वडुआकी पुस्तक से पाया जाता है कि इसके पांच राणीयां थी, जिसमें राणी मेवसीजी 'कृष्णकुंवर' जसोल के जेतमाल भारमलोत की पुत्री से कुमार १ पृथ्वीराज व २ जगतसिंह और वाई 'जशकुंवर' व 'इन्द्रकुंवर' के जन्म हुए. जशकुंवर का विवाह जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के साथ व इन्द्रकुंवर का विवाह उदयपुर के महाराणा प्रतापसिंह जगतसिंहोत के साथ किये गये. दूसरी राणी वारडजी 'तख्तांदे' सुदासणा के वारड (परमार) सरदारसिंह की पुत्री से कुमार 'जोरावरसिंह' का जन्म हुआ. तीसरी राणी वाघेलीजी 'रंभादेवी' साणंद के वाघेला भूपतसिंह कृष्णसिंहोत की पुत्री से वाई * 'अखेकुंवर' का जन्म हुआ, जिसका विवाह बीकानेर के महाराजा गजसिंह के साथ किया गया. चोथी राणी चावडीजी 'लालदे' माणसा के चावडा प्रतापसिंह पृथ्वीराजोत की पुत्री से बाई 'सूरज कुंवर' का जन्म हुआ, जिसका विवाह जोधपुर के महाराजा वजेसिंह वख्तसिंहोत के साथ किया गया. पांचवी राणी मेडतणीजी 'वंदना देवी' मेडता के राठौर अभेराम गोपीनाथोत की पुत्री से वाई 'फूलकुंवर' का जन्म हुआ, जिसकी शादी उदयपुर के महाराणा सग्रामसिंह के साथ की गई.

इस महाराव के समय के दानपत्रों में वि. सं. १७६५, १७७१, १७७३, १७७८,

---

हुआ है. वैसे पाडीव ठाकुर नारायणदास को जोधपुर के महाराजा के साथ बडा ही स्नेह था. महाराजा अभयसिंह का विवाह इस महाराव की पुत्री 'जसकुंवर' के साथ होनेका वडुआ की पुस्तक में भी लिखा गया है.

* सि. रा. ई. की पुस्तक में 'अखेकुंवर' के बदले गजकुंवर (गजांदे) नाम अंकित है. इसका देहान्त वि. सं. १७५७ में सिरोही में हुआ था, जिसकी छत्री वि. सं. १७६० में बनी है.

नोट— महाराव मानसिंह उर्फ उम्मेदसिंह के समय में वि. सं. १७७४ में परगना दांतीवाडा पर पालणपुर के दिवान ने कब्जा कर लिया था, वैसा पुराने दफतर से पाया जाता है. वैसे लालजीमल की वही (यह वही पंचोली लालजीमल ने वि. सं. १८८६ में लिखी है) में लिखा है कि वि. सं. १७८७ तक में जोधपुर रियासत के तरफ सिरोही राज्य में से डोडीयाली के १२ गांव, सियाणा के १२ गांव, कोरटा के १२ गांव, पालडी के १२ गांव, नाणांबेडा के २० गांव, लोहियाणा के ६० गांव, धारोंतरा के २१ गांव, रामसिण के २७ गांव, व गोडवार में विशलपुर वांकली के १५ गांव, जुमले २२२ गांव के ९ पट्टे चले गये है.

१७८१, १७८२, १७८८, १७९१, १७९६, १७९७, १७९९ व १८०० तक के ताम्रपत्र व शिलालेख मिले हैं, उसमें मुसाहिबी करने वालों के नाम पाडीव ठाकुर 'रायश्री नारायणदास, जावाल के राजश्री जेसिंहदे, ÷चौधरी खानदान के (चौं. माला इणदा, चौं. कल्याणदास, चौं. केशरीमल, व चौं. तारा) व संगवी खानदान के (सां. अमरसिंघ, सां. सुन्दरलाल, सां. हटीसिंघ) और शाहा खानदान के (सा. ताराचंद, सा. जोगीदास, सा. भीखा, व साहा तेजा भीनमाला) नामों उपलब्ध होते हैं.

महाराव मानसिंह उर्फ उम्मेदसिंह का देहान्त वि. सं. १८०५ में होनेका वडुआ की पुस्तक में लिखा है, परन्तु सि. रा. इ. की पुस्तक में वि. सं. १८०६ दर्ज है.

नं. २१ महाराव पृथ्वीराज अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसके समय का एक भी दानपत्र नहीं मिला है. सि. रा. ई. की पुस्तक में इसका जन्म वि. सं. १७८२ वैशाख शुदि ११ का होना अंकित है वडुआ की पुस्तक से मालूम होता है कि इसके चार राणीयां थी. जिसमें राणावतजी 'फतांदे' होता के राणावत सुन्दरसिंह सुरगसिंह भगवानवत की पुत्री से कुमार तख्तसिंह, व चावडीजी 'अमृतदे' माणसा के चावडा अजेनसिंह प्रतापसिंहोत की पुत्रीसे कुमार रत्नसिंह व अखेसिंह के जन्म हुए. इसकी एक राणी साणंद के वाघेला की पुत्री व एक इडर के राठौर राजा की पुत्री थी. इस महाराव का देहान्त वि. सं. १८२३ में हुआ.

नं. २२ महाराव तख्तसिंह अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. इसका जन्म वि. सं. १८१६ भाद्रपद वदि ११ के दिन हुआ था. सिरोही के राजपुरोहित की पुस्तक में इसको गद्दी नशिनी वि. सं. १८२९ वैशाख सुदि ६ के रोज होना लिखा है, परन्तु वडुआ की पुस्तक में वि. सं. १८२९ कार्तिक सुदि ८ वार सोम अंकित है, वैसे इस महाराव के समय का ताम्रपत्र (जो मरहूम महाराव पृथ्वीराज के देहान्त के समय पर दान दिया गया उसके वास्ते लिखा हुआ है) वि. सं. १८२३ फाल्गुन सुदि १ का है, जिससे उपरोक्त गद्दी नशिनी का दिन जो वडुआ की पुस्तक में अंकित है वह ज्यादह भरोसा पात्र है. उपर्युक्त ताम्रपत्र में मुसाहिब का नाम सा. डुंगरसी भगवानदास का अंकित है.

÷ सिरोही रियासत में प्राचीन समय से मुत्सद्दीगिरी करने वाले महाजन वर्ग में संगवी, चौधरी, वहीवटा व कोठारी यह चार खानदान वाले मुख्य हैं, जिसमें वहीवटा व कोठारी 'शाह' कहेलाते हैं. संगवी व चौधरी खानदान वाले 'ओसवाल', और वहीवटा व कोठारी खानदान वाले 'पोरवाड' महाजन है. पोरवाडों में भी 'संगवी' कहे जाते हैं परन्तु वे और खानदान के हैं.

नोट—नं. २१ महाराव पृथ्वीराज से नं. २५ महाराव जगतसिंह के समय तक में वि. सं. १८१६ में पानेरा परगने के ३० गांव, वि. सं. १८२१ में वागड के १२ गांव, वि. सं. १८२२ में सेवाडा उन्हावती के ७ गांव और वि. सं. १८२९ में मडाणा परगना के ६० गांव पालणपुर की तरफ चला जाना पुरानी वही से मालूम होता है. इससे पाया जाता है कि इन महारावों ने अपने राज्य की चाहिये वैसी संभाल नहीं रखी, जिससे ठकावत सरदारों ने भी सिर उठाया और बेबंदोबस्ती होजानेसे रियासत की हालत भी अच्छी नहीं रही है.

बडुआ की पुस्तक में इसकी एक राणी इडर की, व दूसरी पोसीना के वाघेला की पुत्री होना लिखा है, इस महाराव के छोटे भाई बालकपन में ही गुजर गये थे, और आप भी वि. सं. १८३८ में अपुत्रवान देवलोक हुए, जिससे इसके काका नं. २१/१ जगतसिंह सिरोही के महाराव हुए.

नं. २१/१ महाराव जगतसिंह को पहिले ' भारजा ' पट्टा की जागीर मिली थी, लेकिन महाराव तख्तसिंह अपुत्रवान गुजरने से उनके पीछे यह सिरोही की गद्दी पर आया. इसका जन्म वि. सं. १७८७ के चैत्र वदि ८ को हुआ था. बडुआ की पुस्तक में वि. सं. १८३८ के जेष्ट वदि ६ को इसकी गद्दी नशिनी होनेका उल्लेख है. इसकी राणी चांपावतजी ' चंदादेवी ' हरजी के राठौर चांपावत रामसिंह रूपसिंहोत की पुत्री से आठ कुमार (१ शक्तसिंह, २ वेरीसाल, ३ उदयभाण, ४ कृष्णसिंह, ५ उदयसिंह, ६ वदसिंह, ७ फतहसिंह व ८ दोलतसिंह) और बाई ' दोलतकुंवर ' के जन्म हुए. सिर्फ छः माहा गद्दी पर रहने बाद (वि. स. १८३९ के मगसर सुदि ४) इसका देहान्त हुआ, उस समय इसका वडा पुत्र शक्तसिंह व उसके पुत्र कल्याणसिंह देवलोक हो चूके थे, जिससे द्वितिय कुमार वेरीसाल गद्दी के मालिक हुए.

नं. २१/२ जोरावरसिंह को ' मढार ' पट्टा की जागीर दी गई, जिनके वंशज वर्तमान समय में ' मढार ' के राजसाहेब है.

नं. २२/१ कुमार शक्तसिंह अपने पिता की जिन्दगी में ही गुजर गये. इसकी कुंवराणी बारडजी (सुदासणा की) लीलादेवी से दो पुत्री (बाई ' सरदारकुंवर ' व उदयकुंवर) व भवर कल्याणसिंह के जन्म हुए. कल्याणसिंह का बचपन मेंही अंतकाल हुआ. बाई सरदारकुंवर का विवाह उदयपुर के महाराणा भीमसिंह के साथ व बाई उदयकुंवर का विवाह इडर के राजा जालमसिंह के साथ किये गये.

नं. २२/२ महाराव वेरीसाल (दुसरे) अपने पिता के पीछे सिरोहीकी गद्दी पर बैठा, इसका जन्म वि. सं. १८११ के श्रावण सुदि १५ को हुआ था. और गद्दी नशिनी वि. सं. १८३९ में हुई. इस महाराव के पहिले के सिरोही के राजाओं ने संभाल न रखने के कारण इसने जब राज्य की लगाम हाथ में ली, तब लखावत सरदार करीब २ स्वतंत्रता से विचर रहे थे, और पालणपुर रियासत के साथ घालमेल रख कर अपनी जागीरें वढा रहे थे. पालणपुर के दिवान ने अपने राज्य की सीमा वढा कर, सिरोही के राज्य की अव्यवस्था का लाभ लेकर कोलीयों के गांवों पर अपनी रखवाली लगाना शुरु किया, जिससे कोली लोगों ने भी रुख बदल ली. राज्य शासन शिथिल होजानेसे दूसरे सरदारों ने भी अपनी जागीरें बढाने का उद्योग जारी कर दिया, व मीणे–भीलों आदि ने लूटफाट

मचाकर इलाका बरबाद कर रखा था. उस समय सिर्फ ४०-५० गांव राज्य के अधिकार में रह गये थे, ऐसी शोचनिय दशा देखकर महाराव ने उसको दुरूस्त करने का सोचा, परन्तु राज्य की फौज का दारमदार सरदारों की जमियत पर होनेसे, और सरदार लोग भी कावु में न होनेके कारण, राज्य की स्वतंत्र फौज खडी करने की जरुरत मालूम हुई, जिससे मकरानी, सिंधी, नागेवावे आदि बहादुर सिपाइयों की फौज़ खडी करने में आई.

कुछ फोज भरती होजाने पर महाराव ने पालणपुर की सीमा पर के (कोलीयों व सरदारों के) गांवो पर अपना कावु जमाने के वास्ते फौज लेकर चढाई की, वि. सं. १८४४ में पाथावाडा के चीवावतों व धनीयावाडे के सरदार जो पालणपुर रियासत के पक्ष में हुए थे उनको सजा देकर अपने कब्जे में लिये. वि. सं. १८४५ में पालणपुर रियासत ने ' खेमत ' के कोलीयों पर फौज भेजी, तब महाराव ने ' खेमत ' पहुंच कर पालणपुर की फोज को भगा दी. इस विषय में कवि आढा ओपा पेसुआ वाला ने कहा है कि.

दोहो.

" जगतो मानो छत्रसल, उदो ने अखमाल; अजूआले एता पखा, साहेब वेरी साल. "

गीत.

" अरबद रे राये गेरीया आवे, पालवणी इम करे पुकार; वार एक रूठो रायां वेरो, हर त्यां रुठा वार हजार. "
" दगमल अकल फरीया दोला, वेरीयां करडी वार वहे; अखेहर राजी अरियां सु अवलो, करता सवलो कमण कहे. "
" साज लिया पर वार सहेता, झड गोलां तलवारां झीक; मीरां हाथ लियां माथा सू, माथे ज्युं आयो मशरीक. "
" आवी फौज के पडीयो आभो, कना हुई काए नवी कल; देवडे रायां घालीयां दसमण, तलवारां वल रसातल. "
" शिव रो अंश वंश रो सूरज, कमण जगावत हुत कसे; धांणे घाते दंड घातीयो, पेली घात ने वात पछे. "
" जड अरि तोडे अमल जमावे, अखेई सोढ अजूआले; धरती तणो धणी रणधीरां वलीयो फोजां वाले. "

वि. सं. १८५० में +वाछोल गांव खालसे करके अपनी फौज के जमादार " देशल " को दिया ❀वि. सं. १८५५ में इसने डावेला, वीठुदर, गाढा, भरतवाडा आदि गांवो के कोलीयों को सजा देकर उन पर अपना अमल कायम किया.

+ वाछोल गांव वर्तमान समय में भी जमादार देशल के वंशजों के तरफ है, परन्तु सिरोही और पालणपुर रियासत की सीमा तय हुई, तब यह गांव पालणपुर रियासत के तरफ गया है.

❀ महाराव वेरीसाल दूसरे के समय की वि. सं. १८६६ की फोजबल की वही से मालूम होता है कि वर्तमान समय में जो गांव पालणपुर के तरफ है उसमें से (सीहा गांव से रु. २९।।), भटेसरिया का आवल गांव से रु. १२५); रोह गांव से रु. २५), किडोतर से रु. ८१), सरोतरा से रु. १९०), पांथावाडा से रु ६२।।-), जांथ से रु. ९९-), आरखी से रु. ४४=), मांडोतरा से रु. ८२।), सांतसण से रु. ६१।।।≡।।।) गुंदरी से रु. ९१।।।) और दूसरे कोलीयों से भेंस, घोडे आदि लेनेका दाखला उक्त वही में है.

इस महाराव ने मुलक में होती लूटफाट, लूटेरों को सजा देकर बंध की, और अपनी रैयत के जानमाल का प्रबंध अच्छा किया था, इस विषय में कवि ओपा कहता है कि.

" अल जमीयो अमल अभनमा अखेई, कल सूरज धन तुज कला; चीहलां ज्यां कासीद चूथता, रद्ध ले चाले शाह रला."
" वारा धन थारा वेरागर, कुण मैवास विनाश करे; पंथीयां मलेछ वाहता पथ्थर, त्यांहिज घाटां पथर तरे."
" जगपत तणा भलांईज जायो, धरपत धारण मोटी धांख; वने पडाव करे वेपारी, पडती जडे चढारी पांख."
" धनवत वगत रायां तप धारी, कोटे मोटे इम कहे; नह रहती धाने हलनाडी, रांने हल पुरीयां रहे."

सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि इस महाराव ने छः वर्ष तक अपनी फौज खडी करने का प्रयाश करके, पीछे अपनी फौज के साथ अपने सरदारों की फौज शामिल करके, पालणपुर रियासत ने करीब २५० गांव सिरोही के दबालिये थे, उनको कब्जे लेने को चढाई की, जब भटाणे फौज पहुची तब लखावत, डुंगरावत, व वजावत यह तीनों दल के सरदार महाराव को छोड कर पालणपुर वालों से जा मिले, जिससे गांव छूडा नहीं सके. इस महाराव ने सरदारों को दाखला बैठाने के कारण पाडीव ठाकुर अमरसिंह (जो डुंगरावत के मुखिया था और उसकी सलाह पर दूसरे सरदार चलते थे) को जमादार देशल के हाथसे सारणेश्वरजी के मन्दिर पास चूक कराया.

वि. सं. १८५८ में कालंद्री ठाकुर अमरसिंह ने महाराव की मंजुरी से अपने नजदीक के भाइयों में से ' काकेदरा ' गांव के रामसिंह को गोद लिया, और ' नीतोरा ' गांव महाराव को नजर किया, परन्तु कालद्री ठाकुर के देहान्त बाद उसकी ठकुराणी ने दुसरे सरदारों की बहकावट में आकर, ' काकेदरा ' के रामसिंह को गोद से हटाकर, ' मोटागांव ' के ठाकुर तेजसिंह के पुत्र खुमाणसिह को, वि. सं. १८५९ में बगैर मंजुरी महाराव के, गोद रखा जिससे बखेडा पैदा हुआ, लेकिन थोडेही दिनों में मोटागांव ठाकुर तेजसिंह मरवाया गया, जिससे सरदारों पर कुछ असर जरुर हुई.

उक्त ख्यात में लिखा है कि जोधपुर के महाराजा भीमसिंह ने अपने भतीजे मानसिंह से जालोर छीन लिया, जिससे मानसिह ने अपने जनाने व कुंवरों को सिरोही भेज दिये, परन्तु महाराव वेरीसाल ने जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के साथ बडी मैत्री होनेके कारण उनको अपने पास रखने से × इन्कार किया. पीछे से वि. सं. १८६० में मानसिंह जोधपुर के महाराजा हुआ, और गद्दी पर आतेही उसने मूता ज्ञानमल को

× यह बात प्रसिद्धि में है कि जोधपुर के कुमार मानसिंह से जालोर छीना गया तब उसके जनाने वाले सिरोही इलाका के ' अरठवाडा ' गांव के सरदार के पास रहे थे, कहा जाता है कि ' अरठवाडा ' की जागीर के सरदार ' सरायत ' (सामन्त) की श्रेणी के थे, परन्तु महाराव की इच्छा विरुद्ध कुमार मानसिंह के जनाने को रखने से, महाराव ने उसका 'सरायत' का दर्जा तोड दिया था.

नोट—वि. सं. १८९६ की फौजवल की वही में ठिकाना निंबज, भटाणा, मढार, व रहुआ के लखावत सरदारों के गांवो की फोजवल की रकम उक्त वही में नहीं है, जिससे अनुमान होता है कि वे लोग महाराव के सम्पूर्ण काबु में नहीं आये थे.

वडी फौज देकर सिरोही राज्य पर भेजा, जिसने मुलक लूटकर तबाह करने में ÷ कसर न रखी.

इस महाराव ने फौज का खर्च निभाने के वास्ते मुआफि व सासन के गांवों से भी * राज हक लेना शुरु किया था, उस मुआफिक चारणों के गांवो से भी लेना चाहा, जिसके वास्ते पेसुआ के कवि आढा ओपाने कवि लोगों पर नाराज न होते कृपा दृष्टि रखने की प्रार्थना में महाराव को कहा है कि–

सोरठा.

" धागे न होये ढील, तु तांणी तो तुटसी; मार्गात्रां री मील, वडा न लोपे वेरसल. "
" मंत्र वाचक मावाप, तो जेहडा मांने तरत; सुणे नही जल साप, वेरा गारडीयां वचन. "

गीत

" जला हल कवलेन कु जुडजे, दो मंग वाग दीहाडो; आबु राव इणारे उपर, कीजे कीम कुहाडो. "
" खुंदे परवत किया खोखरा, पाडे ढाह कांम पको; खमे न डोकर तणो खोलडो, धर पत हाथी तणो धको. "
" तटां वहती तरुवर तोडे, जोडे गीर वर मेर जसो; झेले नदीयां तणां झकोला. कीडी रो आसरो कसो. "
" वे मेवास मांडवा वाखल, पयाल घालीया नांना पीस; में जीखां कसो वल मारो, रायां राव वडा री रीस "
" वडां वडां री कार वेरसल, भागे नही वडाई भाल; आडी समद्रां राव आबुआ, पेहला करो तो के हां पाल. "

इस महाराव के समय के वि. सं. १८४१, १८४३, १८४४, १८४९, १८५६, १८६१–१८६२, १८६४ के दान देने के शिलालेख व ताम्रपत्र मिले है, जिसमें मुसाहिबो में सीसोदिया माहसिंघ, देवडा नाथुसिंह, संगवी भगवानदास लक्ष्मीचंद व संगवी माला लाला के नाम अंकित है, और रोहीरा में मूता भीखा का नाम मिलता है.

इसकी एक राणी चांपावतजी ' अभयकुंवर ' टीटोई (इडर इलाका) के चांपावत मदनसिंह हरिसिंहोत की पुत्रीसे कुमार उदयभाण उर्फ नाहरसिंह, व कुमार शिवसिंह, और दूसरी राणी मेडतणीजी ' जीवांदे उर्फ जशकुंवर ' चाणोद (ई. मारवाड) के मेडतिया वदनसिह शिवसिहोत की पुत्री से कुमार ' अखेराज ' के जन्म हुए.

महाराव वेरीसाल दूसरे ने २५ वर्ष तनदेही से राज्य सुधारने के वास्ते यत्न कर, वि. सं. १८६४ आषाड वदि ८ वार रवी के रोज स्वर्गवास किया. जो कि उनके सरदार

÷ जोधपुर रियासत के महाराजा मानसिंह के समय के परवाने से मालुम होता है कि वि. सं. १८६१ में जोधपुर की फौज ने सिरोही में कईएक माहा तक पडाव रखा था, और निंबज के ठाकुर जगतसिंह (महाराजा मानसिंह इसका जवाई होता था.) ने उसको सहायता की थी (परवाना मिति पोष वदि ३ ठीकाने निंबज के नामका ठाकुर जगतसिंह को धन्यवाद देने बाबत.)

* वि. सं. १८९६ की वही में गांव सेऊडा (त्रवाडी सुखा–फतां) से रु. २१), केर (मांडवाडा) के दिया नाथा से रु. ४१), गांव गोल के खतों से रबारी की देन, गांव डुंगरी (वेरान राजपुर का) से रु. ३), गांव कोदरला रावलों का रु. ६), गांव जणापुर रावलों का रु. ३०), गांव कोजरा (पुरोहित त्रवाडी चंद्रभाण सूरतराम) से रु. १११३), गांव रामपुरा रु. १९४) इस मुआफिक वसूल होनेका अंकित हुआ है.

आदि विरुद्ध होनेके कारण पालणपुर रियासत ने अगले राजाओं के समय में दबाया हुआ इलाका सम्पूर्ण काबु में नहीं ला सके, परन्तु उस जमाने की राजक्रान्तिसे राजपूताना की और रियासतों की मरहटा, पिंडारा आदि से जो खराबी हुई थी, और जगह २ 'चोथ' आदि खिराज पेश्वा के मरहटे सूबे ने लगा दी थी, वैसी 'खिराज' सिरोही रियासत पर वे लोग नहीं लगा सके. जिससे मुगल व मरहटों की तावेदारी की धुसरी व खिराज से सिरोही की रियासत बेदाग रहने पाई.

नं. २२/२ वदसिंह को भारजा की जागीर दी गई, परन्तु वह अपुत्रवान गुजरने से वापस राज्य में आ गई.

नं. २३ + महाराव उदयभाण वि. सं. १८६४ में अपने पिताके पीछे सिरोही की गद्दी पर बैठा. इसका जन्म वि. सं. १८४६ फाल्गुन वदि ९ का था. इसके समय के दानपत्र व पत्र व्हेवार में इसका नाम 'उदयसिंह' अंकित होना हरएक जगह उपलब्ध हुआ है. इस महाराव ने राजहक की 'फौजवल' वसूल करने में बहुत सख्ती अख्त्यार की थी. और * खुद फौज लेकर राज हक वसूल करने को जाते थे, जिससे सिरोही इलाके के महाजन आदि धनवान लोगोंको बहुत भय पैदा हुआ, औरउन लोगोने इलाका छोडना शुरु किया. कहा जाता है कि यह महाराव ऐश इशरत वाले बहुत थे, जिससे लोगों को अपने द्रव्य की चिन्ता उपरांत स्त्रीयों की इज्जत संभालने का भी डर हो गया. जिससे खास सिरोही में से भी महेश्री, पोरवाल, ओसवाल आदि महाजन लोग चले गये. दूसरी तरफ से जोधपुर के महाराजा मानसिंह अपने वैर का बदला लेने को, और सिरोही

+ महाराव उदयभाण की गद्दी नशिनी वि. सं. १८६२ ज्येष्ठ सुदि ७ की होना सि. रा. इ. की पुस्तक में पृष्ठ २९८ पर लिखा है, उसमें गलती हुई है. बहुवा की पुस्तक में जो संवत मिति दर्ज है वही सिरोही के राजपुरोहित के पुस्तक में भी अंकित है.

* महाराव उदयभाण खुद फौजबल वसूल करते थे उस विषय में खुद उनके हस्ताक्षर का वि. सं. १८६९ आषाढ वदि २ का पत्र जो राज्यमाता चांपावतजी के उपर लिखा है, उसमें लिखा गया है कि—

“ अठे आसाड वदी १ रा चढाइ हे. वद २ रे प्रभाते गाम जोलपुर रोहुवाला (रोहुआ के सांगावत) रो मारीइ लुटीइ चालोइ गाने वगाड वाडु ओडु—डेगु—भैंस—बलद—गाद आरे १५० आइ, दुसंणा फते हुई. आज डेरा पाला नेडे होसी. प्रभाते नीतोडे होली गाने रुपीइ ठेहराइ छे.

शिवरत.	घाणतो.	वेलांगरी.	ऊणगोर.	वाल्दो.	सीरोडी.	हणगवाडे अज होसी.	मेडे आज होसी.
२२०)	१९०)	१२०)	३०)	२०)	११०)	)	)

अण भात ठेहरी छे फेर डेरावां सां अठा दसा वगी खुसी राखसी. सेर रो जापतो रखावजी. कांम काज लखसी. सरब साप घोडा वेडी रे कुशल खेम छे. वांन (केदी) ९ गहीइ छे. ”

नोट—यह गांव जागीरदारों के है. और उन गांवों की हेसियत देखते यह रकम बहुत ज्यादती थी. अनुमान होता है कि जोलपुर गांव वाले सरदार ने यह राज हक देना इनकार करने से उस गांव को बरबाद करने की महारावने तजवीज की है.

राज़्य कब्जे करने को पीछे पड रहे थे, उसने भी बार २ सिरोही इलाके में फौज भेजकर × लूट खोस जारी रखी. (वि. सं. १८६७ के उन्हाले में मूता साहिबचंद की सरदारी के नीचे जोधपुर की फौज सिरोही रियासत के परगने रुवाई व भितरोट (पिन्डवारा व रोहोडा) पर आई, जिसमें विशलपुर के लखावतों ने अग्रणी बनकर वे परगने लूटे. फिर वि. सं. १८६८ के पोस महिने में इन परगनों को लूटे गये. सि. रा. ई. की पुस्तक में वि. सं. १८६९ में भी सिरोही शहर व इलाका, ज़ोधपुर की फौजसे लूटा जाना लिखा है.)

यदि सिरोही इलाका की प्रजा महाराव से भयभित होकर व वि. सं. १८६९ के भयंकर दुष्काल से बचने के वास्ते सिरोही इलाका छोड रही थी, इनके सरदार लोग ' फौज वल ' उगाने की सख्ती से नाखुश होकर विरुद्ध हो गये थे. जोधपुर की फ़ौज ने कई बार आक्रमण करके इलाका व पाटनगर सिरोही को भी लूटा था, परन्तु महाराजा मानसिंह को सिरोही का राज्य कब्जे करने में सफलता नहीं मिली, और महाराव उदयभाण ने अपनी स्वतंत्रता का रक्षण किया, लेकिन वि. सं. १८७० में जब कि महाराव गंगास्नान करके यात्रा से वापस लौटे और जोधपुर रियासत के ※' पाली ' नगर में मौज मजाह करने के वास्ते ठहर गये, तब जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने फौज भेजकर इसको पकड लिया, व जोधपुर में ले जाकर उससे गुप्त रीति से जोधपुर की मातहती, व सवा लक्ष रुपये देने की शर्तें लिखवा लेकर तीन माह बाद सिरोही आने दिये.

सिरोही आने बाद वह शर्तें महाराव ने पूर्ण न की, जिससे वि. सं. १८७१ में जोधपुर की फौजने सिरोही रियासत के खूणो (पोसाल्या) परगने पर आक्रमण किया, उस समय रांवाडा का ठाकुर देवडा आयदान अमरावत, जोधपुर की फौजसे ÷मिल गया, और ' रांवाडे ' में जोधपुर का थांणा बिठलाया, इस कारण से महाराजा मानसिंह ने उक्त ठाकुर को परवाना लिख कर शाबाशी दी व ताजिम देने का सन्मान् दिया. सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है कि वि. सं. १८७३ में मूता साहिबचंद के साथ जोधपुर की फौज आई जिसने भीतरट परगने को लूट कर बरबाद किया, जिससे महाराव उदयभाण ने परगना झालोर व गोडवार के गांवो को लूट कर फौज बाब वसूल की, उसपर

× सिरोही राज्य के रुवाई व भितरोट परगने में जोधपुर की फौज वि. सं. १८६७ व १८६८ में आनेका महाराजा मानसिंह के वि. सं. १८६७ चैत्र सुदि ७ व वि. सं. १८६८ पोस सुदि ११ के परवाने जो विशलपुर के लखावत देवडा भूपतसिंह वेरीसालोत पर लिखे गये है, उस परसे मालूम हुआ है. जिसमें वि. सं. १८६८ के परवाने में भितरोट में भूपतसिंहने अच्छी कारगुजारी दिखाने के एवज में विशलपुर की जागीर पर जोधपुर रियासत की जो बाब लगती थी वह मुआफ करने की तहेरीर है.

※ पाली नगर में वैश्याओं का बडा भारी जुथ रहता था, और महाराव ऐशो ज्यादह होनेसे उनके फंदे में फसे थे.

÷ परवांना वि. सं. १८७१ मिति आसोज वदि १२ का विद्यमान है.

महाराजा मानसिंह सख्त नाखुश हुआ, और बडी भारी फौज के साथ मूता साहिवचंद को भेजकर सिरोही को वरबाद करने की आज्ञा दी. जोधपुर की फौज ने वि. सं. १८७४ माघ वदि ८ को सिरोही शहर पर हमला किया, महाराव ने शहर छोड दिया और पहाड की शरण ली, जिससे जोधपुर की फौजने १० दिन तक शहर को लूटा, और महल में प्रवेश करके रियासत का दफतर भी जला दिया, वल्कि उन लोगोंने खास दरीखाने की जगह पर रोटी पकाई जिससे उस जगह का सूवर्ण मिनाकारी काम धूए से ढक गया, वह धूए की श्यामता वर्तमान समय में भी विद्यमान है.

वि. सं. १८७४ का वर्ष सिरोही राज्य के वास्ते भयंकर घटना का हुआ. वि. सं. १८६९ का दुष्काल, व उसके वाद जोधपुर रियासत की फौज के आक्रमण लागलगाट होनेसे मुलक को वरवादी हो चूकी थी, खास सिरोही शहर व राजमहल आदि लूटकर जोधपुरकी फौज ढाई लाख रुपये का माल लेकर लौट गई, तव भी महाराजा मानसिंह ने अपनी शर्तें (मातहतो स्वीकारना और सवालक्ष रुपये देना.) स्वीकार कराने का दुराग्रह नहीं छोडा, जिससे महाराव उदयभाण ने रुपये देनेका विचार किया, परन्तु खजाना खाली होनेसे महाजनों से रुपये वसूल करने का यत्न किया, व उनपर सख्ती होने लगी. यह देखकर धनवान महाजनों में खल भली मच गई, और वहुत से महाजन मालवा व गुजरात में जाकर आवाद हो गये. उस समय सिरोही राज्य को आवादी को इतने दर्जे हानी पहुंची थी कि, सिर्फ +८८ गांव आवाद रहे, और वाकी सारे इलाका के गांव वेरान हो गये. यह दशा देख कर सरदारों ने महाराव के छोटे भाई राजसाहेव शिवसिंह को राज्य प्रवंध के विषय में वातचित की, उसने (शिवसिंह ने) महाराव को नजरकैद करके राज्य की लगाम अपने हाथ में ली.

महाराव उदयभाण नजरकैद रखे गये, परन्तु राव शिवसिंह ने उसकी हयाति तक अपने को राजा कहलाना उचित नहीं समजा, ऐसा सि. रा. ई. की पुस्तक में लिखा है, परन्तु उस समय के ताम्रपत्रो से पाया जाता है कि वि सं. १८७६ के साल से महाराव शिवसिह व कुमार गुमानसिंह का नाम अंकित है, और वि. सं. ※ १८६९ काती सुदि २

+ वि. सं. १८७९ में सिरोही रियासत में परगने खूणी में १९ गांव, खारल में ४, झोरा में ९, मगरे में १४, रुत्राई में ११, रोहीडा में १४, सांतपुर में ३, भाखर में २, चवरा में ९, वारट ४ व साएठ में सिरोही को हकुमत में ३ (वकाया गांव पालणपुर के तरफ गये थे.) जुमले ८८ गांव आवाद रहे थे, जिसमें खालसा दरवार के तरफ वि. सं. १८६९ में खालसे हुए पिन्डवारा पट्टे के (१ पिंडवारा, २ धनारी, ३ झाडोली) ३ गांवों के सिवाय १ खास सिरोही, २ रोहीडा, ३ वासा, ४ भारजा, ५ खावरवाडा, ६ नितोडा व ७ वालोरिया गांव थे. वकाया ७८ गांव सरदारों व सासन के थे.

※ महाराव उदयमाण के समय के ताम्रपत्रों में वि. सं. १८६९, व वि. सं. १८६९ भाद्रवा सुदि ३ तक के लेखों में सिर्फ ' महारायि श्री उदेभिवजी ' नाम अंकित है और बाद में वि. सं. १८६९ कार्त्तिक सुदि २ के व वि. सं. १८७०, वि. सं. १८७२, वि. सं. १८७४, (भाद्रपद वदि १० के,) वि. सं. १८७९ (मगशर सुदि ८) तक के ताम्रपत्रों में

व उसके पीछे के ताम्रपत्रो में महाराव उदयसिंह के नाम के साथ शिवसिंह का नाम भी उपलब्ध होता है, इससे यह अनुमान होता है कि महाराव उदयभाण ने वि. सं. १८६९ से ही, शिवसिंह को अपना गद्दी वारिस मुकरर कर दिया था.

सि. रा. इ. की पुस्तक में लिखा है कि महाराव उदयभाण को कैद से छुडाने के वास्ते जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने सिरोही पर फौज भेजी, परन्तु सफलता प्राप्त न हुई. महाराव उदयभाण के तीन राणीयां थी, जिसमें एक माणसा के चावडा जेतसिंह की पुत्री ' गुलाबकुंवर, ' दूसरी ' नारलाई ' के मेडतिया पृथ्वीसिंह की पुत्री ' इन्द्रकुंवर ' तीसरी ' खेजलडी ' के चांपावत सालमसिंह की पुत्री ' जेतकुंवर ' थी. उक्त पुस्तक में चावडीजी से वि. सं. १८६२ में, चांपावतजी से वि. सं. १८७१ में व मेडतणीजी से वि. सं. १८७८ में विवाह होनेका अंकित किया है, परन्तु वहुआ की पुस्तक में दूसरा विवाह मेडतणीजी का होना अंकित है, अनुमान होता है कि वि. सं. १८६८ में दुसरा विवाह हुआ होगा. अगर यह अनुमान ठीक नहीं है तो कैद में होने की हालत में यह विवाह हुआ है वैसा मानना चाहिये !

महाराव उदयभाण के समय में प्रधान सिगणोत जेता ने वि. सं. १८६९ में पिन्ड-वारा के राणावत ठाकुर × जालमसिंघ को चूक करके मार डाला. उक्त ठाकुर अपुत्रवान होनेसे उसकी जागीर के सव गांव खालसा राज शामिल हुए.

पेसुआ के कवि आढा खोडीदान ने एक कवित में कहा है कि सिरोही के देवडे चौहानों ने ' नौरोज ' न देने के कारण मेहणा भांगने के वास्ते सिरोही राज्य को तवाह करना चाहा था. इस विषय में कवि अपने गीत में कहता है कि—

' महाराव श्री उदेसिंघजी शिवसिंहजी ' नाम दर्ज है, उसमें किसी जगह ' भाई शिवसिंह ' व किसी जगह ' कुमार शिवसिंह ' लिखा गया है.

× पिन्डवारा के राणावत उदयपुर के महाराणा उदयसिंह के पुत्र रुद्रसिंह की ओलाद में थे. रुद्रसिंह का पुत्र राणावत परवतसिंह महाराव रायसिंह दूसरे की सेवा में था, और वहादुर राजपूत गीना जाता था. राणावत पर्वतसिंह को महाराव ने पिन्डवारा की जागीर दी, वाद उसके वंशजों में मोणवाडा, मांगवाडा, धनारी, व झाडोली आदि जागीरें विभक्त हुई. राणावत पर्वतसिंह के बाद पिन्डवारा में क्रमशः २ साहेवसिंह, ३ अमरसिंह, ४ प्रतापसिंह, ५ संग्रामसिंह व ६ सवाईसिंह हुए. सवाईसिंह वि. सं. १८६२ में विद्यमान था. वि. सं. १८६१ में झाडोली में राणावत कोलसिंह (कुशलसिंह) था वह नाओलाद गुजर गया, और वि. सं. १८६२ में पिन्डवारा के सवाईसिंह ने अपुत्रवान होनेके कारण धनारी के राणावत जालमसिंह को, बगैर मंजुरी महाराव वेरीसाल के, अपने गोद लेकर धनारी व पिन्डवारा की जागीर शामिल कर ली, जिसपर महाराव की एतराजी हुई, परन्तु पीछे से उसका गोद मंजुर रखा गया. कहा जाता है कि कुमार शिवसिंह ने मजाक में सिंगणोत जेता को कहा कि ठाकुर जालमसिंघ को मार सक्ता है ? जिसपर उसने ठाकुर के महल में जाकर उसको चूक किया. जालमसिंघ अपुत्रवान था जिससे उसकी जागीर खालसे में रखी गई, और पिन्डवारा के साथ धनारी व झाडोली की नाओलाद जागीरें भी खालसे हो गई. वर्तमान समय में सीसोदिया पर्वतसिंह के वंशज १ सोणवाडा, २ उंदरा, ३ जयापुरा, ४ काछोली (जनापुर वाले) व ५ सांगवाडे में विद्यमान है और जागीर पा रहे है.

" कछवाहा कमंध धरा रे कारंण, ज्यां नारी नवरोजे जाय; मेहणो ओ लागे मंडोवर, कुल चहुआणां रेस न कांय."
" पग पग रेस देअण पतसाहां, राजा मांन न जाणो राज; आबु धका दे अण अधपतियां, उद्दल खलां संघारण आज."
" क्रोड पसाव जकां धर कीधा, सोढ हरा खग जगत सरे; कडुऐ अमलैं मेल न करसी, करमाला स्रु मेल करे."
" वरैस मंद खग ओ वेरसल, कलवट तणी नभावण कार; जग जग वैर न दीधा जना, हेवे नवा वसावण हार."
" गीरंद अढार पाट नंग गीर, सोहडां घणां देअण खग चोट; उडीया भाण धूहडां उपर, महपत आंक सदा मन मोट"

महाराव उदयभाण को जोधपुर के महाराजा ने धोखे से पकड लेनेके विषय में इसी कवि ने जोधपुर के महाराजा मानसिंह को रुवरु में कहा है कि—

" कीनो आपरो जांणीयो कनां हरामखोर रे कींहे, जाणीयो जो कियो तो न कीनो वात जोग;"
" रायां राव उदेभांण झलांणीयो मान राजा, असी रीत वेसांणीयो करी तें अजोग."
" आगे ही सोरोही राव न भागो दलेस आगे, जो आप वोलाव आगो पीठ देई न जात;"
" दगो करे सोढ हरो रोकीयो अजीत दुजा, वदे सगो आपरो अजोग कीधी वात."
" रमां वडा ऊयालणो कहीजे आवुओ राजा, केगारने पालणो थो न देणो थो कान;"
" वोलाएर झालणो थो वेरीसाल तणो वेटो, गीनाएत न रोकणो थो सवाइ गुमान."
" खून गनो जाणवो नां सीरोही आपरे खोले, रावरे नवेई कोट खोले असी रीत;"
" दली नाथ जोधांण स्रु कीध दगो घेर दोले. उमेदराव रे ओले राखीयो अजीत."

इस महाराव ने पदभ्रष्ट होने वाद २९ वर्ष उसी अवस्था में व्यतित किये, और वि. सं. १९०३ में इसका देहान्त हुआ. इसके पुत्र नहीं होनेसे राव शिवसिंह इसके देहान्त वाद राजा कहलाये गये.

सिरही राजकुल के नं. $\frac{23}{1}$ वाले महाराव.

महाराव शिवसिंह साहब बहादुर.

[विभाग पहिला पृष्ट ३०९]

The Luhana Mitra Steam P. Press Baroda

प्रकरण ३४ वाँ.

चलू देवड़ा चौहान. (महाराव शिवसिंह व महाराव उम्मेदसिंह)

नं. $\frac{२३}{१}$ महाराव शिवसिंह का जन्म वि. सं. १८५५ कार्तिक सुदि ६ के दिन हुआ, उसके तरफ नादिआ पट्टे की जागीर थी, लेकिन वि. सं. १८७५ में जब कि महाराव उदयभाण से राज्यशासन छीना गया, तब से यह उसकी जगह राज्य कारोबार चलाने लगे, और ' राव शिवसिंह ' के पद से नियत हुए. वि. सं. १९०३ माघ वदि ९ के दिन महाराव उदयभाण का देहान्त होने वाद, यह महाराव पद से सिरोही राज्य के मालिक बने.

महाराव उदयभाण के समय में राज्य की अव्यवस्था हो जानेके कारण, जब यह राज्य गद्दी पर आये, उस समय रियासत की स्थिति ऐसी खराब थी कि, राज्य के तरफ खालसा गीने जाते आबाद गांव, सिरोही नगर समेत सिर्फ (१०) दशही थे, मुलक वैरान हो चूका था, और सरदार लोग आप मुख्त्यार बन कर रियासत की हुकूमत के बाहिर विचर रहे थे, जोधपुर व पालणपुर रियासत वालों के, अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामे हो जाने के कारण, उनकी तरफ से सिरोही का मुलक दबाया जा रहा था, जोधपुर की फौज ने खजाना लूट लेनेसे भंडार खाली पडा था, और आमदनी का जरिया चाहिये जैसा न होने के कारण, उपरोक्त दोनों रियासत के सामने फौज का जमाव करके भिडने का साधन नहीं होनेसे, महाराव को अंग्रेज सरकार का आश्रय लेने की आवश्यकता मालूम हुई, जिससे जालोकरा गांव के पुरोहित नारायणदास (जो रावल ब्राह्मण था.) द्वारा अंग्रेज सरकार के पोलिटिकल अफसरों के साथ अहदनामा करने के विषय में बातचित शुरु कराई, उस समय कर्नल टॉड साहेब जोधपुर रियासत के पोलिटिकल अफसर थे, पुरोहित नारायणदास उसके साथ सिरोही रियासत के अहदनामा की तजवीज कर रहा है, यह बात जोधपुर के महाराजा मानसिह के कान पर जानेसे, उसने सिरोही राज्य अपने तावे का होना जाहिर करके, अलग अहदनामा न करने के विषय में अपना दावा अंग्रेज सरकार के आगे पेश किया, जिससे अहदनामा होना मुलतवी रहा, और जोधपुर के दावा की तहकीकात का काम कर्नल टॉड साहेब को सुपुर्द हुआ. टॉड साहेब के साथ महाराजा मानसिह को बहुत मित्राचारी होनेसे, अपनी मुराद हासिल होने की सम्पूर्ण उम्मेद उसको हो चूकी थी, परन्तु वह निष्पक्षपाती और न्यायी अंग्रेज अफसर ने अच्छी तरह प्राचीन ख्यात व सबूत पुरावे ढूंढ कर सम्पूर्ण तहकीकात करके, सिरोही रियासत कभी जोधपुर की मातहत नहीं होना, और एक स्वतंत्र राज्य होना स्वीकार कर जोधपुर का दावा खारिज किया.

दंतकथा में यह बात कही जाती है कि, पुरोहित नारायणदास ने यह +शर्त अंग्रेज सरकार के साथ तय की थी कि, सिरोही रियासत के जो जो परगने जोधपुर व पालणपुर रियासत ने दबालिये है, वे सब वापस सिरोही रियासत के शामिल किये जाएंगे, लेकिन वैसा नहीं हुआ, जिसका कारण यह बताया जाता है कि, पुरोहित नारायणदास के विरुद्ध सिरोही के किसी मुत्सद्दी ने यह बात फैलाई कि, उसने अंग्रेज सरकार के साथ मिल कर अपने वास्ते भीतरोट परगना की जागीर लिखा ली है, इस अफवा के नतिजे में नारायणदास ने 'लोटाणा' गांव के पास फांसा खाकर अपना जान गुमाया. कहा जाता है कि इसी कारण से उसकी माता ने अपने पास जो कागज पत्र थे वे सब नाश कर दिये, जिससे ता. ११ सपटेम्बर सन १९२३ ई. (वि. सं. १८८० भाद्रपद सुदी १३) को, सिरोही मुकाम अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा तहरीर हुआ उसमें वह शर्त दर्ज नहीं होने पाई है. इस अहदनामे की रुह से सिरोही रियासत की कुल आमदनी पर छःआनो की खिराज दाखिल हुई.

सिरोही रियासत के सरदारों में गोद लेनेके विषय में, प्राचीन समय से यह प्रणाली है कि, वे लोग दरबार की मंजूरी के सिवाय दूसरे का पुत्र गोद नहीं ले सक्ते है, ऐसी मंजूरी देते वक्त नकद रकम का नजराना अथवा नाओलाद सरदार की जागीर में से कुच्छ हिस्सा, नजराना के एवज में खालसा राज रखा जाता था, अगर गोद मंजूर नहीं करते कुल जागीर खालसा की जाती थी, लेकिन राज्य शासन शिथिल हो जाने के कारण, सरदार लोगों ने वैसी मंजूरी हासिल करने की परवाह न रखने से, राव शिवसिंह ने राज्य की लगाम अपने हाथ में लेतेही, बगैर मंजूरी राज गोद न लेनेका हुकम जारी किया, इस कारण से सरदार लोगों में ज्यादह असंतोष पैदा हुआ.

अंग्रेज सरकार के साथ अहमदनामा हो जाने से, जोधपुर के महाराजा ने सिरोही इलाके के खारल परगने पर, भंडारी पृथ्वीराज की सरदारी में फौज देकर हमला कराया, और १० गांवों को बरबाद करके रु. ३१०००) का नुकशान किया, लेकिन अंग्रेज सरकार ने वह नुकशान जोधपुर से वापस भरा दिया, व रियासत का इन्तिजाम के वास्ते जरुरी फौज रखने को रु. ५००००) विना सूद देनेकी तजवीज हुई, इस वक्त केप्टन स्पीअर्स साहेब सिरोही का पोलीटिकल एजंट नियत हुआ.

महाराव साहिब ने एक तरफ अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा करने की पैरवी

+ पुरोहित नारायणदास ने यह शर्त लिखा लेने के विषय में, रियासत के दफतर से संगीन पुरावा प्राप्त नहीं हुआ है, लेकिन रियासत के तरफसे अहमदनामा हो जाने बाद, इलाके गैर में गये हुए परगने वापस मिलने का दावा, अंग्रेज सरकार में होने के विषय में कितनेक कागज मौजूद है, जिससे अनुमान होता है कि अंग्रेज सरकार ने जरुर वादा किया होगा, उस दावे का इतनाही परिणाम आया कि, वि. सं १८७९ के बाद जो जो गांव पालणपुर रियासत ने कब्जे किये थे वे सिरोही रियासत को दिलाये गये, और उसके पहिले दबे हुए परगने के विषय में कुछ भी गोर नहीं हुआ. पुरोहित नारायणदास फांसा खाकर मरजाने की बात सही है, और ऐसे ही कारण से उसने अपनी जनोई का फांसा डाल कर आपघात किया था.

जारी रखी, और दूसरी तरफ जागीरदारों के गांवों से जो विना धोरण का राजहक वसूल होनेके कारण असंतोष फैल रहा था, उसको रफा करने के वास्ते एक ही धोरण से राजहक लेने की तजवीज करने को हरएक जागीरदारों से, अलग अलग +अहदनामा करने का काम हाथ में लिया, और अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा तहरीर हुआ उस समय तक में, सिवाय ठिकाना निंवज के सिरोही रियासत की हुकूमत में जो २ सरदार विद्यमान थे उनके साथ, राजहक को आमदनी आठआनी के हिसाव से लेना तय हुआ. यदि ठिकाने निंवज का ठाकुर रायसिंह आप मुख्तार बन बैठा था, और दूसरे जागीरदारों के मुआफिक अहदनामा करना नहीं चाहता था, जिससे उसको दवाने के लिये अंग्रेज सरकार की फौज की सहायता लेकर निवज पर चढाई की, इस लडाई में दोनों तरफ के कितनेक आदमी मारे गये, और ठाकुर रायसिंह अपने पुत्र प्रेमसिह के साथ पहाड में भाग गया व निवज पर राज्य ने कब्जा कर लिया, परन्तु थोडे दिन वाद रामसीण वगैरह ठिकाने के सरदारों ने वीच में पड कर, ठाकुर रायसिंह को निंवज ठिकाना वापस दिलाया, और वि. सं. १८८१ वैशाख सुदि १ के दिन निंवज ठिकाने के साथ अहदनामा हुआ, जिसके जरिये निंवज ठिकाने की कुल आमदनी में छःआनी हक राज्य में देनेका तय हुआ.

अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा होजाने पर, रियासत की तरफ से पालणपुर व जोधपुर रियासत के तरफ जो परगने चले गये थे वह वापस लेने का दावा पेश किया, परन्तु उसमें कारामद नही होते, सिर्फ पालणपुर रियासत से मंढार, भटाणा, रहुआ, दवाणी, वागदा, ठिकाने के जागीरदारों के गांव, वि. सं. १८८० मागसर वदि २ की तहरीर से सिरोही राज्य में सुपुर्द हुए, और उनकी जागीर से राजहक आठआना लेनेका ठहराव हुआ, वैसे गीरवर मावल पट्टे की जागीर के गांव भी पालणपुर रियासत ने वि. सं. १८८१ में सिरोही रियासत में सुपुर्द किये.

वि. सं. १८८५ में देहली का शाहजादा मुहम्मद वहरामशाह ने मक्के से लौटते सिरोही की महमानगिरी ली, इसी साल में अंग्रेज सरकार को देनेकी खिराज छः आना तय हुआ था, उसमें से दोए आनी कम करके चारआना खिराज की रकम *रु. १५०००)

\+ जागीरदारों के साथ वि सं. १८७८ व १८७९ में अलग २ जागीर का अलग २ अहदनामा हुआ, उसमें जमीन मुतालीका (वाहतकी) आमदनी में राजहक आठआनी और घरवेरा, मवेशी की चराई आदि नक्द आमदनी राज में आवगो लेनेका ठहराव हुआ, लेकिन पीछेसे ठिकाना निंवज का अहदनामा होने वाद ठिकाना पाडिव, कालंद्री, मोटागांव व जावाळ ये चारों रियासतों से हरएक प्रकार की आमदनी में से छः आनी लेना तय हुआ, और दूसरे जागीरदारों को नक्द आमदनी में कुछ भी नहीं देने का ठहराव था, उसके बदले किसी जागीरदार को उसमें से चारआनी व किसिको आठआनी देने की तजवीज हुई है.

* सिरोही रियासत की कुल आमदनी रु. ६००००) गीनी गई थी, लेकिन इन दिनों में, हांसिल बटवारा रु. १८३७७) घर गीनती रु. ७६९९) मवेशी रु. ५५२४) दाण रु. ८८०५) लागवाग रु. २१२०) जुरमाना रु ७१५४) आवकारी रु.८१२) जुमला रु. ५०८९१) की होना वि. सं. १८८९ की वही से मालूम होता है.

भीलाडी देने का तय हुआ. वि. सं. १८९७ में गीरवर–मावल के ठाकुर नाओलाद गुज़रने पर, निंबज ठाकुर ने बगैर मंजूरी राज अपने पुत्र उदयसिंह को गोद देने से, उदयसिंह को पकड कर कैद किया गया, जिससे निंबज ठाकुर ने लडाई की तय्यारी की, रियासत से उसको सजा देने की तय्यारी हो रही थी, दरमियान उदयसिंह कैद में ही गुजर गया, और पोलिटिकल ओफिसर ने ठाकुर रायसिंह को नाजायज काररवाई न करने की हिदायत करने से, उसने भी राज्य का हुकम मान लिया.

वि. सं. १९०० में जोधपुर इलाके के गोडवार परगने के हाकिम ने सरहदी तनाजे के बहाने से, सिरोही के गांवों पर फौज भेजकर जोधपुर की नजदिकी सरहद के जोयला आदि गांवों को लूट कर रु. ३५०००) का नुकशान किया, जिसकी इत्तिला अंग्रेज सरकार को होने पर, अंग्रेज सरकार ने केप्टन फ़र्च व मेजर डाऊनिंग नामक अंग्रेज ओफिसरों के द्वारा सरहद मुकरर करा दी, जिसमें सिरोही रियासत के तरफ से अच्छी पैरवी न होने से, सिरोही के बहुत से गांव जोधपुर रियासत में चले गये.

वि. सं. १९०२ में मणादर व झाडोली के बजावतों के दरमियान सरहदी तनाजा होने के कारण, झाडोली के बजावत सरदारों ने बगावत करके नुकशान करने से, उन पर फौज भेजी गई, परन्तु बाद में पंचायत से उनका फैसला हो गया. इसी साल में आबु पहाड पर 'सेनिटेरियम' बनाने को अंग्रेज सरकार को इजाजत देने का अहदनामा हुआ.

महाराव शिवसिंह ने अपनी रियासत में अमन फैलाने के वास्ते वि. सं. १९०३ से १९०६ तकमें हरणी, झाडोली, लोहियाणा व रहुआ आदि गांवों के सरदारों को, और लूट करने वाले मीणे, भीलों आदि को सख्त नसीहत की. पोथापुरा के ठाकुर (उदयसिंह के पुत्र.) अनाडसिंह व नवलसिंह बागी हुए थे, और निंबज ठाकुर उनको सहायता दे रहे थे, जिससे निबज ठाकुर को सजा देने के वास्ते, महाराज कुमार गुमानसिंह ने राज्य व अंग्रेज सरकार की फौज सहित निवज पर चढाई की. निवज ठाकुर ने सामना किया, और पहिले हमले में राज की फौज को सफलता प्राप्त नहीं हुई, लेकिन दूसरे हमले में ठाकुर भाग गया, और पहाड की शरण ली, राज की फौजने निवज कब्जे किया, परन्तु पीछे से निवज ठाकुर ने हाजिर होकर अपनी कसूर के वास्ते मुआफी मांगने पर, उसको निवज वापस दिया गया. इसी तरह जोगापुरा का ठाकुर, चोरोंको पनाह देकर नुकशान पहुंचा रहा था, उसको पकड कर कैद की सजा दी गई.

वि. सं. १९०९ में जोधपुर इलाके के लोहियाणा ठिकाने का राणा व नाणा ठिकाने के ठाकुर जो सिरोही रियासत में लूट खोस व चोरी कराते थे, उनको अंग्रेज सरकार द्वारा सिरोही में बुलवा कर आयन्दा ऐसी काररवाई न करने की तहरीर लिखा ली, जिससे सरहदी गांवों में उक्त ठाकुरों से होता त्रास कम हो गया.

वि. सं. १९१० में भटाणे ठिकाने का ठाकुर नाथुसिंह ने मुलकी सरहद के फैसले में अपने कब्जे की जमीन पालणपुर के तरफ चली जाने से बागी होकर तुफान शुरु किया और लूटफाट करने लगा, उसको दबाने के वास्ते अंग्रेजी फौज की सहायता लेकर पीछा करने से वह कई आदमियों के साथ पकडा गया, और उनको छःवर्ष की कैद की सजा दी गई, लेकिन वि. सं. १९१५ में वह जेलखाने से भाग गया, और फिर लूटफाट करने लगा. महाराव ने उसको पकडने के वास्ते मूंशी न्यामतअलीखां को फौज देकर भेजा, परन्तु वह गिरफतार हो सके वैसा नहीं होने से मुआफी देनेकी शर्त पर सिरोही लाया गया, महाराव ने उसकी सब कसूर मुआफ करके भटाणा की जागीर वापस दे दी. इसी साल में महाराव ने एरिनपुरा की छावणी के पास अपने नाम से ' शिवगंज ' नामका नया शहर आबाद किया, और वहां पर आबाद होनेवालों के वास्ते खास तौरपर रियायत करने से, पाली आदि स्थलों से अच्छे २ व्यापारी आबाद हुए, जो शहर वर्तमान समय में सिरोही रियासत में खास व्यापार का स्थल गिना जाता है.

सरदारों के फसाद से फौज का खर्च बढजाने से रियासत पर कर्जा बढ गया, और राज्य प्रबंध में जरुरी सुधारा नहीं होने के कारण महाराव ने सुप्रीन्टेन्डेन्ट के तौरपर एक अंग्रेज अफसर मुकरर कराना चाहा, जिस जगह पर कर्नल एन्डरसन् साहब मुकरर हुआ, महाराव ने उसको राज्य की हालत सुधारनेका व आमदनी बढाने का काम सुपुर्द किया, उसने वैरान गांव आबाद करने के वास्ते इस्तहार जारी किये और खेती व व्यापार की तरक्की होवे वैसा इन्तिजाम किया, जिससे मुलक में अमन के साथ बहुत फायदा पहुंचा.

वि. सं. १९१४ के गदर में एरिनपुरा छावनी की फौज गदर के बागी लोगों के साथ शामिल हो गई, उस समय छावनी के अंग्रेजों में से केप्टन कोनोली बागी के हाथ पकडा गया, और दूसरे अंग्रेज व उनकी औरतें बाल बच्चों के साथ भाग नीकले. महाराव को यह खबर मिलते ही, उसने मूंशी न्यामतअलीखां को राज्य की फौज देकर उक्त अंग्रेजों की सहायता के वास्ते भेज दिया, उसने ' वडगांम ' नामक गांव के पास बागियों के साथ मुकाबला करके उनको शिकस्त दी, और भगे हुए अंग्रेजों का पता लगा कर उनको सिरोही पहुंचा दिये, महारावने उन अंग्रेजों को अपने महल में रखकर अच्छी खातिर की.

केप्टन कोनोली बागी के हाथ में होनेका मूंशी को मालूम नहीं था, जबकि यह बात मालूम हुई तब उसने बागियों का पीछा किया, और दो दिन सफर करके उससे जा मिला. उसने बागियों की तरफ से निगहबानी रखने वाले सवारों को लालच देकर कोनोली साहेब को मुक्त किया, और सिरोही पहुंचा दिया. वे सब अंग्रेज लोग गदर की शान्ती होने तक सिरोही के महलात में रहे, और बाद एजंट गवरनर जनरल के पास

आबु पर पहुंचाये गये. महाराव साहिब की यह वफादारी देख कर अंग्रेज सरकारने उसको धन्यवाद दिया, और सिरोही राज्य पर पीछली सालों की खिराज की रकम बाकी थी वह छोड दी, और आगे के लिये आधी खिराज (रु. ७५००) भीलाडी) लेना तय हुआ.

वि. सं. १९१६ में धाणता व वेलांगरी गांव के सरदारों ने आपस में झगडा किया, जिसमें कितनेक आदमी मारे गये और जख्मी हुए, महाराव साहिबने उनको पकडने के वास्ते राज्य की फौज भेजी उनमें से धाणता के जागीरदार पकडा गया, परन्तु वेलांगरी का जागीरदार बागी होकर लूट करने लगा, उसको पकडने के वास्ते राज्य ने फौज नियत की, लेकिन मोटागांम के सरायत विजयसिंह ने उसको महाराव के पास हाजिर किया. महाराव ने दोनों जागीरदारों को जुर्माना की सजा देकर मुआफी बक्षी. इसी साल में सणवाडा व सिरोडी के जागीरदार बागी हुए, उनको पकडने के वास्ते फौज भेजना पडा. सणवाडा वाले फौज के शरण हो गये, परन्तु सिरोडी वाले ने फौज के साथ मुकाबला किया, जिसमें दोनों तरफ के कितनेक आदमी मारे गये, अखीर दबाणी के ठाकुर की जामनी से सिरोडी वाले हाजिर आये, उन्हों ने जो जो नुकशान किया था उसका बदला लेकर उनकी जागीर वापस दी गई.

सिरोही रियासत के सरदार हठिले व स्वतंत्र मिजाज के होने के कारण अंग्रेज सरकार का हिन्दुस्तान में राज्य अमल हो जानेसे जबकि गैर रियासत के साथ युद्ध करने का प्रसंग बंध हो गया तब उन्हों ने अपना मिजाज और ताकत को आपस के झगडे करने में, राज के साथ फसाद मचाने में व बगावत के काम में अजमाना शुरु किया, जिससे महाराव शिवसिंह को बहुत तकलिफ उठाना पडा. बल्कि अंग्रेज सरकार की सिरोही राज्य को सहायता व सहानुभूती न होती तो ऐसे सरकस सरदारों को काबु में रखना मुश्किल हो जाता. सिरोही के सरदारों के साथ काम लेने में सब से भारी मुश्किली यह है कि वे सब एक ही खानदान के है, और जब २ फसाद मचाते तब राज्य की तरफ से दबाव होने पर, दूसरे सरदार उनके भाई बन्धु होने के कारण पनाह देते थे, वैसे जब राज्य के तरफ से सख्त दबाव होकर गिरफतार होने का मौका आ जाता तब उनके दूसरे भाई महाराव को सिफारिश करके उनकी कसूर मुआफ करने का बचन लेकर उनको हाजिर कर देते थे, जिससे फसाद मचाने वाले को कसूर की सजा चाहिये वैसी न होनेसे, बगावत करने का गुनाह एक मामूली बात जैसा हो गया. इसी कारण से सिरोही रियासत में अबतक सरदारों की बगावत के विषय में वही प्रणालिका विद्यमान है और रियासत को फौज का खर्च व तकलिफ उठाने का प्रसंग बार २ उपस्थित होता है.

वि. सं. १९१७ के अश्विन वदि ५ को महाराज कुमार गुमानसिंह ने अपने हाथ से गोली खाकर आपघात किया, जिससे महाराव को बहुत सद्मा पहुंचा और इसी कारण

मरहूम कर्नल सर जेम्स टॉड साहब बहादुर.

सी. आई. ई.

[विभाग पहिला पृष्ठ ३१९]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

से वि. सं. १९१८ में राज्य कार्य अपने दूसरे महाराज कुमार उम्मेदसिंह को सुपुर्द करके आप इश्वर भजन कें कार्य में अपना समय व्यतित करने लगे.

महाराव शिवसिंह की तसवीर जो इस पुस्तक में दी गई है उसको देखते मालूम होता है कि वह सादे सिधे लेकिन सख्त मिजाज के राजा होंगे, बीस वर्ष की अवस्था में राज्य की लगाम इसके हाथ में आई, और रियासत की हालत ऐसी खराब थी कि, अगर महाराव उदयभाण जैसे राजा ज्यादह समय तक इस गद्दी पर होता तो राजपूताना में सिरोही रियासत की गणना शायद ही एक फर्स्टकलास रियासत की पंक्ति में रहने पाती; सिरोही रियासत के रइस अंग्रेज सरकार का बहुत इहसान मानते हैं वल्कि कर्नल टोड साहेब जिसने निष्पक्षपात से जोधपुर का दावा खारिज कर सिरोही का स्वतंत्रपणा साबित किया उस साहेब मोसूफ के तरफ सिरोही के महाराव इतना बहुमान से देख रहे है कि मरहूम महाराव सर कैशरीसिंह साहिब बहादुर ने केशरविलास बगीचे की कोठी में जो खास सुवर्ण की कारीगरी से एक कमरा बनाया है, उस कमरे में अपने वडिलों की तसवीरों के साथ उक्त साहेब की तसवीर भी हमेशा कायम रह सके इस खयाल से दिवाल में चुना लेने में आई है. इसी कारण इस पुस्तक में भी टोड साहेब की तसवीर दी गई है.

महाराव शिवसिंह ने राज्य की लगाम अपने हाथ में लेते ही जिस तरह जागीरदारों के साथ अहदनामे करके रियासत का पाया मजबुत किया, और सरकस सरदारों को सजा करके चोर लूटारुओं से भय दूर किया उसी मुआफिक वैरान मुलक आबाद करने के वास्ते कोशिश करने से उसके समय में सैंकडो वैरान गांम पुनः आबाद होगये, उसने वैरान गांवों में से बहुतसे गांव अपने जागीरदारों को आबाद करने की शर्त पर जागीर में दे दिये, और खास तौर पर रियायत की, जिससे रियासत की जड मजबुत हो गई. अंग्रेज सरकार के अफसरों की सहायता से इसने सिरोही रियासत में अमन फैलाया, सैंकडों कुएं बनवा कर प्रजा की उन्नती के वास्ते साधन कर दिये, और रियासत के +खालसा गांव वढा दिये. इतनाही नहीं वल्कि रियासत पर से कर्जदारी भी उतार दी थी.

+ सिरोही रियासत के प्राचीन दफतर से मालुम होना है कि वि. सं. १८८० के पहिले सरदारों में नाओलादी होने के कारण १ नादीआ, २ नितोरा, ३ आधा पोसालिया, ४ सांतपुर पट्टा के च्यार गांव, ५ पिन्डवारा पट्टा के छह गांव, ६ आधा नून, ७ कोलर पट्टा के बारह गांव, ८ मारजा पट्टा, ९ नवारा की पांती, १० बावली गांव का आध, ११ मेडा गांव का आध, वगैरह जागीरें खालसा राज हुई थी, और वि. सं. १८८० बाद १२ सिरोडी गांव की तीसरी पांती, १३ आधा मडवारीया, १४ आधा खांबल, १५ आलपा, १६ आंबलारी, १७ मांडवारा में अखेराज की पांती, १८ सिलदर के पाटवी की जागीर, १९ वडगांव, २० मानपुर, २१ सवरली, २२ मूलां, २३ मावल—गीरवर पट्टा के आठ गांव, २४ मणादर में प्रेमसिंह की पांती, इस मुआफिक जागीरें खालसे राज होने पाई है, जिसमें नं. १४–१५ व १८ की जागीरें अदुल हुकमी की सजा में खालसे हुई है.

यह राजा धर्मनिष्ठ और कदरदान होनेसे इसने अपने राज्य कर्मचारी व सरदारों को बहुत जागीरें दी, प्राचीन मन्दिर, कुएं, बावडी, धर्मशाला आदि स्थलों का जिर्णोद्धार कराया, और च्यार गांव की आमदनी देवस्थान के निमित्त अर्पण की. इसकी छः राणियां थी जिसमें पहली चांपावतजी सरदारकुंवर खेजडली के राठौर सालमसिंह की पुत्री के साथ वि. सं. १८७० में विवाह हुआ, (उससे महाराज कुमार गुमानसिंह का वि. सं. १८७४ में व कुमार दूर्जनसिंह का वि. सं. १८७७ में जन्म हुए.) दूसरी मेडतणीजी सूरजकुंवर थोब के राठौर मोकमसिंह की पुत्री के साथ वि. सं. १८७२ में विवाह हुआ. तीसरी वाघेलीजी चतुरकुंवर पोसीना के वाघेला कैशरीसिंह की पुत्री के साथ वि. सं. १८७८ में विवाह हुआ, (उससे कुमार हमीरसिंह का जन्म वि. सं. १८९६ में हुआ.) और उसी की बहिन वाघेलीजी जशकुंवर के साथ चौथा विवाह वि. सं. १८८३ में हुआ. पांचवीं मेडतणीजी अभयकुंवर थोब के राठौर उदयसिंह की पुत्री के साथ वि. सं. १८८७ में विवाह हुआ (उससे कुमार उम्मेदसिंह का जन्म वि. सं. १८८९ में व कुमार तेजसिंह का जन्म वि. सं. १९०५ में हुआ.)छठवीं बारडजी दौलतकुंवर दांता के परमार राणा नाहरसिंह की पुत्री के साथ वि. सं. १८९० में विवाह हुआ (उससे वि. सं. १८९६ में कुमार जेतसिंह, वि. सं. १९०१ में कुमार जवानसिंह व वि. सं. १९०३ में कुमार जामतसिंह के जन्म हुए.).

इस महाराव के उपर्युक्त आठ राजकुमार के सिवाय छः राजकुमारियां थी, जिसमें (१) बाई रतनकुंवर का विवाह वि. सं. १८८५ में जयपुर के महाराजा जयसिंह (तिसरे) के साथ, (२) बाई उम्मेदकुंवर का विवाह वि. सं. १९११ में डुंगरपुर के महारावल उदयसिंह के साथ, ३ बाई गुलाबकुंवर व ४ बाई चांदकुंवर यह दोनों के विवाह क्रमशः वि. सं. १९०९ व १९२३ में जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह के साथ, ५ बाई माणककुंवर का विवाह वि. सं. १९१६ में वांसवाडे के महारावल लक्ष्मणसिंह के साथ, और ६ बाई फुलकुंवर का विवाह वि. सं. १९२४ में करौली के महाराजा मदनपाल के साथ हुआ.

×महाराव शिवसिंहने इस तरह राज्य व संसार का सब सुख प्राप्त करके अपनी पीछली जिन्दगी में राज्य कारोबार महाराज कुमार उम्मेदसिंह को सुपुर्द कर वि. सं. १९१८ में ईश्वर भजन करने के वास्ते निवृत हो गये और उसी में अपना समय बिताते

× महाराव शिवसिंह के समय में वि. सं. १८८० से १९१८ तक में शाह कानजी तीन दफे, वेहीतरा मियाचंद दोए दफे, शाह लक्ष्मीचंद तीन दफे, चोधरी अखेचंद दोए दफे, व मूता गुलाबचंद सांडेराव का, मेवसा नाथुसिंह वांकडिया वडगांम का, कोठारी दोला पालणपुर का, शाह नाथा व पंचोली सूरजभाण सिरोही के, गुरां रतनचंद वासा का, मूंशी न्यामतअलीखां, शाह ज़ोरावरमल व शाह चेनकरण सिरोही के इस मुआफिक १३ मुसाहिब हुए. जिनको सालाना तनख्वाह रु. २९१) से लगाकर रु. ५०१) तक व पेटिये रियासत से दिये जाते थे. उनमें किसी समय एक दिवान और एक मुसाहिब इस मुआफिक दो शख्स मुकरर हुए हैं.

राजकुल सिरोही के नं. २४ वाले महाराव.

महाराव उम्मेदसिंह साहब बहादुर.

[विभाग पहिला पृष्ट ३१७]

The Luhana Mitra Steam P. Press, Baroda.

हुए वि. सं. १९१९ के पौष वदि २ के दिन कैलाशवास किया. इसके स्वर्गवास होने पर पेसुआ के कवि आढा अनजी नारजी ने मरसिये में कहा है कि.

" कर तपसा करुर, तखत पर गादी तपीयो; जगता हर गुण जांण, जगत पत नांम पण जपियो. "
" कर देही कल्याण, वले अल नाम वध्यारो; क्षत्री धरम सो धार, पछे वैकुंठ पध्यारो. "
" दरसण पट पालण दर्नी, देणकर मत दागणां; शिवपरी फेर मिळत सवो, मले न पाछो मांगणां. "
" जण तपसारे जोर, करूर तप राजस कीनो; जण तपसा रे जोर, दान केई विप्रां दिनो. "
" जण तपसारे जोर, भाखर के वंका भलीया; जण तपसारे जोर, गढपत के शत्रु गळीया. "
" वेरीसाल सुतन ताला विलंद, वडे हत क्रीत वधांवियो; सो ताप सेहत सूरज सवो, सारणेश्वर सधावियो. "
" पछम धर मेद पाट, महीकांठो माळागर; धर वागड ढुंढाड, धुंधकार हुआं ऐती धर. "
" भ्रम सुरत छत्र धार, वडा दातार वखाणे; सुत वेरा सरीयंद, जश समदां तट जांणे. "
" वड हथ दली मंडल वचे, रत्र करण जश रमियो; मरताण हरो सूरज सवो, आबु धर आथमियो. "

नं. $\frac{२३}{२}$ अखेराव को भारजा पट्टा की जागीर मिली थी, मगर वह नाओलाद होनेसे जागीर वापस रियासत में खालसा रही.

महाराव शिवसिंह के वडे महाराज कुमार गुमानसिंह अपने पिता के समय में युवराज पद पर राज्य के काम में सहायता करते थे. वि. सं. १९०५ में निंवज पर फौज गई तव यह उस फौज में मुसाहिब थे. कहा जाता है कि यह ज्योतिष व सामुद्रिक शास्त्र के अच्छे जानकार थे, जब कि इनके भतिजे महाराव कैसरीसिंह का जन्म हुआ, और इसने उसको गोद में लेकर उसके सामुद्रिकलक्षण देखे तब इसने जाहिर किया कि सिरोही रियासत का गद्दी वारिस यही बनेगा. इसके दो विवाह (पहिला मेडतणीजी-वख्तकुंवर चाणोद के राठोर तेजसिंह की पुत्रीसे व दूसरा चंदावतजी किशोरकुंवर सलुंवर के पदमसिंह की पुत्री के साथ) होने पर भी पुत्र न होने से इसके पिता तीसरा विवाह कराना चाहते थे, मगर अपना भतिजा कैशरीसिंह ही गद्दी वारिस होगा वैसा इसने निर्णय कर लेनेसे तीसरा विवाह नहीं किया, तवियत ठीक न रहने के कारण इसने आत्मघात करनेका निश्चय कर लिया, और काशी के पंडितों द्वारा आत्मघात का प्रायश्चित के वास्ते दरियाफत करलेने बाद, वि. सं. १९१७ के अश्विन वदि ५ के दिन पूंजन कर लेने बाद उसी स्थान पर गोली खाकर मर गये. दूसरा कुमार दूर्जनसिंह अपने पिता विद्यमान होने की हालत मेंही वि. सं. १८९७ में देवलोक हुआ था.

नं. २४ महाराव उम्मेदसिंह.

नं. २४ महाराव उम्मेदसिंह का जन्म वि. सं. १८८९ फाल्गुन सुदि २ के दिन हुआ. वि. सं. १९१८ में युवराज पद पर आकर अपने पिताकी हयाती में ही राज्य की लगाम इसके हाथ में आई, और वि. सं. १९१९ पौष वदि २ के दिन गद्दी पर बैठा. इसके गद्दी

पर आने के समय में भी सिरोही में पोलिटिकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट विद्यमान था. महाराव शिवसिंह ने अपनी हयाती में अपने दूसरे कुमार हमीरसिंह, जेतसिंह, जवानसिंह व ज़ामतसिंह के वास्ते यह प्रबंध किया था कि उनके विवाह होने तक वे सिरोही में रहवे और उनको माहवार रु. ५००) मिला करे, लेकिन कुमार हमीरसिंह ने वह पसंद नहीं किया, उसने अपने पिता की इच्छा विरुद्ध वि. सं. १९१८ में पिन्डवारा गांव पर कब्जा कर लिया, जिससे पोलिटिकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट मेजर होल साहेब ने उस पर फौज लेजाकर वहां से भगाया, जिससे वह पहाड में जाकर लूटेरे लोगों की सहायता से बगावत करने लगा. कुमार जेतसिंह, जवानसिंह व जामतसिंह सिरोही में रहे, परन्तु बाद में वे भी कुमार हमीरसिंह को जा मिले, और भाखर के ग्रासिये की पनाह में रहकर चोरीधाडे करने लगे. पोलिटिकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट ने इस विषय में हिन्दुस्तान के गवरनर जनरल से लिखापढी करके हरेक कुमार को रु. २५००) तक की जागीरें देने का ठहराव किया, परन्तु महाराव उम्मेदसिंह को अपने भाईओं पर ज्यादह प्रेम होनेसे उसने गद्दीपर आतेही उनको राजी करना चाहा और सरदारों द्वारा बुला लेनेका यत्न किया, जिससे हमीरसिंह के सिवाय के तीनों भाई सिरोही में आ गये. महाराव ने कुमार जेतसिंह को नादीआ पट्टेकी, जवानसिंह को अजारी पट्टेकी, व जामतसिंह को खाखरवाडा पट्टेकी जागीरें वि. सं. १९१९ के फाल्गुन वदि ६ के दिन देकर राजी किये, वैसे उनके सहायकों के अपराध भी मुआफ किये गये. यह देखकर च्यार माह बाद कुमार हमीरसिंह भी हाजिर आया, महाराव ने उसको भी वि. सं. १९२० आषाड सुदि २ के दिन सांतपुर पट्टे की जागीर देकर संतुष्ट किया.

महाराव उम्मेदसिंह गद्दी पर आने के समय में ही सिरोही रियासत को अंग्रेज सरकार के तरफ से वंशपरंपरा के वास्ते गोद लेने की सनद मिली और इसी साल में सती होनेका रिवाज बंध किया गया.

महाराव शिवसिंह ने खास तौर पर अपनी रियासत के इन्तिजाम के वास्ते पोलिटिकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट को रखा था, उसके द्वारा बहुत प्रबंध हुआ और ११ वर्ष बाद वि. सं. १९२२ में पोलिटिकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट हटाया गया, तब महाराव उम्मेदसिंह को रियासत का सम्पूर्ण इख्तियार हुआ, उस समय राज्य विन कर्जदार हो चूका था. और खजाने में रु. ४२३६५) थे.

भाखर परगने के ग्रासिये सरकस होकर चोरी करते थे, उनको सजा देने के वास्ते महाराव ने अपने सरदारों की फौज के साथ वि. सं. १९२३ में उन पर चढाई की, और एक माह वहां ठहर कर इन्तिजाम किया. इसी साल में दिवानी व फौजदारी अदालतें कायम की गई; और आबु पहाड पर ज्यादह अंग्रेजों का आना जाना हो जाने से कितनेक कानून वहांपर लागु करने का अधिकार अंग्रेज सरकार को दिया गया.

वि. सं. १९२४ में पहिल पहिले खास सिरोही में केप्टन म्युर साहेब के हाथ से मदरसा खुलने का प्रवंध हुआ, और एक सफाखाना खुला. इसी साल में महाराव ने केप्टन म्युर साहेव के साथ भाखर परगना में दूसरा दौरा कर के वहां पर थाना बैठाने का इन्तिजाम किया, और कवायदी फौज के वास्ते एक कम्पनी तय्यार की गई.

वि. सं. १९२५ में विजुआ खेडा मंढार के साहेवा मदनसिंह को आवादी के वास्ते देनेके कारण उस खेडे पर अपना हक होने का दावा भटाणा ठाकुर नाथुसिंह ने किया, परन्तु उसमें सफलता न होने से नाथुसिह ने वगावत की, और करीव ३०० भीलों का जमाव कर के मुलक में लूट खोश करने लगा. उसने कई गांव लूटे-जलाये और अमन में खलल डाला, जिसपर अंग्रेज सरकार की फौज की सहायता से रियासत ने उसको गिरफतार करना चाहा, परन्तु उस में कामयाव नहीं हुए, वलिक नाथुसिंह का वल इतना वढ गया कि शाही रास्तों पर भी मुसाफिरों को आना जाना मुश्किल हो गया, जिस से सिरोही रियासत का ताल्लुक एजंट गवरनर जनरल राजपूताना से हटा कर एरिनपुरा के कमाडिंग ओफिसर के सुपुर्द किया गया. उस समय एरिनपुरा के कमांडिंग ओफिसर मेजर कार्नली था, उसने इख्तियार पाते ही फौज भेजकर लूटें वंध कराई. ठाकुर नाथुसिंह ने मारवाड में पनाह ली और वि. सं. १९२७ में वहां ही मर गया, परन्तु उस का पुत्र भारतसिंह ने वगावत जारी रखी; अखिर वि. सं. १९२९ में उसको समझा कर वुलाया गया और सिर्फ रु. १५००) नजराना लेकर उसकी सव कसूर मुआफ कर के भटाणा की जागीर वापिस दी गई.

वि. सं. १९२५ की कहतसाली में महाराव ने अपनी प्रजा का पालन करने में वहुत सहायता दी, और वि. सं. १९२६ में हणादरा गांव के पास उम्मेदगंज नामका गांव वसाया, परन्तु वह आवाद होने नहीं पाया. जोगापुरा की जागीर नाओलादी से वि. सं. १९१९ में खालसा राज हुई थी जो वि. सं. १९२६ में महाराव ने अपने छोटे भाई कुमार तेजसिंह के पट्टे में दी, जिस पर रांवाडा के सरदार ने वगावत शुरु की, अखिर वि. सं. १९२८ में च्यार सरदारों को पंच मुकरर करके रांवाडा ठाकुर के दावा का तसफिया हुआ जिसमें पंचान ने रांवाडा का दावा खारिज किया, और जोगापुरा पट्टा खालसे रखने का तय होकर राज साहेव तेजसिंह को मणादर की जागीर जो वि. सं. १९२३ में नाओलादी से खालसे हुई थी, वह दी गई. रांवाडा ठाकुर ने वह मंजुर किया परन्तु उसके साथ वारदात करने में जो २ मीणे भील शरिक थे उनको सुपुर्द करने का वादा पुरा नहीं किया, जिससे कर्नल कार्नली साहेव ने वि. सं. १९२९ में रांवाडे पर फोज ले जा कर, ठाकुर को उसका प्रधान व ३० लूटेरे के साथ पकड लिये. इस कसूर में ठाकुर शार्दूलसिह को वारह साल कैद की सजा हुई और वह अजमेर के जेलखाने

में रखा गया. तीन साल के बाद ठिकाने कालंद्री, पाडिव व जोधपुर रियासत के सियाणा व डोडियाली के सरदारों ने उसकी जमानत देने से, वह कैद से मुक्त हुआ और महाराव ने उस को रांवाडा की जागीर वापस दी.

महाराव उम्मेदसिंहजी सादे मिजाज के व सरल हृदय के परम दयालु और भजन के प्रेमी रईस हुए, वह अपना ज्यादह समय इश्वर भक्ति व धर्म ध्यान में व्यतित करते थे जिससे राज्य कार्य में कम लक्ष रहता था. वि. सं. १९२२ में पोलिटिकल सुप्रिन्टेन्डेन्ट हट ने के समय में राज्य दुरूस्त हालत में था, लेकिन बाद में वि. सं. १९२३ में बहिन चांदकुंवर का, व वि. सं. १९२४ में बहिन फूलकुंवर का विवाह हुआ, उसमें खर्चा हो जाने से रियासत का खजाना खाली हो गया. वि. सं. १९२५ की कहतसाली में आमदनी नहीं हुई और प्रजा पालनार्थे कर्जा करना पडा, और पिछले सालों में बाई जशकुंवर का विवाह हुआ, उसमें व सरदारों के बखेडों में बहुत खर्च होनेसे राज्य की हालत बिगड ने लगी. यदि कर्नल कार्नली साहेब की सहायता से बखेडे मिटाये गये, परन्तु राज्य की आमदनी में तरक्की न हुई और रियासत पर कर्जदारी का बोझा बढ गया.

इस महाराव की महाराणी वाघेलीजी दोलतकुंवर पोसिना के वाघेला पर्वतसिंह केसरीसिंहोत की पुत्री से वि. सं. १९१४ में कुमार केसरीसिंह व कुमारी जशकुंवर के जन्म हुए. कुमारी जशकुंवर का विवाह वि. सं. १९२७ में किशनगढ के महाराज कुमार शार्दूलसिंह पृथ्वीसिंहोत के साथ किया गया.

यह महाराव दयालु व उदार वृति के होनेके कारण इसने दान पुण्य और दातारी में भी ज्यादह खर्च किया. अनेक साधु सन्तों से इसका स्नेह था, और हद से ज्यादह उनके सत्कार किया करते थे. वि. सं. १९३२ अश्विन वदि १ के दिन इसका * कैलास वास हुआ. कवियों ने इस उदार रईस की दातारी के बहुत गीत कवित रचे है, पेसुआ के आढा नाथुदान को इसने धनारी गांव में अरठ 'नवा' बक्षा था. इसके देहान्त बाद कई एक कवियों ने मरसिये रचे है, जिसमें जांखर के प्रख्यात कवि आढा राघवदान ने जो सात मरसिये रचें है, उसमें सातवें मरसिये में कविने कहा है कि–

---

* महाराव उम्मेदसिंह का कैलाश वास हुआ, तब 'मौजीबाबा' नामक एक महात्मा का मुकाम सिरोही रियासत के धनारी गांव में कमलगच्छ के जैन आचार्य भटारक श्री यशोभद्र सुरेश्वर के अपासरे में था. उक्त आचार्य का शिष्य भटारक श्री विजय महेन्द्र सूरेश्वर जो वर्तमान समय में कमलगच्छ की गद्दी पर है, उसके मूँहसे इस पुस्तक के लेखक ने सूना है कि जब कि महाराव उम्मेदसिंह का देहान्त हुआ तब 'मौजीबाबा' अचानक चिल्ला उठा और मेरे गुरु को कहा कि चलो बाहर आ जाओ, मैं भी गुरु के साथ मौजीबाबा के कहने पर अपासरे से बाहर आया तब बाबा कहने लगा कि देखो देखो ! हमारे परमभक्त और स्नेही महाराव उम्मेदसिंह बिमान में बेठ कर वैकुंठ पधार रहे हैं, अब हम लोगों की पूछ बहूत कम होगी, बाद दरियाफ़्त से मालुम हुआ कि उसी समय महाराव का देहान्त सिरोही में हुआ था.

" पग पग रच धांम धांम क्रत पावन गांम गांम प्रती राख गुणी । "
" विद्या पढ दांम दांम अत बालक सांम नांम नत कथा सुणी ॥ "
" कीनो वश कांम तमांम कला कर ठांम ठांम भ्रम अडग थयो । "
" छत्र पत उमेद वेद मत चालण गुण ग्राहक शिव लोक गयो ॥ "

नं. $\frac{२४}{१}$ राजसाहेव जेतसिह को नादीआ पट्टा की जागीर दी गई जिसके वंशज मौजूदा ' महाराज नादीआ ' है.

नं. $\frac{२४}{२}$ राजसाहेब हमीरसिंह को सांतपुर पट्टा को जागीर दी गई थी, परन्तु वह अपुत्रवान गुजरने से जागीर खालसा राज हुई.

नं. $\frac{२४}{३}$ राजसाहेव जुवानसिंह को अजारी पट्टा की जागीर मिली, जिसके वंशज मौजूदा ' अजारी के महाराज ' है.

नं. $\frac{२४}{४}$ राजसाहेव जामतसिंह को खाखरवाडा पट्टा की जागीर मिली, जिसमें खराडी (आबुरोड) भी शामिल था. राजपूताना मालवा रेलवे नीकलने से खराडी गांव में ' आबुरोड ' का स्टेशन बना जिससे यह कस्वा बढ गया. राजसाहेब अपुत्रवान होने से उसने अपनी जागीर पर गोद रखने के वास्ते बहुत प्रयत्न किया, परन्तु सिरोही रियासत में अपुत्रवान राजवी को गोद लेनेका परंपरासे हक नहीं होनेसे सफलता प्राप्त नहीं हुई, जिससे उसके देहान्त बाद यह जागीर खालसे राज हुई, और उसकी राणियों को माहवार रु. ५००) जिवाई हयाति तक मिली.

नं. $\frac{२४}{५}$ राजसाहेव तेजसिंह को जोगापुरा पट्टा की जागीर दी गई, मगर पीछे से वह खालसा रख कर मणादर की जागीर देने में आई. वर्तमान समय में इसके वंशज ' जोगापुरा के महाराज ' है.

नोट—महाराव उम्मेदसिंह के समय में वि. सं. १९१९ से १९३२ तक में (१) संगवी कीस्तुरचंद तीन दफे; (२) मूंशी न्यामतअलीखां दो दफे व (३) जानी हीरानंद रोहिडे का, (४) मूंशी अमीनमहम्मद भूज का, (५) शाह चमनमल, (६) मूंशी फजलहुसेनखां, (७) पंडित किशनलाल, इस मुआफिक सात मुसाहिब हुए है. जिनको माहवार तनख्वाह रु. ३०) से लगाकर रु. १५०) तक मिलती थी. इनमें मूंशी न्यामतअलीखां को रियासत से ' वासण ' गांव इनाम में दिया गया और अंग्रेज सरकार के तरफ से खान बहादुर का खिताब अता हुआ था. खा. बा. न्यायतअलीखां ने महाराव केशरीसिंह साहिब के समय में भी दोए दफे दीवानगिरी की है, वर्तमान समय में उसका पोता नजीरहुसेन के तरफ ' वासण ' गांव की जागीर है, और उसको रियासत के तरफ से पैर में सोना पहिनने की इज्जत बक्षी हुई है.

प्रकरण ३५ वाँ.

नं. २५ देवडा चौहान (महाराव केसरीसिंह.)

नं. २५ महाराव केसरीसिंह का जन्म वि. सं. १९१४ श्रावण वदि १४ (तारीख २०-७-१८५७ई.) के दिन हुआ, और वि. सं. १९३२ आश्विन वदि १ के दिन अपने पिता के पीछे पूरे इख्तियार से गद्दी पर बैठे. मरहूम महाराव के समय में राज्य की हालत बिगड जाने के कारण, राज्य पर रु ८९०००) का ऋण था और आमदनीं सिर्फ १०५०००) की थी. आबू पहाड पर अंग्रेजों की आमदरफ्त ज्यादह होनेसे वहांपर जानेका प्रसंग बढ रहा था, परन्तु वहांपर ठहरने के वास्ते रियासत का बङ्गला नहीं होनेसे खुद महाराव साहिब भी देलवाडे को धर्मशाला में मुकाम करते थे, ऐसी तङ्ग हालत में राज्य की लगाम इनके हाथ में आई, तब भी महाराव ने अपना कारोबार करकसर से चला कर, दो साल में ही आबू पहाड पर एक बङ्गला खरीद किया, काशी की यात्रा करके कलकत्ता की सहेल की, सिरोही में बाग नहीं होनेसे 'केसर बिलास' नामक बगीचा बनवाया और बाईजीलाल के आणे का खर्च लगाते हुए, रु. ७७०००) की रकम कर्जा में देदी, जिससे वि. सं. १९३५ में सिर्फ रु. १२०००) का कर्जा रियासत पर रह गया.

वि. सं. १९३३ में इसने कर्नल कार्नली साहेब की सलाह मुआफिक सासन धर्मादा की जमीन रियासत की मंजूरी के सिवाय न बेचने का और बेचने पर उसका पूरा लगान राज में दाखिल करने का सर्क्यूलर जारी किया. इसी साल में श्रीमति किन विक्टोरिया ने 'कैसरे हिन्द' का पद धारण किया और सिरोही रियासत को झंडा बक्षा गया.

वि. सं. १९३६ में अंग्रेज सरकार के साथ "नमक चुंगी" का अहदनामा हुआ, जिसके जरिये सिरोही रियासत को रु. १८००) नकद व १८००० बंगाली मन नमक आधा महसूल से देने का तय हुआ, लेकिन पीछेसे ता. २३-२-१८८४ इस्वी के अहदनामे सें आधा महसूल के एवजाने की रकम रु. ९०००) ठहराई जाकर 'नमक चुंगी' की रू. १०८००) की रकम हरसाल देने का अंग्रेज सरकार ने स्वीकार किया, जो मिल रही हैं.

सिरोही रियासत के सरदार लोग बात बात में फसाद मचाने को मुस्तेद होने से वि. सं. १९३४ में वेलांगरी व भाणता के सरदारों ने आपस में फिर झगडा करके मुकाबला किया, जिसमें भाणता का देवडा कानसिंह वेलांगरी वालों के हाथ से मारा गया, उस फसाद करने वालों को सजा देने का काम खतम हुआ कि, वि. सं १९३६ में वजावत सरदारोंने मेलावा करके मणादर के राजसाहेब तेजसिंह पर अचानक हमला करके

राजकुल सिरोही के नं. २५ वाले महाराव.

स्वर्गवासी महाराजाधिराज महाराव सर केसरीसिंह साहब बहादुर.

जी. सी. आई. ई. के. सी. एस. आई.

[विभाग पहिला पृष्ट १२२]

The Luhana Mitra Steam P Press Baroda
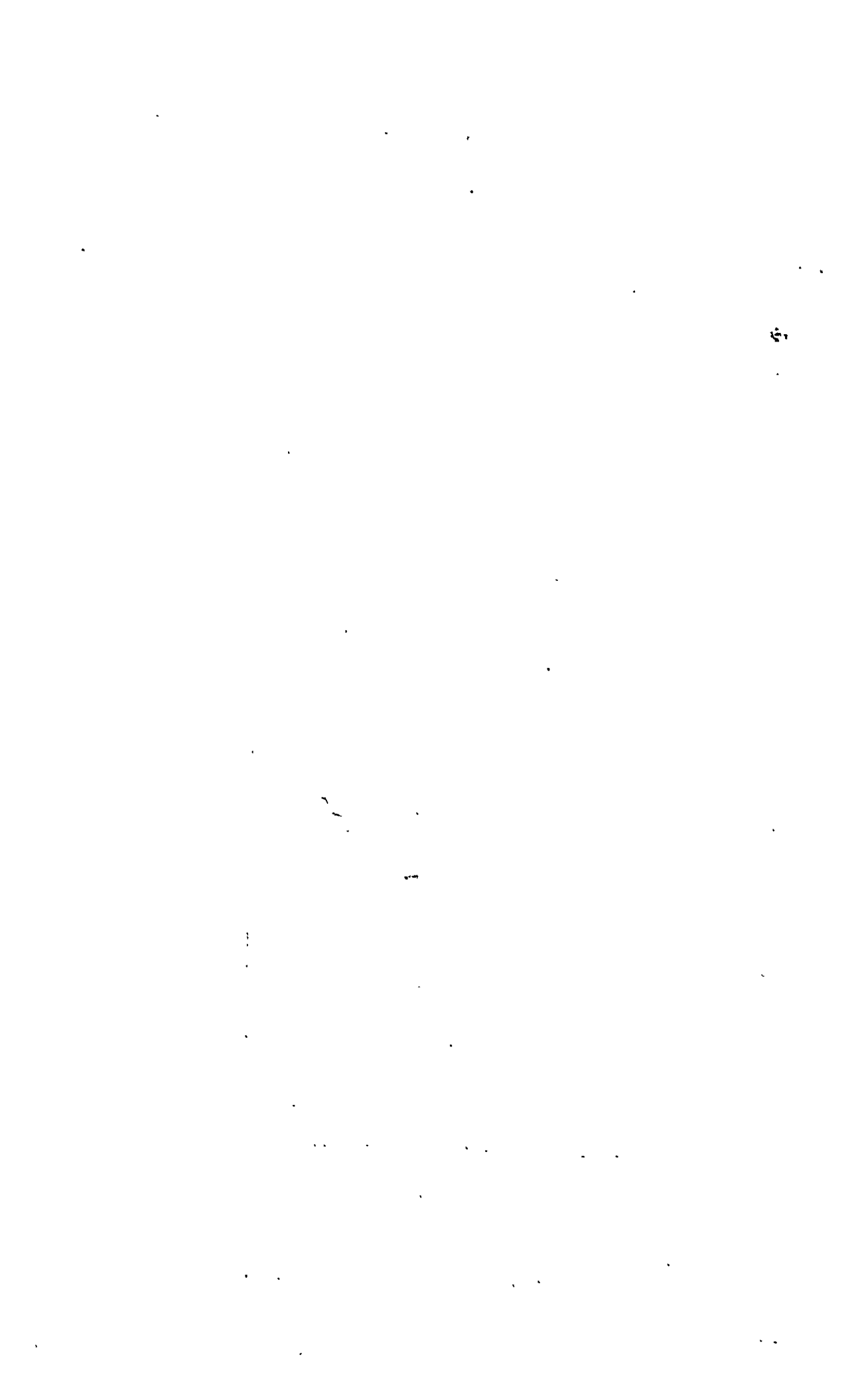
उसको मणादर से निकाल दिया और राजसाहेब की मालमत्ता लूट ली. महाराव साहिब ने वजावतों को सजा करने के वास्ते फौज की तय्यारी की, उधर वजावतों ने राज्य की फौज के साथ मुकावला करने को झाडोली गांव में मोरचा बन्धी करके करीब आठसौं हथियार बन्ध आदमी का जमाव कर लिया. ऊसी समय में रांवाडा का ठाकुर शार्दूलसिंह भी वागी होकर लूट मचाता था; जिससे परगने खूंणी में राज की फौज के साथ खूणी के दूसरे सरदारों को उस परगने की हिफाजत के वास्ते रख कर, रियासत की दूसरी फौज ने लखावत, डुंगरावत, चीबाओत, अबावत, व राणावत आदि सिरोही रियासत के सरदार और सिरोही रियासत के साथ प्राचीन समय में ताल्लुक रखने वाले ×जोधपुर रियासत के विशलपुर, वांकली व कोरटा के लखावत, सियाणा के वोडा चौहान, रामसीण के कावा परमार, लोहियाणा के दियोल राणा, वांकड़िया वड़गांम के वड़गांमा देवडा, व नाणा के राणावत व रायपरिया के डुंगरावत आदि सरदारों की जमियत के साथ राजसाहेब जामतसिंह को सरदारी में झाडोली पर चढाई की. दोनों फौज का मुकावला हुआ, जिसमें कुछ समय तक वजावतों ने मुकाबला किया, परन्तु उसमें उनके कितनेक आदमी मारे गये और जख्मी हुए, जिससे उनके पैर उखड गये और राज्य की फौजने फतह पाकर झाड़ोली गांव बरबाद करके उसपर कब्जा कर राजसाहेब तेजसिंह को मणादर की जागीर पर भेजे गये. इस लडाई का वर्णन जांखर के कवि आढा राघवदान ने विस्तार से गीत कवित्त में किया है, उसमें राज्य की फौज में जिन जिन राजपूतों ने वीरता दिखलाई उनके वास्ते कवि ने कहा है कि—

" फौज झुसाहव फबे, जवर साहेब नृप जामंत; एक एक से अधिक, जसा पृथीराज के सामंत. "
" सोनो भड़ चहुआण, सरस लड़ीयो होए सूरो; सांमो खागां चढ़, मबल कीधो जुद्ध पुरो. "
" डुंगर रामींग अरियां दलन, कंठीरव जीम कोपिया; रामींग दियो खगां रमे, एत्र हुआ एल ओपिया. "

यानी इस लडाई में खास सिरोहीनगर का चौहान सोनसिंह, पिन्डवारा का देवडा रामसिंह व खाखरवाडा का दीया राजपूत रामसिह ने बहुत पराक्रम दिखाया, बल्कि यह तीनों जख्मी हुए थे, वैसे इनके सिवाय राज्य की फौज में वसंतगढ का ग्रासिया खीमा, भटाणा का भील चतरा, नागाणी का सरदार चीबा भारतसिंह व निंवज का राजपूत उहड कानसिंह, इस मुआफिक सात आदमी जख्मी हुए, उसमें दीया रामींग पीछे से मर गया.

× जोधपुर रियासत के सरदारों की जमीयत में लोहीयाणा का राणा व नाणा ठाकुर की तरफ से उनके प्रधान जमियत के साथ आये थे, और दूसरे ठिकाने के खुद ठाकुर अपनी २ जमियत के साथ हाजिर रहे थे, वजावतों में मणोरा का सरदार हीरसिंह और दूसरे सात आदमी काम आये और बहुतसे आदमी जख्मी हुए, राजकी फौज के आठ सवारों (जिसमें चौहान सोनसिंह व देवडा रामींग भी शामिल थे) ने बक्तर टोप पहिने थे. श्रावण सुदि १० के दिन झाडोली फतह कर फौज वापस आई तब महाराव ने फौज में शरिक रहे सरदारों को और बहादुरी बताने वाले राजपुत और सिपाहीयों को शिरोपाव देकर संतुष्ट किये, जिसमें पिन्डवारा के देवडा रामींग को एक बडा अरठ की जागीर दी गई.

कुछ समय बाद वजावतों का फैसला हुआ जिसमें उन्होंने मणादर का दावा छोड दिया, जिससे उनकी जागीर उनको वापस दे दी गई और बैठाये गये. दूसरी तरफ रांवाडा ठाकुर शार्दूलसिंह ने केराल गांव के सिंधल जोरसिंह को मारकर सख्त बगावत की और जगह २ लूट खोस होने लगी, उसके पीछे फौजदार नाथुसिंह फौज के साथ लग रहा था, परन्तु रांवाडा वाले की सहायता में मीणे, भीलों का बडा गिरोह होनेसे व जोधपुर रियासत के सरदारों की पनाह होनेसे वह हाथ आता नहीं था, अखिर तीन साल तक उसका पीछा लेने से वि. सं. १९३९ में वह पकड़ा गया, और उसको * गोली लगाकर देहान्त की सजा दी व रांवाडा की जागीर खालसा राज करने में आई. इस कार्य में फौजदार नाथूसिंह ने अच्छी नौकरी करने से उसको वराडा गांव में आधा हिस्सा की जागीर इनाम में दी गई.

उपरोक्त सरदारों को सख्त सजा होनेसे ऐसे जुर्म करने में सरदार लोग खयाल रखने लगे परन्तु छोटी २ बातों में और आपस की तकरार में रियासत से दादरसी हासिल नहीं करते बगावत करने की आदत नहीं छूटने से, इस महाराव को कई दफे जाती मिहनत और तकलीफ उठाना पडा, और महिनों २ तक दौरे में रहकर ×खुद ने मौके पर जाकर समाधान किये.

रांवाडा ठाकुर को सजा देने बाद महाराव ने खुद इन्साफ का काम करने की गरज से वि. सं. १९४० में हजूर आसिस्टन्ट की जगह कायम की, और अदालतों के फैसले पर होती अपीलों का फैसला खुद देने लगे. वि. सं. १९४३ में राहदारी दाण लेना कतई बंद करके दाण मुत्तालिक सरदारों का हकहकूक तय कर उनके साथ अहदनामे किये गये, और व्यापार की तरक्की करने के वास्ते दाण की शरह कम करके कानून जारी किया, जिसके नतीजे से सायर दाण की आमदनी जो रु. २९०००) की थी वह एकदम बढ गई और व्यापार रोजगार बहुत बढ गया. इसी तरह जो जो खेडे जगह २ वैरान पडे थे, उनको आबाद करने के वास्ते खास तौर पर रिआयत करके कितनेक खेडे जागीरदारों को दिये गये, और कितनेक खेडे जो रुवाई भितरोट (परगने पिन्डवारा रोहीड़ा

* रांवाडा ठाकुर व उसके भतिजे को सारणेश्वरजी महादेव के रास्ते पर देहान्त की सजा अमल में लाई गई, कहा जाता है कि जब कि बारह गोली उसके बदन में लग चुकी तब वह जमीन पर गिरा, उस ठाकुर ने अपनी बीरता का उपयोग बगावत के काम में नहीं किया होता तो एक नामी सरदार की पंक्ति में वह गिणने काबिल था. वर्तमान समय में उसका स्मारक उसी स्थान पर है जहां उसको सजा दी थी.

× वि. सं. १९४४ में भटाणा ठिकाने की दोनों पांती के सरदार दरमियान आपस की तकरार बढ जाने से महाराव साहिब ने भटाणे जाकर उनका समाधानी के साथ तसफिया किया. वि. सं. १९५४ में मगरीवाडा के सरदारों ने आपस की तकरार में बगावत की, जिस में देवडा कानसिंह मारा गया, उसका समाधान महाराव साहिबने खुद जाकर किया. इस तरह बहुत से सरदारान मुतालिक मुआमिले व सरहदी तनाजे जो रियासत के मुतालिकों से होने जैसे नहीं थे, उनके वास्ते महाराव साहिब खुद तकलीफ उठाकर मौके पर पहुंच कर काम अन्जाम पहुंचा देते थे.

व सातपुर) में थे उनमें मेवाड के व भाखर परगने के ग्रासिये भीलों को अमुक वर्ष तक कम लगान लेने के ठहराव से काश्त की जमीन देकर आवाद किये गये, जिससे वि. सं. १९५० तक में उन परगनों में जङ्गल झाडी कट गई और बहुत से खेडे आवाद हो गये, वल्कि रियासत की आमदनी तीन लाख रुपयों की हो गई.

वि. सं. १९५० में जङ्गलात का अलग मेहकमा कायम किया गया, और दीवानी अदालत के वास्ते वि. सं. १९५१ में स्टेम्पका कानून जारी करके मियादसमायत का धोरण अमल में लानेकी शुरुआत हुई, लेकिन मियाद के वास्ते वार वार महाजनों की तरफ से ज्यादह मियाद मिलने की अर्ज होने से कई वर्षों वाद वह कानून अमल में आसका.

इसी साल में (वि. सं. १९५१ में) महाराव साहिव ने जमीन महसूल की तरक्की के तरफ खयाल किया, और रियासत के पुराने दफ्तर पर से सरदारान् के साथ व रियाया के साथ जो जो ठहराव हुए थे और वक्तन फवक्तन परवाने दिये गये थे, वे एक जगह मिलसके उसके वास्ते परगने वार किताव तैयार कराई गई, यदि रियासत कि तरफ से सुधारा करने का प्रयत्न किया जावे वह फायदेमंद है या नहीं, उस पर खयाल न करते वैसे नये सुधारा के सामने विरोध उठाना और उसको वन्द कराने के वास्ते उचाला आदि इलाज काम में लेना, यह प्रणाली सिरोही रियासत की प्रजा में परंपरा सें चली आने सें, हरएक सुधारे के कार्य में सिरोही की प्रजा के तरफ से सहायता व उत्तेजन नहीं मिलने के कारण, दूसरी रियासतों में उस जमाने में जो नये सुधारे दाखिल हो चूके थे, वैसे लाभ प्राप्त करने में सिरोही की प्रजा पीछे रहने पाई है. इसी कारण महाराव साहिव का इरादा जमीन का महसूल जो भाग वटाई व हलवन्धी से वसूल होता था, उसके एवज में वाजाप्ता वन्दोवस्त करके नकद लगान मुकरर करने का हुआ, और अजमायश के ख़ातिर वि. सं. १९५१ में इस पुस्तक के लेखक को नौकर रख कर, खास सिरोही में कितनेक अरठों की नकद लगान से महसूल लेने की तजवीज अमल में लाई गई, परन्तु काश्तकारों ने वह तजवीज पसंद नहीं की, जिससे वे कुएँ ठेकेदारी से महाजन को दिये गये, और वाद में वि. सं. १९५४ में कितनेक पटवारी रखने की तजवीज हुई, लेकिन वि. सं. १९५६ की कहतसाली होने से वह तजवीज अमल में नहीं लाते वि. सं. १९५९ में अमल में लाई गई, उन पटवारीयों से रेवेन्यू वसूलात के साथ सेटलमेंट करने के काम में सहायता मिले, वैसा रैकर्ड तहसील पिन्डवारा, रोहीड़ा व सांतपुर के वास्ते तैयार कराया गया, और जहांपर नई आवादी की रिआयत खतम होने आई थी वहां की हलवन्धी वन्द करके भाग वटाई का सिलसिला दाखिल किया गया. वि. सं. १९६२ में परगने खूणी में पटवारी मुकर्रर हुए और वि. सं. १९६६ में मी. एम. कीन I. C. S. की नौकरी सेटलमेंट ऑफिसर के तौर पर अंग्रेज सरकार से लेकर

बन्दोबस्त का मेहकमा कायम हुआ. साहेब मोसूफने पेमायश करा कर रेकर्डस बनाया, सरहद्दी तनाजे के फैसले किये, और प्रथम सांतपुर परगने में नकद लगान दाखिल करने का काम हाथ में लिया, परन्तु जब कि नकद लगान के खाते परचे देनेकी तजवीज हुई तब काश्तकारों ने नकद लगान देना मंजूर नहीं करने से मजबूरन् नकद लगान का तरीका मुलतवी रखना पडा. इसी मुआफिक सेटलमेंट ओफिसर के तरफसे परगने खूणी के गांवों में पटवारी रखने से, वहां के जागीरदारों ने उजर करके बगावत की और अंग्रेजी डाक लूंट ली, जिसपर राजपूताना के एजंट गवरनर जनरल सर इलियेट कोलविन साहेब बहादुर ने सिरोही मुकाम करके जागीरदारों को समझायश कर बगावत रफे की, और पटवारीयान् को जागीरी गांवों से वापस बुला लिये गये. खूणी के सरदारों को बगावत करने में सफलता प्राप्त होनेसे मंढार परगने के लखावत सरदारों ने भी सेटलमेन्ट के काम में खलल डालने को बगावत करना शुरु किया, जिससे वि. सं. १९७० में बन्दोबस्त का काम बंद करना पडा. इस काम के पीछे च्यार वर्ष में करीब च्चार लाख रुपये खर्च हुए, यदि सेटलमेंट सम्पूर्ण न होनेसे नकद लगान नहीं हो सका, लेकिन बहुत से सरहद्दी तनाजे और माफियात के मुकदमे के तसफिये हो गये, वैसे किश्तवार पेमायश होकर गांव वार संगीन रेकर्डस बनने पाया, इतना फायदा जरुर हुआ. इसी कारण सिरोही रियासत में अबतक यही प्रथा चल रही है कि काश्तकार चाहे तो + नकद लगान किया जावे, वरना भाग बटाई से हांसिल लिया जाता है.

सिरोही रियासत में आबकारी मेहकमा नहीं था, और सरदार लोग भी अपनी मर्जी मुताबिक शराब की भट्ठीयां निकलवाते थे, जिससे आवकारी का इन्तिजाम करना आवश्यक होनेसे सरदारों के साथ उनके हक हकूक की रकम तय करने का काम स्वयं महाराव साहिब ने अपने हाथ में लिया, और आहिस्ता २ वि. सं. १९५० से १९६४ तक में वह काम जाती निगरानी में खतम करके सेंट्रल इन्डिया के आबकारी कमिश्नर मी. कोक्ष साहेब I. C. S. की सलाह से वि. सं. १९६५ में मद्रास सिस्टम के धोरण से कानून बना कर आबकारी मेहकमा कायम किया गया, जिससे आबकारी की आमद चौगुनी हो गई.

महाराव साहिब ने जिस तरह राज्य की आमदनी बढाने पर ज्यादह तवज्जह दिया उसी तरह प्रजा की उन्नति और आराम के वास्ते भी कई एक लक्ष रुपये खर्च किये,

---

+ नकद लगान का तरीका त्रुटक २ कितनेक परगने में विद्यमान हैं, परन्तु उसके वास्ते एक धोरण नहीं होनेसे मौजूदा महाराव साहिब ने सन् १९२४ इस्वी में नकद लगान से जमीन रखने वालोंको अपनी जमीन का तबादला आदि करने के हक हकूक खास कानून करके अता फरमाया है, और सन १९२६ इस्वी में खालसा गाँवों में बाजाप्ता बंदोबस्त करके नकद लगान करने की गरज से अंग्रेज सरकार का रिटायर्ड आसिस्टंट पोलिटिकल ओफिसर रा. बा. केशवलाल (अमदावाद वाले) को इस काम पर मुकर्रर किया था, परन्तु गुजिश्ता साल में कम बारिश होने के कारण वह काम हाथ में लेना मुनासिब नहीं समझा गया.

मुसाफिरों को आराम के वास्ते पिन्डवारा व केसरगंज में धर्मशाला बनवाई, आबू पहाड पर जानेका रास्ता बनाने में सहायता दी, और आबु पर ' ट्रेवरटेंक ' नामका तलाव बनाया, सिरोही नगर के पास ' मातर माता ' नामक स्थल पहाड पर होनेसे वहांपर जानेके वास्ते सडक बनवा कर वहांपर ' एवटटेंक ' नामका तलाव बनाया, काश्तकारों को खेती के काम में मदद मिले इस हेतु से भूलां गांव में बडा बन्ध नदी पर डालना शुरू किया, पिन्डवारा परगने में ' ज्युबीलीटेंक ' व ' साबेलाटेंक ' नाम के तलाव बनाये गये, सांतपुर परगने में ' चंडेलाटेंक ' व ' मंडोवरीटेंक ' नामके तालाव बंधवाये, और इलाका में कौन २ स्थल पर तलाव बंधा आदि पानी का जमाव होने का मौका है उनकी तपास कराकर कई एक प्रोजेक्ट तय्यार कराये गये, जिसमें से खास सिरोही नगर में ' मानसरोवर ' नामक तालाव रियासत से बनाया गया, और पिन्डवारा परगने में सिवेरा गांव के पास ' केसरसागर ' नामक सब से बडा तालाव महाराव साहिब विद्यमान होने की हालत में ही, महाराज कुमार स्वरुपरामसिंह ने अपने पिता के नामसे वनवाया. इसी तरह वि. सं. १९५६ की कहत साली में मेवाड से आकर आवाद हुये भील ग्रासियों की जान बचाने के वास्ते, कर्जदारी करके उनका पोषण किया गया, और भविष्य में ऐसी आफतों के सामने सिरोही की प्रजा अपना बचाव कर सके इस हेतु से, रियासत से खर्च लगवाकर हजारों कुएं व सारण तैयार कराई गई जिसका परिणाम यह आया कि, वि. सं. १९५९ वाद जो जो छोटी बडी कहतसाली हुई उसमें रियासत के तरफ से फेमिन वर्क खोलने की तजवीज होने पर भी एक भी, काश्तकार को उसका सहारा लेनेकी आवश्यक्ता नहीं रही है.

महाराव साहिवने सिरोही खास में 'कॉलविन हाईस्कूल' और 'क्रोस्थवेट होस्पिटल' के मकान वनवाये, और सिरोही पिन्डवारा व आबूरोड अंबाजी के पहाडी रास्ता पर गाडियां चल सके वैसा रास्ता वनवाया, वैसे जगह २ राज्य के थाणे मुकर्रर करके चोरों से प्रजाका वचाव होवे वैसा इन्तिजाम किया. मीणे भील आदि जरायम पेशा कोम वाले लोगों को काश्तकारी में लगाये, और पिन्डवारा व सिरोही में स्थायी सदाव्रत जारी किये, सिरोही नगर में व केसरगंज में ' केसर विलास ' नाम के वगीचे बनाये और आबू पहाड पर भी वगीचा बनाया गया. इनके समय में ही महाराज कुमार स्वरूपरामसिंह ने ' धारावती वावडी ' के स्थान पर *' स्वरुप विलास ' नामक वगीचा वनवाया और एक कोठी भी वहां पर बनवाई गई.

* स्वरूप विलास बगीचा, सिरोही नगर में एक नमूनेदार स्थान है, मौजूदा महाराव साहिब ज्यादहतर वहां पर निवास करना पसंद करते है, जिससे कोठीके पासही दो जनानी महलात बनवाने में आये है, और रोशनी व हवा के वास्ते विजलीका कारखाना वहां पर खोल रखा है. उक्त बगीचा में मौजूदा महाराव साहिब ने एक बडी कोठी बनवाना शुरु किया है और 'गोपाल-सागर ' नामक बड़ा कुँआ इस हेतु से बनाया है कि उससे बगीचाके उपरांत सिरोही नगर की प्रजा को भी नल द्वारा पानी

सिरोही रियासत में सिवाय सिरोही नगर में प्राचीन महलात के दूसरे रईस के ठहरने के काबिल मकानात नहीं थे, जिससे महाराव साहिब ने महलात में अजाफा करके 'फूल महल' जनानी महलात, और 'कैसर बिलास' बगीचे में एक नई कोठी, बनाने में आये, और 'गेस्ट हाउस' की बडी कोठीका काम शुरु किया गया, (परन्तु वह अपूर्ण रह गया है.) इसी मुआफिक कैसरगंज में एक नई कोठी व आबू पहाड पर दो कोठी बनाई गई, और वहां पर रियासत के बडे २ ओफिसरों के ठहरने के वास्ते अलग २ बंगले बना लिये.

सिरोही रियासत पर बार २ मुगलों का आक्रमण होता आया था, और महाराव उदयभाण के समय में (वि. सं. १८७४ में) जोधपुर रियासत की फौज ने सिरोही का राज्य महल लूट लेने से, प्राचीन समय का लवाजमा व राज्याडंबर साहित्यों का विनाश हो चुका था, महाराव शिवसिंह ने बडी मुश्किल से राज्य को कर्जदारी से मुक्त किया और कुछ जर जवाहिर का संग्रह कर सके, लेकिन महाराव उम्मेदसिंह बहुत उदार व भक्त होनेसे, राज्याडंबर के साहित्यों तरफ उसका खयाल नहीं रहा, जिससे महाराव कैसरीसिंह के गद्दी पर आनेके समय में राज्य के बगीखाने में सिर्फ एक ही पुरानी बगी, और दोचार डेरे थे. महाराव साहिब ने यह खामी दूर करने के वास्ते नया बगीखाना बनवा कर, हरेक प्रकार की बगियें, मोटरें, और डेरे तंबू सामियाने वगैरह सरंजाम तय्यार कराकर एक बडी रियासत का मुकाबला हो सके इतनी राज्य-वैभव की सामग्री इकट्ठी की है.

महाराव साहिब ने अपनी योग्यता व कार गुजारी से खुद के लिये वि. सं. १९५१ में के. सी. एस. आई. (K. C. S. I.) और वि. सं. १९५८ में जी. सी. आई. ई. (G. C. I. E.) के मानवंते खिताब और वि. सं. १९७४ में निज के वास्ते १७ तोपों का मान अंग्रेज सरकार की तरफ से हासिल किया, वैसे वंश परंपरा के वास्ते वि. सं. १९४५ में ÷'महाराव'

पहुँचाया जावे, यदि 'गोपाल सागर' से इस समय में इन्जिन लगाकर बगीचे में पानी दिया जा रहा है, और खोदने का काम जारी है, परन्तु उम्मेद की जाती है कि कुछ समय में इससे सिरोही नगर के शहेरियों को पानी पूरा हो सके इतना पानी हो जायगा, इसी मुआफिक 'कैसर बिलास' बगीचे में भी 'कैसर सागर' नामक बड़ा कुंआ बनाया गया हैं, जिस में बोरींग करके काफी पानी कराया गया, जिस से उस बगीचे को पानी देने का पुख्ता साधन होने पाया है, उस बगीचे को व कैसरगंज के बगीचे को नई ढब के बाग बनाने के वास्ते महाराव साहिब बहुत उत्सक हैं.

÷ सिरोही के रईस को दूसरी रियासत के तरफ से 'महाराव' या 'महाराय' लिखने का परंपरा से रिवाज था, और महाराव के नजदिकी भाईयों को 'राव' पद से लिखावट होती थी. जब कि महाराव उदयभाण को पदभ्रष्ट किया गया तब शिवसिंह उसका छोटाभाई होने के कारण 'राव शिवसिंह' कहलाता था, और महाराव उदयभाण की हयाती में ही राव शिवसिंह ने अंग्रेज सरकार के साथ अहदनामा करने से अहदनामे में 'राव' पदवी की लिखावट हुई, और वही प्रणालिका महाराव होने पर भी चलू रही, यानि रियासत की तरफ से होती लिखावट में 'महाराव' लिखे जाते थे, परन्तु अंग्रेज सरकार के तरफसे होती लिखावट में 'राव' लिखा जाता था.

का पद और वि. सं. १९७४ में 'महाराजाधिराज' का पद की सनद अंग्रेज सरकार के तरफ से प्राप्त हुई, जिससे लिखावट में अब सिरोही के रईस को ' महाराजाधिराज महाराव सिरोही ' के पद से अंग्रेज सरकार की तरफ से भी तहरीर होती है.

सिरोही रियासत में नाओलाद सरदार की जागीर खालसे रखना या किसी को गोद रखना मंजूर करना यह बात परंपरा से रईस की मर्जी पर होनेसे, वि. सं. १८७५ में महाराव शिवसिंह ने हुकम जारी किया था कि, कोई सरदार रियासत की मंजूरी बगैर गोद लेने नहीं पावे, लेकिन बाजे वक्त सरदार लोग उस हुकम के खिलाफ तजवीज करने के कारण उनको *सजा दी जाती थी. इस महाराव के समय में वि. सं. १९६४ में कालन्द्री के ठाकुर पृथ्वीराज नाओलाद गुजर गया, उसके गोद जाने का हक हकूक की तहकीकात हो रही थी, दरमियान बरलूठ के देवडा कानसिंह को ठकराणी ने बगैर मंजूरी राज जनाने में गोद रखा, वह सुनतेही मोटागांव के ठाकुर लक्ष्मणसिंह ने अपने कुमार स्वरुपसिंह को कालन्द्री ठिकाने के पडवे में गोद जाना जाहिर करके बैठा दिया. दोनों तरफ से अपने २ पक्ष के सरदारान की जमियत मय तोपें वगैरह हथियार सामग्री के कालन्द्री में जमा हुई, जिससे सुलह का भंग नहीं होवे उसके लिये महाराव साहिब ने रियासत की पलटन वहां पर भेजी, और शाह मिलापचंद दीवान को मौके पर भेज कर जब तक तहकीकात होकर राज से गोद मंजूर नहीं होवे वहां तक दोनों को कालन्द्री से बाहिर कर देनें की आज्ञा दी. दीवान मिलापचंद ने हिकमतअमली के साथ सहूलियत से मोटागांव के कुमार को मोटागांव भेज दिया, और बरलूठ के कानसिंह को सिरोही लाकर कालन्द्री ठिकाने में राज्य की जप्ती बैठा दी, अखीर बाद तहकीकात पोलिटिकल ओफिसर की सलाह से कानसिंह का गोद मंजूर रखा गया, और अदूल-हुक्मी करने के कारण जप्ती का कुल खर्च जुर्माने के साथ लेनेका हुक्म किया गया.

कानसिंह का गोद मंजूर होने से मोटागांव के ठाकुर लक्ष्मणसिंह ने अपने गांव में मोरचाबंधी करके रियासत के साथ सामना करने को अपनी जमियत इकट्ठी की और बगावत करने लगे, जिससे फौजदार चैनसिंह की सरदारी में रियासत की फौज वहां पर भेजी गई, ठाकुर लक्ष्मणसिंह मुकाबला करने को आमादा हुआ और राजकी फौज पर अचानक बन्दूक चलाने लगे, जिसमें राज की पलटन का हवालदार सिंदल पन्ना केरालवाला को गोली लगने से वह मारा गया, जिस पर फौजदार चैनसिंह ने फौज के सिपाहियों को हमला करने की आज्ञा दी, राज की फौज ने मोरचाबंधी तोड

* मावल गिरवर की जागीर पर निंबज का उदेसिंह बगैर मंजूरी गोद जानेसे उसको कैद की सजा हुई थी. महाराव सर कैसरीसिंह के समय में अपुत्रवान होने के कारण से, १ जोयला, २ कीवरली की बडी पांती, ३ बालदा व ४ मणादर की जागीरें खालसे राज हुई हैं, और बहुतसी जागीर पर गोद मंजूर किये गये है.

कर गांव में प्रवेश किया, लेकिन ठाकुर लक्ष्मणसिंह गांव छोडकर भाग निकला, और राज का थाना मोटागांव ठिकाने में बैठाया जाकर जागीर खालसा की गई.

ठाकुर लक्ष्मणसिंह च्यार पांच साल तक रियासत जोधपूर में पनाह लेकर भागता रहा, मगर पीछे से अपने आप महाराव साहिब के पास हाजिर हुआ और अपने अपराध की क्षमा मांगी, जिसपर महाराव साहिब ने उसके पट्टा का सिर्फ 'गडा' गांव खालसा रख कर मोटागांव की जागीर वापस दी, और सिंदल पन्ना की ओलाद वाले के वास्ते मोटागांव ठिकाने से एक अरठ दिया गया.

वि. सं. १९७५ की इन्फ्लूअन्जा की बीमारी के समय में कालन्द्री ठाकुर कानसिंह व मोटागांव के ठाकुर स्वरूपसिंह नाओलाद गुजर गये, जिसपर सब डूंगरावत सरदारों ने राज्य की मंजूरी हासिल नहीं करते, कालन्द्री में कांकेदरा के चिमनसिह को व मोटागांव म वरलूठ के किशोरसिंह को गोद बैठा दिये, और रियासत से उनको हरकत नहीं होवे उस कारण, दोनों ठिकाने में कितनेक आदमियों को हथियार बंध जमियत रखकर डुंगरावत सरदार बगावत में पहाडों में जाकर बैठे. महाराव साहिब ने डुंगरावत सरदारों को समझायश करके बैठा दिये, परन्तु कांकेदरा का चिमनसिंह व वरलूठ का किशोरसिंह हाजिर नहीं आये और ठाकुर बनके बैठ रहे. महाराव साहिब ने सुलह का भंग नहीं होवे उस कारण, दो तीन माहतक सख्ती के इलाज नहीं लेते समझायश से हाजिर आजावे वैसा प्रयत्न किया परन्तु वे हाजिर नहीं आये, फौज भेजकर पकडने की तजवीज करने से सुलह के भंग होने का व वे भाग जावे वैसा अन्देशा होने से, महाराव साहिब खुद छडी सवारी शिकार के वहाने से कालन्द्री पहुंचे, और चिमनसिंह जो जनाने में था उसको अपने साथ बाहिर ले आये, फिर वहां से मोटागांव पहुंच कर किशोरसिंह को भी अपने साथ कर लिया और दोनों को सिरोही लाकर नजर कैद रखे गये, बाद उनके हक हकूक की तहकीकात करके उन्हों को ही उन ठिकाने में गोद रखने की मंजूरी दी गई, और अदूल हुक्मी की सजा में उनपर जुर्माना करके कितनेक हकहकूक में फेरफार करके जागीर पर कायम किये गये.

सिरोही रियासत के सरदारों के वास्ते बगावत करना यह मामूली बात होने से, इस महाराव के समय में शायद ही ऐसा कोई वर्ष में बगावत में सरदार नहीं हो, वैसा प्रसंग गुजरा होगा, वे लोग बगावत में रेबारियों से बकरे छीनना, काश्तकारों के अरठों की माल काट कर नुकसान पहुंचाना, काश्तकारों को और व्योपारी को पकड ले जाना और उससे जुर्माना लेना, अंग्रेजी डाक को रोकना व थेले छीन लेना, ऐसे जुर्म करते है, परन्तु ऐसी कसूर के वास्ते पोलिटिकल ओफिसर भी दरगुजर करना पसंद करते हैं, जिससे बात बात में ऐसे गुनाह कर बैठने की सरदारों को

आदत हो गई थी, अंग्रेजी डाक खूणी के सरदारों ने लूट ली थी, दवाणी ठाकुर नें डाक की थेली व गवरमेन्ट कमिसरीएट के बकरे छीने थे, और रहुआ ठाकुर ने डाक रनर को कई रोज डाक की थेली के साथ रोक रखा था, मगर वे सब कसूरों की महाराव साहिब ने और अंग्रेज सरकार के पोलिटिकल ओफिसरों ने मुआफी बक्षी थी. ऐसी सूरत में सिरोही के रईसों को अपना राज्य चलाने में हर वक्त बहुत मुश्किली पडने पाई है, बल्कि सिरोही के सरदारों के साथ महाराव सर केसरीसिंह ने किस तरह राज्य चलाकर सुलह को संभाला, उस विषय में कईएक पोलिटिकल ओफिसरों ने अपनी *ताज्जुबी जाहिर की है.

महाराव सर केसरीसिंह शिकार के बहुत शौकिन और निशाना लगाने में बहुत प्रवीण थे. तीर्थयात्रा व देशाटन करने का ज्यादह शौक होनेसे कई दफे खुशकी व रेलद्वारा लंबी २ सफरें की. गंगास्नान करने के वास्ते हर साल जाने का महावरा हो गया था, बद्रीनाथ के सिवाय प्रायः हिन्दुस्तान के सब स्थलों की यात्रायें अनेकवार हो चुकी थीं, तब भी देहान्त पर्यन्त तीर्थयात्रा करने की इनकी अभिलाषा तृप्त नहीं हुई थी. इनके सब काम नियमित थे, ईश्वरभजन और पूजापाठ में छः घंटा व्यतित होता था, और बाकी का समय राज्य के काम में लेते थे. धर्मध्यान के तरफ ज्यादह लक्ष होने से इन्हों ने अपने पूर्वजों की व अपनी मृतक राणियों की छत्रियें कराई, श्री सारणेश्वरजी महादेव के मन्दिर का बडा कोट बनवाया, मांडवारे में शांवलाजी का मन्दिर बनवाया और बहुत से मंन्दिरों का जिर्णोद्धार कराया, ब्राह्मण व कवियों को कितनेक अरठ दान में दिये, आबू की तलेटी में आया हुआ श्री हृषिकेश भगवान के मन्दिर के पास, मन्दाकिनी के दोनों कुन्डों की मरम्मत कराई, और महादेव के मन्दिर का जिर्णोद्धार कराके कोट बनवाया गया व उसी स्थान में 'श्री भद्रकालीजी' का प्राचीन मन्दिर गिर जाने से उसकी प्रतिमा कई वर्षों से दूसरी जगह रखी गई थी, उसको पुनः प्रतिष्ठित करने के वास्ते उसी स्थान पर, नयेसिर नींव डालकर प्राचीन पद्धती का मन्दिर बनवाकर उसमें श्री ' भद्रकालीजी ' की प्रतिमा स्थापित की गई, और उस मन्दिर का कोट बनवाया गया, इन कार्यों में जो खर्च हुआ वह रियासत के खज़ाने से नहीं करते अपने जेब खर्च की आमदनी में से करकसर करके जो रकम बचाई गई थी उसमें से किया गया.

महाराव साहिब ने अपनी दूसरी महाराणी, चावडीजी (वरसोडेवाले) की यादगार

---

* सिरोही के सरदार लोग बाजे वक्त ' एजन्ट गवरनर जनरल राजपूताना ' जैसे बडे २ पोलिटिकल अफसरों की भी परवाह नहीं करते हैं, वि. सं. १९७१ में सर कॉल्विन साहब (ए. जी. जी. राजपूताना) ने सिरोही मुकाम करके निंबज, रहुआ, दवाणी, व भटाना के सरदारों को तलब किये, लेकिन चन्द दफा ताकीद होने पर भी वे हाजिर नहीं आये, आखिर भटाना ठाकुर उदयराज अकेला हाजिर आया, उसको साहब मौसूफ ने नरमी गरमी के साथ समजूत की मगर उस पर कुछ भी असर होने नहीं पाई, ऐसी अकडाई होनेका कारण 'देवडे चौहानों' का हठीला स्वभाव और उनको चाहिये वैसी पढाई नहीं होने का ही है.

में पिन्डवारा स्टेशन पर धर्मशाला बनवाई और स्थायी सदाव्रत कायम किया. इनकी पटराणी बारडजी (दांतावाले) ने खास सिरोही नग्र में 'महामन्दिर' बनवाकर उस में श्री रामचन्द्रजी की प्रतिमा स्थापन की.

राज्यगद्दी पर आने के समय में राज्य की हालत अच्छी नहीं होने से करकसर से खर्च करने की आदत पड गई थी, लेकिन दान पुण्य करने में बहुत उदार होने से, इसने अपनी हयाति में लाखों रुपैये ऐसे कार्य में खर्च किये. काशीक्षेत्र में कई दफे पंडितों को सभा करके विद्वानों को पुरस्कार बांध दिया और शास्त्रोक्त पद्धति से दान पुण्य किया, हरएक विद्वान पंडित और सन्तों का इनको बहुत आदर था, और उनका अच्छा सत्कार किया जाता था.

यदि सिरोही रियासत का दो तिहाई हिस्सा सरदारों के तरफ होने से रियासत की आमदनी कम थी, तब भी महाराव साहिब ने अपने जाती परिश्रम से आबादी व आमदनी बढाने का प्रयत्न करने से, गद्दी पर आने के समय सिर्फ एक लाख रुपैये की आमदनी थी वह बढकर संवत् १९५० तक में तीन लक्ष की हो चुकी थी, और वि. सं. १९७६ में जब कि राज्यगद्दी महाराज कुमार स्वरुपरामसिंह को सुपुर्द की गई तब राज्य की आमदनी दस लक्ष रुपैये की होने पाई व राज्य पर कर्जा नहीं था, और जैसे २ आमदनी बढने लगी वैसे २ उसको राज्य सुधारणा के कामों में खर्च करने से, सिरोही रियासत जो नाम मात्र की रियासत गिनी जाती थी वह एक संगीन रियासत की पंक्ति में आने पाई है. महाराव साहिब ने अपने मुसाहिब और राज्यभक्त सरदारों की कदर करके वक्तनफवक्तन् उनको इज्जत व इनाम देकर संतुष्ट किये हैं, भटाणा ठाकुर भारतसिंह को, व रहुआ ठाकुर अजेतसिंह के जनाने वालों को, व बरलूठ ठाकुर रावतसिंह को पैर में सोना पहिन ने की इज्जत दी, उसी मुआफिक अपने मुत्सद्दियों में से खानबहादुर मुन्शी न्यामतअलीखां को 'वासण' गांव की जागीर के साथ पैर में सुवर्ण की इज्जत दी गई, शाह मिलापचंद दीवान (सूरतवाले) को पैर में सोने की इज्जत और रुपैये २००००) नकद, गांव के एवज में दिये गये, फौजदार बारड नाथुसिंह को आधा वराडा गांव जागीर में देकर पैर में सोना बक्षा गया व उसके पुत्र फौजदार चैनसिंह को अरठ के साथ पैर में सोना पहिन ने की इज्जत बक्षी गई, संगी समर्थमल (सिरोहीवाला) रैविन्यू कमिश्नर को अरठ देकर पैर में सोना की इज्जत देने में आई, और तेहसिलदार मूता रायचंद (रोहिडावाला) को 'नागपुरा' गांव हयाती तक के वास्ते जागीर में देकर पैर में सोने की इज्जत दी गई, वासण के इनामदार मुन्शी नजीरहुसेनखां (खा. बा. न्यामतअलीखां के पोते) को पैर में सोना बक्षा गया, पांचेटिया ई. जोधपुर के कवि आढा शंकरदान को पैर में सोना की इज्जत दी गई, और ÷सांई वजीरखां (देवगढवाला) को नागपुरा

÷ सांई वजीरखां पीछे से एक धुर्त व ठग होना पाया गया, जिससे उसको मौजूदा महाराव साहब ने कैद की सजा देकर उसकी जागीर जप्त की और सोना छीना गया, वैसे वह जेल में ही बीमार होकर मर गया.

गांव की जागीर व पैर में सोने की इज्जत के साथ बहुत द्रव्य दे दिया था, इसके सिवाय दूसरे मुत्सद्दी आदि में से सिंघी पुनमचंद (सिरोहीवाला) रेवन्यू कमिश्नर को अरठ दिया गया व अंग्रेज सरकार के तरफ से 'रायसाहेब' का खिताब दिलाया गया, सिंघी जवाहिरचंद दीवान (सिरोहीवाला) को 'राय बहादुर' का खिताब दिलाया गया, व पंडित मंछाराम शुक्ल (बनारसवाला) सुप्रिन्टेन्डेन्ट सायर व आबकारी को 'रायसाहब' का खिताब दिलाया गया, देवडा नवलसिंह सिरोही वाला जो प्रधान था उसको एक अरठ दिया गया, वैसे बहुत से अहलकार, हकीम, डॉक्टर आदि को उनकी नौकरी की कदर करके *मकानात वगैरह बनाने की सहायता दी गई.

महाराव सर कैसरीसिंह साहिब को प्राचीन इतिहास जानने का बहुत शौक था, जिससे जगह २ से प्राचीन हस्त लिखित ख्यात के पुस्तकों का संग्रह करने में बहुत द्रव्य खर्च किया, और ×'पेलेस पुस्तकालय' स्थापन करने में आई, जिसमें हरएक चलू भाषा के पुस्तक उपरांत आप संस्कृत भाषा के अच्छे ज्ञाता होने से उस भाषा के बहुतसे ग्रंथसंग्रह किये गये हैं. इनके समय में राय बहादुर पंडित गौरीशंकर ओझा (रोहिडा ई. सिरोहीवाला) ने 'सिरोही राज्यका इतिहास' नामक पुस्तक हिन्दी भाषामें रचकर प्रसिद्ध किया, जिस पर महाराव साहिब ने उसकी कदर करके रोहिडा गांव में उसको एक अरठ इनाममें दिया, उसी पुस्तकका अनुवाद पीछेसे पंडित सिताराम (बनारसवाला) ने अंग्रेजी भाषामें किया, जिसको भी बडी रकम इनाम में दी गई.

इनके चार राणियां थी, जिसमें पाटराणी बारडजी गुमानकुंवर दांता के रांणा झालमसिंह नाहरसिंहोत की पुत्री के साथ वि. सं. १९३३ में पहिला विवाह हुआ जिससे वि. सं. १९४५ में कुमार स्वरूपरामसिंह का जन्म हुआ, दूसरा विवाह चावडीजी चन्दन कुंवर वरसोडा के चावडा ठाकुर खुशालसिंह जालमसिंहोत की पुत्री के साथ वि. सं. १९४१ में हुआ, जिससे वि. सं. १९४४ में कुमार मानसिंह का जन्म हुआ, परन्तु कुमार का जन्म होने बाद च्यार दिन में ही चावडीजी का देहान्त हुआ और पीछे से वि. सं. १९४५ में कुमार मानसिंह का भी कैलासवास हो गया. तीसरा विवाह राणावतजी मोनकुंवर धरमपुर के महाराणा नारणदेवोत की पुत्री के साथ वि. सं. १९४५ में हुआ जिससे बाई आनंदकुंवर, बाई हेतकुंवर व बाई पद्मकुंवर और कुमार लक्ष्मणसिंह के (वि. सं. १९४९ में) जन्म हुए, जिसमें बाई पद्मकुंवर का जन्म वि. सं. १९५२ में होने बाद पंद्रह दिन में ही राणी राणावतजी का स्वर्गवास हुआ, और वि. सं. १९५८ के कार्तिक

---

* महाराव सर कैसरीसिंहने इस पुस्तक के लेखक को अपने वतन में मकान बनाने के कार्य में रुपैये १०००) बक्षीस किये थे, और लेखक का छोटा भाई 'नागरजी' को 'देहरादून' इम्पिरियल फोरेस्ट कॉलेज में भेज कर पढाई कराई थी, वैसे वि. सं. १९८० के कार्तिक माह में जब कि आप रेवा स्नान को पधारे तब वहां से छडी सवारी लेखक के वतन के गांव पधार कर उसका घर पावन करने की कृपा की थी.

× यह पुस्तक में इसी पुस्तकालय की बहुत सहायता लेने में आई है.

माह में कुमार लक्ष्मणसिंह भी कैलासवास हो गये. चौथा विवाह वि. सं. १९५८ में राठौरीजी भिनाय के राजा मंगलसिंह की पुत्री के साथ हुआ जिससे वि. सं. १९६० में कुमार नारायणसिंह का जन्म हुआ, लेकिन उसके बीस रोज होते ही राठौरीजी साहब का स्वर्गवास हो गया, और डेढ साल की उम्र (वि. सं. १९६२) में कुमार नारायणसिंह का भी कैलाशवास हो गया.

महाराव साहिब ने अपनी कुंवरियां के विवाह " बाई आनंदकुंवर का विवाह वि. सं. १९६२ में बांसवाडा के भमरलाल पृथ्वीसिंह (मौजूदा महारावल) के साथ, व बाई हेतकुंवर का विवाह वि. सं. १९६३ में जेसलमेर के महारावल शालीवाहन के साथ, और उसी वर्ष में बाई पद्मकुंवर का विवाह भुज के महाराव खेंगारसिंह के महाराजकुमार विजयराज के साथ " किये.

पाटराणी बारडजी साहब भी वि. सं. १९५५ में स्वर्गवास हो चुके थे, जिससे वि. सं. १९६० में राठौरीजी साहब का स्वर्गवास होने पर एक भी राणी जनाने में नहीं थी, महाराज कुमार स्वरूपरामसिंह बालक पन में तन्दुरूस्त नहीं रहते थे, जिससे रियासत के मुसाहिबों ने महाराव साहिब को दूसरा विवाह करने के वास्ते कई दफे सलाह दी और कितनेक मांगे भी आने लगे, परन्तु महाराव साहिब ने उस पर खयाल नहीं करते दूसरा विवाह नहीं करने का दृढ निश्चय कर लिया, और महाराज कुमार साहब की तन्दुरूस्ती व बहतरी के वास्ते अपना सब ध्यान लगाकर, ईश्वर भजन के तरफ झुकना स्वीकार किया. इन्होंने केपटन् प्रीचर्ड साहब की नौकरी महाराज कुमार साहब की पढाई के लिये मांग ली, और उसके द्वारा तालीम देने में आई, कुछ समय में ही महाराज कुमार साहब तन्दुरूस्त होकर राज्य का काम देख सके वैसे होजाने से, जब कि महाराव साहिब इंग्लांड पधारे तब राज्य का काम दीवान के साथ करने का प्रबंध किया गया, और बाद में जब २ सवारी तीर्थ यात्रा को पधारे तब काम काज की निगरानी महाराज कुमार साहब के तरफ रखते हुये, वि. सं. १९६७ में दीवान की जगह बंद करके महाराज कुमार स्वरूपरामसिंह साहब को ' मुसाहिबआला ' के पद पर नियत किये गये, और उनको सहायता के वास्ते एक सेक्रेट्री दिया जाकर राज्य का काम सुपुर्द किया गया. च्यार साल तक इस जगह काम करने से वे प्रवीण हो गये, जिससे उनको पूर्ण इख्तियार से राज्याधिकार देनेकी तजवीज सोची गई, और उसके वास्ते प्रयत्न किया गया परन्तु उसमें सफलता नहीं हुई, जिससे वि. सं. १९७६ (अक्टोम्बर सन् १९१९ में) ×अमुक कार्य में खुद की सलाह लेनेका धोरण मुकरर करके राज्य के सब काम

× महाराज कुमार साहब को पूर्ण इख्तियार से काम सुपुर्द करने का परवाना में अपनी सलाह लेने के विषय में यह बातें दर्ज हुई थी कि (१) रुपैये १००१ से ज्यादह तनख्वाह वाले अहलकार को रखने में, (२) रुपैये १०००) से ज्यादह इनाम देने के वास्ते, (३) जमीन जागीर बख्शने के काम में (४) जागीरदारों के साथ राज्य के हक हकूक तय करने के मुआमिलात में, (५) अंग्रेज सरकार के साथ होती लिखा पढी के जरूरी कागज़ों में, महाराव साहिब की सलाह ले ली जाय.

महाराज कुमार साहब की सुपुर्दगी में किये गये, और आप अपना ज्यादह समय धर्म ध्यान में व्यतित करने लगे, इतनाही नहीं परन्तु च्यार महिने बाद देहली जाकर नामदार वॉयसरॉय के आगे महाराज कुमार साहेब को पूर्ण इख्तियार के साथ सिरोही के महाराव बनाने की अभिलाषा प्रदर्शित की गई, जिस पर वॉयसरॉय साहब ने महाराज कुमार साहब को सब रीत से राज्य चलाने काबिल समझ कर, पूर्ण इख्तियार से राज्य सौंपने के कार्य में अपनी सम्मति दी, और दो माह बाद ता. २९ एप्रील सन् १९२० ई. (वि. सं. १९७६) के दिन महाराव साहिब की इच्छानुसार महाराज कुमार साहब का राज्याभिषेक सिरोही में हुआ, जिसमें राजपूताना के एजन्ट गवरनर जनरल मी. होलेन्ड साहब बहादुर ने जलसा शरीक होकर, हिन्दुस्तान की सरकार तरफ से भेजा हुआ महाराव सर कैसरीसिंह के नाम का खरीता आम दरबार में सुनाकर सुपुर्द किया, वैसे महाराज कुमार स्वरूपरामसिंह को सिरोही के 'महाराजाधिराज महाराव' के पद पर सम्पूर्ण इख्तियार से स्वीकार करने का खरीता भी उसी दरबार में सौंपा गया.

महाराव सर कैसरीसिंह साहब अंग्रेज सरकार के बडे वफादार और अंग्रेज अफसरों के सच्चे दोस्त थे, यदि सिरोही रियासत की आमदनी शुरुआत में बहुत ही कम थी तब भी राजपूताना के रईसों ने जिन २ कामों में चंदा दिया, उनमें सिरोही रियासत ने भी अच्छी रकम दी थी. यूरोप के महान युद्ध में महाराव साहब ने अपनी तरफ से एक कम्पनी की सहायता की, और डेरे तम्बू व घोडे भेजे गये, जख्मी यूरोपियन अफसरों के वास्ते आबू पहाड पर जो अपनी नई कोठी थी वह सुपुर्द की, और उसमें जो जो अफसरान् रखे गये उन सबका खर्चा रियासत से उठाया गया. इनके सिवाय युद्ध के समय में हरएक प्रकार के चन्दे में उदार दिल से रकम देते गये, और नामदार शहनशाह पञ्चम जॉर्ज को अपनी तरफ से एक लक्ष रुपैये भेट किये, जिसपर खुद शहनशाह ने ता. ३० नवंबर सन् १९१७ ई. के खास खरीते से सिरोही महाराव की वफादारी की कदर की.

वि. सं. १९७३ में आबू पहाड पर *'लीज एरिया' कायम करके हदबन्दी करने में आई, और खास शर्तों से अहदनामा तहरीर हुआ, जिससे उस एरिया में जो रियासत की हुकूमत थी वह अंग्रेज सरकार के सुपुर्द हुई, इस अहदनामा से सिरोही रियासत पर जो अंग्रेज सरकार की खिराज की रकम रुपैये ७५००) भिलाडी (जिसके कलदार रुपैये ६८८१) सालाना दी जाती थी वह हमेशा के वास्ते मुआफ होगई, और सालाना रुपैये २७०००) हर साल अंग्रेज सरकार के तरफ से सिरोही महाराव साहब को देनेका तय हुआ, जो मिल रहे है.

---

* आबू पहाड पर पहिले के अहदनामे मुआफिक सिरोही की रियाया का इन्साफ सिरोही रियासत की कोर्ट से होता था, और अंग्रेज सरकार की रियाया का इन्साफ अंग्रेज मेजिस्ट्रेट द्वारा होता था, उसी मुआफिक खराडी बाजार व अनादरा में भी आबू मेजिस्ट्रेट का ब्रिटिश रियाया के वास्ते दखल होने से, बाजे वक्त नाइत्तफाकी का बायस पैदा होता था, महाराव साहब ने भविष्य में नाइत्तफाकी न होवे उस कारण यह अहदनामा किया, और 'लीज एरिया' मुकरर करके दूसरी जगह से दखल हटाया गया.

महाराव सर केसरीसिंह की कारकिर्दी का अहवाल वि. सं. १९६७ तक का 'सिरोही राज्य के इतिहास' की पुस्तक में सविस्तार और जीवन चरित्र की नांई अंकित हुआ है, जिससे इस पुस्तक में ज्यादह वर्णन नहीं किया गया है, इनकी कारकिर्दगी का तात्पर्य यह है कि महाराव शिवसिंह ने वि. सं. १८७५ में राज्य की लगाम हाथ में लेकर सिरोही रियासत की उन्नती के बीज बोये थे, वह महाराव उम्मेदसिंह के समय में जलसिंचन नहीं होनेके कारण सिर्फ उनके अंकुर फूट ने पाये थे, इस महाराव ने उन पौदों पर चाहिये जितना जल सिंचन व खात देकर दरख्तों का सुन्दर बगीचा बना दिया, और उसके फल खुदने खाये और भविष्य के महारावों के वास्ते फल फूल से भरा हुआ गुलजार बगीचा छोड कर अपने देह के कल्याण के वास्ते प्राचीन क्षत्रीयों के नांई अपने हाथ से अपने महाराज कुमार का राज्याभिषेक करके वानप्रस्थआश्रम स्वीकार किया.

सिरोही के रईसों में अनादि काल से ही क्षत्रीय धर्म का पालन के साथ ईश्वर भजन करने की प्रथा चली आने से, महाराव सर केसरीसिंह ने राज्य का व संसार के मिथ्या सुख को त्याज्य करके, अपने दादा शिवसिंह के नांई ईश्वर भजन की तरफ अपना सम्पूर्ण लक्ष लगाया. सनातन धर्म का ये चुस्त पालन करते थे, और मोक्ष सम्पादन करने की तीव्र अभिलाषा होनेसे श्रुती-पुराणों में जो जो कर्म धर्म से और दान पुण्य से मोक्ष प्राप्ति होने का लिखा गया है वे सब उपचार किये गये, बल्कि इनकी मोक्ष प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा ने अंधश्रद्धा का रूप धारण करने से, सन्त समागम के बहाने से कितनेक धूर्त लोगों ने बेवाजवी फायदा भी इनके हाथ से उठाने में सफलता प्राप्त की थी. महाराज कुमार स्वरूपरामसिंह को सम्पूर्ण इख्तियार के साथ राज्याभिषेक होने पर, महाराव साहब ने राज्य की उपाधी के साथ संसार व्यवहार की भी सब उपाधी छोड दी, और तीर्थयात्रा व ईश्वर भजन में ही दिन रात लगे रहे. रोगग्रस्थ शरीर होने के कारण मुसाफरी की तकलिफ उठाने काबिल नहीं थे, वैसे दिन रात भजन करने से दिनबदिन अशक्ती बढ रही थी तब भी तीर्थयात्रा और भजन के कार्य में त्रुटी न आने दी. वि. सं. १९८१ की कार्तिकी पुनम का स्नान करने के वास्ते आप पुष्कर राज पधारे वहां से वापिस आबूरोड आये और केसरगंज कोठी में मुकाम किया, सरदी की मौसिम खतम होने बाद आपका इरादा काशीक्षेत्र में निवास करने का था, परन्तु यह अभिलाषा पूर्ण नहीं होते, मकरसंक्रान्ती का दान पुण्य हो जाने बाद दूसरे रोज (ता. १५-१-१९२५ ई.) रात्री के समय में पूजन करते २ हृदय बंध हो गया और अल्प समय में ही वैकुंठ-वास हुए, दूसरे दिन अललसुबह यह खबर मौजूदा महाराव साहब को सिरोही पहुंची, जिससे खुद वे आबूरोड पधारे और स्पेशियल ट्रेन से सिरोही लाकर, जो उन्हों ने अपनी हयाति में ही अपना अग्नि संस्कार के वास्ते सारणेश्वरजी महादेव के स्थान में जगह निर्माण की थी, (अग्नि संस्कार के वास्ते उसी स्थान में शास्त्रानुसार जिस २ प्रकार के

मरहूम शाह मिलापचंद दीवान साहब सिरोही (सूरत निवासी).

जिसकी स्मरणार्थे मौजूदा महाराव साहब सिरोही ने कालंद्री कस्बे में सफाखाना बनवाया है.

[देखो पृष्ठ ३४२]

The Lohana Mitra Steam P. Press, Baroda.

काष्टकी जरूरत थी, वह सब सामग्री कई बरसों से इकट्ठी कर रखी थी, उसी सामग्री से) उसी स्थान पर अग्नि संस्कार किया गया.

इन महाराव के मरसिये 'खाणगांव' के कवि आसिया नवलदान ने रचे हैं, जिसमें कहा है कि—

छन्द षट पदी.

"विमल धरम धरवरम, परम पथ जोग प्रकाशक; शरण अभय निशैरण, तीव्र तरणिय अरि त्रासक. ''
" कुशल काछ दृढ वाक्य, नैमव्रत अडग निभावन; पंडित, कवि प्रतिपाल, पाठप्रोक्ता श्रुति पावन "
" निर्णय जु सुभासुभ गुनकरन, हद समाज दंभी हरन्; नवलेश कहत केहरीनृपत, स्वर्ग गयो अशरन शरन. "

सिरोही रियासत में प्रजा का अज्ञानपन और सरदारों का बखेड़ा चलू रहने के कारण, महाराव शिवसिंह के समय में वि. सं. १८८० से १९१८ तक के ३८ वर्षों में १३ मुसाहिब हुए थे, महाराव उम्मेदसिह के वि. सं. १९१९ से १९३२ तक के १३ वर्ष में ७ सात मुसाहिब हुए, उसी मुआफिक महाराव सर कैसरीसिंह के वि. सं. १९३२ से १९७६ तक के ४४ वर्षों के समय में (वि. सं. १९३२ से १९६६ तक में ९ दीवान और महाराजकुमार को मुसाहिबआला मुकरर करने बाद वि. सं. १९६६ से १९७६ तक में ५ सेक्रेट्री हुए हैं.) + १४ मुसाहिब हुए, जिसमें १ खूबचंद (सिरोही का) दो दफे, (२) खा. ब. मूंशी न्यामतअलीखां (वासण) दो दफे, (३) मुन्शी अमीनमहमद (भुजवाला), (४) शाह मिलापचंद (सूरतवाला) पांच दफे, ५ राय बहादुर सिंघी जवाहिरचंद (सिरोहीवाला) तीन दफे, (६) महता डाह्यालाल, (अहमदाबादवाला) ७ मोलवी नुरुलहुसेनखां, (शाजहांनपुरवाला) (८) बाबू सरतचन्द्रराय चौधरी, (कलकत्तावाला) एक दफे दीवान और दूसरी दफे सेक्रेट्री, (९) लाखिया जीवणलाल (अहमदाबादवाला), इस मुआफिक ९ दिवान, और (१०) महेता हरीलाल (नडियाद वाला), (११) महेता सदाशिवराम (सूरतवाला), (१२) रा. सा. पंडित मंछाराम (बनारसवाला), (१३) खान बहादुर दाराशाह मोदी (आबूवाला) व १४ गणपतराव लॉड (बंबईवाला), ये पांचों सेक्रेट्री हुए थे.

+ महाराव सर कैसरीसिंह के समय के दीवान व सेक्रेट्री मुसाहिबआला को रु. ९०) से लगा कर रू. ९००) तक दरमाया मिला था, और मुसाहिब आला को रु. १०००) माहवार एलाऊन्स मिलता था. उपरोक्त दीवानों में नं. ४ शाह मिलापचंद जिसने पांच दफे सिरोही की दीवानगिरी की है, वह दीवान पद पर नहीं होने की हालत में स्पेशियल बाऊन्डरी ओफिसर की जगह नियत रहते थे, और उनको पैन्शन् के सिवाय रु. २००) तनख्वाह माहवार दी जाती थी. नं. १ शाह खूबचंद, व नं. ५ रा. ब. सिंघी जवाहिरचंद को रियासत से पैन्शन् दिया गया था. नं. ७ मोलवी नुरुलहुसेनखां गुजर गये थे. नं. ८ बाबू सरतचन्द्र राय चौधरी मौजूदा महाराव के समय में भी दीवान पद पर विद्यमान थे, जिसको वर्तमान समय में पैन्शन् मिल रही है. नं. ११ महेता सदाशिवराम को मौजूदा महाराव साहब ने पुनः अपनी सेवा में रखकर रु. २००) माहवार पैन्शन् कर दी थी, और पीछे से 'चीफ मिनिस्टर' के पद पर मुकरर किया, जो दो साल से उस पद पर काम कर रहे हैं. नं. १२ रा. सा. पंडित मंछाराम पुनः अपनी सायर व आबकारी सुप्रिन्टेन्डेन्ट की जगह पर नियत किये गये थे.

नोट—महाराव सर कैसरीसिंह ने वि. सं. १९७१ में बडुआ लक्ष्मणसिंह को छडी व चपरास की इनायत की थी.

प्रकरण ३६ वाँ.

वलु देवडा चौहान (मौजूदा महाराव स्वरूपरामसिंह)

नं. २६ महाराव स्वरूपरामसिंह सिरोही रियासत के मौजूदा महाराव साहिब है, इनका जन्म वि. सं. १९४५ आश्विन वदि ७ के दिन हुआ, ता. १४ अक्टूम्बर सन् १९१० ई. के रोज आप 'मुसाहिब आला' की जगह पर मुकरर होकर राज्य का काम करने लगे, और ता. २९ अप्रेल सन् १९२० ई. के दिन अपने पिता की हयाती में ही 'महाराजाधिराज महाराव सिरोही' के पद से सम्पूर्ण इख्तियार पाकर सिरोही की गद्दी पर बैठे. इन्हों ने हिन्दी भाषा की तालीम पाकर अंग्रेजी भाषा का अभ्यास केप्टन प्रीचर्ड साहब व मी. स्मीथ साहब के द्वारा किया है.

राज्यगद्दी पर आने बाद तुरन्तही आपने राज्य में सुधारा करने का काम हाथ में लिया, और कर्नल मेक्फर्शन साहिब को अपने पर्सनल एडवाईझर मुकरर किये, इस समय में हिन्दुस्तान में स्वराज्य और स्वतंत्रता प्राप्त करने की जो हवा फैल रही थी, उसकी असर सिरोही रियासत के सरदारों में दाखिल होनेसे उन्हों ने अपनी तकलीफ रफे करने के वास्ते इकट्ठे होकर मेमोरियल पेश किये, जिसके तसफिया के वास्ते महाराव साहिब ने कर्नल मेक्फर्शन साहिब को प्रेसीडेन्ट मुकरर करके 'जागीरदार कमीटी' की स्थापना की. जागीरदार कमीटी का काम डेढ साल तक चला दरमियान मेवाडमें ग्रासिया भीलों का जो बखेडा खडा हुआ था, उसका फैलाव इडर, पालणपुर व दांता स्टेट में होता हुआ सिरोही रियासत में भी आया, जिसको रफे करने के वास्ते महाराव साहिब ने जागीरदारों की जमियत के साथ रियासत की फौज को आबूरोड में ईकठ्ठी की, और हिकमतअमली से पहिला मेलावा बिखेर दिया गया, परन्तु दो माह के बाद कुल ग्रासिये भीलों का दूसरा मेलावा सिरोही रियासत में जमा हुआ, जो अंग्रेज सरकार की फौज की सहायता से बिखोर ने की तजवीज हुई, और मेजर प्रीचर्ड साहिब (सेक्रेटरी एजेन्ट गवरनर जनरल राजपूताना) ने सिआवा व वालोरिया गांव के ग्रासिये व भीलों को सजा दी. यदि सिरोही रियासत के ग्रासिये भील सजा होनेसे डर गये थे, परन्तु उन लोगों को चाहिये वैसी शान्ति व सन्तोष नहीं होनेसे, महाराव साहिब ने खुद तकलिफ उठाकर उन लोगों को समझायश की, जिससे वे लोग शान्त होकर खेती के धंधे लगे.

सरदारान् के तसफिये के वास्ते 'जागीरदार कमीटी' ने अपनी राय कायम करके रिपोर्ट पेश किया, परन्तु उससे सन्तोष कारक नतीजा नहीं आने से तसफिया नहीं हुआ, जिससे राजपूताना के एजंट गवरनर जनरल साहिब ऑनरेबल सर होलेन्ड साहिब बहादुर

मौजूदा महाराजा साहब सिरोही.

महाराजाधिराज महाराव सर स्वरूपरामसिंह साहब बहादुर.

के. सी. एस. आई.

The Luhana Mitra Steam P. Press Baroda

ने सिरोही मुकाम करके सब सरदारों को समझायश की, लेकिन उन लोगों ने अपनी जिद नहीं छोडी जिससे ता. ३ फरवरी सन १९२३ ई. के रोज एक वडा स्पिच करके उनको यह सलाह दी गई कि वे लोग अपना २ फैसला महाराव साहिब के पास हाजिर होकर करा लेवे, उस मुआफिक कुछ अरसे बाद, माह मई सन १९२३ ई. में सरदार लोग महाराव साहिब की हुजूर में हाजिर हुए, और महाराव साहिब ने यह काम अज खुद अपने हाथ में लेकर उन लोगों का ऐसा तसफिया कर दिया कि, जिससे उन लोगों को सम्पूर्ण सन्तोष हो गया, बलिक उन्हों ने अपना सन्तोष प्रदर्शित करने के वास्ते 'गोहिली' गांव में एकत्र होकर ता. १२ जून सन १९२३ ई. के रोज महाराव साहिब को +'मानपत्र'

+ नकल मानपत्र सिरोही के सरदारों की तरफ से ता. १२ जून सन् १९२३ ई. के रोज महाराव साहिब स्वरूपरामसिंह को दिया गया उसकी.

॥ श्री सारणेश्वरजी ॥

बहुजूर राजराजेश्वर महाराजाधिराज महारावजी श्री श्री १०८ श्रीस्वरूपरामसिंहजी साहेब बहादुरजी दाम इकबाल-हुम हजूर वाला.

हम सरदारान वो जागीरदारान राज निहायत अदब के साथ हजूर का शुकरीया अदा करते हैं कि हजूर हमारी अरज मंजूर फरमाकर खास इस जलसे में तशरीफ लाये है जो हमने इस गरज से किया है कि हम हजूर में अपनी राज भक्ति और वफादारी का खास तौर पर इजहार करें.

हमारी जागीरों में राज एक या जो रिश्ता कायम होता है उसके बाबत कई बर्षों से किननीक दीक्कतें पैदा हो गई थी. उनको दूर करने की गरज से जो अर्जीयां हमने हजूर में पेश किईं थी वह हजूर ने अपने पोलिटिकल एडवाइजर कर्नल मेकफरसन साहेब को वास्ते तहकीकात के सिपुर्द कीइ, और उनकी मदद के वास्ते दो मेम्बर राय बहादुर जोसी माणेकलालजी और खान साहेब काजी नीयाज अलीजी को (जो इस वक्त चीफ मिनिस्टर है.) मुकरर फरमाया, चुनांचे उन्होंने हमारी तकलीफो की तहकीकात कीइ और कर्नल मेकफरसन साहेब वो राय बहादुर जोसीजी ने हजूर में रिपोर्ट पेश कीइ, मगर खान साहेब काजीजी की राय चंद बातों में इत्तफाक न होने से उन्होंने अपनी राय अलग दर्ज कीइ.

ये सब मामलात हजूर की पेशी में थे कि हजूर ने ऑनरेबल मिस्टर होलेन्ड साहेब बहादुर एजेंट गवर्नर जनरल राजपूताना को वास्ते पधारने के सिरोही बुलवाया और उस मौके पर हम लोगों को भी याद फरमाया. और हम हाजिर हुए. हजूर की इजाजत से साहेब मौसूफ ने हम लोगों को समझायश कीई, मगर उस पर हम सब सरदारान एक राय पर न आने से साहेब बहादुर ने ता. ३-२-२३ के रोज एक स्पीच दीइ जिसमें उन्होंने हमको श्रीजी हजूर में हाजिर होकर अपने अपने फैसले कराने की नेक सलाह दीई. जिस पर हमने कुछ आपस आपस की राय मिलाने में निकाल कर बिल आखीर हम सब इस नतीजे पर आये कि श्रीजी हजूर में हाजिर हो कर अपने फैसले करा लें.

यह राय कायम हो जाने पर हमने श्री जी हजूर में अरज गुजराये फैसला कराने की पेशी करना शुरू किया. लेकिन इस काम के वास्ते हमको एक एसे शख्स की खास जरूरत मालूम हुई के जिस पर हम यह भरोसा कर सकें कि हमारे और राज के दरमियानी मामलों का तस्फिया कराने में अपनी नेकनियती और इमानदारी के साथ फैसले कराने में शरीक रहेवे. चुनांचे देसाई लल्लूभाई जो इस राज के रिटायर्ड रेवेन्यु ऑफिसर है उनको इस कामके काबिल समझ उनके घर अपने खास आदमी भेज कर बुलाने की तजवीज कीई गई, और उनको हजूर की इजाजत से बीच में रख कर हमारी तकलीफों के बाबत तस्फिया कराने की तजवीज अमल में लाई गई जिससे इस थोडे अरसे में हम लोगों के ऐसे फैसले हो गये कि जिनसे हमको पूरी संतोष है.

हजूर श्री जी के साथ हम लोगों को कम परिचय होने से हजूर के नेक मिजाज की वकफियत हमको पूरे तौर से मालूम नहीं थी लेकिन हमको यह भरोसा जरूर था कि अपने मामले खुद हजूर श्री जी के हाथ से होने पर जरूर इन्साफकी

अर्पण किया, उस दिन से सिरोही रियासत में सरदारों का बखेडा हमेशा के वास्ते नाबूद हो गया.

नजर से तसफिया होगा. इस बारे में हमको अरज करने में नेहायत खुशी होती है कि हजुर ने हमारी वह उम्मेद बर लाने को अपनी तनदुरस्ती और आराम का ख्याल न फ़ुरमाते जाती महेनत उठा कर फैयाज दिल, परवरश व रहेम नजर से हमारे जुदागाना फैसले फरमाये और आयन्दा अमल दरामद के लिये जो कायदे तैयार हुवे उनकी एक एक दफा हमको अच्छी तरह समझाई जाकर और हमारी दिल जमाई करा कर मंजूर फरमाये. उनसे हमको हजूर की मुनसिफ मिजाजी वो रहेमदिली का पूरे तोर से तजरूबा हासिल हुआ है बल्की यह बखूबी यकिन हो गया कि हमारी तरक्की वो बेहबूदी का हजुर श्री जी को पूरा ख्याल है जिस बाबत हम और हमारी औलाद हमेशां के लिये अहसानमंद रहेंगे.

हम ईस काबिल नहि है कि चाहिये जैसे अल्फाज मे हजूर की मश्करी जाहिर करसके इस वजह से सिर्फ यह यकीन दिलाते है की हम सब हजुर के खेरख्वाह और फर्माबरदार राजपूत है. हमारे बडेरों ने जिस तरह बापबेटों के नाते से रियासत की बंदगी उठाइ है उसी तरेह हम को वो हमारी ओलाद को हरवक्त बंदगी के लिये हजूर तैयार और मुस्तेद पावेंगे. साथही हम उम्मेद करते है की रियासत के साथ हमारे कुल ताल्लुकात पर हजूर आयन्दा भी परवरिश और ख़ाविन्दी की नजर रखकर हमारी बहतरी का ख्याल फ़ुरमाते रहेंगे.

इस मोके पर हम ओनरेबल मिस्टर होलेन्ड साहेब बहादुर की नेक सलाह के लिये एहसान जाहिर करते है और रियासत के उन अफसरान की जिन्हो ने हमारे तस्फिया कराने में हमदर्दी जाहिर कीई है उन सब के हम शुकरगुजार है.

हम लोगों की अखीर में यह अभिलाषा है कि हमारा तस्फिया करने में जिस तरेह हजुर ने मातबरी रखकर धिरज संतोष और उदारता से काम लिया है उसी रीत से आगा ने भी सरदार वो रिआया के साथ एसे एसे उमदा गुनों से सब की बहतरी होवें एसे काम हजर के हाथ से होते रहेंगे वैसी उमेद रखकर परमात्मा से हमारी प्रायना है की हजूर क्रौड दिवाली राजकरो–अस्तु;

मुकाम गोहिली परगना मगरा
तारीख १२ जुन १९२३

ली० हजूर श्री जी के वफादार व फरमाबरदार जागीरदान राज सिरोही.

	Abhay Singh of Padiv.	दा० मोहबतसिंघ नींबज.
दा० डुंगरसिंघ मेरमांडवारा.	दा० मेघसिंघ जावाल.	दा० कीशोरसिंघ मोटागांम.
दा० सरदारसिंघ लुणोल.	दा० अमरसिंघ नवारा.	दा० अजेतसिंघ दवाणी.
दा० वेरीसाल डोडुआ.	दा० करणसिंघ पालडी.	दा० जोधसिंघ मडीया.
दा० अनोपसिंघ अरठवाडा.	दा० भूरसिंघ जामोत्रा.	

उपरोक्त मानपत्र का महाराव साहेबने निम्न प्रत्युत्तर दिया. (नकल महाराव साहेब के प्रत्युत्तर की.)

सरदारान व जागीरदारान,

आप लोगोंने अपनी लंबे अरसे से चलती तकरारों का तसफिया होजाने से अपनी राज्य भक्ति वो वफादारी वो अपने दिल का संतोष आम तौरपर जाहिर करने की गरज से यह जलसा किया है और उसमें शरीक होने का जो मोका हमको मिला है उससे हमारे दिल पर गहरा असर हुआ है और उसके लिये आप लोगों का हम शुकरिया अदा करते हैं.

२. आप सब लोग जो देवडे चहूआण हो रिआसत सिरोही के भाई–बेटे हो. और रिआसत के साथ आप लोगों का सम्बन्ध इस तरह जुडा हुआ है कि रिआसत की तरक्की व बहतरी में आप लोगों की तरक्की व बहतरी समाई हुई है जब से सिरोही रियासत कायम हुई तब से सब सरदारों ने रिआसत के साथ बाप–बेटों का नाता रख कर अपनी फरज अदा कीई है जिस की गवाही इतिहास व वीर राजपूतों के स्मार्क देते है.

३. इसमें कोई शक नहीं है कि राज वो आप लोगों के दरमियान आमदनी की वसुलात वगैरह के मौजूदा तरीके से बक्तन फवक्तन तकरारों के बाएस पैदा होकर उनके तसफीए होते रहते थे. आज कल दुनिया में जमाने के फेरफार से जो हवा चल रही है उसका असर यहां पर भी पडा जिसके नतीजे से यह मामले इस नौबत पर पहुंचे. रियासत से भी इन मामलों को तै करने के वास्ते बहुत कोशिशे कीई गई और ऑनरेबल मिस्टर होलेन्ड साहेब बहादुर ने भी इसी गरज से बजाते खुद तकलीफ उठाई जो आप लोगों से पोशीदा नहीं है.

भीलों का तुफान रफे होने के बाद सरदारान् के तसफिये हुए, इतने में राजगुर ब्राह्मणन् ने फसाद उठा कर एक ब्राह्मणी को जला दी, और काछोली गांव में सब राजगुरों ने इकट्ठे होकर धरणा डाला, जिस पर उनको गिरफ्तार किये गये, परन्तु उस पर कुल रियासत के राजगुर ब्राह्मणान् ने सारणेश्वरजी में इकट्ठे होकर धरणा डाल दिया, महाराव साहिब की सवारी उस समय आबू पर थी, वहां से आकर इन्हों ने समझायश करके धरणा उठाया, और रुवाई भीतरोट के राजगुरान् की माफी का तसफीया करके सब को सन्तुष्ट कर दिये.

महाराव साहिब को अपने राज्य में कायदे कानून जारी करके रिआया को अदल न्याय मिले वैसी तीव्र अभिलाषा होनें से माहली व जुडिशियल काम अलग करके जुडिशियल महेकमा स्थापन किया गया, और L. L. B. पास शुदा न्यायाधीशों को रख कर ता. ७ अकतुबर सन् १९२४ ई. के रोज दशहरा के आम दरबार में सिरोही रियासत से जारी हुए, ' सिरोही पेनलकोड, प्रोसीजरकोड, स्टेम्प एक्ट्, मयाद समायत, रजिष्ट्रेशन एक्ट, व कोर्ट फी एक्ट, ' के कानून व दूसरे सब ब्रिटिश सरकार के कानून अमल में लाने का

---

४. हमको निहायत खुशी और संतोष जाहिर करने की खास वजह यह भी है कि आप लोगों ने ऐसे मुद्दत के तकरारी मामलों को ते कराने के काम में ईस रियासत के रिटायर्ड ओफिसर मिस्टर देसाई छल्लुभाई के ऊपर ईतमीनांन रख कर उनको बीच में रख सब फैसले सहुलियत से करा लिये जिससे आप लोगों के जाहिर करने माफिक उन पर आप का पूरा भरोसा होने की हमको तसली हो चुकी है और उनके निसबत हमारे दिल में जो गुन्जायश थी उस में और इजाफा हुवा है.

५. अब आप लोगों की मनशा माफिक कायदे और फैसले हो जाने से अपनी अपनी जागीरों में जमीन संबंधी इन्तिजाम अच्छी तरह करने का मौका आप लोगों के हाथ लगा है और हमको उम्मेद है कि इसका फायदा उठाने के वास्ते आप लोग इन के पाबंद रह कर अपनी जागीर की आबादी बढाने को वो रियाया के साथ मुनसिफाना और हमदरदी का बरताव रख कर उनकी बहतरी व तरकी की सूरतें पैदा करने की कोशिश करते रहोगे आप लोगों को इन कोशिशों में कामयाबी पाते देखने से हमको और भी खुशी होगी.

६. आप लोगों ने रियासत के साथ वफादारी और राज्यभक्ति जाहिर करके अपने बुजरगों के माफिक ही बंदगी उठाने का इतमीनान दिलाया है इस बारे में हम को आप लोगोंपर शुरू से ही भरोसा है बल्कि साल गुजिश्ता में भीलोंके बलवे के मौके पर अपनी जमियत के साथ तल्बी पर फौरन हाजिर होकर अपनी वफादारी का ताजा सबूत दिया है जिसका जिकर करना बे मौका नहीं है.

७. आप लोगों के फैसले हो जाने पर संतोष जाहिर करके हमारा अहसान मानने का जिकर किया है मगर हम समझते है कि हमने अपना फरज अदा करने के अलावा कुछ नहीं किया है कि जिसकी वजहसे ईतनी तारीफ करने की जरूरत हो आएन्दा के लिये भी हम आपको इतमीनान दिलाते है की आपकी किसी तकलीफ के बाबत हमारी सरकार में अरज होगी उस पर ईन्साफन् ध्यान दिया जावेगा.

८ आप लोगों ने एड्रेस में खांनसाहब काजी नीयाजअलीजी के अलहदा राए पेश करने की बाबत इशारा किया है जिस्से इस जगह पर इस बात का खुलासा करना जरूर है कि खांन साहब ने कमेटी के मेम्बर के तौर पर जिस तरह अपनी फर्ज अदा की थी उसी तरह बहेसीयत चीफ मिनीस्टर आप की तकलीफात दूर करने की हमारी ख्वाहिश को पूरी करने में अपनी हमदर्दी जाहेर करके दिल के साथ मदद दिई है.

९ इन फैसलो के ते कराने में ठाकुर मोहबतसिंघजी नीबज और ठाकुर अमयसिंघजी पाडीव ने जो महेनत उठाई है और मदद दी है उसका पूरा नक्श हमारे दिल पर हुआ है और हम उनकी महनत की पूरी कदर करते है.

फरमान किया गया, परन्तु सिरोही रियासत के 'महाजनान' को यह कानून पसन्द नहीं आने से उन्हों ने अपनी तरफ से कानून रद्द करने की दरख्वास्त की, रियासत की तरफ से जिन २ दफे के वास्ते उजर हो वह तफसिल उनसे तलब हुई, लेकिन वैसी बाजाबता दलील पेश नहीं करते महाजनों ने जगह २ इकट्ठे होकर ऐसी झूठी खबरें फैलाना शुरू किया कि, जिससे इलाके में भारी हल चल हो गई, इतना ही नहीं लेकिन महाजनों ने काश्तकारों के साथ लेंनदेंन करना तक बंद करके उनको खाने के वास्ते अनाज व खेती के वास्ते बीज देना भी बंद कर दिया, और उचाला करके गैर रियासत में चले गये, जिससे काश्तकारों को बीज भात रियासत से दिया गया. यदि महाजनान के उचाले से दूसरी प्रजा को किसी प्रकार की हानी नहीं होने पाई, और कानून जारी हो जाने से, अच्छा न्याय मिलने लगा परन्तु सिरोही रियासत को कमनसीब व अज्ञान प्रजा के प्रारब्ध में ऐसे सुधारे से वंचित होने का लिखा हुआ होने से, महाराव साहिब के उत्साही हृदय में इससे रंज पैदा हुआ, और नाखुश होने से इन्हों ने वे सब कानून मुल्तवी करने का और पहिले के मुआफिक तहसिलदारान् को जुडिशियल इख्तियार देकर बगैर कानून से (प्राचीन पद्धती माफिक) न्याय करने का हुकम ता. २५ डीसंबर सन् १९२५ ई. के रोज जारी किया, जिससे महाजनान वापिस लेनदेन करने लगे.

सिरोही रियासत की प्रजा अनपढ होने से महाराव साहिब ने उनको तालीम देने के वास्ते आबूरोड (खराडी), पिन्डवारा, रोहिडा, व शिवगंज में पाठशालायें कायम की, सिरोही में कन्याशाला स्थापित की गई, और ग्रासिये भीलों को पढाने के वास्ते उन लोगों के गांवों में तीन पाठशाला खोलने में आई, वैसे रफते २ इलाका भर में पढाई कराने की तजवीज सोची गई है.

सिरोही रियासत में सिर्फ खास सिरोही, शिवगंज, व आबूरोड में शफाखाने थे, लेकिन दूसरी तहसिलों में बीमारों को तकलिफ उठाना पडता था, वह रफे करने के वास्ते मंढार में शफाखाना खोला गया, और कालन्द्री में अपने पुराने दीवान शाह मिलापचंद (सूरतवाला) की यादगीरी कायम रखने के वास्ते उसके नाम से शफाखाना खोलने का वि. सं. १९८२ के दशहेरा के दरबार में जाहिर किया गया, (जिसका मकान बन रहा है) खास सिरोही में महाराणी राठौरीजी साहिब (रतलामवाले) की यादगार में 'जनाना शफाखाना' खुलने के वास्ते मकानात तैयार किये जाते हैं और सर हॉलेन्ड साहिब (राजपूताना एजेन्ट गवरनर जनरल) के स्मरणार्थे क्रोस्थवेट होस्पिटल में 'होलेन्डविंग' के नाम से मकानात बनाये गये हैं.

महाराव साहिब की इच्छा अपनी प्रजा को आराम मिले वैसी होनेसे खास सिरोही नग्र व खराडी (आबूरोड) में म्यूनिसिपालेटी कायम करके उनका कामकाज प्रजा के

हस्तक सुपुर्द करने में आया है, वैसे उन दोनों शहरों में पक्के रास्ते बनवाकर प्रजा की सुखशान्ति वढाने का प्रयत्न चलू है.

सिरोही नगर रैल्वे स्टेशन से दूर होने के कारण रैलवे की सफर करने वालों को पिन्डवारा से सिरोही तक आने जाने के रास्ते पर वा मुश्केली गाडे चल सकते थे, जिससे १४ मैल खुशकी सफर करने में वेलों को तकलिफ के साथ वहुत वक्त फजूल जाता था, जिससे महाराव साहिव ने वह तकलिफ रफा करने के वास्ते मोटर चल सकें वैसा रास्ता वनवाना शुरू किया है, (जो कि वह काम चल रहा है, परन्तु दो साल से सिरोही पिन्डवारा दरमियान मोटर सर्वीस चलने से मुसाफिरों को उसका लाभ मिल रहा है.) वैसे आबूरोड से अंवाजी जाने वाले यात्रालू लोगों के वास्ते, नया रास्ता मोटर चल सके वैसा वनाना शुरू हुआ है, और सिरोही नगर की प्रजा को पानी पहुंचाने के इरादे से स्वरुपविलास वगीचे में 'गोपालसागर' नामक एक वडा कूँआ (अपनी महाराणी राठौरीजी साहिव के नाम से) वनाया गया है.

महाराव साहिव को वाग वगीचे और सुन्दर सड़कें वनवाने का और मोटरें व हरेक प्रकार की वगियें रखने का शौक होनेसे, 'स्वरुपविलास वगीचे' में देश २ कें आम व दूसरे फल और पुष्पों से वह वगीचा गुलजार बनाकर वहां पर विजली की रोशनी का इन्तिजाम किया गया है, और सिरोही के व आबूरोड के 'कैसरविलास' वगीचे के पुराने दरख्त हटाकर नई पद्धति के वगीचे वनाने का काम हाथ पर है. खास सिरोही में एक वडा 'वर्कशॉप' खोलने में आया है, और शहर की प्रजा को हवाखोरी के वास्ते कई एक पक्की सडकें वनाई गई हैं, जिससे शहर की शोभा में बहुत तरक्की होने पाई हैं.

सिरोही नगर में अग्रवाल महाजन एक भी × आवाद नहीं था, महाराव साहिव ने यह खामी दूर करने के वास्ते, सिरोही के पासही चलू साल में 'स्वरुपनग्र' नामक शहर आवाद किया, जिस में अग्रवाल महाजनों ने आवाद होकर वाजार वनाया है, जिनके वास्ते खास रिआयत दाण आदि में दी गई है. इसी मुआफिक रोहिडा स्टेशन पर एक * शहर आवाद करने की तजवीज सोची गई है, जहां पर कईएक दुकानों के पट्टे देने में आये हैं,

महाराव साहिव स्वरूपरामसिंह ने अपने टूंक समय के राज्य अमल में अपनी राज्य करने की कुशलता वताने से, नामदार अंग्रेज सरकारने वि. सं. १९८० में उसकी कदर में K. C. S I. का मानवंता खिताव अता फरमाया है, वैसे महाराव साहिव ने +वि. सं. १९८१

× कहा जाता है कि सिरोही नग्र में वैष्णव महाजनोंने 'गादोतरा' घालकर शहर छोड दिया था, इस कारण कोई भी महेश्री या अग्रवाल वैष्णव सिरोही में आकर आवाद नही होते थे.

* यह शहर अबतक वंधाना शुरू नहीं हुआ है.

+ महाराव सर स्वरूपरामसिंह ने वि. सं. १९८१ के दशहरा के दरवार में—राजसाहवां नादीआ, अजारी, जोगापुरा को 'महाराज' के खिताब, व मंढार ठिकाने की दोनों पांती के 'राज श्री' को 'राजसाहबान' का खिताब दिया, चीफमिनिष्टर खान बहादुर काजी महोमद नियाजअली को 'मुशिर–उल–मुल्क, व चीफ मेडिकल ओफ़िसर डॉ. राघवेन्द्र शिराले को

व *वि. सं. १९८२ के दशहरा के दरबारों में अपने सरदार व मुसाहिब आदि की कदर करके कितनेक को पैर में सोना पहिनने की इज्जत व कितनेक को खिताब की नवाजिश की है, उसी मुआफिक अंग्रेज सरकार के तरफ से चिफ मिनिस्टर खान साहिब काजी नियाजअली को 'खान बहादुर' व रा. सा. पंडित मंछाराम शुक्ल को 'राय बहादुर' का खिताब अता हुआ है.

महाराव सर स्वरूपरामसिंह की अव्वल सगाई देवलिया प्रतापगढ के महाराजा की कुंवरी के साथ हुई थी, लेकिन पीछे से वह तहकूब होकर पहिला विवाह जाडेचीजी कृष्णकुंवर भुज के महाराव सर खेंगारसिंह की कुंवरी के साथ वि. सं. १९६४ में हुआ, (जिससे बाई कंचनकुंवर, जीतकुंवर व अर्बुदकुंवर के जन्म हुए.) दूसरा विवाह राठौरीजी गोपालकुंवर रतलाम के महाराजा रणजीतसिंह की कुंवरी से वि. सं. १९६९ में हुआ, परन्तु वि. सं. १९७१ में उनका स्वर्गवास हो गया. तीसरा विवाह वाघेलीजी मानकुंवर कुवार के वाघेला फतेसिंह की कुंवरी के साथ वि. सं. १९७२ में हुआ व ÷चौथा विवाह राठौरीजी सजनकुंवर जूनिया के इस्तमरारदार राजा केसरीसिंह की कुंवरी के साथ वि. सं. १९८२ में हुआ है.

महाराव सर स्वरूपरामसिंहजी सादे व उदार प्रकृति के व शान्तिप्रिय रईस हैं. बोम्बे की आबहवा ज्यादह माफिक आने से आपने बोम्बे में एक बंगला खरीद किया है और वहां पर ज्यादह आना जाना रेहता है. सिरोही रियासत की प्रजा की उन्नति होवे और सुधारा में पीछे रहा हुआ सिरोही का राज्य दूसरे सुधरे हुए राज्य के मुकाबला में स्थापित हो जाय, वैसी प्रबल अभिलाषा होनें से उनके वास्ते जाति श्रम उठाने को आप मुस्तेद रहते हैं. इनके समय में मुसाहिब (१) चीफ सेक्रेटरी बाबु सरतचन्द्र राय चौधरी, (२) चीफ मिनिस्टर पंडित रमाकान्त मालविया, (३) चीफ मिनिस्टर खान बहादुर काजी महोमद नियाज अली हुए, व (४) मौजूदा चीफ मिनिस्टर राज्यरत्न मेहता सदाशिवराम हैं.

'वैद्य रत्न' के तगमें इनायंत किये गये, और महता डाह्यालाल वकील (अमदावाद वाला) को एकवडी ताजीम के साथ पैर में सोना बक्षा गया.

* वि. सं. १९८२ के दशहरा के दरबार में निंबज ठाकुर साहब मोहबतसिंह को उसकी जात के वास्ते 'राजसाहेबां' व पाडीव ठाकुर साहब अभयसिंह को निज के वास्ते 'सभाभूषण' का खिताब दिया गया. चीफ मिनिस्टर महेता सदाशिवराम को 'राज्यरत्न' का खिताब के साथ एकवडी ताजीम व पैर में सोना बक्षा गया. रिटायर्ड चीफ मिनिस्टर खा. ब. मु. उ. मु. काजी महोमद नियाजअली को एकवडी ताजीम के साथ पैर में सोना दिया गया, डोक्टर जादवजी भुजवाले को वैद्य शिरोमणी का खिताब व पैर में सोनाकी ईज्जत के साथ एकवडी ताजीम का मान बक्षा गया, रूस्तम श्रॉफ A. D. C. को 'मोतमिदे खास' व देसाई लल्लूभाई रिटायर्ड लेन्ड रैविन्यू ऑफिसर (इस पुस्तक के लेखक) को 'न्यायरत्न' का खिताब दिया गया, हकीम अकबरबेग को 'अशरफ–उल–अतिबा' का खिताब बक्षा गया, और स्टेट इन्जीनियर मिस्त्री विसराम को व मोटर गेरेज सुप्रिन्टेन्डेन्ट नत्लेखां को अच्छी नौकरी के तुगमे दिये गये, अलावा मिस्त्री विसराम को वि. सं. १९८१ में पिन्डवारा में 'दानावा' नामी अरठ व नत्लेखां को सिरोही में मकान और 'कोजावाला' नामक अरठ देने में आये है.

÷ नोट—उपर्युक्त च्यार महाराणी के सिवाय पासवानजी लीलावती है, जिस से 'राव राजा लखपतरामसिंह' व बाई जामकुंवर के जन्म हुए हैं.

प्रकरण ३७ वां.

मोहिल और दूसरी शाखाओं के चौहान.

सांभर के चौहानों से व नाडोल के चौहानों से विभक्त हुई, चौहानों की शाखाओं का शृंखला बद्ध वंशवृक्ष उपलब्ध हुआ, उनका वंशवृक्ष के साथ संक्षिप्त इतिहास अगले प्रकरणों में लिखा गया है. यदि दूसरी शाखाओं का कुछ २ इतिहास मिल सकता है, परन्तु यह पुस्तक वंशवृक्ष का होनेसे जिन २ शाखाओं का विश्वासपात्र वंशवृक्ष नहीं मिला है उनके वास्ते इस अलग प्रकरण में प्राप्त हुई ख्यात दर्ज की है.

अ. मोहिल चौहान.

चौहान राजपूतों में मोहिल नामकी एक प्राचीन शाखा है, जिसको गलती से कितनेक पुस्तकों में राजपूतों के छत्तीस राजकुल पैकी एक स्वतंत्र राजकुल होना माना गया है, परन्तु इस पुस्तक में पृष्ट १० पर सांभर के माणकराज के दश पुत्रों में एक का नाम मोहिलराय होना अंकित हुआ है, और पृष्ट ११ पर उसके विषय में इशारा किया गया है. मूतानेणसी की ख्यात से उसका जो वंशवृक्ष उपलब्ध होता है, उससे 'मोहिल' शाखा–सांभर में चौहानों का राज्य कायम हुआ उससे पहिले अलग होना मालूम होता है.

चौहानों में मोहिल शाखा होने के विषय में किसी कवि ने कहा है कि–

" सेलहयां देवडांणसीह गोरांहां गोलांह; वाघोडां वंगाह वरण एंको गौतई तांह, "
" सोनगरा हाडा सकल राखसिया निरवाण, वाहिल मोहिल खीचीयां ऐता सोह चहुआण. "

मोहिल राजपूतों की जाहोजलाली वि. सं. १५३३ तक ज्यादह होने का इतिहास कई एक प्राचीन पुस्तकों से मिल रहा है, उक्त संवत् तक इनका राज्य छापर–द्रोणपुर में था. राठौर राव जोधा ने आक्रमण करके मोहिलों को हराये और अपने पुत्र 'जोगा' को यह प्रदेश दिया, परन्तु जोगा से सम्हाल न रही, जिससे कुमार बीदा जो बीका से भी छोटा था उसको राव जोधा ने यह भूमि दी, जो वर्तमान समय में 'बीदावत राठौरों' के कब्जे में है. राठौरों ने मोहिलों से राज्य ले लिया उस विषय में कवि ने कहा है कि–

" वागडिया भोगवी वसाई; नमीयर खवही कल नह आई. "
" घोली वले मोहिलै वरवा, धर रस चूंपई धक मन धरवा. "
" धज वड पांण लियां खत्र घोडे; रहिलीयां मोहिल राठौडे. "
" मेवासी राये जोधे मलीया; दांमज भांज मिरी सिर दलीया. "
" वहै अजीत जीसा वैराई, वसुधा राव जोधे वसाई. "
" रूकै वछो सिंघारे राणो, थापे जोधे छापर थाणो. "

" बीदो वाकै दुरंग वसायो; जैतह्यो राव जोधै जायो. "
" सीरै फेर घांस सत्रां सिर; गढ बीदो तपीयो द्रोणागीर. "
" कै वां बींद घरोघर कांधा; लीया देस ग्रास दंड लीधा. "

मूतानेणसी की ख्यात में मोहिल चौहानों के हाथ से राठौर राव जोधा ने छापर-द्रोणपुर का राज्य ले लिया उसका वृतान्त विस्तार से लिखा है, और मोहिल शाखा की राजावली का कवित भी अंकित किया है, उस कवित से मोहिल का वंशवृक्ष नीचे मुआफिक उपलब्ध होता है.

मोहिल शाखा, चौहानों के मूल पुरुष १ चाहमान से शुरू होकर बाद क्रमशः २ घणसूर उर्फ गंग, ३ इन्द्रवीर, ४ अजन, ५ सजन, ६ मोहिल, ७ हरदत्त, ८ वीरसिंह, ९ वालहर, १० आसल, ११ आहड, १२ रणसिंह, १३ साहणपाल, १४ लोहट, १५ बोबो, १६ वेगो, १७ माणकराव, व उससे क्रमशः
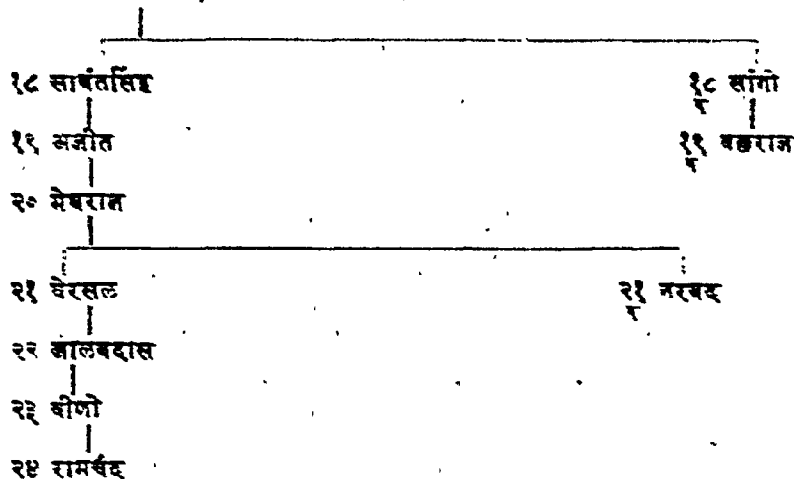
उपर्युक्त मोहिल वंशवृक्ष का संक्षिप्त इतिहास.

नं. १ चाहमान् से नं. ४ अजन तक का इतिहास अंकित नहीं हुआ है. नं. ५ सजन, राणा कहलाता था, इसका राज साजनपुर व दक्षिण के बीच में 'ओमोर' नामक परगने में था, सजन के बडा पुत्र नं. ६ मोहिल से चौहानों में 'मोहिल शाखा' कहलाई गई.

नं. ६ मोहिल के साथ उसका पिता सजन अच्छा बरताव नहीं रखता था, जिससे उसने स्वपराक्रम से नया राज्य प्राप्त करने का उद्योग शुरू किया, उस समय में छापर-द्रोणपुर का राज्य 'वागडिया चौहानों' के तरफ था, द्रोणपुर नाम पांडवो के गुरु द्रोणाचार्य के नाम से पडा था, और उस गांम में द्रोणाचार्य का जन्म हुआ था. यह भूमि पहिले 'डाहलिया परमारों' के पास थी, 'सिसपाल' नामका डाहलिया परमार के समय में 'छापर' का राज्य पूर्ण जाहोजलाली पर था. डाहलिया से यह राज्य वागडिया चौहानों ने लिया, और वागडिया से युद्ध करके सजन का पुत्र मोहिल ने यह राज्य कब्जे किया,

इस युद्ध में 'संतन' नामका शाहुकार ने मोहिल को द्रव्य की सहायता करने से उसको 'लाडणुं' परगना में 'कसुंभी' आदि ५ गांव इनायत किये, संतन ने उस गांव में मन्दिर व वावडी बनाई, जो 'संतन वाव' के नाम से प्रसिद्ध है. मोहिल ने इस भूमि को आवाद करके १४०० गांव वसाये और 'राणा' पद धारण कर गद्दी पर बैठा.

नं. ७ राणा हरदत्त से नं. १६ 'वेगा' राणा तक के राजाओं का इतिहास अंकित नहीं हुआ है. नं. १७ माणकराव का विवाह रावल लक्ष्मणसेन की पुत्री के साथ हुआ, जिससे नं. १८/१ सांगा का जन्म हुआ.

नं. १८ राणा सांवतसिह वहादुर राजा था, उसका पुत्र नं. १९ अजीत राणा के साथ मंडोवर के राठौर राव जोधा ने अपनी पुत्री राजाबाई विहाई थी.

नं. १९ राणा अजीत अपने सुसराल मंडोवर गया था, राव जोधा कई दिनों से मोहिल का विस्तीर्ण राज्य छीन लेने की फिक्र में था, उसने राणा अजीत को दगा से मारने की तजवीज की, परन्तु अजीत की सास भटियाणी को यह वात मालूम होने से उसने राणा के आदमियों को इशारा किया. राणा अजीत वहादुर राजा था, और मारे जाने के भय से भाग जावे वैसा नहीं था, जिससे राणा के प्रधान ने उसको कहा कि 'छापर' से आदमी खवर लाया है कि, यादवों की फौज छापर के उपर आई है, और वछराज सांगावत (नं. १९/१ वाला) कहलाता है कि 'मैं घेरे में फँसा हुँ सो मैं मर जाऊं वहां तक में आ सको तो आना,' जिस पर राणा अजीत मंडोवर से रवाने हुआ. राव जोधा को यह वात मालूम होने पर उसने अपनी फौज के साथ उसका पीछा किया, जब कि राणा द्रोणपुर से तीन कोश के फासले पर पहुंचा तव उसके प्रधान ने उसको मंडोवर से लाने का कारण कहा, जो सूनते ही उसने कहा कि तुम लोगों ने मेरी इज्जत को दाग लगाया, इतना कह कर वह वापस लौटा, और राव जोधा जो उसके पीछे आ रहा था, उसके सामने युद्ध करने को उपस्थित हुआ. 'घणौडा' नामक गांव के पास दोनों का मुकावला हुआ, जिसमें राणा अजीत वडी वीरता से युद्ध कर ४५ आदमीयों के साथ काम आया, लेकिन राव जोधा वहां से वापस मंडोवर चला आया. अजीत की राणी राजाबाई अपने पति के पीछे सती हुई. अजीत के पीछे नं. १९/१ वछराज गद्दी पर आया.

नं. १९/१ राणा वछराज गद्दी पर आने वाद एक वर्ष पीछे राव जोधा ने फिर उस पर चढाई की, इस समय में मोहिल राजपूतों में कुसंप हो गया था, तव भी राणा वछराज ने युद्ध किया परन्तु वह हार गया, और राठौरों ने राज्य ले लिया.

नं. २० राणा मेघराज, अजीत राणा का वहादुर पुत्र था, उस ने वगावत शुरू की, और अपनी वीरता से राठौरों को ऐसे तंग कर दिये कि राव जोधा का यह निश्चय हुआ

कि जब तक मेघराज जिन्दा है वहां तक यह भूमि अपने हाथ में नहीं आवेगी, जिससे दोए मास रह कर वह मंडोवर चला गया. मेघराज ने पुनः छापर–द्रोणपुर का राज्य कब्जे किया, और अपनी हयाति तक राठौरों को सफलता होने न दी.

नं. २१ राणा वेरसल अपने पिता के पीछे गद्दी पर बैठा. उसके समय में उसके भाईओं ने फसाद मचाया और सोलह हिस्से से मोहिलों ने भूमि बांट ली. इसका भाई नरबद, राठौर कांधल रणमलोत के दोहित्र होता था. राणा वेरसल में अपने पिता के जैसा वीरत्व न होने से आपस का विग्रह बढ गया और उसमें बहुत मोहिल चौहान मारे गये, यह बात राव जोधा के कान पर पहुंचने से उसने अपने भाईओं को इकट्ठे कर राणा के उपर चढाई की, राठौरों की फौज आने का सूनते ही राणा व उसके भाई नरबद भाग गये, और राव जोधा ने छापर–द्रोणपुर का कब्जा कर लिया.

राणा वेरसल अपने भाई के साथ कितनेक दिन फतहपुर, झुझणा, भटनेर में रहे, बाद मेवाड में महाराणा कुंभा के पास जा रहे. राज्य चला जाने से उन्हों ने अपने मामा राठौर वाघा कांधलोत की सहायता ली, राठौर वाघा अपने भांजा नरबद को साथ लेकर देहली के बादशाह लोदी के पास पहुंचा, जहां पर उनका अच्छा सत्कार हुआ. करीब दस अग्यारह माह तक बादशाह की सेवा में वे रहे, जिससे बादशाह ने पांच हजार सवारों के साथ पठाण सारंगखान का इनकी सहायता में भेजा. शाही फौज के साथ नरबद मोहिल ने फतहपुर झुझणा के पास मुकाम किया, जहां पर राणा वेरसल भी उनको आ मिला. राव जोधा ने छह हजार फौज के साथ उनसे युद्ध करने को कूच की. छापर की सिमा पर दोनों फौज का डेरा हुआ, लेकिन मुकाबला करने के पहिले राव जोधा ने राठौर वाघा को छूपी रीत से मुलाकात लेकर समझाया कि शाबाश भतिज ! मोहिल के वास्ते काका के सामने तलवार बांधी है ? राठौर वाघा ने यह सून कर राव जोधा का पक्ष ग्रहण किया, और कहा कि मैं मोहिलों को पग पाला डाबी हरोल में रखुंगा और पठाण की फौज जीमणी तरफ घोडे पर रहेगी, सो डाबी तरफ हमला करके सब मोहिलों को काट देना.

जब कि मुकाबला हुआ तब राठौर घोड़े सवारों ने पैदल मोहिलों पर हमला कर उनको खेदान मेदान कर दिये, राव जोधा दूसरी तरफ से पठाण के उपर आया, इस युद्ध में पठाण सारंगखान के ५५५ सिपाही मारे गये, और राव जोधा को विजय प्राप्त हुई. राणा वेरसल मेवाड में अपने ननिहाल चला गया, और नरबद फतहपुर में पडा रहा. राव जोधा ने मोहिलों का राज्य अपने पुत्र जोगा को दिया, और आप मंडोवर गया.

राठौर जोगा कमजोर था जिससे मोहिलों ने जगह २ फसाद मचाया, उस पर जोगा की राणी झाली ने अपने श्वसुर को लिखा कि तुम्हारे पुत्र में भूमि को संभालने

का सामर्थ्य नहीं है सो दूसरा बंदोबस्त करो, जिस पर राव जोधा ने अपनी राणी सांखली नवरंगदे का पुत्र वीदा को वहां भेज कर जोगा को वापस बुला लिया, वीदा बहादुर राजपुत्र था उसने मोहिलों को जागीर देकर अपनी सेवामें रखे, 'जवा' नामक मोहिल की पुत्री के साथ राठौर वीदा ने लग्न किया. कितनेक मोहिलों के साथ 'जवा' को मेल नहीं था, जिससे उसने उनको देश नीकाल कराये. राठौर वीदा ने अपना अमल सम्पूर्ण जमाया, और वर्तमान समय में भी वह भूमि वीदावत राठौरों के तरफ है.

मोहिल चौहान इस तरह छीन भीन हो गये, 'क्षत्रिय वर्तमान' नामक पुस्तक में मोहिल राजपूतों को चौहान नहीं गीनते अलग वंश होना बताया है, और इस कुल के राजपूतों में क्रमशः कपिल, मुन्दल, कौशिक व शांडिल्य इस नामके च्यार गौत्र होनेका अंकित किया है जो विश्वास पात्र नहीं है, क्योंकि एक राजवंश में भीन्न २ गौत्र होना असंभवित है. उक्त पुस्तक में मोवनसिंह नामके पुरुष से सात शाखाएं (१ मानुधनी, २ चौधरी, ३ स्याहर, ४ घरडचोल्या, ५ सूस, ६ सिंगा व ७ हीरा) होने का लिखा है, और माधोसिंह नामक पुरुष से सत्ताईस शाखाएं (१ मुधडा, २ माराणी, ३ मोदी, ४ माहलणा, ५ ससाणी, ६ साभण्या, ७ सकराणी, ८ भाकराणी, ९ भराणी, १० भौराणी, ११ राजमहुता, १२ गौराणी, १३ उलाणी, १४ डोब्या, १५ ढेढ्या, १६ चौधरी, १७ चमड्या, १८ चमक्या, १९ अटरेण्या, २० प्रहलादाणी, २१ पसारी, २२ छोटापसारी, २३ कौठारी, २४ वारीका, २५ बावरी, २६ वलडिया, २७ दम्मलका,) होने का उल्लेख किया गया है, फिर मोवणजी नामक मोहिल से 'मनियार' शाखा हुई, जिससे छह शाखाएं (१ मणियार, २ पसारी, ३ वरधु, ४ माझया, ५ खरनाल्या, ६ मनक्या.) होना व माधोजी नामक पुरुष से 'मोदानी' शाखा से १ वम्ब, २ महदना, ३ वन्धर व ४ महनाना नामक शाखाएं विभक्त होना अंकित किया है. (पृष्ठ १७६-१७७ पर) पाया जाता है कि यह सब शाखाएं प्राचीन नहीं है, परन्तु उप शाखाएं है.

(ब) और शाखाओं के चौहान.

चौहान राजपूतों की चोवीस शाखाएं कही जाती है, परन्तु इस पुस्तक के पृष्ठ १६ पर जो जो शाखाओं के नाम अंकित हुए है उसकी संख्या ११५ हो चूकी है, उसमें से १ सांभर के चौहान, २ रणथंभोर के चौहान, ३ पूर्बिये चौहान, ४ नाडोल के चौहान, ५ हाडा चौहान, ६ खीची चौहान, ७ वाव के चौहान, ८ सांचौरा चौहान, ९ वागडिया चौहान, १० वालीसा चौहान, ११ सोनगरा चौहान, १२ देवड़ा चौहान व १३ मोहिल चौहान, इन शाखाओं के वंशवृक्ष इस प्रथम विभाग में आ चुके है, और सोनगरे चौहान से विभक्त हुई १४ वोडा, १५ बालोत, १६ चीवा व १७ अवसी चौहानों के वंशवृक्ष दूसरे विभाग की पुस्तक में अंकित हुए है.

चौहानों की और शाखाओं के वास्ते चाहिये वैसा साहित्य प्राप्त न होने से उनका

शृंखलाबद्ध वंशवृक्ष होना मुश्किल है, वल्कि कितनीएक शाखा के चौहान कहां कहां पर विद्यमान है, उसका पत्ता नहीं चला है. इन शाखाओं में कितनीएक शाखाएं उप शाखा भी है, जैसे कि १ गुजराती, २ पावेचा व ३ पवियां यह शाखाएं गुजरात के खीची चौहान शाखा के ही नाम है. ४ माहणोत व ५ सिंहणोत शाखा हाडा चौहानों की उप शाखा है. (देखो इस पुस्तक के पृष्ट ६३ पर) इसी मुआफिक बहुत ही शाखाएं उपशाखा होंगी.

अतएव इस पुस्तक के पृष्ट १६ पर अंकित हुई शाखाओं में से १ पंजाबी, २ बगडावत, ३ भदोरिया, ४ चांदाणा, ५ मामा इन शाखा के चौहान कहां २ विद्यमान है, वह इस पुस्तक के पृष्ट १०-११ पर अंकित हुआ है, और ६ आन्द्रेचा, ७ खीवर, ८ भवर, ९ वीवा, १० डेडरिया, ११ वाघोडा, १२ गिल, १३ वोडा, १४ जलापा, १५ वील, १६ धधेड आदि शाखाओं के स्थान पृष्ट १५ पर नीमराणा की ख्यात पर से लिखने में आये हैं. 'क्षत्रिय वर्तमान' नामक पुस्तक में १७ निकुम्भ, (नकुव) व भदोरिया शाखा खीची चौहानों में से विभक्त होने का उल्लेख किया गया है, (पृष्ट ९५ पर) परन्तु भदोरिया शाखा बहुत प्राचीन समय से विद्यमान है, वल्कि खीची शाखा के पहिले यह शाखा विभक्त होनेका जगह २ पाया गया है. (देखो इस पुस्तक के पृष्ट १० पर) वर्तमान समय में 'भदावर' स्टेट में भदोरिये चौहान विद्यमान है, यदि उसका इतिहास मिल जाता तो ऐसी वातों का निश्चय सरलता से हो सकता.

१८ निर्वाण चौहानों की पूर्व में 'नरवरगढ' नाम की रियासत विद्यमान है, जो शाखा भी प्राचीन है. १९ माद्रेचा शाखा के चौहानों का वि. सं. की सोलहवी सदी की शुरूआत तक 'देसुरी' में राज्य था, जो माढ के सोलंकी भोज के पोतों ने छीन लिया. नीमराणा की ख्यात से 'मूरगढ' नामक स्थान पूर्व में है, वहां 'माद्रेचा' का राज्य होना अंकित हुआ है.

२० कापलिया चौहान का राजस्थान पूर्व में 'गढ कापल' में होना नीमराणा की ख्यात से मालूम होता है, परन्तु मूतानेणसी की ख्यात में 'कुंभा कापलिया' नामक बहादुर राजपूत की ख्यात लिखी गई है, उससे सांचौर की पश्चिम दिशा में 'कांपला' नामक गांव में चौहान राजपूतों ने निवास करने से 'कापलिया' शाखा कहलाई गई है. कापलिया कुंभा, राठौर मालदे (मलीनाथ) के समय में कांपला गांव में था, और मालदे की सेवा करता था. मालदे ने उसको अपने दरवार में बुलवा कर अपना प्रधान 'भोआनाई' द्वारा उसकी घोडी मांगी, जिस पर कुंभा बहुत विगडा, उसको मारने के वास्ते ५०० राजपूत खडे थे, तब भी शूरवीर राजपूत ने अपनी तलवार नीकाल कर सामना करना चाहा, क्रोधसे उसका मूह लाल चोल हो गया और बदन पर बाल खडे हुए थे, जिससे देखने जैसा चहेरा होने से, एक राजपूत ने राठौर मालदे को वह बात कही. मालदे ने आकर उसको देखा और उसके वीरत्व की कदर करके, उसके साथ

मौजूदा महाराजा भदावर स्टेट.

महाराजा महेन्द्र मानसिंह साहेब बहादुर,
भदावर स्टेट.

Lakshmi Art, Bombay, 8.

अपने पुत्र जेतमाल की पुत्री 'पती' का विवाह कर दिया. कुंभा के खेता व भोजा नामक दो पुत्र हुए वे भी वडे बहादुर थे. वर्तमान समय में यह शाखा वाले कहां पर है, वह मालूम नहीं हुआ है.

२१ गोलवाल व २२ गोला यह दोनों शाखाएं एक ही होना 'क्षत्रिय वर्तमान' नामक पुस्तक की पृष्ट ९७ पर अंकित है, उक्त पुस्तक में एक मत से यह शाखा 'सोनगरा' से, और दूसरे मत से 'खीची' चौहानों से विभक्त होने का लिखा गया है, परन्तु वह विश्वासपात्र नहीं है, क्यों कि नाडोल में चौहानों का राज्यस्थान हुआ, उसके बाद जो इतिहास प्रसिद्धि में है, उसमें गोलवाल या गोला शाखा इन दोनों शाखा से अलग होने का कहां भी उल्लेख नहीं हुआ है. नीमराणा की ख्यात में 'गढपछाह' में गोलवाल शाखा का राज्य होना अंकित हुआ है.

२३ मालण, २४ सेवटा, २५ सेलोत, २६ विहल, २७ सेजपाल, २८ ऊलेचा आदि शाखाओं के चौहान वि. सं. की चौदहवीं सदी में जालोर के सोनगरा रावल कान्हडदेव की सेवा में उपस्थित होना, मूता नेणसी की ख्यात और कान्हडदेव प्रबंध नामक पुस्तक से पाया जाता है, जिन के नाम इस पुस्तक के पृष्ट १७१ पर व पृष्ठ १७५ पर अंकित है. वर्तमान समय में भी इन शाखाओं के चौहान राजपूताना के सिरोही व जोधपुर राज्य में विद्यमान है.

'क्षत्रिय वर्तमान' नामक पुस्तक में २९ वगसरिया (वकसरिया) शाखा के राजपूत बंगाल में 'वकसर' जिला में, ३० राखसिया (रकसेल) शाखा के राजपूत 'गया,' 'मध्यदेश,' व 'सिरगुंजा' में, ३१ 'नार' (नाहर) शाखा के राजपूत सागर जिला में और ३२ 'वाछल' शाखा के राजपूत मथुरा जिला के 'तरौली' गांव में होना बताया हैं. उक्त पुस्तक में इस पुस्तक के पृष्ट १६ पर जो शाखाएं अंकित हुई है, उसके सिवाय १ पहरा, २ हुरकट, ३ असवाल, ४ वीलकेत, व ५ भयाराविष्ट नाम की चौहानों की शाखाएं उत्तर हिन्दुस्थान में, और १ चौहाण, २ धडप, ३ वारंगे, व ४ दलपते नाम की शाखाएं दक्षिण (महाराष्ट्र) में होना बताया है.

उपर मुआफिक जिन २ शाखाओं का कुच्छ भी पत्ता चला वह अंकित करके यह 'चौहान कुल कल्पद्रुम' के प्रथम विभाग की समाप्ति की गई है, यदि और शाखाओं के वास्ते भरोसा पात्र इतिहास प्राप्त होगा, और इस पुस्तक की दूसरी आवृति छपाने का मौका होगा, तब उन शाखाओं का अहवाल अंकित किया जायगा. अस्तुः